Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DHANWANTARI

1948 G. K. U.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R.T. 173
COMPILED
COMPILED

Stock Verification-2004

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

COMPILED

RT-173

-इस अंक में-

रोध [कविता]	५३७	डाक्टरों का जमघट	५६५
ीण [,,]	५३८	स्वदेशी माल्ट खाइये	५६६
ुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति हो	५३६	कहरुवा	५६७
	५४१	शीतलचीनी	५६६
गुण वीर्य विपाक और प्रभाव	५४२	हुलहुल का चमत्कार	५७१
न्त्रिक ज्वर की चिकित्सा पद्धति	५५६	परीक्षित प्रयोग	५७३
-विकार की अनुभव पूर्ण चिकित्सा	५५३	वे प्रयोग जिनकी परीक्षा हो चुकी है	५७८
ह रोग निदान और उपचार	५५६	विविध-समाचार	५८०
हु चिकित्सा	५६२	परम-पूज्य महात्मा गांधी	५८५

जनवरी १६४८

ग २२ अङ्क ८

र्षिक-मूल्य ५=)

सम्पादक वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग

जे. पी. अग्रवाल बी.एस.सी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद के विद्वान
एवं अनुभवी
लेखकों से अपील

धन्वन्तरि के आगामी विशेषांक "कल्प चिकित्सा एवं पञ्चकर्म चिकित्सांक" के विषय में धन्वन्तरि के पिछले अंकों में निवेदन किया जा चुका है। कल्प चिकित्सा एवं पञ्चकर्म चिकित्सा आयुर्वेद चिकित्सा-शास्त्र का एक महत्वपूर्ण अंग है। इन आवश्यक विषयों पर विद्वान लेखकों को अपने उपयोगी लेख अवश्य प्रकाशनार्थ भेजने चाहिये। यह विशेषांक वैद्यों के लिये तो उपयोगी होगा ही, किन्तु इस विशेषांक को मनन कर आम जनता तथा हमारे नेतागण भी यह अनुभव करेंगे कि आयुर्वेद-वैज्ञानिक एवं सिद्धान्तिक चिकित्सा पद्धति है। यह सब कुछ हमारे माननीय एवं कृपालु लेखकों की कृपा पर ही अवलम्बित है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अनुभवी एवं अधिकारी लेखक कष्ट सहन कर आयुर्वेदोन्नति के लिये उक्त महत्वपूर्ण विषय पर अपने लेख अवश्य ही भेजेंगे।

इस विषय पर आयुर्वेद में स्वतंत्र पुस्तक हिन्दी भाषा में शायद ही कोई होगी। यह महत्वपूर्ण विषय विद्वान लेखकों से प्रायः अछूता ही रहा है, धन्वन्तरि के पिछले सभी विशेषांक आयुर्वेद-साहित्य की कमी को पूरा करने में सुप्रसिद्ध हैं और मैं अपने कृपालु लेखकों के बल भरोसे यह दावे के साथ कह सकता हूं कि यह विशेषांक भी धन्वन्तरि की प्रतिष्ठानुरूप सर्वोत्तम ही प्रकाशित होगा।

माननीय लेखकों से निवेदन है कि वे अपने लेख १५ मार्च १६४८ तक अवश्य भेज देने की कृपा करें।

भवदीय —
देवीशरण गर्ग।
प्र० सम्पादक।

Printed and Published by Vaidya D. S. Garg at the Dhanwantri Press, Bijaigarh

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल

१५

दिन

१४ फरवरी
से
२८ फरवरी
तक रियायत

शीघ्रता करें

{ विवरण इसकी
पुस्त पर देखें। }

च्यवनप्राशअवलेह

[अष्टवर्ग युक्त]

रसायनस्यास्य नरः प्रयोगात् लभेत् जीर्णोऽपि कुटी प्रवेशम्।
जरा कृतं रूपमपास्य सर्वं विभर्ति रूपं नवयौवनस्य ॥

च्यवनप्राश्य--कास श्वास, स्वरभंग, रक्तपित्त, क्षय रोग, उरःक्षत, अम्लपित्त, संग्रहणी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र आदि रोगों में एक चमत्कारिक औषधि है, यह सौम्य औषधि होने पर भी अति शक्तिशाली है। इसके सेवन से ही वृद्ध च्यवन ऋषि तरुणता को प्राप्त हुए थे महर्षि अश्वनीकुमार ने महात्मा च्यवन के लिए ही प्रथम इसकी रचना की थी इससे ही इसका नाम च्यवनप्राश्य हुआ। यह रसायन है, इसके सेवन से जो अपूर्व बल और कान्ति आती है यह भारत के सब ही महोदय जानते हैं। ग्रीष्म ऋतु में स्वादिष्ट और ठण्डी खुराक है जिन लोगों के गरमी के दिनों में नाक से या मुख से या दूसरे रास्ते से खून (रक्त) जाता है उनके लिए अमूल्य महौषधि है। इसके साथ स्वर्ण पर्पटी का सेवन करने और पथ्य में केवल दुग्धपान करने से संग्रहणी, अम्लपित्त नाश को प्राप्त होते हैं। हमने देखा है कि कमज़ोर रोगी भी इसका सेवन कर ५-७ सेर दुग्ध पान कर लेता है। स्त्रियों का बन्ध्या दोष इसके निरन्तर सेवन से नष्ट होता देखा गया है। बढ़ाने में अद्वितीय पदार्थ है। क्षय (तपैदिक) जैसे भयंकर रोग में धातुओं का क्षय रोककर बल यही देता है। जिन रोगियों के अस्थि मात्र शेष रह गए थे वह इसके सेवन से हृष्टपुष्ट होते देखे गए हैं।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ [अलीगढ़]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताजे आंवलों से बना | असली व अत्युत्तम अष्टवर्ग-युक्त

च्यवनप्राश अवलेह

[अष्टवर्ग युक्त]

इसी समय मिल सकता है। हमारे सभी ग्राहकों, एजेन्टों एवं वैद्यों को इसी समय अधिक से अधिक तादाद में च्यवनप्राश मंगाकर रख लेना चाहिए। इस समय ताजे आवलों व अत्युत्तम अष्टवर्ग से बना हुआ च्यवनप्राश बहुत बड़ी तादाद में तैयार किया जा रहा है।

-कांच की शीशियों में-

कुछ समय से कांच की शीशियां टीन के ढक्कन वाली समाप्त हो जाने क कारण हम ग्राहक के विशेष आग्रह करने पर भी च्यवनप्राश शीशियों में नहीं भेज सके थे। अब शीशियां बहुत बड़ी तादाद में आगई हैं और यह कठिनाई भी जाती रही है। अतएव हमको पूर्ण विश्वास है कि एजेंट अधिक से अधिक तादाद में आर्डर देंगे।

केवल एक पक्ष

[तारीख १४ फरवरी से २८ फरवरी तक]

के लिए निम्न सुविधा दी जा रही है। आशा है इस सुविधा से हमारे सभी ग्राहक अवश्य लाभ उठावेंगे।

—रियायत निम्न प्रकार होगी—

१—एक पाव की एक शीशी का मूल्य १) होगा।
आध सेर की १ शीशी का मूल्य २)
तीन पाव की १ शीशी का मूल्य ३)

२—१२ शीशी एक साथ मंगाने पर १ शीशी बिना मूल्य दी जायगी।

३—तीन दर्जन [३६] शीशियां एक साथ मंगाने पर ४ शीशी बिना मूल्य दी जायगी।

४—६ दर्जन [७२] शीशियां एक साथ मंगाने पर ९ शीशियां बिना मूल्य दी जायगी।

४—१२ दर्जन [१४४] शीशियां एक साथ मंगाने पर २० शीशियां बिना मूल्य दी जायगी।

-नियम-

१—च्यवनप्राश रेलवे पार्सल से ही भेजा जा सकेगा। अतएव पास का रेलवे स्टेशन पत्र में अवश्य लिखना चाहिए।

२—३ दर्जन या अधिक शीशियां एक साथ मंगाने पर सवारी गाड़ी का आधा किराया कार्यालय देगा तथा आधा किराया ग्राहक को देना होगा। पैकिङ्ग आदि व्यय कोई नहीं लगाया जायगा।

३—३ दर्जन से कम मंगाने पर सभी व्यय-पैकिंग, पोस्टेज, रेलभाड़ा आदि ग्राहक को देना होगा।

४—यह रियायत केवल १५ दिन [१४ फरवरी से २८ फरवरी तक] के लिये है। बाद में नहीं दे सकेंगे।

५—एक ग्रौस १ साथ मंगाने वाले को १००० विज्ञापन वितरणार्थ तथा पट्ठे के बोर्ड भी भेजे जायंगे।

— इस अवसर पर—

एक साथ मंगाने वालों के लिये खास भाव नीचे दिये जाते हैं। जो वैद्य हैं और जो अधिक तादाद में मंगाकर रखना चाहते हैं वे इन भावों से मंगा सकते हैं।

५ सेर च्यवनप्राश एक डिब्बे में	१७)
१० सेर च्यवनप्राश २ डिब्बों में	३२॥)
२० सेर च्यवनप्राश १ टीन में	६०)
१ मन च्यवनप्राश २ टीन में	११०)

एक मन मंगाने पर सवारी गाड़ी का आधा रेल भाड़ा कार्यालय देगा। कम मंगाने पर ग्राहक को पूरा किराया देना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पाकिस्तानी शरणार्थी की सहायतार्थ
आयुर्वेद जगत से प्रार्थना—

भारत की जड़ी-बूटियों द्वारा
वैज्ञानिक ढंग पर निर्मित विशुद्ध

"अवध"

आयुर्वेदिक-इन्जैक्शन

रजिस्टर्ड

अवध आयुर्वेदिक इन्जैक्शन आज जनता पर जैसे पोस्ट, रेलवे, जेल, बैंक, गान्धी-समिति, आदि धर्मार्थ औषधालयों के रोगियों पर पूर्ण लाभप्रद प्रमाणित हुये हैं। वैद्य, डाक्टर, हकीमों को चाहिए कि हमारे इन्जैक्शनों को एक बार मंगाकर अवश्य आजमायें, साथ ही साथ धर्म यश के भागी बनें।

पता—अवध आयुर्वेदिक इन्जैक्शन फार्मेसी
बलरामपुर, गोण्डा, यू० पी०

ताजे आंवलों से बना

च्यवनप्राश

(अष्टवर्ग-युक्त)

का

रियायती मूल्य

केवल १५ दिन के लिये

इसी अङ्क में देखें।

व्यवस्थापक—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़।

दवा के सच्चे मोती

वैद्यो! हकीमो!! तथा फार्मेसी वालो!!!

हमारे यहां सब प्रकार के शुद्ध और सच्चे मोती, जैसे कि बसराई खाका, सीलोन खाका, आस्ट्रेलियन मोती वगैर, जो दवा के लिए सर्वोत्तम हैं तथा जो भारत के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वैद्यों द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं, निहायत किफायत से मिलते हैं। धर्मार्थ औषधालयों तथा फार्मेसियों के साथ विशेष रिआयत की जाती है। आर्डर भेजने की कृपा करें।

पता—नगीनदास वीरचन्द जेवरी,
४४-४६, धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३।

एपोलो आयुर्वेदिक इंजैक्शन

आयुर्वेदिक इंजैक्शनों की प्रमाणिकता के लिये निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन ने केवल इसी फार्मेसी को स्वर्णपदक से सम्मानित किया है। आवश्यक विवरण पत्र द्वारा मंगाइये। एजेंटों की आवश्यकता है।

दी एपोलो फार्मेस्यूटीकल वर्क्स लिमिटेड
प्रतापगंज : : बरौदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकर ध्वज वटी

के रियायती मूल्य

की सूचना हमारे कुछ ग्राहकों को देरी से मिली और हमारे पास लगभग १०० पत्र ऐसे आये हैं कि समय निकल जाने पर सूचना मिलने के कारण वे रियायत से कोई लाभ नहीं उठा सके और फिर एक चांस देना चाहिये। अतः ऐसे सज्जनों के आग्रह से तारीख १४ फरवरी से २८ फरवरी तक उन्हीं रियायती मूल्य पर मकरध्वज वटी देने का निश्चय किया जा रहा है। इस बार समय न निकलने दें।

—रियायती मूल्य—

४१ गोली की १ शीशी	२।)	५०० गोली	१८)
,, ,, ६ शीशी	६।।)	१००० गोली	३५।।)
,, ,, १२ शीशी	१८।।)	२००० गोली	७०)

इस बार अवसर निकल जाने पर फिर यह रियायत नहीं दी जा सकेगी।

-शोधित-द्रव्य-

[सर्वोत्तम व विधिवत् शोधित]

कज्जली नं० १ (सम गंधक पारद)	१० तोला १५)
शु० गंधक आंवलासार	१० तोला ८।।)
शु० पारद हिंगुलोत्थ	१० तोला ८)
शु० पारद [संस्कारित]	५ तोला ४०)
शु० हिंगुल	२० तोला १०)
शु० बच्छनाग	१० तोला ४)
शु० ताम्र चूर्ण	१ सेर ८)
शु० बंग	१ सेर २)
शु० लोह चूर्ण	१ सेर ४)

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

स्वर्ण बसंत मालती

नं० १

ज्वर, जीर्ण ज्वर, क्षय की प्रारम्भिक अवस्था, ज्वर की टिकी हुई ऊष्मा आदि के लिये सर्वोत्तम प्रमाणित हो चुकी है।

मूल्य १ तोला २०)

[२।। तोला एक साथ मंगाने पर पोस्ट व्यय माफ]

पता-धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ [अलीगढ़]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by Dept. of Public Instruction of Central Provinces & Berar.

भाग २२ अङ्क ८	सम्पादक-- वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग जे. पी. अग्रवाल, बी. एस. सी.	जनवरी सन् १९४८ ई०

अनुरोध।

---*---

सुख मय कर दे जग का जीवन।
देख, न असमय में ढल जाये,
हाय! आज मानव का यौवन।
सुखमय कर दे जग का जीवन॥

छिन्न-भिन्न कर रोग मूल सब,
छिन्न-भिन्न कर शोक शूल सब,
पाप शमन कर, नयी रश्मि से,
पावन करदे रे, यह तन-मन।
सुखमय कर दे जग का जीवन॥

'सिद्ध योग' प्रकटित कर नव-नव,
फिर ला दे अपना चिर गौरव,
घर-घर में, फिर 'अमृत-कलश' से,
बरसा दे 'रस' हे, नवीन घन।
सुखमय कर दे जग का जीवन॥

आधि-व्याधि से आकुल जन जन,
तुझे पुकार रहे है प्रतिक्षण,
आज देव 'स्वयमेव' प्रकट हो,
कौन करे सागर का मन्थन।
सुख मय करदे जग का जीवन॥

--श्री. रामनाथ जी पाठक 'प्रणयी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण [करुण-क्रन्दन]

देव धन्वन्तरि !
आपके श्री चरणों में आज,
समर्पण है श्रद्धांजलि गान।
बुलाता आरत हिन्द पुकार,
करो भारत का फिर कल्याण ॥

देव तुम आह ! सर्ग के दूत !
अमर है आज तुम्हारा गान।
स्वयं पीयूषपाणि अवतार,
करो भारत का फिर कल्याण।

चिकित्सा तट पर हे करुणेश !
दुखी हैं भारत वैद्य महान।
हुये असहाय आज हम लोग,
करो भारत का फिर कल्याण ॥

हमारा गौरव बढ़े अनन्त,
हमारा यह आयुर्विज्ञान।
संभालो ले करमें पतवार,
करो भारत का फिर कल्याण ॥

कहां है वह अक्षय भंडार,
आपका अभीं कुम्भ द्युतिमान।
पिला कर एक जरासी बूंद,
करो भारत का फिर कल्याण ॥

शुक्र मज्जादिक धातू हीन,
शिरा धमनी का सिर्फ वितान।
दिखाता है दारुण रुग्जाल,
करो भारत का फिर कल्याण ॥

हुये हम सत्व हीन निरुपाय,
हुई जीवन की ज्योती म्लान।
शेष है अब केवल कंकाल,
करो भारत का फिर कल्याण ॥

हुआ स्तब्ध ज्ञान संचार,
बनी नीरस तब प्रिय सन्तान।
सुधारो फिर धन्वन्तरि देव !
करो भारत का फिर कल्याण ॥

रुलाते हृदय विदेशी आज,
दिखा निज-निज पैथी विज्ञान।
हुआ अपमानित वैद्य—समाज,
करो भारत का फिर कल्याण ॥

बने हैं आज वही शिर मौर,
नहीं था जिनको बिल्कुल ज्ञान।
मिटा दो उन्हें दुबारा देव !
करो भारत का फिर कल्याण ॥

तुम्हीं हो हम दीनों का मान,
तुम्हीं हो हम दीनों के प्राण।
तुम्हीं हो हम दीनों की आह !
करो भारत का फिर कल्याण ॥

तुम्हारे ऊपर निर्भर आज,
हमारा है भविष्य निर्माण।
जगा दो सोता वैद्य-समाज,
करो भारत का फिर कल्याण ॥

मिटा करके अपना अस्तित्व,
रो रहे हैं दिल के अरमान।
हमारी करुणा भरी पुकार,
करो भारत का फिर कल्याण ॥

हिलादो अन्य पैथियां पुनः,
करो निज ज्ञान बान संधान।
"शान्त" हो अमर कीर्ति हे देव !
करो भारत का फिर कल्याण ॥

—रचयिता—

श्री पं. नेत्रपाल शर्मा "शान्त"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्र भारत में आयुर्वेद ही राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति हो।

लेखक—आयुर्वेदरत्न कविराज पं० हर्षुल जी मिश्रा 'प्रवीण' बी. ए.
हिन्दी प्रभाकर; इंचार्ज-म्युनिसिपल औषधालय, बैतूल।

आज भारत स्वतन्त्र हो गया है। भारतवासियों को अपने विज्ञान और कला की कीमत करने की पूरी स्वतन्त्रता है। ईश्वर कृपा से आज भारत की अपनी संस्कृति है, वह जीवनोपयोगी किसी वस्तु के लिये विदेशियों के भरोसे नहीं है। केवल हमारे नेताओं का, तथा शासन के कर्णधारों का ध्यान, भारतीय विज्ञान, भारतीय वैद्यक, भारतीय कला और भारतीय भाषा को प्रगतिशील बनाने की ओर समुचित रूप से आकर्षित होने की देर है।

भारतीय कला, भाषा और विज्ञान की ओर तो कुछ अंशों में भारतीय नेताओं का ध्यान क्रमशः आकर्षित होने लगा है, परंतु भारतीय वैद्यक शास्त्र के प्रति उसकी उपयोगिता का लोहा मान लेने पर भी उनकी देश भक्ति उन्हें प्रोत्साहित नहीं करती है, आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति स्वीकार करने में उनकी हिचकिचाहट का कारण हम भारतीय वैद्यों की अप्रगतिशील और संकीर्ण मनोवृत्ति है। हम आज भी प्रगतिशील पाश्चात्य चिकित्सा पद्धतियों को देखते हुए अपने आयुर्विज्ञान को स्वाभाविक रूप से विकसित होने देना नहीं चाहते। इस नवयुग में भी हम लकीर के फकीर और पुस्तक कीट बने हुये हैं। वैद्यक के श्लोकों को रटकर और उनको रोगियों के सामने सुनाकर अपनी रटन्त विद्या से गौरवान्वित होने वाले वैद्यों की संख्या आज भी कम नहीं है। वैद्यक के धुरन्धर से धुरन्धर विद्वान भी शल्य-क्रिया और सूचिभेदन (Injection) चिकित्सा पद्धति से उतना ही परहेज करते हैं जितना कोई संत कांचन और कामिनी से परहेज करता है। ऐसी हालत में मेरे जैसे साधारण वैद्य के द्वारा एलोपैथी के आधुनिक प्रगतिशील अंकों को आयुर्वेद में परिणित कर अपना लेने की बात करना किस प्रकार रुचिकर हो सकता है; परन्तु समय की प्रेरणा है कि हमको राष्ट्रोपयोगी आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति बनाने के लिये एलोपैथी के शल्यतन्त्र और काय-चिकित्सा के आधुनिक प्रगतिशील अंशों को आयुर्वेद में सम्मिलित करना ही पड़ेगा। बिना इतना किये हम एलोपैथी चिकित्सा पद्धति को देश के शासन सूत्र से अलग कर आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति का स्थापित नहीं कर सकते।

हजारों वर्षों से भारतीय स्वास्थ्य की रक्षा करने वाले पर वैज्ञानिक वैद्यक शास्त्र को स्वतन्त्र भारत के विधान में स्थान न मिले यह कितने दुःख की बात है। हमारे देश के नेता भी उसे एलोपैथी के सदृश आधुनिक आविष्कारों और साधनों से सुसज्जित नहीं देख रहे हैं। शल्यतन्त्र में दक्ष वैद्यों का अभाव है, सूचीवेधन चिकित्सा में नूतन-तम आविष्कारों का अभाव है जिनके कारण सम्भव है सरकार को आयुर्वेद के द्वारा राष्ट्र के स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति में संदेह हो रहा हो। इसलिये हम वैद्यों को संगठित प्रयत्न द्वारा आयुर्वेद को एलोपैथी से बढ़कर राष्ट्रोपयोगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा पद्धति सिद्ध कर देना चाहिये। यह हम तभी कर सकते हैं, जब हम आयुर्वेद में एलोपैथी के शल्य-तन्त्र और काय-चिकित्सा के प्रगतिशील अंगों को आत्मसात करलें।

यदि वैद्य-समाज मेरी बात समय रहते मान ले तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि सरकार द्वारा आयुर्वेद अविलम्ब राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति घोषित कर दिया जायगा।

आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति घोषित होते ही वैद्यों को वही सम्मान प्राप्त हो जायगा जो आज एलोपैथिक चिकित्सकों को है। वैद्य पद का सम्मान बढ़ाने के लिये हमें शिक्षित वैद्यों को नामधारी वैद्यों के समूह से निकाल कर ऊंचे आसन पर बिठाना होगा। इसके लिये सरकार से अनुरोध करके यह कानून बनवाना पड़ेगा कि केवल सरकार द्वारा प्रमाणित संस्थाओं से वैद्यक परीक्षोत्तीर्ण चिकित्सक ही अपने को वैद्य कहने और कहलाने का अधिकारी रहे और सूचीपत्र पढ़कर वैद्यक व्यवसाय करने वाले, चुटकुलेबाज, अल्पज्ञ वैद्य-नामधारी लोग वैद्य कहलाने के अधिकार से वंचित कर दिये जांय। परन्तु ऐसे वैद्यनामधारी लोगों को किसी प्रमाणित वैद्य के नीचे रहकर उपचारक के नाते औषधि वितरण या साधारण रोगों की चिकित्सा करने का अधिकार रहना आवश्यक है, क्योंकि ग्रामों में जहां कुशल वैद्य प्राप्त नहीं हो सकते वहां ऐसे सूचीपत्री वैद्यों से बहुत कुछ मदद मिल जाती है। केवल उन्हें वैद्य कहने से रोका जाय, क्योंकि सूचीपत्री वैद्यों, वैद्य या वैद्यराज कहने की छूट रहेगी तो शिक्षित वैद्यक व्यवसाइयों की सम्मान-रक्षा के लिये वैद्य नाम का परित्याग करना पड़ेगा जो सिद्धांत से अनुचित मालूम होता है। सूचीपत्र पढ़कर लोग अपने को वैद्य कहने लगते है, इसलिये आयुर्वेदीय कालेज मे निकाले हुए वैद्य अपने को डाक्टर कहलाने में गौरव अनुभव करते हैं। साधारण और अल्पज्ञ व्यक्तियों को वैद्य कहने और कहलाने की छूट होने से वैद्य नाम का आदर लोगों की दृष्टि में क्रमशः कम होता जा रहा है। इसलिये वैद्य नाम की महिमा बनाये रखने के लिये यह आवश्यक हो गया है कि कानून के द्वारा सूचीपत्री वैद्यों को तथा अप्रमाणित पदवी धारियों को वैद्य उपाधि से वंचित कर दिया जाय। मेरे इस सुझाव को यदि विज्ञ वैद्य--समाज स्वीकार कर ले और सरकार को इस प्रकार कानून बनाने के लिये बाध्य करे तो मुझे पूर्ण विश्वास है, कि वैद्यों का सरकार और समाज मे वही आदर होने लगेगा जो आज डाक्टरों का हो रहा है।

इस प्रकार वैद्य उपाधि पर नियंत्रण हो जाने से आयुर्वेद की विशारद, शास्त्री, आचार्य आदि उपाधियां L. M. P., M. B. B. S. आदि के समकक्ष समझी जाने लगें। पाश्चात्य चिकित्सकों के समकक्ष पहुँचने के लिये हमें वैद्य उपाधि का मापदंड ऊंचा करना पड़ेगा और तभी हमारा आयुर्वेद स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय-चिकित्सा-पद्धति का आसन ग्रहण कर सकेगा। इसलिये हम सबको इस प्रयत्न में लग जाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यश ::

ले.–आयुर्वेद विद्यार्थी श्री. ब्रजबिहारी सिंह जी, शिवहर।

भारतीय चिकित्सा-शास्त्र में यश को बहुत बड़ा स्थान दिया गया है। हमारे पूज्य महर्षियों ने यशस्वी होना चिकित्सक का प्रधान गुण माना है। ऐसे चिकित्सकों को 'पियूष पाणि' कह कर सम्बोधित करते हैं। आज भी प्राय: देखा जाता है कि बड़े-बड़े चिकित्सकों को भी लोग अ-यशी कहते हैं। ऐसा क्यों कहा जाता है, चिकित्सकों का यशस्वी अयस्वी होना उसके हाथ की बात है या नहीं इस पर आज हम धन्वन्तरि के पाठकों के सामने अपने कुछ विचार प्रकट करते हैं, आशा है इस पर हमारे गण मान्य चिकित्सक समुदाय भी अपना विचार प्रकट करेंगे। मैंने स्वयं अनुभव करके देखा है अपने हाथ की दी हुई औषधि अधिक लाभप्रद सिद्ध हुई है। जब कभी परीक्षा रूप से हम दूसरे किसी व्यक्ति से औषधि दिलवाते हैं तो उसका लाभ उतना अच्छा नहीं होता। इस से यह बात सिद्ध होती है कि चिकित्सकों का हाथ यशस्वी अयशस्वी हो सकता है।

अब विचारने की बात है कि ऐसा क्यों होता है? हमारा ख्याल है कि इसमें चिकित्सकों की मनोवृत्ति ही मूलभूत कारण है। मनोवृत्ति का असर जरूर पड़ता है, इसको पाश्चात्य मनोविज्ञान वाले भी मानते हैं। औषधि देने के समय चिकित्सक जितनी शुद्ध मनोवृत्ति से औषधि देगा वह उतनी ही लाभप्रद होगी। आज तो अनेकों रोग बिना किसी दवा के भी मन: शक्ति के प्रयोग से आराम किये जाते हैं। जब मनोवृत्ति का इतना प्रबल प्रभाव है तो क्यों नहीं यह चिकित्सकों के हाथ की वस्तु हो सकती है। चिकित्सक-गण आसानी से अपने विचारो में शुद्धता लाकर यशस्वी बन सकते हैं।

प्राचीन काल में औषधियां बेचने के लिये बना कर नहीं रखी जाती थी। जब कोई रोगी चिकित्सक के पास जाता था चिकित्सक गण पहिले उसके रोग की परीक्षा करते थे और तब रोग रोगी की धातु, ऋतु आदि का विचार कर के औषधि की व्यवस्था करते थे। औषधियां कहीं से तैयार नहीं मिल सकती थीं खास कर चिकित्सक महोदय को स्वयं बनाना पड़ता था। इन सम्पूर्ण क्रियाओं में चिकित्सक की मनो-वृत्ति जितनी शुद्ध रहती थी औषधि भी उसी अनुसार फलप्रद हुआ करती थी। सबसे पहिले चिकित्सा केवल बनौषधियों से ही होती थी। कहना बाहुल्य है कि रस-चिकित्सा का प्रचलन पीछे हुआ है। इस चिकित्सा का प्रचलन होने पर ही कुछ--एक अंशो में औषधियां निर्माण कर रखी जाने लगीं। जब तक केवल बनौषधियों के द्वारा चिकित्सा का कार्य होता था बनौषधियों के शीघ्रतया विकृति हो जाने के कारण औषधियों को निर्माण करके रखने में अनेक कठिनाइयां थी। रस का प्रचलन हो जाने पर अवश्य ही चिकित्सक समुदाय धातु भस्मों को तैयार करके रखने लगे और समय पर बनौषधि और धातु भस्मों के योग से औषधि-निर्माण कर लिया करते हैं, पर उस समय भी ऐसी औषधियों का निर्माण प्राय: तभी होता था जब किसी रोगी को उनकी आवश्यकता होती थी इसमें भी मनो-वृत्ति का संयोग अवश्य हुआ करता था।

अतएव चिकित्सकों के लिये मेरे विचारानुसार अपनी मनो-वृत्ति में हर समय हर प्रकार शुद्धता लाना यश का कारण बन सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस-गुण-वीर्य-विपाक और प्रभाव

श्री पं. कृष्ण प्रसाद त्रिवेदी B.A. आयुर्वेदाचार्य

[अङ्क ६ से आगे]

रसों की अन्य विशेषतायें—

रस-गुण वर्णन करने के पश्चात् यह बता देना आवश्यक है कि कौन से मधुरादि रस युक्त पदार्थ किस विशेष कार्य को करते हैं। उदाहरणार्थ—

पुराने चावल, जौ, मूंग, गेहूं, शहद, मिश्री और जंगली जीवों का मांस इन्हें छोड़कर अन्य सब मधुर रस वाले पदार्थ प्रायः कफ को करने वाले हैं। आमला और अनार (दाड़िम) को छोड़ शेष सम्पूर्ण अम्ल रस वाले पदार्थ प्रायः पित्त को उत्पन्न करने वाले हैं। सैंधव नमक को छोड़कर शेष सब लवण नेत्रों को अहितकारी हैं। सोंठ, पीपल लहसुन, परवल और गिलोय को छोड़ शेष सर्व कटु या चरपरे पदार्थ वात को कुपित करने वाले तथा वीर्य को नुकसान पहुंचाने वाले हैं। हरड़ को छोड़ शेष समस्त कषैले रस वाले पदार्थ शरीर को स्तंभन करने वाले हैं।

यह रसों की सामान्य विशेषता का संक्षिप्त वर्णन हुआ, किन्तु इसमें भी विशेष बात यह है कि अन्य रसों का संयोग होने से अन्यान्य गुण प्रकट होते हैं, जैसे कि मधु के साथ घृत मिलने से विष रूप होता है या जैसे सर्प दंश पर विष अमृत के समान कार्य करता है कहा है—

रसानां योगतस्तु स्यादन्य एव गुणोदयः।
संयोगाद्विषतां याति सममाश्येन माक्षिकम्।
अमृतत्वं विषं याति सर्पदष्टस्य वै यथा ॥

— भा॰ प्र॰।

रसों का दोषों से सम्बन्ध—

रस तो ६ हैं और दोष (वात, पित्त और कफ) तीन ही हैं। इनका परस्पर सम्बन्ध किस प्रकार होता है, इस बात को समझ लेना अत्यावश्यक है। चरक जी का स्पष्ट कथन है कि—

"तत्र दोषमेकैकं त्रयस्त्रयो रसाजन यन्ति, त्रयस्त्रयश्चोप शमयन्ति। इत्यादि (च॰ विमान स्थान)

अर्थात्—एक-एक दोष को तीन-तीन रस कुपित तथा शान्त करते हैं। जैसे मधुर, अम्ल और लवण रस वायु को शांत करते हैं, शेष अन्य अर्थात् कटु, तिक्त और कषाय रस वायु को कुपित करने वाले होते हैं। पित्त दोष को मधुर, तिक्त और कषाय रस शांत करते हैं, शेष तीन रस उसे कुपित करते हैं या बढ़ाते हैं। कफ दोष को कटु, तिक्त और कषाय रस शांत करते हैं तथा शेष तीन रस उसे कुपित करते हैं। तथा—

"स्वाद्वम्ल लवणः वायु कषायः स्वादु तिक्तका।
जयन्ति पित्तं, श्लेष्माणं कषायः कटु तिक्तका ॥"

आगे दिये नक्शे से यह विषय और भी स्पष्ट हो जायगा।

नोट— ध्यान रहे ये रस उक्त प्रकार से दोष प्रकोपन और शमन कार्य तब ही कर सकते हैं, जब कि उनके मार्ग में कोई अन्य रुकावट न हो, अन्यथा वे विपरीत कार्य कर बैठते हैं। जैसे ऊपर कहा गया है कि कटु, तिक्त और कषाय रस युक्त द्रव्य वायु प्रकोपक हैं, किन्तु अर्क,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नक्शा नं० १

दोष	प्रकोपक रस	शामक रस
१—वात	कटु, तिक्त और कषाय	मधुर, अम्ल और लवण
२—पित्त	अम्ल, लवण, कटु	मधुर, तिक्त, कषाय
३—कफ	मधुर, अम्ल, लवण	कटु, तिक्त, कषाय

नक्शा नं० २

रस	दोष या दोषों को बढ़ाता है	दोष या दोषों को घटाता है
१—मधुर	कफ	वात तथा पित्त
२—अम्ल	पित्त तथा कफ	वात
३—लवण	,,	,,
४—तिक्त	वात	कफ तथा पित्त
५—कटु	वात तथा पित्त	कफ
६—कषाय	वात	कफ तथा पित्त

अगुरु, गिलोयादि द्रव्य तिक्त रस युक्त होते हुए भी वात को प्रकुपित नहीं करते प्रत्युत् शांत करते हैं। कारण इनमें ऐसी उष्ण-वीर्यता है जो उनके द्वारा वातोत्पादक कार्य नहीं होने देता।

यह भी ध्यान रहे कि उक्त तीन २ रसों के सेवन से जो २ दोष कुपित होते हैं। प्रायः उन्हीं को शेष तीन रस शांत करते हैं। अन्य कारण जन्य दोषों को वे निश्चय ही शांत करते हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। जैसे जागरणादि कारणों से प्रकुपित वायु को मधुर, अम्ल लवण रस शांत कर ही देगी ऐसा निश्चित नहीं है, उसके लिये तो निद्रा आदि शमन-क्रिया का अवलम्ब लेना होगा।

उक्त तीन २ रसों में से मुख्यतया कौन २ रस कि दोष को अधिक बढ़ाता या अधिक शांत करता है। ऐसा यदि पूछा जाय तो कह सकते हैं कि—कषाय रस वात को सबसे अधिक बढ़ाता है, और अम्ल रस सबसे अधिक शांत करता है। कटु रस पित्त को अधिक बढ़ाता है, और मधुर रस अधिक शांत करता है। मधुर र कफ को अधिक बढ़ाता है, तथा कटु रस उसे अधिक शांत करता है।

शंका हो सकती है कि उक्त रस विशेष ही क्यों वातादि दोष विशेष को अधिक बढ़ाता या शांत करता है? इस शंका का समाधान, वातादि दोषों की और छःहों रसों की पांच-भौतिक रचना ध्यान में लाने से शीघ्र हो जाता है। उदाहरणार्थ वात के उपादान में वायु और आकाश भूत का वैशिष्ट्य है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इधर वात वर्धक या प्रकोपक रस–कटु, तिक्त और कषाय के उपादान में क्रमशः वायु-अग्नि, वायु-प्रकाश, और पृथ्वी-वायु भूतों का वैशिष्ट्य है। अब इन भूतों के गुणों को देखिये और इधर 'रूक्ष-शीतो लघु सूक्ष्म चलोऽथ विशदः खरः' इन वात दोष के गुणों पर ध्यान दीजिये तो पता चलेगा कि इनमें शीत वा शैत्य गुण पृथ्वी का है (जो कि प्रधान है) और शेष रूक्षतादि गुण वायु भूत के हैं। अतः जिस रस के उपादान में वायु और पृथ्वी की विशेषता हो वह रस अधिक वात-वर्धक होना चाहिये, और ऐसा रस कषाय रस ही है। इसी प्रकार वात को शमन करने वाले रसों में अम्ल रस को विशेष स्थान देना होगा। कोई २ कटु रस को विशेष वात प्रकोपक और मधुर रस को विशेष शामक मानते हैं। इस प्रकार मतवैचित्र सब रसों के विषय में हैं। अधिक विस्तार करना व्यर्थ है।

दोषों के कारण ऋतुओं से भी रसों का सम्बन्ध इस प्रकार है—

वातदोष का संचय ग्रीष्म में और प्रकोप वर्षा ऋतु में होता है। अतः ग्रीष्म और वर्षा में मधुर, अम्ल और लवण रसों का सेवन लाभकारी होता है। पित्त दोष का संचय वर्षा में और प्रकोप शरद ऋतु में होता है। अतः वर्षा ऋतु में उक्त मधुर, अम्ल और लवण रसों के साथ २ तिक्त और कषाय रसों का तथा शरद ऋतु में मधुर, तिक्त और कषाय रसों का सेवन हितकारी है। कफ दोष का संचय हेमंत में और प्रकोप वसंत ऋतु में होता है। अतः इन दोनों ऋतुओं में कटु, तिक्त और कषाय रसों का सेवन श्रेयस्कर है।

रस विभाग कल्पना—

हम ऊपर प्रारंभ में ही कह आये हैं कि द्रव्य की जिस सामर्थ्य से शरीर में जो कुछ कार्य होता है वही वीर्य कहलाता है; तथा इस वीर्य का आश्रय है रस, (वीर्यं नास्ति बिना रसात्) जिसका कि हमने वर्णन यहां तक किया है। इस प्रकार का वीर्य जिसमें रहता है उस रस अर्थात् द्रव्यान्तर्गत् सूक्ष्म कार्यकारी एवं सामर्थ्य-संपन्न भाग के आयुर्वेदीय वर्णन पर जरा गहराई से विचार करने पर उसके मुख्य दो ही भेद नजर आते हैं।

यद्यपि उसके मधुरादि ६ प्रकार कहे गये हैं। तथापि उन ६ रसों को मुख्यतया दो भागों में विभक्त कर सकते हैं—(१) मधुर, अम्ल और लवण इन तीन रसों का एक भाग जो कि संयोजक स्वरूप का अर्थात् न्यूनाधिक प्रमाण में उत्पादक एवं संवर्धक गुण युक्त है। और (२) कटु, तिक्त, कषाय इन तीन रसों का दूसरा भाग जो वियोजक स्वरूप का अर्थात् न्यूनाधिक प्रमाण में विनाशक एवं क्षयकारक गुणयुक्त है।

ध्यान रहे पांच भौतिक द्रव्य ही रस के आश्रय स्थान हैं। (रसो नास्ति बिना द्रव्यात्), तथा यह आश्रय प्रकृति, विकृति, विचार देश और काल के आधीन है। रस के आश्रयभूत द्रव्य असंख्य होने पर भी आश्रयभेद से रस असंख्य नहीं हो सकते। और भिन्न २ परिमाण से परस्पर संयोग हेतु रस के अनेक भेद होने पर भी षड् रस का अनिर्द्धारण नहीं होता। शास्त्रों में द्रव्य, देश और काल के प्रभाव के कारण ६ रसों के ६३ भेदों की कल्पना की गई है। यहां लेख विस्तार भय से उन्हें नहीं लिखते; हां इतनी सूचना किये देते हैं कि ये रस तर, तम भेद से तथा आश्रय-गुण-कर्म-स्वभाव और अनुरस कल्पना से असंख्य भेदों को प्राप्त हो सकते हैं। किंतु वैद्य को चाहिये कि दोष भेद से एवं औषध कल्पना भेद से जिन रसों का जहां पर उचित उप-योग हो वहां पर उनका उपयोग करें। (रसों के ६३ भेदों की कल्पना परिशिष्टि में नक्शा द्वारा दी गई है)

रस और अनुरस—

जिसकी व्यक्त या स्पष्ट प्रतीति होती है वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस है, तथा जो अव्यक्त या अस्पष्ट प्रतीत हो अथवा अन्त में व्यक्त हो वह अनुरस है। जैसे हरड़ को चबाने पर पहले प्रधानतः कषाय रस प्रतीत होता है; फिर अंत में मधुर की प्रतीति होती है। अतः हरीतकी में प्रधान रस कषाय कहलायगा और मधुर रस जो कि अप्रधान है अनुरस कहा जायगा। जैसा कि वाग्भट जी का कथन है—

"व्यक्तो रसः स्मृतः । अव्यक्तोऽनुरसः किंचिदन्ते व्यक्तोऽपिचेष्यते ॥"

ध्यान रहे, यह अनुरस कुछ उक्त छः रसों से भिन्न नहीं है, इनका समावेश प्रधान रसों में ही होता है। अर्थात् द्रव्यों में एक ही रस प्रधान हुआ करता है, शेष अनुरस होते हैं, जो अव्यक्त हुआ करते हैं या रस समाप्ति के पश्चात् प्रतीत होते हैं।

अब हम वीर्य के विषय में लिखेंगे—

वीर्य वर्णन

"येन कुर्वन्ति तद् वीर्यम्" -सुश्रुत।

द्रव्य जिसके द्वारा अपनी क्रिया सम्पन्न करता है उसे वीर्य कहते हैं। यह रस रूपी द्रव्य का कार्यकारी सामर्थ्य है। शरीर एवं सर्व सृष्ट पदार्थों में यद्यपि अनेक असंख्य क्रियायें दिखाई देती हैं। उन सबका समावेश उत्पत्ति और विनाश अथवा वृद्धि और ह्रास इन दो क्रियाओं में हो जाता है। इन दोनों क्रियाओं के द्वारा संयोग और वियोग रूपी कार्य क्रमशः होता रहता है। अर्थात उत्पत्ति विनाशात्मक या वृद्धि क्षयात्मक द्विविध कार्यों की पूर्ति, संयोग और वियोगात्मक द्विविध द्रव्यान्तर्गत सामर्थ्य के द्वारा होती रहती है, तथा ये ही द्रव्यान्तर्गत रसों के दो प्रकार के वीर्य कहलाते हैं।

उक्त संयोजक सामर्थ्य को ही शास्त्रीय भाषा में शीत वीर्य और वियोजक सामर्थ्य को उष्ण वीर्य ऐसा नाम दिया गया है। किसीभी द्रव्य का शरीरिक परिणाम शीत अथवा ऊष्ण वीर्य रूप में ही होता है।

वीर्यं यावदधीवासान्निपाताच्चोपलभ्यते ।"

- चरक।

अर्थात्—किसी द्रव्य के वीर्य का पता हम शरीर के साथ उसका निपात या संयोग के द्वारा लगा सकते हैं। जैसे यदि कालीमिर्च को जीव पर रक्खा जाय तो रखते ही उसके तीक्ष्णत्व या उष्णत्व वीर्य का पता लग जाता है। और अधिवास के द्वारा वीर्य का ज्ञान इस प्रकार होता है, जैसे मछली जल में रहती है तो वह शीत वीर्य होनी चाहिये, किंतु उदरस्थ होने पर (उसे खाने-पर) वह शरीर में गर्मी पैदा करती है, इससे उसके उष्ण वीर्य का पता चलता है। अतः शास्त्रों में वीर्य का लक्षण यही दर्शाया गया है कि—

"येन कुर्वन्ति तद वीर्यम्"

अर्थात् द्रव्य जिसके द्वारा अपने प्रभाव को दर्शाता है उसे वीर्य कहते हैं। यदि किसी द्रव्य में वीर्य नहीं है या वह वीर्य-रहित है तो वह कोई भी प्रभाव नहीं दिखा सकता; जैसा कि चरकाचार्य जी का कथन है—

"नावीर्यं कुरुते किंचित् सर्वा वीर्य कृताहिसा ।"

चरक टीकाकार चक्रपाणिदत्त जी ने वीर्य की व्याख्या को और भी स्पष्ट कर दिया है। वे कहते हैं कि द्रव्यों में जो गुरु, लघु, शीतादि २० गुणों का वर्णन शास्त्रों में किया गया है, उन गुणों में से किसी गुण द्वारा अथवा रस, विपाक या प्रभाव द्वारा द्रव्य जिस तर्पण, आल्हादन शमनादि कार्य को करता है, उस कार्य के लिये द्रव्य का वह गुण ही वीर्य कहलाता है ×

× 'येनेति रसेन वा विपाकेन वा प्रभावेण वा गुर्वादि भिरत्वादि भिर्वा गुणैर्या तर्पणाल्हादन शमनादि रूपा-कृत्स्ना क्रियते इत्युपदिश्यते तस्यां क्रियायां तद्रसादि वीर्य"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंतु हमारे विचार से उक्त व्याख्या से वीर्य का सामान्य अर्थ मात्र प्रकट होता है। जैसे कि इसी व्याख्या के अनुरोध से सामान्य अर्थ में कहा जाता है कि 'वर्षा में औषधियां तरुण होने से अल्पवीर्य होती हैं। फिर जैसे २ समय बीतता है उत्तरोत्तर अधिक वीर्य वाली होती जाती हैं, इत्यादि। यहां प्रकरणानुसार 'वीर्य' की योग्य पारिभाषिक लक्षणात्मक व्याख्या तो यों हो सकती है—रस, विपाक प्रभाव के अतिरिक्त जिस द्रव्य के जिस गुण द्वारा या द्रव्य के रस स्थित जिस सामर्थ्य या प्रभाव के द्वारा चिंत्य या अचिंत्य क्रियायें होती हैं वही उसका वीर्य कहलाता है। जैसा कि कहा है—

"भूतप्रासादतिशयो द्रव्ये पाके रसे स्थितम्।
चित्याचित्य क्रिया हेतु वीर्यं धन्वन्तरेर्मतम्॥

अथवा—

"रस विपाक प्रभावातिरिक्ते प्रभूत कार्यकारिणी गुणे वीर्यमिति।"

उदाहरणार्थ आमला में अम्ल रस होने से रस की दृष्टि से आंवला पित्त वर्धक होना चाहिये था किन्तु अपनी संयोजक शक्ति या शीत गुण के कारण वह पित्त-शामक है अर्थात् शीत वीर्य है। इसी प्रकार गिलोय के (गुडुची) कटु तिक्त कषाय रस युक्त होने से वात प्रकोपक कार्य करना चाहिये, किंतु वह अपने उष्ण और स्निग्ध गुण से वात-शामक कार्य करती है, अतः वह उष्ण वीर्य कहलाती है।

इसी प्रसङ्ग में सुश्रुत जी के ये कथन ध्यान रखने योग्य है—

ये रसाः वातशमना भवन्ति यदि तेषु वै।
रौक्ष लाघव शैत्यानि न ते हन्युः समीरणम्॥
ये रसाः पित्तशमना भवन्ति यदि तेषु वै।
तैक्ष्ण्यौष्ण्य लघुताश्चैव न ते तत्कर्म कारिणः॥
ये रसाः श्लेष्म शमनाः भवन्ति यदि तेषु वै॥
स्नेह गौरव शैत्यानि न ते तत्कर्म कारिणः॥

अर्थात् जो रस वात शामक हों, यदि उनमें रूक्षता, लघुता या शीतलता ये गुण हों तो वे वात को शमन नहीं करते, किन्तु प्रायः बात को और भी बढ़ा देते हैं। जो रस पित्त शामक हों यदि उनमें तीक्ष्णता, उष्णता या लघुता गुण की प्रधानता हो तो वे पित्त को शांत नहीं करते, प्रत्युत् प्रायः पित्त को प्रकुपित कर देते हैं। जो रस कफ शामक हों, उनमें यदि स्निग्धता, गुरुता या शैत्य गुण की विशेषता हो तो वे कफ को शांत नहीं कर सकते, बल्कि वे कफ को और भी परिवर्धित कर देते हैं।

उदाहरणार्थ—गन्ना या ईख मधुर रस होने से वात शामक होना चाहिये, किन्तु शीत गुण विशिष्ट होने से वह वात वर्धक ही होता है। मकोय का रस तिक्त है, अतः वह पित्त शामक होना चाहिये था। किन्तु उष्ण वीर्य होने से पित्त को बढ़ाती है। मूली का रस कटु होने से, उसे कफ को शांत करना चाहिये, किन्तु अपने स्निग्ध गुण के कारण वह कफ को और बढ़ाती है।

वीर्य भेद—

वीर्य के शीत और उष्ण ये हो दो प्रधान भेद हैं। सुश्रुत में इसका कारण दर्शाते हुए कहा गया है कि जैसे जगत में अनेकानेक पदार्थों के होते हुए भी वे अग्नि और सोम से व्यतिरिक्त नहीं है, ऐसे ही द्रव्य भी भिन्न २ अनेकात्मक होते हुए भी शीत और उष्ण भेद से दो प्रकार के वीर्य से युक्त माने गये हैं। वाग्भट जी ने भी इसी कथन का समर्थन किया है।

'उष्णं शीतं द्विधैवाऽन्ये वीर्य माचक्षतेऽपिच।
नानात्मकमपि द्रव्यमग्निषोमौ महाबलौ॥"

वीर्य के उक्त प्रमुख दो भेदों के साथ ही में और ६ भेद अन्य आचार्यों ने माने हैं। जैसे

'मृदु तीक्ष्ण गुरु लघु स्निग्ध रूक्षोष्ण शीतलम्।
वीर्यमष्टविधं केचित् केचिद् द्विविधमास्थिताः॥ —चरक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाग्भट जी भी कहते हैं—

वीर्यः पुनर्वदन्त्येके गुरु स्निग्ध हिमं मृदु ।
लघु रूक्षोष्ण तीक्ष्णं च तदेवं मतमष्टधा ॥

हमारे मत से इस मत-भिन्नता का समीकरण इस प्रकार किया जा सकता है। स्निग्ध, गुरु, मृदु रूक्ष लघु और तीक्ष्ण ये जो ६ प्रकार हैं वे मुख्य द्विविध शीत और उष्ण वीर्य के तरतम भाव के दर्शाने वाले हैं, उनसे भिन्न नहीं है। जैसे—

१—स्निग्ध—यह संयोग का पूर्ण रूप अर्थात् शीत वीर्य का पूर्ण रूप या दृढ़ संघात दर्शक है।

२—जिनका संयोग होता है उनका अर्थात् संयोजित होने वाले अणुओं का पारस्परिक स्थिरीकरण कार्य उनके गुरुत्व के द्वारा होता है; जिसमें जितना ज्यादा गुरुत्व होगा वह उतना ही अधिक स्थिर होगा अर्थात् उसकी शीत वीर्यता उतनी ही अधिक होगी।

३—साहचर्य या संयुक्त भाव से रहने के लिये सहवास का सुखदाई होना आवश्यक है; अर्थात् वह सुख स्पर्शल होना चाहिये। यही शीत वीर्य का उपासक मृदु गुण है।

एवं शीत वीर्य के ही तरतम भाव दर्शक ये त्रिविधा प्रकार हुये। इसी प्रकार उष्ण वीर्य के भी रूक्ष, लघु और तीक्ष्ण ये तीन प्रकार हैं। जैसे—

(१) रूक्षता - पूर्ण विरलत्व या वियोग का या उष्ण वीर्य का पूर्ण रूप दर्शक गुण है।

(२) लघुता—(हलकापन) यह स्थिरत्व के अभाव का द्योतक होने से उष्ण वीर्य का विशेष गुण है।

(३) लघुता आने के लिये उष्ण वीर्य पदार्थों की न्यूनाधिक प्रमाण में तीक्ष्णता अर्थात् असहिष्णुता भी देखी जाती है।

उक्त विवेचन को विशेष-संक्षेप में यों भी दर्शा सकते हैं कि स्निग्धता यह शीत वीर्य का पूर्ण कार्य-रूप है, तथा इस रूप के प्राप्त होने में उसे मृदुता और स्थिरता रूप अवस्थान्तर की प्राप्ति होती रहती है। तैसे ही रूक्षता यह उष्ण वीर्य का कार्य रूप है तथा तीक्ष्णता और लघुता ये उसकी बीच की अवस्थायें हैं। इस प्रकार प्रत्येक द्रव्य में कार्यकारी कारण रूप सामर्थ्य या वीर्य, स्निग्धता या रूक्षता रूपी कार्य और अवस्थान्तर भिन्न २ होने से उसके कार्य कारणों में तरतम भाव रूपी भिन्नत्व दृष्टिगोचर होता है। इसीलिये प्रत्येक द्रव्य जो और जितना कार्य करता है वह उसका वीर्य ही मान लिया जाता है तथा द्रव्यों के अनुसार वीर्यों को भी असंख्य मान लिया जाता है। किन्तु ऐसा मानना ठीक नहीं। इन असंख्य वीर्यों का समावेश गुरु, लघु आदि ८ गुण रूप वीर्यों में और फिर इन आठों का समावेश दो में उष्ण और शीत में उक्त प्रकार से किया जा सकता है। शार्ङ्गधर जी का भी यही कथन है—

"वीर्यं उष्णं तथा शीतं प्रायशो द्रव्य संश्रयम् ।
तत्सर्वमग्नीषोमीयं दृश्यते भुवनत्रये ॥
अत्रैवान्तर्भाविष्यन्ति वार्याण्यन्यानि यान्यपि ॥"

अब प्रश्न यह है कि उन सबका समावेश केवल गुरु, लघु आदि आठ गुणों में ही क्यों किया जाय? स्थिर, खर, सान्द्र आदि भी तो द्रव्यों के विशेष गुण हैं, उन सबको छोड़कर केवल गुरु, लघु, मृदु, तीक्ष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, उष्ण और शीत इन आठ को ही वीर्य क्यों माना जाय? इसका समाधान यों है कि गुरु, लघु आदि आठ गुण जिस प्रकार रसादि को अभिभूत कर अपना विशेष कार्य करते हैं, तैसे स्थिर, खर, सान्द्र आदि नहीं कर सकते। अतएव गुरु, लघु आदि आठों की गणना वीर्य में की गई है जो कि वीर्य के लक्षण से स्पष्ट है।

"एतानि वीर्याणि स्वबल गुणोत्कर्षाद्रसमभिभूयात्मकर्म कुर्वन्ति ॥"

—सुश्रुत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव यह है कि जो दूसरे के कार्य को होने नहीं देता और अपने कार्य को करके दिखाता है, ऐसे बलवान गुण को ही वीर्य कहा जाता है।

वीर्य गुण—

(१) उष्ण वीर्य वात,कफ नाशक एवं पित्त वर्धक है, यह भ्रम, तृष्णा, ग्लानि, स्वेद, दाह, शीघ्रपाक आदि विकारों को करता है।

(२) शीत वीर्य—पित्त शामक और वात कफ वर्धक है, आल्हादक एवं शरीर में शीतता तथा दाहादि की शांति कारक, स्तम्भक और रक्त विकृति को दूर करता है।

(३) स्निग्ध और गुरु—वात नाशक और कफ वर्धक है।

(४) रूक्ष और लघु—कफ शामक एवं वायु-वर्धक है।

(५) मृदु-पित्त शामक और कफ प्रकोपक होता है।

(६) तीक्ष्ण—कफ शामक एवं पित्त प्रकोपक है।

उष्ण और तीक्ष्ण अग्नि गुण भूयिष्ठ है। शीत और पिच्छिल अम्बु गुण भूयिष्ठ है। गुरु और स्निग्ध—पृथ्वी एवं अम्बु गुण भूयिष्ठ है। मृदु—अम्बु एवं आकाश गुण भूयिष्ठ है। रूक्ष—वायु गुण भूयिष्ठ है। विशद—पृथ्वी और वायु के गुणों के उत्कर्ष से होता है।

द्रव्य में वीर्य की पहिचान—

"शीतं वीर्येण यद् द्रव्यं मधुरं रस पाकयोः।
तयोरम्लं यदुष्णं च यद् द्रव्यं कटुकं तयोः॥"—चरक।

जो द्रव्य रस तथा विपाक में मधुर होंगे वे शीत वीर्य जानना और जो द्रव्य रस तथा विपाक में कटु अथवा अम्ल होंगे उन्हें उष्ण वीर्य जानना चाहिये। चन्दन, शर्करा, शतावरी, कांकोली, गोखरू आदि द्रव्य शीत वीर्य हैं तथा काली मिर्चे पिप्पली, सोंठ, चित्रक, तुलसी आदि उष्ण वीर्य द्रव्य जानने चाहिये। यदि हमें किसी द्रव्य के रस विपाक के विषय में पूर्णतया ज्ञान हो तो हम उसके वीर्य को सुगमता से जान सकते हैं। किन्तु कुछ द्रव्य ऐसे भी हैं जिनमें उपर्युक्त नियम लागू नहीं होता। विपरीतता देखी जाती है। जैसे जलज तथा जल समीपवर्ती जीवों का मांस रस में मधुर होते हुये भी वीर्य में उष्ण देखा जाता है।

जब तक द्रव्य में वीर्य नहीं है, तब तक वह अपना कोई भी प्रभाव नहीं दिखा सकता। या यों कहो कि किसी भी द्रव्य की शक्ति उसके वीर्य पर ही निर्भर है। द्रव्यों की क्रियात्मक शक्ति दीर्घ समय, वर्षा, जल, वायु, देश ऋतु आदि के प्रभाव से हीन वा नष्ट हो जाती है। तब वे हीन वीर्य द्रव्य कहे जाते हैं क्योंकि वे अपने प्रभाव को सर्वथा या कम मात्रा में भी नहीं दिखा सकते, अर्थात् द्रव्यों का क्रियात्मक शक्ति से शून्य हो जाना ही हीन-वीर्य कहलाता है।

अब आगे विपाक के विषय में लिखेंगे।

[क्रमशः]

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ की निर्मित
खाजरिपु
खाज खुजली को लगाते लगाते ठीक कर देता है
आपके यहां के दूकानदारों के यहां मिल जायगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्त्रिक ज्वर की चिकित्सा पद्धति ।

श्रीयुत वैद्य ओमदत्तराय जी B. A., A. V. S. आयुर्वेदाचार्य,
दिगम्बर जैन होस्पीटल, कोटा ।

———:———

इस ज्वर में केवल भोजन-प्रणाली ही रोग ग्रस्त नहीं होती, अपितु रक्त में व्यापी संक्रमण होता है। परिणामतः विष का प्रभाव रोगी के हृदय, मस्तिष्क तथा अन्य मर्म अङ्गों पर पड़ना बहुत सम्भव है। इसलिए रोगी की परिचर्या तथा पथ्य पर विशेष ध्यान देना नितान्त आवश्यक है।

परिचर्या—

रोगी को एक पृथक स्वच्छ कमरे में जिसमें प्रकाश तथा वायु का प्रवेश सम्भव हो, रखना चाहिये। उस कमरे में अन्य अनावश्यक चीजें नहीं रखनी चाहिए। रोगी के बर्तन आदि अलग रखने चाहिए। चूंकि रोगी के मल तथा मूत्र से संक्रमण का भय रहता है, अतः इन्हें फिनायल अथवा अन्य जीवाणुहर द्राव से जीवाणु-विहीन करना चाहिए। मल-मूत्र विसर्जन के लिए रोगी के पास ही बैडपैन तथा यूरिनल का प्रबन्ध होना चाहिए। अभिप्राय यह है कि रोगी को हर प्रकार से पूर्ण बिश्राम देना चाहिए। ज्वरावधि तक रोगी को बिस्तर में ही सीमित रहना चाहिए। किसी प्रकार का मानसिक अथवा शारीरिक श्रम नहीं करना चाहिए। रोगी को प्रतिदिन दिन में एक अथवा दो बार कोष्ण जल से स्पञ्ज करना चाहिए। निर्बल रोगियों के लिए पेय पात्र (Feeding Cup) तथा निष्ठीवन पात्र (Spitting) का भी प्रबन्ध होना चाहिए।

पथ्य—

कोई ठोस वस्तु किसी भी अवस्था में नहीं देनी चाहिये। ठोस वस्तु का निषेध तो यहां तक लिखा है कि कोई भी वस्तु ऐसी नहीं देनी चाहिए जो शीघ्रता से बारीक छलनी में से छन न जावे। आहार में दूध (इसे रोगी की जरण शक्ति को दृष्टि में रखते हुए हलका किया जा सकता है) मौसम्बी का रस, यवोदक, चाय, काफी और तक्र देना चाहिए। प्रसङ्गवश यहां पर यह कहना अनुचित न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा कि तक्र में आन्त्रिक ज्वर जीवाणु तथा प्रवाहिका जीवाणु जल्दी हो मर जाते हैं। मांसाहारी रोगी को अण्डे की सफेदी से बना जल (एल्ब्यूमन-वाटर) मांस, चाय तथा कुक्कुट, शावक मांस-यूष देना चाहिए। इसके अतिरिक्त ग्लूकोज़ जल, अथवा वासा पानक प्रचुर मात्रा में पिलाना चाहिए। दूध का प्रयोग तृषा शान्ति के लिए नहीं करना चाहिए, अपितु निश्चित् मात्रा में नियत समयों पर देना चाहिए।

प्रतिदिन मल का निरीक्षण करना चाहिए। यदि उसमें अनपच दही दृष्टिगत हो तो यह इस बात का प्रमाण है कि दूध बार २ अथवा अधिक मात्रा में दिया जा रहा है और रोगी का आमाशयिक रस ठीक तरह से कार्य नहीं कर रहा है। ऐसी अवस्था में दूध को परिमित मात्रा में चूर्णोदक अथवा यवोदक मिलाकर देना चाहिए। मांस, चाय बहुत कम देनी चाहिए, अन्यथा इससे अतिसार की आशङ्का बनी रहती है। स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। कमरे को हवन सामिग्री धूप अथवा अगर बत्ती से सुवासित करना चाहिये।

औषध-चिकित्सा—

इस ज्वर में कोई विशिष्ट औषध चिकित्सा नहीं की जाती। किन्तु ज्वर को नियन्त्रित रखने तथा हृदय की शक्ति को बनाए रखने के लिए औषध उपचार अवश्य करना चाहिए इसके लिए संजीवटी वटी, त्रिभुवनकीर्ति रस, आनन्द भैरव, अमृतासत्व प्रवाल भस्म, प्रवाल पिष्टि, अनविधे मोती तथा अन्य कैलशियम के योग वासापानक, अर्क गाजवां, अर्क दशमूल, तुलसी स्वरस आदि के अनुपान से दिये जाते हैं। आवश्यकतानुसार २५ प्रतिशत ग्लूकोज का ५० सी० सी० शिरागत सूचीवेध प्रतिदिन देना चाहिए। पिड़काओं को सुगमता से निकालने के लिए लवङ्ग, द्राक्षा जल अथवा खूबकला, द्राक्षा जल प्रचुर मात्रा में पिलाना चाहिए। रोगी के बिस्तर पर खूबकला डालने से दाने शीघ्रता से निकल आते हैं।

विबन्ध—

यदि मलावरोध हो तो एक दिन छोड़कर ग्लिसरीन सिरिञ्ज देना चाहिए। शिशु को ग्लिसरीन की बत्ती लगानी चाहिए। ध्यान रहे कि इस ज्वर में तीव्र विरेचक औषधि कदापि नहीं देनी चाहिए।

अतिसार—

यदि अतिसार हो तो महागन्धक रस, कर्पूर रस तथा पर्पटी का प्रयोग बिल्व पानक के साथ करना चाहिए। साथ ही कुटज क्वाथ में अहिफेन मिलाकर ३-४ दिन तक वस्ति देनी चाहिए। पथ्य में तक्र, चाय, यवोदक, दाड़िम-सेब स्वरस और दुग्ध मस्तु देना चाहिए।

रक्त स्राव—

रक्त स्राव होने पर भी यही चिकित्सा करनी चाहिये। साथ ही अहिफेन के योग त्वचागत सूचीवेध द्वारा देने चाहिये। तथा उदर पर बर्फ की टोपी रखनी चाहिये।

आध्मान—

यदि आध्मान या अफारा हो तो पथ्य वही देना चाहिए, जो अतिसार की अवस्था में बताया जा चुका है। उदर पर बोरिक तथा तारपीन तैल को पानी में औटाकर व उसमें पट्टी को भिगो तथा निचोड़ कर उससे सेंक देना चाहिए। दारुपद लेप अथवा हिंगु लेप कुछ काल के लिए करना चाहिए अथवा एक कच्ची पकी मोटी रोटी को एक तैल से स्निग्ध करके उदर पर बांधकर सेंक करना चाहिए तथा उष्ण जल की बोतल रखनी चाहिए।

क्षीण नाड़ी—

यदि नाड़ी क्षीण अथवा हृदय निर्बल हो कस्तूरी, मुक्ता, स्वर्ण तथा विषमुष्टि कर्पूर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने चाहिए। अर्जुनारिष्ट, दशमूलारिष्ट तथा अश्वगन्धारिष्ट थोड़ा २ देना चाहिए।

फुफ्फुस लक्षण—

यदि फुफ्फुस प्रदाह आदि के लक्षण विद्यमान हों तो कस्तूरी, अभ्रक, चन्द्रोदय, स्वर्ण, मुक्ता के योग दिये जाते हैं। महानारायण तैल, विषगर्भ तैल तारपीन अथवा कर्पूर प्रलेप आदि से वक्षः-प्रदेश पर अभ्यङ्ग तथा स्वेद करना चाहिए। जल कोष्ण देना चाहिए।

अत्युच्च तापमान—

यदि ताप परिमाण अत्युच्च हो तो साधारण जल से प्रति ४ घण्टे के बाद स्पञ्ज करना चाहिए। सिर पर वर्फ की टोपी अथवा सिरका, गुलाबजल की पट्टी रखनी चाहिए। षडंग पानीय अथवा अर्क गाजवां अथवा अर्क दशमूल ग्लूकोज़ मिलाकर थोड़ी २ देर बाद पिलाना चाहिए।

मूत्ररोध—

मूत्ररोध होने पर श्वेत पर्पटी, यवक्षार की कुछ मात्रायें जल के साथ देनी चाहिए। पेड़ू प्रदेश पर कलमी शोरा तथा कर्पूर का लेप करना चाहिए। यवोदक और चाय पिलाना चाहिए। ऐसा करने पर भी मूत्र प्रवर्तन न होने पर मूत्रशलाका प्रविष्ट करके मूत्र विसर्जन करा लेना चाहिए।

मुखपाक—

मुख पाक में मुख गण्डूष अथवा त्रिफला क्वाथ में मधु डालकर दिन में ५-६ बार गण्डूष कराने चाहिए। अथवा टंकण सर्जक्षार से गण्डूष कराने के पश्चात् बोरिक ग्लिसरीन अथवा टंकण मधु लगाना चाहिए।

वमन

बार २ वमन होने पर अमृतधारा, कर्पूरासव; अर्क सौंफ, अर्क एला, अर्क पोदीना आदि का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही आमाशय प्रदेश पर राजिका लेप करना चाहिए।

प्रलाप आदि—

प्रलाप, निद्रा नाश, बेचैनी आदि मस्तिष्क लक्षण होने पर वृ० वातचिन्तामणि, चिन्तामणि-चतुर्मुख, कृष्ण चतुर्मुख आदि योग सितोपलादि चूर्ण तथा स्वर्ण माक्षिक भस्म के साथ दिए जाते हैं। सिर पर ब्राह्मी घृत अथवा ब्राह्मी तैल से अभ्यङ्ग किया जाता है। इसके अतिरिक्त सारस्वतारिष्ट तथा दशमूलारिष्ट भी दिए जाते हैं।

शय्या व्रण—

स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिये। जीवाणु हर द्राव से प्रक्षालन करके शोधक तथा तदनन्तर रोपक प्रलेप तैल आदि लगाकर व्रण बन्धन करना चाहिए। अवस्थानुसार जलौका पान भी किया जा सकता है।

ज्वर उतरने के बाद आहार तथा विहार में बहुत सतर्कता से काम लेना चाहिए। अन्यथा पुनरावर्तन (Relapse) की अवश्यमेव सम्भावना रहती है।

पथ्य—

प्रारम्भ में मुद्ग यूष, चणक यूष, मसूर यूष देना चाहिए। तथा अवस्थानुसार दही का मठा देना चाहिए। बाद में सागूदाना पतली मुद्ग यूष और फिर कृशरा देनी चाहिए। इसके कुछ दिन बाद पतला दलिया तथा पतली रोटी, दूध अथवा दाल अथवा हरी सब्जी के पके हुए रस में भिगो कर देनी चाहिए। इसके पश्चात् धीरे २ साधारण भोजन खाना प्रारम्भ करना चाहिए। गुरु भोजन अधिक भोजन, बासी भोजन, तली हुई वस्तुओं तथा लाल मिर्च, अचार आदि का सर्वथा परित्याग करना चाहिए। भारी परिश्रम से भी बचना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्याप्त समय तक शय्या रूढ़ होने तथा परिमित भोजन होने से रोगी के रक्त में काफी कमी हो जाती है। परिणामतः वह पर्याप्त निर्बल पड़ जाता है। अतः ज्वर मुक्ति के बाद रोगी को लोह तथा कैलशियम के योग दिये जाते हैं। इसके लिये बसन्तमालती, नवायस लोह, अभ्रक भस्म, मुक्ताशुक्तिभस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, मण्डूर भस्म, सितोपलादि चूर्ण आदि शर्बत बनफशा आदि अनुपान से दिये जाते हैं। भोजनोत्तर लोहासव, द्राक्षासव, लवणभास्कर चूर्ण, आरोग्य वर्धिनी बटी, च्यवनप्राश, कौड लीवर आयल तथा शार्क लीवर आयल आदि योग दिये जाते हैं। मांस-शोष को दूर करने के लिये रोगी को धूप में बिठाकर महा लाक्षादितैल अथवा कौड लीवर आयल अथवा शार्क लीवर आयल आदि से सर्वाङ्गीण अभ्यंग किया जाता है। साथ ही यकृत् रस तथा कुक्कुटाण्ड का सेवन किया जाता है। ज्वर मुक्त को दूध खूब पिलाना चाहिये।

पुनरावर्तन होने पर चरकोक्त पुनरावर्तक क्वाथ देना चाहिये अन्य पूर्वोक्त चिकित्सा करनी चाहिए। पुनरावर्तन से यथा सम्भव रोगी को बचाना चाहिए। क्षीण रोगी पर राजयक्ष्मा के आक्रमण की बहुत आशङ्का बनी रहती है जिसकी प्रतिक्रिया सुगमता से सिद्ध नहीं होती।

पुनरावर्तन होने पर फिर पहिले की तरह आहार तथा विहार में नियन्त्रण रखना चाहिए और लक्षणानुसार औषधि सेवन करना चाहिये। फेफड़ों, हृदय तथा आंतों की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिये।

"धन्वन्तरि"

रक्तरोगांक

इस विशेषांक में आयु० पंचानन पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल, कविराज प्रतापसिंह जी रसायनाचार्य वैद्यरत्न, कविविनोद पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा "अमृतधारा", पं० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी B. A. आयुर्वेदाचार्य, श्री पं० शिवशर्मा B. A. आयुर्वेदाचार्य आदि ४१ आयुर्वेद-संसार के माने हुए विद्वानों के रक्त-रोगों पर विवेचना एवं अनुभव पूर्ण लेख हैं। इस विशेषांक में रक्तचाप (ब्लडप्रसर) तथा कुष्ठ का विस्तृत विवेचन एवं चिकित्सा, प्रयोगादि दिये हैं। अनेकों तिरंगे एवं सादे चित्रों से सुसज्जित विशेषांक का थोड़ा सा प्रतियां शेष हैं। पृष्ठ-संख्या बड़े साइज के २८० पृष्ठ हैं। मूल्य केवल विशेषांक का ४) पोस्टेज प्रथक। इस वर्ष के १० साधारण अङ्क (जिनमें बड़े मार्के के लेख, प्रयोग आदि हैं) भी साथ लेने पर मूल्य केवल ५≡) है।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय
बिजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर्य-विकार की अनुभव-पूर्ण चिकित्सा।

लेखक— वैद्य पं० खेमराज जी शर्मा छांगाणी, 'आयुर्वेद-विशारद'
आर्वी (सी० पी०)

चिकित्सा—

जब मनुष्य अपने कृत कर्मों पर विशेष चिन्ता करता है और लज्जा के मारे किसी योग्य से योग्य चिकित्सक के पास न जाकर बड़े २ लच्छेदार विज्ञापन दाताओं के जाल में पड़कर अपनी रही सही शक्ति का भी ह्रास कर बैठता है तब तो उसकी जान बड़ी ही आफत में पड़ जाती है, और लाचार हो अपनी सारी कथा वैद्य से कहता है। ऐसी अवस्था में वैद्य उसका निदान करके योग्य चिकित्सा करता है। मैंने अपने अनुभव से जिन २ प्रयोगों को श्रेष्ठतम माना है, वे इस प्रकार हैं। निम्न लिखित तैल बनाकर उपयोग में लेना चाहिये।

सूखी चिरचिटे की जड़	शुष्क केंचुए
सूखी सफेद कन्नेर की जड़	मालकांगनी
कुचिला	सूखी वीर बहूटी
सोमल	जायफल

—उपरोक्त द्रव्यों को लेकर पांचगुने दालचीनी के तैल में बलवान हाथों से पक्की खरल में मर्दन करें और पातालयन्त्र द्वारा तैल निकाल कर शीशी में सुरक्षित रखें।

इसमें से थोड़ा ल रात को सोते वक्त इन्द्रिय के अग्र भाग (सीवन का भाग) छोड़कर लगावें और धीरे २ अङ्गुली से मालिश करें, थोड़ी देर पश्चात् इन्द्रिय पर एक नागर बेल का पान किंचित् गरम करके थोड़ा घृत चुपड़ कर बांध दें तथा सुबह खोल दें। इस क्रिया को २१ दिन करने से इन्द्रिय की सम्पूर्ण नसों में प्राकृतिक शक्ति आ जाती है। इन्द्रिय का छोटा हो जाना, टेढ़ापन (बांई ओर झुक जाना) शिथिलता, नीली २ नसें उभर जाना, अग्रभाग मोटा और पीछे का पतला हो जाना आदि पर नितान्त श्रेष्ठ है।

च्यवनप्राश एवं स्वर्णमालिनी मिश्रण—

निर्माण-विधि—पाढल, अरणी, गंभारी, बेल तथा अरलू (टेंटू) इनकी छाल, गोखरू, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेली, पीपल, काकड़ासिंगी, मुनक्का, गिलोय, हरड़, खिरैटी, भूमी आंवला, अडूसा, मांसपर्णी, विदारीकंद, पुनर्नवा, नीलोफर (नील कमल) छोटी इलायची, अगर, श्वेत चन्दन, नागरमोथा, पोकरमूल, कौवाठोड़ी, मुद्गपर्णी, कचूर, अष्टवर्ग, इन सारी औषधियों (अभाव में प्रतिनिधि द्रव्य) को ४-४ तोले लेकर जौकुट चूर्ण करे और घड़े में २०४८ तोले पानी डालकर उसमें चूर्ण मिलादें, पश्चात् ५०० ताजे आंवले उसी पानी में डालकर अग्नि पर चढ़ा दे, जब आठवां हिस्सा जल शेष रहे तब उतार कर छान ले और आंवले निकाल ले। बाद में इन आंवलों को एक कलई किए हुए वर्तन पर खादी का मजबूत कपड़ा बांध दे और उस पर आंवले को खूब रगड़े, जिससे मगज छन जायगा। फिर एक कलई किए बर्तन में घृत १४ तोले और तैल १४ तोले डालकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें उपरोक्त मगज को लाल होने तक मन्दाग्नि से भूनें। पश्चात् क्वाथ के बचे हुए जल को अग्नि पर रखें और आधा शेष रह जाने पर उसमें ५ सेर चीनी डालकर पाक करें और गाढ़ा होने पर उसमें भुना हुआ आंवले का मगज मिलादें। तत्पश्चात् पीपल ८ तोले, वंशलोचन १६ तोले तथा दालचीनी, तेजपात, १-१ तोला बारीक चूर्ण बनाकर मिलादें और ठण्डा होने पर ४८ तोले विशुद्ध मधु मिलाकर अमृतबान में भरकर रखदें।

स्वर्ण मालिती बसन्त	६ माशा
सिद्ध मकरध्वज (स्वर्ण सहित)	३ माशा
प्रवाल भस्म	१ तोला
पिप्पली	१ तोला

—ये सारे द्रव्य लेकर ६ घण्टे तक बलवान हाथों से पक्की खरल में मर्दन करे और २-२ रत्ती की पुड़िया बनालें।

सेवन-विधि—१। से १॥ तोले च्यवनप्राशावलेह में एक पुड़िया सुबह और एक शाम को मिलाकर चटावें, ऊपर से काली और स्वस्थ्य बांकड़ी गाय (जिसका बछड़ा जीवित हो) का १ पाव दूध पीवें। इस प्रयोग को लगातार ८० दिन तक नियम-पूर्वक पथ्य—सह, ब्रह्मचर्य व्रत से सेवन करने पर शरीर में अपूर्व शक्ति प्राप्त होकर देह कांति युक्त व ओजस्वी बनती है, वीर्य की वृद्धि होती है। इससे सम्पूर्ण वीर्य-दोषों का नाश होकर मैथुन या बहुमैथुन से उत्पन्न नपुंसकता नष्ट होकर पुरुष गर्भाधान के योग्य बन जाता है। यह विशेषकर शीत ऋतु में सेवन करने योग्य एक महान् पौष्टिक औषधि है, जो कब्जियत को हटाकर पाचन-क्रिया को भी सबल बनाने में उपयोगी है। पाठक अवश्य ही अनुभव कर देखें।

सुवर्णं मृगनाभिं च रौप्य काश्मीरको तथा।
लघुएला जातिफलं तुगाक्षीरी तथैव च॥
जातिपत्रीं च संचूर्ण्य भाग वृद्ध चा प्रयोजयेत्।
अजा दुग्धे च संपेश्य नाग बल्ली रसे तथा॥
दिन त्रयं विमर्षाय युग्म गुंजा समावटी॥
संतानिका युतं भुक्तं रेतः क्षय निवारणः।
मधुना मेहनाशाय शैथिल्ये पान संयुतम्॥
गुटिका भक्षयेद्धीमान् धातु संजीवनी शुभम्॥

अर्थात् सोने के वर्क १ भाग, कस्तूरी २ भाग चांदी के वर्क ३ भाग, छोटी इलायची के बीज भाग, केशर ४ भाग, जायफल ६ भाग, वंशलोचन ७ भाग, जावित्री ८ भाग इन सारी औषधियों को खरल में बारीक पीसकर बकरी के दूध की भावना दें, पश्चात् नागर बेल के पान के रस की भावना देकर २-२ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में शुष्क करलें।

सेवन-विधि-जिन्हें २० प्रमेहों में से कोई भी प्रमेह हो तो शहद के साथ १-१ गोली प्रातः-सायं दें। हस्तमैथुन से उत्पन्न नपुंसकता एवं नसों की कमजोरी के लिये नागर बेल के पान के साथ दें। इस प्रकार उपरोक्त गुटिका प्रायः जिन्होंने बाल्यावस्था में कुसङ्गत में पड़ कर अपने स्वास्थ्य को विगाड़ दिया है, उन पुरुषों के लिये नितान्त हितकारी है। इन गुटिकाओं का नियमित रूपेण ब्रह्मचर्य व्रत से एवं पथ्य पूर्वक ४० दिन तक रोगानुसार अनुपान के साथ लेने पर उपरोक्त कथित सारे विकारों का शमन होकर शरीर सुदृढ़ बन जाता है।

वीर्य वर्द्धक वृहद् मूसली पाक

सोंठ	मिर्च	पीपल
हरड़	बहेड़ा	आंवला
कलमी		छोटी इलायची बीज
पत्रज	हाऊ बेर	सौंफ
शतावरी	जीरा	अजमोद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रक	गज पीपल	पीपला मूल
कचूर	गोखरू	धनियां
नागौरी असगंध		नागकेसर
समुद्र शोष	लौंग	जायफल
जायपत्री	ताल मखाना	गंगेरन
कौंच के बीज		उसारे रेवन
मुलैठी	कपूर	तज
काजू	अकरकरा	सुगन्धवाला
चोपचीनी		कबावचीनी

—ये सारे द्रव्य २-२ तोले और सफेद मूसली बढ़िया १ सेर लेकर बारीक चूर्ण करें, पश्चात् एक कढ़ाही में उपरोक्त सारी औषधियों से दुगनी बनारसी शक्कर (अभाव में चीनी) डालकर यथा—विधि चासनी बनाकर उसमें चूर्ण मिलाकर पाक तैयार करें और बड़ी परात में पसार कर उस पर चांदी के वर्क १ तोला बिछादें, तथा १-१ तोले की चकती चाकूसे निकाल कर कांच के अमृतबान में सुरक्षित रखें।

सेवन-विधि—१ तोला सुबह नित्य कर्मों से निवृत होकर निहार मुख खाकर ऊपर से १ पाव गाय के मिश्री मिले दूध के साथ तथा शाम को (रात को) धारोष्ण दूध के साथ ४० दिन तक नियमित रूप से सेवन करने पर सम्पूर्ण प्रकार के प्रमेह, कास, श्वास, क्षय, पांडु, वात, पित्त एवं कफ रोग, नपुंसकता, वीर्य विकार, दृष्टिमांद्य, सम्पूर्ण स्त्री रोग; मूत्राघात, पथरी आदि सारी शारीरिक व्याधियों को नष्ट करके देह की कांति को बढ़ाता है, यह किसी भी रोग से उत्पन्न निर्बलता को दूर करके शरीर में बल, वीर्य, मेधा धारणा शक्ति की वृद्धि करता है।

नोट—किंचित् बद्ध कोष्ठता प्रतीत होने पर रात्रि में ६ माशे 'पंचसकार चूर्ण' लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमेह रोग के निदान विषयक आर्यमत तथा पाश्चात्य मत की तुलना—

—और उसका उपचार—

ले०—श्री. पं. कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी बी. ए. आयुर्वेदाचार्य ।

मधुमेह की चिकित्सा विषक मार्के की कुछ बातें लिखने के पूर्व यहां पौर्व एवं पाश्चात्य मत की निदान सम्बन्धी बातों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक प्रतीत होता है।

(१) उदक मेह (डायाबीटिस इनसिपिडस)

(२) इक्षुमेह, शीतमेह, मधुमेह और क्षौद्रमेह ये चारों पाश्चात्यों के 'डायाबीटिस मेलिटस' में आ जाते हैं।

(३) सान्द्रमेह यह उनका 'क्रॉनिक सिस्टायटिस (chronic cystitis) अर्थात् वस्ति या मूत्राशय में हुआ चिरकारी सदाह शोथ की अवस्था में होने वाला मूत्र-विकार है। कोई २ कहते हैं कि मूत्र में अभिष्यन्दी वनस्पति जन्य क्षार (Mucus oxalatus म्यूकस आक्भालेटस) का जाना ही यह विकार है, किन्तु हमें यह मत मान्य नहीं है। सान्द्रमेह को सर्पि मेह भी कहते हैं। यह वृक्क विकारान्तर्गत वृक्क विद्रधि आदि के कारण अथवा वस्तिदाह, मूत्रप्रसेक दाह, श्वेत प्रदर या मूत्रमार्ग में कहीं भी बाह्य विद्रधि के फूटने के कारण होता है। इसमें मूत्र पूयमय हो जाने से उसे पूयमेह भी कहते हैं। यह विकार अल्ब्युमिन या म्यूकस के विशेष जाने से भी हो जाता है। इस पर यह क्वाथ बहुत गुणकारी है। हल्दी, दारु हल्दी, तगर और वायविडंग समभाग लेकर जौकुट कर २ तोले चूर्ण को आध सेर जल में पकावें, अष्टमांश क्वाथ सिद्ध होने पर प्रातः सायं सुखोष्ण पान करे।

(४) सुरामेह—

इसके विषय में भी मत भेद है। कई डाक्टरों का मत है तथा हमारा भी मत है कि इस विकार में मूत्र के साथ असिटोन (Aceton) अर्थात् सुरा के किट्ट रूप में परिणत हुआ शारीरिक द्रव पदार्थ जाया करता है। अतः इसे असिटोन यूरिया के नाम से पुकारना ही ठीक है। किन्तु कोई २ इसे 'फास्फेट यूरिया' कहते है और कहते हैं कि इसमें देशी शराब या ताड़ी के रूप का पदार्थ जाता है। इसमें भी अल्कलाईन (Alkaline) फास्फेट्स और अर्दी (Earthy) या पार्थिव फास्फेट्स ऐसे दो भेद पाए जाते हैं। इसी से मिलना जुलना फास्फेटिक डायबिटस (Phosphetic Diabetes) नामका मधुमेह जैसा ही और एक मूत्र-विकार होता है। अस्तु, यह विकार क्षय, पांडु आदि बल क्षय-कारी रोगों में विशेष पाया जाता है। यह मूत्र-विकार भी उस हालत में भी होता है जब शरीर में अन्नान्तर्गत पिष्ट भाग (कार्बो हाइड्रेटस) को पचाने की शक्ति कम हो जाने से ज्वरादि विकार होते हैं, या जब विशेष उपवास किया जाता है या जब अफीम, क्लोरोफार्म आदि बेहोशी की दवा का सेवन किया जाता है या जब बार २ जुखाम होते रहता है। इस विकार में रोगी को चिरस्थायी मूर्च्छा आती है।

सान्द्रमेही और सुरामेही की पहिचान—

सान्द्रमेही का पेशाब बर्तन में रखने से कुछ देर में प्रथम नीचे की तलैठी से गाढ़ा २ पदार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमना शुरू होता है और फिर सब ही गाढ़ा सा हो जाता है; किन्तु सुरामेही के पात्र में रक्खा हुआ पेशाब नीचे गाढ़ा और ऊपर से पतला ही बना रहता है तथा रंग में मटियाला कुछ सुर्खी माइल होता है।

मधुमेही के लिए यह काढ़ा विशेष लाभदायक है।

अर्जुन की छाल   कदम्ब की छाल
सल्लभी (सलई) की छाल या मूल
अजवाइन   —प्रत्येक समभाग

—जौकुट कर २ या २॥ तोले चूर्ण आध सेर जल में अष्टमांश क्वाथ कर प्रातः सायं पिलाया जावे। पाश्चात्यगण इस पर अर्जुन आदि पदार्थों से बनाया हुआ टिंक्चर तथा इंजैक्शन लगाया करते हैं। उनकी अपेक्षा यह हमारा क्वाथ ही उत्तम कार्य करता है।

[५] पिष्टमेह—

इसे काइलयूरिया (Chyluria) कहा जाता है। रक्तान्तर्गत 'फायलेरिया' नामक कृमि विशेष की विपुलता से पिष्टमेह होता है। [यही कृमि श्लीपद (...ग Elephantiasis) का भी कारण भूत माना गया है। पिष्टमेही का रक्त-परीक्षण करने पर ये कृमि स्पष्ट दिखलाई देते हैं।] अन्न-रस-वह नलिका (...वक्ष नलिका (थोन्यासिक डक्ट) के अवरुद्ध होने से भी पिष्टमेह रोग होता है। पिष्टप्रमेही जब पेशाब करता है तब उसके रोमांच होता है और मूत्र का रंग ठीक पीसे हुये चावलों के धोवन जैसा होता है।

पिष्ट प्रमेही के लिये—दारू हल्दी, खैर छाल, धाय के पुष्प और बायबिडंग का क्वाथ विशेष लाभकारी है।

[६] शुक्रप्रमेह—

इसे स्पर्म्याटोरिया (Spermatorrhea) कहते हैं। मूत्र में शुक्र जीवाणु पाये जाते हैं; जिसका निश्चय केवल सूक्ष्मदर्शक यंत्र द्वारा देखने से होता है। अज्ञानी लोग लालामेह, सांद्रमेह, सुरामेह या फास्फेटयुरीया आदि को ही शुक्रमेह मान कर धोखा उठाते हैं। ध्यान रहे यह शुक्रमेह का विकार हस्त-मैथुन, अतिमैथुन, स्त्री में विशेष—आसक्ति तथा कुछ मज्जा-विकारों के कारण होता है। शुक्रमेह पर विस्तृत निबंध हम स्वतंत्र रूप से धन्वन्तरि में प्रकाशित कराएंगे। इसकी चिकित्सा के विषय में कुछ बातें पीछे लिख चुके हैं। तीन और अनुभूत सरल प्रयोग यहां लिखे देते हैं।

बंग भस्म   बंसलोचन
सत गिलोय   मुलैठी का महीन चूर्ण
पाषाण भेद का महीन चूर्ण   तालमखाना
बीहदाना का चूर्ण   छोटी इलायची के दाने
शुद्ध शिलाजीत   —प्रत्येक १-१ तोला

—सबको एकत्र खूब खरल कर उसमें मिश्री सबके समभाग अर्थात् ६ तोले मिला पुनः खरल करे। मात्रा २ से ३ माशे, गौदुग्ध अथवा ताजे जल से प्रातः सायं, पथ्य पूर्वक सेवन कराने से शुक्रस्राव, शीघ्रपतन, शुक्रतारल्य, स्वप्नदोष आदि वीर्य-विकार शीघ्र दूर हो जाते हैं।

(२) यदि क्वाथ देना हो तो इसे देवें। देवदार, कूठ, अर्जुन छाल और श्वेतचंदन समभाग जौकूट कर २ या २॥ तोले चूर्ण का आध सेर जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर प्रातः सायं सेवन करावें। अथवा—

(३) बट या बरगद के कोमल पत्र और बबूल के कोमल पत्र ७-७ तोला दोनों को सिल पर खूब पीस कर ५ तोला या १० तोले तक जल मिला छान लिया जावे। प्रथम प्रवाल भस्म और बंग भस्म १-१ रत्ती का मिश्रण मक्खन या मलाई के साथ खाकर ऊपर से उक्त पत्तियों का रस पा लें। प्रातः सायं, ३० दिन तक। बीच-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच में पंचसकार चूर्ण अथवा त्रिफला चूर्ण रात्रि के समय लेते रहना आवश्यक है; जिसमें मल बद्धत्ता न होने पावे।

[७] सिकतामेह—

इसमें पेशाब के साथ श्वेत रंग की बालू सी जाती है। यह प्रायः आंकझालयुरिआ, सिस्टिनयुरिया, लिथयूरिया आदि अश्मरी जन्य विकारों में पाया जाता है। इसे युरेटस (Uretus) कहते हैं। यह संधिवात से ग्रस्त रोगियों में भी अधिकता से पाया जाता है। रोगी को मूतते समय विशेष वेदना का अनुभव होता है।

सिकता-मेही के लिये—दारू हल्दी, अरणीमूल, त्रिफला और पाढ (पाठा) इन ६ द्रव्यों का अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर शहद मिला दोनों समय पिलाने से शीघ्र लाभ होता है! ❀

[८] शनैर्मेह —

इसमें मूत्र धीरे २ बहुत कम प्रमाण में निकलता है। पाश्चात्य वैद्यक इसको मूत्राघात का ही एक विकार मानता है। हमारे मत से यदि मूत्राघात का निदान पाया जाय तब तो यह विकार मूत्राघात में ही माना जा सकता है। अन्यथा प्रमेहोत्पादक निदान की एवं कफ की प्रबलता में तो यह मूत्राघात नहीं माना जा सकता। सुश्रुत जी का कथन है — 'अत्र शनैः सकफं पिच्छिलं मेहति" इस दृष्टि से तो इसे फायब्रिनयुरिया (Fibrin Urea) ही मानना ठीक होगा, जैसा कि डा० चक्रवर्ती ने माना है।

❀ इसकी चिकित्सा करने के पूर्व यह जान लेना परमावश्यक है कि यह विकार वास्तव में सिकतामेह है, या शर्करा। पेशाब में जो बालू जाती है वह यदि लाल वर्ण की हो तो उसमें शर्करा का संदेह हो सकता है। ऐसी हालत में २ या २॥ तोले पेठे के रस में ६ रत्ती शुद्ध हींग और ४ रत्ती जवाखार मिला कर प्रातः सायं सेवन करावें। ३ दिन में ही कुल शर्करा झर जावेगी।

शनैर्मेही के लिये—अजवाइन, खस, हरड़ औ[र] गिलोय का क्वाथ लाभदायक है।

[९] लालामेह —

इसमें लार जैसी तंतुयुक्त एवं कुछ झागद[ार] पेशाब होती है। इसे अल्ब्युमिन युरिया(Albumi[n] urea) कहते हैं। अल्ब्युमिन या श्वेतकल्क र[क्त] का एक विशेष पदार्थ होने से, इसका मूत्र के सा[थ] व्यर्थ बाहर निकल जाना रोगी के लिये चिंताजन[क] बात हो जाती है। किंतु उसे विशेष चिंता न[हीं] करनी चाहिये। कारण यह विकार वृक्क विकृति [या] वस्ति विकृति से भी सहज में हो जाता है। वृक्क [या] गुर्दों में जो केशवाहिनी गुच्छ (Glomeruli) ह[ोते] हैं उनके विकृत हो जाने से उनमें से अल्ब्युमि[न] मूत्र में उतर आया करता है। पांडु रोगादि र[क्त] विकारों में, कुछ संसर्गिक मलेरिया, मंथर आ[दि] ज्वरों की दशा में, तथा अफीम, संखिया, फॉस्फ[रस] आदि विषों का उदर में प्रवेश होने पर यह विक[ार] प्रायः हो जाया करता है। गर्भिणी के मूत्र में यह विकार बहुतांश में पाया जाता है।

लालामेही के लिये —जामुन की छाल, हरड़, चित्र[क] मूल और सतौना छाल का क्वाथ विधि यु[क्त] बना, शहद मिला दोनों समय पिलाते र[हना] लाभदायक है।

[१०] शीतमेह -

यह डायाबीटिस मेलिटस (Diabetes melli[tus]) का ही एक प्रकार है। इसमें पेशाब मी[ठा] अत्यंत शीतल एवं अधिक तादाद में होता [है।] पेशाब करते समय शीत से शरीर कांप उठता [है,] रोमांच होता है।

शीतमेही के लिये —पाढ, मूर्वा और बड़ा गो[खरू] का विधियुक्त क्वाथ बनाकर शहद मिला, [दोनों] समय पिलाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उक्त १० कफ जन्य प्रमेहों पर संक्षिप्त विचार हुआ। आगे ६ पित्त जन्य और ४ बात-जन्य प्रमेहों पर भी संक्षेप में ही लिखेंगे।

[११] क्षारमेह—

पेशाब में क्षारों की अधिकता होती है। किन्तु इन क्षारों के विषय में एक मत नहीं है। कोई इसमें अमोनिया की विशेषता मानकर इसे 'अमोनियाकल यूरिन' कहते हैं तो कोई क्लोराउड्स (Chlorides) आदि क्षारों का मिश्रण बतलाते हैं। रंग, गंध और स्पर्श में खारे जल जैसा मूत्र इसमें होता है।

क्षारमेही के लिये—नागरमोथा, छोटी हर्र, कुड़ाछाल और मोखा (मुष्कक) या फरवाह की छाल का विधियुक्त सिद्ध क्वाथ, शहद मिला दोनों समय पिलाना लाभकारी है। अथवा त्रिफला का हिम बनाकर शहद मिला दोनों समय सेवन करावें। अथवा केवल नीबू के रस में जल और मधु मिला सेवन करावें।

ध्यान रहे—क्षार मेहादि पित्तप्रमेहों की चिकित्सा करने के पूर्व उसे मूत्र रेचक औषधि देकर उक्त क्वाथ आदि औषधियां देने से और भी शीघ्र लाभ होता है। मूत्रविरेचनार्थ—शीतलचीनी का चूर्ण २ माशे तक देकर ऊपर से जल १ पाव या १॥ पाव तक पिलावे, इसी प्रकार दिन में चार बार पिलाने से मूत्र खुल कर साफ़ हो जाता है।

[१२ —

इसे 'इंडिकनयूरिआ' कहते हैं। यह विकार प्रायः पित्ताश्मरी, अम्लपित्त, पुनरावर्ती आंत्रपुच्छ जाठरावरण दाह, पूयमय फुफ्फुसावरणादि व्याधियों में अत्यधिक पाया जाता है। मेथिलिन ब्ल्यू जैसे पदार्थों के भक्षण से भा मूत्र नीले वर्ण का हो जाता है। इस पर—

कटु पटोल, कटु परवल, नीम की छाल, आमला और गिलोय, इन पांच द्रव्यों का क्वाथ, शहद मिलाकर दोनों समय पिलाना चाहिये।

[१३] कालमेह—

यह 'मेलन यूरिआ' कहलाता है। कोई २ इसे 'अल्काँप्टनयूरिआ' कहते हैं। वृक्कों में तीव्र दाह विकार और कामला की विकृत अवस्था में यह पाया जाता है। मूत्र फ़ीकी काली सियाही जैसा होता है। इस पर—

लोध (पठानी लोध), खस, चंदन और धाय के फूलों का क्वाथ दोनों समय शहद मिला कर सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है।

[१४] हारिद्रमेह—

इसे 'कोलयुरीआ' कहते हैं। यह प्रायः कामला रोग की अवस्था में और पित्त पांडु की अवस्था में भी पाया जाता है। इसे पीतप्रमेह भी कहते हैं। इस पर—

खस, नागरमोथा, आमला, छोटी हर्र और अमलतास का गूदा; इनका क्वाथ बनाकर दोनों समय शहद मिला सेवन करना चाहिये।

[१५] मांजिष्ट मेह—

यह पाश्चात्य मत से वास्तविक में 'हीमोग्लोबिनयूरिआ' है। कोई २ भ्रमसे 'हीम्याट्युरिया' (Hematuria) कहते हैं, जो कि वास्तव में 'रक्तमेह' को कहना चाहिये। मूत्र में यदि रक्तान्तर्गत रंजक-द्रव्य की ही विशेषता हो तो वह मांजिष्ट मेह कहावेगा, और यदि उसमें रक्त ही हो तो वह रक्त मेह या 'हीम्याटयूरिआ' कहायेगा। मंजिष्ठमेह में पेशाब मजीठ के क्वाथ जैसे वर्ण का तथा कुछ दुर्गन्धपूर्ण होता है। यह मूत्र-विकार प्रायः पोटाश क्लोरेट, वैट्रोबेंझोल आदि विषों के कारण, तीव्र मलेरिया के विष से या दुर्जल जन्य ज्वर (Black-water fever) आदि के विषों के कारण हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विकार पर—खस, लोध और लालचन्दन का क्वाथ उत्तम कार्य करता है। किंतु ध्यान रहे इसमें और रक्त-मेह में भी मूत्र विरेचनार्थ—

शीतलचीनी (कबाब चीनी) का महीन चूर्ण २ से ४ माशे तक समभाग मिश्री मिला १ या १॥ पाव ताजे जल के साथ इसी प्रकार दिन में ३ बार देना चाहिये। पश्चात् दूसरे दिन से उक्त क्वाथ का सेवन दिन में दो बार करावें।

[१६] रक्त मेह—

इसे हीम्याट्युरिया' कहते हैं, पेशाब रक्तमय, उष्ण, दुर्गंधित होता है। यह विकार अनेक कारणों से होता है। जैसे तीव्र सान्निपातिक ज्वर की अवस्था में, रक्त-स्राव प्रवृत्ति विकार (पर्प्यूरा Purpura) रक्त-पित्त आदि की अवस्था में, वृक्कदाह आदि वृक्क विकारों में (वृक्क में तीव्र दाह, विषजन्य दाह, अर्बुद, वृक्काश्मरी आदि में), आघात या चोट के लगने से या कृमि जन्य विकारों में (रक्तोत्सर्जक एक कृमि होता है जिसे अंग्रेजी में 'बिलहार्झिया' कहते हैं, जो दूषित जल में रहा करता है। इसका प्रवेश अन्दर रक्त में हो जाने पर जब यह मूत्रस्रोतस् (Ureters) और बस्ति प्रदेश में प्रविष्ट होता है तब वह उस स्थान में जख्म कर देता है, जिसके कारण मूत्र में रक्त आने लग जाता है।

मूत्र में रक्त कहां से आता है! इसकी जांच इस प्रकार करनी चाहिये। यदि वह वृक्क या गुर्दों से आता हो तो सर्व मूत्र का वर्ण धूसर लाल होगा। यदि मूत्र श्रोतों से आता हो तो मूत्र के बीच २ में कुछ जमा हुआ सा रक्त दिखलाई देता है। यदि बस्ति (मूत्राशय) से आता हो तो प्रथम मूत्र स्वच्छ या कुछ पीले वर्ण का होता है, पश्चात या मूत्र के अन्त में अधिक परिमाण में रक्त निकलता है और यदि वह मूत्र-प्रसेक (urethra) से आता हो तो पेशाव करते समय प्रथम ही रक्तश्राव होता है। इसके अलावा बस्तिदर्शक यंत्र (Cystoscope) द्वारा भी रक्त-श्राव स्थान का निश्चय किया जा सकता है।

इस पर—सोंठ, अर्जुन छाल, सोंफ और नीलोफर का क्वाथ शहद मिलाकर दोनों समय पिलावें। किंतु उक्त व शीतलचीनी का मूत्र विरेचन प्रथम अवश्य कराना होगा।

नोट—उपर्युक्त पित्त प्रमेहों पर जो २ क्वाथ के प्रयोग बतलाये गये हैं उनके साथ गोक्षुरादि गुग्गुल का सेवन विशेष लाभप्रद होता है, ऐसा हमारा खास अनुभव है।

[१७] वसामेह—

यह 'लाइप्युरिया' कहाता है। इसमें बार २ चरबी मिश्रित मूत्र हुआ करता है। अति मेदात्मक पदार्थों के सेवन करने से अथवा दीर्घकालिक पूयोत्पादक विकार के कारण मूत्र में चरबी जाया करती है।

इस पर—अग्निमंथ या अरणी मूल का क्वाथ लाभदायक होता है।

(१८) मज्जामेह—

इसे डाक्टर लोग 'पाययुरिया' कहते हैं। इसके बार २ मज्जा मिश्रित पूय या पीव जैसा पेशाव होता है। ऊपर सान्द्रमेह के विषय में जो बातें कही गई हैं, वे सब इसमें लागू होती हैं। इसे पूयमेह या सर्पिमेह भी कहते हैं।

इस पर—गिलोय, चित्रक मूल, पाढ़, कुड़ाछाल, कुटकी, कूट, इनका क्वाथ विशेष हितकर है। यह काढ़ा पिलाते समय उसमें थोड़ी हींग लगभग आध रत्ती मिला देनी चाहिये।

[१९] क्षौ द्र—

डायाबीटिस मेलिटस (मधुमेह) का ही एक प्रकार माना जाता है। आगे मधुमेह के प्रकरण में इसके विषय में सविस्तार लिखा जावेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२०] हस्तिमेह—

इसमें मूत्र ठहर २ कर किंतु मिकदार में ज्यादा होता है। यह पेशाव हाथी के मद जैसा लहसदार होता है, इसीसे यह हस्तिमेह कहलाता है। पाश्चात्य वैद्यक इसे इन्कांटिनन्स (Incontinence) अर्थात् मूत्रवेग को रोकने का असामर्थ्य एवं अनजान में मूत्रोत्सर्ग होजाना कहता है और इसके तीन प्रकार मानता है;एक चेतनातिशय(increased reflex) के कारण या अवरोधक स्नायु दुर्बलता (weakness of the sphincter) के कारण होने वाला। यह छोटे बच्चों को प्रायः रात्रि के समय हुआ करता है, यदि दिन में हो तो प्रायः अवरोधक स्नायु-दौर्बल्य ही इसमें कारण होता है, इसके अतिरिक्त निरुद्ध प्रकाश (phimosis) कृमि विकार या अश्मरी आदि भी इसमें कारण हो सकते हैं। किंतु दिन और रात यदि हस्तिमेह की शिकायत हो तो स्नायु दौर्बल्य ही उसका कारण प्रायः होता है। दूसरा प्रकार (paralysis ol the bladder या बस्तिबध के कारण होने वाला। बस्ति केन्द्र जो कि पृष्ठवंशरज्जू में स्थित है, उसके विकृत होने पर वस्तिबंध हो जाया करता है। जिसमें उत्सर्जक स्नायु केन्द्र (detrusor centre) विकृत होकर अवरोधक स्नायु केन्द्र में विकृति हो जाय यो मूत्रोत्क्षेप (retention wilh overflow) हुआ करता है। स्त्रियों में मूत्र प्रसेक (urethra) के अति विस्तृत होजाने से बस्तिबध होकर हस्तमेह हुआ करता है। तीसरा प्रकार बस्तिमुख में अश्मरी या कोई सनाल ग्रन्थि का रुक जाना है। इस रुकावट के कारण कभी २ बस्ति मुख हमेशा के लिये खुला रह जाता है और एक समान मूत्रोत्सर्ग (passive incontinence) हुआ करता है।

चाहे किसी प्रकार का हस्तमेह क्यों न हो आयुर्वेदोक्त प्रणाली से सिद्ध कर सेवन कराया हुआ यह क्वाथ अवश्य लाभ पहुंचाता है—

पाढ, सिरस बृक्ष की छाल, धमासा, मूर्वा, पलास (ढाक) मूल, तेंदू बृक्ष की छाल, कैथ (कपित्थ) की छाल, इन ७ द्रव्यों का अष्टमांश क्वाथ कर शहद मिला दोनों समय पिलाना।

इस प्रकार संक्षेप में हमने आयुर्वेदोक्त २० प्रमेहों का चिकित्सा-सहित वर्णन कर दिया है। मधुमेह सम्बन्धी विस्तृत विवरण हम आगे के निबन्ध में देंगे।

———:———

रसतन्त्रसार व सिद्धप्रयोग संग्रह

प्रथम भाग ७)
द्वितीय भाग ५)
यह संस्करण भी शीघ्र समाप्त होने को है। शीघ्र मंगावें।

-रक्त-रोगांक-

धन्वन्तरि का यह विशेषांक रक्त-रोगों पर विस्तृत बिवेचन पूर्ण अत्युत्तम साहित्य है। मूल्य—४)

अमृत—सागर

आयुर्वेद का प्रसिद्ध व पुराना ग्रंथ है। इसकी विशेषता सभी वैद्य जानते हैं। अभी तक यह अप्राप्त था किन्तु अब प्रकाशित होगया है। शीघ्र ही मंगावें। मूल्य ८)

मंगाने का पता-धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ [अलीगढ़]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डु-चिकित्सा ।

लेखक श्री० पं० रघुवीरशरण जी शर्मा वैद्य, रसायनशाला, बुलन्दशहर ।

आयुर्वेद में पाण्डु रोग के लक्षण इस प्रकार हैं। हांपना [साधारण परिश्रम में श्वास की रफ्तार बढ़ जाना] हृत्-स्पन्दन साधारण परिश्रम से थकावट, किसी कार्य के लिये उत्साह न होना, भूख न लगना, शिर दर्द, निर्बलता, हस्त-पाद, आंख, नख तथा होठों पर रक्त के अभाव के कारण कुछ पिलाई लिये हुए सफेदी, जिह्वा लालिमा रहित, नाड़ी की गति तीव्र, वमनेच्छा या वमन तथा ज्वर प्रभृति लक्षण होते हैं।

भ्रम—

प्रायः पाण्डु रोग और क्षय रोग के प्रारम्भिक लक्षण नाड़ी की गति तीव्र, अल्प परिश्रम से थकान तथा हृदय गति की वृद्धि, ज्वरांश, वमन, अग्नि मांद्य समान हैं। अतः कभी-कभी पाण्डु में क्षय का भ्रम हो जाता है, केवल रोगी का वर्ण—श्वेत या पीत मिश्रित श्वेत ही पाण्डु की साक्षी देता है, किन्तु यह साक्षी भी वातजन्य पाण्डु में "रूक्ष कृष्णा रुणाभताः" होने से अपर्याप्त ही रह जाती है। अतः चिकित्सक को पूर्ण सावधानी से रोग निश्चय करना चाहिये।

निदान—

माधवाचार्य ने लिखा है कि—व्यायाम, अम्ल पदार्थों का सेवन, लवण, मिट्टी का खाना, दिन का सोना और तीक्ष्ण पदार्थों का अपरिमित मात्रा में सेवन करने से पाण्डु रोग हो जाता है। किन्तु उक्त कारणों के अतिरिक्त कुछ और भी हैं उनको भी ध्यान में रखना आवश्यक है जैसे—अति स्त्री प्रसङ्ग अथवा स्वप्न-दोष प्रमेह आदि कारणों से वीर्य का क्षय, किसी रोग वश या आघात आदि कारणों से अधिक मात्रा में रक्त-स्राव, चिरस्थायी मलेरिया, प्लीहा यकृत् वृद्धि या यकृत् विकृति, मानसिक क्लेश, शारीरिक या मानसिक अधिक परिश्रम, पौष्टिक भोजन का अभाव, दूषित अन्न का सेवन, अतिरज, श्वेत प्रदर तथा उदरस्थ क्रिमि भी उक्त रोग के कारण होते हैं।

चिकित्सा—

पाण्डु--रोग में रक्त-वर्द्धक, बल-बर्द्धक, हृद्य, ज्वरघ्न तथा पाचन--क्रिया को ठीक करने वाली औषधियां उपयोगी होती हैं। यह इसकी चिकित्सा का सार है, सभी प्रयोग इसी आधार पर निर्मित हैं या होते हैं।

नवायस चूर्ण [नवायस लोह शा० ध०] २ रत्ती कालमेघ चूर्ण २ रत्ती प्रातः-सायं मधु से। सुदर्शनासव, लोहासव ६-६ माशा[1] भोजन के बाद दोनों समय दें। लोह इसके लिये खास वस्तु है, लोह रक्त-वर्द्धक तो है ही; अलावा इसके आंतों में रहने वाले रोगोत्पादक विषैले जीवाणुओं की वृद्धि को भी रोकता है। यदि नवायस के बजाय कालमेघ नवायस दिया जाय तो और भी उत्तम है। यदि मलावरोध [मल साफ न होता हो] तो लोह भस्म के स्थान पर मंडूर भस्म लेना चाहिये।

१—आसव अरिष्टों में समभाग जल मिलाकर पीना उचित है, अन्यथा अल्प लाभ करते हैं, साथ ही जलन भी करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि दाह आदि उपद्रवों के साथ ज्वरांश भी हो तो सितोपलादि चूर्ण और सत्व गुडूची १-१ माशा स्वर्ण बसन्त मालती १ रत्ती प्रातः सायं मधु में; द्राक्षासव लोहासव ६-६ माशे भोजन के बाद दोनों समय देना चाहिये। यदि कास [खांसी] तथा दुर्बलता अधिक हो तो ताप्यादि लोह २ रत्ती सितोपलादि चूर्ण १ माशा असमान मधु--घृत से अथवा वासाशर्क रोदक[1] ६ माशा के साथ प्रातः सायं देना चाहिये। भोजन के बाद द्राक्षासव और लोहासव चलेंगे ही।

आवश्यक होने पर उपरोक्त औषधियों के साथ रात को प्रबाल पञ्चामृत [यो० र०] २ रत्ती के साथ ६ माशा च्यवनप्राश भी देते रहना चाहिये। उक्त योग बल-बर्द्धक मांस-बर्द्धक, कासघ्न है तथा हृदय को बल देता है। प्रबाल पञ्चामृत उत्तम चूना [कैलशियम] है।

यदि वमन या वमनेच्छा भी होती हो तब वान्ति हर चूर्ण ४ रत्ती, दाडिमशर्क रोदक [शर्बत अनार मीठा] के साथ आवश्यकतानुसार दे दें। अभाव में बड़ी इलायची के बीज का चूर्ण भी काम दे सकता है।

यदि निरन्तर शिर दर्द भी रहता हो तो सुधा-पटक् ४-६ रत्ती सगभाग चीनी मिलाकर दूध या ताजा जल से दिन में १-२ बार देते रहें। इस प्रयोग से शिर दर्द तो दूर होगा ही साथ ही बर्द्धक भी है, यह उत्तम कैलशियम है। यदि आपत्ति न हो तो कैलशियम ग्लूकोनेट ५ सी०सी० या १० सी०सी० के चौथे दिन इंजैक्शन भी लगाते रहें। इससे बल की वृद्धि शीघ्र होगी तथा हृदय भी बलवान बनेगा। हृदय की धड़कन को भी लाभ होगा। इसी प्रकार रक्त वृद्धि के लिये यकृत् सत्व [लिबर एक्स्ट्रेक्ट] के भी इंजैक्शन चौथे दिन लगाये जा सकते हैं। दोनों इंजैक्शन चलाने हों तो आठवें दिन का हिसाब हो जायगा।

यदि हृदय की धड़कन अधिक हो तो प्रवाल पञ्चामृत २ रत्ती, खमीरा गावजवां १ तोला से दें। पार्थारिष्ट १ तोला दोपहर को भोजन के बाद दें। कालमेघ नवायस चूर्ण सायंकाल मधु से दें। अर्जुन छाल का क्षीरपाक रात को सोते समय देते रहने से हृदय बलवान बन जायगा।

यदि शरीर में रक्त अत्यल्प हो तो पञ्चामृत पर्पटी १ रत्ती और नवायस लोह (शा० ध०) २ रत्ती की मात्रा से पर्याय क्रम से दिन में ४ बार दें।

यदि पैर मुख आदि पर शोथ आगया हो तब मंडूर भस्म उत्तम २ रत्ती पुर्ननवा चूर्ण १ माशे मधु या शर्बत वांसा के साथ दिन में ३ बार दें। और साथ ही शारीरिक बल को कायम रखने के लिये तथा हृदय को बलवान बनाने के लिये प्रवाल पञ्चामृत २ रत्ती अथवा मुक्ता पिष्टी १ रत्ती स्वर्ण भस्म अथवा स्वर्ण पत्र ½ रत्ती तथा अर्जुन चूर्ण ४ रत्ती खमीरा गावजवां दिन में एक मात्रा देते रहें, स्मरण रहे स्वर्ण शोथ तथा विष--निवारण के लिये खास चीज है। विष जन्य जीवाणुओं को नष्ट करता है आयु तथा बलबर्द्धक है।

किन्तु शोथ होने पर चीनी और लवण सर्वथा बन्द कर देना चाहिये। भोजन में केवल फीका दलिया ऋतु के फल और दूध मात्र ही रहना चाहिये। जल साधारण न देकर अर्क मकोय अथवा अर्क पुनर्नवा देना ठीक है।

यदि उक्त औषधियों से सन्तोषजनक लाभ न दीखे तो रोगी को दूध का कल्प कराना चाहिये, यदि उस ऋतु में पके आम भी हों तो कहना ही क्या है, एक-एक आम रोगी को अमृत के समान हैं।

औषधियें केवल स्वर्ण पर्पटी पर्याप्त है, मात्रा १ रत्ती से ५ रत्ती तक क्रमशः बढ़ानी और घटानी

(१) वासा के क्वाथ में चतुर्थांश चीनी डालकर पका लेने से वासा शर्करोदक या शर्बत वासा बन जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये, अनुपान में पुनर्नवा चूर्ण रक्खा जा सकता है। वह भी मधु के साथ, जब मात्रा ३-४ रत्ती पर्पटी की देनी हो तब एक समय के बजाय ३ बार देनी चाहिये।

स्वर्ण पर्पटी के अभाव में पञ्चामृत पर्पटी भी काम दे सकती है। पञ्चामृत पर्पटी में अभ्रक है जिसमें सिलिका है जो कि क्षय कास तक को दूर करती है और आयु-वर्द्धक बल-वर्द्धक रसायन तथा धातु शोधक है। फिर ताम्र और लोह का योग भी विचित्र कार्य करता है। जहां लोह कार्य न करे ताम्र मिला देने से लोह की कार्य-क्षमता बढ़ जाती है। ताम्र भी लोहवत् रक्तजनक, जीवाणु नाशक तथा रसायन है। अतः पञ्चामृत पर्पटी भी महत्व की वस्तु है।

किन्तु पर्पटी सेवन काल में लवण सर्वथा त्याज्य है लवण के अतिरिक्त तीक्ष्ण अम्ल और विदाही पदार्थ भी नहीं देना चाहिये।

भोजन में केवल दूध और जल में भी दूध ही देना है।

उक्त पर्पटियों के प्रयोग पाण्डुरोग की सभी अवस्था में किये जा सकते हैं इनसे सत्वर लाभ होता है। उक्त औषधियों के अतिरिक्त वृहत् लोकनाथ रस (भै॰ र०) त्रिनेत्र रस (यो॰ र०) पुनर्नवादि मंडूर (चरक) सुदर्शन चूर्ण आदि आवश्यकतानुसार समय समय पर दिये जा सकते हैं।

वर्णित प्रयोग।

कालमेघ नवायश चूर्ण –

त्रिफला	त्रिकुटा	३-३ तोला
चित्रकमूलत्वक		वायविडङ्ग*
नागरमोथा		—तीनों १-१ तोला

* वायविडङ्ग को चूर्ण करने से पूर्व हलकी चोट से उसका छिलका उतार देना चाहिये।

कालमेघ का सूक्ष्म चूर्ण उत्तम लोह भस्म
—दोनों ६-६ तोला

—इनमें से चूर्ण योग्य वस्तुओं को सूक्ष्म चूर्ण करके और सबको एकत्रित करके कालमेघ क्वाथ की ७ भावना देकर सुखालें।

ताप्यादि लोह-वायविडंग, हर्र का वक्कल, शिलाजीत (सूर्यतापी) लोह भस्म और सुवर्ण माक्षिक भस्म को समभाग लेकर कूट चूर्ण करने योग्य को चूर्ण करके दो दिन तक घोट कर रखलें।

वान्तिहर—सूखा पोदीना, छोटी इयालची के बीज जहरमोहरा खताई की पिष्टी, अगर और छोटी पीपल समान भाग लेकर सूक्ष्म करके रखलें।

सुधाषट्क –प्रवाल भस्म १ भाग मुक्ता शुक्ति भस्म २ भाग शंख भस्म ३ भाग पीत कपर्द भस्म [४] भाग कूर्म पृष्ठास्थि× भस्म ५ भाग और गोदन्ती भस्म ६ भाग लेकर इसमें नीबू के रस की ३ भावना देकर रखलें। यह प्रयोग हमने यादव जी की पुस्तक सि॰ प्र॰ सं॰ से लिया है।

खमीरा गावजवां –

गावजवां	गुल गावजवां	१॥-१॥ तोला
चन्दन बुरादा सफेद		तूदरी सफेद
बादरंज बोया		वहमन सफेद
बहमन लाल	गुलाब के फूल	धनियां
काहू के बीज		—हरेक १-१ तोला

× कछुवे की खोपड़ी का ऊपर का भाग ही भस्म के योग्य है; अतः नीचे के भाग को काट कर फेंक देना चाहिये। कोयलों की आग पर रखने से खण्ड हो जाते हैं फिर कूटकर टिकिया बना कर धूप में सुखाकर कोयलों की आग पर देने से ३-४ बार में कूर्म पृष्ठ की भस्म हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—उक्त दस च.जों को कूटकर ५० तोला जल और २० तोला कद्दू के रस में रात को भिगो दो, सवेरे क्वाथ करलो, जब तिहाई जल और रस रह जाय छान लो, इस क्वाथ में १ सेर चीनी डालकर कलई की पतीली में औटाओ। जब चाशनी हो जाय तब अर्क केवड़ा, अर्क वेदमुश्क १०-१० तोले कद्दू की मींग, खीरे की मींग, तरबूजे की मींग २-२ तोले सिल पर पीसकर डाल दो और चांदी के बड़े ८ वर्क भी डालकर सोटे से घोटकर रखलो। यह ग्रीष्म-ऋतु में बर्तना चाहिये।

दूसरा प्रयोग —

गावजवां की पत्ती	३॥ तोला
गुल गावजवां	बहमन सफेद
सफेद चन्दन का बुरादा	तुख्म बालंगा
आबरेशम (कैंची से कतरकर)	धनियां
तुख्म फरंज मुश्क	—प्रत्येक १-१ तोला

विधि इन सबको जौकुट करके रात को २ सेर जल में भिगोदो। सबेरे कलई के बर्तन में क्वाथ करो, जल तिहाई रहने पर छान लो। इस क्वाथ में १ सेर चीनी डालकर चासनी बनाओ और घोटकर रखलो। यह प्रत्येक ऋतु में अच्छा रहता है।

पथ्य—गेहूँ की रोटी, कद्दू, परवल, बथुआ, पालक, कच्चा गोला, दही, मट्ठा, खजूर, अंगूर, सेव, गाजर आदि पथ्य हैं, पक्का आम इसमें अमृत है।

उक्त प्रयोग मेरे सुपरीक्षित हैं। सैकड़ों रोगी प्रति वर्ष इन्हीं योगों से आरोग्य लाभ करते हैं, किंतु खेद है कि अपनी पुत्री सरला जिसका डेढ़ वर्ष से इलाज कर रहा हूं और करा रहा हूँ स्वस्थ नहीं हुई। हां, अभी तक कल्प नहीं करा सका। यह त्रुटि अवश्य रह गई है। वैद्य महानुभावों से पुनः प्रार्थना है कि कोई सुपरीक्षित प्रयोग भेजने की कृपा करें।

डाक्टरों का जमघट

डाक्टर ने आकर मरीज़ की परीक्षा की। परन्तु मर्ज समझ में नहीं आया, तब एक और डाक्टर बुलाया गया।

इस प्रकार एक से हुए दो डाक्टर।

दोनों डाक्टरों में हुआ मतभेद। तब उन्होंने परामर्श के लिये एक और डाक्टर बुलाया।

इस प्रकार दो से हुये तीन डाक्टर।

तीनों डाक्टरों ने रोगी को ठोक-बजाकर देखा और तै किया कि एक विशेषज्ञ आना चाहिये।

इस प्रकार तीन से हुये चार डाक्टर।

चारों डाक्टरों को यह देख कर यह बड़ा आश्चर्य हुआ कि रोगी अब भी जिन्दा है और तब एक पांचवां डाक्टर आया, मरीज़ को नली के जरिये भोजन देने के लिये।

इस प्रकार चार से हुए ५ डाक्टर।

पांचों डाक्टरों ने अपना करतब दिखाया और फिर एक आदमी बुलाया, एक्स-रे के द्वारा मरीज़ की परीक्षा करने के लिये।

इस प्रकार पांच से हुए छह डाक्टर।

छहों डाक्टरों ने मरीज़ को स्वर्गधाम भेजने की तैयारी की और एक और डाक्टर बुलाया, इसलिये कि अब क्या किया जाय।

इस प्रकार छह से हुये सात डाक्टर।

सातों डाक्टरों ने मिलकर निश्चय किया कि आपरेशन की ज़रूरत है, और तब एक सर्जन बुलवाया गया।

इस प्रकार सात से हुये ८ डाक्टर।

आठों डाक्टरों ने देखा कि गड़बड़ी अगर कुछ है तो मरीज़ की रीढ़ में ही है, इसलिये एक स्नायु-विशेषज्ञ की सहायता चाही।

इस प्रकार आठ से हुये नौ डाक्टर।

मगर नौ के नौ डाक्टर थे पुरुष, इसलिये उन्होंने बुलवाई एक डाक्टरनी।

इस प्रकार नौ से हुए दस डाक्टर।

और तब दसों डाक्टर मरीज की चारपाई को घेरकर खड़े हो गये, और इस परिणाम पर पहुंचे कि मरीज का तो दम ही निकल चुका है। (मार्डन टाइम्स से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वदेशी माल्ट खाइये ।

अध्यापक—शंकरदेव जी विद्यालंकार, गुरुकुल सूपा [सूरत]

"माल्ट" एक सुपच आहार है। यह अशक्त मनुष्यों को तथा बालकों को खिलाया जाता है। माल्ट वाले अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थ अपने देश में विदेशों से बड़ी भारी मात्रा में आते हैं। ओवल्टीन, हॉर्लिक्स, मेलिन्सफूड, माल्ट-एक्सट्रैक्ट आदि अनेक महंगे भोज्य पदार्थों के लिये भारतवासी लाखों रुपये परदेश भेजते हैं।

माल्ट बनाना कुछ कठिन नहीं है। भारत में पैदा होने वाले किसी भी अनाज में से माल्ट बनाया जा सकता है। दक्षिण भारत में बहुत-से लोग जौ में से बहुत अच्छा माल्ट बनाते हैं। श्री० एन० राजगोपालन नामक एक दक्षिण-भारतीय सज्जन बड़ी मात्रा में माल्ट बनाते हैं। उनकी माल्ट बनाने की विधि सर्वसामान्य के हितार्थ यहां दी जाती है।

अच्छी जाति के जौ लेकर उन्हें सोलह घण्टे तक पानी में डुबोये रखना चाहिये। प्रति चार घण्टे में उनका पानी बदलते रहें। अच्छी प्रकार भीग जाने पर उनको पानी में से निकाल कर एक अंधेरी कोठरी में सुखाने के लिये चटाई पर फैला दें, फैला कर ऊपर श्वेत कपड़ा ढांक दें। अंधेरा इसलिये आवश्यक है कि अंधेरे में उनके अंकुर जल्दी फूट निकलते हैं। जब ये अंकुर आधा इंच लम्बे हो जायं तो उनको अड़तीस घण्टे तक धूप में सुखावें, सुखाने की क्रिया समाप्त होजाने पर उनको भूनें; जौ का रंग सुनहरी हो जाय, तब तक उन्हें भूनना चाहिये। यह भूनने की क्रिया ही माल्ट बनाने की सबसे अधिक महत्त्व की क्रिया है। भूनने के बाद जौ को ध्यान से पीसना चाहिये और बारीक कपड़े से छानकर डब्बों में भर लेना चाहिये। लीजिये, यह आपका स्वदेशी सस्ता और उत्तम माल्ट तैयार हो गया। चमचा दो चमचा भर यह माल्ट चूर्ण गरम पानी में अथवा गरम दूध में मिलाकर सेवन कीजिये। स्वादिष्ट बनाने के लिये थोड़ी चीनी (खांड) मिला सकते हैं। इस प्रकार पुष्टिदायक मधुर और सात्विक पेय तैयार होगया।

यह माल्ट रंग रूप और सुगन्ध में विदेशी माल्ट से काफ़ी मिलता-जुलता है। ठण्डे पानी में भी यह शीघ्र मिल जाता है। यह माल्ट परदेशी माल्ट से ज़रा भी उतरती कक्षा का नहीं है। पृथक्करण द्वारा ज्ञात हुआ है कि इस माल्ट में निशास्ता (स्टार्च) पर्याप्त होता है। मद्रास-सरकार के औद्योगिक विभाग ने ज्वार में से माल्ट बनाने के सफल परीक्षण किये हैं। जौ और ज्वार द्वारा माल्ट बनाने की क्रियाएं एक हैं। भेद इतना ही है कि ज्वार को सोलह घण्टे की जगह तीस-चालीस घण्टे तक पानी में भिगोये रखना चाहिये तथा अंकुर फूटने के लिये उसको चार-पांच दिन तक अन्धकार में रखना चाहिये। भूनने के लिये हलकी आंच होनी चाहिये। गरम अवस्था में ही उसके अंकुरों को टाट पर रगड़ कर पृथक् कर लेना चाहिये और उसके बाद पत्थर की चक्की पर पीस लेना चाहिये।

अनाज में अंकुर फूटने की क्रिया से कई प्रकार के रासायनिक परिवर्तन हो जाते हैं। उस क्रिया से अन्न में कई एक सुपच तत्व पैदा हो जाते हैं। इसी कारण माल्ट शीघ्र ही पच जाता है। किसी भी अनाज में से माल्ट बनाया जा सकता है। गांव-वासी उक्त रीति से बड़ी आसानी से माल्ट तैयार करके उसका लाभ उठा सकते हैं।

(मधुकर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहरुबा ।

लेखक—श्री० बा० दलजीतसिंह जी, आयुर्वेदीय विश्वकोषकार ।

नाम—

(हिं) कहरुवा, सफेद डामर; (फा०) कहरुवा; (सं०) तृणकान्त; (म०) गवतास चुम्बक, चन्द्रस, सफेत डाभर; (द०) केरह्वा, कहरोवा, कहरवा, करेवा; (बम्ब०) राल; (बं०) सुन्द्रस; (का०) खिद्रुस (अं०) दी इंडियन गम कोपल (The Indian gum-copal) दी पाइनी रेजिन (The piny resin); अंबर इलेक्ट्रम ।

वक्तव्य—

कहरुबा भारतीय सदरुस है । इसलिये बंगला और काश्मीर में इसे क्रमशः सुंद्रस और 'सिंद्रुस' तथा मराठी में 'चंद्रस' कहते हैं । वास्तविक संदरूस अफ्रीका में होने वाले ट्रकिलोबिअम हार्निमन्निएनम् (Trachylobium Harnemannianum, Hoyne) नामक एक शिम्बी वर्गीय वृक्ष का एक गोंद है, जिसे अंग्रेजी में गम कोपल (gum copal) कहते हैं । अजमेर में इसे छीलकर कहरुबा तैयार करते हैं । समगुल बहर (सामुद्रनिर्यास) क़र्नुलबहर (सामुद्रशृङ्ग) और मिस्बाहुरूम (रूम दीपक) प्रभृति इसकी अरबी नाम इसे समुद्री द्रव्य समझ कर प्राचीन अरबी यूनानी चिकित्सकों द्वारा कल्पित किये गये जान पड़ते हैं । कहरुबा को यदि वस्त्र या चमड़े आदि पर यहां तक रगड़ें [घिसें] कि वह गरम हो जाय, फिर उसे तृण के बारीक तिनके के समीप ले जांय, तो वह उसे चुम्बक की भांति पकड़ [खींच या उठा] लेता है, जो इसका प्रधान लक्षण है । इसलिए इसे फारसी में कहरुवा (कह-काह का संक्षिप्त रूप=तृण, रुवा=ले जाने वाला) कहते हैं । तृणकान्त इसका समीचीन संस्कृत पर्याय है । तृण को अपनी ओर आकर्षित करने का यह गुण वा लक्षण सदूरूस और खान से प्राप्त होने वाले एक प्रकार के कड़े पीले अश्मीभूत राल (A fossil Resin) वा गोंद में भी जिसे लेटिन में सक्सिनम् (Succinum) और अंगरेजी में अंबर (Amber) कहते हैं, पाया जाता है । इसलिये इनको भी कहरुवा कहते हैं । परन्तु प्राचीन यूनानी द्रव्यगुणवेत्ताओं के मत से कहरुवा संदरुस की जाति का एक प्रकार का वृक्ष-निर्यास है । इनमें सुंदरूस विदेशी डाभर (Gum-copal) है और सफेद डाभर भारतीय डाभर (Indian gum-copal) वा भारतीय संदरुस अर्थात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदरुसकी जाति का एक प्रकार का वृत्तनिर्यास है जिसे दक्षिण भारतवर्ष में कहरुवा कहते हैं। अतः यूनानी ग्रंथोक्त कहरुवा यही है। उपर्युक्त विवरण से यह प्रतिपन्न होता है कि यूनानी ग्रंथोक्त कहरुवा यह सफेद डाभर ही है। अस्तु इसी का वर्णन यहां किया जा रहा है।

शालादि वर्ग (N. o. Dipters carpece)

उत्पत्ति स्थान –

पश्चिमी घाट की पहाड़ियां, मलावार, दक्षिण भारतवर्ष और पश्चिमी प्रायद्वीप इत्यादि।

वर्णन—

यह संदरुस की तरह का एक प्रकार का स्वच्छ अत्यंत चमकदार पीले रंग का गोंद है, जो शालवर्गीय श्वेत डाभर या अजकर्ण (Vateria indica, Linn) नामक वृक्ष से प्राप्त होता है। इसकी उक्त विविधता गोंद के संग्रह-विधि भेद से एवं वृक्ष के अवस्था-भेद से उत्पन्न होती है। इनमें कोई हलका हरे रंग के, घन, समरूप और तोड़ने पर कांचवत्, परन्तु दूसरे इससे भिन्न कोषाकार (Vesicular) और अंबरी रंग के (Amber coloured) होते हैं। इनके उत्तम अंबरी रंग के टुकड़े कहरुवा नाम से दक्षिण भारतवर्ष के बाजारों में बिकते हैं। जलाने पर यह उज्वल एवं स्थिर प्रकाश और सुगंध देता है किंतु धूआं बहुत कम देता है। थोड़ा कपूर मिलाने और अग्नि पर रखने से यह मद्य (स्पिरिट) में विलेय होता है। हलकी आंच पर यह मोम और तेल में मिल जाता और उत्तम रालदार मरहम का रूप ग्रहण कर लेता है।

भेदादि –

रूमी और तिब्बती भेद से यह दो प्रकार का लिखा गया है। उनमें रूमी अपेक्षाकृत अधिक उत्तम समझा जाता है। उत्तम कहरुवा वह है जो कड़ा उज्ज्वल और सुनहले रंग का हो, देर में पिघले हाथ से रगड़ने पर गरम हो जाय। उससे नीबू के रस की सी सुगंध आवे और जो घास के तिनके रेशम और रुई को उठाले।

कहवा शमई इसका सर्वोत्कृष्ट भेद है। गजबादावर्द के अनुसार इनमें कोई पिलाई लिये लाल और कोई ललाई लिये या सफेदी लिये पीला होता है।

मिश्रण और परीक्षा —

इसमें प्रायः संदरूस की मिलावट करते हैं; परन्तु संदरूस की भग्न सतह चमकदार होती है। इन दोनों में सूक्ष्म भेद इस प्रकार है—

(१) संदरूस के हाथ में अल्प मर्दन से ही जो थोड़ी गरमी उत्पन्न होती है उससे यह चुम्बक की तरह तृण को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। इसके विपरीत कहरुवा को अत्यधिक घर्षण की आवश्यकता होती है। फिर भी तृणाकर्षण में सुंदरूस कहरुवा के बराबर नहीं है।

(२) संदरूस कोमल होता है, परन्तु कहरुवा कठोर होता है।

(३) कहरुवा को मलने से उसमें से कागजीनीबू के रस की सी सुगन्ध आती है; परन्तु संदरूस में उक्त सुगन्ध का अभाव होता है और यह स्वाद में कडुआहट लिए होता है।

(४) संदरूस रक्तवर्ण प्रधान, परन्तु कहरुवा पीतवर्ण प्रधान होता है।

(५) संदरूस को जलाने से हींग की सी दुर्गन्ध आती है परन्तु कहरुवा को जलाने से उसमें मस्तगी की सी महक आती है।

वक्तव्य—

चिकित्सा में इसको जलाकर बनाई हुई मसी या गुलाब पुष्पार्क आदि में घोटकर बनाई हुई पिष्टी बहुधा प्रयोग में आती है।

[शेष पृष्ठ ५७० पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीतल चीनी ।

लेखक—श्री० कविराज युगलकिशोर जी गुप्त,
डी. आई. एम. एस., कानपुर ।

शीतलचीनी को कबाबचीनी, कबावा और कंकोल भी कहते हैं। अंगरेजी में इसे क्यूबेब्स या कुबेबी फ्रस्टस (Cubeb or cubebae fructus) कहते हैं। यह जावा में अधिक पैदा होती है। इसके पूर्ण विकसित किन्तु कच्चे फलों को सुखाकर संग्रह किया जाता है।

इसमें ५ से १८ प्रतिशत तक उड़नशील तैल, कुबेबिन (Cubebin), कुबेबिक एसिड (Cubebic-Acid), वसा, गोंद इत्यादि रहते हैं। २ माशे से ४ माशे तक की मात्रा में इसका चूर्ण प्रयोग किया जाता है। इसको मद्य के साथ मिलाकर टिंचर क्यूबेब बनाया जाता है। टिंचर क्यूबेब भी २ माशे से ४ माशे तक की मात्रा में उपयोग किया जाता है। इसका तैल भी निकाला जाता है जिसे आयल आफ क्यूबेब कहते हैं, उसकी मात्रा ५ से २० बूंद तक है।

शीतल चीनी उष्ण, तीक्ष्ण और तिक्त होने के कारण अधिक मात्रा में सेवन करने पर त्वचा, आमाशय और आन्त्र में उत्तेजना (Stimulation) और क्षोभ (Irritaton) उत्पन्न करती है। यह वात और कफनाशक भी है। मिर्च की भांति यह भी अग्निवर्धक और पाचक होती है किन्तु अधिक मात्रा में पचन संस्थान में विकृति उत्पन्न करती है। श्वास, मूत्र और प्रजनन संस्थानों की श्लैष्मिक कलाओं के स्राव को उत्तेजित एवं प्रवाहित करती है और इन सभी स्थानों के संक्रमण को दूर कर देती है, अतएव शीतलचीनी मूत्रल एवं मूत्र-प्रजनन संस्थान 'विसंक्रामक' है।

शीतलचीनी का सेवन करने के बाद स्वेद, श्लेष्मा, श्वास और मूत्र के साथ, मार्ग में जीवाणुओं को नष्ट करती हुई, बाहर निकल जाती है। गले की खराबी, प्रतिश्याय और कास में आचूषणार्थ प्रयोग की जाती है। मूत्र और प्रजनन संस्थान पर शीतलचीनी का विशेष प्रभाव होने के कारण सुजाक, मूत्रनलिका शोथ और मूत्रकृच्छ्र में इसका अत्यधिक प्रयोग किया जाता है।

इसके प्रयोग करने की सबसे उत्तम विधि कैपशूल या कैचेट में बंद करके दो चार घूंट दूध या जल के साथ निगल जाना है। एलोपैथिक चिकित्सक इसको अन्य मूत्रल एवं मूत्र संशोधक औषधियों के साथ मिलाकर प्रयोग करते हैं जैसे कोपेबा, बुक्कू, चन्दन का तेल इत्यादि। किंतु इधर कुछ वर्षों से एलोपैथिक चिकित्सक इसका कम प्रयोग करने लगे हैं क्योंकि योरुप, अमेरिका आदि राष्ट्रों ने सूजाक नाशक, मूत्रल एवं मूत्र-संशोधक अनेक नवीन औषधियों का आविष्कार कर लिया है जैसे सिबाज़ोल, सल्फाथियाज़ोल, एस० बी० ६९३ हेग्ज़ाट्रामिन, पेनेसेलीन इत्यादि। इन नवीन आवि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ष्कृत औषधियों से सूज़ाक में आश्चर्यजनक लाभ होता है। २४ घंटे के अन्दर पूय का आना बन्द हो जाता है और २-३ दिवस के अन्दर ही रोग का पूर्णरूपेण निर्मूलन हो जाता है। किन्तु ये नवीन औषधियां बहुत खर्चीली बैठती हैं जिससे भारतवर्ष के ग़रीब लोग नहीं लाभ उठा पाते।

वैद्य और हकीम लोग अधिकतर चन्दन का तैल, कल्मी शोरा, फिटकरी इत्यादि औषधियों के साथ मिलाकर चूर्ण या गोली के रूप में दूध या दूध की लस्सी के साथ प्रयोग कराते हैं जिससे एक या दो सप्ताह में सुजाक ठीक हो जाता है। वैद्यों को आधुनिक युग की आवश्यकताओं की ओर ध्यान देने की नितान्त आवश्यकता है। अब वैद्यों को आयुर्वेद में पूर्णरूप से अन्वेषण कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिये और आधुनिक वैज्ञानिकों की नवीन आविष्कृत औषधियों के टक्कर की औषधियों को खोज निकालना चाहिये ताकि वैद्य--समाज वर्तमान वैज्ञानिकों के सम्मुख आत्म समर्पण न करे। अपितु इन वैज्ञानिकों को अपने सामने घुटने टेकने के लिये बाध्य कर दे। 'जय धन्वन्तरि'।

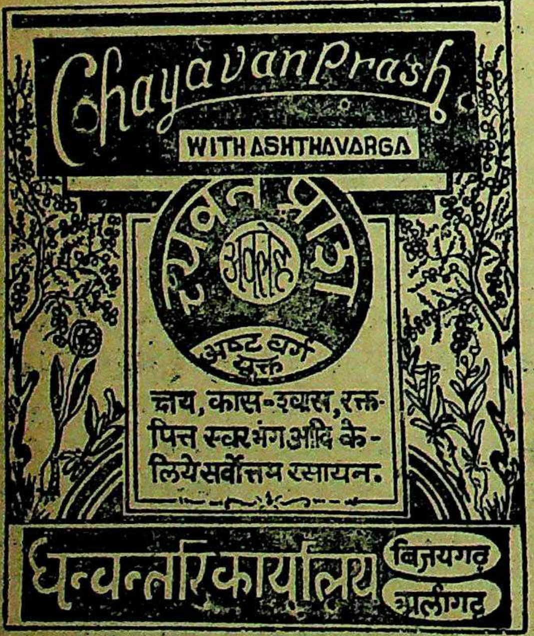

कहरुवा : : [पृष्ठ ५६८ का शेष]

प्रकृति–

गरमी और सरदी में मोतदिल (अनुष्णाशीत) तथा दूसरे दर्जे में रूक्ष [खुश्क] है।

गुण-कर्म -

यह सौमनस्यजनन और हृद्य (हृदय बल-दायक) है तथा अन्त्र और आमाशय पर बल्य एवं संग्राही कर्म करता है और बाह्यतः रक्तस्रुति को बन्द करता (रक्तस्तंभक) है।

उपयोग –

हृदय दौर्बल्य और दिल की धड़कन [खफकान] दूर करने के लिये इसे सौमनस्यजनन योगों (मुफर्रेहात) में योजित करके खिलाते हैं। नकसीर बन्द करने के लिए इसको खिलाते, नस्य [नफूख] देते और मस्तक पर लेप करते हैं। रक्तष्ठीवन [खून थूकना] रोकने के लिए अकेला या उपयुक्त औषधियों के साथ इसे शर्बत खशखाश में मिलाकर चटाते हैं। रक्तातिसार, रक्तार्श [बवासीर का खून] और अत्यन्त रजःस्राव [कसरते हैज़] या रक्तप्रदरादि रोकने के लिए इसे उपयुक्त औषधियों के साथ खिलाते हैं। आमाशय को बल प्रदान करने [दीपन] के लिए इसका मस्तगी के साथ उपयोग करते हैं। सद्यः व्रणों पर इसे बारीक पीसकर अवचूर्णन करने से यह रक्तस्राव बन्द करता और उन्हें सुखा देता है।

अहितकर—शिरःशूलजनक।

निवारण - बनफशा।

प्रतिनिधि—संदरूस।

मात्रा—१ से २ माशे तक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुलहुल के चमत्कार

—लेखक—

श्री. पं. भिषग्वर वैद्य लेखराम जी शर्मा शास्त्री भिषगाचार्य,

श्री नव-जीवन औषधालय, संगरिया [बीकानेर]

भावप्रकाश में-आदित्य भक्ता ब्रह्मसुवर्चला, तिलपर्णी सूर्यलता, आदि संस्कृत नाम हैं। और गुणों में खारी, कड़वी, शीतल, अग्नि वर्द्धक, मूत्रल, मृदुविरेचक, कृमिनाशक, कफ को दूर करने वाली, पित्त को बढ़ाने वाली, अर्बुद और सूजन को नष्ट करने वाली, चर्म रोग, खुजली, व्रण, कुष्ठ, मलेरिया, ज्वर, कर्णरोग तथा मूत्र सम्बन्धी रोगों को नष्ट करने वाली मानी है।

अनुभव सिद्ध गुण—

प्लेग [महामारी] में इसके पञ्चांग को शिला पर महीन पीस कर टिकिया बनालो इस टिकिया को प्लेग की सूजी हुई ग्रन्थि पर रख कर पट्टी बांध दो, इस प्रकार करने से उस गांठ पर एक छाला पड़ जावेगा, इस छाले को फोड़कर फिर उस पर वेसलीन लगाते रहो; इस प्रकार करने से गांठ बैठ जाती है और प्रायः रोगी बच जाता है। बद गांठ पर तथा कांखल वाई पर भी इसी प्रकार प्रयोग करना चाहिए। अचूक काम करती है।

फोड़े-

निम्बू के रस या पानी में पीस कर फोड़ों पर बांधने से सूजन चली जाती है तथा फोड़ा ठीक हो जाता है।

पेट के कीड़े-

तीन माशा इसके बीजों के चूर्ण के साथ उतनी ही शक्कर मिलाकर गर्म पानी के साथ लेने से आभ्यन्तरिक कृमि नष्ट हो जाते हैं और एरण्ड तैल का जुलाब देने से बाहर आ जाते है।

कर्णशूल और कीड़े—इसके स्वरस को कान में डालने से कान के कीड़े तथा शूल तत्काल शान्त होती है।

श्वास रोग-इसके प ६ माशा रस में तथा उसमें १ माशा पीपल के चूर्ण को मिलाकर देने से श्वास रोग तथा श्वास नली सम्बन्धी रोगों में प्रायः फायदा होता है।

उपदंश-इसके पत्तों का ६ माशा स्वरस सुबह-शाम पीवे तथा इसकी लुगदी को व्रणों पर बांधे, इस प्रकार एक सप्ताह के प्रयोग से गर्मी [आतशक] चली जाती है।

शीतज्वर [मलेरिया]-हुलहुल के पत्ते तथा काली मिर्च तोल में समान भाग लेकर महीन पीसलें और चना के बराबर गोली बनालें बुखार आने के पहिले दिन में तीन बार तीन २ घण्टे बाद पानी के साथ लेने से शीत ज्वर शर्तिया चला जाता है।

विष विकार-इसके बीजों का चूर्ण तीन-तीन माशा बकरी के दूध के साथ दिन में तीन बार देने से सब प्रकार के विष शान्त हो जाते हैं। सर्प विष में यह प्रयोग विशेष लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

अर्श-इसके बीजों का चूर्ण ३ माशा तथा उतनी ही शक्कर मिलाकर ठण्डे पानी या मठे के साथ सेवन करने से और मस्से पर इसके पत्तों की गर्म करके लुगदी बांधने से बादी का [सूका] मस्सा शांत हो जाता है।

आधाशीशी—हुलहुल के बीजों को इसी के पत्तों के रस में घोट कर मस्तिष्क पर लेप करने से आधाशीशी शांत होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाह्य कृमि—इसके पत्तों के रस को कृमि स्थान पर लगाने से वाह्य कृमि [जूं लीख] या अन्य कीड़े मर जाते हैं।

गलगण्ड—लहसुन और हुलहुल के पत्तों को पीसकर गलगण्ड पर लेप करने से यह फूटकर ठीक हो जाता है।

हमारा चमत्कारी प्रयोग —

– चार तोला संखिया तथा २ तोला हरताल तपकिया एक हंडिया में डालकर एक सेर हुलहुल का स्वरस तथा आध सेर आक का दूध डालकर मन्द २ अग्नि के द्वारा पकावें जब वह घनसत्व हो जावे तब इस हंडिया पर कपड़ मिट्टी करके गजपुट में दे दें। स्वांग शीतल होने पर हंडिया निकाल कर उसमें से संखिया और हरताल की भस्म निकाल खरल में महीन पीसकर शीशी में रखलें।

इस भस्म को चौथाई से आधी रत्ती तक दूध के साथ देने से मलेरिया ज्वर, सन्निपात, उपदंश, श्वास, खांसी, वात व्याधि में अचूक लाभ होता है। यह भस्म गर्म होती है अतः दूध का उपयोग अधिक करना चाहिए तथा भोजन में भी दूध और चावल ही होने चाहिये।

जीर्ण ज्वर में इसकी जड़ के क्वाथ को पिलाने से फायदा होता है।

सर्व-साधारण के लिये हुलहुल का परिचय

हमारे यहां मरुभूमि के जंगलों में यह अधिक तादाद में होती है, इसका पौदा वर्षा ऋतु में पैदा होता है और डेढ़ से अढ़ाई फुट तक ऊंचा होता है, नीचे से इसकी एक डंडी होती है तथा ऊपर जाकर भूमकेदार अनेक डंडियों में विभक्त हो जाता है इस पर सफेद रंग का चिकना ऊंचा फूल होता है। इसके पत्तों में हींग के समान उग्र और असह्य गन्ध आती है। अतः हमारे यहां इसको गिन्धली भी कहते हैं। इस पौधे के ऊपर के भाग में पञ्चपर्णी तथा नीचे के भाग में त्रिपर्णी पत्ते आते हैं। इसके फूल पीले रंग के होते हैं, इसकी फली आध से लेकर तीन इञ्च तक लम्बी होती है।

मकर ध्वज वटी

सर्व-प्रमेहों के लिये उपयोगी, रस-रक्त आदि सप्त-धातु वर्धक, पौष्टिक सर्वत्रप्रसिद्ध रसायन। सभी औषधि-विक्रेताओं के यहां मिलती है।

मूल्य--४१ गोलियों की एक शीशी २॥≈)

निर्माता -धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ U.P.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षित प्रयोग

खुजली का प्रयोग—

बबूल की सूखी पत्ती	कबीला
मेंहदी की सूखी पत्ती	—तीनों ६-६ माशे
चन्दन दोनों	मैनशिल
पोटास	मुरदा संख
गंधक	— पांचों १-१ तोला
कपूर देशी	४ माशे

—चमेली के तैल में २ निम्बुओं का अर्क मिला कर नीम की लकड़ी से खरल करे और डिब्बामें रख लेवें। नित्यप्रति कारबोलिक साबुन से स्नान करके दवा स्तेमाल करें। खुजली १० दिन के अन्दर अच्छी हो जायगी। परीक्षित है।

श्री० बैजनाथप्रसाद वैद्य आयुर्वेद विशारद,
मिसिरिख (सीतापुर)

पामा (खुजली) पर—

अनुभूत योग—

कच्ची हल्दी और दूब समान भाग बारीक पीस कर उबटन की तरह मालिश करें। ८ दिन में दोनों तरह की खुजली (पकने वाली और सूखी) नष्ट हो जाती है।

दो घंटे के बाद नीम के साबुन से स्नान करें। अगर घाव हो गया हो तो मरहम की भांति लगावें।

मलेरिया ज्वर (ज्वरामृत)—

सत गिलोय	काली मिर्च
पिप्पली	मुनक्का

विधि--काली मिर्च, पिप्पली को कूट पीस कपड़-छान करलें, और मुनक्का के बीज निकाल कर चारों को खरल में डाल अर्क गुलाब में मर्दन कर बेर के बराबर वटी बनावें।

प्रातः-सायं १-१ वटी, गर्म जल व अर्क गाहजबान से दें।

मलेरिया में २ घंटे प्रथम देवें, बाद में भी दे सकते हैं अर्थात् चढ़े ज्वर में देने से ज्वर को स्वेद लाकर उतारती है, अनुभूत है।

अजीर्ण शत्रु—

काली मिर्च	१ भाग
श्वेत जीरक	२ भाग
सेंधा नमक	३ भाग
नवसादर	४ भाग

विधि—सबको कूट पीस कर रखें।
मात्रा—१ माशा से ६ माशा तक।
गुण—अजीर्ण को दूर कर अग्नि को बढ़ाता है, स्वादिष्ट व रुचिकारक है।

रक्त-स्तम्भनकरी—

शु० हिंगुल	६ माशे
शु० अहिफेन (अफीम)	६ माशे
जायफल	१ माशे
खोपड़ा	१ माशे
बीजवन्द	पद्माख
कपूर	—तीनों १-१ तोला

विधि—सबको यथासंभव कूट पीस कर, कपूर तथा अफीम मिलावें और खरल में डाल बबूल पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरस की १ भावना देकर १-१ रत्ती की बटी बनावें।

अनुपान—गर्म जल अथवा अपनी इच्छानुसार निर्धारित करलें।

गुण—रक्तार्श, बात रक्त, रक्त-प्रदर आदि रोगों के रक्त रोकने में लाभप्रद है।

आम पाचन चूर्ण—

छोटी हरड़	इन्द्रायण
गूलर की छाल	श्वेत चन्दन

—चारों १-१ छटांक

विधि—सबको कूट पीस कर चूर्ण बनावें।

मात्रा—१ माशे से ३ माशे तक।

अनुपान—गर्म जल।

गुण—आम को पचाकर उदर पीड़ा को दूर करती है। अनुभूत है।

कासश्वास नाशक अर्क—

त्रिफला	पिप्पली	कुलींजन
मुलैठी	जूफा	अनारदाना
लघु कंटकारी	लसूडियां	गोखरू
गिलोय	रेशाखतमी	फिटकरी
नवसादर	शु० गंधक	आंवलासार

—प्रत्येक ८-८ तोला

काला वांसा की जड़	२॥ सेर
अपामार्ग	१। सेर
वांसा मूल की छाल	१॥ सेर
गुड़ पुराना	२॥ सेर

विधि—इन सबको कूट कर १५ सेर जल में भिगोवें, १ दिन-रात पड़ा रहने के बाद अर्क निकाल लें। करीब ८-६ बोतल अर्क प्राप्त होगा।

मात्रा—१ पल।

गुण—कास और श्वास में बड़ा ही लाभप्रद है।

पथ्य—मूंग, रोटी, दूध, घृत, कफ कारक चीजों से परहेज।

—चिकित्सक ब्रह्मदत्त जी शर्मा, वैद्यराज।

एरंड-पाक—

अनेक प्रकार की अमृतमयी वनौषधियों से महा गुजरात में आयुर्वेदीय चिकित्सा के लिये विशेष क्षेत्र है। वैद्य और आयुर्वेदीय पद्धति के मानने वाले डॉक्टर अगर ध्यानपूर्वक, विधिपूर्वक और शास्त्रीय प्रयोग के तौर पर इन वनौषधियों का उपयोग करते रहें तो बहुत ही कुछ जानने को मिलता है एवं कम खर्च और निर्भयता से अनेक उपचार सफलता-पूर्वक किये जासकते हैं।

'एरंड' के गुण-दोष प्रायः वैद्यों को सुविदित हैं। मुझे भी करीब ८-१० वर्ष से एरंड की उपयोगिता का अनुभव है। हमारे दवाखाने में आने वाले अनेक रोगियों पर एरंड के विविध प्रयोग सफल हुए हैं। उन प्रयोगों से एक मुख्य "एरंड पाक" निम्न लिखित है:—

एरंड बीज (की मज्जा)	१० तोला
घी	१ तोला
मिश्री (खड़ी शक्कर)	२० तोला
दूध	२०० तोला
छोटी इलायची के बीज	आधा तोला

—एरंड बीज (बीज के छिलके उतार कर निकाली हुई मज्जा) १० तोला लेकर उसे कलई की हुई थाली में कटोरे से महीन पीस लें। बाद में दूध २०० तोला लेकर गर्म करें। उंगली तक गर्म दूध में एरंड बीज के उस चूर्ण को छोड़ कर दूध को अच्छी तरह खौलायें जब रबड़ी जैसा हो तब उसमें शक्कर २० तोला का चूर्ण मिलायें। जब वह गाढ़ा हो जाय तब उसमें घी २० तोला मिलाकर उसे एकसा हिलाते रहें। ज्यों ज्यों पाक गाढ़ा होता जायगा त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यों भीतर का घी अलग होता जायगा। इस प्रकार घी जब बिलकुल अलग हो जाय तब (रवादार हलवा जैसा हो जाने पर) पाक तैयार हुआ जानें। पीछे उसे नीचे उतार कर घी के साथ ही एक थाली में फैलाकर ठंडा करें। ऊपर से इलायची १/२ तोला के बारीक चूर्ण को बिखेरें। ठंडा होने के बाद दो दो तोले के चकते बना रक्खें।

मात्रा—रोज सुबह, सूर्योदय के पहिले १ टुकड़ा खायें और दोपहर के भोजन के पहिले कुछ भी और खुराक न खायं, यह इसकी खास चाभी है।

बस इतने सादे पाक के सेवन से पित्तप्रकोप से हुए फोड़ा, फुन्सी, खस विस्फोटक, खुजली वगैरः रोगों में अमृत समान लाभ मिलता है।

कब्ज़ीयत, पित्त का अतिरेक, शुक्र का पतलापन, स्त्रियों के प्रदर एवं गर्भाशय की उष्णता, आंखों की गरमी और रोशनी की कमी वगैर: दर्दों में और पित्त प्रकोप जन्य रोगों में यह पाक अमूल्य दवा है। यह एक स्वादिष्ट पाक होते हुए उत्तम औषधि भी है इसलिये यह दवा की दवा और मुफ्त में नास्ता है।

आयुर्वेद के चिकित्सकगण इसका प्रयोग अपने रोगियों पर अवश्य कर देखें। आप भी इसके लाभ और गुणों से परिचित होकर लाभ और यश सम्पादन करेंगे।

—ईश्वरलाल जी वैद्य,
(कांछोली, वाया-अमलसार)

निमोनियां में पसली के दर्द पर—

असली सैंदुर (सिंदूर) को असली विश्वस्त शहद में घोटलें। इसमें थोड़ा सा कपूर मिला दें। अब जितनी जगह दर्द हो उतनी पट्टी स्वच्छ कपड़े की काटकर उक्त मलहम को एन्टीफ्लोजिस्टीन की भांति फैलाकर पसलियों पर चिपका दें और ऊपर से रुई रखकर पट्टी बांध दें। दर्द अवश्य नष्ट हो जायगा।

—श्री० कल्याणसिंह जी वै० विशारद,
सरीला।

रतौंधी पर—

१—भैंस के ताजे गरम २ गोबर में सहजने की ताजी पत्तियों का रस मिलाकर दो तीन बूंद प्रत्येक आंख में टपकाने से रतौंधी २-४ दिन में ठीक हो जाती है। सहजने की पत्तियों का रस और गोबर मिला लेना चाहिये और तब कपड़े की पोटली में रखकर टपकाना चाहिये। यह प्रयोग मेरे पूज्य पिताजी बरता करते थे। उन्हीं से मैंने भी सीखा।

२—मेरे पिताजी खरगोश की ताज़ी कलेजी भी रतौंधी वाले को खाने को देते थे। उससे भी रतौंधी जादू के असर जैसे भाग जाती थी। इस प्रयोग को मैंने भी बरता, आश्चर्य-जनक प्रभाव दिखाया। किन्तु खरगोश की कलेजी आसानी से न मिलने के कारण मैंने बकरे की कलेजी (कलेजा) रोगी को खिलायी, उससे भी रतौंधी ठीक हो गई। शरीर में पित्त की मात्रा कम होने से यह रोग होता है। खरगोश अथवा बकरे का कलेजा पित्त को उत्तेजित (जागृत) करने वाला होता है। इसीसे रतौंधी इस प्रयोग से ठीक होती है।

मृगी रोग पर—

एक लड़के को मृगी का दौरा हुआ करता था। उसकी अंग्रेजी चिकित्सा हुई पर लाभ न हुआ। अन्त में उसका पिता मेरे पास आया, मैंने एक सरल गुप्त प्रयोग बतला दिया। मैंने कहा बच्चे को हाथी की लीद पानी में घोलकर पिलाइये, प्रातः-सायं आधा तोला की मात्रा में दीजिये। वह लड़का अच्छा हो गया और अब तीसरा वर्ष है। उसे अभी तक कभी भी दौरा न पड़ा। अब बच्चे का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य भी बड़ा अच्छा है। उस बच्चे को ३-४ दिन में दौरा अवश्य पड़ जाया करता था। एक सप्ताह के प्रयोग से ही दौरा पड़ना नितान्त बन्द हो गया, किन्तु दवा मैंने एक मास तक खिलाई।

दुखती आंखों की चिकित्सा-

मेरे बच्चे की जब आंखें आजाती हैं तो मैं उत्तम रसौत, उत्तम किरमिची, बोरिक एसिड, शुभ्रा भस्म, गुलाबजल और एक्रीफ्लेवीन लोशन में मिला लेता हूं और दिन में दो तीन बूंद तीन चार बार टपकाया करता हूं बहुत शीघ्र आंखें अच्छी हो जाती हैं। दवा इस प्रकार बनानी चाहिये—

रसौत	किरमिची	बोरिक एसिड
शुभ्रा भस्म		— प्रत्येक १-१ रत्ती
एक्रे फ्लेवीन		¼ रत्ती
गुलाब जल		१ छटांक

--में घोट ले और पांच परत स्वच्छ वस्त्र से छानकर शीशी में भर लें, तब प्रयोग में लावें। यदि एक्रीफ्लेवीन न मिलेया विशुद्ध स्वदेशी चिकित्सा का अनुसरण ही करना हो, क्योंकि सम्भव है किसी समय विदेशी दवायें न मिलें तो बोरिक एसिड के स्थान पर टंकण भस्म और एक्रे फ्लेवीन के बजाय माता या बकरी का दूध प्रयोग में लावे। वैसा ही गुण होता है।

--वैद्य ज्योतिस्वरूप जी सकलानी आ०शा०,
श्रीनगर (गढ़वाल)

आमरक्तातिसार पर —

निम्ब रसायन —

निम्ब बीज गिरी	१ तोला
बड़ी हरड़ का बक्कल	२ तोला

—चूर्ण बनालें।

मात्रा—३ से ६ मासे तक दिन रात में २-३ बार मन्दोष्ण दूध में मीठा डाल कर दें, धारा प्रवाह रक्त और शूल शीघ्र शांत हो जाते हैं।

उदरशूल पर शूलारि —

खाने का सोडा	२ छटांक
गुड़	१ छटांक
गंधक तेजाब	१॥ औंस
जल	३४ औंस

—थोड़े पानी में गुड़ सोड़ा घोल कर तेजाब थोड़ा थोड़ा डालें, मट्टी के बड़े बर्तन में बनाना चाहिये क्योंकि इसमें उफान बहुत आता है। तेजाब खतम होने पर छान कर रखलें।

मात्रा—१ औंस प्रातः सायं प्रत्येक शूल पर इसके अतिरिक्त आमरक्तातिसार या अतिसार पर अच्छा काम करता है। यह प्रयोग ताजा ही अच्छा काम करता है।

आम रक्तातिसार ग्रहणी में १-२ दिन शूलारि देकर बाद में निम्ब रसायन का प्रयोग कराते रहिये। आशातीत लाभ होगा।

पथ्य में केवल मीठा मन्दोष्ण दूध दें।

दाद पर —

एसिड का प्रयोग--

—सोडा खाने का और वैसलीन मिला कर मरहम बनालें। दाद या चम्बल या खाज युक्त व्रण जो अच्छा न होता हो उस पर गन्धक का तेजाब लगाकर कुछ देर के बाद जबकि उसका इच्छित हो जाये उपरोक्त मरहम खूब रगड़-रगड़ कर लगा दें। तेजाब की वेदना शांत हो जायेगी और खाज नष्ट हो जायगी। कण्डू व्रणों पर यह क्रिया दो तीन दिन के अन्तर से करनी चाहिये। बीच के समय में निम्न टिंचर और मरहम प्रयोग करते रहें। भयानक घाव भी इस विधि से शांत हो जाते हैं।

टिंचर प्रयोग--

पोटाशियम परमैगनैट	½ औंस
मुसब्बर (एलुआ)	½ औंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्प्रिट २४ औंस

—मिलाकर धूप में रक्खें ।

यह झांसी वालों का प्रयोग है, मैं इसमें ३ माशे नीला थोथा भस्म भी मिलाया करता हूँ। यह टिंचर मुंह हाथ पैर नाक कान आदि नर्म से नर्म स्थान पर भी बच्चे बड़े सबको फायदा करता है। टिंचर का प्रयोग यदि जख्म पर न कर सके तो चारों तरफ शोथ वाले स्थान पर अवश्य करना चाहिये। ऊपर से मरहम का फाहा रक्खें; यह टिंचर दाह नहीं करता।

मरहम प्रयोग—-

शुद्ध मुरदासंग (मुरदासंग को तीन दिन पानी में खूब खरल कर सुखालें)	२ तोला
कमेला (कबीला)	सफेदा काशगरी
श्वेत कत्था	— तीनों २-२ तोले
सिन्दूर	६ माशे

यथावश्यक वैसलीन मिला कर रखिये। और हर जख्मों पर व्यवहार कीजिये।

वाल रसायन—-

- कूठ (कड़वी), बच, हरड़ का बक्कल, अलग-अलग चूर्ण करके १-१ तोला लें। रजत (चांदी) भस्म १ तोला ब्राह्मी के अर्क में कम से कम १ सप्ताह मर्दन करें; घृत और मधु के अनुपान से निरन्तर सेवन करायें। बाल-रोगों (खासकर तालुकण्टक) में आशातीत लाभ होता है। इस विधि से बच्चे इसे स्वाद से खा लेते हैं।

आयुर्वेद में कतिपय स्थानों पर कुछ कुछ अन्तर से इसका प्रयोग है, भैषज्यरत्नावली में इस प्रकार है :—

कुष्ठं वचा भया ब्राह्मी कनकं क्षौद्र सर्पिषा बर्णायुः कान्ति जननं लेहं वालस्य दापयेत्।

यहां पर लिखित मात्रा १/३२ रत्ती से ¼ तक है। मेरे विचार से बढ़ा कर देनी चाहिये। मैं इसमें स्वर्ण के स्थान पर रजत डालता हूं। स्वर्ण डाला जाये तो ठीक है, कोई इसमें सुवर्ण शब्द से केशर को ग्रहण करते हैं। सुवर्ण तथा रजत भस्म के लिये शास्त्र प्रमाण से बच्चे और जवानों को सेवन करानी चाहिये।

सुवर्णेयथा—प्रक्षीण मेधा स्मृति पाटवानां प्रशुष्यदा म्लान कलेवराणाम्। प्रमुह्यतां शास्त्र गतौ च नित्यं यूनां शिशूनां च परं प्रशस्तम्॥

रजते यथा—प्रक्षीण बुद्धि स्मृति साहसानां शिरोभ्रमेणाति विमोहितानाम् अध्यपनादौ सुचिरं रतानाम् यूनां शिशूना च परं प्रशस्तम्।

शतावर प्रयोग—

—केवल शतावर चूर्ण १ से २ तोला तक दूध के साथ माताओं को लेना चाहिये, इससे दूध ताक़तवर और उचित रूप से बनता है। माता और बालक दोनों पुष्ट होते हैं और शिशु के अक्षि विकार आदि रोग शांत हो जाते हैं।

सिर दर्द पर----

श्वेत फिटकरी कपूर समभाग चूर्ण २ रत्ती द्राक्षासव १० बूंद यथावश्यक जल मिला कर कुल १ छटांक की नस्य दें। पथ्य में दूध में १ छटांक मुनक्का पका कर दें, जाड़ों में अदरक भी मिलादें। रात्रि को काली मूंग की दाल काली मिर्च घी डाल कर गेहूँ का फुलका दें। यह चिकित्सा भैषज्य रत्नावली से उद्धृत की गई है। नस्य में द्राक्षासव अपने विचार से मिलाया करता हूं। केवल ३ रोज में सूर्यावर्त अर्द्धावभेदक आदि रोग शांत हो जाते हैं।

—पं० सागरनारायण शर्मा आयुर्वेदाचार्य, बड़सु।

च्यवनप्राश— ताजी आंवलों से व असली अष्टवर्ग से बना शीघ्र मंगालें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व प्रकाशित वे प्रयोग जिनकी परीक्षा हो चुकी है

परीक्षक कु० अमरार्त्तसिंह कुशावाहा वै. भू.
माधौगढ़ (जालौन)

आरोग्य वटी—

(अनुभवांक पृष्ठ २७८ प्रयोग ४७३)

धतूरा बीज	३। तोला
रेवत चीनी	२॥ तोला
सोंठ	१। तोला
गोंद बबूल	१ तोला

विधि-गोंद बबूल को घोलें, बाकी सब वस्तुओं को पीस छान ज्वार जैसी गोली बनालें।

मात्रा १ से २ वटी। अनुपान-गरम जल या दुग्ध।

वास्तव में लेखक महोदय ने जो कुछ लिखा है सत्य है। मैंने लेख के अलावा सन्निपात, डब्बा रोग नाड़ी शिथिलता आदि रोगों पर भी आजमाया, उत्तम लाभप्रद पाया है। प्रतिश्याय की तो रामबाण दवा है। परन्तु ३ दिन बाद शाम को २ गोली और सुबह २ गोली गरम जल से लेने से यह नहीं मालूम होता कि इस मरीज को जुकाम हुआ था या नहीं।

अहिफेनादि रस—

(परीक्षित प्रयोगांक पृष्ठ ११५ प्रयोग ३६२)

शुद्ध अफीम	१ तोला
शु० हींग तलाव	२ तोला
लौंग	३ तोला
मोचरस	४ तोला

विधि--अफीम को अदरक स्वरस से २१ बार भावना देकर डाले। अतिसार की भयंकर अवस्था में यह पहिली खुराक में ही फायदा पहुंचाता है। बच्चों के हरे पीले दस्त, वमन व लाल ऐंठा (आम युक्त दस्तों) में इसी योग में १ तो० जहरमोहरा खताई मिलाकर देते हैं।

यह बाल, वृद्ध, जवान, गर्भिणी स्त्री आदि को निसंकोच भाव से दे सकते हैं।

मात्रा—२ रत्ती से ३ रत्ती तक।

अनुपान—गौ का मट्ठा या शहद, मां का दुग्ध।

दिन में ३ मात्रा सुबह दोपहर शाम को दें। अगर अतिसार उग्र रूप धारण कर रहा हो तब ४ बार भी दे सकते हैं। रात में आवश्यकता होने पर २ बार और दे सकते हैं।

नोट—बच्चों को बलानुसार दें, क्योंकि इसके स्तैमाल से सुस्ती आजाती है परन्तु चिन्ता नहीं करें, स्वतः ठीक हो जाता है। मैं इसमें अहिफेन १॥ तोला मिलाता हूं, तभी उपरोक्त लाभ तत्काल दिखाता है।

× × ×

परीक्षक—इन प्रयोगों के परीक्षक का पत्र अस्तव्यस्त होजाने से उनका नाम आदि नहीं दिया जा सका है।
—सम्पादक।

खसा 'खुजली'—

एक रोगी को कई महीनों से सूखी खुजली थी इसकी उपेक्षा करने पर वह दाने वाली खुजली से इस प्रकार ग्रसित हो गया कि सारा शरीर (विशे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर गुप्तांग) दानों से भर गया। खूब पक जाने पर वह उसे अच्छी तरह खुजा भी नहीं सकता था कष्ट होता था। यत्र-तत्र अनेक औषधियों का सेवन किया पर आशानुरूप लाभ न हुआ। कुछ वैद्य उसे लगाने की औषधि मरहम आदि देकर बिदा कर देते थे। परिणामत: १०-२० रोज के लिये लाभ प्रतीत होता भी, परन्तु दाने फिर वैसे ही। क्योंकि बिना अन्दर का दोष निवारण किये खुजली को स्थाई लाभ होना नितांत असम्भव था। रोगी विवश था, वह रोगी चिकित्सार्थ मेरे भी समीप आया। मैंने उसे रोग मुक्त करने के लिये विश्वास दिलाया।

चिकित्सानुसार उसे पहिले तीक्ष्ण विरेचन ही कराया। योग में नूसार [नवसादर] तथा टंकण भस्म [चौकिया सुहागा का लावा] दोनों ही लिखे हैं। परन्तु मैंने केवल टंकण भस्म को ही आवश्यकतानुसार विशुद्ध सरसों के तेल में मिश्रित कराकर खुजली से लगवाया। पहिले मैंने जहां वह खुजा सकता था खुजवाया, पश्चात् सारे शरीर से वह तैल मर्दन कराया और फिर १ घण्टे वा आधे घंटे धूप में बैठने को कहा। लेख में स्नान-विधि नहीं लिखी, परन्तु मैंने उसे स्नान करने को भी कहा। यथा विधि—

दोनों कटेरी धतूरा नीम

—इन्हें समभाग लेकर कुटी करें फिर किसी बड़े मिट्टी के बर्तन में कुटी को डाल ऊपर से पानी भर दें और उबलने दें। उबल जाने पर छानकर कुछ सहते हुए पानी से रोगी को स्नान करायें। इस प्रकार रोगी को बहुत जल्दी ही आराम होजाता है, वह पहिली रात को ही बड़े आराम से सुख की नींद सोता है।

इसके साथ ही साथ बृहन्मञ्जिष्ठादि अर्क भी सेवन कराया गया था, ठीक तीसरे दिन से ही दानों का शुष्क होना प्रारम्भ होगया। इसी विधि से दवा कुछ दिन सेवन कराई और रोगी ठीक हो गया।

चूंकि केवल उष्ण जल के स्नान से ही रोगी ठीक हो जाता है। परन्तु हमने इस स्नान की विधि से रोगियों को बहुत जल्द आराम किया है। जिन वैद्य बन्धुओं ने अभी तक परीक्षा नहीं की वह अवश्य परीक्षा कर लाभ उठावें योग उत्तम है। हमने अभी तक इसे ७ रोगियों पर व्यवहार करके उचित लाभ प्राप्त किया है।

[धन्वन्तरि भाग २१ अंक १२ पृष्ठ ६९०]

प्रयोग नं० ४२१ नजला प्रतिश्याय कासादि पर

हिरमिची	नवसादर	१-१ तोला
धतूरे के बीज		३ माशा
काली मिर्च		६ माशा

—बारीक खरल करके १ रत्ती, दिन में ३ या ४ बार लगे पान में सेवन करें। प्रयोग उत्तम और लाभदायक सिद्ध हुआ है।

प्रयोग नं० ४१५—

नवसादर	साल्ट	२-२ तोला
भुनी हींग	टाटरी	६-६ माशा

—एक बोतल पानी में मिलायें फिर १ दिन धूप में रखें। अवस्थानुसार १ से २ तोला तक सेवन करायें। उदर विकार, मन्दाग्नि के लिये अत्युत्तम प्रयोग है, मेरा परीक्षित है।

× × ×

परीक्षक—पं० साधुराम शर्मा पाठक, बादशाहपुर।

निम्न प्रयोग की मैंने स्वयं परीक्षा की है। २० दिसम्बर सन् १९४७ को दुर्भाग्यवश मेरे पैर में चोट लगी, जिससे काफी घाव हो गया। आपके सितम्बर १९४७ के अङ्क में वनौषधि विवेचन शीर्षान्तर्गत शुभ्रा (फिटकरी) का प्रयोग मैंने व्यवहार किया। मैंने फिटकरी की खील पीसकर बीच में भरदी; भरते ही रक्त बन्द होगया और पका नहीं।

मैं धन्यवाद देता हूँ कि ऐसे सरल परीक्षित प्रयोग हमारे को मिलते हैं, ईश्वर इस पत्र को फूले फलावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य सभा मण्डल बड़ौत जि० मेरठ—

जिस प्रकार से भिन्न २ जगहों पर वैद्य महानुभावों ने अपना संगठन सभा के रूप में किया हुआ है, उसी प्रकार वैद्य सभा बड़ौत ने आयुर्वेद जगत में वैद्यों का सम्मान हो तथा वैद्यों की सभी दृष्टियों से उन्नति हो इन बातों को अपना उद्देश्य बनाकर आस-पास के ग्रामों के माननीय वैद्यों का संगठन किया तथा १५ जनवरी ४८ के दिन उसका एक विशेषाधिवेशन किया गया, जिसमें दूर २ के ग्रामों के वैद्यों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस का नाम वैद्य सभा मण्डल बड़ौत रख दिया गया।

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी इस विशेषाधिवेशन में सभा मण्डल के पदाधिकारियों का वार्षिक चुनाव किया गया।

इसके पश्चात् नव निर्वाचित मन्त्री डा० दिलीपसिंह ने भूतपूर्व प्रधान तथा मन्त्री के कार्यों की प्रशंसा की तथा उनको हार्दिक बधाई दी और अपने योग्य वैद्यों से इस कार्य में सहयोग देने की आशा प्रगट की। —मन्त्री।

वैद्य हकीम सम्मेलन मौदहा [हमीरपुर]

ता० २५-१२-४७ को मथुरा मंदिर मौदहा में वैद्य-हकीमों का सम्मेलन हुआ। सबसे पहिले ईश प्रार्थना, कवितायें, भाषण, मेडीशन बोर्ड लखनऊ संबन्धी प्रस्ताव पास हुये तथा अन्त में पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ। —मन्त्री

जिला वैद्य सम्मेलन गोरखपुर

का दशम वार्षिकोत्सव ता० ८ व ९ दिसम्बर सन् १९४७ को आर्यसमाज मन्दिर गोरखपुर में श्री पं. जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल आयुर्वेद-पञ्चानन के सभापतित्व में सफलता के साथ हुआ। प्रारंभ में सभापति जी का भाषण आयुर्वेद की प्राचीनता एवं वैज्ञानिकता पर विवेचना-पूर्ण हुआ। तत्पश्चात् अनेक प्रस्ताव स्वीकृत किये गये। —मन्त्री

बिहार प्रांत के—

वैद्यों से अपील—

भारतीय सरकार देश की संस्कृति, साहित्य और कला के पुनरुज्जीवन के साथ चिकित्सा में भी स्वावलम्बन होना चाहती है।

आयुर्वेद के सम्बन्ध में बिहार सरकार की प्रगति बहुत धीमी रही। यू० पी०, बंगाल, मद्रास, बम्बई प्रभृति प्रांतों में सरकार द्वारा आयुर्वेद का संरक्षण और नियन्त्रण बहुत पहिले से होगया है। अन्य प्रांतों के साथ एक रूप रखने के लिये, बहुत बाद, बिहार सरकार आयुर्वेद के उन्नयन, उसकी मर्यादा क्षुण्ण न होने देने के लिये आवश्यक नियन्त्रण, वैद्यों के रजिष्ट्रेशन और उनके अधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि महत्व पूर्ण विषयों पर विधान-निर्माण करना चाहती है। इसके लिये १६ लाख रुपया मंजूर हुआ है और आयुर्वेदिक सुपरिंटेण्डेण्ट की बहाली भी की है।

इसी विधान पर आयुर्वेद और उसके चिकित्सकों का भविष्य पूर्ण निर्भर है। वैद्य-समाज बहुमत से जो भी निर्णय करेगा, सरकार उसे मान लेगी, ऐसी आशा है इसलिये हमारी थोड़ी भी लापरवाही आयुर्वेद को बहुत बड़ी हानि पहुंचा सकती है। इस नाजुक घड़ी में प्रांत के कौने-कोने से वैद्यों को संगठित होकर भावी आयुर्वेदिक-विधान की रूपरेखा पर गंभीरता से विचार करना चाहिए; जिसमें यू० पी० प्रभृति प्रांतों की तरह कुछ अंशों में यह आयुर्वेद की प्रगति में रोड़ा अटकाने वाली न हो और न वैद्यों को अन्य चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों के सामने हीन ही साबित कर सके। साथ ही आयुर्वेद के सर्वाङ्गीण विकास के लिये सर्व सम्मत से एक ठोस योजना तैयार कर सरकार को दें और उसकी स्वीकृति के लिये सतत प्रयत्नशील रहें।

बिहार प्रांतीय वैद्य सम्मेलन के १८ वें अधिवेशन का पटना में आयोजन इसी पवित्र उद्देश्य को लेकर किया गया है। देश की बदलती हुई हालत में इस अधिवेशन का कितना अधिक महत्व है, इसकी ठीक २ कल्पना आज नहीं की जा सकती। यदि हम इस प्रयत्न में सफल हुए तो ऋषिऋण से मुक्ति के साथ ही अपने प्यारे देश की बहुमूल्य सेवा कर सकेंगे।

आयुर्वेद हितैषियों से अनुरोध है कि अपने मूल्यमे विचारों से प्रांतीय सम्मेलन को सशक्त और प्रगतिशील बनाने के लिये जिला सबडिवीजनल, नगर, थाना और ग्राम आयुर्वेद सभायें कायम करें, सम्मेलन तथा स्वागत समिति, प्रत्येक के लिये दो रुपये शुल्क देकर सदस्य बनें एवं तन मन धन से सम्मेलन को सफल बनावें।

—प्र० मन्त्री।

लेखकों को पुरुष्कार-

बिहार प्रांतीय अष्टादश वैद्य सम्मेलन पटना की स्वागत समिति की ओर से अनुसन्धान पूर्ण विवेचनात्मक आयुर्वेदिक ग्रंथ प्रणेताओं और निबन्ध लेखकों को वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर स्वर्ण-रौप्य पदक तथा प्रशंसापत्र दिये जायेंगे। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वालों के लिये प्रांत, भाषा और विषय का बंधन नहीं रखा गया है। प्रकाशित मौलिक ग्रन्थ और रचनायें पुरुष्कृत होंगी।

स्वागत समिति ने कुछ खास विषयों का निर्देश भी किया है। वे ये हैं—१ -ग्राम्य स्वास्थ्य और आयुर्वेद, २—रक्तचाप (ब्लडप्रेसर), ३—नेत्र-रोग-चिकित्सा तथा ४—सार्वजनिक स्वास्थ्य।

प्रथम विषय पर "कविराज सुखराम प्रसाद स्वर्णपदक" द्वितीय पर "कविराज रामलखन सिंह स्वर्णपदक" और तीसरे विषय पर कविराज नन्दकिशोर मिश्र जी की ओर से 'स्वर्गीय पं. पुरुषोत्तम-नारायण चतुर्वेदी स्वर्णपदक' प्रदान किये जायेंगे।

ग्रन्थ और रचनायें—

कविराज नन्दकिशोर मिश्र, प्रधान मन्त्री बिहार प्रांतीय वैद्य सम्मेलन, मुस्तफापुर, पो० खगोल (पटना)

के पते से फरवरी के अन्त तक भेज देना चाहिये।

—नन्दकिशोर मिश्र मन्त्री।

स्थान परिवर्तन की सूचना—

श्री० पुरुषोत्तमदेव जी मुलतानी आयुर्वेदालंकार मेडिकल आफीसर कारपोरेशन करांची से देहली आ गये हैं तथा गली मोचियान पहाड़गंज दिल्ली में चिकित्सा आरम्भ कर दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्य-क्रम की भावी रूपरेखा

आरोग्य कारक और रोग निरोधक उपायों के एकीकरण की आवश्यकता

डा० जीवराज महता का दीक्षांत अभिभाषण ।

"राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्य क्रम का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के लिये पर्याप्त मात्रा में रोग उपशामक और रोग निरोधक सुविधाओं की व्यवस्था करना होना चाहिये। इस सम्बन्ध में हमें न केवल इस बात का ध्यान रखना है कि वह इनके लिये कितना रुपया खर्च कर सकता है बल्कि उसकी शारीरिक और मानसिक परिस्थितियों के लिये किन चीजों की आवश्यकता है।" ये शब्द भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग के सेक्रेटरी और स्वास्थ्य सर्विसेज के डाइरेक्टर जनरल डा० जीवराज महता ने ६ जनवरी को बम्बई में फिजीशन्स और सर्जन्स के दीक्षांत समारोह में भाषण करते हुए कहे।

आगे उन्होंने कहा—एक उपयोगी और कार्य-कुशल स्वास्थ्य संगठन की स्थापना के लिये हमें रोग उपशामक उपायों का उचित रूप से एकीकरण करना चाहिए। इसके साथ ही जहां तक संभव हो सके हमें इस काम में जनता का भी अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिए। हमारे स्वास्थ्य कार्य-क्रम के अन्तर्गत न केवल रोग और उसे दूर करने के उपायों पर ही जोर दिया जाना चाहिये बल्कि स्वास्थ्य की वृद्धि के लिये भी ठोस रूप से काम होना चाहिये।

आगे डा० महता ने कहा कि भोर समिति की सिफारिशों को कार्यान्वित करने में १० साल के अन्दर हमें १००० करोड़ रुपया खर्च करना पड़ेगा। यद्यपि इस समय भारत के आर्थिक साधनों को देखते हुए हमारे लिये इतनी अधिक धनराशि खर्च करना कठिन है; फिर भी हम इस विषय में हाथ पर हाथ धर कर नहीं बैठ सकते। नये परिवर्तन को देखते हुए हमें सारी स्थिति पर फिर से सोच-विचार करना है ताकि चिकित्सा सम्बन्धी सहायता और सार्वजनिक स्वास्थ्य से सम्बन्ध रखने वाले आवश्यक उपायों को कार्य रूप में परिणत किया जा सके।

चहुंमुखी कार्यक्रम—

भोर समिति की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए डा० मेहता ने भारत के लिए एक चहुंमुखी स्वास्थ्य कार्यक्रम की योजना पेश की जिसके अन्तर्गत [१] मैडिकल और सहायक कर्मचारियों की व्यवस्था [२] वर्तमान स्वास्थ्य सर्विसों में विस्तार [३] चिकित्सा सम्बन्धी अनुसंधान को प्रोत्साहन और [४] वैयक्तिक और सामाजिक स्वास्थ्य रक्षा विज्ञान के अभ्यास द्वारा साधारण जनता को अपना स्वास्थ्य सुरक्षित रखने के लिये आवश्यक शिक्षा की व्यवस्था।

चिकित्सा व्यवस्था में विस्तार

डा० मेहता ने आगे चलकर कहा कि चिकित्सा व्यवस्था में विस्तार करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रांतों के सरकारी स्वास्थ्य विभागों–चिकित्सा विभागों को मिलाकर एक संगठन के अन्तर्गत लिया जाय जिससे कि इन दोनों शाखाओं में सहयोग स्थापित किया जा सके। इस सहयोग के बिना मातृत्व और शिशुकल्याण कार्य, छूआछूत के रोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोक थाम, स्कूल के बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल आदि क्षेत्रों में अच्छी स्वास्थ्य व्यवस्था स्थापित करना संभव नहीं है ।

डा० मेहता ने प्रान्तीय सरकारों के लिए यह सुझाव प्रस्तुत किया कि देहात के सुदूर क्षेत्रों में चिकित्सा विशेषज्ञों को पहुंचाने के लिए एक संगठन स्थापित किया जाय । पहले-पहल दो जिलों के लिए चिकित्सकों का एक चलता-फिरता दल संगठित किया जाय । बाद में इस दल को चिकित्सा के लिए एक ही जिला नियत कर दिया जाय । इस योजना से यह लाभ होगा कि देहाती लोगों को जिनकी संख्या बहुत अधिक है, चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी । यह दल जिले के कुछ चुने हुए केन्द्रों का दौरा कर सकता है । इन केन्द्रों में तम्बू वगैरः लगाकर उस समय के लिए अस्थायी अस्पताल बनाये जा सकते हैं । एक दो सप्ताह के बाद इन अस्पतालों को वहां से उठा कर दूसरे केन्द्रों में लगा दिया जाय । केन्द्र ऐसे स्थानों पर स्थापित किये जायं कि देहात का कोई क्षेत्र बचने न पाय ।

स्थायी अस्पताल बनाने के लिये सीमेंट और ईस्पात की आवश्यकता है । इन दोनों ही वस्तुओं की इस समय देश में कमी है । इसलिये देश में लगभग २५०० छोटे-छोटे अस्थायी अस्पताल स्थापित किये जायं । लेकिन चिकित्सकों के रहने के लिये कच्ची ईंटों के मकान बना दिये जायं ।

डा० मेहता ने आगे कहा कि बीमारियों की रोक-थाम के लिए वैद्यों और हकीमों से भी काम लिया जाय । लेकिन काम लेने से पहले उन्हें कुछ ट्रेनिंग दे दी जाय ।

चिकित्सा अनुसन्धान

चिकित्सा अनुसन्धान की समस्या के बारे में डा० मेहता ने कहा कि विदेशों से आने वाली दवाइयों पर कर लगा कर अनुसन्धान कार्य के लिए भारतीय अनुसन्धान कोष संघ को आर्थिक सहायता प्रदान की जाय । प्रान्तीय सरकारों को और केन्द्रीय सरकार को भी इस संघ की आर्थिक सहायता करनी चाहिये ।

स्वास्थ्य शिक्षा का विषय बहुत महत्व का है । इस शिक्षा का विद्यालयों के पाठ्यक्रम में समावेश करना अत्यन्न आवश्यक है जिससे कि प्रारम्भ से ही लोगों को स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाय ।

× × ×

श्री० डा० मेहता जी के उक्त भाषण में बीमारियों की रोक-थाम के लिये वैद्यों से भी काम लेने का संकेत मात्र किया है, किन्तु यह काम लेने के पूर्व उनकी दृष्टि में वैद्यों को कुछ ट्रेनिंक देने की आवश्यकता जान पड़ती है, मानो कि वैद्य बीमारियों को दूर करना तो क्या उनकी रोक-थाम के विषय से भी अनभिज्ञ हैं । वैद्य-समाज के प्रति इस प्रकार की भावना आज के स्वतन्त्र भारत के स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी गणों की क्यों हैं, यह प्रश्न कम विचारणीय नहीं है । हमारे आयुर्वेद नेताओ को तथा स्वाभिमानी वैद्यों एवं विद्वानों को इस पर विचार कर कोई संगठित प्रयत्न करना चाहिये जिससे जनता एवं अधिकारी वर्ग को यह प्रमाणित किया जा सके कि डाक्टरों की यह धारणा निर्मूल एवं स्वार्थ-साधन मात्र के लिए है । भोर-सिमित की शिफारिशों के आधार पर उक्त भाषण से ज्ञात होता है कि भारत सरकार अंधा-धुन्ध रुपया पानी की तरह बहाकर देश का धन विदेश भेजने पर तुली हुई है और वह आयुर्वेदिक वैद्यों पर किसी प्रकार का भरोसा नहीं करती तथा इस विज्ञान को, जिससे भारत की ६० प्रतिशत जनता और विशेष कर ग्रामीण जनता लाभ उठा रही है, किसी प्रकार प्रोत्साहन देना धन का अपव्यय समझती है ।

—सम्पादक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम पूज्य महात्मा गांधी

३० जनवरी की शाम को लगभग ५। बजे प्रार्थना सभा के मंच पर चढ़ते समय एक नवयुवक हिन्दू के द्वारा गोली मार देने से विश्व पूज्य महात्मा गांधी का स्वर्गवास होगया। यह दुखद समाचार संसार के कोने-कोने में बड़ी तेजी से फैला तथा इस समाचार से संसार द्वारा जो शोक प्रदर्शित किया गया है वह आज तक किसी भी व्यक्ति की मृत्यु के समय देखने या सुनने में नहीं आया। महात्मा गांधी के विषय में इस थोड़े से स्थान में कुछ भी लिखना मेरे जैसे अल्पज्ञ के लिये असम्भव है। महात्मा गांधी की हत्या ने संसार को यह प्रमाणित कर दिया है कि हिन्दू समाज में जहां स्वर्गीय श्री. ऊधमसिंह जैसे वीर पुरुष (जिन्होंने ब्रिटेन में जाकर 'डाइर' की हत्या कर स्वदेश प्रेम का आदर्श उपस्थित किया था) है, वहां महात्मा गांधी जैसी महान आत्मा को इस संसार से नष्ट कर देने के महान नीच कर्म को कर देने वाले नाथूराम जैसे अधम पुरुष भी हैं। कुछ मन-चले व्यक्ति उसे वीर पुरुष एवं हिन्दू-संस्कृति का रक्षक बतलाते हैं। उनको शीघ्र ही भविष्य बतला देगा कि इस महान आत्मा के नष्ट कर देने से हिन्दू संस्कृति की क्या और कितनी रक्षा हो सकती है।

हे ईश्वर! इस महान् पुरुष की स्वर्गीय आत्मा को शान्ति दे।

—सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी भस्में—

धातु उपधातुओं की भस्में वही उत्तम होती हैं जो अच्छी प्रकार शोधन करने के पश्चात् भस्म की गई हों तथा जो निरुत्थ हों। आयुर्वेद-शास्त्र में ऐसी भस्में जो पारद, हिंगुल, हरताल, मनशिल द्वारा भस्म की गई हों और जो पुनः जीवित न हों, सर्वोत्तम मानी गई हैं। तथा जड़ी-बूटियों से भस्म की गई हों वे भस्में मध्यम।

भस्में आयुर्वेदीय शास्त्र के अनुसार [शोधन करने के बाद] किन्तु अपनी विशेष क्रिया द्वारा बनाई जाती हैं। इसलिये जिन्हें इस निर्माण कार्य में अधिक समय व्यतीत हो चुका है, वही उत्तम बना सकते हैं। इसी प्रकार भस्मों में जितने अधिक पुट लगाये जाते हैं, वह उतनी ही अधिक उपयोगी होती हैं। अन्य नवीन फार्मेसी वाले केवल बनौषधि द्वारा बहुत ही कम पुट देकर साधारण भस्म कर लेते हैं। इसलिये वह हमारी भस्मों के समान लाभप्रद सिद्ध नहीं होती हैं।

अभ्रक भस्म नं० १ [निघण्टु, सुन्दर, प्रकाश] सहस्र [१०००] पुटी — १ तोला २१)
अभ्रक भस्म नं० २ शत [१००] पुटी — ५ तोला ७)
अभ्रक भस्म नं० ३ [२५ पुटी] — १० तोला ६)
अकीक भस्म [धन्वन्तरि] — १ तोला ३)
कपर्द (कौड़ी) भस्म [प्रकाश, सुन्दर,] — १० तोला २)
गौदन्ती हरताल भस्म (श्वेत) — २० तोला १।।)
तबकी हरताल भस्म [भैषज्य] — १ तोला ६)
ताम्र भस्म नं० १ [कज्जली द्वारा जारित, कूपीपक्व, मयूर कंठ के वर्ण की।[रसा०, सु०] — १ तोला ३)
ताम्र भस्म नं० २ (शतपुटी पारद योगेन) — २ तो. ३)
ताम्र भस्म नं० ३ [गंधक द्वारा जारित] — ५ तोला ४)
नाग भस्म नं० १ (नागेश्वर) मंसिल योगेन जारित [योग, भाव, रत्न, निघंटु०] — ५ तोला ६)
नाग भस्म नं० २ [बनौषधि द्वारा जारित] — १० तो. ५)
प्रवाल भस्म नं० १ [असली मूंगा की कज्जली द्वारा] — १ तोला ४)
प्रवाल भस्म नं० २ [असली मूंगा की बनौषधि द्वारा] — ५ तोला ८)
प्रवाल भस्म नं० ३ [मूंगा की सांख की कज्जली द्वारा] — ५ तोला १५)
प्रवाल भस्म नं० ४ [मूंगा की सांख की बनौषधि द्वारा] — ५ तोला ६)
प्रवाल भस्म [चन्द्रपुटी] — ५ तोला ६)
बङ्ग भस्म नं० १ [बंगेश्वर] हरिताल द्वारा जारित [योग, भाव, प्रकाश, निघ०, शार्ङ्ग०] — ५तो. ६)
बंग भस्म नं० २ [श्वेत] बनौषधि द्वारा — १० तो० ६)
मृगशृङ्गभस्म [श्वेत] [नि० भैष०, भाव] — १० तो ३।।)
मांडूर [कीट] भस्म नं० १ रक्त वर्ण [सुन्दर, योग, शार्ङ्ग, रसायन, निघंटु] — १० तोला ३।।)
मांडूर भस्म नं० २ कृष्ण वर्ण — १० तोला २)
मुक्ता भस्म नं० १ कज्जली द्वारा जारित — १ तो. ७२)
मुक्ता भस्म नं० २ (श्वेत) (धन्वन्तरि) — १ तोला ६०)
यशद भस्म (रसायनसार) — ५ तोला ५)
रौप्य भस्म नं० १ कज्जली द्वारा जारित — १ तोला ६)
रौप्य भस्म नं २ [हरताल द्वारा जारित] — १ तो. ७)
लोह भस्म नं० १ [पारद योगेन]—[सुन्दर, निघंटु] ३०० पुटी — १ तोला ४।।)
लोह भस्म नं. २ [दरद योगेन जारित] — ५ तोला ४)
लोह भस्म नं० ३ [बनौषधि द्वारा जारित] [शार्ङ्ग; सुन्दर, निघंटु, भाव] — १० तोला ३।।)
स्वर्ण भस्म--कज्जली द्वारा जारित [प्रकाश०; शार्ङ्ग] — १ तोला १२०)
स्वर्ण माक्षिक भस्म [सुन्दर, प्रकाश, योग, रसेन्द्र, निघ०] — ५ तोला ५)
शंख भस्म (भैषज्य, मणि, भाव०) — १० तोला २)
शङ्कर लोह भस्म (भावप्रकाश) — १ तोला २।।)
शुक्ति [मोती सीप] भस्म — १० तोला ३।।)
त्रिवङ्ग भस्म नं० १ पारद, गंधक, हरिताल द्वारा जारित [रसायन०] — १ तोला २।।)
त्रिवङ्ग भस्म नं.२ बनौषधि द्वारा जारित — १० तो. ४)

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना—

पोस्ट-पार्सल विभाग

प्रथक कर दिया गया है। अभी तक रेल-पार्सल एवं पोस्ट पार्सल पैक करने का एक ही स्थान पर प्रबंध था। बढ़ती हुई मांग के कारण कुछ समय से रेल-पार्सलों के साथ ही साथ पोस्ट पार्सलों को पैक करने एवं भेजने में आशा से अधिक समय लग जाता था। पिछले कुछ समय से तो हमारे कृपालु ग्राहकों की यह आम शिकायत रही कि औषधियां पोस्ट से मंगाने पर भी १५-१ दिन में मिल पाती थीं। इस परेशानी को दूर करने के लिये हमने अब पोस्ट-पार्सल विभाग को बिल्कु ही प्रथक कर दिया है, जहां पर पत्र मिलते पार्सल पैक करा कर दूसरे दिन अवश्य भेज दे की व्यवस्था है। आशा है भविष्य में पोस्ट से दे में औषधियां पाने की शिकायत नहीं रहेगी।

—पोस्ट-व्यय फ्री—

कतिपय ग्राहकों के आग्रह के कारण हम यह नियम बना रहे हैं :— कि 'केवल रस-रसायन एवं भस्मों' के ५०)से अधिक मूल्य के आर्डर मिलने पर पोस्ट द्वारा बिना किसी व्यय के औषधियां भेज देंगे। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि—

१—पोस्टेज औषधियों के मूल्य का)॥ प्रति रुपया से अधिक न होना चाहिये।)॥ रुपया से अधिक पोस्टेज होने पर "अधिक पोस्टेज" ग्राहक को देना होगा। इसका अभिप्राय है कि हम पोस्टेज या)॥ प्रति रुपया जो भी कम होगा वही देंगे। यदि)॥ प्रति रुपया से पोस्टेज कम होगा तब पोस्टेज नहीं लगायेंगे और यदि)॥ रुपया पोस्टेज से कम होगा तब पोस्टेज लगाकर)॥ प्रति रुपया कम कर देंगे।

२ यह रियायत केवल रस, रसायन एवं भस्म पर ही की जायगी। यदि आप इनके साथ गूगल, अवलेह, तैल आदि औषधियां मंगावें तब हम उपर्युक्त सुविधा नहीं दे सकेंगे। अत एव आर्डर देते समय इस बात का पूरा-पू ध्यान रखना चाहिये।

३—इस रियायत को पाने के लिये आर्डर पत्र में शब्द स्पष्ट लिख देना चाहिये। "रस-रस यन एवं भस्मों का आर्डर है पोस्ट-व्यय)॥ प्रति रुपया की रियायत दें।" यदि ये श आज्ञा पत्र [आर्डर] में न लिखे होंगे तो सं है कि क्लर्क भूल कर दें। —व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

-इस अंक में-

आह्वान (कविता)	५८६	मूषा-कर्णी बूटी	६१२
धन्वन्तरि के प्रति (,,)	५९०	शहद-अनेक रोगों में उपयोगी पदार्थ	६१३
सहायक वैद्य का कोर्स	५९१	नीबू के गुण	५१५
रस गुण वीर्य विपाक और प्रभाव	५९३	परीक्षित प्रयोग	६१६
रक्त का वैज्ञानिक विवेचन	६००	आरोग्य वर्द्धिनी और मेरा अनुभव	६१९
ज्वर-निदान (कविता)	६०४	वैद्यों से परामर्श	६२१
कौमार भृत्य में वैज्ञानिक रहस्य	६०६	वैद्यों की सम्मतियां	६२६
आयुर्वेद में शिरावेध की चमत्कारिता	६०७	राष्ट्र-पिता पूज्य बापू जी के प्रति भारत के वैद्य-समाज की श्रद्धाञ्जलि	६३०
राजयक्ष्मा चिकित्सा	६०९	आयुर्वेद जगत	६३२
कुमारी रस	६१०		

फरवरी १९४८

भाग २२ अङ्क ६

वार्षिक-मूल्य ५=)

सम्पादक वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग

जे. पी. अग्रवाल बी.एस.सी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ की निर्मित

खाज रिपु

खाज-खुजली को लगाते लगाते ठीक कर देता है.
आपके यहाँ के दूकानदारों के यहाँ मिल जायगा

खाज (कण्डु) का रोग

इस समय भारतवर्ष की जनता को बेहद परेशान किये हुए है। हमने अपने चिकित्सा-विभाग में पर्याप्त परीक्षा कर लेने पर इस अक्सीर तैल को अपने ग्राहकों के समक्ष रखा है। थोड़े ही समय में इसकी मांग बहुत बढ़ गई है तथा इसके प्रशंसा पत्रों का तांता सा लग गया है। यह सूखी तथा गीली दोनों प्रकार की खुजली के लिये अक्सीर प्रमाणित हुआ है। पैकिंग बहुत सुन्दर किया गया है।

मूल्य—१ शीशी १) १२ शीशी एक साथ मंगाने पर ६)

-पोस्ट-पैकिंग व्यय पृथक-

६ दर्जन शीशी एक साथ रेल से मंगाने पर पूरा खर्चा कार्यालय देगा। औषधि विक्रेताओं को शीघ्र मंगाकर रखना चाहिये, क्योंकि यह अपने उत्तम गुणों एवं सुन्दर पैकिंग के कारण बहुत अधिक बिकता है।

नोट—रेल पार्सल मंगाते समय चौथाई पेशगी अवश्य भेजें।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ (अलीगढ़)

Printed and Published by Vaidya D. S. Garg at the Dhanwantri Press, Bijaigarh.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by Dept. of Public Instruction of Central Provinces & Berar.

भाग २२ | अङ्क ९

सम्पादक-- वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग
जे. पी. अग्रवाल, बी. एस. सी.

फरवरी | सन् १९४८ ई०

आह्वान ।

धन्वन्तरि आ जा एक बार ।
वैद्यों में नव संचार भरो ।
वैद्यक का पुनरुद्धार करो ॥
फिर दृष्टि फेर दो एक बार ।
धन्वन्तरि आ जा एक बार ॥१॥

अब तक दानवता रही वहां ।
औ अत्याचार भी हुए महा ॥
श्रृङ्खला तोड़ दो एक बार ।
धन्वन्तरि आ जा एक बार ॥२॥

आयुर्वेद पताका फहराये ।
जनता फिर इसका यश गाये ॥
उत्कृष्ट बना जा एक बार ।
धन्वन्तरि आ जा एक बार ॥३॥

र० -श्री दामोदर दत्तजी मिश्र,
कोराना-सरैयां (शाहाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि के प्रति

भारत मही के जठर से अवतार धन्वन्तरि लिए ।
निज कमल कर के अमिय से सब निरुजमय भूतल किए ॥१॥
विज्ञान आयुर्वेद का प्रत्यक्ष दिखलाए वही ।
जलवायु औषधि का विषय संसार में गाए वही ॥२॥
भूगर्भ में अनुपम यशस्वी भव्य भारतवर्ष था ।
स्थावर तथा जंगम प्रकृत द्यू लोक का उत्कर्ष था ॥३॥
गिरि सरित सरिता विटप भेषज एक से थे इक बढ़े ।
जिनसे समिश्रित मलय मारुत निखिल जग के शिर चढ़े ॥४॥
पर खेद है गौरांग प्रभु* ने पद दलन इसका किया ।
प्राचीन तम भेषज कला का पङ्गु जीवन कर दिया ॥५॥
उस जगतनायक दीनपालक की कृपा फिर से हुई ।
अरु दुखद दुर्दिन की निशा सौभाग्य ही से मिट गई ॥६॥
साधन चतुष्टय चतुर कर में ग्रहण कर प्रकटित हुए ।
मंजुल मनोरम सरल मय निज रूप जग वितरित किए ॥७॥
प्रतिमास भाषा भारती बनि भवन भारत पहुंच कर ।
गर्जन सुनाते भैरवी जिससे जगें सब वैद्यवर ॥८॥
अनुभूत योग विमर्श समुचित भिषग् बर पाने लगे ।
अन्वर्थ धन्वन्तरि महौषधि प्राप्त गुण गाने लगे ॥९॥
प्रतिमास जैसे प्रकट हो सप्ताह में आओ प्रभो ।
शुभकाम 'शंकर' का यही निज दास अपनाओ विभो ॥१०॥

---

*गौरांग प्रभु—ब्रिटिश सरकार

रचयिता—वैद्य उमाशंकर द्विवेदी साहित्य शास्त्री,
श्री आशुतोष दातव्य औषधालय, गुरु परासी रबर्टसगंज, मिर्जापुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री धन्वन्तरये नमः ॥

धन्वन्तरि

रोगाञ्जयत् मृत्युभयं निवारयत् ।
समर्जयेत् भूरियशो वसूनि च ॥
मुदं ददत् ज्ञान मथो विवर्धयत् ।
विजृम्भतां पत्रमिदं प्रकाशयत् ॥

यु० प्रा० मैडीसन बोर्ड का—

'सहायक-वैद्य' का कोर्स।

आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली अत्यन्त प्राचीन है। किन्तु लगातर दासता की बेड़ी में जकड़े जाकर, पश्चिमीय सभ्यता समुद्र की लहरों में गोते खाकर तथा आत्म-विश्वास खोकर हमारी बुद्धि, संस्कृति के नष्ट हो जाने के साथ नष्ट हो गई है। आज स्वतन्त्रता के आलोक में हमें कुछ ज्ञान रश्मि का बोध होने लगा है। इसके अनुसार विभिन्न संस्थाओं में सुधारों की भरमार दिखाई देने लगी है। बोर्ड-आफ इंडियन मेडिसन भी इसके प्रभाव से प्रभावित हुआ है। १५ वर्ष के "बजीर हसनी बोर्ड" का अन्त हो गया और नये बोर्ड में आज श्री० धुलेकर जी चेयरमैन हैं। इस बोर्ड का कलेवर भी नये मेडिसन एक्ट के अनुसर सुसंगठित हो गया है। कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

इस बोर्ड द्वारा एक नया कोर्स 'सहायक वैद्य' का बना है। जिसका उद्देश्य यह है कि अब तक हमारे ग्रामसुधार औषधालयों में कम्पाउंडर शिक्षित नहीं थे, जैसा भी मिलता था उसे ही रख कर काम निकाल लिया जाता था। अन्य चिकित्सकों के पास भी शिक्षित कम्पाउंडर नहीं थे जिससे औषधियों के के वितरण में बड़ी कठिनाई होती थी। बोर्ड के इस पाठ्यक्रम द्वारा 'दो वर्ष' की शिक्षा देकर योग्य कम्पाउंडर के तुल्य सहायक वैद्य बना देने का यह आयोजन है। चेयरमैन की विज्ञप्ति के अनुसार यह भी स्पष्ट है कि भोर कमेटी के विचार के अनुसार प्रान्तीय सरकार जनता में चिकित्सा सुलभ करने के लिये डाक्टरों की संख्या शीघ्र बढ़ायेगी। थोड़ी शिक्षा देकर स्कूलों के मास्टरों को साधारण चिकित्सा सहयोग देने योग्य बनायेगी, यही दवा भी बांटेंगे और फर्स्टएड भी पहुंचायेंगे। इस दशा में फैलते हुये एलोपैथी के प्रवाह को रोक कर सहायक वैद्य बनाकर उनके द्वारा दवा बांटना, आयुर्वेदिक प्रणाली द्वारा जनता को सहायता देना और गांव में आयुर्वेदिक औषधियों का प्रचार कराना, यही समझ कर यह कोर्स बनाया गया है। एलोपैथिक औषधियों के एजन्टों के प्रचार से आज भारत का प्रत्येक व्यक्ति, कुनैन, टिंक्चर आयोडिन, एस्प्रो इत्यादि को जानने व प्रयोग करने लगा है। यह सहा० वैद्य गांव-गांव में आयुर्वेदिक दवाओं का स्टोर रख कर च्यवनप्राश, मकरध्वज, लवण भास्कर इत्यादि का गुण लोगों को अपने स्वार्थ(दवा बेंच कर कमीशन प्राप्त करने की धुन में) में पड़ कर समझायेंगे जैसा कि आजकल के दिहातों व शहरों के अंग्रेजी दवाओं के एजेन्ट करते हैं तो शीघ्र आयुर्वेद की औषधियों का प्रसार होगा। अच्छी औषधियों के बनाने के कारखाने खुलेंगे जो इनकी औषधि सम्बन्धी मांग की पूर्ति करेंगे। यह कार्य अपढ़ के बदले ये सहायक वैद्य अच्छी तरह कर सकेंगे। ये महामारी फैलने पर टीका भी दे लेंगे, ग्राम की सफाइ भी करा सकेंगे जिनको करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हमारे योग्य ए. एन. एस व डी. आई. एम. एस हिचकते व अपनी शान के विरुद्ध कार्य समझते हैं। तो यह कोर्स उचित व सामयिक जान पड़ता है और उपादेय भी है। इससे एक और लाभ है,युक्तप्रान्त की पांच करोड़ जनता की स्वाध्य रक्षा के लिये भौर कमेटी के सिफारिफ के अनुसार डाक्टरों के फैलने के पूर्व यदि कटिवद्ध होकर कार्य किया गया तो अन्य सुशक्षित वैद्यों के अतिरिक्त ये सहायक वैद्य अल्पकालिक ट्रेनिंग लेकर अधिक बनेंगे और हमें कहने का अवसर मिलेगा कि जब इतने वैद्य मिल रहे हैं तो डाक्टरों को क्यों अधिक वेतन देकर गवर्मेंट रख रही है और उसके बढ़ते प्रचार को रोकने का अवसर मिलेगा।

इन कई दृष्टिकोणों से यह पाठ्य-क्रम उचित जान पड़ता है।

इसका विरोध क्यों ?

कुछ व्यक्तियों का स्वभाव है कि वह अपने स्वार्थ के पीछे समूह का स्वार्थ नाश करने पर तुल जाते हैं। जब विद्वानों में अपनी दाल गलती नहीं देखते तो अन्य व्यक्तियों को उकसा कर दूर से तमाशा देखते हैं। कुछ व्यक्ति कमेटीमें विरोध पक्षसे बोलने का साहस नहीं करते किन्तु बाहर आकर गला फाड़-फाड़ कर जनता में चिल्ला कर उसकी पूर्ति करते हैं यह सारी विरोध की कार्यवाही उनकी ही की हुई व उत्पादित है और ये ही वे व्यक्ति हैं जो कि बोर्ड में इस पाठ्य-क्रम के उपस्थित होने पर विरोध करने का साहस नहीं कर सके या अनुपस्थित रहे हैं। उन्होंने आयुर्वेदिक कालेज के छात्रों को उभाड़ने का प्रयत्न किया और उनको यह समझाया कि अब दो वर्ष पढ़कर के वैद्य हो जायंगे और चिकित्सा करने लगेंगे, तुम्हारी ५-६ वर्ष की पढ़ाई का क्या होगा। छात्रों ने वास्तविक स्वरूप को न समझ कर इसका बड़े ही उग्ररूप में विरोध किया। कुछ अध्यापकों का डेयूटेशन तक स्वाध्थ मंत्री से मिला और विरोध किया। छात्रों को जब यह मालूम हुआ कि यह कम्पाउंडर कोर्स की तरह नया कोर्स है, इनकी रजिष्ट्री नहीं होगी न ये वैद्य की तरह प्रेक्टिस करेंगे तो चुप हो गये।

आयुर्वेदिक स्वराज्य का स्वप्न देखने वाला कोई वैद्य या वैद्यक प्रेमी इस कोर्स का विरोध नहीं कर सकता।

ले०-श्री. विश्वनाथ जी द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य,
प्रिंसीपल-ललितहर कालेज, पीलीभीत।

धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ की निर्मित
खाजरिपु
खाज-खुजली को लगाते लगाते ठीक कर देता है.
आपके यहाँ के दूकानदारों के यहाँ मिल जायगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस गुण वीर्य विपाक और प्रभाव

ले. श्री पं. कृष्ण प्रसाद त्रिवेदी B.A. आयुर्वेदाचार्य

[गतांक से आगे]

विपाक

वीर्य ज्ञान के पश्चात् विपाक ज्ञान सुलभ होता है। जब तक वीर्य क्या है, उसके क्या भेद हैं, गुण क्या हैं? इत्यादि न जान लिया जाय तब तक विपाक ज्ञान पूर्णतया नहीं हो सकता और वैसे भी विपाक वीर्य के ही आश्रित है। कहा है--

'पाको नास्ति विना वीर्यात्'

द्रव्य भेद का जितना सूक्ष्म ज्ञान रसनेन्द्रिय को होता है उतना शरीर के अन्य भागों को नहीं होता। किसी भी द्रव्य का सर्व शारीरिक परिणाम तो तब ही होता है जब शरीरान्तर्गत् उपयोगी और निरुपयोगी भाग का पृथक्करण हो जाता है। शारीरिक धातुओं में संयोजित या मिश्र होने योग्य द्रव्य का रस रूपी सार भाग निकाल लिया जाना यही वास्तव में द्रव्य की पचन क्रिया कहलाती है। यद्यपि द्रव्यान्तर्गत् रस का आविष्करण कुछ प्रमाण में जिह्वा द्वारा ही होता है तथापि जब तक उसका चर्वण-पचन नहीं होता तब तक रस का सम्पूर्ण विभाजन होकर सार भाग और मल भाग का पृथक्करण नहीं होता। यह पृथक्करण की क्रिया जठर में जठराग्नि द्वारा होती है। जठर में इस पचन क्रिया या पृथक्करण के पश्चात् द्रव्यान्तर्गत् जो रस रूपी सार भाग निकलता है उसका परिज्ञान पचनेन्द्रियों को उतना सूक्ष्मतया नहीं होता, जितना कि रस का ज्ञान रसनेन्द्रिय को होता है। पचनेन्द्रियों को तो साधारणतया केवल आल्हादक और उद्वेजक अथवा दूसरे शब्दों में शामक और क्षोभक ये दो ही प्रकार ज्ञात होते हैं। दाह, हृल्लास (जी मिचलाना) इत्यादि अस्वस्थता को बढ़ाना और घटाना ये दो स्पष्ट परिणाम पचनेन्द्रियों में अनुभूत होते हैं तथा इन दोनों क्रियाओं का संयुक्त स्वरूप अर्थात् कुछ प्रिय किंतु अपूर्ण समाधानकारी ऐसा तीसरा परिणाम भी पचनेन्द्रिय द्वारा प्रतीति में आता है। तात्पर्य यह है कि पचन के पश्चात् जो सारभूत रस रूपी द्रव्य निष्पत्ति होती है, उसके तीन भेद होते हैं। (१) आल्हाद कारक, (२) उद्वेजक, (३) उभय गुणी। इसी अर्थ के बोधनार्थ विपाक के मधुर, कटु और अम्ल ऐसे तीन भेद कहे गये हैं और विपाक की व्याख्या में कहा गया है –

'जाठरेणाग्निना योगात् यदुदौति रसान्तरम्।
रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः॥"

—वाग्भट।

अर्थात्--जठराग्नि के योग से मधुरादि रस युक्त द्रव्यों का पाक होने पर जो रसान्तरकी अथवा रस विशेष की उत्पत्ति होती है उसे विपाक कहते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय तो आयुर्वेदोक्त जाठराग्नि शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। लाला रस (Ptyalin टालिन), आमाशयिक रस [Gastric juice] पित्त ग्रहणी रस आदि जितने पाचक रसों से आहार या भुक्त द्रव्यों का परिपाक होता है, आयुर्वेद में स्थूल रूप से उनको जाठराग्नि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा गया है। इस अग्नि के द्वारा अर्थात् पाचन-क्रिया में भाग लेने वाले भिन्न २ अङ्गों द्वारा सम्पन्न रासायनिक [mechanical] परिवर्तनों के बाद भुक्त द्रव्यों का यथोचित परिपाकानन्तर उनसे उत्पन्न और शरीर में वियोजित या शोषित [absor bed] रस में जो विशिष्ट रस का कार्य मालूम देता है उसको विपाक कहते हैं।

ध्यान रहे—उक्त लालास्रावादि पाचक रसों द्वारा भुक्त द्रव्यों का भिन्न २ परिस्थिति में जो भिन्न भिन्न परिवर्तन होता है उसे विपाक नहीं कहते; वह तो 'परिपाक' क्रिया मात्र है। जैसे लाला रस में स्थित 'टायलिन' की किया से श्वेत सार (प्रोटीन) प्रधान द्रव्यों [चावल गेहूं आदि] का श्वेतसार जो शर्करा में परिवर्तित हो जाता है, अथवा आमाशयिक अम्ल रस के संयोग से जो भुक्त द्रव्य अम्ल बन जाता है। यह सब परिपाक क्रियान्तर्गत् आवश्यक परिवर्तन हैं। इस प्रकार की परिपाक क्रिया के अनन्तर उसके परिणाम की वह अवस्था जो केवल कर्मानुमेय होती है अर्थात् जिसका ज्ञान कर्म की निष्ठा से आल्हाद, दाहादि से या टट्टी, पेशाव खुलकर आने या न आने से, शरीर में बल के बढ़ने या घटने आदि परिणाम फल को देखकर अनुमान द्वारा होता है, वह विपाक है। अतः चरक जी का कथन है –

'विपाकः कर्म निष्ठया।'

अर्थात् द्रव्यों का विपाक उनके कर्म विशेष से ही जाना जाता है।

विपाक के प्रभाव से द्रव्यान्तर्गत् रस में पचनेन्द्रियों के उक्त पाचक रसों का मिश्रण होने पर जो 'रसान्तर' निर्माण होता है उसके गुणों में तथा रसनेन्द्रिय द्वारा उसके अनुभूत गुणों में महदन्तर पड़ जाता है। कई द्रव्यों का रसनेन्द्रिय द्वारा अनुभूत परिणाम कटु या तिक्त होते हुए भी उक्त विपाकानन्तर जो रसान्तर होता है उसमें उसकी कटुता या तिक्तता नष्ट होकर माधुर्यता आ जाती है। जैसे सोंठ जिह्वा को कटु मालूम देती है तथा परिपाक क्रिया में भी उसके कटु रस के क्षोभक कार्य की अनुभूति होती है, किन्तु विपाक के प्रभाव से रसान्तर हो जाने पर उसकी कटुता दूर होकर क्षोभक कार्य के स्थान में शामक कार्य होने लग जाता है। इसी प्रकार गिलोय [गुडिच] की तिक्तता या उद्वेजक गुण विपाकानन्तर नष्ट होकर माधुर्य या शामक गुण की प्राप्ति होती है।

ध्यान रहे द्रव्यान्तर्गत् रसों का पचन पूर्व का तथा पचन पश्चात् का परिणाम भिन्न २ हुआ करता है। इसी कारण इस विपाक प्रकरण की कल्पना आवश्यक हुई। अन्यथा रस, गुण वीर्य कल्पना के पश्चात् विपाक कल्पना की कोई आवश्यकता नहीं थी। देखिये यदि रस कटु है और उसका विपाक भी सामान्य स्वरूपानुसार कटु या तिक्त हो [क द्रव्य ऐसे हैं जिनमें विपाक के पश्चात भी मूल रस स्वरूप में कोई विशेष भेद नहीं होता। इसका कारण द्रव्यों के उपादान स्वरूप पंचमहाभूतों के अंशों का तरतम भाव है] तो उसका शरीर पर उद्वेजक या वियोजक ही परिणाम होता है। जैसे धतूरा, कनेर, वत्सनाभ आदि। यदि कटु रस या तिक्त रस को पचन के पश्चात या विपाक में मधुर स्वरूप प्राप्त होता है तो उसका शरीर पर संयोजक एवं विशेष हितकारी परिणाम होता है। गिलोय इसी कारण रसायन कहलाती है। गिलोय के समान ही मधुर विपाकी कटु द्रव्यों का प्रथम [पचन पूर्व] जो उद्वेजक एवं वियोजक परिणाम होता है वह मल भाग को विमुक्त कर धातुओं को स्वच्छ निर्मल कर देता है, तदनंतर निर्मल हुई धातुओं पर संयोजक स्वरूपी मधुर विपाक का संवर्धक इष्ट परिणाम होता है। ऐसी अवस्था [अर्थात् जब शारीरिक धातुओं में विकृति होकर मल भाग या विकृत भाग की वृद्धि हुई हो] मधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपाकी मधुर रसों की अपेक्षा, मधुर विपाकी कटु-रस या तिक्त रस का ही अधिक उपयोग होता है [देखो तिक्त रस गुण वर्णन]। मधुर विपाकी मधुर रसों का परिणाम आरम्भ में तथा अन्त में भी आल्हादक और संयोजक होता है किंतु वह मल भाग को दूर नहीं कर सकता।

विपाक संख्या—

चरकाचार्य जी मधुर, अम्ल और कटु भेद से तीन प्रकार के विपाक मानते हैं। किन्तु सुश्रुत जी अम्ल विपाक नहीं मानते। वे कहते हैं—

> 'भूत गुणादागमाचान्योऽम्लो विपाको नास्ति।
> पित्तं हि विदग्धमम्लतामुपैति अग्निर्मन्दत्वात् ॥
> यद्येवं लवणोऽप्यन्यः पाकौ भविष्यति श्लेष्माहि
> विदग्धो लवणतामुपैति ॥

अर्थात् भूतों के गुण और शास्त्र पर विचार करने से विदित होता है कि अम्ल नामक कोई पृथक विपाक ही नहीं हो सकता। यदि अम्ल को विपाक मानें तो लवण को भी विपाक मानना पड़ेगा कारण मंदाग्नि की अवस्था में पित्त विदग्ध होने से वह अम्लता में परिणत होता है, तैसे ही कफ भी विदग्ध होकर लवणता को प्राप्त होता है।

किंतु, इस युक्ति के विरोध में कहा जा सकता है कि मंदाग्नि के कारण विदग्ध पित्त से जो अम्ल बनता है वह तो रसना ग्राह्य है और विकार है, किन्तु अम्ल विपाक को 'विपाक कर्म निष्ठया' न रसना ग्राह्य है न विकार है। चरक जी ने वास्तविक अम्ल विपाक तो उसे माना है जो कि अम्ल रस के सेवन से उसके परिपाक के पश्चात उस अम्ल से विशिष्ठ अम्ल बन जाता है। अग्निमंदता के कारण जो अस्वाभाविक अम्ल बनता है वह तो अम्ल पित्त रोग है, उसे विपाक समझना ठीक नहीं है।

अम्ल को विपाक न मानने में सुश्रुत जी पुनः दूसरी युक्ति यों देते हैं।

> "आगमेहि द्विविध एव पाको मधुरः कटुकश्च। तयोर्मधुराख्यो गुरुः कटुकाख्यो लघुरिति। तत्र पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशानां द्वैविध्यं भवति गुण साधर्म्याद् गुरुता लघुता च। पृथिव्यापश्च गुर्व्यः शेषाणि लघूनि तस्माद् द्विविध एव पाक इति।

अर्थात् —शास्त्र में भी मधुर और कटु दो ही विपाक वर्णित हैं। इनमें से मधुर विपाक तो गुरु और कटु विपाक लघु होता है। जिन पांच भूतों से सारे जगत् का निर्माण हुआ, उनमें से पृथ्वी और जल में गुरुता है, अतः तद् भूयिष्ठ द्रव्यों का मधुर विपाक होता है। शेष अग्नि, वायु और आकाश में लघुता है; अतः एतद्गुण भूयिष्ठ द्रव्यों का विपाक कटु होता है। इत्यादि।

इस युक्ति के भी विरोध में कहा जा सकता है कि—पंचभूतों में से पृथ्वी और जल भूतों का आधिक्य जैसे किसी द्रव्य में होता है और किसी द्रव्य में अग्नि, वायु और आकाश की अधिकता होती है, तैसे ही किसी द्रव्य में पृथ्वी और अग्नि का भी तो बाहुल्य होता है (जैसे अम्ल विशिष्ट द्रव्य) अतः जैसे पृथ्वी जल विशिष्ट द्रव्यों का सौम्य या मधुर विपाक और अग्नि वायु आकाश विशिष्ट द्रव्यों का आग्नेय या कटु विपाक माना गया है। तैसे इन दोनों के मिश्रण (सौम्य और आग्नेय) से भी एक तीसरा अर्थात् अम्ल विपाक मानना युक्तिसंगत ही है। इसीलिये चरकाचार्य जी का ३ विपाक मानना ठीक है, मधुर,कटु और अम्ल। और शास्त्रों में जैसे दो विपाकों का वर्णन है वैसे ही तीन विपाकों का भी वर्णन पाया जाता है। अतः चरक जी का स्पष्ट कथन है।

> कटुत्तिक्त कषायाणां विपाकः प्रायशः कटुः।
> अम्लोऽम्लं पच्यते स्वादुर्मधुरं लवणस्तथा ॥

अर्थात् कटु, तिक्त और कषाय रसों का विपाक प्रायः कटु अम्ल, और मधुर तथा लवण रस युक्त द्रव्यों का विपाक मधुर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाग्भट जी का भी ऐसा ही कथन है।

"स्वादुः पटुश्च मधुरमम्लोऽम्लं पच्यते रसः।
तिक्तोष्ण कषायाणां विपाकः प्रायशः कटुः॥"

शार्ङ्गधर संहिता आदि तंत्रांतरों में भी कहा गया है।

"त्रिधा विपाको द्रव्यस्य स्वाद्वम्ल कटुकात्मकः"

नोट—उक्त श्लोक में कहा गया है कि कटु, तिक्त और कषाय रसों का विपाक प्रायः कटु होता है। यहां प्रायः कहने का तात्पर्य यह है कि कुछ कटु, तिक्त या कषाय रस युक्त द्रव्य ऐसे भी होते हैं जिनका विपाक इन रसों से विपरीत ही होता है। जैसे मुद्गपर्णी तिक्त रस युक्त, पिप्पली कटु रस युक्त और हरीतकी कषाय रस युक्त होते हुये भी ये तीनों पाक में मधुर होते हैं

विपाक के गुण—

"शुक्रहा बद्ध विण्मूत्रो विपाको वातलः कटुः।
मधुरः सृष्टविण्मूत्रो विपाकः कफशुक्रलः।
पित्तकृत् सृष्टविण्मूत्रः पाकोऽम्लः शुक्रनाशनः॥"

अर्थात्—कटुविपाक-शुक्रनाशक, मलमूत्र का अवरोध और वायु वर्धक है। मधुर विपाक-शुक्र और कफ को बढ़ाने वाला, तथा मलमूत्र को साफ़ लाने वाला है। अम्ल विपाक शुक्र नाशक है, मलमूत्र को साफ़ लाता है और पित्तवर्धक है।

नोट-कटु के उपादान में अग्नि और वायु की प्रधानता है। अतः यह कफ और शुक्र से विरुद्ध गुण होकर कफ और शुक्र का नाशक, वायु के समान गुण होकर वायु वर्धक तथा शोषक होने से मलमूत्र बद्धता कारक है। मधुर के उपादान में पृथ्वी और जल का प्राधान्य होने से गुरु या सौम्य होता है। अतः मलमूत्र को साफ़ लाता है, तथा शुक्र और कफ की वृद्धि करता है। अम्ल के उपादान में पृथ्वी की प्रधानता है, अतः मलमूत्र खुलकर लाता है, किंतु साथ ही अग्नि का भी प्राधान्य होने से वह पित्त-वर्द्धक और शुक्र-नाशक है।

मधुर विपाक-वातपित्त नाशक एवं कफ वर्धक है।
अम्ल विपाक-कफपित्त वर्धक एवं वात नाशक है।
कटु विपाक-वातपित्त वर्धक एवं कफ नाशक है।

ध्यान रहे—किसी भी द्रव्य का जब तक ठीक विपाक नहीं होगा तब तक वह अपनी शक्ति या क्रिया को दर्शाने में समर्थ न होगा। अर्थात् द्रव्य का विपाक ही शरीर में गुणावगुण करने में कारण होता है। यदि किसी द्रव्य का विपाक ठीक होगा तो निश्चय ही वह अपने यथायोग्य प्रभाव को प्रकट करेगा।

रस, वीर्य, विपाक का उत्कर्ष :—

रस, वीर्य, विपाक ये सब अपने २ कार्यों को करते हैं। जिस द्रव्य में से जो बलवान होगा वह ही अन्य को जीत कर अपने गुणों को प्रकट करेगा। कोई द्रव्य अपने रस द्वारा ही अपने विशेष का[र्य] को करता है। यदि किसी द्रव्य में वीर्य बलवा[न] होगा तो यह अपने गुणों को दिखलायेगा। यदि विपाक की श्रेष्ठता हुई तो वह दूसरों को जीत कर अपने गुण उत्कर्ष एवं शुभाशुभ कर्मों को दर्शावेगा। जैसा कि वाग्भट जी का कथन है।

'किंचिद्रसेव कुरुते कर्म पाकेव वाऽपरम्।
गुणान्तरेण वीर्येण प्रभावेणैव किंचन॥
यद्यद् द्रव्ये रसादीनां बलवत्वेन वर्तते।
अभिभूयेतरांस्तत्त कारणत्वं प्रपद्यते॥
विरुद्ध गुण संयोगे भूयसाऽल्पं हि जीयते॥

कोई द्रव्य अपने प्रभाव द्वारा ही सब पर बा[जी] मार लेता है। विरुद्ध गुणों के संयोग में जो गु[ण] बलवान होता है वह अपने से हीन गुणों को जी[त] कर अपने प्रभाव को दिखाता है। तथा ऐसा देखा जाता है—

'रसं विपाक स्तौ वीर्यं प्रभावस्तान् व्यपोहति।
गुण साम्ये रसादीनामिति नैसर्गिकं बलम्॥'

—वाग्भट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात्—रस को विपाक, तथा विपाक को वीर्य, और रस वीर्य विपाक को प्रभाव पराजित कर अपने गुणों को प्रकट करता है। किंतु यह क्रिया तब होती है, जब इन सबमें समता होती है।

अब आगे प्रभाव वर्णन् के पूर्व द्रव्य गुण के विषय में संक्षिप्त विवेचन कर देना आवश्यक है।

द्रव्य गुण—

"समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः"

—चरक।

अर्थात्—जो द्रव्य का समवायी और व्यापार रहित कारण हो उसे गुण कहते हैं। गुणों की गणना के विषय में भी चरक जी का सूत्र है।

"सार्था गुर्वादयो बुद्धि प्रयत्नान्ताः परादयः गुणाः प्रोक्ताः।"

अर्थात्—पंच महाभूतों के गुण शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध सहित गुरु आदि गुण जो २० प्रकार के हैं। (जिनका कुछ वर्णन् हम पीछे रस प्रकरण में स्थान २ पर कर चुके हैं) तथा बुद्धि अर्थात् ज्ञान प्रयत्नान्त अर्थात् इच्छा, द्वेष, सुख, दुख और प्रयत्न, एवं परादियों को गुण कहा जाता है (परादि-पर, अपर युक्ति, संयोग, संख्या, विभाग, पृथक्त्व, परिमाण, संस्कार अभ्यास आदि परादि गुण हैं) इनमें से –

स्पष्टतया २० गुणों को ही हमें जान लेना परम आवश्यक है। इनको बिना जाने वैद्य चिकित्सा में प्रवृत्त नहीं हो सकता। कहा है—

"चिकित्सायैरविदितैर्नयथावत्प्रवर्तते।"

—चरक।

गुरुमन्दहिमस्निग्ध श्लक्ष्ण सान्द्र मृदु स्थिराः।
गुणाः ससूक्ष्म विशदा विंशतिः सविपर्ययाः॥

—वाग्भट।

अर्थात्—गुरु, मंद, हिम, स्निग्ध, श्लक्ष्ण, सान्द्र, मृदु, स्थिर, सूक्ष्म और विशद ये १० और इनसे विपरीत क्रमशः लघु, तीक्ष्ण, उष्ण, रूक्ष, खर, द्रव, कर्कश, सर (चल), स्थूल, और पिच्छल ये १० ऐसे कुल २० गुण हुये।

द्रव्य प्रभाव उनके गुणों पर ही निर्भर है। जैसे—

(१) गुरु द्रव्य, कदली फलादि, भारी और दुष्पाच्य होते हैं। ये वातनाशक, पुष्टिकारक, कफ को करने वाले एवं देर से पचने वाले होते हैं।×

(२) मंद द्रव्य, घृतादि, अपनी क्रिया विलम्ब से करता है। यह सम्पूर्ण कार्यों में शिथिल और अल्प कहाता है।

"मंदः सकल कार्येषु शिथिलोऽल्पोऽपि कथ्यते"

भा० प्र०।

(३) हिम (शीत) द्रव्य--मिश्री, गुडूची आदि, पित्त शामक होने से शीत गुण युक्त माने गये हैं। ये द्रव्य सुख देने वाले, रक्त की अति प्रवृति को रोकने वाले, तथा मूर्च्छा, तृषा, दाह और स्वेद को दूर करने वाले होते हैं।

"शीतस्तुल्हादनः स्तंभी मूर्च्छातृट् स्वेद दाह नुत्।"

—भा० प्र०।

(४) स्निग्ध-घृत तैल वसादि–वातनाशक, कफकारक, वीर्यवर्धक और बल देने वाले हैं।

"स्निग्धं वातहरं श्लेष्मकारि वृष्यं बलावहम्।"

ये अपने स्नेह भाव से रूक्षता का नाश करते हैं।

(५) श्लक्ष्ण द्रव्य (घृतादि) मार्गों की या स्रोतों की खरता को दूर कर के उन्हें सम करते हैं। इनमें विशेष स्निग्धता न रहते हुये भी, कुछ कड़ापन लिये हुए ये चिकने होते हैं।

'श्लक्ष्णः स्नेहं बिनापिस्यात् कठिनोऽपि हि चिकणः।'

--भा० प्र०।

(६) सान्द्र द्रव्य--गेहूँ, जवादि द्रव गुण युक्त द्रव्यों से विपरीत होते हैं। इन्हें शुष्क भी कहते हैं।

× "गुरुवात हरं पुष्टि श्लेष्म कृचिर पाकि च।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) मृदु द्रव्य--हलुवा आदि जो कोमल होते हैं।

(८) स्थिर द्रव्य-- पाठा, कपिथ्यादि-स्तम्भक होते हैं। ये वायु और मल को रोकने वाले होते हैं।

"स्थिरो वातमल स्तम्भी।"

सूक्ष्म द्रव्य—लवण मद्यादि शरीर के सूक्ष्म से सूक्ष्म अवयवों में जाकर अपने प्रभाव को दिखाते हैं।

"देहस्य सूक्ष्मच्छिद्रेषु विशेयत्सूक्ष्ममुच्यते।"

—भा० प्र०

१०-विशद द्रव्य—शुंठी, चणकादि पिच्छिल या लेसदार नहीं होता। ये प्रायः रूक्ष द्रव्यों से मिलते-जुलते हैं और आर्द्रता को मिटाने वाले तथा व्रण को भरने वाले होते हैं।

"क्लेदच्छेदकरः ख्यातो विशदो व्रणरोपणः"

—भा० प्र०

११-लघु द्रव्य—धान के खीलादि सुपाच्य अर्थात् किसी प्रकार के कष्ट दिये बिना शीघ्रता से पच जाते हैं। ये अत्यन्त पथ्य कफ नाशक होते हैं। कहा है—

"लघु पथ्यं परं प्रोक्तं कफघ्नं शीघ्रपाकिच।"

१२-तीक्ष्ण द्रव्य—संखिया आदि अधिक पित्त को करने वाले लेखन और कफ तथा वात को हरने वाले होते हैं।

"तीक्ष्णं पित्तकरं प्रायो लेखनं कफ वात हृत्"

१३-उष्ण द्रव्य—मरिचादि पित्त प्रकोपक और कफ नाशक होते हैं। शीत गुण युक्त द्रव्यों से विपरीत धर्म वाले होते हैं।

१४-रूक्ष द्रव्य—जव आदि अत्यन्त वायु वर्धक और कफ को हरने वाले होते हैं।

"रूक्षं समीरणकरं परं कफ हरं मतम्।

१५ खर द्रव्य—भृष्ट चणकादि श्लक्ष्ण द्रव्य से विपरीत धर्म वाले होते हैं।

१६ द्रव द्रव्य-जल दूधादि क्लेद या आर्द्रताकारक और व्यापक होते हैं।

"द्रवः क्लेदकरो व्यापी"

१७-कर्कश द्रव्य-कठोर द्रव्य जयपाल, निसोथादि वायु को और मल को प्रवृत्त करने वाले होते हैं।

१८-स्थूल द्रव्य—बेसन के लड्डू आदि शरीर में स्थूलता को करने वाले और स्रोतों को रोकने वाले होते हैं।

"स्थूलः स्थौल्यकरो देहे स्रोत सामवरोध कृत्"

२०--पिच्छिल द्रव्य (लेसदार)--ईसबगोल, गोंदादि, तन्तु [रेशे] वाले, बलकारक, संधानकारक कफकारी और भारी होते हैं। कहा है---

"पिच्छिल स्तन्तुलो बल्यः सन्धानः श्लेष्मलो गुरुः"

—भा० प्र०

नोट--शास्त्रों में 'आशु' नामक भी एक गुण है। यह मन्द गुण का प्रतिद्वन्दी है। इसका समावेश उपर्युक्त तीक्ष्ण गुण में ही किया जा सकता है। आशु गुण विशिष्ट द्रव्य प्रायः रस में मधुर विपाक में अम्ल, पित्तकारी और भारी होते हैं।

'गुरु' गुण युक्त द्रव्य तीन प्रकार के होते हैं (१) स्वभाव गुरु जैसे उड़द आदि जो अग्नि को मं[द] कर देते हैं। (२) मात्रा गुरु द्रव्य जैसे मूंगादि (३) संस्कार गुरु द्रव्य जैसे पिष्टान्नादि।

ये गुरु आदि गुण जो द्रव्यों में देखे जाते [हैं] वे पंच महाभूतों पर निर्भर हैं। जिन द्रव्यों [में] पृथ्वी अंश अधिक होता है वे गुरु, स्थूल, स्थि[र] गुण भूयिष्ठ होते हुए गन्ध युक्त होंगे। उन[में] सन्धान अर्थात् काठिन्यता होगी। कहा है—

तत्र द्रव्यं गुरु स्थूल स्थिर गंध गुणोल्बणम्।
पार्थिवं गौरव स्थैर्य संघातोपचया वहम्॥

—वाग्भ[ट]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन द्रव्यों में जलांश अधिक होगा वे द्रव, शीत, गुरु, स्निग्ध, मन्द, सान्द्र गुण भूयिष्ठ होते हुये स्रोतस्रावी, आल्हाद कारक (तृप्तिकारक) और पुष्टिकारी होते हैं। कहा है—

द्रव शीत गुरु, स्निग्ध मन्द सान्द्र गुणोल्वणम्।
आप्यं स्नेहन विष्यन्द क्लेद प्रल्हाद वन्धकृत् ॥

—वाग्भट।

जिन द्रव्यों में तेज या अग्नि का अंश अधिक होता है वे रूक्ष, तीक्ष्ण, उष्ण, विशद, सूक्ष्म गुण भूयिष्ठ होते हुए दाह करने वाले, क्रांति कारक, शरीर के रंग को उज्ज्वल करने वाले तथा पाचक होते हैं। कहा है—

रूक्ष तीक्ष्णोष्ण विशद सूक्ष्म रूप गुणोल्वणम्।
आग्नेयं दास भावर्ण प्रकाश पचनात्मकम् ॥

—वाग्भट।

जिन द्रव्यों में वायु अंश की अधिकता होती है वे रूक्ष, विशद, लघु, खर गुण भूयिष्ठ होते हुए तत्तद्गुणानुसार कर्मों को करते हैं, शरीर को स्वच्छ करते हैं, नाना प्रकार की चेष्टाओं को पैदा करते हैं तथा ग्लानि को भी उत्पन्न करते हैं। कहा है--

वायव्यं रूक्ष विशद लघु स्पर्श गुणोल्वणम्।
रौक्ष्य माघव वैशद्य विचार ग्लानिकारकम् ॥

जिनमें आकाश का अंश विशेष होता है वे द्रव्य सूक्ष्म, विशद, लघु एवं शब्द गुण भूयिष्ठ होते हैं। ये सूक्ष्म से सूक्ष्म स्रोतों में घुसने वाले और शरीर में हलकापन लाने वाले होते हैं। कहा है–

नाभसं सूक्ष्म विशद लघु शब्द गुणोल्वणम्।
सौषिर्यं लाघवकरं जगत्येव मनौषधम् ॥

---वाग्भट।

❀

—[क्रमशः]

"धन्वन्तरि"

रक्तरोगांक

इस विशेषांक में आयु० पंचानन पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल, कविराज प्रतापसिंह जी रसायनाचार्य वैद्यरत्न, कविविनोद पं. ठाकुरदत्त जी शर्मा "अमृतधारा" पं० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी B. A. आयुर्वेदाचार्य, श्री. पं० शिवशर्मा B. A. आयुर्वेदाचार्य आदि ४१ आयुर्वेद-संसार के माने हुए विद्वानों के रक्त-रोगों पर विवेचना एवं अनुभव पूर्ण लेख हैं। इस विशेषांक में रक्तचाप [ब्लडप्रसर] तथा कुष्ठ का विस्तृत विवेचन एवं चिकित्सा, प्रयोगादि दिये हैं। अनेकों तिरंगे एवं सादे चित्रों से सुसज्जित विशेषांक की थोड़ी सी प्रतियां शेष हैं। पृष्ठ-संख्या बड़े साइज के २८० पृष्ठ हैं। मूल्य केवल विशेषांक का ४) पोस्टेज प्रथक। इस वर्ष के १० साधारण अङ्क (जिनमें बड़े मार्के के लेख, प्रयोग आदि हैं) भी साथ लेने पर मूल्य केवल ५≡) है।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय
विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त का वैज्ञानिक विवेचन ।

लेखक—श्री० पं० सतीशचन्द्र जी शास्त्री व्याकरणाऽयुर्वेदाचार्य,
प्रिंसीपल एंग्लो आयुर्वेद महाविद्यालय, कौंसली [जयपुर]

रक्त—

"रज्यते ऽनेना ऽङ्गमिति रक्तम्" शरीरस्थ सात धातुओं में धातु विशेष शरीर के मध्य सात धातुओं में से १ धातु। लहू, खून, पर्याय--रक्त, रुधिर, असृज लोहित, क्षतज, शोणित, कीलाल इत्यादि।

हम लोग जो वस्तु खाते हैं, वह पहिले रस रूप में परिणत होता है। पहिले वह रस यकृत से जाकर रञ्जक पित्त द्वारा पाक हो रक्त वर्ण का हो जाता है। इसी से उसको रक्त कहते हैं। यह रक्त सभी के शरीर में रहता है, तथा यह जीवन का श्रेष्ठ आधार स्वरूप है। यह स्निग्धि, गुरु, चलन शील और मधुर होता है। किन्तु दूषित होने पर यह विदग्ध पित्त की तरह अर्थात् खट्टा हो जाता है। समस्त शरीर तो जीवका वास-स्थान है किन्तु वीर्य, रक्त, मल यह शरीर के विशेष आधार हैं। क्योंकि इन तीनों का क्षय होने से थोड़े ही समय में जीव का क्षय हो जाता है।

रक्त का प्रधान आश्रय स्थान यकृत और प्लीहा हैं। यह इन्हीं दो स्थानों में रहकर दूसरे स्थान के रक्त का पोषण करता है।

खाया हुआ रस पहिले हृदयमें जाता है,पीछे वह समान वायु द्वारा परिचालित होकर पित्त से पाचित और रञ्जित हो लाल हो जाता है। यह शरीर में रहता है,जीव का उत्तम आधार यही है।

सुश्रुत में लिखा है—रस धातु से रक्त होता है रस धातु का अर्थ है गमन करना। चूंकि रात दिन जाता रहता है, इसी से इसको रस कहते हैं। यह रस भुक्त पदार्थ से एक ही दिन में उत्पन्न हो ३०१५ कला अर्थात् पांच दिन से कुछ अधिक समय में एक एक धातु में उतर कर अन्य धातु में परिणत हो जाता है, अतएव इस समय वह रस रक्त के रूप में पलट जाता है।

रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, और शुक्र यह सात धातु शरीर को धारण किये हुए हैं, इसीसे इन्हें धातु कहते हैं। इन सम्पूर्ण धातुओं का क्षय, एवं वृद्धि, रक्त के ऊपर निर्भर हैं। (वात दूषित पित्त, श्ले··)

रक्त का स्थान—

पहिले से ही कहा जा चुका है, कि यकृत और प्लीहा ही रक्त का प्रधान स्थान हैं। रक्त इन दोनों स्थानों से ही देह की सभी शोणित क्रिया का आनुकूल्य करता है। रक्त गरम नहीं, शीतल भी नहीं स्निग्ध, रक्त वर्ण, भारी और पित्त व विदाह गुण विशिष्ट होता है।

रक्त संचालन—

सभी जीवों की छाती में दो यन्त्र हैं। एक का नाम फुफ्फुस, दूसरे का नाम हृत्-पिण्ड है। रक्त ही जीव का मूल आधार है। प्राणी जो कुछ भी खाते हैं, वह परिपाक होकर रक्त में परिणत होजाता है शरीर की प्रत्येक नस में रक्त फैला हुआ है रक्त संचालन के लिये शरीर के प्रत्येक अंशों में पथ वा नाली है। इन नलियों को ही शिरा, धमनी आदि नाम से कहते हैं। वृक्षादि स्थावर गण जैसे पृथ्वी से रस चूस कर जीवित रहते हैं उसी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जङ्गम भी पाक स्थली के अन्न से रक्त संग्रह कर के जीवित रहते हैं। खेत के नाले जिस प्रकार खेत में जल पहुंचा कर अन्न को सुरक्षित रखते हैं। उसी शरीर की तरह धमनियां व शिराऐं भी शरीर के सभी स्थानों से रक्त लेजाकर शरीर को सजीव रखती हैं। इन सभी नलियों का रक्त शरीर के अंशों में जलवत् फैला हुआ है।

साधारण-तया माना जाय तो जीवन हृत्पिण्ड ही रक्त का आधार है। हृत्पिण्ड से यह धमनी में और धमनी से शिरामण्डल में प्रवाहित होता रहता है। शिरा मण्डल से शोणित फुफ्फस होकर हृत् पिण्ड से वह पुनः शिरा और धमनी में जाता है। इस प्रकार शरीर यन्त्र के भीतर शोणित हमेशा चलता रहता है। शोणित नली में कहीं भी किसी द्रव्य के रहने से वह रक्त प्रवाह से बाहिर हो जाता है। रक्त जब दूषित होता है तब वह सारे शरीर को क्षण भर में दूषित कर डालता है।

रक्त संचालन का पथ—

हृत्पिण्ड के दाहिने पार्श्व से फुफ्फुस की धमनी में होकर रक्त फुफ्फुस में जाता है। उसके बाद फुफ्फुस कौशिक नाली, और शिरा द्वारा वह हृद्-पिण्ड की बाईं ओर लौट आता है। अतएव इससे प्रतीत होता है कि रक्त दो मार्ग से प्रवाहित होता है। इनमें से एक मार्ग बड़ा, दूसरा छोटा है। किन्तु ठीक तौर पर विचार करने से मालूम पड़ेगा कि रक्त संचालन प्रणाली सिर्फ एक ही है। क्योंकि समस्त शोणित प्रवाह में ही एक ही समय फुफ्फुस के भीतर होकर प्रवाहित होता है।

विशुद्ध शोणित मानव का जीवन है। इसके शोधनार्थ विशुद्ध वायु की विशेष आवश्यकता है। रक्त शोधनार्थ वायु प्रति मिनट में कम से कम २० बार फुफ्फुस के मध्य में प्रवेश करती है। तथा वहां से दूषित होकर बाहिर निकलती है, वायु जब तक विशुद्ध नहीं होती तब तक उससे रक्त शोधित नहीं हो सकता। शरीर के दूषित पदार्थों के बाहिर नहीं निकलने से देह का विशेष अनिष्ट तथा नाना-विध पीड़ा पैदा हो जाती है।

रक्त संचालन प्रणाली—

प्राणीदेह हमेशा क्रिया-शील है। जीव कभी २ क्रिया शून्य होकर चुपचाप भी बैठा रहता है। पर हृदय में क्रिया-संचालन होता रहता है उसमें क्रिया कभी बन्द नहीं होती, हृत्-पिण्ड, फुफ्फुस धमनी, शिरा, पाक स्थली आदि अपना अपना कार्य हमेशा किया करती हैं। जिस शक्ति का १ बार अपचय एवं क्षय हो जाता है, शरीर यन्त्र के मध्य से फिर उसका दूसरी बार पूरण नहीं होता। यह बाहिर के द्रव्य द्वारा पूरण करना पड़ता है। जीव जो कुछ खाता है वह पाक-स्थली में जाकर रक्त और मलमूत्रादि पदार्थ में परिणतहोता है। अतएव रुधिर जीव की शक्ति है। इसका वर्ण लाल होने से ही इसे "रक्त" कहते हैं।

रक्त एक क्षार बहुल पदार्थ है; संक्षेप में यह रक्त के १०० भागों में ६९ भाग जल और २१ भाग शुष्क कठिन द्रव्य देखा जाता है। जैसा वायु में हाइड्रोजिन और आक्सिजन परिमाण जैसा है, रक्त में भी कठिन द्रव्य का भाग वैसा ही है।

२१ भाग कठिन द्रव्य में १२ भाग श्वेत और लाल कणिका, बाकी ९ भाग में ६ भाग एलब्युमिन पदार्थ, ३ भाग लवण, चरवी और शर्करा है। फाइब्रिन नामक एक प्रकार का तन्तु सदृश पदार्थ का कुछ अंश रक्त में पाया जाता है। १०० घन इञ्च रक्त में २० घन इञ्च से कम वायव्य पदार्थ कार्बन ऑक्सिजन, हाइड्रोजिन हैं।

स्त्री जाति की अपेक्षा पुरुष के रक्त में लाल कणों का परिमाण अधिक है। इससे इनका आपेक्षिक गुरुत्व भी अधिक हैं। गर्भिणियों के रक्त में लाल कणों का परिमाण थोड़ा है, अतः असत्वा की अपेक्षा उनके रक्त का गुरुत्व भी थोड़ा है। क्रोधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य के रक्त में कठिन द्रव्य में विशेषतः लाल कणिका का परिमाण अपेक्षा—कृत अधिक है। आमिष भोजी की अपेक्षा शाक-भोजी के रक्त में कठिन द्रव्य कम होता है।

रक्त के वर्ण की विभिन्नता—

शरीर के सभी स्थानों में रक्त का वर्ण एक प्रकार का नहीं है। धमनियों में जो रक्त है, वह शिराओं से भिन्न है शिराओं से भी सर्वत्र एकसा रक्त नहीं दिखाई देता।

धमनी के रक्त का वर्ण उज्ज्वल व लाल होता है, क्योंकि अपेक्षा कृत आक्सिजन विशेष रहता है। शिरा का वर्ण बैगुंनी होता है। क्योंकि इस में आक्सिजन का परिमाण थोड़ा रहता है। इसके अतिरिक्त धमनी का रक्त जितनी जल्दी जमता है, शिरा का रक्त उतनी जल्दी नहीं। फिर फुफ्फुस, यकृत, प्लीहा की शिराओं का रक्त अन्यान्य शिराओं से विभिन्न है।

रक्त का परिमाण—

मनुष्य के शरीर में कितना रक्त है इसका ठीक पता लगाना कठिन है। पर हां पाश्चात्य पण्डितों ने स्थिर किया है कि शरीर के समग्र भाग में प्रायः १/१२ से १/१० शोणित मनुष्य के शरीर में रहता है परन्तु अवस्था भेद से इसमें तारतम्य भी देखने में आता है। खाने के बाद शरीर में रक्त का जो परिमाण रहता है, भूख में उससे कुछ कम हो जाता है।

रक्त का उपादान—

रक्त के चार उपादान हैं, रस, कस, कणिका, और तन्तु। रक्त के जिस तरल अंश में कणिका बहती हैं उसे इस का रस कहते हैं। रक्त से रक्त की तलछट अन्तरित होने से मैला तरल पदार्थ अवशिष्ट रह जाता है, वही इसका कस है, कणिका दो प्रकार की हैं—श्वेत और लाल।

स्वस्थ देह में श्वेत की अपेक्षा लाल कणिका अधिक पाई जाती हैं। यह सब कणिका ही रक्त की सार वस्तु है। इनकी सत्ता के कारण ही रक्त का वर्ण लाल हो जाता है।

रक्त का उद्भव—

लाल कणिका रक्त की सार वस्तु है। कोई कहते हैं मनुष्य की पशु का अर्थात् पञ्जरास्थियों के भीतर जो रक्त वर्ण की मज्जा होती है; उससे ही रक्त कणिका उत्पन्न होती हैं। किसी के मत से प्लीहा के उपादान के मध्य लाल और वर्ण हीन द्विविध कणिका उत्पन्न होती है।

रक्त की क्रिया—

रक्त प्राणी के जीवन का प्रधान साधन है। जो स्नेह पदार्थ मस्तिष्क का प्रधान उपादान है, वह रक्त से पैदा होता है। एक मात्र रक्त के द्वारा ही शारीरिक सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट होते हैं।

रक्त शोधन—

रक्त पहिले हृत्-पिण्ड से निकलकर धमनी मार्ग से शरीर के सभी स्थानों में परि-भ्रमण करता है, तथा शिरा पथ से पुनः हृत्-पिण्ड में लौटता है। इसका नाम रक्त-संचालन हैं। रक्त सारे शरीर में भ्रमण कर दूषित हो जाता है, तथा उस दूषित अवस्था में ही बड़ी शिरा द्वारा हृत-पिण्ड के दाहिने कोष्ठ में आ पहुंचता है। वहां से वह दाहिने हृदुदर में तथा हृदुदर से फुफ्फुस की धमनी द्वारा फुफ्फुस में प्रवेश करता है जहां आक्सिजन लेकर शोधित होता है। फुफ्फुस से यह शुद्ध रक्त फुफ्फुस का शिरा द्वारा हृत्-पिण्ड के वाम कोष्ठ में आता है। वहां से वाम उदर में, पीछे आदि कण्डरा (Aorta) द्वारा सारे शरीर में पुनः संचालित होता है। अनन्तर वह बड़ी धमनी से छोटी धमनी में पीछे धमनियों से छोटी २ कैशिक नलियों में कैशिक नलियों से शिराओं में तथा शिराओं से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूषित अवस्था में वह रक्त पुनः हृत्-पिण्ड में चला आता है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त हृत्-पिण्ड के संकोचन और विस्फोरण से रक्त इसी प्रकार बहता रहता है।

हृत् कोष्ठ में रक्त का परिमाण पाश्चात्य पंडितों ने परीक्षा द्वारा स्थिर किया है। प्रत्येक हृदय में प्रायः ४ से ६ औंस रक्त रह सकता है। हृत्-पिण्ड के प्रत्येक संकोचन से उतना रक्त शरीर में संचालित हुआ करता है, तथा हृत्-पिण्ड के विस्फोरण में फिर उतना ही रक्त इसके कक्ष में घुस जाता है। इस प्रकार हृत्-पिण्ड हमेशा संकोचित विस्फरित होता रहता है। इस अविरल विस्फारण एवं संकोचन के लिये शरीर की कण्डरा,धमनी, शिरा आदि शोणित नलियां हमेशा रक्त से पूर्ण रहती हैं।

शरीर का रक्त दूषित होने पर उसे मोक्षण कर फैंक देना चाहिये। किन्तु क्षीण व्यक्ति के अम्ल भोजन के कारण शोथ होने की दशा में तथा पाण्डु रोगी, अर्श रोगी, उदर रोगी शोष रोगी, और गर्भिणी इनकी शोषावस्था में रक्त मोक्षण नहीं करना चाहिये। अस्त्र द्वारा रक्त-स्राव की क्रिया दो प्रकार की होती हैं—उनमें से एक का "प्रच्छान, दूसरे को शिरव्यधन" कहते हैं।

अत्यन्त शीताधिक्य एवं वाताधिक्य के समय भोजन के पूर्व व खाते ही अस्त्र प्रयोग से, अथवा शोणित अत्यन्त गाढ़ा रहने से रक्त-स्राव नहीं होता, यदि होता भी है तो बहुत थोड़ा। जो मद्य व विषपान से मत्त मूर्च्छागत, परिश्रान्त, निद्राभिभूत, भीत हैं, तथा जिनके वात, मल, और मूत्रनिरुद्ध है, प्रायः उन्हीं को रक्त-स्रावित नहीं होता।

रक्त-स्राव नहीं होने से दोष—

उल्लिखित कारणों से यदि दूषित रक्त नहीं निकले तो वह शरीर में रह कर, कण्डु, शोथ, रक्त वर्णता, दाह, पाक, वेदना उत्पन्न करता है।

अति रक्त-स्राव के कारण—

अनभिज्ञ चिकित्सक द्वारा अत्यन्त उष्ण काल में धर्माक्त व्यक्ति या जिसे अत्यन्त स्वेद दिया गया है रक्त मोक्षणार्थ अस्त्र प्रयोग से रोगी का शरीर रक्त स्रावार्थ अतिरिक्त विद्ध होने से अपरिमित रूप में रक्त निकलता है। विशेष मात्रा में रक्त-स्राव होने से, शिरःशूल अन्धता, चक्षु रोग, धातु-क्षय, आदि नाना प्रकार के रोग पैदा होते हैं, अन्त में मृत्यु तक भी हो जाया करती है।

रक्त-स्राव के नियम एवं लक्षण—

अनतिशीतोष्ण काल में जिस व्यक्ति को अधिक स्वेद नहीं दिया गया है, तथा जो व्यक्ति सूर्य तापादि से तापित नहीं हैं, वैसे व्यक्ति को पूर्व तिल का यवागू पिलाकर पीछे उसका रक्त मोक्षण करना चाहिये। रक्त-स्राव होने के समय जब रक्त-वर्ण विशुद्ध रक्त निकलने लगे, अथवा स्वयं रक्त स्राव बन्द हो जाय, वा देह की लघुता, वेदना का उपशम, रोग के बलका ह्रास और चित्त की प्रफुल्लता, यह सब चिन्ह जब मालूम पड़े तब जानना चाहिये कि रक्त-स्राव ठीक हुआ है। ठीक तौर से रक्त-स्राव नहीं होने से—

इलायची	कपूर	तगर पादुका
अकवन	देवदारु	विडङ्ग
चीता	सोंठ	पीपल
मिर्च धूमसा	हल्दी	करंज का फल

—इनमें जो मिल सके, उन्हें एक साथ अच्छी तरह चूर्ण कर तिल तैल, सैंधव लवण, मिला क्षत स्थान पर घिसने से रक्त-स्राव ठीक होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर निदान ।

लेखक— श्री० मिश्रीलाल जी गुप्ता वैद्य ।

ज्वर की सम्प्राप्ति

मिथ्या आहार-विहार से, वातादि दोष विरुद्ध हो ।
जठराग्नि को निज कोष्ठ से, बाहर हटाते क्रुद्ध हो ॥
जब उष्ण होती देह सब, वातादि के उत्पात से ।
तब ज्वर बताते हैं उसे, स्पर्श करके गात से ॥

ज्वर के पूर्वरूप

श्रम हो अकारण कर्म करने में न कुछ उत्साह हो ।
मुख में विरसता नैत्र में जल, शीत वातरु दाह हो ॥
रोमांच, अंगड़ाई, अरुचि, आनन्द की निवृत्ति हो ।
जृम्भा जहां आसीन हो, ज्वर की अवश्य प्रवृत्ति हो ॥

वात ज्वर

ज्वरवेग हो अति विषम अरु,मुख कंठ अतिही शुष्क हो ।
हो कम्प निद्रा नाश त्वच स्तंभ, देह अति रुत्त हो ॥
मस्तक हृदय और गात्र में, पीड़ा हो मुख रस हीन हो ।
अफरा, जंभाई शूल हो तब वात ज्वर आसीन हो ॥

ज्वर के लक्षण

अवरोध हो जब स्वेद का, और देह में संताप हो ।
ज्वर जान लो यदि रुग्ण को सर्वांग में ही ताप हो ॥

पित्त ज्वर

ज्वर तीव्र निद्रा अल्प हो,अतिसार वमि और स्वेद हो ।
कण्ठोष्ण मुख नासा पकी सी जानकर जब खेद हो ॥
मूर्छा प्रदाह मदस्त्रपा, मलमूत्र पीला हो जहां ।
है पित्त ज्वर आसीन निश्चय शीघ्र ही समझो वहां ॥

कफ ज्वर

ज्वर मंद मुख में मधुरता,
आलस्य स्तैमित्य हो ।
मल मूत्र श्वेतालस्य त्रप्ती,
गात्र गुरुता नित्य हो ॥
रोमांच अति निद्रा बमन,
प्रतिश्याय का यदि भान हो ।
गुरु देह चक्षु श्वेत,
कासादिक जहां महमान हो ॥
है श्लेष्म ज्वर यह सर्वथा,
लक्षण सभी पहचानलो ।
उपचार उत्तम के लिए,
दोषादि सम्यक जानलो ॥

वात पित्त ज्वर

अति प्यास मूर्छा दाह श्रम
निद्रा विनाश जहां रहे ।
रोमांच मस्तक शूल जृम्भा,
आदि दोष जहां रहे ॥
मुख श्राव, तम अरु पर्व भेद,
निदान पूर्वक जानलें ।
तब वात-पित्त ज्वराकृती,
विद्वान निश्चय मानलें ॥

वात श्लेष्म ज्वर

निद्रा शिरोग्रह कास और
सन्ताप सह प्रतिश्याय हो ।

CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...स्तक बंधासा ज्ञात हो,
स्वेदावरोध सहाय हो॥

पित्त श्लेष्म ज्वर

...मुख लिप्त सा कफ से रहे,
तन्द्रा अरुचि और कास हो।
...क्षण शीत क्षण में दाह,
अरुचि आदि जिसके पास हो॥
...मुख तिक्त देह स्तम्भ,
मोह तृषादि का भी बास हो।
...कफ पित्त-ज्वर जानो उसे,
यदि उक्त लक्षण भास हो॥

सन्निपात ज्वर

...क्षण दाह क्षण में शीत,
अस्थी संधियों में शूल हो।
...कवाद तन्द्रा कास हो,
मूर्छादि दुख का मूल हो॥
...ति निर्निमेषक नेत्र की,
मूर्छादि के अनुकूल हो।
...ी श्वास अरुचि, भ्रम तृषा,
कफ कंठ में प्रतिकूल हो॥
...टे चुभें निज कंठ में,
शैथिल्य गात्र बना रहे।
...मुख पित्त रक्त मिले हुये,
कफ से सदैव सना रहे॥
...मलमूत्र स्वेदविलम्ब से,
अति अल्प आवें सर्वथा।
...श हो न देह विशेष,
कफ की कंठ में होवे व्यथा॥

मुख नासिका और कर्ण रंध्र, पके हुवे से ज्ञात हो।
परिपाक दोष बिलंब से हो, मंद स्वर से बास हो॥
तात्पर्य यह त्रय दोष के, लक्षण सभी जब जानलें।
तो सन्निपातज ज्वर उसे, विद्वान निश्चय मानलें॥

सन्निपात उपद्रव

हो कर्ण मूल महाबली जब सन्निपातज ताप से।
तो जानलो रोगी फंसा है, मृत्यु के सन्ताप से॥
पर शोथ ज्वर के आदि से हो, तो अवश्य असाध्य है।
है कष्ट दायक मध्य से और अन्त में सुखसाध्य है॥

असाध्य सन्निपात

सब लक्षणों से मुक्त हो मन्दाग्नि-मय भी मानलो।
तो सन्निपातज रुग्ण को, निश्चय मरा ही जानलो॥

सन्निपात की मर्यादा

यह सात, दस अथवा अधिक, द्वादश दिनों का रोग है।
या तो हरण हो प्राणका या सिर्फ दुखका भोग है॥
तो सात से बाईस दिन तक भी अवधि हैं मानते।
इससे अधिक दिन की न मर्यादा कोई जन जानते॥

आगन्तुक ज्वर

ज्वर जन्म ले जिस देह में शस्त्रादि के आघात से।
या प्रेत बाधा से तथा कर्मादि के उत्पात से॥
गुरु वृद्ध ब्राह्मण या किसी सज्जन पुरुष के श्राप से।
आगन्त ज्वर समझो अगर मंत्रादि के हो जाप से॥

काम ज्वर

स्थिर न हो जब चित्त तंद्रा अरुचि जिसके साथ हो।
कृश गात हृद पीड़ा रहे, आलस्य सा दिन रात हो॥

—क्रमशः।

JWARARI
જ્વરારિ- તાવ, ટાઢીયો, અને બરોળ લીવર વિગેરેની ખાસ દવા
The Best Medicine For Malarial Fevers and spleenic-enlargement
Manufacturers: Dhanwantari Karyalaya, Bijaigarh. (Aligarh)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौमार भृत्य में वैज्ञानिक रहस्य

लेखिका- आयु. श्री. शान्तादेवी जी वैद्या
स्त्री-चिकित्सालय, हसनगंज [लखनऊ]

उपस्नेह और उपस्वेद से जीवित और परिवर्द्धित होने वाले गर्भस्थ शिशु का विश्वानुप्रवेश कालिक प्राथमिक भक्ष्य का संचयन जीव के गर्भानुप्रवेश काल के ६ मुहूर्त बाद ही प्रारम्भ हो जाता है, आपन्न गर्भा का रस त्रिधा विभक्त होकर भिन्न-भिन्न कार्य करता है, स्वपोषण और गर्भ वृद्धि के अतिरिक्त तृतीयांश स्तन्य के लिए कल्पित होता है।

"स्त्रिया ह्यापन्न गर्भाया स्त्रिधा रसः प्रतिपद्यन्ते स्वशरीर प्रष्ट्येस्तन्याय गर्भवृद्धये च"।

दुग्ध--

आपन्न गर्भावस्था से आसन्न प्रसवावस्था पर्यन्त नियति नैपुण्य से नारी शरीर निरन्तर स्तन्योपादान का निर्माण कार्य करता रहता है, यह कार्य इतनी तेजी से होता है कि एक दिन का स्तन्योपादान, दुग्धबीज, स्तनंधय के ६ दिन पेय निर्माण के लिये पर्याप्त होता है कि एक दिन के बने दुग्धबीज बच्चे के ६ दिन पीने के काम में आयेंगे, इस भांति बने हुये दुग्धबीज समीप ५ वर्ष शिशु के लिए पयोत्पादन क्रिया करते रहते हैं, दश मास की गर्भावस्था की भांति ही ५ वर्ष की यह पयोत्सृष्टावस्था है, माता के लिये पयोत्सृष्टावस्था भी उतनी ही पुण्य पवित्र है जितनी कि गर्भावस्था, माता और पुत्र का यह विसर्ग दान काल धार्मिक देय है।

दुग्ध बीज—

दुग्ध बीजों का एकत्रीकरण प्रथमतः स्तन वृन्त में होता है, स्तन वृन्तशिखर में स्वस्थ स्त्रियों में १६ छिद्र होने चाहिये, प्रायः न्यूनाधिक अर्थात १२ से २० तक होते हैं, दुग्धश्रोत इनसे लगे होते हैं, इन्हीं दुग्धश्रोतों के मुख पर प्रथम दुग्ध बीज घनी[भूत] होकर अन्तर्धि (डट्टी) बनाते हैं, पश्चात् उत्तरो[त्तर] ऊपर की ओर जमा होने लगते हैं, स्तन मंडल[से] स्तन्याशय तक प्रसव काल पर्यन्त यह क्रिया [पूर्ण] हो जाती है।

तस्माद्गर्भिण्यः पीनोन्नतपयो धरा भवन्ति।

प्रसवान्तर यह क्रिया बन्द हो जाती है, [और] माता के सद्यः समुद्भूत आहार रस से दुग्ध [बीज] मिलकर सत्वर ही पयः सृजन कार्य करते हैं।

रस प्रसादो मधुरः पक्वाहार निमित्तजः।
कृत्स्न देहात्स्तनौ प्राप्तः स्तन्य मित्यमिधीयते॥

पीयूष —

स्तनवृन्तों में प्रथम संचित दुग्धबीजों द्वारा प्रारम्भिक पयः सृजन होता है, उसका नाम पी[यूष] है, अभिनव शिशु का प्रथम पेय यही पीयूष है, [इसे] अर्भकामृत भी कहते हैं, इसमें वह सब गुण वि[द्य]मान है जिनकी बच्चे को आहार तथा औषधि[रूप] से आवश्यकता होती है साधारण दुग्ध अ[पेक्षा] इसमें चीनी और पानी का भाग कम रहता [है] स्निग्धांश और क्षार अधिक अर्थात् प्रतिशत ६. उपमेद २३.७० तथा क्षार १.६ होते हैं, साधारण दु[ग्ध] में पानी प्रतिशत ८८. २० स्निग्धांश ३.३० च[ीनी] ६. ८० प्रोटीन १.५० और क्षार ०.३० [प्रतिशत] होते हैं।

पाश्चात्य विश्लेषकों ने इस पीयूष कोलस्ट्[रम] चीनी पानी की न्यूनता तथा क्षार प्रोटीन की आ[धि]क्ता से इसे अनुपादेय मान कर बच्चे के लिये पेय हेय माना है, सचमुच वे अज्ञानवश इस [...]

[शेष पृष्ठ ६०८ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद में शिरावेध की चमत्कारिता।

ले०—आयुर्वेदाचार्य श्री. पं. रामाधार जी मिश्र, टिकरिया, सहजनवां, गोरखपुर।

आयुर्वेद शास्त्र में शिरावेध की कला एक अद्भुत चमत्कार का विषय है। इस शिरावेध से अनेक प्रकार के रोगों की शान्ति प्रकार बताया गया है। यद्यपि शिराज्ञान प्रणाली चिकित्सा-क्रम शास्त्रकारों ने अति दुरूह बताया है तो भी शिराज्ञान में वे कितने विज्ञ थे यह उनकी शास्त्र-पद्धति से पता चलता है। चरकाचार्य ने कहा है—"शिरासु शिक्षितौनास्ति चला एता स्वभावतः" शिरायें चल हैं अनियमित स्थिति शील होने से इनका ज्ञान करना बड़ा दुष्कर कार्य है अतः शिरावेध वे ही करें जो इसमें अच्छी तरह दक्ष तथा भ्यस्त हों। अन्यथा इससे भयङ्कर प्राण घातक कष्ट उत्पन्न हो जाता है बल्कि प्राण भी निकल जाता है। यह उपदेश देते हुए भी चरकाचार्य ने अनेक स्थलों में शिरावेध की शिक्षा दी है और सुश्रुताचार्य तो और भी आगे बढ़े हैं। उनके शासन में तो स्थल २ पर शिरावेध से रोगों की शान्ति की शिक्षा दी गई है। यही नहीं आयुर्वेद के कोई भी प्राचीन ग्रन्थ शिरावेध की उपक्रम प्रणाली से खाली नहीं है, आयुर्वेद काल में यह कला इतनी उन्नति पर थी कि आयुर्वेद वेत्ता बहुत से रोगों को इसी से अच्छा करते थे। यही कारण है कि शिरावेध शमनाई रोगों के औषधि प्रकार में कहीं २ न्यूनता हो गई है। इसका उदाहरण हम अधिक न देकर केवल शिरःशूल का उदाहरण देते हैं शिरःशूल की हमारे आयुर्वेद शास्त्र में कोई ऐसी शीघ्र लाभदायी औषधि नहीं है जैसा कि एलोपैथी में; यद्यपि शिरःशूल अत्यन्त कष्टदायी रोग है। इसका कारण यही है कि शिरावेध से यह शिरःशूल निर्मूल करने की विधि उन्हें खूब ज्ञात थी। शिरावेध करते ही रोग एकाएक शमन हो जाता था। परन्तु दुर्भाग्य वश ये क्रियायें आज लुप्तप्राय हो गई हैं। यदि कहीं कुछ है भी तो वे ऐसे अनभिज्ञों के पास हैं जिनके परछांई से भी लोग दूर रहना चाहते हैं। ऐसी दशा में कौन उनसे शिरावेध करा सकता है। आज कुरंड या अन्त्र की चिकित्सा में सूचीवेध या ऑप्रेशन की ही प्रधानता है। इस विषय में लोगों की धारणा है कि वैद्यक में इसकी कोई अच्छी औषधि नहीं है। यही कारण है कि आज शतप्रतिशत इस रोग के रोगी डाक्टरों की शरण में जाते हैं। आज मैं इस रोग की एक ऐसी सद्यः फलवती प्रक्रिया वैद्यक प्रेमियों के समक्ष रखता हूं कि जिससे यह पता चलेगा कि वैद्यक में कितने अमूल्य योग पड़े हुए हैं किन्तु ज्ञाताओं की कमी से वे लुप्तप्राय से हो गये हैं। कुरण्ड वृद्धि "अन्त्रावतरण" पर वैद्य दर्पण में यह श्लोक मिला—

यः पित्तदोषेण कुरण्ड रोगो भवेद्दिशो दक्षिण मुक्तभागे।
ततोर्ध्व भाश्रवणस्थं वेधो वामस्य कुर्यात् परतः परत्र ॥

इस श्लोक पर मैं बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से विचार करने लगा। हृदय में बात बैठ गई कि वास्तव में बात सही है किन्तु इसका गुरु कौन हो, गुरुओं का तो अभाव ही है। उपेक्षा न करके शास्त्रकार की इस पद्धति पर विचार करते २ यही परिणाम निकाला कि अवश्य कर्ण के उर्ध्व भाग में कोई ऐसी शिरा है जिसका सम्बन्ध अन्त्रगत उस शिरा से है जो कि दोषवाही होकर आंत को उतारने में प्रधान है। अथवा स्वतन्त्र वही शिरा है जोकि स्वयम् आंत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर ऊपर कर्ण से ऊपरी हिस्से से होती हुई मस्तिष्क में बंधी है। वही सिरा दोषाभिभूत होकर आंतों को अण्डकोषों में उतार देती है जिससे असह्य वेदना होती है, इतना ही नहीं कितने रोगियों का इसी से प्राणान्त भी हो जाता है। इस महाभयानक रोग से बचने के लिये कर्णवेध कराना अतीवोपकारक है। इस कर्णशिरा वेध के ज्ञाता यहां एक यवन महाशय हैं जो कि पढ़े लिखे नहीं हैं किन्तु इस क्रिया में सिद्ध हस्त हैं। उनके यहां के शिरावेधी व्यक्तियों से मैं बराबर पूंछा करता हूं कि तुम्हें लाभ है या नहीं, यदि है तो कितना? इस प्रश्न के उत्तर में वे मुझे यही कहते हैं शतप्रतिशत लाभ है। जब से शिरावेध हुआ तब से एक बार भी हमारी आंत नहीं उतरी।" मेरे गांव के दो ऐसे रोगी थे जो कि आज दो वर्ष से पूर्ण स्वस्थ हैं और इसी तरह कई व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें मैं शिरावेध से पहिले भी जानता था अब भी जानता हूं उन्हें पूर्ण लाभ है। अब जिन महाशयों को इसकी जानकारी अभीष्ट हो वे लिखें, मैं उनका पता लिख कर भेज दूं। शिरावेध की फीस कुछ नहीं लगती। किन्तु ये महाशय कहीं जाते नहीं हैं इसके घर पर ही आने की आवश्यकता होती है।

[पृष्ठ ५०६ का शेष]

को न समझ सके कि बच्चे के लिये आदि पेय में वपु पोषण के अतिरिक्त कोष्ठ शोधन के लिये इसी अनुपात से इन चीजों की आवश्यकता होती है, इस पीयूष पान से बच्चे को आवश्यकतानुसार कुछ दस्त आजाते हैं। प्रारम्भिक कोष्ठ शुद्धि की यह स्वाभाविक जन्म घुट्टी है। पाश्चात्य डाक्टरों के अन्धभक्त एजेंट (प्राच्य डाक्टर) जब कोष्ठ शोधन की आवश्यकता समझते हैं तब कोलट्रम के बजाय कास्ट्रायल का उपयोग करा देते है, इसे मैं मूर्खता न कहकर भ्रम जन्य भय ही कहती हूं। इसे निचोड़ कर फेंक देना उचित नहीं है, स्तनपायी सहस्रों योनियां के जन्तु इसे यथावत पीते हैं। जिससे उनके बच्चों के स्वास्थ्य में एक अद्भुत उन्नति दृष्टिगोचर होती है, और सभी हट्टे कट्टे स्वस्थ रहते हैं। उनमें ऐसे डाक्टरों का प्रादुर्भाव नहीं है, यह उनका सौभाग्य है। यह पीयूष (अर्भकामृत) अभिनव शिशु को तमाम संक्रामक रोगों से बचाता है। बच्चों की मृत्यु के मुख्य कारण श्वासोच्छ्वास संस्थान के रोग यथा न्युमोनिया, कम्हेड़ा, अतिसार, ज्वर, शीतज्वर चेचक, खसरादि होते हैं, अर्भकामृत शरीर में स्थित इन रोगों के उपादान कारण को ही नष्ट कर देता है।

पोस्ट पार्सल का—

पोस्टेज फ्री

कर दिया गया है। नियम अङ्क ८ के टाईटिल के चौथे पृष्ठ पर ध्यान पूर्वक देखियेगा और इस नियम से पूरा-पूरा लाभ उठाइयेगा।

व्यवस्थापक—
धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजयक्ष्मा चिकित्सा

—लेखक—
वैद्य विनायकराव जी बापट L.A.M.S. आयुर्वेद,
तालगुप्पा, शिवमोग्गा मैसूर स्टेट।

प्लूरसी पर

रोगी की आयु ४० वर्ष, करीब दो वर्ष से बीमार था। कई बार पानी निकाला गया था। लेकिन लाभ नहीं हुआ। X-ray कराने पर मालूम हुआ कि पानी पांचवे स्थान तक चढ़ा है।

इस अवस्था में आयुर्वेद चिकित्सा प्रारम्भ हुई, पहले हफ्ते में षट्गुण बलिजारित रस सिंदूर २ ग्रेन, शहद के साथ दिन में दो बार। एक हफ्ते के बाद X-ray कराया, मालूम हुआ कि पानी का प्रमाण कम है।

दूसरे हफ्ते में वर्धमानपिप्पली योग (धन्वन्तरि के राजयक्ष्मांक में लिखी गई विधि के अनुसार) प्रारम्भ की। फिर रससिंदूर तीन हफ्ते तक चालू हुआ। इस समय में पानी क्रमशः कम होता गया। वर्धमान पिप्पली योग के पहले और बाद में रससिंदूर प्रयोग के परिणाम को देखने से मालूम हुआ कि बाद का परिणाम पहले से शीघ्र था। इस से निश्चय हुआ कि सब से पहले हर एक राजयक्ष्मा रोग में वर्द्धमान पिप्पली देना बहुत लाभदायक होगा। बाद कोई भी चिकित्सा करना सुलभ होता है। चिकित्सा करीब तीन महीने तक चालू रही। इस समय में पानी बिलकुल कम हुआ। स्यनिटोरियम के मुख्य डाक्टर के मतानुसार वह भाग Consolidate हुआ था।

राजयक्ष्मा ज्वर में—

रोग की आयु ३३ वर्ष, करीब दो बरस से बीमार है। बांये श्वासकोष के नीचे के भाग में रोग का असर देखा गया। रोज शाम के समय बुखार ९९.० तक चढ़ता था। हवा भरने का Artificial Pneumothorax की क्रिया की गई। पर कोई फायदा नहीं मालूम हुआ। रोगी बिछौना पर सोते रहने का आदेश दिया गया था। तो भी बुखार नहीं उतरा। इस अवस्था में आयुर्वेद-चिकित्सा शुरू हुई।

रोगी को सबसे पहिले विधि के अनुसार वर्द्धमान पिप्पली दिया गया, इसीसे दूसरे हफ्ते में रोगी को आराम मालूम होने लगा। जीर्ण शक्ति बढ़ गई, बुखार किसी दिन ९८.५ और किसी दिन ९९ डिग्री से कुछ कम तक चढ़ता था। रोगी पहले से उत्साही था। तीसरे हफ्ते के बाद बुखार एक दम उतर गया, अब शाम का उष्णतामान ९८.५ था। कई दिन के बाद और एक बार वर्धमान पिप्पली दिया। पर बुखार वैसा ही रहा। दूसरी बात यह है कि रोगी का रोज एक-दो मील तक फिरने को अनुमति देने पर भी बुखार ९८.५ से ज्यादा नहीं हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी रस।

लेखक—श्री० पं० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी बी० ए० आयुर्वेदाचार्य।

कुमारी अर्थात् ग्वारपाठा में मुख्य कार्यकारी भाग उसका रस ही होता है। यह अपने विशेष क्षोभकारी प्रभाव से शरीर में विकृत श्लेष्मल संचित पदार्थ को पतला कर स्रोतों द्वारा या यथा-योग्य निकट के मार्ग से (उदरस्थ हो तो मुख मार्ग से, आंत्रस्थ हो तो गुदामार्ग से, तथा मांसाश्रयी हो तो प्रस्वेद के मार्ग से) बाहर निकाल फेंकता है। कफनाश, गुल्मनाश, प्लीहा या यकृत वृद्धिनाश ग्रन्थिनाश आदि कार्यों में कुमारी की सफलता का यही रहस्य है। ज्वर, त्वग्विकार अर्थात् क्षुद्र कुष्ठ आदि में भी कुछ प्रमाण में कफ के विकृति होती ही है इसीसे कुमारी रस के उपयोग द्वारा स्वच्छता एवं त्वगान्तर्गत स्रोतसों में प्रसन्नता आकर रोग नष्ट होते हैं। ध्यान रहे कुमारी रस में जो पीतवर्ण का श्लक्ष्ण पदार्थ रहता है वही अपने उग्र, तीक्ष्ण एवं भेदी गुणों से क्षोभ को उत्पन्न कर, कड़े ग्रंथि-युक्त भाग को पतला कर, स्रोतमार्गों को खोल कर यथेष्ट लाभ पहुँचाता है।

उपयोग—

जिस उपाय से उक्त पीत-वर्ण द्राव अधिक प्रयोग में आ सके वही उपाय श्रेयस्कर है। इस दृष्टि से ग्वारपाठा का कच्चा रस अधिक गुणदायक है। यद्यपि कच्ची अवस्था में यह रस कम निकलता है किन्तु वह अधिक गुणकारी होता है। विशेषतः गुल्म, ग्रंथि आदि पर यही रस उत्तम लाभकारी है। यह रस उग्र एवं कड़ुवा होने से किसी २ को वमन होना संभव है। अतः ऐसी नाजुक प्रकृति वालों को ग्वारपाठा को बफ़ा कर रस निकाल पिलाना चाहिये। बफ़ारने से या आग पर सेंकने से यद्यपि इस रस के गुणों में न्यूनता आती है। तथापि बहुतांश में गुण क़ायम रहते हैं। उर में छाती में, आमाशय में कफ़ की अत्यधिक वृद्धि के कारण जब गुरुता या घनता आजाती है, तब यही कच्चा रस सेवन कराने से क़ै के द्वारा कफ़ निकल जाता है।

हम देखते हैं कि ताजे ग्वारपाठा के रस में जो त्वरित गुणदायक शक्ति है वह उसके द्वारा बने हुये आसवादि कल्पों में नहीं रहती। उदाहरणार्थ - कुमारी आसव यह एक चिरस्थायी कल्प है। किंतु इसमें कुमारी के स्वाभाविक गुण विशेषांश में नष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर अन्य द्रव्यों के गुण आ जाते हैं। इसमें एक प्रकार की कुछ प्रमाण में अम्लता उत्पन्न होने के कारण, कुमारी रस का विशिष्ट महत्वशाली गुण विशेष प्रमाण में नहीं तो कुछ प्रमाण में अवश्य ही नष्ट हो जाता है। अपने गंध से क्षोभक क्रिया करने वाला होते हुए भी शीत वीर्य होना, अथवा शारीरिक विकृत श्लेष्मल भाग को पिघलाने का कार्य करते हुए भी वीर्य में शीत बने रहना, किंचित् भी दाहक न होना यही वह विशेष गुण है जो कि नष्टप्राय हो जाता है।

कुमारी रस का संयोग शरीर में रक्त के साथ होने पर, उसका कार्य दाहक स्वरूप का नहीं होता। अर्थात् विकृत पदार्थों में क्षोभ को उत्पन्न कर भेदन कार्य करने वाला कुमारी रस रक्तादि शुद्ध एवं अविकृत पदार्थों के लिये क्षोभक या दाहक नहीं होता। यही इसमें एक विशेषता है। इसीलिये इसे भेदीगुण विशिष्ट कहते हुये शीत वीर्य, पौष्टिक, रसायन, शक्तिदायक, विष [तीव्र दाहक द्रव्य] नाशक, वातनाशक, नेत्रों के लिये हितकारी इत्यादि कहा गया है, देखिये—

'कुमारी मेदिनी शीता तिक्ता नेत्र्या रसायनी।
मधुरा बृंहणी बल्या वृष्या वात विष प्रणुत्॥
(भा० प्र०)

अस्तु, जैसा कि हमने ऊपर बतलाया है कुमारी आसव में कुमारी रस का यह गुण कुछ प्रमाण में कम हो जाता है, साथ ही उसका वातनाशक गुण भी न्यून हो जाता है। ताजे कुमारी रस के अभाव में ही इस आसव से किसी प्रकार कार्य लिया जा सकता है।

कुमारी रस के विशेष अनुभविक प्रयोग—

(१) श्वास, कास, हिक्का आदि कफ विकृति से उत्पन्न रोगों पर—यह रस ६ माशे और उत्तम शहद ३ माशे एकत्र कर (यह एक मात्रा हुई) दिनमें दो बार, प्रातः सायं चटाने से कै के द्वारा कफ झड़ जाता है और छाती हलकी हो जाती है। छोटे बालकों के लिये लगभग १ मासा रस काफी है। इसी प्रयोग से बच्चों के हब्बा डब्बा, आंकड़ी आदि विकार शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

(२) मलावरोध, उदरग्रंथी, गुल्म, उदर, यकृत, और प्लीहा पर—ग्वारपाठा को सेंक कर निकाला हुआ रस १ तोला और असली शहद ६ माशे एकत्र कर प्रातः तथा इसी प्रकार सायं सेवन कराने से दस्तों के द्वारा विकार दूर हो जाते हैं। रोगी की प्रकृति के अनुसार उक्त प्रमाण में कम ज्यादा किया जा सकता है। छोटे बच्चों के आध्मान (अफारा), यकृत प्लीहादि विकारों पर भी यह प्रयोग परम हितकारक है।

(३) स्त्रियों के गर्भाशय सम्बन्धित विकार—आर्तव स्राव ठीक २ न होना, आर्तवशूल, गर्भाशय की शोथ, ग्रंथि, रक्तगुल्म आदि पर—यह रस १ तोला, उत्तम शहद ६ माशे और हल्दी चूर्ण ४ रत्ती एकत्र कर (यह एक मात्रा हुई) प्रातः-सायं सेवन करावें। ७ दिन में पूर्ण लाभ होता है।

(४) जीर्ण ज्वर, अजीर्ण, मलावरोध, और प्लीहा यकृत की किंचित् वृद्धि तथा जीर्णज्वर के उपद्रवों पर—यह रस १ तोला मिश्री ६ माशे और हल्दी चूर्ण ४ रत्ती एकत्र मिश्रण प्रातः-सायं इसीप्रकार सेवन कराने से ११ दिन में पूर्ण लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूषाकर्णी बूटी ।

लेखक—श्री० पं० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी बी० ए० आयुर्वेदाचार्य ।

यह प्रायः गढ़वाल, टेहरी आदि पहाड़ी प्रांतों में सुलभता से पाई जाती है। इसकी बेल चौमासों में पैदा होती है तथा १ फीट से ४ फीट तक लम्बी फैलती है। एक बेल में अनेक शाखायें चारों ओर फैल जाती हैं। इसके पत्ते चूहा या मूसा के कान जैसे गोलाई युक्त तथा विषमवर्ति होते हैं। मूल में असंख्य सूक्ष्म २ जड़ें भूरी सफेद कुछ लाल सुतली के समान होती हैं। पत्तों के ऊपर का रंग गहरा हरा और नीचे का साधारण हरा होता है। किसी किसी पत्ते पर बैंजनी रंग को छटा सी होजाती है। पत्तों में चिकनाहट और उग्र गंध होती है तथा स्वाद में चरपरे होते हैं। पत्तों की डण्डी श्वेत होती है। इसके फूल पीले वर्ण के घंटाकर छोटे २ होते हैं। फल चना जैसे गोल फीके नीले वर्ण के होते हैं, पकने पर इनका वर्ण बदल जाता है वे भूरे या धूसर वर्ण के हो जाते हैं।

औषधि कर्म में इसके पत्तों सहित पंचाङ्ग लिया जाता है। गुण में यह प्रमेह हर पौष्टिक, मूत्र-शोधक, विषहर, शोथघ्न, उदरशूल, उरक्षत, रक्त-विकार आदि नाशक है।

प्रमेह पर—

देखिये हमारा लेख 'प्रमेह चिकित्सा' इसका साधारण शर्बत तैयार कर प्रमेह रोगी को प्रातः सायं पिलाते रहने से भी विशेष लाभ होते देखा गया है।

मूत्रावरोध पर—

इसका क्वाथ और यदि ताजी मिले तो स्वरस पिलावें, और इसके कल्क का पेडू पर लेप करें।

वात व्याधि पर—

इसके महीन चूर्ण को रास्नादि क्वाथ के साथ सेवन करावें।

चेचक (माता) पर

यदि चेचक निकलते ही इसका क्वाथ या स्वरस पिलाया जाय तो उसका जोर घट जाता है और रोगी को शांति प्राप्त होती है।

बालकों की खांसी, श्वास और उदर रोगों पर

इसका क्वाथ उचित मात्रा में पिलाने से अपूर्व लाभ होता है।

नपुंसकता से पीड़ित-

रोगी यदि अनेकों दवा सेवन कर निराश हो गये हों तो हमारे "नपुंसकत्व हर सैट" का व्यवहारकर लाभ उठावें। इसमें मकरध्वज वटी तथा कामदीपक तिला और क्लीवत्व हर पोटली ३ दवाएं २० दिन सेवन योग्य हैं। मूल्य १ सैट ६)

पता—धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिरःशूल के लिये—

(शिरःशूलारि कल्पित)

गोदन्ती	२।। तोला
अकीक स्वर्ण माक्षिक यशद भस्म	
—प्रत्येक १-१ तोला	
पीपलामूल	१।। तोला
मधुयष्टी चूर्ण	१।। तोला

विधि—कूटने-पीसने वाली बस्तु कपड़-छन करके त्रिफले के क्वाथ की तीन भावना देकर ४-४ रत्ती की गोली बनाकर रखें।

उपयोग सब प्रकार के शिर:शूल में घृत मिश्रित दुग्धों से देना विधिवत् अनन्त वात (ग्लोकोमा) अर्धावभेदक में अच्छा है। साथ में यदि षट्-बिन्दु तैल की ५-७ बूंद नाक में रात्रि को सोते समय डालें तो विशेष लाभ होगा।

पित्त जन्य हो तो आमलकी २ तोला पानी में भिगोकर रखें। ३-४ घण्टे के बाद उनको सूखा ही घोटकर लेप जैसा बनावे, फिर सिर पर गाढ़ा २ लेप करे। यदि वात कफ जन्य शूल हो तो अजवाइन को कूट--पीसकर पानी में बांधकर गर्म २ लेप करे। बड़ा लाभ होता है।

—कविराज पं० नन्दलाल शर्मा आयु० कांदीवली।

श्वास नाशक—

—श्वास रोगी को एक पत्ता मदार (आक) का लाकर उसे गेहूं, जवारी अथवा बाजरे के आटे के साथ बेलकर उसकी रोटी बनावें और नित्य प्रति उस रोटी को खावे। इस प्रकार यह प्रयोग ४१, ३१ या २१ दिन पर्यन्त करने से श्वास रोग समूल नष्ट होता ह। किसी-किसी को इस क्रिया के करने से किंचित उष्णता प्रतीत हो तो घृत का सेवन विशेष करने पर शांत हो जाती है। श्वास-रोग नष्ट हो जाने के पश्चात् शरीर हृष्ट-पुष्ट होकर श्वास वाहिनियां बलवान हो जाती हैं।

नेत्र-बिन्दु—

—२० तोले विशुद्ध गुलाबजल में रसोत, मिश्री २-२ माशा, भीमसैनी कपूर १।। माशा, अफीम २ रत्ती, फिटकरी का फूला ४ माशा, नीलाथोथे का फूला ४ रत्ती को बारीक पीस कर उपरोक्त गुलाबजल में मिला दे और भली भांति नित्य ३ दिन तक हिलावे पश्चात् फिल्टर पेपर अथवा बारीक फलालैन के कपड़े से ५ बार छान कर एक शीशी में मजबूत कार्क लगाकर सुरक्षित रखें। इसमें से दो-दो बूंद सुबह-शाम या रात्रि को सोते समय नेत्रों में डालने से यह सर्व प्रकार के नेत्र रोगों में उपयोगी है। उस नेत्र-बिंदु से कई दिनों का रुका हुआ अभिष्यन्द निकल जाता है तथा नेत्रों की दृष्टि बढ़ती जाती है।

यदि गुलाबजल असली न मिले तो बरसात के दिनों में जो बर्फ (ओले) पड़ती है उसे स्वच्छ जल से धोकर कांच या चीनी के बर्तन में सुरक्षित रखें और उसीमें पहिले बताये अनुसार औषधियां डाल कर "नेत्र-बिन्दु" तैयार करे, यह भी नेत्ररोगों को अत्युत्तम औषधि है। दुखती आंख को एक दो दिनों में ही ठीक कर देता है।

—वैद्य खेमराम शर्मा छांगाणी आ०वि०, आर्वी (वर्धा)

विषम ज्वर के लिये—

सफेद संखिया	१ तोला
समुद्रफेन	१ छटांक
फिटकरी सफेद	आध पाव

विधि—दो मट्टी के प्याले, एक प्याले में नीचे आधी स्फटिका पहले पीस कर डालें, उस पर आधी समुद्रफैन पीस कर डालें, फिर संखिया की डली रखदें, उस पर समुद्रफैन पीस कर रखें और फिर स्फाटिका पीसकर रखदें। ऊपर दूसरा प्याला लगा कर दोनों का मुंह मट्टी से ठीक बन्द करें ताकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुआं न निकलने पावे, चूल्हे पर चढ़ाकर बेरी की २ लकड़ी की आंच १ घंटे तक दें। अन्त में पांच मिनट की आग ज़रा तेज़ कर दें। अब नीचे जो कोयले आग के जमा हों वह ऊपर रख दें, नीचे से आग देनी बन्द करदें, ठण्डा होने पर संपुट को खोलकर बारीक पीस कर शीशी में सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—१ से २ माशा तक।

गुण-नित्य प्रति आने वाला अथवा दूसरे दिन तीसरे दिन आता हो, भूख मन्द हो गई हो अथवा साथ में मल वेग से पतले दस्त की भांति आता हो, अरुचि हो ज्वर के कारण दुर्बलता आगई हो, शरीर का रंग पीला होगया हो विषम ज्वर के कारण तापतिल्ली की प्रथमावस्था है। यह दवा क्वनीन से भी ज्यादा लाभप्रद है।

पथ्य—दूध जितना पीवें हज़म होगा।

—कविराज हरिशंकर टण्डन रसा० शास्त्री, अकबरपुर (फैजाबाद)

कासान्तक बटी—

निरुत्थ बंगभस्म	१ तोला
छोटी पीपल	२ तोला
हरड़ की छाल	३ तोला
बहेड़े की छाल	४ तोला
अडूसे की पत्तियां	५ तोला
भारंगी	६ तोला

—सबको अलग २ कूट-पीस छानलें। फिर बबूल की छाल के काढ़े में घोटें, १२ घन्टे घुटाई करने के बाद फिर एक बार वही काढ़ा डाल घोटें। तीसरे दिन उसी काढ़े में घुटी दवा में शहद डाल २ कर १२ घंटे तक घोटें। चौथे दिन फिर शहद में १२ घन्टे घोटें और जंगली बेर के समान गोलियां बनालें।

गुण—खांसी और श्वास में यह दवा रामबाण की तरह काम देती है।

मात्रा—१-१ गोली सुबह शाम सेवन करने से श्वास, खांसी और क्षय, रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

अम्ल पितान्तक लोह—

—रससिन्दूर, ताम्र भस्म, लोह भस्म ६-६ माशे और हरड़ का चूर्ण १॥ तोले मिलाकर रखलें।

मात्रा-१ माशा। अनुपान-शहद, इससे अम्लपित्त रोग शीघ्र नाश हो जाता है।

— पं० रामदेव शर्मा, नवजीवन औषधि भंडार, छोटी खाटू (मारवाड़)

नासूर का प्रयोग —

गुप्रसिद्ध प्रयोगांक पृष्ठ संख्या १५७ पर नासू… (भगंदर) प्रयोग छपा है। किन्तु अनुभव करने से उसकी निर्माण विधि बहुत ही असंगत लिखने में आगई है, ऐसा प्रतीत होता है।

प्रयोग निम्न द्रव्यों से तैयार होता है—

तबकी हरताल	श्वेत मल्ल (संखिया)
रस कपूर	— प्रत्येक १-१ तोला

—इन तीनों की मोटी २ डली लेकर किसी सफे… कपड़े में रखकर पोटला बनाना, तदनन्तर १… तोला लाल फिटकरी को महीन पीसकर ए… हांडी में पिसी हुई फिटकरी में से आधी अर्था… ५ तोला मिट्टी की हांडी के पेंदे में बिछा… और ऊपर दवा की पोटली जमा देना। दवा… की पोटली के ऊपर अवशेष बची हुई फिटकरी… पोटली पर डालकर पोटली को भली-भांति… बन्द कर देना और हांडी पर एक सकोरा… लगा देना। हांडी को कोयले की अत्यन्त मन्द… आंच पर रखना, दो घण्टे की मन्दाग्नि से… फिटकरी गलकर जब फूल जावे तब दवा… तैयार हो गई ऐसा समझना।

सावधान—

इस दवा के तैयार करने में निर्माता सावधान…

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से काम करे। अधिक तीव्र अग्नि होने से दवा उड़ जावेगी और शेष फिटकरी मात्र रह जायगी। क्योंकि ये तीनों द्रव्य हरताल, संखिया और रस-कपूर अत्यन्त ही उड़नशील हैं। अत्यन्त ही कम अग्नि होने से फिटकरी का फूला बराबर नहीं होने पाता है और द्रव्यों के कच्चे रहने की आशंका रहती है। द्रव्य कच्चे रहने से रस कपूर सरीखी अपायकर वस्तु रोगी के लिए हितकर न होकर विपरीत इसके हानिप्रद सिद्ध होंगी। अतः औषधि निर्माण में सावधानी की विशेष आवश्यकता है।

विशेष—

यह उपर्युक्त प्रयोग खाज, पामा, विसर्प, गलित कुष्ठ, भगंदर और नासूर में जिस प्रकार सद्यः फलदायी सिद्ध हुआ है ठीक उसी प्रकार यह कैंन्सर की भी एक उत्तम औषधि सिद्ध हुई है। आज तक केन्सर के लिए सिवाय औपरेशन के ऐलोपैथी में कोई चिकित्सा नहीं है। औपरेशन भी सर्वत्र नहीं किन्तु कुछ ही इने-गिने स्थानों में होता है। किन्तु आयुर्वेद का यह छोटासा प्रयोग बड़ा ही चमत्कार दिखाता है। अधिक प्रशंसा हम न करके केवल इतना ही कह देना चाहते हैं कि वैद्य बन्धु इसका अनुभव द्वारा फल देखें।

—श्री. पं. भगवानदास शर्मा
नईशुक्रवारी, नागपुर।

"आरोग्य-वर्धिनी" और मेरा अनुभव

लेखक—डा० एन. जी वाघ, तार बाजार, काटोल सी० पी०

द्रव्य—

पारद	गंधक
लोह भस्म	अभ्रक भस्म
ताम्र भस्म	—पांचों समभाग
त्रिफला	२ भाग
शुद्ध शिलाजीत	३ भाग
शुद्ध गुग्गुल	४ भाग
चित्रकमूल चूर्ण	४ रत्ती
कुटकी चूर्ण	सबके बराबर

—कडुए नीम के पत्तों के रस में घोटकर २ से ४ रत्ती की गोली बनालें।

यह दवा यथा नाम तथा गुण वाली है। इस रस का परिणाम शरीरस्थ अवयव समूह पर होता है।

आरोग्य-वर्धिनी तिक्त रस है। विपाक—कटु, उष्ण वीर्य विषघ्न, शोथहर और धातु-पो... वाली है।

इस दवा का कार्य फुफ्फुस, फुफ्फुसावरण में (प्लुरा) हृदय, यकृत, प्लीहा, पक्वाशय आदि पंच-नेंद्रिय, ग्रहणी, रसधातु आदि पर बल्य शामक होता है।

फुफ्फुसावरण के तीव्र शोथ में इस दवा का अच्छा उपयोग होता है। फुफ्फुस में पुराना शोथ होने पर श्वासोछ्वास से आवाज सुनाई नहीं देती या कम आवाज आती है; कफ गाढ़ा और सूखा होता है, ऐसे प्रकार के पुराने रोगों में भी आरोग्य वर्धिनी अति लाभदायक दवा है। अगर विकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ गया हो तो आरोग्य वर्धिनी के साथ भारंगी, बच, अडूसा इनका प्रयोग करके ऊपर से कोई शोथघ्न लेप लगाने से बहुत फायदा होता है। फुफ्फुसावरण में ज्वर, वेदना शूल होने पर तो गुग्गुल शिलाजीत ये संयोग शोथ-हरण करता है। परन्तु अति पुराने रोग में सर्वाङ्ग शोथ अगर हुआ हो तो आरोग्य वर्धिनी पुनर्नवा मंडूर के साथ देना चाहिये। यकृत-वृद्धि में भी आरोग्य वर्धिनी उत्तम दवा है।

पहिले यकृत वृद्धि होकर बादमें यकृत का संकोच होता है, यानी यकृत आकुंचन पाता है, फिर र्भाङ्ग शोथ होकर जलोदर रोग होता है,ऐसे रोगी लता ग्य वर्धिनी, कांतलोह और सुवर्ण माक्षिक-विषम ७.और रोगी को केवल दूध पर ही रखा है। यह दवे दिया, रोगी पूर्ण दुरुस्त हुआ।

पथ्य—दूध जितना कृत और पित्तजन्य अनेक बीमारी
—कविराज ी का उपयोग फलदाई होता है।
अ ोकर जहां विद्रधि होना संभव
कासान्तक वटी—आरोग्य वर्धिनी का उपयोग करने
निरुत्थ बंगभस्म
छोटी पीपल
हरड़ की छाल
बहेड़े की छाल
अडूसे की

पर न विद्रधि हुआ न सूजन ही बढ़ी,ऐसा मुझे कई बार अनुभव हुआ है।

स्त्रियों के बीजकोष या अंडकोष में अगर शो हो तो आरोग्यवर्धिनी के साथ चन्द्रप्रभा वटी उपयोग करना चाहिये।

आंत्रपुच्छ विद्रधि में (Appendicitis) आ ग्य वर्धिनी और चंद्रप्रभा गुटिका का दीर्घकाल योग किया जाय तो शस्त्र-क्रिया करने का काम न पड़ेगा, ऐसा मेरा निश्चित मत है।

बार-बार के होना,शूल, ज्वर आदि में शुरू में आरोग्य वर्धिनी का उपयोग अवश्य करना चाहि

आरोग्य वर्धिनी में आम पाचन करने का गु गुण है, इसलिये बद्धकोष्ट (Constipation) इसका उपयोग निश्चित ही लाभदायक है।

यकृत, पक्वाशय, ग्रहणी दोष से पित्त वातजन्य कास, श्वास में आरोग्य वर्धिनी भांगरा कल्प से निश्चित फायदा होता है।

कुष्ठ रोगियों के लिए तो आरोग्य-वर्धिनी अ तुल्य दवा है।

मल्ल चन्द्रोदय

"मल्लादि चन्द्रोदयमामनन्ति सर्वौषधेभ्योपिप्रध.नवीर्यम्।
विसूचि कासन्निपंतत्त्रिदोपान व्याधीनपाकर्तु मनन्यशस्त्रम् ॥"
—रसायनसार।

यह ज्वर, कास, श्वास, कफ नाशक और अग्नि बर्धक है। सन्निपात रोग में जब कफ की वृद्धि और शीत का प्रकोप हो तब इसके व्यवहार से तत्काल लाभ होता है। वात-व्याधि और नपुंसकता में अति लाभदायक है। औपसर्गिक सन्निपात (प्लेग) की अपूर्व महौषधि है। हमारे अनुभव में नपुंसकता एवं शीघ्रपतन के लिये उत्तम प्रमाणित हुआ है। मूल्य १ तोला ३५)

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य से परामर्श ।

प्रश्न नं० ४३—

श्रीयुत माननीय त्रिवेदी जी और अन्य विद्वानों से निवेदन है, कि एक बालक आयु १२ वर्ष का है जिसे कक्षा पहली में सन् ४७ में स्कूल में भर्त्ती किया वह अभी ३ की हिन्दी पढ़ रहा है, पढ़ने में बहुत कमजोर है भाषा शुद्ध लिख-पढ़ सकता है। केवल दिमागी काम गणित याद करने में भूगोल में बिलकुल हीन है दिन-दिन भर रटता है मगर याद नहीं होता। कृपाकर एक ऐसा प्रयोग प्रकाशित करिये जिसमें ५-७ औषधि से ज्यादा न हों और वे चीजें सब जगह प्राप्त हो सकें। —ग्राहक नं० ५४०६।

प्रश्न नं० ४४—

एक रोगी भगन्दर से ग्रसित है उसके गुदा-स्थान पर तीन व्रण हैं उनमें से पीव बहता रहता है। इसकी काफी चिकित्सा की गई, परन्तु ठीक नहीं हुआ। यदि आपरेशन के अतिरित कोई अनुभूत योग हो तो लिखें, तथा यह कोई मलहम आदि उपचार भी हो तो लिखें। —ग्राहक नं० २३८७।

प्रश्न नं० ४५

उम्र २० वर्ष। ३ वर्ष पूर्व ३ मास का गर्भपात हुआ तत्पश्चात् दो बार गर्भश्राव भी। अब निम्न शिकायतें हैं गर्भाशय का मुख टेढ़ा हो गया है, तथा उसमें सूजन भी है। लेडी डा० ने मुख छोटा होना भी बतलाया है और आपरेशन की सलाह दी है किन्तु मैं ऐसा नहीं कराना चाहता।

इनके सिवा मासिक धर्म नियमित समय पर या उचित परिमाण में नहीं होता। कमर, कोठा में बहुत दर्द होता है। पाचन शक्ति मंद हो गई है। भोजन ठीक नहीं पचता। रक्ताल्पता निर्बलता भी अब प्रतीत होती हैं। कभी कभी श्वेत प्रदर की शिकायत भी अब होने लगी है।

मैंने रजप्रवर्तिनी वटी, अशोकारिष्ट, प्रदरनाशक चिकित्सा, लवणभारकरादि चूर्ण आदि अनेक चिकित्सा की, कोई लाभ नहीं हुआ। मैंने स्थानीय कई वैद्य, डाक्टर, लेडी डाक्टरों से सलाह ली कोई उपयुक्त सलाह न जंची। हां! एक बात और भी है कि कभी-कभी पेशाब के पश्चात् तीव्र वेदना युक्त जलन कई घंटे होती है और थोड़ा-थोड़ा पेशाब होता है। इससे उन्हें बड़ा कष्ट होता है। लेडी-डाक्टर से पूंछने पर विदित हुआ कि गर्मी आदि कोई शिकायत नहीं है। हां तासीर कुछ गर्म अवश्य है यह शिकायत बहुत दिनों से है। आशा है उचित सलाह प्रकाशित कर मेरे अतिरिक्त अन्य रुग्णा महिलाओं को भी लाभ पहुंचा सकेंगे।

—श्री. पीतम्बरदत्त श्रीवास्तव।

प्रश्न नं० ४६—

मेरी माता जी का रसोई करते समय साड़ी का पल्ला आग में लगने से सीने आदि बदन का हिस्सा जल गया, और घाव हास्पीटल उज्जैन में रहने से आराम हो गया। परन्तु जलने के स्थान पर खुजली बहुत चला करती है, जिससे बेहद परेशान है, वैद्यगण इसके लिए अनुभूत प्रयोग लिखने की कृपा करेंगे।

—सूरजमल जोशी वैद्य, मु० पो० मक्सी।

प्रश्न नं० ४७—

एक औरत के आंख के कोये में २ साल से नाड़ी व्रण हैं आंपके धन्वन्तरि के लेख के अनुसार अपामार्ग की जड़ रविवार के दिन लाकर करीबन १५-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२० दिन तक डाला। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, कृपया कोई अन्य योग लिखने की कृपा करें।

—पं० रामविलास शर्मा।

प्रश्न नं० ४८—

मेरे भाई जिसकी उम्र २८ वर्ष है तीन चार वर्षों से उसे जुकाम बहुत शीघ्र ही होजाता है। डाक्टरों की राय है कि टान्सिल बढ़ गये हैं। औपरेशन (कटवाना) कराना होगा। क्या आयुर्वेद में कोई ऐसी अच्छी दवा है जिसके प्रयोग करने से बिना औपरेशन के टान्सिल ठीक होकर जुकाम अच्छा हो जाय। —रामनारायण चतुर्वेदी।

प्रश्न नं० ४९—

एक रोगी जिसकी आयु ३५ वर्ष है पहले तपेदिक (यक्ष्मा) हुआ था। औषधोपचार से ठीक हो गया। परन्तु उसके गण्डमाला रोग हो गया है। अनेकों आयुर्वेदिक यूनानी डाक्टरी दवा की गई। पर कोई लाभ नहीं हो रहा है एक स्थान पर ठीक हुआ तो दूसरी जगह ले ली। कुछ लोग तपैदिक रोग के दब जाने से यह रोग हुआ है ऐसा बतलाते हैं। कुछ असाध्य कह चुके हैं। दयालु वैद्य अपना मत (निर्णय) तथा सफल चिकित्सा भी लिखें। यदि गण्डमाला हो तो उसका तथा यक्ष्मा जन्य रोग हो तो उसका भी निर्णय तथा सफल प्रयोग लिखें।

—ग्राहक नं० ६८१।

प्रश्न नं० ५०—

श्रीमान् वैद्यवरों से निवेदन है कि वे कृपा कर लिखें कि बन्दा औषधि के रूप में कौन से रोग में दिये जाते हैं। निम्नलिखित बन्दों के गुण तथा ग्रहण करने का नक्षत्र भी लिखें।

(१) बांसा का बन्दा, (२) हाउबेर बन्दा, (३) शीशम बन्दा, (४) पीलखन बन्दा, (५) नासपाती का बन्दा (६) इत्यादि। इसके अलावा जिन वृक्षों के बन्दा के गुण जानते हों लिखने कृपा करें। —ग्राहक नं० ५६

प्रश्न नं० ५१—

मुझे सन् २४ से सन् ३१ तक के बूटी-दर्पण कुछ अंक चाहिये जिन सज्जनों के पास हों, वो धन्वन्तरि में अपना पता इस बात का दें कि उनके पास कौन २ सी फाइलें मौजूद हैं। या सीधा मेरे पते सूचित करें।

—श्री.शिवरत्नगिरि वैद्य, जोडिया हरद्वार।

प्रश्न नं० ५२—

विज्ञ महानुभाव बतलायें कि हिन्दी में ए[ेलो]पैथिक पुस्तकें किस स्थान से मिल सकेंगी। डाक्टरी शिक्षा (मेटेरिया मैडिका) डा० महेन्दुलाल लिखित जो पहिले सुख संचारक कम्पनी मथुरा मिलती थी, अब कहां से मिल सकेगी।

—पं० प्रभूदयाल शर्मा वैद्य, कां

प्रश्न नं० ५३—

एक ऐसे प्रयोग की आवश्यकता है जो बच्चे सोते में मूत्र होने को दूर कर सके। विज्ञ मह[ोदय] इसका कारण और निराकरण लिखें।

प्रश्न नं० ५४—

उत्तम काली स्याही बनाने का सरल प्र[योग] लिखने की विज्ञ महोदय कृपा करें।

—पं० ब्रह्मदत्त शर्मा वैद्यरा

प्रश्न नं० ५५—

सुप्त कुष्ठ (सुनबहरी) तथा बन्द-ऋतु (स्त्रियों मासिक-धर्म) के लिये उत्तम व सस्ता प्रयोग लि[खें]

—वैद्यरत्न त्रिवेणी प्रसाद

प्रश्न नं० ५६—

दन्त-रोग के लिये एक ऐसा प्रयोग चाहि[ये]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे दांतों की जड़ मजबूत हो जांय और हिलता दांत भी मजबूत हो जांय। यों तो अनेक प्रयोग निकलते रहते हैं परन्तु जो सच्चे भाव से बता सकते हों उनसे सादर निवेदन है कि वह मंजन या औषधि ४०-४५ वर्ष की आयुमें भी एक अद्भुत वस्तु प्रमाणित हो। दांतों का हिलना, मसूड़े फूलना, मसूड़े का संकोच आदि शर्तिया दूर होकर दांत मजबूत हो जांय। आशा है माननीय वैद्यवर अवश्य ध्यान देंगे। —ग्राहक नं० १५४।

प्रश्न नं० ५७ -

१—हेमनाथ रस—षट्गुण बलिजारित मकरध्वज स्वर्ण युक्त।

२—धन्वन्तरि भाग १३ अङ्क १ पृष्ठ ५१ पर लिखा हुआ योग नं० ३८।

३—धन्वन्तरि भाग १५ अङ्क ६ पृष्ठ ८६३ पर लिखा हुआ योग नं० ६१३।

४—धन्वन्तरि भाग २२ अङ्क ५ पृष्ठ ४३३ पर लिखी हुई पुस्तक भैषज्य मंजूषा।

५—धन्वन्तरि भाग २२ अङ्क ६ पृष्ठ ४७० पर लिखी हुई पुस्तक आरोग्य प्रकाश पंचम संस्करण।

वैद्य-समाज से निवेदन है कि नं० १-२-३ में लिखे हुए योग तैयार हों तो कीमत से इत्तला दें और नम्बर ४-५ में लिखी हुई पुस्तकें कहां से और किस कीमत पर मिल सकती हैं।

—ग्राहक नं० ६८३३।

प्रश्न नं० ५८—

दाल चिकना शुद्ध करने की सरल रीति क्या है?

—श्री० ताराचन्द लोढ़ा वै० भू०।

प्रश्न नं० ५९—

रसवत का शोधन किस प्रकार किया जाता है।

प्रश्न नं० ६०—

Allopatby वाले डाक्टर अपने टी. बी. के रोगियों को एक सूंघने के लिये दवा बतलाते हैं जो कि druggist वगैरह बना देते हैं उसमें शायद क्रियाजूट तथा यूकलिप्टस आयल और इनके अलावा भी कई चीजें पड़ती हैं जिससे कीटाणु मरते हैं और फायदा भी अच्छा करता है। अगर किसी सज्जन को इसका फार्मूल मालूम होवे तो इसकी पूरी २ दवाओं की संख्या और मात्रा के साथ हमें शीघ्र ही सूचित करें।

—पं० बनवारी मिश्र वैद्य, मऊनाथभंजन।

प्रश्न नं० ६१—

एक व्यक्ति शराब पीने का आदी है। हम उसे शराब पीना बन्द करवाना चाहते हैं क्या कोई ऐसी औषधि है, कि उसे खान-पान में दे दी जाय, जिससे वह शराब से हमेशा के लिए घृणा करने लग जाय। विज्ञ महानुभाव शीघ्र लिखें।

—वैद्य परशुराम जी।

प्रश्न नं० ६२—

आयुर्वेद के मतानुसार 'सीरप, अर्क, आदि रंगने की कोई ऐसी दवा है जो हर तरह के रङ्ग मिलाने पर भी किसी तरह की गंध या किसी तरह के स्वाद में भिन्नता न आने दे? अर्क एवं सिरप में रङ्ग का मिश्रण करने से भी स्वाद एवं रंग सदैव एक समान बना रहे और बोतलों में रङ्ग की चित्ती भी न लगे, जैसे—कुषालियन।

अतएव वैद्य-समाज में यदि किसी महानुभाव को इसकी पूर्ण जानकारी एवं अनुभूत सिद्ध हो तो धन्वन्तरी में प्रकाशित कराने की कृपा करेंगे।

—पं० व्रजबिहारी जी मिश्र।

प्रश्न नं० ६३—

एक ३८ वर्ष का पुरुष है उसकी बांई तरफ की छाती ५ वर्षसे भूलने लगी है। आज वह छाती षोडश वर्षीया स्त्री के समान हो गई है। इनमें पहिले कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्द था अब ज्यों-ज्यों छाती बढ़ती जाती हैं दर्द भी ज्यादा होता जाता है और बुखार भी रहता है। विद्वान् वैद्य रोगोत्पत्ति का कारण और चिकित्सा लिखें।

—ग्राहक नं० ७१६।

प्रश्न नं० ६४—

द्रोण-पुष्पी (गुमा) के पत्र के रस को पिलाने से कैसा भी सर्प के काटे हुए आदमी को आराम हो जाता है। इसीलिये कई लोग इसे नेवला की जड़ी कहते हैं। अनुभवी वैद्य अपना अनुभव लिखें।

पीपल के पत्ता को खिलाने से वो उसकी लकड़ी को दोनों कान में डालने से कैसा भी सर्प काटे हुए आदमी फौरन आराम हो जाता है।

क्या नागदमन को देखकर विषैला से विषैला सर्प भी अन्धा हो जाता है ? कृपया वैद्य महानुभाव अपने अनुभव लिखने की कृपा करें।

—पं. हरिदयाल पाण्डे, किरीतपुर।

प्रश्न नं० ६५—

मेरे एक मित्र जिनकी आयु ५५ वर्ष की है उनको निम्न कष्ट हैं। वैद्य बन्धु रोग का उचित निर्णय करते हुए चिकित्सा पद्धति से शीघ्र अवगत करावें। जिससे आर्त्त रोग से निवृत्त हो जाय।

मूत्र में कुछ जलन तो कभी २ पहले ही रहती थी यानी पेशाब कभी २ गरम और पीले रंग का आता था। एक मरतबा ५ साल पहले शर्दी लग कर दाहिनी ओर के गुर्दे के वर्म की तकलीफ हो गई थी। इससे १०-११ वर्ष पूर्व पेशाब में रस्मी जाने की तकलीफ हुई थी जो डाक्टरी चिकित्सा से आराम हुई।

तीन साल पहले गिरनार गए थे। दूसरे दिन पैदल धूप में उतरे और उतरते ही बहुत ठंडे पानी में स्नान कर लिया। उसके दो हफ्ता बाद ही पेशाब में जलन की तकलीफ बढ़ गई। चलने फिरने में दिक्कत और तकलीफ मालूम होती है। प्रातः उठने पर पेशाब साफ आता है लेकिन थोड़ा बहुत चलने पर मूत्र नली में (गुदा से लेकर नली के अन्दर के भाग में) खींचाव और दर्द मालूम होता है। घोड़े, ऊंट की सवारी में भी गुदा पर दबाव पड़ने पर नली में दर्द मालूम पड़ता है। कब्ज होने या भोजन करते ही एक मील भी चलने का काम पड़े तो पहले पेशाब पीले रंग का आता है और फिर खून के जैसा लाल रंग का आने लग जाता है और भारी दर्द होने लगता है। घंटे आध घंटे विश्राम करने पर या ठण्डा पानी पीने पर पेशाब की रंगत पलट कर फिर असली हालत पर यानी सफेद आने लग जाता है। उष्ण पदार्थ कोई मुवाफिक नहीं आता। मिरच खाना बन्द है।

पेशाब में पीव नहीं आता न कपड़े पर दाग लगता है जाड़े में शिलाजीत लेते हैं। बैठे रहने में कोई ज्यादा तकलीफ नहीं होती। चलने-फिरने और मुसाफिरी में दर्द रहता है।

— वैद्य उदयलाल जी महात्मा।

प्रश्न नं० ६६—

अत्युत्तम बढ़िया से बढ़िया हर साइज की शीशियां कार्क टीन की डिब्बी गोली बनाने की तथा गोलियों पर शक्कर चढ़ाने कूटने पीसने छानने की मशीन कहां से प्राप्त हो सकती हैं।

-श्री बैजनाथ प्रसाद शुक्ल।

प्रश्न नं० ६७—

मेरी चिकित्सा में एक स्त्री है। जिसकी उम्र १८ साल की है। उसे चौदह वर्ष की उम्र से मासिक धर्म जारी हुआ और दो ही वर्ष के बाद बिल्कुल रुक गया। मासिक धर्म रुकने पर छः महीने के बाद उसके सारे शरीर में लहर और आंखों की ज्योति में मन्दता होगई। चार महीने से उसके शरीर में आठ दस फोड़े उठते हैं और फूट कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उजले हो जाते हैं। फोड़ों के उठने और फूटने का क्रम जारी है। आंखों का धसना एवं शरीर में कृशता और पीलापन भी है। बुखार की प्रबलता एवं जर्दि तथा भोजन में अरुचि आदि लक्षणों से क्षीणायु ही प्रतीत होती है। अनेकों उपाय करने पर रोग में वृद्धि के सिवाय कमी नहीं होती। अतएव धन्वन्तरि के विज्ञ पाठकों से अनुरोध है कि यह कौन रोग है और इसकी सफल चिकित्सा क्या है, यह धन्वन्तरि द्वारा प्रकाश करने का कष्ट करें।

—श्री० पं० नन्द कुमार शर्मा वैद्य।

प्रश्न नं० ६८—

पलित रोग—इस रोग ने अनेकों मनुष्यों को ग्रसित कर लिया है। विज्ञ महोदय लिखें कि किस कारण बाल श्वेत होजाते हैं। किस चीज़ की कमी होजाती है और वह कैसे पूरी की जा सकती है, उपाय सरल तथा परीक्षित ही होना चाहिये।

—श्री. हरिश्चन्द्र जी झा।

प्रश्न नं० ६९—

मेरे पास एक रोगी है जिसकी आयु २० साल की है और उसको कास[खांसी]की बीमारी है। रोग ६ साल का है ऐलोपैथी और होमियोपैथी इलाज हुआ, फायदा नहीं हुआ है। खांसी रात को सूखी और दिन में कफ आता है। रोगी को २ साल के अन्दर ३ बार रक्त-पित्त हो चुका है, गर्म उपचार करने से फौरन रक्त आजाता है। रोगी ज्यादा कमजोर नहीं, भूख खूब लगती है, खाना खूब खाता है, टट्टी साफ होती है,बहुत सी दवा खाई, मगर खांसी दूर नहीं होती। स्वांस की गति शीघ्र है,पहिले स्वप्नदोष होता रहा, अब बन्द है। डाक्टरों ने टी. बी. बतलाया है,खांसी के सिवा अब कुछ नहीं। एक्सरे भी कराया, एक्सरे में मालूम हुआ कि बांये फैंफड़े में कुछ जर्मस हैं। वैद्य महानुभावों से विनय है कि कोई अनुभूत प्रयोग लिखने का कष्ट करें, ज्वर नहीं है कास त्रिदोषज मालूम होता है।

—ग्राहक नं० ५३६१।

प्रश्न प्रेषकों से निवेदन-

प्रश्न प्रकाशनार्थ भेजते समय कृपया ध्यान रखिये कि धन्वन्तरि की १-१ लाइन बहुमूल्य है। अतः संक्षेप में केवल आवश्यक विवरण ही लिखियेगा। ऐसे रोगी जिसका रोग १०-१५ दिन में परिवर्तित हो सकता है उसका विवरण प्रकाशनार्थ भेजना अनावश्यक होता है, क्योंकि प्रश्न प्रकाशित होने, परामर्श मिलने और प्रकाशित होने में कम से कम ३ माह लग जाते हैं।

—सम्पादक।

स्वर्ण बसंत मालती

नं० १

ज्वर जीर्ण-ज्वर, क्षय की प्रारम्भिक अवस्था, ज्वर, की टिकी हुई ऊष्मा आदि के लिये सर्वोत्तम प्रमाणित हो चुकी है।

मूल्य—१ तोला २०)

[२॥ तोला एक साथ मंगाने पर पोस्ट व्यय माफ]

पता--धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ [अलीगढ़]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों की सम्मतियां।

प्रश्न नं २२ के उत्तर के विषय में—

सितम्बर मास के अङ्क में के परामर्श नं० २२ का उत्तर दिसम्बर मास के अङ्क में वैद्य बेचरलाल आचार्य नीरोड़ (कच्छ) द्वारा दिया गया है। किन्तु वह उत्तर सन्तोष प्रद नहीं है, क्योंकि कोकेन, नोवोकेन, प्रोकेन आदि विलायती द्रव्य शहरों के खास-खास विक्रेताओं के अलावा देहातों एवं कस्बों में उपलब्ध नहीं हो सकते हैं। आज के युग में जब कि हम वैद्य-लोग नये २ प्रयोग एवं आविष्कार निकालने में समर्थ हैं, तो व्यर्थ में क्यों विलायती चीजों के फेर में पड़ें। वृश्चिक दंश के लिए कुछ अनुभूत प्रयोग पाठकों की सेवा में अर्पित कर रहा हूं, आशा है इनसे लाभ उठायेंगे।

नं० १ अशुद्ध गन्धक की एक डली को लेकर उसका थोड़ा २ चूर्ण जलते हुए लाल कोयले पर डालें, और उसकी धूनी जिस जगह बिच्छू ने डंक मारा हो वहां पर दें। इससे तत्काल बिच्छू का ज़हर उतर जायगा।

नं० २—मदार (आक) के दूध की दो तीन बूंदें जिस जगह बिच्छू ने डंक मारा हो, वहां पर डालें। और दियासलाई की लकड़ी को जलाकर उसकी उष्णता से उन आक के दूध की बूंदों को शुष्क करदें, फौरन बिच्छू का ज़हर उतर जायगा।

नं. ३—एक मोम बत्ती बाजार से लेकर जलावें और जहां पर वृश्चिक ने डंक मारा हो वहां पर उस मोम बत्ती की गरम-गरम बूंदें टपकावें, इससे भी लाभ हो जायगा।

उपरोक्त प्रयोगों पर धनाढ्यों को चाहे विश्वास न हो, किन्तु गरीब जनता के लिए नितान्त उपयोगी तथा उपलब्ध होने वाली वस्तुएें हैं।

—वैद्य खेमराज शर्मा छांगाणी, आर्वी।

परामर्श नं० २६ का उत्तर—

अंत्र वृद्धि या हरनिया के रोगी को ऐसा भोजन करना चाहिए जिससे कब्ज़ न होकर बिना जोर लगाये मल आसानी से निकल जाय। यदि भोजन की व्यवस्था भी ठीक रखने पर ऐसा न हो तो कोई मृदु विरेचक औषधि यथा त्रिफला या गुलकंद आदि सोते समय ले लिया करें। मात्रा अपनी प्रकृति के अनुसार निश्चित करलें।

(२) लँगोट ऐसा कस कर बांधें कि अंडकोष की गोलियां ऊपर चढ़ जाया करें, अधिक पैदल न चलें। यदि अत्यावश्यक हो तो उपरोक्त रीति से लंगोट बांध कर चलें।

(३) यदि लेटने पर आंत ऊपर चढ़ जाती हों तो सोते समय बहुत कस कर लंगोट बांधने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि उपरोक्त विधि से लंगोट बांधने में कुछ कष्ट और कब्ज़ का अनुभव होता है।

(४) यदि अभ्यास न हो तो दीवाल के सहारे तीन मिनट से आरम्भ कर दस या पंद्रह मिनट तक बढ़ा कर शीर्षासन करें, यह रोग तीन वर्ष का है, कम से कम तीन महीना तो करके देखिये। इसमें न तो आपरेशन का काम और न पैसे का खर्चा; लाभ तो महीना पंद्रह दिन में ही प्रतीत होने लगेगा।

प्रश्न नं० ३० का उत्तर—

विशुद्ध गौघृत १ पाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भृङ्गराज स्वरस (घमरे का रस) एक सेर
वायविडंग १ तोला

विधि—तीनों वस्तुओं को एक लोहे की कड़ाही में डाल कर मन्द २ आग पर पाक करें। जब घृत मात्र अवशेष रह जावे तो कपड़े में छान कर एक साफ शीशी में भर लें। इसे नित्यप्रति सुबह शाम नाक से सूंघना प्रारम्भ करें। सूंघने की विधि इस प्रकार करें कि घृत नाक से मस्तिष्क में पहुंच जावे। यद्यपि योग सरल है किंतु आशुफल-प्रद है। इसी योग से अभी मैंने १ पुरुष और दो स्त्रियाँ अच्छी की हैं। आशा है उनको भी दुष्ट प्रतिश्याय से हमेशा के लिये छुटकारा मिल जायगा।

—पं० अयोध्याप्रसाद शर्मा
ए० एम० एस०।

[२]

ऐसे रोगी को खाने के लिये चन्द्रकला वटी शिरोरोगाधिकार की और निशास्त गन्दुम रोज ताजा बना कर खिलाया जाय और २ रत्ती केशर मक्खन में मिला कर सुबह शाम दोनों समय नस्य दी जावे तो एक महीने के अन्दर रोगी निरोग हो सकता है।

[३]

श्रीमान् जी आपको दुष्ट प्रतिश्याय की शिकायत रहती है। यह व्याधि जीर्ण होने पर भी इसके उपद्रव नहीं हुए, वरना माधव निदान के—

प्रतिशाय भवेत् कासः कासा संजायते क्षयः।

वाला मामला होजाता। इसलिये आप निम्न लिखित प्रयोग बनाकर सेवन कीजियेगा। ईश्वर अवश्य ही लाभ देगा—

महा वातराज रस—

शुद्ध कनक बीज शुद्ध पारा शुद्ध गंधक
शुद्ध लोह भस्म १-१ तोला
अभ्रक भस्म लौंग जावित्री
जायफल इलायची के बीज
कपूर भीमसैनी काली मिर्च मकरध्वज
या रससिन्दूर —प्रत्येक ६-६ माशे
अफीम ६ तोला

—पहिले पारे गंधक की कज्जली बनावें पश्चात् उसमें लोह अभ्रक भस्म और रससिंदूर या मकरध्वज मिला कर खूब घोटें, तथा बाद में काष्ठादिक औषधियों का कपड़-छन चूर्ण बना कर अफीम सहित घोटें और धतूरे के पत्तों के साथ मर्दन करके १-१ रत्ती की गोलियां बनालें।

व्यवहार विधि—सूखी द्रोण-पुष्पी का पंचांग तथा काली मिर्च समान भाग लेकर यवकुट चूर्ण बनालें।

उपरोक्त चूर्ण १ तोला को ६ गुने जल में डाल कर काढ़ा तैयार करें, जब २ तोले जल शेष रहे, तब उतार छान कर किंचित शीतल होने दें।

मात्रा—सुबह शाम एक-एक गोली को इस काढ़े के साथ २१ दिन तक सेवन करें। ठंडी एवं गरिष्ठ वस्तुयें तथा वायु-कारक खान-पान का त्याग करें, अवश्य लाभ होगा।

उपरोक्त काढ़े का गरम २ बफारा जिस समय नाक से पानी बहता हो, तथा जुकाम जोरों पर हो, तब लेने से भी काफी लाभ पहुँचेगा।

—वैद्य खेमराज शर्मा छांगाणी आयु वि० आर्वी।

प्रश्न नं० ३२ का उत्तर

(२) चुन्ने (छोटे २ सफेद कीड़े जो मल के साथ निकलते हैं) के लिए १ तोला बायविडंग चूर्ण करके १ छटांक दही आधी छटांक चीनी में मिलाकर खाली पेट खिलावे। सिर्फ तीन दिन के खिलाने से तीन दिन के भीतर चुन्ने साफ हो जायेंगे और यदि जोंक हो तो वह भी निकल जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न नं० ३३ का उत्तर—

कान के बहने वाले के लिए गुलहजारा के फूल का स्वरस निकाल कर इतना गरम करें जिससे उसकी गदली अलग हो जाय। फिर उसको छान कर दिन में तीन बार कान में डालने से पांच चार दिन में ही एकदम ही ठीक हो जाएगा।

[२]

मालकांगनी तैल में कपूर मिलाकर कान में डालें। पूर्ण लाभ होगा, रक्त आना भी बन्द होगा। अथवा—

पीले सरसों का तैल	५ तोला
विल्वपत्र का रस	५ तोला
निम्बपत्र का रस	५ तोला
हल्दी की लुगदी	पांच तोला
कपूर १॥ माशा	हींग १॥ माशा

—तैल बना कान में डालें, लाभ होगा।

नोट—अङ्क ७ पृष्ठ ५१६ पर मलेरिया-नाशक प्रयोग में लेखक का स्थान सेमरौता की जगह रावलपिंडी भूल से छप गया है, पाठक सुधार लें। (सं.)

—पं० धनंजयदत्त शुक्ल वै०वि० सेमरौता।

प्रश्न नं० ३५ का उत्तर

आप अपने रोगी को कोकिल कंठबटी नामक प्रयोग नं० ५६७ धन्वन्तरि अनुभूत-योगांक का सेवन कराइये, अवश्य लाभ होगा।

[२]

ब्राह्मी	बच	पीपल
जवा हरड़	अडूसा	मुलहठी

—इनको समान भाग लेकर महीन चूर्ण बनावें।

मात्रा—सुबह शाम २-२ माशे चूर्ण शहद के साथ चाटने से कंठ सुरीला होता है, कंठ का मैल निकल कर मुख भाग स्वच्छ हो जाता है।

[३]

कण्ठ सुधारक योग:—

गोल मरिच	कुलंजन
बावची के बीज	पीपल
घुड़वच	अजवायन

विधि—इन सब चीजों को समान भाग लेकर चूर्ण करें। फिर मधु के साथ १-१ आना भर की गोली बना रक्खें। तीन या चार गोली दिन भर में सेवन करने से कण्ठ-कोकिला के समान सुरीला हो जाता है।

—पं० बहादुरलाल मिश्र वैद्य आ०शा०, भागलपुर सिटी।

प्रश्न नं० ३६ का उत्तर—

आप जिन २ जड़ी बूटियों से परिचित होना चाहते हैं कृपया उनके सर्वांग का नमूना जैसे फूल पत्ती, फल और आकार भली प्रकार ब्लाटिंग में लपेट कर भेजिए और छोटे क्षुप पूरे भेजिए जिससे भली प्रकार पहिचान हो सके। साथ ही यदि ज्ञात हो सके तो वहां का पहाड़ी नाम भी लिखिये। जांच कर विवरण धन्वन्तरि में प्रकाशित करा दिया जायगा। वैद्य-समाज आपके प्रयत्न का स्वागत करेगा।

—आयुर्वेदरत्न उदयालाल महात्मा जैन, श्री महावीर आयुर्वेदिक चिकित्सालय, पो० देवगढ़ (मेवाड़)

प्रश्न नं० ३८ का उत्तर—

आप उस लड़के को निम्न "गुडूच्यादि क्वाथ" निकाल कर पिलादें, आशातीत लाभ होगा।

हरी गिलोय	५ सेर
शुष्क आंवला	४ सेर
चिरायता	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हरड़	३ सेर
बहेड़े	२ सेर
पिप्पली	१५ तोले
मिर्च	५ तोला
सोंठ	७॥ तोला
अजवायन	२० तोले

—इनको कूट कर किसी मिट्टी के पात्र में डाल उसमें एक मन पानी भी डाल कर पात्र का मुंह बन्द करके पृथ्वी में गाड़ दें। १५ दिन के बाद निकाल कर भवका से अर्क निकाल लें। इसकी मात्रा ५ तोले है, दिन में दो बार प्रातः एवं मध्याह्न काल पिलावें। सायं-काल पंचसकार चूर्ण की मात्रा देकर दूध पिलादें। खांड़ गुड़ शकर आदि पदार्थ, अचार तक्रादि तैल से बने पदार्थों को सेवन न कर घी दूध गेहूं की रोटी कम नमक की दाल सेबन करायें; शीघ्र लाभ होगा।

—श्री० भारतीनन्दन जी वैद्यराज।

प्रश्न नं० ३९ का उत्तर—

ऐसा कोई भी रोगी न मिलेगा जिसे उसी का पेशाब पिलाने का को कहा जाये और वह उसे पीले। पहिले तो उसे कोई पीने के लिये तैयार नहीं होगा और यदि न बनाकर औषधि का नाम रखकर पिलाने पर अपवित्र रहने वाले अज्ञानी मनुष्य ही उसे पीयेंगे, ज्ञानी नहीं। जिसे पेशाब का ज्ञान हो जायेगा वह नहीं पीएगा। हमारे यहां एक सिक्ख मतावलम्बी साधु रहा करते थे जो प्रायः स्त्रियों को अपने पेशाव की शीशी भरकर दे देता था और उसे अर्क बतलाया करता था, वह उन्हें उस दशा में पिलाया करता था जब कि मासिक धर्म में अत्यन्त विकृति होती थी और हमारे एक काजी पेशाव को सांप के काटने पर पिलाते थे जैसे "नरमूत्रेगरंहन्ति" के अनुसार कृत्रिम विष शारीरिक अवयव को कष्ट दे रहा हो तो मूत्र का प्रयोग अच्छा है। यदि मूत्र संग्रह करके उसका अर्क खींच कर लिया जाये तो शोथ विष जन्य जहर विकार, शूल आदि को अच्छा लाभ करता है।

—श्री० भारती नन्दन जी वैद्यराज।

प्रश्न नं० ४० का उत्तर—

मैं अनेकों बार का परीक्षित प्रयोग आपके सामने प्रकट कर रहा हूं।

लाल फल वाले अमरूद के फल को बलानुसार कुछ दिन तक सायं प्रातः खिलाने से असाध्य गुदाभ्रंश रोग भी समूल नष्ट हो जाता है। इससे कब्ज की शिकायत तो दूर होती ही है, साथ ही पेशाव के साथ वीर्य का आना भी बन्द हो जाता है और रोगी सदा के लिये आनन्द-मय जीवन व्यतीत करता है।

—पं० नन्दकुमार शर्मा वैद्य, रुपाइच (गया)

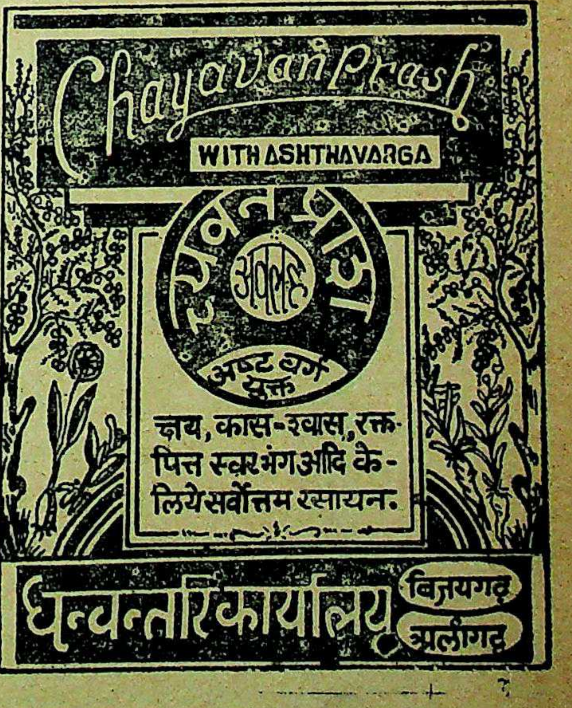

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र-पिता पूज्य बापू जी के प्रति

"हा बापू"

हे शान्ति-राज्य के महाराज,
हे ईश्वरीय—सन्मति सुखमय ।
हे निविड अँधेरे के प्रकाश,
हे मानव-पथ-दर्शक, गुणमय !!

हे उलझी गुत्थी की सुलझन,
हे राजनीति के प्रमुख—सूर ।
जगती—जन — जीवन—वैद्य रूप,
हे शान्ति—सिंधु—लहरी—प्रपूर !!

क्यों हमको छोड़ हुए अनन्त,
हे यश के जीवित पूर्णचन्द्र ।
तव चरणों में अर्पण करती,
वैद्यावलि श्रद्धाञ्जलि वितन्द्र !!

—वैद्य पं० चन्द्रशेखर जी जैन वैद्यशास्त्री

सत्य-अहिंसा के पुजारी-

हे ! परम अहिंसा के स्वरूप, अयि ! राष्ट्रपिता कल्याण धाम ।
भो ! विश्ववन्द्य भुवि अमर ज्योति, बापू तुमको शत २ प्रणाम ॥
सत पंथ प्रदर्शक भानु चन्द्र, आताप शीत से हो विहीन ।
तुम जगत चक्षुओं के तारे, अरु आश्रय थे ज्यों नीर मीन ॥
नेताओं के उरके प्रकाश, उलझी गुत्थी के सुरझैया ।
तुम बिन अब पार करेगा को, मंझदार भंवर में है नैया ॥
तुम ईसा थे पैग़म्बर थे, नानक अरु कृष्ण व बुद्ध वीर ।
परतन्त्र सुदृढ़ थी पड़ीं हुई, सदियों की कटवाईं जंजीर ॥
तुम दया सत्य के थे निधान, स्वातन्त्र रचा तुमने विधान ।
जग को दिखलाकर चमत्कार, आश्चर्यान्वित करके निदान ॥
हँसते २ अदृश्य हुए, उन्मत्त पुरुष का बन निशान ।
हम सबको रोते छोड़ गये, था स्वप्न माहिं भी नहीं ध्यान ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के वैद्य-समाज की श्रद्धांजलि

बापू के प्रति

किसने भारत उपवन में यह दावानल सुलगाया ।
मृदु स्नेह-भरी बापू की छाती पर बज्र गिराया ॥
वह मानवता का द्रोही दानव भी जी न सकेगा ।
ध्रुव, पापी पाप-घड़े के जल में ही डूब मरेगा ॥
जो शर-शैय्या पर अपनी इच्छा से जा जा सोया ।
वह महाकाल का विजयी हा ! भीष्म हमारा खोया ॥
जो निज हत्यारे को भी निर्भीक न मन करता था।
दीनों, दुखियों, आर्तों का त्रय-ताप सदा हरता था ॥
जिसके चरणों की रज थी त्रिभुवन-ललाट की रोली ॥
उस महा-प्राण की काया पर हमने दागी गोली ॥
ननु पाप-पुञ्ज सन्तति को वह सन्त तुरन्त क्षमेगा ।
पर हन्त ! पाप का मेरे क्या अन्त कभी भी होगा ॥
जन-मन को रुला-रुला कर हे बापू ! जाओ जाओ ।
नन्दन-कानन से भारत को शान्ति-संदेश सुनाओ ॥

—पं. ताराशंकर मिश्र आयुर्वेदाचार्य, बनारस ।

रघुपति राघव राजा राम ।
पतित पावन सीताराम ॥
अल्ला ईश्वर तेरे नाम ।
सबको सन्मति दे भगवान ॥

पूज्य बापू के प्रति

नेहरु, पटेल, राजेन्द्र हाय, आजाद और कृपलानि वीर ।
संसार सर्व है विकल आज, नेत्रों के राह वह रहा नीर ॥
तुम बिन बापू हम दुखियों की, को विकट कष्ट में धरे धीर ।
तुम बिन दयालु हे सत्य वीर, असहाय जनों की हरै पीर ॥
पर उपकारी सत ब्रत धारी, क्या फिर भी दर्श दिखाओगे ।
आ एक बार फिर प्रेम पाठ, हम सबको क्या सिखलाओगे ॥
तुम नहीं दृष्टि--गोचर अब हो, फिर भी उरु अन्तर में निवास ।
तुम पृथक् हुए केवल भ्रम है, अब हुए सभी के अधिक पास ॥
श्रद्धाञ्जलि देकर हम तुमसे, बस इतनी ही भिक्षा मांगें ।
सब प्रेम सूत्र में बंध करके, एक धर्म अहिंसा चितपागें ॥

शोकातुर —इन्द्रमणि जैन वैद्य, अलीगढ़ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि० भा० आयुर्वेद ३६ वां सम्मेलन—

अप्रैल माह में बड़ौदा में होना है, उसकी तैयारी प्रारम्भ हो गई हैं। साथ ही आयुर्वेदीय राज्य-स्थान सम्मेलन का प्रथमाधिवेशन भी हो रहा है। नि० भा० आयुर्वेद सम्मेलनान्तर्गत आयुर्वेद अध्यापक सम्मेलन, व्यायाम और योग कौमारभृत्य, आयुर्वेदीय औषधि-निर्माण, शल्य-शालाक्य चिकित्सा एवं रसायन आदि विषयक सात परिषदें होंगी। विद्वान लेखक—'पंचकर्म चिकित्सा' सूतिका शास्त्र, "पंचमहाभूत और त्रिदोषवाद" "स्वास्थ्य संरक्षा" व "पौर्वात्य व पाश्चात्य पद्धति से समन्वय सहित रस शास्त्र" तथा "आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति' इन विषयों पर गुजराती, मराठी, हिन्दी या संस्कृत में ३२ पृष्ठ तक में सुअक्षरों से लिखा निबन्ध सम्मेलन की तिथि से एक मास पूर्व भेजने की कृपा करें। प्रथम श्रेणी के निबन्ध लेखक को स्वर्णपदक सहित प्रथम श्रेणी का प्रमाण पत्र दिया जायगा।

विस्तृत विवरण सम्मेलन के प्रधान मंत्री से प्राप्त कर सकते हैं।

—वैद्य चुन्नीलाल रेवाशंकर; प्रधान मन्त्री
नि० भारतवर्षीय आयु० ३६ वां सम्मेलन
स्वागत मण्डल, बड़ौदा।

बून्दी राज्य में आयुर्वेद की प्रगति—

इस वर्ष बून्दी राज्य ने आयुर्वेदोन्नति की दशा में विशेष रूप से मार्ग प्रदर्शन किया है। बूं[illegible] नरेश ने २५०००) रु० वार्षिक बजट द्वारा अक्टूब[र] सन् १९४७ से एक सर्वाङ्ग पूर्ण स्वतन्त्र आ[यु]र्वेदिक विभाग खोल दिया है। यह विभाग अ[न्य] स्थानों की ग़लत प्रथा के अनुसार ऐलोपैथि[क] मेडीकल विभाग के आधीन नहीं रखा गया है[।] इसके अधीन पांच ग्रामीण आयुर्वेदिक औषधाल[य] भी खोले हैं। इस वर्ष अभी केवल आउट डो[र] औषधालय ही रखे गये हैं। इसकी उपयोगिता बढ़[ने] पर आतुरालय भी खोला जायगा, ऐसी आशा है[।] इस समय एक केन्द्रीय औषधालय बून्दी में औ[र] चार ग्रामों में चार औषधालय पूर्ण सन्तोष [ए]वं प्रशंसायुक्त कार्य कर रहे हैं और रोगी जनता [को] इनसे पर्याप्त लाभ पहुँच रहा है।

इस विभाग के अध्यक्ष पद पर प्राणाचा[र्य] पं. नित्यानन्द जी शर्मा वैद्य-वाचस्पति योग्यता [के] साथ कार्य कर रहे हैं। इस औषधालय का ना[म] 'श्री. दरबार आयुर्वेदिक औषधालय बूंदी' र[खा] गया है।

"पते का परिवर्तन" -

श्री० कविराज चौधरी धर्मदत्त वैद्य-शास्[त्री] भूतपूर्व प्रोफेसर सनातन धर्म कालिज लाहौ[र] पश्चिमी पंजाब छोड़ पूर्वी पंजाब में खन्ना जि[ला]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुधियाना में आगये हैं। इसलिये उनसे पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें :—

—प्रो० धर्मदत्त चौधरी M. A. Sc.
खन्ना [लुधियाना]

शोक प्रस्ताव—

खुर्जा वैद्य सभा ता० ६-२-४८ के एक असाधारण अधिवेशन में एक निम्न शोक-प्रस्ताव प्रस्तुत एवं स्वीकृत किया गया।

'यह सभा नगर के धनमान्य प्रतिष्ठित एवं इस सभा के उपसभापति वैद्य रामचन्द्र जी शास्त्री के सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्र के साम्प्रदायिक दुर्घटना जन्य असामयिक निधन पर शोक प्रकट करती है एवं वैद्य जी तथा उनके परिवार के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करती है।'

—मन्त्री, वैद्य सभा खुर्जा।

आयुर्वेद अन्वेषण वैद्य संघ –

के एक विशेषाधिवेशन में निम्न प्रस्ताव पास हुआ-'यह सभा इण्डियन मेडिसिन एक्ट १९३९ के नियमानुसार नये बने बोर्ड के जो आदेश प्राचीन वैद्यों ॰ रजिस्ट्रेशन व'बी' श्रेणी से 'ए'में परिवर्तन करने के प्रकाशित किये हैं उनका घोर विरोध करती है,विशेषकर इन आदेशों से ग्रामीण वैद्यों के सामने बोर्ड ने एक पहाड़ ही खड़ा कर दिया है, जिसे पार करना दुर्लभ है।

ग्रामीण वैद्यों को अपनी योग्यता के प्रमाणित कराने के लिये डि० मजिस्ट्रेट या सब डिविजनल आफिसर की सिफारिश प्राप्त करना; आयुर्वेद कालिज की उक्त परीक्षा पास करना, किसी सुप्रसिद्ध संस्था से शल्यकार्य की शिक्षा का प्रमाण पत्र पाना, अपने व्यवसाय की आमदनी पर इन्कमटैक्स देना इत्यादि विषयक शर्तों की पूर्ति नगरों से दूर स्थित वैद्यों के लिये असम्भव है।

इसी प्रकार ४ प्रस्ताव और भी इण्डियन मेडिसन के रजिस्ट्रेशन विषय कार्य-विधि के विरोध में पास हुए, जिन्हें स्थानाभाव के कारण 'धन्वन्तरि' में प्रकाशित नहीं कर सके हैं।

—पं० चन्द्रदत्त जी शर्मा वैद्य भू०।

द्वितीयाधिवेशन स्वागत समिति बालाघाट--

आगामी ता० १३-१४ मार्च सन् ३८ को होने वाले महाकौशल प्रा. वै. स. के सम्मेलनाध्यक्ष श्रीमान् कविराज एम. के. मुकर्जी मुखोपाध्याय कलकत्ता वाले चुने जायें और सम्मेलन उद्घाटनोत्सव श्री. मा० डा० वालिंगे स्वास्थ्य मंत्री सी. पी. के करकमलों द्वारा कराया जावे। यह प्रस्ताव स्वागताध्यक्ष श्रीयुत डा० मेघराज जी बिसने द्वारा प्रस्तुत और सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया।

—श्री० मेघराज बिसने, स्वागताध्यक्ष।

अलीगढ़ के वैद्य –

"आन-मजिस्ट्रेट एवं मुंसिफ"

यू० पी० सरकार ने अलीगढ़ के सुप्रसिद्ध वैद्य श्री० रामलाल जी जैन को आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं आनरेरी मुंसिफ नियुक्त किया है। आप गत ४ वर्षों से आनरेरी मुंसिफ रह भी चुके हैं। गत ८ वर्षों से ग्राम-सुधार संघ में वायस-चैयरमैन के पद पर बड़ी सलग्नता से काम किया है। आप बड़े परिश्रमी व्यक्ति हैं। वैद्य सभा अलीगढ़ युक्तप्रान्तीय वैद्य-सम्मेलन तथा अ० भा० आयुर्वेद महा सम्मेलन के आप सदस्य भी हैं। आपकी नियुक्ति पर वैद्य-समाज की ओर से मैं सहर्ष बधाई देता हूं।

— सम्पादक।

विविध वैद्य-सभाओं द्वारा –

श्रद्धाञ्जलि

विश्ववन्द्य पूज्य महात्मा गांधी के निधन पर भारतवर्ष की अनेकों वैद्य-सभाओं ने अपने विशे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षाधिवेशन में शोक प्रस्ताव प्रस्तुत एवं पास कर प्रकाशनार्थ हमारे पास भेजे हैं। सभी को प्रकाशित करना स्थानाभाव के कारण कठिन प्रतीत होता है। अतएव उन सभाओं की नामवलि का कुछ अंश ही प्रकाशित किया जा रहा है।

१—छात्रमंडल आयुर्वेद विद्यालय, काशी।
२—सर्किल वैद्य सभा, ऊन।
३—वैद्य सभा, हरदा सी० पी०।
४—कौपा अस्पताल, कौपा पो. सकला बाजार, आरा। उक्त अस्पताल में एक बड़ी सभा में शोक-श्रद्धाञ्जलि अर्पित होने के बाद एक "गांधी पुस्तकालय" खोलने की योजना बनाई गई और उसी समय कुछ पुस्तकें और ५००) एकत्रित किये गये। —पं० तिलकधारी मिश्र।
५ जिला वैद्य परिषद, उरई (यू० पी०)
६—फरुखाबाद जिला वैद्य सभा, फरुखाबाद।
७—वैद्य सभा, बुरहानपुर सी० पी०।
८—महा कौशल प्रान्तीय आयुर्वेदिक सम्मेलन कार्यालय, जबलपुर।
आदि-आदि।

धन्वन्तरि पूजा पद्धति—

नामक पुस्तक छापने का विचार है, इस वास्ते धन्वन्तरि पूजन स्तवन आदि विधि सहित जो सज्जन भेज देंगे उसके हम आभारी होंगे।

पता—श्रीशंकर आयुर्वेद सेवाश्रम
पांडव वाडा, भुसावल (पूर्व खानदेश)

दवा के सच्चे मोती

वैद्यो! हकीमो!! तथा फार्मेसी वालो!!!

हमारे यहां सब प्रकार के शुद्ध और सच्चे मोती, जैसे कि बसराई खाका, सीलोन खाका, आष्ट्रेलियन मोती वगैर, जो दवा के लिए सर्वोत्तम हैं तथा जो भारत के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वैद्यों द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं, निहायत किफायत से मिलते हैं। धर्मार्थ औषधालयों तथा फार्मेसियों के साथ विशेष रिआयत की जाती है। आर्डर भेजने की कृपा करें।

पता-नगीनदास वीरचन्द जेवरी,
४४-४६, धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३।

एपोलो आयुर्वेदिक इंजैक्शन

आयुर्वेदिक इन्जैक्शनों की प्रमाणिकता के लिये निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन ने केवल हमी फार्मेसी को स्वर्णपदक से सम्मानित किया है। आवश्यक विवरण पत्र द्वारा मंगाइये। एजेंटों की आवश्यकता है।

दी एपोलो फार्मेस्यूटीकल वर्क्स लिमिटे[ड]
प्रतापगंज : : बरौदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

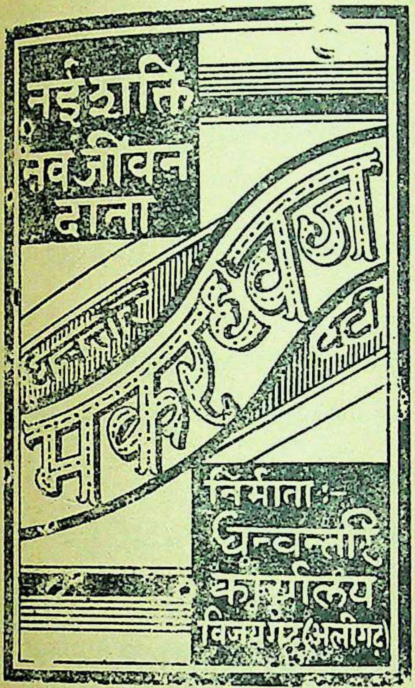

मकरध्वज वटी में

सिद्ध मकरध्वज के अलावा अन्य अनेकों मूल्यवान एवं प्रमेह, वीर्य का पतलापन, स्नायु-दौर्बल्य आदि रोग नाशक द्रव्य डाले जाते हैं। यह वीर्य-विकार नाशक अत्युत्तम टौनिक है। हर ऋतु में समान लाभप्रद है।

—पूरा मूल्य—

रियायत का समय बीत गया, अब रियायती मूल्य पर भेजने के लिये आग्रह न करें। हम उनके आग्रह को पूरा करने में असमर्थ होंगे।

सावधान रहिए—

मकरध्वज वटी की प्रसिद्धि देख कर नक्कालों को चैन नहीं पड़ा, वह नकल करने ही लगे और मकरध्वज वटी के नाम से ही औषधि बनाकर ग्राहकों को धोका देने लगे, इसलिए हम अपने ग्राहकों को सावधान करते हैं कि वह हमको ही सीधा ऑर्डर देकर 'मकरध्वज वटी' मँगावें अथवा हमारे एजेन्टों से "धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)' का छपा लेविल देख कर खरीदें।

निवेदक—

व्यवस्थापक--धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आधुनिक नेत्र-रोग विज्ञान'

नेत्र-रोगों पर सर्वोच्च तथा सर्वाधिक प्रमाणिक पुस्तक

लेखक—मराठी भाषा में अनेक चिकित्सा सम्बन्धी ग्रंथों के रचयिता
डॉ० डी० डी० साठे।

इस एक ही पुस्तक के पठन से आप नेत्र-रोग विशेषज्ञ बन सकते हैं। सरल हिन्दी में यह पुस्तक लिखी गई है। महात्मा गांधी जी का आशीर्वाद इसको प्राप्त है। लेखक नेत्र-रोग के माने हुए विशेषज्ञ हैं।

पुस्तक पांच भागों में प्रकाशित होगी। प्रत्येक का मूल्य लगभग २०) रु० होंगे। स्थायी ग्राहकों को कमीशन दिया जायगा।

प्रथम भाग समाप्त हो चुका है। द्वितीय भाग तैयार है। शीघ्रता कीजिये। आज ही २०) रु० का मनीआर्डर भेजकर स्थायी ग्राहक बनिये; अन्यथा प्रतियां मिलना असम्भव हो जायंगी। २०) रु० प्रति अगले भाग के साथ मूल्य में काट दिए जायंगे।

पता—मंत्री, आचार्य विज्ञान मंदिर, बम्बई हिन्दी-विद्यापीठ,
१२५, गिरगांव रोड, बम्बई नं० ४

आयुर्वेद संसार में क्रान्तिकारी खोज

HIND RESEARCH LABORATORIES REGD. TRADE MARK JHANSI U.P.

पूर्ण अनुभूत-वैज्ञानिक-क्षारीय इन्जैक्शन से चौगुना लाभ पहुंचाने वाले हर रोग पर अलग २ स्पेशल 'बीटौल सात्वीय आयुर्वेदिक इन्जैक्शन्स" प्रयोग कर धन, यश तथा स्वास्थ्य लाभ कीजिए।

मलेरिया बुखार	रक्त पित्त (अधो तथा ऊर्ध्वगत)
खुजली (सूखी व पस वाली)	प्रमेह, स्तम्भन
वात-व्याधि (गठिया आदि)	प्रदर-कष्टोरज शोथ आदि

पर विशेष उपयोगी तथा यकृत, सोहा, श्वास, कास, छाजन, गजकर्ण (Eczema), नपुंसकता आदि पर स्पेशल इन्जैक्शन तथा शर्तिया औषधियां हमारे यहां से खरीदिए। थोक खरीद पर अधिक सुविधा। सूचीपत्र मुफ्त।

पता—हिन्द रिसर्च लेबोरेटरीज (रजि०) सदर बाजार झांसी [यू. पी.]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी डाक

"...आपका "रक्त पित्तान्तक रस" जितने रोगियों को दिया सब को फौरन और पूर्ण फायदा हुआ। ऐसी गुणकारी दवा आप के कार्यालय में तैयार होती हय, इसलिये आपको धन्यवाद देना जरूर हय......"

—वैद्य रामचन्द्र गणपत वारी मास्टर चिचखेडे,
पो० बोदवड (पू० खा०)।

× × ×

"...आपके कार्यालय से दो-तीन दवायें मंगाई थीं वह दवायें अत्यन्त लाभदायक साबित हुई......."

—दिल्लीपति वैद्य,
तालगांव (छत्तरपुर राज्य)

× × ×

"...आप की दवा स्त्रीसुधा ने बहुत फायदा पहुँचाया, अब १ बोतल स्त्रीसुधा अवश्य भेजिये।......"

—बुद्धिसागर शुक्ल परिगवा,
पो० शोहरतगढ़ (बस्ती)।

× × ×

"...आपकी प्रेषित की हुई औषधियां प्लीहा रोगी के लिए लाभदायक सिद्ध हुई। करीब ५० प्रतिशत लाभ हुआ है।......."

—पं० वंशगोपाल शर्मा वैद्य गहरा,
पो० कबरई (हमीरपुर)

× × ×

"...आप के कारखाने से ज्वरारि नाम की दवा वर्षों से मंगा रहा हूं। यह फसली बुखार को निहायत मुफीद साबित हुई है।......"

—चौधरी गजेन्द्रसिंह रईस डोडरी,
पो० पोरसा (हमीरपुर)।

× × ×

"श्वासामृत ६ शीशी रवाना करें। पार्सल आते ही छुड़ा लिया जायगा। श्वासामृत दमा की बहुत अच्छी दवा है।"

—हिमायत खां, राइस मिल्स,
मु० बरघाट [छिंदवाड़ा]

× × ×

"६ शीशी मकरध्वजवटी और भेजिये, कारण इन गोलियों ने हमारे निराश बन्धुओं को अलौकिक चमत्कार जैसा कि आप ने सूचित किया था इसी प्रकार दिखाया। मैं आशा करता हूँ कि समय-समय पर आपकी प्रत्येक औषधि मंगाता जाऊंगा।......"

—डा० एच० पी० शर्मा A. m. o.
पो० सिरसी वाया हिंगनघाट (नागपुर)

× × ×

नित्यप्रति अनेकों प्रमाण पत्र मिलते रहते हैं उनमें से कुछ ऊपर दिये गये हैं। 'धन्वन्तरि कार्यालय' की सभी औषधियां अत्युपयोगी और प्रामाणिक होती हैं। अपने रोगियों पर सफलता पाने के लिये हमारी विश्वस्त औषधियां ही मंगाइये।

व्यवस्थापक धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना—

-सूखी-औषधियां-

शीशियों में पैक कर पोस्ट द्वारा अधिक वजनी हो जाती हैं और उन पर पोस्टेज अधिक लगता है। इसलिये वे बहुत से वैद्य, जो बिक्री के लिये नहीं किंतु अपने चिकित्सा-कार्य में व्यवहार के लिये मंगाते हैं, सूखी दवा मजबूत कागज की पुड़ियों में मंगाते हैं। उनको खर्चे में बचत हो जाती है। टूट-फूट का भी डर नहीं रहता। पार्सल मिलने पर वे चिकित्सक औषधियां अपनी शीशियों में डाल लेते हैं। यदि आप भी इस प्रकार मंगाना चाहें तो आर्डर देते समय स्पष्ट आदेश लिख दें कि "औषधियां कागज की पुड़ियों में भेजी जांय।"

अब पोस्ट पार्सल विभाग प्रथक कर दिया और पोस्ट पार्सल पत्र मिलते ही पैक कर भेजी जाती है।

—व्यवस्थापक

-पोस्ट-व्यय फ्री-

कतिपय ग्राहकों के आग्रह के कारण हम यह नियम बना रहे हैं:—कि 'केवल रस-रसायन एवं भस्में' के ५०)से अधिक मूल्य का आर्डर मिलने पर पोस्ट द्वारा बिना किसी व्यय के औषधियां भेज देंगे। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि—

१—पोस्टेज औषधियों के मूल्य का)॥ प्रति रुपया से अधिक न होना चाहिये।)॥ रुपया से अधिक पोस्टेज होने पर "अधिक पोस्टेज" ग्राहक को देना होगा। इसका अभिप्राय है कि हम पोस्टेज या)॥ प्रति रुपया जो भी कम होगा वही देंगे। यदि)॥ प्रति रुपया से पोस्टेज कम होगा तब पोस्टेज नहीं लगायेंगे और यदि)॥ रुपया पोस्टेज से कम होगा तब पोस्टेज लगाकर)॥ प्रति रुपया कम कर देंगे।

२—यह रियायत केवल रस, रसायन एवं भस्मों पर ही की जायगी। यदि आप इनके साथ गूगल, अवलेह, तैल आदि औषधियां मंगायें तब हम उपर्युक्त सुविधा नहीं दे सकेंगे। अतः आर्डर देते समय इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिये।

३ इस रियायत को पाने के लिए आर्डर पत्र में शब्द स्पष्ट लिख देना चाहिये। "रस-रसायन एवं भस्मों का ५०)से अधिक का आर्डर है, पोस्ट व्यय या)॥ प्रति रुपया की रियायत दें।" ये शब्द आज्ञा पत्र [आर्डर] में न लिखे होंगे तो संभव है कि क्लर्क भूल कर दें।—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

धन्वन्तरि

—इस अंक में—

धन्वन्तरि (कविता)	६३७	गर्भस्थ बालक पर आहार और विचारों का प्रभाव—	६५७
शुभ कामना (,,)	६३७	भारतीय रसायन शालाओं की पंगुता	६५९
बापू के प्रति (,,)	६३८	अष्टवर्ग गुण विधान	६६२
आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति हो	६३९	वेदों में पंचकषाय	६६५
रसगुण वीर्य विपाक और प्रभाव	६४३	भांग	६६७
पौरुषग्रन्थि शोथ	६४७	परीक्षित प्रयोग	६६९
अजीर्ण रोग	६४९	आयुर्वेद जगत	६७३
प्लीहा और उसके उपचार	६५२		

मार्च १९४८

भाग २२ अङ्क १०

वार्षिक-मूल्य ५=)

सम्पादक वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग

जे. पी. अग्रवाल बी.एस.सी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह घुटी अपने गुणों के कारण सर्वत्र प्रसंशा पा चुकी है जो एक बार प्रयोग करा लेता है वह इसका पूरा प्रचारक बन जाता है। सभी पंसारियों, औषधि विक्रेताओं को मंगाकर विक्रियार्थ रखना चाहिये।

मूल्य—१ शीशी ।=)   १ दर्जन २।।=)

नोट—२ ग्रोस एक साथ मंगाने पर ६४) में सवारी गाड़ी से फ्री डिलीवरी भेज देंगे। साथ ही टीन का एक बोर्ड भी भेजा जायगा। २ ग्रोस से कम मंगाने पर किसी प्रकार की रियायत नहीं। आर्डर के साथ १०) एडवांस भेजें।

कानपुर में—

"धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़" की सभी औषधियां आप निम्न स्थान से ले सकते हैं। कानपुर एवं निकटवर्ति जनता एवं चिकित्सकों को इस आयोजन से लाभ उठाना चाहिये। पता—श्री० त्रिभुवननाथ जी "फक्कड़" रसायन भण्डार, ग्वालटोली।

Printed and Published by Vaidya D. S. Garg at the Dhanwantari Press, Bijaigarh.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by Dept. of Public Instruction of Central Provinces & Berar.

भाग २२ अङ्क १०	सम्पादक- वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग जे. पी. अग्रवाल, बी. एस. सी.	मार्च सन् १९४८ ई०

धन्वन्तरि ।

वैद्यवर के अनुभूत—प्रयोग,
कठिन रोगों के सहज-निदान।
बताकर औषधि दे अनमोल,
क्रिया करता है जीवन दान॥
जटिल-प्रश्नों के सरल सुबोध,
दिया करता उत्तर प्रति-मास।
पास फिर कैसे आये व्याधि,
अगर हो 'धन्वन्तरि' निज पास॥

—रचयिता—
श्री. पं. सतीश कुमार जी शर्मा आ. शा.
नाथद्वारा।

—❀—

शुभकामना ।

इच्छा नहीं है स्वर्ग को,
पाऊं दयामय हे प्रभो।
कुछ राज्य की भी कामना,
मुझको न जग में है विभो॥
यह पुनर्जन्म न इष्ट है,
मर कर धरातल पर मुझे।
अभिलाष केवल दुखित जन,
के दुख मिटाने की मुझे॥

—रचयिता—
श्री. पं. सोमदेव जी शर्मा शास्त्री,
पीलीभीत।

—❀—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापू के प्रति।

—रचयिता—

भिषक्भूषण पं० चन्द्रशेखरदत्त जी शर्मा वैद्य-शास्त्री।

हा, राष्ट्रपिता तुम गये कहां,
सूनी फुलबाड़ी छोड़ यहां।
अपने खूनों से सींच—सींच,
पौदों में नव-जीवन उड़ीच॥

जब हरी-हरी यह फुलबाड़ी,
हुई कण २ में मृदुता जारी।
सूखे तरुवर भी हरियाये,
जीवन से जीवन सरसाये॥

कुसुमों की मन्द सुगन्ध गन्ध,
मलयानिल ले पहुंचा अबन्ध।
सब चकित हुए ये विश्व बासी,
लख जीवन क्रम गति अविनासी॥

पर कहां पिता खोगया आज,
जिसने सींची वसुधा समाज।
मानवता की जो आशा था,
सत्य क्षमा प्रेम परिभाषा था॥

अब छोड़ अनाथ चला मुझको,
अर्पित उसकी निधि है उसको।
अपने रोते खोते-स्वर से,
श्रद्धाञ्जलि अर्पित है उसको॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा-पद्धति हो ।

[वैद्यराज पं० नारायणदत्त जी सकलानी, भगवतपुर, टिहरी-गढ़वाल स्टेट]

हमने उपर्युक्त शीर्षक का लेख धन्वन्तरि, जनवरी १९४८, पृष्ठ ५३९ पर पढ़ा है। हम नहीं समझते कि राष्ट्रीय चिकित्सा-पद्धति से लेखक महोदय का क्या प्रयोजन है। जन साधारण जिस चिकित्सा पद्धति से सैकड़ों वर्षों से रोगमुक्त होता चला आ रहा है वह राष्ट्रीय नहीं तो क्या है? ऐलोपैथिक डाक्टर प्रतिवर्ष अधिक रोगियों को अच्छा करते हैं या वैद्य लोग? आयुर्वेद को चाहे जो कुछ समझा जाय वह तो स्वयम् राष्ट्रसिद्ध है और "समं ज्योतिः सूर्येणाहा रात्री समावती, (अथर्व, १८,१) के समान सत्य है। मुश्क कभी छिपाये छिप सकता है? भारत में आयुर्वेद का ज्ञान थोड़ा बहुत घर घर में है। हरड़-बहेड़ा-आंवला, वात-पित्त-कफ, ठंडा-गरम-तर इनका ज्ञान किस भारतवासी को नहीं? आबालवृद्ध सभी जानते हैं कि अमुक चीज को खाने से गरमी (पित्त) बढ़ती है, अमुक वस्तु सेवन से शरीर को ठंडक, (वायु) पहुँचती है और अमुक वस्तु खाने से शरीर में तरी (कफ) आती है। इस अनुभव को कोई किस प्रकार जनता से निकाल सकता है। यही मूल कारण है जिसके फलस्वरूप आयुर्वेद सर्वदा जीवित रहा। ऐलोपैथी में न तो कोई दवा गरम, न ठंडी और न तर समझी जाती है, और न उसमें वात-पित्त-कफ का सिद्धान्त ही माना जाता है। उसमें तो कोई भी ज्वर क्यों न हो कुनीन दी जा सकती है, कैसा भी कब्ज हो मैगसल्फ, केलोमिल कैस्टर आइल में से कोई सी दवा पिलादो, कैसा भी दर्द हो ऐस्परिन दे दो, आयुर्वेद में विरेचन पर ही ९०० मुख्य २ दवायें हैं और चीजों का तो कहना ही क्या है। ऐलोपैथी में बस्ति के लिये केवल ग्लिसरीन, अरण्डी का तैल और साबुन प्रयुक्त होते हैं, किंतु आयुर्वेद में अनेक प्रकार की बस्ति हैं।

लेखक महोदय भारतीय वैद्यों को अप्रगतिशील और संकीर्ण मनोवृत्ति के बतलाते हैं। वह केवल इसलिये कि वे शल्यक्रिया और सूचीभेदन से परहेज करते हैं। किंतु जरा विचारिये कि शल्य-क्रिया और सूचीभेदन पद्धति का जन्मदाता कौन है। सुश्रुत-माधवनिदान-अष्टाङ्गहृदय—भैषज्यर-त्नावली-चक्रदत्तादि ग्रन्थों में शल्यक्रिया और सूचीभेदन का पर्याप्त वर्णन है। आयुर्वेद पुराना है या ऐलोपैथी? तो क्या शल्यक्रिया और सूची-भेदन ऐलोपैथी के हैं? पराई वस्तु अपनी बताना ही तो नवीन सभ्यता है। आयुर्वेद शल्यक्रिया और सूचीभेदन क्रिया का प्रचुर ज्ञान रखता है, किन्तु अनुभव से इन्हें चिकित्सा में उतना ऊँचा स्थान नहीं देता जितना कि औषधि को, और इन्हें आसुरी चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत रखता है; कारण कि वह स्थानिक चिकित्सा को सर्वांगीण चिकित्सा के सन्मुख गौण मानता है। बवासीर, पोथकी, कंठशालूक, अर्बुद, पथरी, पूयदंत, आंत्र-पुच्छशोथ, नासूर, भगन्दर, आदि रोगों को यथा संभव औषधि से ही आयुर्वेद ठीक करता है और इनमें शल्य चिकित्सा का आदेश लाचारी हालत में देता है। बहुत से रोग जो ऐलोपैथी में केवल शल्यकर्म से ठीक होने समझे जाते हैं उन्हें वैद्य लोग औषधि द्वारा ही सरलता पूर्वक ठीक कर देते हैं फिर वे एक दम आसुरी पद्धति का अनुसरण क्यों करें? एक ही मनुष्य का कई बार बवासीर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्सों का शल्यकर्म होता है और मस्से फिर उभड़ आते हैं। एक बच्चे के टान्सिल कई बार काटे जाते हैं और फिर बढ़ जाते हैं। पथरी का शल्यकर्म कई कई बार होता देखा गया है। यह क्यों ? शल्यकर्म हो गया, किंतु मूल कारण (वात-पित्त-कफ की असात्मता) शरीर में विद्यमान ही रह गई। आयुर्वेद स्थानिक चिकित्सा की अपेक्षा मूलभूत दोषों का उन्मूलन करना अधिक महत्व का समझता है। इसी शल्यकर्म को देख कर लेखक महोदय वैद्यों को अप्रगतिशील कहने लगे ? इसे तो आयुर्वेद अधिक महत्व देता ही नहीं। इस की खूब छान-बीन करके आयुर्वेद ने आसुरी चिकित्सा में समावेश कर रखा है।

एक सेठ जी के बांये कान के नीचे की ओर ५-७ दिन में एक रसौली बढ़कर करीब १॥ इञ्च ऊँची और २ इञ्च चौड़ी हो गई। डाक्टर साहब ने कहा परसों का इसको काट कर फेंक देंगे। हमने सेठ जी से कहा अगर कई रसौली निकल आईं तो कहां तक चीर फाड़ कराते रहोगे। इसलिये एक सप्ताह दवा खाकर देखो। चीर-फाड़ तो फिर भी हो जायगा। उन्हें बात जंच गई। उन्होंने दो रत्ती मुक्ताप्रवालपंचामृत और एक रत्ती स्वर्ण-बंग दिन में दो बार गौदुग्ध से लिया। सात ही दिन में रसौली लुप्त हो गई। एक सप्ताह पश्चात् डाक्टर साहब उनकी दूकान पर कपड़ा मोल लेने आए। वे बड़े अचम्भित हुए कि रसौली कैसे गायब हो गई। फिर सेठ जी ने सब हाल कह सुनाया।

डाक्टर साहब के स्वतः टौन्सिल थे, जुखाम खांसी के पुराने मरीज थे। टी० बी० के दाग एक्सरे से उनके फेफड़ों में बताये गये थे। उन्होंने हमसे पूछा टान्सिल और जुखाम खांसी की कोई औषधि आयुर्वेद में भी है। हमने कहा 'हां है'। हमने सिर पर मालिश के लिए महानारायण तैल और खाने को ½ रत्ती वसंतकुसुमाकर गुलबनफ्शा के काढ़े से दिया। दो हफ्ते में दोनों चीजें ठीक हो गईं। हमने कहा 'कौन कहता है आपके टी० बी० के पैच हैं, फिर जाकर दिखाना।' दो महीने निरंतर बसन्त कुसुमाकर का सेवन करने के पश्चात् उन्हें लखनऊ जाने का अवसर मिला। वहां उन्होंने फिर एक्सरे कराया। पैच न निकले। वे अत्यन्त हर्षित हुए। ऐसी दशा में बेकार एकदम टौन्सिलों को कटवा कर फेंक देना कहां तक युक्तिसंगत है ? पाठक विचार करें।

एक ५ साल की लड़की की गले के ग्रन्थियां काफी बढ़ गई थीं. डाक्टर ने कहा कटवाने से ठीक होंगी। हमने एक हफ्ते एक गुप्त प्रयोग किया। तीन पत्ते जंगली बेल के कूट कर गुड़ से एक बार प्रातःकाल खिलाये। कांचनार की छाल का जल पीने को दिया। इसी से भावित जल से स्नान की व्यवस्था की। इसी का लेप गिल्टियों पर लगवाया। दूध से मुक्ताप्रवाल पंचामृत भोजनोपरान्त दिया। कंठमाला दूर हो गई। डाक्टर ने कहा शस्त्रचिकित्सा की अब आवश्यकता नहीं। क्या ही अच्छा टोटका यह लेखक महोदय की दृष्टि में है ? निरर्थक ही एकाएक चीर-फाड़ करो।

एक स्त्री के पित्ताशय में पथरी थी। वे भैषज्य रत्नावल्योक्त चंद्रप्रभागुटिका वीरवर्त्तादि क्वाथ के अनुपान से चूर-चूर होकर निकल गईं। ऐसी स्थिति में चीर-फाड़ जबरदस्ती करना कहां तक ठीक है विद्वान पाठक विचारें। एक्सरे कराया गया सब पथरियां लुप्त। कहां तक उदाहरण दें।

शल्यकर्म और कायचिकित्सा से वैद्य लोग क्यों विमुख रहेंगे। ये चीजें तो सरकारी सहायता के बिना चालू नहीं हो सकतीं। जब विदेशी सरकार थी तो वैद्य लोग इसकी कैसे शिक्षा पाते ? उन्हें प्रोत्साहन ही न मिला। ये तो भारत की अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पत्ति हैं। उन्हें आत्मसात नहीं करना है वरन् फिर से चालू करना है। यह क्या वैद्यों ने कम किया जो संकट काल में अपनी संस्कृति कायम रखी। आयुर्वेद की सर्जरी उसी के सिद्धान्तों पर हो न कि उसे ऐलोपैथी का जामा पहिनाया जाय।

क्या वे वैद्य कहलाने के योग्य नहीं हैं जो अब तक भारत की जनता का स्वास्थ्य बनाये रखे हैं, जो अब तक हजारों रोगियों को ठीक करते आये हैं। जब प्रमाणित संस्थाओं के वैद्य भी शल्यकर्म और काय-चिकित्सा के समुचित पंडित नहीं हैं तो अन्य वैद्य कैसे अल्पज्ञ हैं और वैद्य कहलाने के योग्य नहीं हैं। शल्य और कायचिकित्सक और औषधि से ठीक करने वाले दोनों ही आयुर्वेद के अलग २ विभाग के विशेषज्ञ हैं। यदि कोई दोनों विभागों का विशेषज्ञ हो तो सोने में सुगन्ध। जो वैद्य कई सालों [५,१०,१५ वर्षों] से रोगियों को ठीक करते आया है उसे चिकित्सा करने से रोकना उसकी महान सेवाओं के प्रतिकूल है। हां, वह शल्यकर्म करने से रोका जा सकता है, जिसकी उसने शिक्षा-दीक्षा नहीं पाई है। इसमें उसे कुछ मलाल न होगा। फिर यह नियम आज तक के सभी वैद्यों पर लागू होना चाहिए, क्योंकि किसी भी वैद्य की इस दिशा में समुचित शिक्षा नहीं हुई है जैसे कि लेखक महोदय स्वयम् स्वीकार करते हैं। वैद्य का माप दंड इस प्रकार न बढ़ेगा वरन् इस प्रकार बढ़ेगा कि दो प्रकार के वैद्य हों, एक केवल चिकित्सक और एक शल्यशास्त्रज्ञ, अथवा शल्यशास्त्रज्ञ तथा चिकित्सक। इन दोनों शाखाओं का शिक्षण विशेष रूप से हो।

क्या डाक्टर सूचीपत्री नहीं होते? कोई भारतीय डाक्टर पेनिसिलिन, ६६३ एम.बी., सल्फाग्वानाडीन आदि औषधियां बना सकता है। वह तो वैद्य से भी अधिक सूचीपत्रों पर काम करता है। कोई डाक्टर अपनी पद्धति की सामान्य से सामान्य औषधि बना कर दिखादे। रात दिन काम में आने वाली चीज़ें यथा ऐक्रैफ्लेबिन, बोरिक एसिड, जिंक औक्साइड, पोटास अयोडाइड, आयोडीन, ग्लिसरिन आदि साधारण औषधि कोई डाक्टर बना कर उपस्थित कर सकता है? वैद्य में यह क्षमता है। बनी हुई मौलिक वस्तुओं को सम्मिश्रित कर कोई नुसखा तैयार कर देना, हर कोई भी फरमाकोपिया के आधार पर, जान सकता है। इसी का नाम वास्तविक प्रगति है? आयुर्वेद के अपने सिद्धांत हैं वह औषधि से उच्च स्थान सर्जरी को कैसे दे सकता है?

आयुर्वेद की औषधियों की रचना में और ऐलोपैथी की औषध-रचना में महान् अन्तर है। आयुर्वेद की सम्पूर्ण भस्मों और जड़ी-बूटियों को एक साथ मिश्रित कर दीजिये फिर भी उनमें कोई दोष (Incompitabiliy) उत्पन्न न होगा। उसकी वही दवा वाह्य और आभ्यन्तरिक रूप से दी जा सकती है। कोई डाक्टर ५३ औषधियों को एक साथ मिला कर नुसखा लिखदे। आयुर्वेद का एक सामान्य सुदर्शन चूर्ण ही ५३ औषधियों का बना होता है। मिश्रण का ऐलोपैथी में कितना बखेड़ा है। आंख में कुछ रोग है वही त्रिफला खाइये और वही आंखों में प्रयोग भी कीजिए। तुत्थक भस्म खाइये भी और वाह्य प्रयोग में भी लाइये। चाँदी की भस्म वाह्य, तथा आभ्यन्तरिक प्रयोग में लाइये। ताम्र,संखिया,हरताल,लौह, गंधक मनसिल, जस्त, सीसा, रांगा, सुहागा, पारा, सोना, मीठा विष,मोती, शंख, कौड़ी, सीप, मूंगा, हाथी-दांत, शृंग, शिलाजीत, नारायण तैल, गूगल, माष तैल, शुभ्राभस्म, नीम-गिलोय, अड़ूसा आदि आदि सैकड़ों दवायें हैं जिन्हें बाहर और भीतर दोनों प्रकार से प्रयोग कीजिये। क्या ऐलोपैथी में ऐसा है? क्या उसका ऐसा उत्तम औषध-संगठन है? इसी प्रगति को देख कर लेखक महोदय वैद्यों को अल्पज्ञ बताते हैं। जब आयुर्वेदिक औषधियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न भावनाओं और पुटों से ऐसी बना दी जाती हैं कि उनका मुख द्वारा प्रयोग वही गुण करता है जो ऐलोपैथिक औषधि सूची भेदन से दर्शाती है, बल्कि उससे भी उत्तम, तो सूचीभेदन क्रिया को प्रयोग में लाना बेकार नहीं तो क्या है ? ऐलोपैथी में अधिकांश ऐसी दवायें हैं जो कोई तो मुख द्वारा ही दी जाती हैं और कोई इन्जेकशन से ही। क्योंकि दोनों विधियों से वे अलग अलग रस, गुण, विपाक को प्राप्त होती हैं। इंजैक्शन का आयुर्वेद में बहिष्कार नहीं है, किंतु यदि ऐलोपैथिक औषधि इसी आधार पर बनी होतीं जिस पर कि आयुर्वेदिक, तो डाक्टर लोग भी इन्जेकशन-विधि को उतना महत्व न देते। पर वे तो लाचार हैं और वैद्य को भी बरबश इन्जेकशन-क्रिया को महत्व देने के लिये बाध्य किया जाय जब कि वह अपना काम सुचारू रूप से औषधि-द्वारा ही कर लेता है। वैद्य रोज मरहम पट्टी क्यों करें जब सारे ड्रेसिंग का काम उसका एक मलहम ही कर सकता है ? यदि लोग घुटकिले बाज वैद्य से ही ठीक होजाते हैं तो वे इन्जेकशन और आपरेशन के चक्कर में क्यों पड़ें ? जब रक्तार्श बावली घास से ही ठीक हो सकती है तो जनता आपरेशन क्यों करावे ? पुराने रोगों में जिनमें डाक्टरी औषधि बहुत दिनों सेवन करनी पड़ती है ऐलोपैथिक दवा की प्रगति का पता चलता है जब कि एक रोग को कम करके वे दूसरा रोग शरीर में बिठा देती हैं। दमा में एटौक्सिल स्वामीन, कैफिन-एस्परिन आदि के इन्जेकशन एक ओर दमा को कुछ दबाते हैं तो दूसरी ओर हृदय और वातनाड़ियों को भारी कमज़ोर कर डालते हैं। ज्वर को उतारने में कैफिन-एस्परिन एक ओर पसीना लाकर ज्वर वेग कम करता है तो दूसरी ओर हृदय के कार्य के स्थगित होने का भय रहता है। आयो-डिज्म, कुनीनिज्म आदि बीमारियां इन्हीं के सेवन से तो उत्पन्न होती हैं। कभी किसी ने सितोपलादिज्म, सुदर्शनइज्म, मोतीइज्म, स्वर्णइज्म आदि नाम भी सुने हैं ? अतः जो लोग अधिक समय से वैद्यक करते आये हैं उन्हें वैद्य कहलाने और चिकित्सा करने से कदापि न रोका जाना चाहिये।

इस वर्ष के साधारण अंक

समाप्त हो गये हैं, अतः नवीन ग्राहक नहीं बना सकेंगे। गुप्त-सिद्ध-प्रयोगांक की कुछ प्रतियां शेष हैं। मूल्य पोस्ट व्यय सहित ५) है। शीघ्र मंगा लीजियेगा अन्यथा फिर दूने मूल्य को भी नहीं मिल सकेगा।

व्यवस्थापक- 'धन्वन्तरि' विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रस गुण वीर्य विपाक और प्रभाव

डॉ. श्री. पं. कृष्ण प्रसाद त्रिवेदी B.A. आयुर्वेदाचार्य

[गतांक से आगे]

प्रभाव —

रस वीर्य विपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते ।
विशेषः कर्मणां चैव प्रभावः स्तस्य स स्मृतः ॥
—चरक ।

अर्थात जिन द्रव्यों में रस, वीर्य और विपाक समान होने पर भी जहां कर्म में विशेषता मालूम पड़े, वहां उस विशेषता का कारण उस द्रव्य के प्रभाव को ही माना जाता है।

वाग्भट जी भी यही कहते हैं —

'रसादि साम्ये यत्कर्म विशिष्टं तत्प्रभावजम् ।'

अर्थात् रसादि की समानता होने पर भी जो किसी द्रव्य द्वारा विशेष कार्य होता है वह उसके प्रभाव से ही होता है।

द्रव्य अपनी जो विशेष क्रिया करता है, किसी स्थानीय विकृति को हटाता है, या किसी दोष को नष्ट करता है, यह उसका प्रभाव ही है, जलज मांस मधुर होते हुये शीत वीर्य न होकर उष्ण वीर्य होते हैं। यह भी उनका प्रभाव ही है। दंती और चित्रक दोनों द्रव्य कटु रस, कटु विपाक और उष्ण-वीर्य हैं। अतः दोनों का गुण भी समान होना चाहिये था किंतु चित्रक विरेचक या दस्तावर नहीं है, और दन्ती दस्तावर है, यह इसका प्रभाव है। स्थावर विष जंगम विष को नष्ट करता हैं, तैसे ही जंगम विष स्थावर विष का नाशक है। यह भी उनका भिन्न २ प्रभाव ही है। स्थावर या जंगम दोनों विष होते हुए भी एक का अधोगामी होना और एक का (जंगम का) ऊर्ध्वगामी होना यह उनका प्रभाव नहीं तो और क्या है? कोई २ औषधियां ऐसी हैं, कई मणि रत्न आदि भी ऐसे हैं जो केवल शरीर पर धारण करने से ही इष्ट या अनिष्ट कार्य को करते हैं। यह उनका प्रभाव ही है। संक्षेप में कह सकते हैं कि द्रव्यों में जो विशेष कार्यकारी शक्ति पाई जाती है, जिसका विशेष कारण ज्ञात नहीं होता ऐसी अचिंत्य शक्ति को ही प्रभाव कहते हैं कहा है—

"प्रभावोऽचिन्त्य उच्यते"।

विष विषघ्न क्यों है? मदन फल वामक क्यों है? अमलतास, जयपाल विरेचक क्यों है? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर देना कठिन है। जहां पर वही उन २ द्रव्यों के अचिंत्य शक्ति स्वरूप प्रभाव को ही कारण मानना पड़ेगा। जैसा कि कहा है—

"विषं विषघ्नमुक्तंयत् प्रभावस्तत्र कारणम् ।"
—चरक ।

मधुक (महुआ) और द्राक्षा रसादि में सम हैं पर द्राक्षा विरेचक है। मधुक ऐसा नहीं है। घृत और क्षीर रसादि में सम है, किन्तु घृत दीपन है, क्षीर दीपन नहीं। यथा—

"मधुकस्य च मृद्वीका घृतं क्षीरस्य दीपनम् ।"

यह सब प्रभाव का ही कारण है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे ही कुचला और अफीम रस गुण वीर्य-विपाक में समान होते हुए भी प्रभाव में परस्पर विरुद्ध हैं। अफीम निद्राजनक तथा अवसादक है, किंतु कुचला निद्राहारक और उत्तेजक है।

आधुनिक वैज्ञानिकों की समझ में यह प्रभाव विषयक बात नहीं जंचती। जंचे कैसे? अचिन्त्य जो है। आधुनिक सूक्ष्म से सूक्ष्म यंत्रादि द्वारा वे चाहे जितनी खटपट करें, वे नहीं मालूम कर सकते कि दो द्रव्यों के गुणादि, सत्वादि समान होते हुए भी वे भिन्न २ एवं विरुद्ध कार्य क्यों करते हैं? आमलकी और लकुच दोनों में समान रस, गुण होते हुए भी आमलकी त्रिदोषघ्न है और लकुच त्रिदोषवर्धक है। ऐसा क्यों होना चाहिये? इसका उत्तर जब प्राचीन वैज्ञानिक ही नहीं दे सके तो आधुनिक वैज्ञानिक क्या दे सकते हैं। इसे सिवाय प्रभाव (Miraculous power) के और क्या कहा जावे।

द्रव्य का अर्थात् द्रव्यान्तर्गत सार भाग रूपी रस का शरीर पर, सर्व सामान्य शीतादि परिणाम होता है। किंतु जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं, कई द्रव्य ऐसे हैं जो शरीर के सर्व भागों में अपना सर्व-सामान्य कार्यों को करते हुए भी किसी एक भाग में वही कार्य विशेष प्रकार में, विशेष परिणामकारी रूप में करते हैं। ध्यान रहे, रोग चिकित्सा में द्रव्य के इस कार्य या प्रभाव का विशेष महत्व है। रोगोत्पादक कारणों से शरीर भर में सामान्य विकृति होती है, किंतु किसी स्वतंत्र रोग की उत्पत्ति स्थान विशेष की विकृति से ही हो जाती है। अतः रोग चिकित्सार्थ ऐसी औषधियों की आवश्यकता होती है, जिनका परिणाम स्थान विशेष पर प्रमुखता से होकर स्थानीय विकृति नष्ट हो जाय। इसी लिये आयुर्वेद-चिकित्सा के हेतु प्रत्यनीक और व्याधि प्रत्यनीक ऐसे दो मुख्य प्रकार हैं।

सर्वसाधारण शारीरिक विकृति या दोष प्रकोप किसी भी रोग का कारण हो सकता है (सर्वेषामेव-रोगाणां कारणं कुपिता मलाः)। अतः इस विकृति को मर्यादित करना यही हेतु प्रत्यनीक (हेतु-विपरी[त]) चिकित्सा है। यह कार्य द्रव्य के वीर्य (Effica[cy] of potency) से ही संपन्न हो जाता है।

किंतु सामान्य कारणों के द्वारा ही विशि[ष्ट] स्थान में हुआ विशिष्ट परिणाम रूप रोग, हे[तु] विपरीत चिकित्सा द्वारा पूर्णतया नष्ट नहीं हो[ता] इस चिकित्सा का उस पर प्रत्यक्ष परिणाम न[हीं] होता। इस पर तो स्थान विशेष की विकृति को दू[र] करने वाली व्याधि प्रत्यनीक (व्याधि विपरीत) चिकित्सा ही विशेष कारगर होती है। इस चिकित्[सा] के लिये ऐसे द्रव्यों की आवश्यकता होती है जो उ[स] स्थान पर अपना विशेष कार्य करता है। इस प्रका[र] का उसका विशेष कार्य ही उसका प्रभाव कह[ा] लाता है।

चिकित्सा कार्य में रोग विनिश्चयार्थ स्था[न] वैगुण्य या किस स्थान में कौन विकृति हुई है य[ह] जान लेना जैसे परमावश्यक है, वैसे ही औषधि[-] गुण निश्चयार्थ औषधि के प्रभाव को जान लेना भ[ी] परमावश्यक है। तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, पाचन आदि गुण युक्त कोई द्रव्य शरीर में उष्णता, तीक्ष्णता आदि गुणों को बढ़ाते हुये सर्व शरीर में पाचक, वियोजक, उत्सर्जक आदि अपना व्यापक का[र्य] करता है। किंतु शरीर में स्वेदावरोध की अवस्था में स्वेद वियोजन करना, या मूत्रावरोध की अवस्था में मूत्र को निकालना, पित्तावरोध की दशा में पि[त्त] वियोजन करना, मलावरोध की हालत में मलोत्स[र्]जन कराना इत्यादि कार्यों को भिन्न २ द्रव्य अपने प्रभाव द्वारा ही किया करते हैं।

विशेष विस्तार के भय से प्रभाव वर्णन ह[म] यहीं समाप्त कर, परिशिष्ट में द्रव्य के विषय में कु[छ] विवेचन किये देते हैं। कारण रस, वीर्य, विपा[क] और प्रभाव ये सब द्रव्य के ही आश्रय से रहते हैं और कहा भी है—

"द्रव्यमेव रसादीनां श्रेष्ठं तेहि तदाश्रयाः।"
— वाग्भट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस के ६३ भेद

(उदाहरण सहित नकशा)

रस भेद	उदाहरण	संख्या
१ मधुर	मलाई, गोदुग्धादि	१
२ अम्ल	करौंदा, इमली आदि	२
३ लवण	सेंधा नमकादि	३
४ तिक्त	नीम, चिरायतादि	४
५ कटु	मिर्च, चव्यादि	५
६ कषाय	न्यग्रोध, खदिरादि	६
१ मधुराम्ल	कपित्थ फलादि	७
२ मधुर लवण	ऊंटनी का दूध आदि	८
३ मधुर तिक्त	गूगल, राल आदि	९
४ मधुर कटु	कुक्कुट शृंगाल मांसादि	१०
५ मधुर कषाय	तैल धामिनी फलादि	११
६ अम्ल लवण	क्षार मृत्तिकादि	१२
७ अम्ल तिक्त	मद्यादि	१३
८ अम्ल कटु	चूका [चुक्र] आदि	१४
९ अम्ल कषाय	हथिनी का दूध, दही आदि	१५
१० लवण तिक्त	रांगा सीसा आदि	१६
११ लवण कटु	गोमूत्र, सज्जीखार आदि	१७
१२ लवण कषाय	समुद्रफेनादि	१८
१३ तिक्त कटु	कपूर, जातीफलादि	१९
१४ तिक्त कषाय	लवलीफलादि	२०
१५ कटु कषाय	भल्लातक मज्जा हरताल आदि	२१
१ म० अ० ल०	हस्तिनी मांसादि	२२
२ म० अ० ति	गेहूँ की मद्यादि	२३
३ म० अ० कटु	शल्य मांसादि	२४
४ म० अ० कषाय	मस्तु तक्रादि	२५
५ म० ल० ति०	शंबूकादि मांसम्	२६
६ म० ल० कटु	अपूपादीनि	२७
७ म० ल० कषाय	ताप्य कासीसादि	२८
८ म० ति० कटु	कटुकाम्ल भक्तादि	२९
९ म० ति० कषाय	गुडूच्यादि	३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस भेद	उदाहरण	संख्या
१० म० कटु कषाय	एरण्ड तैलादि कफ	३१
११ अ० ल० ति०	हस्ति मृग मूषादि	३२
१२ अ० ल० कटु	रौप्य शिलाजत्वादि	३३
१३ अ० ल० कषाय	हस्तिनी दधि	३४
१४ अ० ति० कटु	मरिच संस्कृत सुरादि	३५
१५ अ० ति० कषाय	करिमांस युत सुरादि	३६
१६ अ० कटु कषाय	अम्लवेतसादि	३७
१७ ल० ति० कटु	अविमूत्रम्	३८
१८ ल० ति० कषाय	समुद्रफेनम् समुद्रस्थितम्	३९
१९ ल० कटु० कषाय	भल्लातकासव, सांभर नमकादि	४०
२० ति० कटु० कषाय	देवदार, कृष्णगुरु आदि	४१
१ म० अ० ल० तिक्त	गौमूत्रैकशफ क्षीरादि (गौमूत्र, घोड़ी आदि का दूध)	४२
२ म० अ० ल० कटु	गोमूत्र मिश्रित शिलाजीतादि	४३
३ म० अ० ल० कषाय	सेंधव मिश्रित तक्रादि	४४
४ म० अ० ति० कटु	लहसुन मिश्रित मद्यादि	४५
५ म० अ० ति० कषाय	शंखादि	४६
६ म० अ० कटु० कषाय	कांजी मिश्रित रेंडो तैलादि	४७
७ म० ल० ति० कटु	गूलर फल मिश्रित यवादि	४८
८ म० ल० ति० कषाय	समुद्रफेन और शक्कर युक्त चन्दन	४९
९ म० ल० कटु० कषाय	गोमूत्र मिश्रित तैलादि	५०
१० म० नि० कटु० कषाय	तिल गुग्गुलादि	५१
११ अ० ल० ति० कटु	सेंधव सौबर्चल मिश्रित मद्यादि	५२
१२ अ० ल० ति० कषाय	नोनिया खार मिश्रित मांसादि	५३
१३ अ० ल० कटु० कषाय	कालानोन मिश्रित दधि आदि	५४
१४ अ० ति० कटु, कषाय	खस मूली मिश्रित दधि आदि	५५
१५ ल० ति० कटु, कषाय	सांभर नोन मिश्रित कच्चे बेल फलादि	५६
१ म० अ० ल० नि० कटु	करोंदा मिश्रित बैंगन का भर्त्ता	५७
२ म० अ० ल० नि० कषाय	नोनिया खार मिश्रित तक्रादि	५८
३ म० अ० ल० कटु० कषाय	त्रिकटु मिश्रित तक्रादि	५९
४ म० अ० ति० कटु० कषाय	हरीतकी आदि	६०
५ म० ल० ति० कटु० कषाय	लहसुनादि	६१
६ म० ल० ति० कटु० कषाय	भिलावा शिलाजीत मिश्रित निम्बादि	६२
७ अ० ल० नि० कटु० कषाय	पारद	६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौरुष-ग्रन्थि-शोथ।

[परामर्श नं० २१ का उत्तर]

आपके रोगी को "पौरुष ग्रंथि शोथ" [Inflamation of the prostate gland] है। अब मैं आपको इस ग्रन्थि के बारे में विस्तृत रूप से बतलाना चाहता हूँ। इस ग्रन्थि का आकार अखरोट के समान होता है और यह वस्ति गह्वर में मूत्राशय की गर्दन के चारों ओर लिपटी रहती है। मूत्रमार्ग इस ग्रन्थि के बीच में से होकर नीचे की ओर जाता है, मलाशय इसके सामने रहता है। यदि इस ग्रन्थि का स्पर्श करना हो तो गुदा के भीतर अङ्गुली डालकर किया जा सकता है। यह ग्रंथि अपना अलग ही महत्व रखती है। जब पुरुष को मैथुनेच्छा होती है तब से लेकर मैथुन क्रिया की समाप्ति तक यह ग्रन्थि क्रियाशील रहती है। जब कामेच्छा होती है तो इस ग्रन्थि में से स्राव स्रवित होकर नीचे की ओर मूत्र मार्ग में आजाता है ताकि मूत्र मार्ग की शुद्धि हो जावे। इस द्रव की प्रतिक्रिया क्षारीय होती है तथा रंग पतला दूधिया होता है, साथ ही साथ इस द्रव में एक विशेष प्रकार की मदकारी गन्ध होती है जो स्त्री और पुरुष को मैथुन के लिए और भी उत्तेजित करती है। मूत्र मार्ग में यदि मूत्र का कोई बिन्दु रहता है तो वह इस तरल के साथ बाहर आजाता है तथा उस द्रव के क्षारीय होने के कारण मूत्र की अम्लता नष्ट हो जाती है ताकि कुछ ही समय पश्चात् गुजरने वाले शुक्र कीटों को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचे और वह शुद्ध रूप में गर्भाशय में प्रवेश कर सकें। इस द्रव का दूसरा लाभ यह है कि इससे मूत्र मार्ग चिकना हो जाता है और गाढ़े वीर्य को निकलने में कोई कष्ट नहीं होता। यदि इस पौरुष ग्रन्थि के स्राव द्वारा मूत्र मार्ग चिकना न हो जावे तो वीर्य निकलते समय पुरुष को भयङ्कर वेदना हो सकती है।

कई कारणों से इस ग्रंथि में शोथ हो जाती है। वैसे भी ५० वर्ष की आयु में जाकर यह ग्रंथि अपने उचित परिमाण से बढ़ जाती है। इसके शोथ युक्त होने अथवा बढ़ जाने से मूत्र मार्ग पर दबाव पड़ता है, जिस कारण मूत्र रुक २ कर तथा वेदना के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ आने लग जाता है। आजकल ६० प्रतिशत वृद्धों को इस रोग की शिकायत रहती है, क्योंकि अपने यौवन काल में विलासी जीवन व्यतीत करके उन्होंने अपनी पौरुष ग्रंथि से अत्यधिक कार्य लिया होता है। अथवा जिन्हें सुजाक (पूयमेह) हो चुका हो उनकी तो प्रायः यह ग्रंथि बढ़ ही जाती है। जब रोगी को पेशाब खुलकर नहीं होता तो पहले पहल मूत्राशय के मूत्र से भर जाने पर उसके मूत्राशय पर दबाव पड़ता है। बार २ पेशाब जाने की इच्छा होती है किन्तु जब पेशाब करने रोगी बैठता है तो पेशाब नहीं उतरता। धीरे २ वृक्कों पर दबाव पड़ता है और ऐसा भास होता है कि वृक्कशूल भी हो रहा है। कमर में और वृक्क-स्थानों पर स्थाई रूप से वेदना रहने लग जाती है।

अब इसकी चिकित्सा के विषय में कुछ बतलाना चाहता हूं कि सिवाय आयुर्वेदिक पद्धति के किसी भी पद्धति से इसकी चिकित्सा करने अथवा करवाने से सफलता नहीं मिलती। मैं आपको केवल एलोपैथी की चिकित्सा का संक्षिप्त रूप से वर्णन करता हूं। एलोपैथी में इस रोग के लिए कोई विशेष औषधि नहीं है। वह केवल रबर नलिका [Rubber Catheter] द्वारा दिन में ३-४ बार मूत्राशय से मूत्र निकाल देते हैं और साथ ही पौरुष ग्रंथि सत्व [Extract Prostate Gland] की गोलियां भी खिलाना आरम्भ कर देते हैं। इस चिकित्सा से अधिक से अधिक १० प्रतिशत रोगियों को २०-२५ दिन में लाभ हो जाता है। जिन रोगियों को उपर्युक्त चिकित्सा से लाभ नहीं होता उनके लिये आपरेशन करवा कर इस ग्रंथि को निकलवा देने की सलाह दी जाती है। इस वृद्धावस्था में आकर आपरेशन करवा कर रोग-मुक्ति प्राप्त करना कठिन होता है। बड़े से बड़े एलोपैथी विशेषज्ञ [Specialist] की यही राय होगी कि सिवाय आपरेशन के और कोई चिकित्सा नहीं है।

अब मैं इस रोग की आयुर्वेदिक चिकित्सा आपके समक्ष रखता हूँ, जो अत्यन्त सरल तथा सुलभ है और जिससे ७५ प्रतिशत लाभ होता है।

१—सर्व प्रथम जब रोगी आवे और उसका पेशाब बन्द हो तथा कमर और वृक्क स्थानों में भयङ्कर वेदना अनुभव करता हो तो तुरन्त रबर कैथेटर द्वारा उसका मूत्र निकाल देना चाहिये। कैथेटर प्रयोग करने से पूर्व गरम पानी में १० मिनट तक उबाल कर शुद्ध कर लेना चाहिये। आवश्यकतानुसार इस प्रकार दिन में २-३ बार ४-५ दिन तक मूत्र निकालते रहना चाहिए। पश्चात् अपने आप मूत्र आना आरम्भ हो जावेगा।

२·कटि स्नान—

किंशुक पुष्प [टेसू के फूल]	१ पाव
जल १५ सेर	शेष १३ सेर

गरम २ इस पानी को टब में डाल दें और निवात स्थान में रखकर रोगी को इसमें बिठावें। पानी इतना गरम हो जितना रोगी सहार सके। टब में बैठते समय रोगी को अपने सब कपड़े उतार देने चाहिये तथा लोटा लेकर उसी गरम पानी को अपने पेडू प्रदेश तथा कमर पर डालते रहना चाहिये। रोगी पानी के ठण्डा होने तक उसमें बैठा रहे। वहां बैठे २ उसे सारे शरीर पर पसीना भी आ जावेगा, अतः टब में से निकल कर तुरन्त ही उसे बाहर नहीं आ जाना चाहिए। तौलिए से सारे शरीर को पोंछकर कपड़े पहन ले, पश्चात् बाहर निकले।

३-गोक्षुरादि गुग्गुल	१ माशा
चन्द्रप्रभा वटी	२ गोली
गोक्षुरु क्षार	४ रत्ती

तृण पञ्चमूल क्वाथ से प्रातः ८ बजे, दोपहर २ बजे, सायं ८ बजे।

४--भोजनोत्तर दोनों समय लशुनादि वटी २ गोली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण रोग : :

ले०—श्री. जयपालसिंह जी चौहान, गोपालपुर (अलीगढ़)

अजीर्ण को हम दो भागों में विभक्त करते । एक शारीरिक दूसरा मानसिक ।

शारीरिक अजीर्ण बहुधा निम्नांकित कारणों से होता है। अधिक जल पीना, असमय और अनियमित भोजन करना, मल मूत्र छींक डकारें वायु आदि वेगों को रोकना है और रात्रि को अधिक देर तक जागना, दिन को अधिक सोना आदि ।

मानसिक अजीर्ण निम्नांकित कारणों से होता है। ईर्षा, द्वेष, भय, चिन्ता, शोक, क्रोध. अधिक बोझ उठाना और दुख शोक निर्धनता आदि ।

संक्षिप्त में उपर्युक्त दोनों प्रकार के अजीर्णों को हम तीन भागों में विभक्त करते हैं अर्थात् आम, विदग्ध तथा विष्टब्ध।

आम अजीर्ण के लक्षण —

खाये हुए भोजन का रस जब जठराग्नि की दुर्बलता के कारण नहीं पचता तो उसके द्वारा अनेक प्रकार के अन्य रोग हो जाया करते हैं, जैसे शरीर के सम्पूर्ण अङ्गों में विशेषकर पृष्ठ भाग [पेट का हिस्सा] भारी होना, जी मिचलाना, आंखों और गालपटों पर साधारण सी सूजन होना, जिस प्रकार का खट्टा या मीठा भोजन खाया हो उसी प्रकार की डकारें आना आदि ।

चिकित्सा—

इस प्रकार के अजीर्ण में सबसे प्रथम वमन [क़य] कराना लाभकारी है और उसके लिए सैंधा नमक १ तोला, मैनफल ६ माशा सबको १ गिलास जल के साथ मिलाया जाय और थोड़ा-थोड़ा देने से क़य [वमन] होती हैं और सब कफ निकल जाता है और कफ के निकलने से कफ जन्य अजीर्ण शांत हो जाता है। आम अजीर्ण कफ की अधिकता से होती है।

आम अजीर्ण नाशक प्रयाग—

गँधक वटी, चित्रकादि वटी, शंख वटी
अजीर्ण गज केशरी चूर्ण, कुमार्यासव
अमृत हरीतकी, अग्निकुमार रस
अग्नितुण्डी वटी, उदरामूल
हिंग्वाष्टक चूर्ण

इस रोग के आजमूदा प्रयोग हैं। निम्नलिखित हमारा पेटेण्ट प्रयोग रामबाण चूर्ण बहुत उत्तम प्रमाणित है।

हर्र का बक्कुल	आमला	सोंठ
बहेड़े का बक्कुल	मिर्च सफेद	निशोथ
अजवायन	चीते की जड़ का बकला	
अमलवेत	जीरा सफेद भुना	जीरा स्याह
अनारदाना सूखा	सौंफ भुनी	सनाय
अजमोद	बायविडंग	पीपरामूल
धनिया	बड़ी इलायची दाना	
पीपर छोटी	समुद्र नमक	काला नमक
जवाखार	तेजपात	—प्रत्येक ३-३ माशा
हींग भुनी		१॥ माशा
नागकेसर असली		१॥ माशा
सोडा खाने का		६ माशा

उपर्युक्त चिकित्सा से १ मास में पूर्णतया लाभ हो जावेगा।

नोट—लेख में लेखक का नाम नहीं लिखा हुआ था। इसके साथ ही लेखक का पत्र भी मिला था। त्रुटि से पत्र अस्त-व्यस्त हो गया। अतएव लेखक का नाम प्रकाशित नहीं किया जा सका। ——सम्पादक।

—×—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत नीबू	६ माशे
नौसादर	१ तोला
दालचीनी	१॥ माशा
मनिहारी नमक	सांभर नमक
नमक सेंधा	—तीनों १-१ माशा

—सबका चूर्ण करलें। मात्रा – ३ माशा।

गुण—आम, अजीर्ण, मंदाग्नि, वायु गोला, यकृत की खराबी, आमाशय के रोग, आंतों की कमजोरी, पेचिस दूर होती है।

अनुपान—अर्क सौंफ या गर्म पानी से लें।

विदग्ध-अजीर्ण —

यह बहुधा गर्म और तीक्ष्ण पदार्थों के खाने से होता है और पित्त की अधिकता से होता है। इसके द्वारा प्यास की अधिकता, मूर्च्छा, बेचैनी उत्पन्न होती है। पेट में धुआं सा उठता है तथा गले व मस्तिष्क की ओर आता है। छाती में जलन उत्पन्न होती है। विदग्ध-अजीर्ण की दशा में उपवास अत्यन्त हितकारी है। केवल ताजा पानी दिन में दो-तीन बार पीना चाहिये।

सफेद जीरा	छोटी इलायची के दाने
अनारदाना	आलू बुखारा
भुना हुआ मुनक्का	—पांचों १-१ तोला

—सबको मिला कर बारीक पीस लें, फिर उसमें आवश्यकतानुसार नमक मिलावें और चटनी बनावें। फिर उसे थोड़ा-थोड़ा चाटें। इसके द्वारा विदग्ध-अजीर्ण शान्त होता है।

ऐलादि चूर्ण —

सूखा पोदीना	४ माशा
इलायचीदाना	४ माशा
दालचीनी	३ माशा
तालीसपत्र	३ माशा

—इन सबके समान मिश्री मिलाकर चूर्ण बनावें। मात्रा–३ माशे अर्क सौंफ से दें, और —

अर्क पुष्पादि वटी—

—आक के फूलों की लौंग २ तोला मिर्च स्याह ६ माशा, नमक सेंधा ३ माशा, चूर्ण कर अर्क सौंफ से गोली बनावें, अर्क सौंफ से ही खावें लाभ होगा।

निम्नलिखित उदर सुधा इसके लिये उत्तम है।

उदर-सुधा —

उत्तम गुलाबजल		१२॥ तोला
चूने का पानी		अर्क केवड़ा
सन्तरे का रस		अद्रक का रस
कागजी नीबू का रस		६।-६। तोला
मिर्च स्याह		१ माशा
कुलींजन	हाउबेर	जीरा स्याह
चीते की जड़		१॥-१॥ माशा
सौंफ	सोंठ	पिपरमेंट
जीरा सफेद भुना		हींग भुनी
	—प्रत्येक ६-६ रत्ती	
नमक स्याह		२ तोला

विधि–पहिले की ६ चीजों का रस चूने का पानी समेत १ बोतल में करलें। फिर सिवा केशर, पिपरमेंट के सब दवायें कूट-छान कर सबके रसों में डाल दो, फिर ऊपर केशर, पिपरमेंट डाल दो, और १ हफ्ते तक रखदो। बाद में काम में लाओ।

मात्रा–२ तोला सुबह शाम या भोजन के बाद लें।

विष्टब्ध-अजीर्ण —

पादने (अधोवायु) या पाखाने की हाजत रोकने से विष्टब्ध-अजीर्ण हो जाता है। इससे कुपित वायु बढ़कर अनेक विकार उत्पन्न करता है। जैसे पेट का दर्द अफरा, सम्पूर्ण अंगों व प्रत्यंगों में पीड़ा होना तथा जोड़ों में दर्द होना, अंगों में टूटन उत्पन्न होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि। विष्टब्ध-अजीर्ण के रोगी को खूब पसीने देने चाहिए। इसका उपाय यह है कि रोगी को नंगा करके केवल एक कपड़ा उढ़ा कर लिटा दिया जाय, फिर खौलते हुए पानी को उसके समीप रखकर पानी की भाप रोगी के शरीर में लगने दी जाय। इस क्रिया से रोगी को खूब पसीना आयेगा। देखिये पसीने के समय हवा न लग जाय, अन्यथा हालत खराब हो जायगी। विष्टब्ध-अजीर्ण वायु की अधिकता से होता है।

सुण्ठ्यादि चूर्ण—

मिर्च स्याह सोंठ सैंधा नमक
भुना सफेद जीरा अजमोद
भुनी हींग —प्रत्येक समान भाग लें,

और ३ माशा जल से लें। हिंग्वादिवटी, शंखवटी, हिंग्वाष्टक चूर्ण प्रयोग करें।

निम्नलिखित वृ० गंधक वटी भी लाभकारी है—

शुद्ध गंधक	४ तोले
निशोथ का बक्कुल	१ तोला
सोंठ	मिर्च स्याह
सैंधा नमक	भुना सफेद जीरा
अजमोद	भुनी हींग

—इन सबको समान भाग लें और झरबेरी के बेर समान गोली नीबू के रस या सहजने की छाल के काढ़े से बनालें। गर्म पानी या कुमार्यासव से लें, लाभ हो जायगा।

अजीर्ण-नाशक चूर्ण—

सोंठ	२ तोले
भुना सफेद सुहागा	१ तोला
छोटी हर्र	१ तोला
सैंधा नमक	१ तोला
हींग भुनी	१ तोला

—सबको पीस सहिजने के रस में गोली बनावें, पानी से लें; पाचन शक्ति तीव्र होकर भूख बढ़ती है। इस लेख में जिन प्रयोगों का विवरण है सब शास्त्रोय हैं अतः उनके प्रयोग देने की कोई आवश्यकता नहीं है।

अजीर्ण नाशक अनुभूत प्रयोग—

अग्नितुन्डी वटी—(रसेन्द्र शास्त्रोक्त) १ गोली लोहासव के साथ प्रयोग करने से आम अजीर्ण को शान्त करती है।

शंख भस्म—अदरख या नीबू के रस के साथ प्रयोग करने से हर प्रकार के अजीर्ण को शान्त करती है।

शास्त्रोक्त वृहत क्रव्यादि रस—आम अजीर्ण को शीघ्र ही दूर करता है।

अरंड खरबूजा (पपीता) आम अजीर्ण को बहुत लाभ देता है। कच्चे फल की तरकारी खावे, शंखवटी (रसेन्द्रसार) अग्निकुमार (रसेन्द्रसार) अर्क सौंफ से प्रयोग करने से लाभ होता है।

अग्नि वर्धक चूर्ण—

सोंठ	अजवायन	पीपर छोटी
जीरा सफेद भुना		जीरा स्याह
पोदीना की पत्ती		नौसादर
काला नमक		सैंधा नमक

—प्रत्येक १-१ तोले

काली मिर्च ६ माशा

—सबका चूर्ण करलें। २ माशा चूर्ण गर्म पानी से या अर्क सौंफ के साथ देने से अजीर्ण मंदाग्नि दूर होती है, बहुत लाभकारी चूर्ण है।

आम अजीर्ण के साथ ज्वर-खांसी प्लूरसी होने पर हिंगुलेश्वर रस शहद के साथ देने से बहुत लाभ करता है।

क्षुधबोध-रस—

सोंठ	१ तोला
मिर्च	२ तोला

[शेष पृष्ठ ६५३ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्लीहा और उसके उपचार ।

लेखक--वैद्यभूषण श्री० पं० खेमराज जी शर्मा छांगाणी,
"आयुर्वेद विशारद", आर्वी सी० पी० ।

प्लीहा शरीर की बिना स्रोत की सारी ग्रन्थियों में सब से बड़ी है—

शोणिताज्जायते प्लीहा वामतो हृदयादधः ।
रक्तवाहि शिराणां स मूलं ख्यातो महर्षिभिः ॥

अर्थात् प्लीहा हृदय के नीचे बांई ओर रहती है, तथा आयुर्वेदाचार्यों ने कहा है. कि यह रक्त वाहिनियों की मूल है। इसका वर्ण गहरे बैंगनी रंग का होता है। यह शरीर एक यन्त्र है और इसकी आकृति एवं तौल पुरुष की देह, बल, प्रकृति के सार भिन्न २ होता है। इसकी लम्बाई लगभग ५ इंच, चौड़ाई १ या २ इंच और मुटाई ११ इंच होती है, वजन अनुमानतः १६ तोले तक होता है। यह चौड़ाई, मुटाई तथा तोल पुरुष की प्रकृति अनुसार घट-बढ़ जाता है, परन्तु वृद्धावस्था में प्लीहा का आकार अक्सर घट जाता है क्योंकि इस अवस्था में शरीर की सप्त-धातुएं रस रक्तादि क्रमशः क्षीण होने लगते हैं।

कभी-कभी पुरुष शरीर में एक से अधिक प्लीहाएं भी देखने में आती हैं, किन्तु इन प्लीहाओं का आकार चने से लेकर सुपारी तक ही होता है और सिर्फ व्याधिग्रस्त पुरुष को ही यह होती हैं अन्य को नहीं।

प्लीहा का कार्य—

भोजन करने के पश्चात् जैसे जैसे वह पचता है, वैसे-वैसे प्लीहा बढ़ने लगती है। जैसे भोजन से निकला हुआ एक प्रकार का पदार्थ "प्लैहिक वस्तु" प्लीहा में जमा होने लगता है, और जब वह वस्तु शरीर में रक्त के साथ घुलने लगता है, तब प्लीहा का कार्य बन्द होकर घटने लगता है।

प्लीहा के कार्य का ठीक २ पता अभी नहीं चला है। आयुर्वेद शास्त्रानुसार प्लीहा का कार्य रंजकपित्त की उत्पत्ति करना होता है, परन्तु एलौपैथिक मतानुसार प्लीहा का कार्य रक्त के श्वेत और लाल कणों की उत्पत्ति करना होता है।

प्लीहा शरीर के विशेष अंग में अवश्य है, किन्तु इसे कई पुरुषों ने आपरेशन द्वारा निकलवा भी दिया है, उन्हें शारीरिक कमजोरी एवं रक्ताल्पता के अलावा और कुछ भी वेदना या न्यूनता प्रतीत नहीं होती। प्लीहा का सम्बंध पाचन क्रिया से अवश्य होता है, किन्तु उतना घनिष्ट नहीं, जितना दूसरे अंगों का। प्लीहा का पुरुष शरीर में नितान्त छोटा होना ही उचित माना गया है क्योंकि प्लीहा जितनी छोटी होगी उतनी ही शरीर को गठन ठीक रहती है।

प्लीहावृद्धि के लक्षण—

विदाह्यभिष्यन्दिरतस्य जन्तोः । प्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च ॥
प्लीहाभिवृद्धिं कुरुतः प्रवद्धौ । प्लीहोत्थ मेतज्जठरं वदन्ति ।
तद्वामपार्श्वे परिवृद्धि मेति । विशेषतः सीदति चाऽऽतुरोऽत्र
मन्दज्वराग्निः कफपित्त लिङ्गै रुपद्रुतः । क्षीणबलोऽतिपाण्डुः

अर्थात्—जो मनुष्य दाहकारक और कफकारक पदार्थों का अति सेवन करता है, उसके रक्त और कफ दूषित हो जाते तथा बढ़ जाते हैं, जिससे वे प्लीहा वृद्धि में सहायक होते हैं। इसे संस्कृत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्लीहोदर" कहते हैं। यह प्लीहा बांई पसली की ओर बढ़ती है। इस व्याधि के होने से मनुष्य बहुत दुखी हो जाता है। क्योंकि इससे ज्वर और जठराग्नि दोनों मन्द पड़ जाती हैं। इस व्याधि में पित्त एवं कफ की प्रधानता के लक्षण होते हैं। तथा बल का क्षय होकर शरीर पीत वर्ण का हो जाता है। जिससे शीघ्र ही पाण्डु रोग की उत्पत्ति होती है।

निदान—

इस रोग के उत्पन्न होने के कई कारण हैं, किन्तु विशेष कर यह रोग जीर्ण ज्वर, विषम ज्वर, आंत्रिक ज्वर, रक्तदोषादि एवं खान-पान सम्बन्धी असावधानी करने से हो जाता है। खान-पान विषयक बातों पर लक्ष अवश्य ही देना चाहिये। उड़द एवं तत्काल का जमाया दही, कुलथी, सरसों इ० का अधिक सेवन भी प्लीहा के लिये हानिकारक है। जैसे—

न नक्तं दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम्।
नामुद्गसूपं नाक्षौद्रं नोष्णं नामल कैर्विना।

अर्थात्—रात्रि में दही न खाना चाहिये; उसमें घी या मिश्री मिलाये बिना भी न खाना चाहिये। मूंग की दाल, शहद एवं आंवला इनमें से कोई एक पदार्थ मिलाकर खाना चाहिये। दही को उष्ण कर के खाना भी हानिकारक माना गया है। दही अधजमा (तत्काल का जमाया दही) तथा खट्टा दही भी हानिकारक होता है और विशेषकर इसी व्याधि में डाक्टरी मत के अनुसार जीर्ण ज्वर के कारण विषम-ज्वर में दूषित स्थान में रहने से अधिक गरिष्ठ भोजन, मिष्ठान्न आदि खाने से रक्त अधिक बढ़ने लगता है और इसी हेतु प्लीहा की भी वृद्धि होती है। अधिक भोजन करने के पश्चात् तेज सवारी या मेहनत का कार्य करने पर भी प्लीहा वृद्धि हो जाती है। इसलिये उपरोक्त कार्यों से सर्वदा बचे रहना ही उचित है।

प्लीहा वृद्धि होने पर प्लीहा नाभि स्थान की ओर बढ़ती और पसलियों से बाहर की ओर अर्थात् उदर में आती है, अन्यथा पसलियों में ही छिपी रहती है इसलिये प्लीहा वृद्धि की परीक्षा करना यह अनिवार्य विषय है। इसकी परीक्षा के लिये रोगी को चित्त सुलाकर उसके घुटने मुड़वा कर धरावें, पश्चात् उदर के वाम भाग में हाथ की तीन बड़ी अंगुलियों से प्लीहा स्थान को ऊपर की ओर दबावें और देखें कि प्लीहा पसुलियों से बाहर निकल गई है अथवा नहीं, ये सारी बातें प्लीहा की समविष-

---

[पृष्ठ ६५१ का शेष]

पीपल	३ तोला
सैंधा नमक	४ तोला
शुद्ध गंधक	५ तोला

—इन सबको नीबू के रस में १० दिन खरल करें मात्रा-२ रत्ती प्रमाण गोली बनावें। १ या २ गोली अर्क सौंफ के साथ खाने से अजीर्ण नष्ट हो जाता है।

उदरामृत चूर्ण—

जीरे दोनों	नमक स्याह	५-५ तोला
सौंफ	मिरच सफेद	अजमोद
सत्त नीबू		२॥-२॥ तोला
लौंग १ तोला		हींग भुनी ६ माशा
नमक सैंधा		१० तोला

—चूर्ण तैयार करे। मात्रा--१॥ माशा। हर प्रकार के अजीर्ण को शान्त करता है। मंदाग्नि पेट दर्द, खट्टी डकारें, हिचकी दूर होकर नया रक्त पैदा होता है। बहुत स्वादिष्ट है।

अजीर्ण पर उत्तम योग—

आम तथा विटब्ध अजीर्ण पर

कासीस भस्म १-१ रत्ती शहद के साथ चाटने से बहुत ही लाभ देती है। बड़ी अक्सीर चीज है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मता तथा कड़ेपन से जाननी चाहिये। कभी कभी भयंकर प्लीहा-वृद्धि के कारण उदर का पूरा वामभाग नितान्त कड़ा हो जाता है। ऐसे समय पर चिकित्सक को प्लीहा स्थान पर अंगुली रखकर उस पर दूसरे हाथ की अंगुली से ठेपन या ठोके मारने से विचित्र प्रकार की ध्वनि सुनाई पड़ती है, यह शब्द डप-डप् की सदृष होकर उस पुरुष की प्लीहा-स्थान की नाड़ियां नीली-नीली वर्णकार होकर पेट नगारे की तरह तन जाता है। ऐसे लक्षण प्रतीत होने पर उस पुरुष को शीघ्र ही पाण्डु रोग हो जाता है यह असाध्य है।

देह में अधिक समय तक ज्वर पड़ा रहने के कारण तथा नूतन ज्वर में पथ्य देने से प्लीहा शीघ्र ही बढ़ जाती है। डाक्टर लोग रोगी को नूतन ज्वर में पथ्य देने की सलाह देते हैं, किन्तु आयुर्वेद शास्त्र ज्वर के प्रारम्भ में लंघन (उपवास) की आज्ञा देता है—यथा

ज्वरादौ लंघनं प्रोक्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम्।
ज्वरान्ते भेषजं दद्याज्ज्वर मुक्ते विरेचनम्॥
(महर्षि आत्रेय)

वर्तमान समय में प्लीहा वृद्धि का प्रधान हेतु अधिक कुनैन का सेवन भी हो सकता है। क्योंकि मलेरिया के कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए डाक्टरी मत से कुनैन एक महौषधि साबित हुई है, किन्तु कई बार ऐसा हो जाता है, कि अधिक कुनैन के सेवन से मलेरिया के कीटाणु ढीठ हो जाते हैं इसलिये उन पर कुनैन का कुछ भी असर नहीं हो पाता, ज्वर उसी प्रकार चढ़ता उतरता रहता है। ऐसी अवस्था में वह कुनैन संचित रूप से उदर में रहकर प्लीहा की वृद्धि करती है। इस ज्वर को मामूली बोल-चाल की भाषा में "कुनैन का बुखार" या "विच्छेदी ज्वर" कहते हैं।

भयंकर उपदंशज ज्वर के होने पर भी प्लीहावृद्धि होजाती है, क्योंकि इस व्याधि में रक्त पूयमय बन जाता है और वह पूयमय रक्त प्लीहा पर आ[...] करता है, जिससे प्लीहा पर विद्रधि रोग हो [...] है। इसका निदान नितान्त सूक्ष्म तरीके से [...] की आवश्यकता होती है।

क्षय रोग के कीटाणु (Tuberculosis) [...] में प्रवेश होते हैं तथा उत्पन्न होते हैं, किन्तु [...] होने पर प्लीहा के कार्य में परिवर्तन हो जाता है [...] प्लीहा के चारों ओर सरसों के समान बारीक-बा[...] कण उत्पन्न हो जाते हैं, मध्य का भाग नरम [...] पर भी उदर का कड़ापन अधिक बढ़ जाता है।

चार प्रकार की प्लीहा पुरुष शरीर में [...] जाती हैं। रक्त से उत्पन्न, पित्त से उत्पन्न, क[...] उत्पन्न एवं वात से उत्पन्न प्लीहा।

१—रक्त से उत्पन्न प्लीहा के लक्षण—जी का मचल[...] उष्णता, भ्रम, मोह, देह का वर्ण बदलना, [...] का भारीपन, मलावरोध तथा रक्तोदर हो[...]

२ पित्त से उत्पन्न प्लीहा—ताप, पिपासा, उष्ण[...] मोह, देह का वर्ण पीत होना, नेत्रों में ज[...] इत्यादि।

३—कफ से उत्पन्न प्लीहा - अन्न पर अरुचि, प्लीहा [...] वेदना कम होना, उदर का भारीपन, प्लीहा [...] एवं मोटी होना।

वात से उत्पन्न प्लीहा—

उदर का भारीपन, अपान वायु का अवरो[...] देह के सम्पूर्ण अंग टूटना तथा उदावर्त रोग [...] प्रतीत होना ये लक्षण होते हैं।

जो प्लीहा असाध्य होती है उसमें उपरो[...] सम्पूर्ण लक्षणों का समावेश होता है तथा ना[...] मुख से रक्तश्राव होना, रक्तपित्त तथा अर्श से र[...] श्राव या मल के साथ रक्त मिश्रित हो, सर्वाङ्ग [...] शोथ हो तथा पाण्डु रोग के सम्पूर्ण लक्षण प्र[...] हों तो यह प्लीहा वृद्धि रोग असाध्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा —

प्लीहा वृद्धि के रोगी को चिकित्सा करने से पूर्व रोगी की प्रकृति अनुसार विरेचन देकर उसकी कोष्ठ शुद्धि कर लेना नितान्त आवश्यक है, किन्तु यदि रोग जीर्णावस्था का हो, तो विरेचन न देना ही उचित है। प्लीहा-वृद्धि के साथ-साथ यदि संग्रहणी का रोग हो, तो रोग असाध्य समझकर बड़ी ही सावधानी पूर्वक चिकित्सा करनी चाहिए।

प्लीहा के साथ-साथ यदि ज्वर का वेग अधिक हो तो ज्वर एवं प्लीहा नाशक दोनों उपचार एक साथ करें अथवा पहिले ज्वर नाशक औषधि की योजना करने के पश्चात् प्लीहा-नाशक औषधि दें।

यकृत एवं प्लीहावृद्धि के लिये घृतकुमारी एक महौषधि सिद्ध हुई है। इसका उपयोग नाना भांति से किया जाता है। राजपूताने में इसका प्रचार जोरों से है, वहां के कई लोग इसे रोजाना शाक तरकारियों की तरह बनाकर सेवन करते हैं। घृत कुमारी को सदैव स्वच्छ जल मिलने से उसमें कड़वापन नहीं होता किन्तु जंगलों में पैदा होने वाला घृतकुमारी खारा होता है। खारे घृत कुमारी को छील कर बारीक-बारीक टुकड़े बनाकर जल में उबालें। भली भांति उबल जाने पर उसमें नमक मिलाकर उससे धोवें, पश्चात् दुबारा स्वच्छ जल से धोकर यथाविधि तरकारी बनाकर उपयोग में ले सकते हैं।

प्लीहा-वृद्धि नाशक प्रयोग--

घृत कुमारी की एक फली लेकर उसे एक ओर से छील दें, और उसके ¼ भाग में २ माशे सैंधव नमक, १ माशा काली मिर्च, ½ माशा हल्दी, २ रत्ती यवक्षार, १ रत्ती नौसादर का बारीक चूर्ण फैलाकर उसे घर के छप्पर पर रात्रि भर पड़ा रखें, ताकि रात ओस का असर उस औषधि में सम्मिलित हो जाय। पश्चात् सबेरे नित्य कर्मों से निवृत होकर इस औषधि युक्त घृत कुमारी को लेकर दूसरी ओर से छील दें और खा जावें। इस क्रिया को ७ दिन पर्यन्त नियमित रूप से करें, यदि यथेष्ट लाभ न पहुंचे तो और भी करते रहना चाहिये। पथ्य में हलका भोजन लें। इस प्रयोग से आशातीत लाभ होता है। यह चिरकाल से परीक्षित है।

२—शरपुंखा बूटी के पञ्चाग को लेकर छाया में सुखालें और उसका यथा विधि चूर्ण बना कर नित्य प्रति १ तोले चूर्ण को १ पाव गौ की ताजी छाछ से सबेरे सेवन करने पर असाध्य प्लीहा वृद्धि में सुधार होकर पाचन क्रिया सबल बन जाती है। इस चूर्ण का सेवन उन्हें हा कराना चाहिये, जिन्हें कि ज्वर न हो, सिर्फ प्लीहा वृद्धि ही हो। यदि ज्वर हो, तो ६ माशे शरफोंका के चूर्ण में २ माशे सैंधव नमक मिलाकर रोहितारिष्ट के साथ सेवन करने से असाध्य प्लीहावृद्धि नष्ट होकर पाचन-क्रिया में यथेष्ट लाभ पहुंचता है।

छांगाणी अष्टामृत प्रयोग--

मिश्री	१० तोले
इलायची दाने बड़े	५ तोले
काली मिर्च	५ तोले
काला नमक	५ तोले
पिपरमेंट का फूल	३ माशे
कपूर	३ माशे
अजवाइन का फूल	३ माशे

—प्रथम ४ औषधियों को इमामदस्ते में कूटकर कपड़-छान चूर्ण बनावें और खरल में १ घंटा तक मर्दन करें, पश्चात् पिपरमेंट, कपूर, अजवाइन फूल इत्यादि को अलग खरल में मिलावें, तरल पदार्थ तैयार हो जाने पर उसमें उपरोक्त चूर्ण मिलाकर भलीभांति मिलाकर शीशी में सुरक्षित रक्खें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण—यह चूर्ण खाने में अत्यन्त स्वादिष्ट एवं गुणकारी है, इसके सेवन से बदहज़मी, खट्टी डकारें, पेट का दर्द, शूल, वायुगोला, जी मचलना, उल्टी होना, मल मूत्रावरोध, बेचैनी इत्यादि विकार नष्ट होते हैं। इस चूर्ण को नित्य प्रति १ माशे तक खाकर ऊपर से किंचित उष्ण जल पीना चाहिये।

यकृत एवं प्लीहा वृद्धि पर इस चूर्ण का उपयोग बड़ा ही अच्छा होता है। यह चूर्ण उदर में जाकर यकृत से पित्त-श्राव अधिक कराकर यकृत्प्लीहा शूल एवं शोथ दोनों को ठीक कर देता है। भोजन के पश्चात् थोड़ा सा चूर्ण खाने पर मुख से लाला श्राव अधिक बढ़ाकर भोजन को पचाने में सहायक होता है। इसका उपयोग मेरे औषधालय में दीर्घकाल से हो रहा है, यह प्रयोग पूज्यपाद वैद्यराज श्री. गौरीदत्त जी शर्मा छांगाणी जो मेरे चाचा हैं, उनसे प्राप्त हुआ है। यह अत्यन्त सरल एवं अत्युपयोगी है।

—यवानी खाण्डव चूर्ण

अजमोद	अनारदाने	सोंठ
इमली		अम्लवेत

बेरकुट अर्थात् बेरों को सुखाकर उसका गूदा
—प्रत्येक २-२ तोला

काली मिर्च		१। तोला
पीपल		५ तोला
मिश्री		३२ तोले
कलमी सोड़ा	काला नमक	धनियां
जीरा		—प्रत्येक १-१ तोला

—इन सबका यथा विधि चूर्ण तैयार करें।
(शारंगधर संहिता)।

मात्रा—इस चूर्ण का सेवन प्रातः सायं ४ से ६ माशे तक अनुपान भेद से करने पर सम्पूर्ण उदर-रोग, पाण्डु रोग, हृदय रोग, संग्रहणी ज्वर, उल्टी होना, शोष रोग, अतिसार, प्लीहारोग, अफरा, मूत्र एवं मलावरोध, अरुचि, उदरशूल, मन्दाग्नि, अर्श, जिव्हा, कण्ठ रोग को दूर कर के पाचन क्रिया को सुधारता है।

वाह्य प्रयोगार्थ—

१—कभी २ प्लीहावृद्धि के रोगी को भयंकर वेदना प्रतीत होती है, ऐसे समय पर ऊपरी उपचार करने पर ही वेदना शांत होती है।

बकरी की मैंगनी (मल) ३ तोले लेकर बारीक पीसलें, पश्चात् एक कटोरी में ५ तोले गोमूत्र लेकर उसमें उपरोक्त चूर्ण मिलाकर गरम करें। गाढ़ा-गाढ़ा लेप के सदृष तैयार होने पर जैसा २ सुहाय वैसे लेप करें ऊपर से कपड़ा अथवा एरंडी के पत्ते बांध दें।

२—बड़ी शीशी में गरम जल को भरकर उससे भी सेक करें, तथा एरंड पत्र पर घी चुपड़ कर किंचित् उष्ण करके प्लीहा स्थान में बांध दें, इससे भी वेदना तत्काल शांत होकर उदर का भारीपन दूर हो जाता है।

३—शहद, चूना एवं गुड़ तीनों को समभाग लेकर मिलावें और लेप करके गोबरी की आंच से धीरे-धीरे सेक करें पश्चात् एरंडी का पत्ता बांध दें।

४—अलसी का पुल्टिस, गूगल, गुलबनफ्शा इत्यादि का बारीक चूर्ण गोमूत्र में मिलाकर गरम करें और लेप करने के बाद थोड़ा सेक करें।

५—पीपल वृक्ष (अक्षय वट्) के बारीक मोटे पत्तों पर घी चुपड़ कर बांधें।

६—नागर बेल के पान पर घी लगा कर किंचित् गरम करके प्लीहा स्थान पर बांधें, इन बाह्य उपचारों से भी प्लीहा वृद्धि, शूल, उदर का भारीपन, इत्यादि विकार नष्ट होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भस्थ बालक पर आहार और विचारों का प्रभाव

लेखक – श्री. राजेन्द्रकुमार जी शास्त्री ।

जसे मकानों की बनावटें नाना प्रकार की होती हैं, उसी प्रकार से शरीरों की रचनायें भी विविध प्रकार की हुआ करती हैं। कोई मकान मिट्टी का होता है तो कोई ईंटों और पत्थरों का, फूंस की झोंपड़ी भी होती हैं, किन्तु इन सबमें पत्थर और कंकड़ों के मकान अधिक स्थायी और दृढ़ होते हैं, वैसे कांच और फूंस के नहीं होते। क्योंकि पत्थर और कंकड़ को प्रकृति ने अपनी प्रयोगशाला में खूब अच्छी तरह से पकाया है। इसलिये उनके ऊपर धूप का प्रभाव नहीं पड़ता जिससे वे शीघ्र विनष्ट हो जायं। इसलिये वे सैकड़ों वर्ष तक अटूट खड़ी रहती हैं। किन्तु मिट्टी के घर और फूंस की झोंपड़ियां तो दो-चार वर्ष में समाप्त हो जाती हैं। इसी प्रकार से मनुष्य के शरीर हैं। वे शरीर जो माता के गर्भरूपी प्रयोगशाला में सम्यकतया पकाये गये हैं, अति बलिष्ठ दीर्घायुष्य वाले होते हैं। किन्तु जिनके परिपाक में कुछ कमी रह गयी है वे निर्बल, निस्तेज और अल्पायु होते हैं। द्वितीय प्रकार के शरीरों को ही मिट्टी और फूंस के घर के समान समझना चाहिये।

मनुष्य जितनी उपेक्षा और मूर्खता सन्तानोत्पादन कार्य में करता है, सम्भवतया जीवन के अन्य कार्यों में ऐसा नहीं करता। यदि इस पुनीत कार्य को मनुष्य संयम-नियम से करता तो आज यह मानव सृष्टि देवसृष्टि में बदली हुई दिखाई देती। किन्तु तद्विपरीत मनुष्य अधिकांश में स्वास्थ्य, शक्ति विचारों में अपने से हीन संतति उत्पन्न करता चला जा रहा है।

जब हम किसी गाय, भैंस या घोड़ी को गर्भिणी कराने ले जाते हैं तो सांड और घोड़े की शक्ति और उसकी हृष्ट-पुष्टता का बड़ा ध्यान रखते हैं। हम जानते हैं कि कमजोर सांड और घोड़े से भावी नस्ल बिगड़ जायगी। किन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि जब हम स्वयं मनुष्य की रचना करने बैठते हैं तो सब कुछ भूल जाते हैं, मानो हमारे ऊपर उत्तरदायित्व ही नहीं है। इस प्रकार निकम्मी संतान उत्पन्न कर गुरुतर पाप कर डालते हैं जो समाज और देश के लिये दुख का कारण बन जाता है।

सन्तानोत्पादन कार्य भी एक महान् यज्ञ है। किन्तु है तभी जबकि सन्तान मेधावी, पराक्रमी तेजस्वी और दीर्घायु वाली हो। बच्चे में इन सब गुणों का समावेश करने के लिये दो वस्तुओं की आवश्यकता है, आहार और विचार। वैसे तो सन्तानोत्पादन से एक दो साल पूर्व ही स्त्री और पुरुष सतोगुण युक्त और पौष्टिक आहार का सेवन करें और दोनों किसी प्रकार का व्यायाम अथवा श्रम करते रहें जिससे रक्त कणों में स्फूर्ति और सजीवता रहे। किन्तु गर्भ-स्थिति होने पर स्त्री को ऐसी वस्तुओं का सेवन कराया जाय जो सुपाच्य होते हुए बल, बुद्धि वर्द्धक भी हो।

गर्भावस्था में यदि स्त्री को गौ-दुग्ध में पका कर गेहूँ का दलिया खिलाया जाय तो अत्युत्तम है, यह सुपाच्य भी है और पौष्टिक भी। यह प्रातः काल के भोजन में होना चाहिए। सायंकाल को हरी सब्जियां जैसे—पालिक, करमकल्ला, टमाटर, घिया, तोरई आदि खानी चाहिये, किन्तु तेज मसालों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। इससे हानि है। बच्चे को अधिक बली और बुद्धिवान् बनाना हो तो प्रतिदिन प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व या सूर्योदय होने पर ब्राह्मी और शंखपुष्पी सेवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराना चाहिए। यदि ग्रीष्मकाल हो तो आठ दस बादाम ५-६ मुनक्का दो सफेद इलायची ४-५ कालीमिर्च डालकर ठंडाई कर पिलायें। शीत व वर्षा ऋतु में समोष्ण दुग्धके साथ पीना लाभप्रद होगा। दोनों बूटियों के ४-५ घण्टे पश्चात् एक कोमल सा अखंड पलाश पत्र शिल पर पीस कर छटांक भर जल के साथ बिना नागा पिलाने से गर्भस्थ बालक के शरीर का ढांचा अति बलवान् बनता है।

जैसे सफेद कागज पर जो अक्षर एक बार छप कर फिर नहीं मिटाये जा सकते इसी प्रकार से गर्भावस्था में बच्चे के अन्तःकरण पर शुभ या अशुभ संस्कार पड़ते हैं मां, बाप जैसी २ चेष्टायें करते हैं, बच्चे के अन्तः पट पर वैसी ही चेष्टायें प्रतिविम्बित हो जाती हैं। जैसी बात-चीत माता पिता करते हैं, अज्ञात रूप से गर्भस्थ जीव अनुभव करता है। उसका हृदय में "रिकार्ड" या संस्कार बन जाते हैं। और सारी आयु पर्यन्त संस्कार के रूप में बने रहती है। अभिमन्यु की गर्भ में चक्रव्यूह के भेदन की कथा श्रवण को सभी जानते हैं। अमेरिका की एक महिला ने "marriage & Parantage" नामक पुस्तक में लिखा है कि उसके चार लड़के हैं, एक चित्रकार है, दूसरा वक्ता है, तीसरा कवि है और चौथा दार्शनिक। गर्भस्थ बच्चे पर संस्कार डालने के लिये वह प्रसिद्ध चित्रशालाओं में जाती, वहां की कृतियोंको देखती तत्संबंधी वार्तालाप करती और वैसी ही पुस्तकें पढ़ती थी। दूसरे बच्चे पर वक्तृत्व शक्ति का प्रभाव डालने के लिये वह निपुण वक्ताओं के भाषण सुनती, वक्तृत्व कला सम्बन्धी साहित्य पढ़ती और न्यायालयों में वकीलों की बहस सुनती थी। तीसरे बच्चे को कवि बनाने के लिये प्रसिद्ध कवियों की रचनायें पढ़ती थी, कवि सम्मेलनों में भाग लेती थी। दार्शनिक बनाने के लिये दर्शन शास्त्र का अध्ययन करती थी वैसे ही गम्भीर विचारों में लग्न रहती थी। कुन्ती के पांच पांडव इच्छानुसार ही पैदा हुए थे। श्रीकृष्ण देवकी की इच्छा के अनुसार ही हुये थे। फ्रांस का नैपालियन-बोनापार्ट अपनी मां की भावनाओं का ही फल था। शिवाजी पर गर्भ में ही शौर्य के संस्कार डाले गये थे।

मेरे एक ग्रेजुयेट मित्र हैं; संस्कृत और अंग्रेजी के बड़े अच्छे विद्वान हैं। किन्तु भूत-प्रेतों के नाम से भयभीत हो जाते हैं। आप ऐसे स्थान में नहीं जांयगे जहां भूत-प्रेतों के होने की आशंका हो। मैंने उनकी माता से पूछा तो उन्होंने बतलाया कि जब यह गर्भ में था तो मैं स्वयं भूत-प्रेतों से डरा करती थी, मैं कभी अंधेरी जगह में नहीं जाती थी, मैं समझा करती थी कि कहीं यहां भूत न हो।

साध्वी मंदालसा ने अपने सभी पुत्रों को ब्रह्मज्ञानी बना दिया था गर्भावस्था में वे वेदान्त का अध्ययन किया करती थीं। और लोरी देते समय गाया करती थी।

"शुद्धोसि, बुद्धोसि निरंजनोसि,
संसार मायापरिवर्जनोसि ।
संसार माया त्यज मोहि निद्रा,
मन्दालसा वाक्य युवाच पुत्रम् ॥"

अमेरिका के प्रेजीडेन्ट अब्राहीम लिंकन की मां महान पुरुषों की जीवनियां पढ़ा करती थी यही कारण था कि लिंकन ने इतने बड़े पद को प्राप्त किया।

यदि बालक को वीर अभिमन्यु के समान पराक्रमी बनाना हो तो गर्भस्थ बालक पर वीरता का प्रभाव डालिये। कमरे में वीरों के चित्र टंगे रहने दीजिये जिससे वीरता की भावना प्रतिपल जागृत रहे। वीरों की कहानियां पढ़ें, सुनें।

जो मूर्खायें गर्भ की अवस्था में स्वच्छन्द घूमती हैं या अन्य अशुभ चेष्टायें करती हैं सुश्रुत लिखते

[शेष पृष्ठ ६६१ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय रसायनशालाओं की पंगुता

लेखक – श्री० लक्ष्मीनारायण जी शुक्ल आयुर्वेद विशारद, (C. T. S.)
अध्यक्ष–विमल आ० रसायनशाला, उज्जैन ।

भारतीय रसशास्त्र अपने उस स्वर्णयुग में तो अत्यंत देदीप्यमान रहा ही होगा, जबकि आर्ष-चिकित्सा प्रणाली को सर्व मान्यता होने के कारण सर्व साधन संपन्नता प्राप्त थी, किन्तु आज के इस युग में जब कि आयुर्वेद अपने गौरवास्पद स्थान पर आसीन नहीं है और इसी कारण वश सभ्य समाज द्वारा जीर्ण या हेय समझा जाता है, तथापि उसके पास आज भी रसशास्त्र का भंडार इतना विस्तृत एवं चमत्कृत भरा पड़ा है कि जिसके आश्चर्यजनक प्रयोगों के बल पर वह समय आने पर बलपूर्वक उन जीर्ण या हेय समझने वालों का मस्तक अपने चरणों पर झुका ही लेता है, और वह समय भी दूर नहीं जबकि आयुर्वेद के कर्णधार, सफल चिकित्सकवृन्द इसके लुप्त अस्तित्व को पुनः प्राप्त कर इसको अपने उसी गौरवास्पद स्थान पर आसीन करके ही रहेंगे ।

यद्यपि प्राचीनता की दृष्टि से काष्ठौषधि चिकित्सा रस चिकित्सा से भी प्राचीनतम है और रस-चिकित्सा में भी उसका आश्रय गृहण करना ही पड़ता है, तथापि गोपनीयं, गोपनीयं, गोपनीयं प्रयत्नतः के कारण एवं अत्यंत प्राचीनतम होने के कारण उसमें से अनेकों चमत्कृत द्रव्य आज लुप्त या संदिग्ध समझे जाते हैं, जिसका कि दुष्परिणाम रसशास्त्र पर भी पड़ता है, और इसी कारण पारद के अष्टादश संस्कार के लिए आवश्यक नवविष एवं अनेकों द्रव्य अप्राप्य होनेके कारण ही पारद की विविध कृतियों का वर्णन जिनके बल पर पूर्व रससिद्धों की वह सद्भावनाएं जिनमें वे पारदसिद्धि द्वारा समस्त विश्व को दैन्य एवं मृत्यु से मुक्त करने की कल्पना करते थे, आज केवल आलंकारिक वर्णन के रूप में समझे जाते हैं, जैसा कि रसग्रन्थ के निम्न श्लोक से ज्ञात होता है, "रसबन्धश्च स धन्यः प्रारंभे यस्य सततमिव करुणा, सिद्धे रसे करिष्ये महीमहं निर्जरामरणाम्" (र० हृदयतंत्र)।

अतः बनौषधि चिकित्सा के प्राचीनतम होते हुए भी उसके अनेकों चमत्कारिक द्रव्यों का अभाव, बनौषधियों की कटु तिक्त रस भूयिष्ठता, मात्रा का आधिक्य, परिणाम में विलंब, आदि कारणवशात् उसका स्थान आज रस-चिकित्सा ने अपने "अल्पमात्रापयौगित्वादरु न चेरप्रसंगतः, क्षिप्र मारोग्यदायित्वादो पधेभ्योधिकौ रसः" इन गुणों द्वारा ग्रहण कर लिया है, साथ ही रसशास्त्रों में वर्णित विविध खनिजों में से थोड़े बहुत संदिग्ध या अज्ञात द्रव्यों को छोड़कर शेष अनेकों द्रव्य आज भी प्राप्य हैं, इन्हीं उपरोक्त कारणवश वर्तमानके अधिकांश चिकित्सक रस-चिकित्सा पर विशेष अवलंबित हैं, और जिसके फलस्वरूप आज भारतवर्ष में पूर्वापेक्षा कहीं अधिक रसायनशालाएं एवं फार्मेसियां प्रचलित हैं, जिनमें से अधिकांश लब्धप्रतिष्ठ जनता एवं वैद्यसमाज द्वारा आदरित भी हैं, तथापि जब कभी किसी रोगी या व्यक्ति द्वारा कहीं की निर्मित बहुमूल्य औषधि के विषय में ऐसी शंकाएं उपस्थित की जाती हैं कि अमुक वस्तु स्वर्ण या बहुमूल्य वस्तुओं से युक्त है वा नहीं या आवश्यक द्रव्य इसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित परिमाण में सम्मिलित किये गये हैं वा नहीं, ऐसी स्थिति में केवल वाक्चातुर्य या प्रशंसनीय शब्दों द्वारा ही उक्त शंका का समाधान करना आज की जनता के लिये पर्याप्त नहीं होता है, और आज के युग में प्रत्यक्ष प्रमाणों का कहीं अधिक महत्व माना जाता है, और हमारे पास कोई ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात् (भौतिक एवं रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा वस्तु विश्लेषण प्रकार) नहीं जैसा कि अर्वाचीन रसायनशालाओं में उपलब्ध है, ऐसी स्थिति में उक्त शंकाओं का उचित समाधान नहीं किया जा सकता, जिससे कि शंका करने वाला संतुष्ट हो सके, हां ऐसे द्रव्य को अर्वाचीन रसायनशालाओं में भेजकर उसके मूलभूत द्रव्योंका विश्लेषण कराया जा सकता है, किन्तु यह भी हमारे लिये गौरवास्पद बात नहीं कि वस्तु हम निर्माण करें व परीक्षण हम न कर सकें।

रसशास्त्र जैसे जटिल एवं प्रत्यक्ष प्रमाणित शास्त्र पर हमारे पूर्वाचार्यों ने कम अन्वेषण नहीं किया किन्तु आज इस विषय पर किस प्रकार अध्ययन एवं अध्यापन होता है, इस पर कुछ विशेष रूप से कहना मेरा अभिप्राय नहीं क्योंकि यह तो सर्व विदित है ही कि प्रयोगशालाओं की कमी के कारण सम्मानित संस्थाओं से परीक्षोत्तीर्ण होकर भी हमें अपने प्रत्यक्षकर्माभ्यास की शून्यता पर समय-समय पर लज्जित होना पड़ता है, ऐसी स्थिति में यह तो और भी कठिन है कि हम किसी वस्तु का निश्चित परीक्षण कर आज के शिक्षित समाज की उक्त शंकाओं का उचित समाधान कर सकें, उस समय सहज ही हमारे मन में निम्न विचार उपस्थित होते हैं, कि वास्तव में हमारे रसशास्त्र में ऐसे भौतिक एवं रासायनिक वस्तु विश्लेषण प्रकारों की अत्यन्त आवश्यकता है जिनका कि हम प्रत्यक्ष प्रमाणों के रूप में समयानुसार उपयोग कर सकें, और वह यह प्रमाणित कर सकें कि वास्तव में अमुक द्रव्य उत्तम हैं व इसके मूल द्रव्य इस प्रकार हैं।

उक्त अभाव उस समय भी खटकता है जब कि हम अपनी रसायनशाला में असावधानीवश किसी निर्मित औषधि मे विस्मृत हो जाते हैं, और यह निर्णय नहीं कर पाते कि यह वस्तु क्या थी, उस स्थिति में भी प्रत्यक्ष परीक्षण विधि के अभाव में कभी-कभी तो उत्तम द्रव्यों को भी व्यर्थ में गंवाना पड़ जाता है, वैसे तो विविध भस्मों आदि का परीक्षण हमारे रसग्रन्थों में वर्णादि द्वारा आचार्यों ने निर्दिष्ट किया है किन्तु योगों की भिन्नता से वर्णों में भी प्रायः भिन्नता आजाया करती है, अतः केवल उपरोक्त परीक्षण संतोषप्रद नहीं होता, इसके अतिरिक्त रससिंदूर, चंद्रोदय, समगुण द्विगुण, चतुर्गुण, षड्गुण, एवं अन्यान्य कूपीपक्व सिंदूरों में भी यही कठिनाई उपस्थित होती है कि एक दूसरे की परस्पर भिन्नता किस आधार पर प्रमाणित की जावे, बहुधा कई महाशय साधारण रससिंदूर को चंद्रोदय एवं समगुण को चतुर्गुण वा षड्गुण प्रमाणित करने की भी चेष्टा करते हैं, उस समय भी सत्य एवं असत्य के निर्णय के लिये प्रत्यक्ष प्रयोगविधि के अभाव में उन महाशयों के वच प्रमाणम् को ही सत्य मानना पड़ता है, शास्त्र एतदर्थ केवल इतना ही बतलाता है, समे तु गंधके जीर्णे शुद्धाच्छतगुणोरसः द्विगुणे गंधके जीर्णे सर्वकुष्ठ हरोरसः इत्यादि। आ. प्रकाश।

उपरोक्त बातों पर दृष्टिपात करें तो वास्तव में हम आज के वैज्ञानिक युग में प्रत्यक्ष-प्रमाणों पर विश्वास करने वाली जनता का उचित समाधान नहीं कर पाते, यही हमारी आयुर्वेदिक रसशालाओं की पंगुता प्रतीत होती है। ऐसा लिखने से मेरा अभिप्राय किसी पर आक्षेप करना नहीं, क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा अनुमान है कि इस ओर आयुर्वेदिक रस-वेत्ताओं का ध्यान अवश्य गया ही होगा, और उन्होंने अपने प्रत्यक्ष प्रमाणों के आधार पर ऐसे वैज्ञानिक सिद्धान्त दृढ़ किये ही होंगे, व जिससे कि उपरोक्त अभाव की पूर्ति किसी अंश में होसके किंतु मेरा अभिप्राय तो उनसे यह निवेदन करना भी है कि वे रसशास्त्र के पाठ्य-क्रम में इस विषय को सम्मलित करते हुए इस पंगुता की वास्तविक चिकित्सा भी करें। जिससे कि प्रत्येक शिक्षित वैद्य उन महानुभावों के ज्ञान प्रदीप का प्रकाश देकर इस पथ पर गति-शील हो सके, एवं इस प्रकार उठने वाली शंकाओं का भी उचित समाधान करते हुए सत एवं असत् का प्रमाणित निर्णय दे सके।

आशा है उपरोक्त विषय पर विज्ञ महानुभावों का ध्यान आकर्षित होगा तथा वे इस पर उचित प्रकाश डालने की भी कृपा करेंगे।

[पृष्ठ ६५८ का शेष]

हैं कि उनके बच्चे पागल होते हैं, और जो स्त्री लड़ती झगड़ती रहती हैं उसके मृगी रोग वाली संतान उत्पन्न होती हैं। जो स्त्री हाथ-पांव फैलाकर सोती हैं उसके भी पागल बालक पैदा होता है। इसलिये सुश्रुत ने कहा है कि—

"देवता ब्राह्मण पराः शौचाचार हितेरताः।
महान् गुणान् प्रसूयन्ते विपरीतास्तु निर्गुणान्॥"
सु० शा० अ० ८

अर्थात् जो गर्भिणी स्त्री देवता और ब्राह्मणों में श्रद्धा रखती है और शुद्ध आचरण वाली होती है, वह महान गुणी संतानों की जननी बनती है, और विरुद्धाचरण से महा मूर्खों को जन्म देती है।

शूर, वीर, धर्मात्मा, योगी, यती, लेखक, कवि, वक्ता, विज्ञ, जैसा भी बच्चे को बनाना हो गर्भस्थ बालक पर वैसे ही संस्कार डालिये। वैसा ही वायु मंडल उत्पन्न करिये।

अपहृत लेख।

धन्वन्तरि भाग २१ अंक १० (मार्च १९५४) के पृष्ठ ५३३ पर 'निमोनिया' शीर्षक एक वृहत लेख कविराज श्री योगेन्द्रनाथ जी सिन्हा आयुर्वेदाचार्य, केरमा (मुजफ्फरपुर) का छपा है। यह लेख वैद्यराज पं० रामनारायण शर्मा वैद्यशास्त्री द्वारा लिखित 'आरोग्य प्रकाश' नामक पुस्तक [पञ्चम संस्करण] के १३१ पृष्ठ से लगातार १३६ पृष्ठ पर अंकित है। श्री० योगेन्द्रनाथ जी ने एक शब्द भी अपनी ओर से उक्त लेख में नहीं लिखा है। पुस्तक से ज्यों का त्यों उद्धृत कर अपना नाम देकर छपवा दिया है जो कि बहुत ही अनुचित है। समझ में नहीं आता कि श्री० योगेन्द्रनाथ जी ने ऐसा क्यों किया है, अगर सिर्फ नाम छपवाने के लोभ से ऐसा किया गया है तो मैं तो कहूंगा कि आप परिश्रम करें और भविष्य में इस प्रकार दूसरे का लेख अपने नाम से छपवाने का इरादा छोड़ दें।

—श्री. सियाप्रसाद जी अष्ठाना आयुर्वेदरत्न,
एल० एम० एस०, बसन्त पट्टी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टवर्ग गुण विधान ।

लेखक-राजवैद्य श्री. अमरदत्त जी मिश्र एल. एम. ए. प्रधान-मंत्री,
आयुर्वेद कांग्रेस कमेटी, केकड़ी (अजमेर)

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्या ऋद्धि वृद्धिके ।
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः ॥

अष्टवर्ग –

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, ऋद्धि, वृद्धि इन आठों को अष्टवर्ग कहा है । ऐसा चरकादि महर्षियों ने कहा है ।

अष्टवर्ग गुणाश्च

(१) अष्टवर्ग शीत वीर्य स्वादु वृहंण (वीर्य-वर्धक Tonic) (शुक्रल) वीर्योत्पादन करने वाला (गुरु देर से पचने वाला टूटे हुए भागों को जोड़ने वाला, काम बल बढ़ाने वाला (Venereal) श्लेष्म वर्द्धक तथा बल वर्धक है और वात (Air) पित्त (Bile) रक्त (Blood Corruption) दाह (Burning) ज्वर (Fever) प्रमेह (Spermetorrhoea) क्षय (T. B.) इत्यादि रोगों को मिटाने वाला है ।

पृथक २ उत्पत्ति, गुण, नाम—

जीभक, ऋषभक यह दोनों (जीवकर्षभकौ) हिमालय पर्वत के शिखर पर उत्पन्न होते हैं । इनके कन्द रसोन (लहसुन) कन्द की तरह होते हैं और भीतर से खाली होते हैं और पत्ते सूक्ष्म होते हैं। जीवक का आकार कूर्चिकाकारः) कूंची की तरह होता है । ऋषभक का आकार (वृषशृंगवत्) बैल के सींग से मिलता हुआ होता है ।

जीवक के संस्कृत नाम--जीवक, मधुर, शृंगी, ह्रस्वांग, कूर्चशीर्षक ।

ऋषभक के संस्कृत नाम—ऋषभ, वृषभ, धीर, विषाण, द्राक्ष ।

गुण—यह दोनों कन्द बलदायक, शीतवीर्य, कफ वर्धक और मधुर है । पित्त, दाह, रक्ताल्पता, वात-विकार, क्षय रोग आदि को हरने वाले हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेदा महामेदयोर्लक्षणं नाम गुणाश्च:

मेदा, महामेदा की उत्पत्ति (मोरङ्गादौ प्रजायते) मौरंग प्रदेश माना है और महामेदा की आकृति सूखे अदरख के फल के समान होती है इसकी बेल पीले रंग की होती है और तदनुसार ही मेदा की आकृति होती है। मेदा महामेदा के ताजा कन्दों के नख या चाकू से क्षत करने पर उनमें से मेद धातु के समान ही रंग वाला द्रव निकलता है, तदर्थ इन्हें मेदा संज्ञा दी है।

महा मेदा के संस्कृत नाम-बनी मेदा, महामेदा मेदा के संस्कृत नाम—मणिछिद्रा, स्वल्पपर्णी, देवतामणि त्रिदंती।

गुण—यह दोनों कन्द भारी (देर से पचने वाला) स्वादिष्ट, वीर्य वर्धक, दुग्ध और कफ को बढ़ाने वाला पौष्टिक, शीतल और वात ज्वर को हरने वाला है।

काकोल्या: नामोत्पत्ति गुणाश्च:

कांकोली, क्षीर कांकोली दोनों (महामेदोद्भवस्थले) जहां महामेदा उत्पन्न होती है उसी प्रदेश में कांकोली क्षीर कांकोली दोनों उत्पन्न होती है।

स्वरूप क्षीर काकोली की आकृति (पीवरी-सदृशः कंद:) पीवरी अश्वगंध के समान गन्धयुक्त और दुग्ध का श्राव इससे होता है, इसका वर्ण श्वेत माना है और इस प्रकार आकार गुणवाली काकोली होती है उसका वर्ण काला होता है।

काकोली के संस्कृत नाम—वायसोली, काय-स्थिका, वीरा काकोली जो काकोली सफेद रंग की होती है वह क्षीर काकोली होती है इसे वयस्था क्षीर वल्लिका, धारा, क्षीर शुक्ला, पयस्विनी, क्षीरिणी कहते है।

गुण—प्रकार द्वय काकोल्यो: शीत वीर्य; मधुर, शुक्रवर्धक, भारी शरीरस्थ धातुओं को बढ़ाने वाली वात रोग, दाह, रुधिर विकार, पित्त, शोथ और ज्वर को मिटाने वाली है।

ऋद्धि वृद्धि नाम गुणाश्च:

ऋद्धि वृद्धि यह दोनों कोशयामल प्रदेश में होते हैं। इन दोनों कन्दों की लतायें होती हैं, सफेद लोम युक्त होते हैं और छेददार होते हैं। ऋद्धि कपास की गांठवत् वाम वर्ग से दक्षिणावर्ग फल वाली होती है और वृद्धि का फल इससे विपरीत (दक्षिणवर्ग से वामवर्ग) होती है ऐसा महर्षियों का आदेश हैं।

दोनों के संस्कृत नाम--सिद्धि, लक्ष्मी यह दो है।

गुण – वृद्धि) शीत वीर्य, गर्भ धारण करने वाली, विपाक में मधुर, पौष्टिक, वीर्य वर्धक, स्वादिष्ट, रक्तपित्त, क्षत, खांसी तथा क्षय को मिटाने वाली है।

गुण—ऋद्धि, बल्य (त्रिदोष) वात, पित्त, कफ इनको हरने वाली, स्वादिष्ट, वीर्य वर्धक, विपाक में मधुर, भारी, आयु और ऐश्वर्य को बढ़ाने वाली मूर्च्छा तथा रक्तपित्त को नष्ट करने वाली है।

विशेष विवरण—

अष्टवर्ग की आठों औषधियां कन्द रूप में होती हैं। इन सबकी उत्पत्ति भी पहाड़ों की अति ही शीत प्रदेश भाग में होती हैं। इन सब के बारे में इस लेख में शास्त्रोक्त लक्षणों और गुणों का पूर्ण विवेचन किया है। अतीत काल व्यतीत होने पर भी इन आठ औषधियों को प्राप्त करने की आयुर्वेद जगत में कोई रूप रेखा प्रतीत नहीं होती है। इन आठों के संस्कृत के अलावा भाषा में कहीं नाम भी नहीं मिलते हैं। वैद्य बान्धवों एवं यूनानी चिकि-त्सकों, डाक्टरों ने भी इनके अनुसंधान की शुभ-कामना अकर्मण्यवत् बन्द कर दिया, जिससे आज यह अनुपम शक्ति प्रदान करने वाले पदार्थ नाम-मात्र में रह गये हैं। कई वैद्य और औषधि विक्रे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ताओं ने एवं हकीमों ने मिलकर अष्टवर्ग की औषधियों की गणना इस प्रकार की है—

बहमन सफेद, बहमन सुर्ख, सालम मिश्री, सकाकुल मिश्री परन्तु यह नाम दिए हैं, जिनके समान आकार प्रकार गुण हमारे आयुर्वेद शास्त्र से भिन्न हैं और अष्टवर्ग बेचने वाले इन्हीं को अष्टवर्ग में देते हैं किन्तु इनका उपयोग न करके प्रतिनिधि ही लेना शास्त्र सम्मत कहा जायगा। अतः प्रतिनिधि ही लेना उत्तम है। हरिद्वार औषधि भंडार पर काकोली, क्षीर काकोली, मेदा, महामेदा, उपलब्ध होते हैं, किन्तु लेखक ने मंगाकर देखे थे पूर्ण संतोष शास्त्र की दृष्टि से नहीं हो पाया, अतः मेरा दृढ़ विश्वास है कि जहां अष्टवर्ग का नाम देकर अन्य पदार्थ बेचे जायें और उनका उपयोग आयुर्वेद शास्त्र में अन्ध विश्वासी की तरह करना हेयस्पद है। अतः प्रतिनिधि ही उपयुक्त हैं।

अष्टवर्ग की दुर्लभता और प्रतिनिधि —

अष्टवर्ग सब प्रकार के साधन सम्पन्न रोगों को भी मिलना दुर्लभ है, अतः अष्टवर्ग के शास्त्र सम्मत प्रतिनिधि द्रव्यों को ही लेना श्रेयस्कर है, जिससे औषधि में शास्त्र वीहित गुण प्राप्त होजाये।

शास्त्र विहित प्रतिनिधिद्रव्याणि—

मेदामहामेदा स्थाने शतावरी मूलम्।
जीवकर्षभकस्थाने विदारी मूलम् ॥
काकोली क्षीर काकोली स्थाने अश्वगंधामूलम्।
ऋद्धि वृद्धिस्थाने वाराही कन्दम् (तत्तुल्यं क्षिपेत्)

कई वैद्यगण निम्नानुसार प्रतिनिधि द्रव्य लेते हैं। जीवक, ऋषभक के अभाव में गुडुची व वंशलोचन, मेदा के अभाव में अश्वगंधा, महामेदा के अभाव में शारिवा, ऋद्धि के स्थान में बला, वृद्धि के स्थान में महाबला। अन्यत्र काकोली के अभाव में श्याम मूसली, क्षीर काकोली के अभाव में सफेद-मूसली, मेदा के अभाव में सालम मिश्री छोटे दाने की, महामेदा के अभाव में सकाकुल मिश्री, जीवक के स्थान में लम्बे दाने की सालब, ऋषभक के अभाव में बहमन श्वेत, ऋद्धि के अभाव में चिड़िया कंद, वृद्धि के अभाव में पंजा सालम मिश्री। इस प्रकार प्रतिनिधि द्रव्यों का शास्त्रीय प्रयोगों में उपयोग करना आयुर्वेद के आदेश के सर्वथा विरुद्ध है कारण कि कथित प्रतिनिधि द्रव्य तब ही शास्त्र सम्मत माने जा सकते हैं जब तक शास्त्र कथित मूल द्रव्यों के अभाव की पूर्ति "प्रतिनिधियों द्वारा औषधगुण धर्म शास्त्र के सिद्धान्तानुसार" न हो जाय, अतः यह पूर्ति "शास्त्र मर्यादानुसार प्रतिनिधि द्रव्य जो शास्त्रीय प्रतिनिधियों से भिन्न माने हैं होना उन प्रतिनिधियों के गुणों से असम्भव सं प्रतीत होती है, अतः शास्त्र भिन्न निर्धारित प्रतिनिधियों के प्रपञ्च में न पड़कर शास्त्र कथित ही अष्टवर्ग के प्रतिनिधि द्रव्यों का उपयोग करना औषध गुण शास्त्र की दृष्टि में सर्व प्रकार से श्रेयस्कर है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदों में पञ्च कषाय ।

लेखक— आचार्य श्री० नित्यानन्द जी सारस्वत ।

बहुत से वैद्यों का विश्वास है कि प्राचीन भारत में औषधियों की स्वरस कल्पना के सिवाय अन्य कल्पनायें प्रचलित नहीं थी। वैदिक-कालीन अनुसंधान का कार्य ऐसे विद्वानों के हाथ में था, जो कि आयुर्वेदीय शास्त्र से अपरचित थे। उनके आयुर्वेद विरोधी दृष्टिकोण के खण्डन करने में हमारे इने-गिने विद्वान वैद्य समर्थ नहीं थे। इसीलिए ऐसी विचार-धारा की नींव पड़ी। किन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। औषधियों के उपयोग करने की प्राय: उन सभी कल्पनाओं का अस्तित्व हम भारतीय इतिहास के एकदम प्रारम्भ में पाते हैं, जिनका सविस्तार उल्लेख वर्तमान चरक और सुश्रुत संहिता में मिलता है। तभी आयुर्वेद को ऋग्वेद या अथर्ववेद का उपवेद मानने के आर्षकालीन सिद्धांत की सार्थकता है।

विश्व के सर्व प्राचीन ग्रन्थ 'ऋग्वेद' में लिखा है कि औषधियां रात में भी बढ़ती हैं और पूर्ण सार वाली होती हैं। सारवत्ता होने पर ही उनको उपयोग में लाना चाहिए (ऋग्वेद १०-१२६-३)। औषधियां सृष्टि के पहले परमेश्वर की नित्य शक्ति से अपना पोषण ग्रहण करती हैं और प्रलय के बाद सृष्टि के प्रारम्भ में प्रकाशित होती है अथर्ववेद १-२४-१)। इन औषधियों को हिमालय वाले पर्वतों से निकली हुई नदियां पर्याप्त जल से पुष्ट करती हैं (अथर्व वेद १-३८-१)। रस आदि से पुष्ट औषधियां असंख्य होती हैं और उनका विधि-पूर्वक शास्त्रीय और प्रायोगिक ज्ञान करने वाले सैकड़ों वैद्य हैं अथर्व वेद २-६-३। औषधियां पर्वतीय प्रदेशों में होती हैं और जल, वायु, अग्नि के समयोग होने पर रोगशामक होती हैं (अथर्ववेद ३-२१-१०)। पर्वतों पर ही नहीं, अन्य चौरस स्थानों में पैदा हुई औषधियां भी कल्याणकर और हृद्य होती हैं (अथर्ववेद ८-७-१७) औषधियां वर्ष भर की विभिन्न ऋतुओं में अपनी प्रकृति के अनुसार उगती रहती हैं और उनके खण्डित अंश अगले वर्ष फिर बढ़ जाते हैं (अथर्ववेद ८-१०-२)। जो औषधियां पर्वतों आदि पर प्रकृति के द्वारा प्रचुर परिमाण में नहीं होती, उनको विधि-पूर्वक बोना चाहिए (अथर्व वेद ६-१०६-३)। औषधियों की वपन-क्रिया बहुत बड़ी तादाद में होती थी और उनको कुदाल से खोदकर इकट्ठा किया जाता था (अथर्ववेद ४-७-५)। एकत्रित औषधियों को दूसरी दिशाओं में जाकर बेचने और तत्प्रदेशीय औषधियों को खरीद कर लाने की व्यवस्था थी (अथर्ववेद ४-७ ६) निश्चय ही यह यातायात सूखी औषधियों का अधिक होता होगा।

बड़ी औषधियों को नीचे तक खोदकर उनकी जड़ ली जाती थी (अथर्ववेद १-३८-३) किन्तु छोटी औषधियों का पत्र, पुष्प, फल, मूल आदि 'पञ्चाग' लिया जाता था अथर्ववेद ११-६-१५)। पूर्ण पाक होने पर औषधियों का स्वरस निकाला जाता था (सामवेद उत्तरार्चिक प्रपाठक ३ अर्धप्रपाठक १ तृच २२)। सामान्यतया यह स्वरस हरी औषधियों को किसी पत्थर से कूटकर निकाला जाता था। फिर स्वरस को सुवर्ण के पात्र में छानते थे, क्योंकि छानने से वह शुद्ध और स्वच्छ होता था, फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरस के भारी होने से वह बलवान व्यक्ति को ही पिलाया जाता था (ऋग्वेद ६-१-१.२)। स्वरस पान से शरीर नीरोग होकर पुष्ट होता और हृदय की शक्ति बढ़ती (ऋग्वेद ८-१७-४.६) है।

गीली औषधियों को पीसकर उनका कल्क बनाया जाता था (अथर्ववेद ४-६-७)। सूखी औषधि के सार पदार्थ को ग्रहण करने के लिए उसे ओखली जैसे पात्र में भर कर कूटा करते थे (अथर्ववेद २०-१३६-६,७)। इस प्रकार किये हुए औषधि के सूक्ष्म चूर्ण को खाया करते थे (अथर्ववेद २-२५-१) औषधियों का प्रथमज रस [स्वरस] अत्यन्त पोषक, वृष्य और भारी होने से केवल बलवान प्रकृति के मनुष्य ही पी सकते थे, किन्तु उससे हीन--वीर्य द्वितीयज रस [शृत क्वाथ] अन्य लोग भी पीते होंगे (अथर्ववेद ४-४-५)। औषधियों को बटलोई जैसे पात्र में पकाकर क्वाथ किया जाता था (अथर्व वेद २०-१३४-३ । औषधि के रस को पात्र में रख सुशीतल करने के लिए उसे बहुत देर तक बढ़िया आसन पर रखा जाता था (सामवेद पू० २-७-५)। यह एक प्रकार का शीत कषाय ही था, किन्तु सूखे द्रव्य को गर्म पानी में डाल रात को रखकर प्रातः पीने का स्पष्ट विधि न अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है। एतद्विषयक अनुसन्धान चालू हैं और उस समय शीत कषाय प्रचलित होने के सूक्ष्म सूत्र अपने पास अभी भी हैं। 'फाण्ट' बनाने का भी निर्देश है [अथर्ववेद २०-१०६-२]।

कषाय--कल्पना--विषयक उपर्युक्त सूक्तों या ऋचाओं में 'सोम' का नाम निर्देश बहुत बार आया है। जिसके विषय में वेद-भाष्यकारों ने पूरे तत्व का अनुसन्धान नहीं किया है। प्रतीत ऐसा होता है कि वैदिक काल में इस नाम की दो औषधियां थीं। इस सुप्रसिद्ध शब्द से सामान्य औषधि वाचक अर्थ का भी काम लिया जाता था। जिस प्रकार संहिता काल में ज्वर शब्द से एक रोग विशेष और सामान्य सभी विकारों का बोध होता एवं रसतन्त्र-काल में लोह शब्द से केवल लोहे और सुवर्ण आदि धातुओं का भी ज्ञान होता था। 'सोम' एक तो लता रूप में और दूसरा क्षुपाकार होता था। पहिला भांग जैसा हलका नशा लाता था। श्री. राहुल जी ने लिखा है कि तिब्बत में भांग को ही अब भी 'सोम राजा' कहते हैं। दूसरे प्रकार का सोम विषघ्न, आयुष्य, रसायन और स्वभाव व्याधि प्रतिषेधनीय होता था। इसकी १५ उपजातियां होती थीं। सभी के पत्ते चन्द्रमा की कला के अनुसार बढ़ा या घटा करते थे। चन्द्रमा के साथ इस आश्चर्यमय सम्बन्ध होने से ही चन्द्रमा-वाचक शब्द 'सोम' इसमें रूढ़ हो-गया होगा। इसी का प्रयोग सुश्रुत संहिता (चिकित्सा स्थान २६ काल में काया-कल्प के लिए किया जाता था।

इसी प्रकार लेप, गुटिका, स्नेह, आसव, अरिष्ट, अवलेह, भस्म आदि की आयुर्वेद विधियां भी स्पष्ट रूप से वेदों में विद्यमान हैं। जिनका पर्यालोचन अगले लेख में ही सम्भव है।

JWARARI
જ્વરારિ- તાવ, ટાઢીયો, અને બરોળ લીવર વિગેરેની ખાસ દવા
The Best Medicine For Malarial Fevers and spleenic - enlargement
Manufacturers: Dhanwantari Karyalaya, Bijaigarh. (Aligarh)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भांग।

ले०—कवि. डा. युगलकिशोर जी गुप्त D. I. M. S.
गांधीनगर, कानपुर।

भांग को अंगरेजी में इण्डियन हेम्प (Indian Hemp) या केनाबिस इण्डिका (Cannabis Indica) भी कहते हैं। भांग में कैनाबिनोन (Cannabinone) नामक एक प्रकारका चिपचिपा पदार्थ अर्थात् रेज़िन (Resin), वसा (Fat), मोम (wax), एक प्रकार का उडनशील तैल Volatile oil) इत्यादि पाये जाते हैं। उसका मुख्य भाग कैनाबिनोल (Cannabinol होता है।

आयुर्वेदीय दृष्टि से भांग कफहर, तिक्त, ग्राही, पाचक, लघु, तीक्ष्ण, उष्ण, पित्तवर्धक, मोहवर्धक, मादक, वाणीवर्धक और अग्नि-वर्द्धक होती है। उसका विशेष रूप से प्रयोग कामोद्दीपन के लिए वैद्य वर्ग नित्य ही किया करता है। एतदर्थ मदन मोदक, त्रैलोक्य विजया वटी, त्रैलोक्य संमोहन रस इत्यादि प्रसिद्ध आयुर्वेदीय योग हैं।

एलोपैथिक चिकित्सा में भांग का घन सत्व (एक्सट्रैक्ट) और टिन्चर बनाकर प्रयोग किया जाता है। ऐक्सट्रैक्ट कैनाबिस इण्डिका की मात्रा ¼ [illegible] १ ग्रेन तक (⅛ से ½ रत्ती) चिकित्सा में प्रयुक्त होती है। इसकी घातक मात्रा ५ से ६ ग्रेन (२½ से [illegible] रत्ती) होती है। टिन्चर केनाबिस इन्डिका की चिकित्सा में उपयोग की जाने वाली मात्रा ५ से १५ [illegible] तक है।

थोड़ी मात्रा में भांग को सेवन करने से भोजन [illegible] रुचि बढ़ती है किन्तु यह निबन्धकारक होता है। [illegible] का अधिक समय तक सेवन करते रहने से [illegible] का नाश हो जाता है और पचन संस्थान में गड़बड़ी पैदा हो जाती है। सेवन करने पर इसका शरीर में शोषण धीरे-धीरे क्षुद्रान्त्र से होता है और एक आध घंटे में भांग अपना प्रभाव दिखलाने लगती है। आन्त्र संकोच (Spasm of Intestine) को यह नष्ट कर देती है।

नाड़ी संस्थान में इसका मुख्य प्रभाव मस्तिष्क पर होता है और कई एक बातों में यह मद्य या अहिफेन की तरह प्रभाव करती है किन्तु इसका प्रभाव विभिन्न प्रकार के स्वभाव वाले व्यक्तियों पर एक सा नहीं होता। गांजे के रूप में धूम्रपान करने पर इसका प्रभाव शीघ्र होता है। भांग का किसी भी रूप में सेवन अथवा गांजे का धूम्रपान, थोड़ी मात्रा में प्रयोग करने पर मनुष्य को प्रफुल्लित करती है और नाना प्रकार के विचार उत्पन्न होते हैं। थकावट को भी दूर करती है। बहुत से लोग परिश्रम करने से पूर्व गांजे का धूम्रपान कर लिया करते हैं ताकि उन्हें थकावट न मालूम हो। हमारे देश के नामधारी साधू-सन्यासी गांजे का धूम्रपान अधिक करते हैं। रोगियों के लिए किसी अंश तक भांग कुछ लाभप्रद भी कही जा सकती है क्योंकि उचित मात्रा में भांग का सेवन करने के बाद मन को एकाग्र करने में यथेष्ट सहायता मिलती है।

भांग का सेवन करने के बाद मनुष्य को समय का ठीक-ठीक ज्ञान नहीं होता है और कुछ मिनट के बीतने पर उसे ऐसा मालूम होता है कि वह कई घंटे से आनन्द में निमग्न है। भांग के नशे में मनुष्य बातूनी हो जाता है जैसा कि भावप्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भी भांग को वाग्वर्द्धिनी कहा है और वह हर एक बात पर हंसने लगता है। बहुत ज्यादा शोर गुल करता है। कुछ समय के बाद निद्रा मालूम होने लगती है और निद्रावस्था में उसे कई प्रकार के आनन्दप्रद स्वप्न दिखाई देते हैं। अतएव भांग कामोदीपक, मादक एवं निद्राप्रद भी होती है। अधिक मात्रा में सेवन करने पर मस्तिष्क में विकार उत्पन्न करती है और लगातार सेवन करते रहने से उन्माद तक हो जाता है। भांग साम्वेदनिक नाड़ियों में अवसुन्नता उत्पन्न करती है और त्वचा में संज्ञा हीनता की अवस्था पैदा कर देती है। ऐसी अवस्था में यदि कहीं पर पीड़ा होती है तो वह या तो दूर हो जाती है या फिर कम पड़ जाती है। अतएव यह बेदनानिवारक भी है किन्तु अहिफेन की अपेक्षा गुण में हीन होती है।

भांग को अलसी के साथ मिलाकर पुल्टिस के रूप में अथवा केवल भांग की ही सूखी पत्तियों को गरम करके प्रसेक के रूप में अर्श के मस्सों पर रख कर बांधने से बहुत लाभ होता है। धनुर्वात के लिए भी यह लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

भांग का नशा अधिक चढ़ जाने पर रोगी के आमाशय का प्रक्षालन कराना चाहिये अथवा वामक औषधियों के द्वारा वमन करा देना चाहिए। फिर विरेचन देकर कोष्ठ-शुद्धि करनी चाहिए। बाद में गरम चाय, काफी इत्यादि उत्तेजक पदार्थ देने चाहिये।

अतिसार एवं ग्रहणी रोग में डाक्टर लोग निम्नलिखित योग प्रयोग में लाते हैं।

योग—एक्सट्रैक्ट केनाबिस १/२ ग्रेन (१/४ रत्ती)
एक्सट्रैक्ट औपिआई सिक्कम १/४ ग्रेन (१/८ रत्ती)
आयल सिनामम १/२ बूंद (१/४ रत्ती)—

सबको मिलाकर एक गोली (पिल) बनावें। यह एक मात्रा है ऐसी ही आठ मात्रायें बनाकर प्रति ४-४ घण्टे पर देने से लाभ होता है।

मूत्राशय संकोच, आमाशयक व्रण जन्य शूल, आन्त्रशूल, वृक्कशूल और पित्तशूल या परिणाम शूल के लिये नीचे लिखा योग अधिक प्रयुक्त होता है।

योग—एक्सट्रैक्ट केनाबिस ३/४ ग्रेन (३/८ रत्ती)
एक्सट्रैक्ट हायोसिमामाई सिक्कम १/२ ग्रेन (१/४ रत्ती)—

दोनों को मिलाकर गोली बना लेनी चाहिये ४-४ घंटे पर १-१ गोली देने से शूल को शान्त करती है।

कष्टार्तव (Dysmenorrhoea) के लिये नीचे लिखा योग दिया जाता है:—

योग—एक्सट्रैक्ट केनाबिस १/२ ग्रेन (१/४ रत्ती)
पल्व ओपियाई १/२ ग्रेन (१/४ रत्ती) कैम्फर २ ग्रेन (१ रत्ती) ग्लिसरीन ट्रैगाकेन्थ यथा-आवश्यक मिलाकर वटी बना लें। यह एक मात्रा है। ऐसी ४ मात्रा प्रति दिन मासिक धर्म के शुरू होते देना चाहिये। इससे मासिक-धर्म के समय कष्ट होता है वह दूर हो जाता है।

मासिक धर्म के समय अधिक रक्तस्राव अथवा रक्तप्रदर (Menorrhagia) के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। एतदर्थ निम्नलिखित प्रयोग देने से रक्तस्राव कम हो जाता है:—

योग—एक्सट्रैक्ट केनाबिस १/२ ग्रेन (१/४ रत्ती)
हाईड्रैस्टीन हाइड्रोक्लोर ३/४ ग्रेन (३/८ रत्ती)
कैम्फर ३/४ ग्रेन (३/८ रत्ती)—
ग्लीसरीन ट्रैगाकेन्थ यथा-आवश्यक मिलाकर १ गोली बनावें। यह एक मात्रा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षित प्रयोग

अर्श पर—

बनमूंग (मुग्दपर्णी, जंगली मूंग) और बोफली १-१ तोला लेकर भांग की तरह पीसकर गुदा पर बांधे। सुबह-शाम तीन दिन के प्रयोग से अर्श बादी हो या खूनी निर्जीव हो जायगा।

सोजाक (पूयमेह) पर—

देशी हल्दी का चूर्ण १-१ तोला सुबह और शाम को ठंडे पानी से सात दिन तक लेने और पथ्य में लूका और अलूना सेवन करने से सोजाक की भयंकर पीड़ा मिटे।

आतशक पर काली गोली—

भीलामा २ तोला
तिल्ली, खोपरा, गुड़ पुराना — प्रत्येक ४-४ तोला
अजमोद, खुरासानी अजमोद,
शु० गन्धक — प्रत्येक १-१ तोला
शु० पारा ६ माशा

प्रथम पारे गन्धक की कज्जली करलें फिर कज्जली को एक ओर रखलें। हाथ तिल्ली के तेल से चिकने कर फिर भीलावे जिनकी मुंडी काट ली गई हो उनको सिल पर तिल्ली खोपरा के साथ पीसें; बारीक हो जाने पर अजमोद और खुरासानी अजवाइन भी मिलालें और पीसें। जब तेल छूट जावे और खूब बारीक होजावे तब कज्जली भी मिला लेवें। बाद में १ प्रहर और घोटकर रखलें। मात्रा—१ तोला। भैंस के बंधे हुए दही के बीच में रखकर निगलवा देवें।

पथ्य—लूका और अलूना। जब तक सेवन करें उतने ही दिन और परहेज के रखें।

इसके सेवन से कोढ़, वात-व्याधि, फिरंग रोग नष्ट होते हैं।

नोट—जब देखलें कि मसूढ़े प्रदाह करने लग गये, दवा खिलाना बन्द करदे और पञ्चवल्कल के काढ़े का गण्डूष करा दे। शरीर में यदि खुजली व पिडिकायें ज्ञात हो तो नारियल तैल को दही में पीसकर लेप या मालिश करा देवें।

चर्म रोगों पर मंजिष्ठादि चूर्ण—

मंजीठ, शु० गन्धक,
लाल चन्दन —तीनों ४-४ तोला
हरड़, बहेड़ा,
आंवला तीनों २-२ तोला
छोटी इलायची १ तोला
वंसलोचन १ तोला
मिश्री २० तोला

मात्रा—२-२ तोला सुबह शाम।

पथ्य—लूका और अलूना।

हिचकी पर—

नकछिकनी चूर्ण १ माशा को गुड़ में मिलाकर दें। इससे हिक्का बन्द हो जायगी।

खुजली पर—

पारा, गन्धक, मंसिल, नीलाथोथा समान भाग लें। पहले पारे गन्धक की कज्जली बना शेष द्रव्य मिला वस्त्रपूत कर दूने गाय के घी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिला धूप में बैठ मालिश करें। तीन घण्टे बाद गरम पानी से स्नान करलें। पामा, खाज, याने पामा चाहे सूखी हो या गीली ३-४ बार के मालिश से अवश्य मिटे।

कामले पर—

गधे की लीद नग ५ जीरा सफेद १ तोला दोनों को पीसकर आध पाव पानी में मल छानकर पिला देवें। प्रयोग गुप्त रखे, तीन दिन करावें। पथ्य–लूका अलूना। कामला पीलिया शर्तिया मिटे।

रक्त-पित्त पर—

—मयूर शिखा बूटी जो पुराने मकानों व किलों पर अथवा पहाड़ियों में होती है लाकर १ तोला को पानी में भिगो देवें, फिर घोट-छान कर १ तोला शहद मिलाकर तीन दिन सुबह-शाम पिलावें।

अतिसार पर—

(दाड़िमसार वटी)

—एक कच्चा अनार लेकर उसको अंदर से खाली कर उसमें ६ माशा अफीम, २ तोला अजवाइन, २ तोला बीज निकाली खारक पीसकर अनार में भरदें और फिर अनार की टिकड़ी लगा दे। अनार पर गूंधा हुआ आटा लपेट और आग पर अच्छी तरह सेक दें। ऊपर से आटा लाल हो जावे जब देखलें कि पुट पक्व होगया निकाल आटा दूरकर खरल में डाल बारीक पीसलें, और झड़बेर समान गोली बनालें। १-१ सुबह-शाम देवें। अतिसार मिट जायगा।

रक्त-पित्त पर क्वाथ —

कालमेघ	५ तोला
अनार वृक्ष के जड़ की छाल	१ सेर

— लेकर कूट कर रखलें। दो तोला लेकर विधिवत् क्वाथ कर उसमें ५ बूंदें चूने के जल की डाल कर दिन में ३ बार दे। रक्त-पित्त, प्रदर, बदहजमी, हैजा कृमि-रोग मिटे। वैद्यगण अनुभव करें।

कास-श्वास पर—

(भृगु हरितकी)

सोंठ	काली मिर्च	पीपल
दालचीनी	इलायची	तेजपात
नागकेशर	--प्रत्येक	१॥-१॥ तोला
हरड़ बड़ी		नग २५
कटेरी ताजी		५ सेर
गुड़		१॥ सेर
मधु		आधा पाव

— प्रथम कटेरी को कूट कर १६ गुने जल में क्वाथ करें चतुर्थांश रहने पर छानलें उसमें बड़ी हरड़ को डाल कर पकाते रहें जब देखें कि बड़ी हरड़ का छिलका नरम होगया तब क्वाथ में से निकाल गुठलियों को निकाल कर फेंक दें और हरड़ के टुकड़ों को सुखाकर पीसलें। दूसरी तरफ त्रिकुटा और चातुर्जात को भी पीसकर रख लें फिर काढ़ा जब दो सेर के लगभग रह जाय उसमें गुड़ डाल कर चाशनी ले लेवें। जब चाशनी २ तारकी आजावे उतार कर प्रक्षेप द्रव्य मिला दे बाद में हरड़ का चूर्ण और मधु मिलाकर रख दे।

मात्रा – ६-६ माशा सुबह-शाम। कफज व्याधि पर अक्सीर है।

विशूचिका पर—

जायफल	लौंग	१-१ माशा
अफीम		१ रत्ती

—सबको बारीक पीसकर गरम पानी से दें। मात्रा दिनमें २-३ बार आवश्यकतानुसार दें। इससे हैजे की क़य और दस्त बन्द होते हैं।

व्रणों पर--

रस कपूर	कत्था	मुर्दासंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—प्रत्येक ६-६ माशा ।

कबीला १० तोला

गाय का घी

—कांसे की थाली में घी को धोकर उक्त वस्त्र-पूत चूर्ण घी में मिला कांसे की कटोरी से एक घंटा रगड़ कर रखलें और काम में लावें। पाउडर रूप जरूरत हो तो कुछ सूखा भी रखकर व्रणों पर छिड़क दे। कुछ दिन के प्रयोग से व्रण आराम होंगे।

वात व्याधि पर—

शांबर बेल	१ पाव
अजमोद	२ तोला
सोंठ	१ तोला

-को ऊखलं याह माम दस्ते में कुछ पानी छिड़कते जावें और बारीक कूटलें, जब लुगदी से स्वरस निकलने योग्य हो जावे तब स्वरस आध पाव [१० तोला] के लगभग निचोड़ लें और पिला देवें। इस प्रकार सुबह-शाम पीने और पथ्य में लूका और अलूना खाने से वात-व्याधि, गठिया कुलन शर्तिया मिटे।

उपरोक्त सब प्रयोग वंश परम्परा से चले आ-रहे हैं और सैकड़ों बार के आजमूदा हैं आयुर्वेद की सेवार्थ वैद्य समाज को भेंट है। प्रयोग में लाकर फलाफल धन्वन्तरि में सूचित करावें।

लेखक -वैद्यराज पं० सागरचन्द जी महात्मा
आमेट (मेवाड़)

प्रेषक-आयु० पं० उदयलाल महात्मा
देवगढ़ (मेवाड़)

बिच्छू के डंक पर—

डंक स्थान को छुरी से चीर कर उसमें प्याज का रस और नमक मिलाकर उस जगह पर मलें, ५ मिनट में दर्द आराम हो जायगा, परीक्षित है।

विशूचिकांतक चूर्ण—

काली मिर्च	काला नमक	नौसादर
सेंधा नमक	कलमी सोरा	यवक्षार
सोहागा भुना	—हरेक १०-१० तोला	

मात्रा—३ माशा। अनुपान-गरम जल।

नोट—यदि विशूचिका में पेशाब रुक गया हो तो लाल दूधिया घास को पीसकर पेड़ू पर लेप कीजिये। अवश्य पेशाब होगा परीक्षित है।

—पं० हृदयनारायण पाण्डेय
आ० प्राणाचार्य, करहंसी।

खाज की दवा—

खाने वाला चूना	१ भाग
अरण्डी का तैल	३ भाग

—फेंटकर शरीर पर लगाओ। प्रातः नीम की पत्ती पानी में उबाल कर उस पानी से स्नान करो। ७ दिन तक मीठी चीज से परहेज रखें।

खाज पर उबटन—

अरण्डी की गूदी (मुलायम पत्ती)	१ भाग
बकरी का दूध	२ भाग

—सिल पर खूब पीसकर उबटन लगाओ, इससे भी खाज दूर होती है।

उपदंश-नाशक दवा—

शु० पारद	अकरकरा
सफेद मूसली	अजवाइन खुरासानी
अजवाइन देशी	—पांचों १-१ तोला
बड़ी कटेरी के पत्ते	४ तोला
जल नीम	४ तोला
पुराना गुड़	१० तोला

—भांगरे के रस में एक दिन मर्दन कर जंगली बेर के बराबर गोली बनालें।

मात्रा-प्रातः-सायंकाल १-१ गोली मलाई के साथ ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ्य—केवल चना की रोटी खायें। ७ दिन में लाभ होगा।

—वैद्य कालूप्रसाद, गौरा।

जुकाम-खांसी-बलगम और ज्वर पर—

प्रतिश्याय अथवा जुकाम आरम्भ होते ही इसे प्रयोग में लावें। प्रतिश्याय सम्बन्धी सब व्यथायें शीघ्रातिशीघ्र शांत होजाती हैं। यदि प्रतिश्याय के साथ ज्वर हो तो निम्न क्वाथ में पित्त पाण्ड़ा, चिरायता और मिलालें और यदि प्रतिश्याय के साथ साथ ज्वर भी हो और सीने में सांस लेते समय पीड़ा भी होती हो तो पित्तपापड़ा चिरायता के अतरिक्त अड़ूसा (सफेद फूलों का बांसा) के पत्ते भी और मिलालें।

गुलबफ्शा	¼ तोला
गाजवां	¼ तोला
छोटी कटेरी	½ तोला

—इन तीनों का क्वाथ-विधि से काढ़ा बनालें और उसे मिश्री मिलाकर मीठा करले, यह एक मात्रा है ऐसी ऐसी ४ मात्रायें दिन भर में ले। यदि बलगम में बहुत खुश्की मालूम देती हो तो इसे ठण्डा करके पीवे और यदि नाक और बलगम बहुत बह रहे हों तो किञ्चित् गुनगुना पीवे। यदि सीने में भारीपन या दर्द हो और ज्वर वेग अधिक हो तो इस काढ़े में ¼ तोला अड़ूसा के पत्ते, ¼ तोला पित्तपापड़ा और ¼ तोला चिरायता और मिलालें। यदि निमोनिया ही हो गया हो तो पूर्वोक्त छहों चीजों का क्वाथ इस दवा के साथ अनुपान रूप से बरते।

—मृगशृंग भस्म १ से २ रत्ती, कांची रस १ से दो रत्ती, प्रवाल भस्म ½ रत्ती। इन सब चीजों की मात्रा अवस्थानुसार घटाले। यहां पर १६ वर्ष से ऊपर वाले की मात्रा निर्दिष्ट है।

नोट—छोटी कटेरी (व्याघ्री) के फूल पत्ते और डण्ठल ही काढ़े में डाले बीज नहीं। इस काढ़े से तमक श्वास या प्रतमक श्वास का वेग सत्वर मन्द पड़ जाता है और कफ जिसके कारण सीना भारी मालूम पड़ता है और सांस ठीक नहीं ली जाती आसानी से निस्सरित होने लगता है। यदि सांस का वेग अत्यन्त प्रबल हो, ललाट से शीतल प्रस्वेद छूट रहा हो, फेफड़ों में जरा सा भी स्थान हवा के लिये न रह गया हो तो उपर्युक्त छहों चीजों के काढ़े में सोमलता के सूखे पत्र ½ तोला एक मात्रा में और मिलाले अथवा इफीड्रीन हाइड्रोक्लोर की आध ग्रेन की एक गोली इस काढ़े से निगल जाय। तुरंत सांस ठीक होगी। इस काढ़े से कुक्कर खांसी भी ठीक होती है। यह ज्वरघ्न, स्वेदल, कफ निस्सारक, मूत्रल और मल निस्सारक भी है।

यकृत प्लीहा वृद्धि पर—

महा सुदर्शन चूर्ण ४ आने से ६ आने भर, एलुवा मुसब्बर ४ रत्ती से ६ रत्ती तक, शंख-कौड़ी-सीष भस्म १-१ रत्ती को फांके और ऊपर से कुमारी आसव ४ आने से ६ आने भर एक-दो तोला जल मिलाकर पीले। ऐसी-ऐसी मात्रा दिन भर में २ से ३ बार ले, थोड़े ही दिनों में यकृत-प्लीहा-वृद्धि दूर होकर रोगी स्वस्थ हो जायगा। छोटे बच्चों की मात्रा आयु अनुसार घटाले। कुमारी आसव शारंगधरोक्त लेना चाहिये। महासुदर्शन चूर्ण भी शारंगधर का ही मान्य है। भोजन के बाद दिन में दो बार केवल कुमारी आसव ½ तोला और पानी २ तोला मिलाकर पी लिया करें।

—वैद्य ज्योतिस्वरूप सकलानी, वै० भू०
श्रीनगर, गढ़वाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

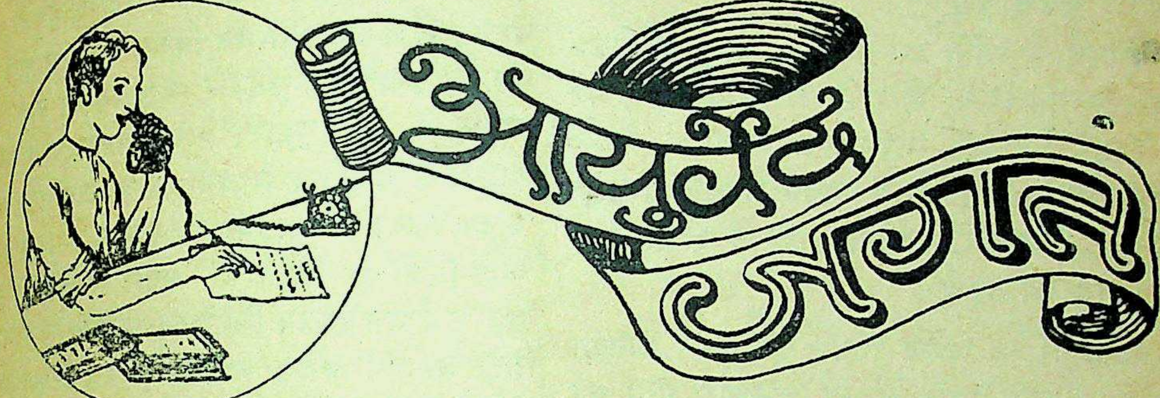

इण्डियन मैडीसन बोर्ड की सूचना—

सर्व साधारण को, विशेष कर वैद्य समुदाय को यह सूचित किया जाता है कि युक्त प्रान्तीय बोर्ड आफ इंडियन का आर्थिक सम्बन्ध अब सरकारी खजाने से नहीं रहा, जब वे अपनी फीस क्रास पोस्टल आर्डर अथवा जहां इसकी सुविधा न हो मनिआर्डर द्वारा रजिस्ट्रार बोर्ड आफ इंडियन मेडिसिन यू० पी० लखनऊ के नाम भेज सकते हैं। अब बोर्ड ने रजिस्ट्रेशन की फीस 'बी' क्लास की १०)रु० और 'ए' क्लास की १५)रु० निश्चित की है। जिनके आवेदन पत्रों के साथ ५) के चालान आ चुके हैं उनको बढ़ी हुई फीस के अनुसार बाकी रुपया भेजना होगा; उसी प्रकार 'ए' क्लास के ट्रान्सफर के प्रार्थी वैद्यों को भी नवीन नियमों के अनुसार १५) देना होगा, क्योंकि यह ट्रान्सफर 'ए' क्लास में प्रारम्भिक रजिस्ट्रेशन समझा जायगा। वैद्य समुदाय से यह भी प्रार्थना है कि वे अपने पत्र के उत्तर के लिये टिकट भेजने का कष्ट न करें। बोर्ड का ऑफिस अब ११; ए० पी० सेन-रोड पर आगया है।

—लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी, रजिस्ट्रार बोर्ड आफ इंडियन मेडिसिन, संयुक्त प्रान्त, लखनऊ।

जिला वैद्य सम्मेलन रायबरेली—

का वार्षिकोत्सव ता० ३ मार्च ४८ को श्रीमान् पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल आयुर्वेद पंचानन प्रयाग निवासी के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। जिले के वैद्यों ने भाग लिया, सभापति जी का भाषण समाप्त होने के पश्चात् नौ प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुये। प्रथम प्रस्ताव द्वारा पूज्य महात्मा गांधी की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया, दूसरे प्रस्ताव द्वारा प्रान्तीय सरकार का ध्यान आकर्षित कराया गया कि समस्त ग्राम पंचायतों के चुनाव में एक-एक वैद्य सदस्य नियुक्त करने के लिये अपील की गई, जिससे स्वास्थ्य-रक्षा का कार्य ग्राम पंचायतों द्वारा सुचारु रूप से हो।

—धनञ्जयदत्त शुल्क वैद्य विशारद।

संयुक्त मत्स्य प्रदेश के वैद्यों से—

दिनांक १७ मार्च सन् ४८ को अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली चारों राज्यों का एकीकरण करके एक "संयुक्त मत्स्य राज" का निर्माण हो चुका है। इस कारण इस संयुक्त राज के निवासी समस्त वैद्यों का कर्तव्य होजाता है कि वह अपना एक संगठन करें, जिसमें कि चारों राज्यों के वैद्य हों, जिससे कि आने वाले समय में उनको किसी भी प्रकार से कोई बाधा न हो।

आशा है कि विद्वान वैद्य गण समय की गति को पहचान कर संगठन कर "संयुक्त मत्स्य राज वैद्य सम्मेलन' को जन्म देने का प्रयत्न करेंगे।

—वैद्य बी० एस० रैपुरिया, धौलपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार वैद्यक वर्ग—

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 'आयुर्वेद सेवा-मण्डल भुसावल' की ओर से ग्रीष्मावकाश (मई सन् १९४८) में एक मास तक व्यवहार वैद्यक वर्ग चलाया जायगा, जिसमें व्यवहारोपयोगी निदान चिकित्सा, इंजेक्शन, सर्जरी आदि के प्रत्यक्ष ज्ञान की व्यवस्था की गई है।

प्रवेशार्थी १० अप्रैल १९४८ तक निम्न लिखित पते पर –)॥ की टिकट भेजकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अध्यक्ष - सेवा मण्डल,
भुसावल (पू० खानदेश)

आयुर्वेद कालेज लाहौर कहां ?

दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज लाहौर से हटकर अब कहां पर स्थापित हुआ है ? उसके प्रिंसीपल श्री० डा० आशानन्द पंचरत्न लिखित दो पुस्तकें व्याधि-विज्ञान तथा सूचिवेध-चिकित्सा मंगाना है। उनका पता भी विज्ञ महोदय लिख भेजें।

—डा० विद्याप्रकाश वाजपेयी विशारद।

मध्य प्रांतीय आयुर्वेद मण्डल द्वितीय अधिवेशन

वारासिवनी

कविराज मणीन्द्रनाथ मुखोपाध्याय अध्यक्ष निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ तथा प्रिंसीपल ऋषिकुल आयुर्वेदीय कालेज हरिद्वार के सभापतित्व में महाकौशल प्रांतीय आयुर्वेद मण्डल का द्वितीय अधिवेशन ता० १३-१४ मार्च को वारासिवनी में बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। प्रांत के सभी श्रेणी के वैद्य प्रतिनिधि और साधारण सदस्य मिलाकर करीब एक हजार के उपस्थिति थी। सम्मेलन द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों में से निम्न-लिखित प्रस्ताव बहुत ही महत्वपूर्ण हैं –

(१) सरकारी आयुर्वेद महाविद्यालयों में विशुद्ध आयुर्वेद की ही शिक्षा दी जाय। इस प्रस्ताव पर आयुर्वेद रत्न कविराज पं० हर्षुल मिश्र ने यह संशोधन उपस्थित किया था कि आयुर्वेद को विशुद्ध रखते हुए सरकार आयुर्वेद को राष्ट्रोपयोगी बनाने के हेतु पूर्वीय तथा पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति के आधुनिक साधनों आविष्कारों और सूची-भेदन क्रिया को आयुर्वेद में आत्मसात कर सिखाना चाहती हो तो वह उन्हें सिखा सकती है, परन्तु यह संशोधन विषय निर्वाचन समिति में ३ मत से गिर जाने के कारण अध्यक्ष महोदय ने खुले अधिवेशन में उसे लाने के लिये मना कर दिया।

उपर्युक्त संशोधन के गिरने के बाद कविराज [illegible] हर्षुल मिश्रा के नीचे लिखे सुझाव प्रस्ताव रूप [illegible] निर्विरोध स्वीकार किये गये।

(१) आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति बनाने के लिये एलोपैथी के समकक्ष आधुनिक आविष्कारों से सुसज्जित करने की नितान्त आवश्यकता है। इस कार्य को सम्पादन करने के लिये एक प्रांतीय आयुर्वेद अन्वेषण समिति निर्माण की जाय, जि[illegible] में हर जिले से एक विद्वान वैद्य सदस्य चुना जा[illegible]

(२) भारत सरकार आयुर्वेद को राष्ट्रीय चि[illegible] प० स्वीकार करे, क्योंकि वह हजारों वर्षों से भा[illegible] तीय जनता के स्वास्थ्य की रक्षा करती चली आ[illegible] है, इसलिये उसे सांस्कृतिक अधिकार है, कि [illegible] स्वतन्त्र भारत में राष्ट्रीय चि० पद्धति स्वीकार [illegible] ली जाय।

(३) आयुर्वेद को राष्ट्रोपयोगी चिकित्सा पद्[illegible] सिद्ध करने के लिये प्रमाणित वैद्यों को आयुर्वे[illegible] पद्धति के आधार पर सरकारी औषधालयों में [illegible] और काय चिकित्सा दोनों विभागों में कार्य [illegible] का अवसर और सुविधा सरकार द्वारा [illegible] की जाय।

(४) आयुर्वेद की मध्यमा और उत्तमा परी[illegible] त्तीर्ण वैद्यों को क्रमशः एलोपैथी के L.M.P. [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

M.B.B.S. के समकक्ष श्रेणी प्रतिष्ठा और वेतन मान सरकार द्वारा निश्चित कराया जाय तथा सरकारी वा अर्धसरकारी संस्थाओं में काम करने वाले वैद्यों का प्रारम्भिक वेतन १००) रु० से कम न रखा जाय। वेतन मान १००-५-१६०) कर दिया जाय।

उपर्युक्त प्रस्तावों के अतिरिक्त और भी प्रस्ताव पास हुए। एक प्रस्ताव द्वारा सम्मेलन में सरकार से जब्बलपुर में आयुर्वेद महा विद्यालय खोलने की सिफारिश की। सम्मेलन की कार्यवाही के अन्त में प्रांत के आयुर्वेद सेवी विद्वान वैद्यों को उपाधियां वितरण की गईं। निखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ देहली के सभापति कविराज पं० मणीन्द्रनाथ मुखोपाध्याय महोदय ने कविराज पं० हर्षुल मिश्रा को आयुर्विज्ञान और काय चिकित्सा में प्राणाचार्य की उपाधि और पंच कर्म एवं कल्प चिकित्सा पद्धति नामक लेख पर स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया। —उपमन्त्री।

गुप्तकाशी (गढ़वाल) समाचार —

श्रीमान् १०८ रावल साहब मंदिर की केदारनाथ द्वारा संस्थापित "केदारनाथ धर्मार्थ औषधालय" सन् १९२४ से अब तक पं० वैणीप्रसाद जी जोशी वैद्य द्वारा सुचारु रूप से संचालन होता आ-रहा है। जिसकी सरकारी व गैरसरकारी महानुभावों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। सन् १९४७ में ३३३७ रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा की गई है।

उक्त वैद्य जी एक अनुभवी व्यक्ति हैं और लगातार गत २४ वर्षों से निकटवर्ती जनता व यात्रियों की सेवा करना ही आपकी कार्य-कुशलता का परिचायक है।

—लाला श्यामलाल साह, गुप्तकाशी।

दवा के सच्चे मोती

वैद्यो! हकीमो!! तथा फार्मेसी वालो!!!

हमारे यहां सब प्रकार के शुद्ध और सच्चे मोती, जैसे कि बसराई खाका, सीलोन खाका, आस्ट्रेलियन मोती वगैर, जो दवा के लिए सर्वोत्तम हैं तथा जो भारत के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वैद्यों द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं, निहायत किफायत से मिलते हैं। धर्मार्थ औषधालयों तथा फार्मेसियों के साथ विशेष रिआयत की जाती है। आर्डर भेजने की कृपा करें।

पता—नगीनदास वीरचन्द जेवरी, ४४-४६, धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३।

आयुर्वेद जगत के सर्व-श्रेष्ठ और लोकप्रिय सचित्र मासिक पत्र 'रसायन' का अप्रैल मास में २०० से अधिक पृष्ठों पर

फलों से इलाज

विशेषांक प्रकाशित होरहा है, जिसमें सिर से लेकर पांव तक होने वाले लगभग सभी साधारण और जीर्ण तथा कठिन एवं गुप्त रोगों का इलाज सुमधुर और स्वादिष्ट फलों से करना बतलाया गया है। (अमीरों-रईसों और साहूकारों तथा उनके चिकित्सकों एवं कोमल प्रकृति वाले व्यक्तियों के लिए जो काली-कलूटी और कड़वी कसैली दवाइयां सेवन नहीं कर सकते या घृणा होती है) यह अङ्क प्रकृतिकी अपूर्व देन सिद्ध होगा। फलों से इलाज पर भारतवर्ष में यह सबसे पहला और अद्भुत विशेषाङ्क है। इस अङ्क का मूल्य २॥) होगा, किन्तु वार्षिक मूल्य ६) भेजकर स्थाई ग्राहक बनने वालों को मुफ्त मिलेगा। अभी से आर्डर बुक कराने वाले ही इस अंक को प्राप्त कर सकेंगे।

मैनेजर—'रसायन' [दरियागंज] ३ पो. बो. १२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एपोलो आयुर्वेदिक इंजैक्शन

आयुर्वेदिक इन्जैक्शनों की प्रमाणिकता के लिये निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन ने केवल इसी फार्मेसी को स्वर्णपदक से सम्मानित किया है। आवश्यक विवरण पत्र द्वारा मंगाइये। एजेंटों की आवश्यकता है।

दी एपोलो फार्मेस्यूटीकल वर्क्स लिमिटेड

प्रतापगंज : : बरौदा

यदि आप शारीरिक, मानसिक और आर्थिक त्रिविध उन्नति प्राप्त करके प्रतिष्ठा पूर्वक स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहते हैं—तो:—

सचित्र— मासिक पत्र **रसायन** वार्षिक ६) एक प्रति का ।।=)

के आज ही ग्राहक बनिए। इस पत्र में प्राचीन संचिकाओं और महात्माओं के गुप्त एवं अनुभूत प्रयोग, भारतीय जड़ी-बूटियों पर सन्यासियों के गुप्त भेद, देसी द्रव्यों से अंग्रेजी औषधियां बनाने की विधियां, आधुनिक आयुर्वेद जगत के क्रान्तिकारी अनुसंधान, धुरंधर आयुर्वेदाचार्यों के गवेषणा पूर्ण लेख तथा अर्थोपार्जन के लिये अमेरिका इग्लैंड के व्यापारिक गूढ़रहस्य और कला-कौशल सम्बन्धी प्रयोगात्मक लेख प्रति मास प्रकाशित होते हैं। वर्ष भर में दो विशेषांक मुफ्त।

पता- रसायन कार्यालय, पो. बो. १२५ देहली।

यदि आपको आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों का— हजारों बार का परीक्षित **अदभुत चमत्कार** अपूर्व उत्कृष्ट आविष्कार देखना हो तो निम्न पते से ही प्रत्येक रोगों का इंजेक्शन मंगाकर धनव यश के भागी बनें।

आयुर्वेदिक कुनैन इञ्जेक्शन

केवल १ इंजेक्शन में मलेरिया लापता हो जाता है। एलोपैथी कुनैन से विशेष लाभदायक है। इसे बड़े २ वैद्य डाक्टरों ने आजमाकर मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। परीक्षा प्रार्थनीय है।

दी आयुर्वेदिक इञ्जेक्शन सप्लाई एजेन्सी, मंगलगढ़ (दरभंगा)

खाज-खुजली के लिये **अकसीर**

"खाजरिपु"

—निर्माता—

धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद संसार में क्रान्तिकारी खोज

पूर्ण अनुभूत--वैज्ञानिक--द्वारीय इन्जैक्शन से चौगुना लाभ पहुंचाने वाले हर रोग पर अलग २ स्पेशल 'बीटौल सात्वीय आयुर्वेदिक इन्जैक्शन्स'' प्रयोग कर धन, यश तथा स्वास्थ्य लाभ कीजिये।

मलेरिया बुखार — रक्त पित्त (अधो तथा ऊर्ध्वगत)

खुजली (सूखी व पस वाली) — प्रमेह, स्तम्भन

बात-व्याधि (गठिया आदि) — प्रदर-कष्टोरज शोथ आदि

पर विशेष उपयोगी तथा यकृत, प्लीहा, श्वास, कास, छाजन, गजकर्ण (Eczema), नपुंसकता आदि पर स्पेशल इन्जैक्शन तथा शर्तिया औषधियां हमारे यहां से खरीदिए। थोक खरीद पर अधिक सुविधा। सूचीपत्र मुफ्त।

पता–हिन्द रिसर्च लेबोरेटरीज (रजि०) सदर बाजार झांसी [यू. पी.]

टिकियां बनाने की मशीन

बड़े २ वैद्यों, हकीमों तथा डाक्टरों द्वारा सम्मानित, चमकती निकिल चढ़ी पीतल की बनी दो डाइयों सहित ½ ग्रेन से १० ग्रेन तक की इच्छित मोटाई तथा बजन की गीली तथा सूखी वस्तु की एस्प्रो, कुनैन जैसी फैन्सी टिकियों के लिए सर्वथा उपयुक्त। १ घण्टे में ३००-४०० टिकियां आसानी से बना सकती है। मूल्य १२) डाक खर्च ॥।≈)

वैद्य या डाक्टर बनिये

घर बैठे कम समय और थोड़े खर्च में आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक तथा यूनानी उपाधि (डिप्लोमा) प्राप्त करने के नियम मुफ्त मंगाइये।

रजिस्टर्ड तथा पेटेन्ट

व्यापार में धोके और नकल से बचने के लिए अपने ट्रेडमार्क, लेबिल, फर्म, दवाओं आदि के नाम भारत सरकार से रजिस्टर्ड तथा पेटेन्ट कराने के नियम मुफ्त मंगावें।

पता भारत कं० रजिस्टर्ड नं० २४, शिकोहाबाद (यू. पी.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धन्वन्तरि" का

कल्प एवं पञ्चकर्म चिकित्सांक

के लिये अनेकों आयुर्वेद महारथियों, अनुभवी चिकित्सकों तथा विद्वान लेखकों के उत्तमोत्तम लेख आये हैं। इस बार का विशेषांक प्रत्येक आयुर्वेद-चिकित्सक के लिये तो उपयोगी प्रमाणित होगा ही, किन्तु इस विशेषांक के पढ़ने तथा मनन करने से भारत का विद्वान समुदाय तथा विदेशी चिकित्सा पद्धति के अंधभक्त डाक्टर लोग भी यह समझ सकेंगे कि आयुर्वेद दकिया-नूसी अवैज्ञानिक चिकित्सा-पद्धति नहीं है बल्कि प्राचीन ऋषि मुनियों की दिव्य दृष्टि एवं अगाध ज्ञान से उत्पन्न हुआ यह पूर्ण वैज्ञानिक सर्वोपयोगी चिकित्सा शास्त्र है।

"पञ्चकर्म"

के विषय में विस्तृत एवं अनुभव पूर्ण लेखों को पढ़ने से चिकित्सक समुदाय आयुर्वेद चिकित्सा-विज्ञान के इस आवश्यक एवं महत्व-पूर्ण अंग से भलीभांति परिचय प्राप्त करेगा तथा जन-समुदाय जान सकेगा कि आजकल प्राकृतिक-चिकित्सा पद्धति में जो कुछ है उसका अधिकांश "पञ्चकर्म" में सन्निहित है।

विशेषांक की ७००० प्रति छापी जा रही हैं। इसकी सुन्दरता और उपादेयता को ध्यान में रखते हुए हम यह कह सकते हैं कि आप धन्वन्तरि के पिछले सभी विशेषांकों से अधिक इस विशेषांक को पसन्द करेंगे।

—यह विशेषांक—

जून-जुलाई १९४८ का विशेषांक होगा तथा अगस्त
माह में आपको अवश्य मिल जायगा।

जो सज्जन

धन्वन्तरि के ग्राहक नहीं हैं। ५=) भेजकर
इस विशेषांक की प्रति रिजर्व करालें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

धन्वन्तरि

—सूचना—

आगामी अंक भेजने के बाद अधिकांश ग्राहकों का वार्षिक मूल्य समाप्त हो जायगा। इसी अंक में हम छपा हुआ मनिआर्डर फार्म भेज रहे हैं। सभी ग्राहकों से सादर निवेदन है कि मनिआर्डर द्वारा आगामी वर्ष का वार्षिक मूल्य शीघ्र ही भेज दें। वी० पी० मंगाने या मनियार्डर से वार्षिक मूल्य भेजने में किसी प्रकार का अन्तर नहीं पड़ता है लेकिन मनिआर्डर से रुपया प्राप्त होने में हमारा कार्य-भार बहुत कुछ हल्का हो जाता है और हमको सुविधा होती है। इधर ग्राहकों को भी विशेषांक रजिष्ट्री द्वारा पहिले मिल जाता है। अतएव हमारा आग्रह है कि आप वार्षिक-मूल्य मनिआर्डर से शीघ्र ही भेज दीजियेगा। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप हमारे आग्रह को नहीं ठुकरायेंगे।

—व्यवस्थापक "धन्वन्तरि" विजयगढ़ (अलीगढ़)

नोट-मनिआर्डर भेजते समय नीचे कूपन में—

१—अपना पूरा पता। २—अपना ग्राहक नम्बर।

३—ग्राहक पुराने हैं या नये बन रहे हैं।

इन तीन बातों को लिखना न भूलें।

—वार्षिक मूल्य ५।)—

पोस्ट आफिस ने रजिष्ट्री फीस ≡) की जगह ।) कर दी है, अतएव हमको भी वार्षिक मूल्य ५≡) के स्थान पर ५।) करना पड़ रहा है। —वैद्य देवीशरण गर्ग।

अप्रैल १९४८
भाग २२ अङ्क ११
वार्षिक-मूल्य ५।)

सम्पादक
वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग
जे. पी. अग्रवाल बी.एस.सी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Dhanwantari Regd. No.

"धन्वन्तरि" का

जो सज्जन

धन्वन्तरि के ग्राहक नहीं हैं। ५≡) भेजकर

इस विशेषांककी प्रति रिजर्व करालें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

No. 28

धन्वन्तरि

-इस अंक में-

धन्वन्तरि के प्रति (कविता)	६८१	मूंगफली (खाद्य-समस्या का हाल)	७००
ज्वर-निदान (कविता)	६८२	काहू	७०२
चिकित्सा-शास्त्र	६८४	सत्यानाशी के अनुभूत योग	७०५
रस गुण वीर्य विपाक ...र प्रभाव	६८८	केले के गुण	७०७
बवासीर	६९२	परीक्षित प्रयोग	७०८
पैसे के रोग	६९४	वैद्यों की सम्मतियां	७१२
काला ज्वर	६९६	वैद्यों से परामर्श	७१६
संग्रहणी	६९७	सहित्यालोचन	७१९
पामा (खाजन)	६९८	अयुर्वेद जगत (समाचार)	७२१

वार्षिक मूल्य— ५।)

पोस्ट-आफिस ने रजिष्ट्री फीस ≡) के स्थान पर ।) करदी है, अतः हमको भी धन्वन्तरि का वार्षिक मूल्य ४≡) के स्थान पर ५।) करना पड़ा है ।

अप्रैल १९४८
वर्ष २२ अङ्क ११
वार्षिक-मूल्य ५।)

सम्पादक
वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग
जे. पी. अग्रवाल बी.एस.सी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्प एवं पंचकर्म चिकित्सांक

धन्वन्तरि का यह विशेषांक

पहिले सभी विशेषांकों से उत्तम, सुन्दर उपयोगी एवं आकर्षक प्रकाशित होरहा है। इसमें प्रकाशित होने के लिये विद्वान एवं अनुभवी चिकित्सकों ने अपने अनुभव दिल खोल कर भेजे हैं। सुन्दर व उपयोगी चित्रों की व्यवस्था की जा रही है। आप इसे देख कर एक बार कह उठेंगे—

"अवश देखिये देखन जोगू"

इस विशेषांक को

श्री. कविराज उपेन्द्रनाथ दास जी काव्य-व्याकरण सांख्यतीर्थ

मंत्री—आयुर्वेद विद्यापीठ, देहली

विशेष रूप से सम्पादन कर रहे हैं। आपकी मंजी हुई लेखनी एवं आपकी विद्वत्ता से सम्पूर्ण वैद्य-समाज परिचित है तथा आपके सम्पादन से इस विशेषांक की उपयोगिता और भी बढ़ जायगी।

वार्षिक मूल्य ५।) शीघ्र ही मनियार्डर भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करालें।

व्यवस्थापक--धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

Printed and Published by Vaidya D. S. Garg at the Dhanwantri Press, Bijaigarh.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by Dept. of Public Instruction of Central Provinces & Berar.

भाग २२ अङ्क ११ | सम्पादक— वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग, जे. पी. अग्रवाल, बी. एस. सी. | अप्रैल सन् १९४८ ई०

धन्वन्तरि के प्रति

धन्वन्तरि विश्वविजयी हमारा है।

जब से धरा तू पैर वैद्यों के समाज बिच,
तब से हुआ तू आज सबका दुलारा है।
भरे हैं प्रयोग जामें लाखों अनुभूत सभी,
करते प्रकाश मानो चन्द्र उजियारा है॥
पाते हम विज्ञ बन्धु प्रतिमाह लेख नये,
भिषक अलावा सारा देशका भी प्यारा है।
'कहे' द्विजराज रोग राज को भगाते सदा,
याते धन्वन्तरि विश्व विजयी हमारा है॥

श्री. रामाधार जी द्विवेदी
दलिनांव (शाहाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(गतांक से आगे)

ज्वर निदान !

लेखक—श्री० मिश्रीलाल जी गुप्ता, इछावर ।

विषम ज्वर

अति अल्प दोष कुपथ्य से, रस रक्त आदिक धातु में।
होकर प्रवेश मनुष्य के, करता विषम ज्वर गात में ॥
होती कभी है उष्णता, और शीत होती है कभी।
चढ़ता उतरता रात में भी, और दिन में भी कभी ॥
जो ज्वर समय करके नियत, आता है निश्चय गात में।
लेते विषम ज्वर जानकर, सद्वैद्य उसको हाथ में ॥
संतत, सतत, अन्येद्यु और, त्रतियक चतुर्थिक नाम है।
यकृत तथा प्लीहादि को, विकृत बनाना काम है ॥
वैषम्यगति है सर्वथा, इससे विषम ज्वर नाम है।
प्रतिएक का निज नाम के, अनुसार ही दुष्काम है ॥

सन्तत ज्वर

सप्ताह या द्वादश दिनों तक, जो निरन्तर छा रहे।
सन्तत कहाता वेग इसका, तीव्र और हलका रहे ॥

सततादि ज्वर

दिन-रात में दो बार जो आवे, सतत कहते उसे।
प्रतिदिन चढ़े जो नियम से, अन्येद्यु कहते हैं उसे ॥
दिन एक तजकर जो चढ़े, कहते त्रतीयक हैं उसे।
चौथे दिवस आता है जो, चातुर्थज्वर कहते उसे ॥

वात-वलासक ज्वर

ज्वर मन्द २ बना रहे, और गात्र रूक्ष रहे सदा।
जकड़ा रहे सब अंग, वात-वलास ज्वर में सर्वदा ॥

प्रलेपक ज्वर

स्वेदादि के प्रावल्य से, हो देह लिपता सा जहां।
ज्वर मन्द शीत समेत हो, बस ज्वर प्रलेपक है वहां ॥

जीर्ण ज्वर

ज्वर मन्द मन्द बना रहे, सप्ताह त्रय पश्चात भी।
मन्दाग्नि प्लीहा वृद्धि से, क्रमशः सुखाता गात भी ॥

असाध्य ज्वर

सम्पूर्ण लक्षण सहित जो, ज्वर वेग से उत्पन्न हो।
अज्ञान मय सब इन्द्रियां, निज कार्य तजकर सुन्न हो॥
जो रुग्ण ज्वरसे क्षीण हो, और शोथसे लाचार हो।
ज्वर दीर्घकाल बना रहे, कितना उचित उपचार हो॥
गुच्छी पड़े निज केश में, तो रोग पूर्ण असाध्य है।
सद् वैद्य ऐसे रुग्ण के, परित्याग को ही बाध्य है॥

ज्वरमुक्त के लक्षण

आने लगे जब स्वेद, लघुता देह में निज ज्ञात हो।
खुजली चले सिरमें तथा, मुखपाक क्षत्र भी साथ हो।
तब जान लो ज्वरमुक्त है, रोगी तुम्हारा हर्ष है।
करता रहेगा पथ्य पालन, तो परम उत्कर्ष है।

ज्वर के दस उपद्रव

तृष्णा, अरुचि, अतिसार, कास, विवंध, हिक्का, जानलो।
यह दाह मूर्च्छा, श्वास, छर्दि, दस उपद्रव मानलो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंथर ज्वर

मोतीझरा कहते जिसे, सब लोग साधारणतया ।
मंथर उसी को शास्त्र ने कहकर प्रकट समझा दिया ॥
ज्वर, दाह, भ्रम, औ.र मोह, वमि, अतिसार त्रष्णा हो जहां ।
हो अनिद्रा मुखरक्त जिह्वा कण्ठ सूखा हो जहां ॥
सरसों सदृश दाने दिखावे, श्वेत ग्रीवा पर जहां ।
मंथर उसी ज्वर को बताता शास्त्र निश्चय ही वहां ॥
इस रोग के परिज्ञान में, होती है बहुधा भ्रांति भी ।
सन्तत विषमज्वर भी इसो को मान लेते भ्रान्त भी ॥
पर विषम ज्वर में ग्रीव पर, दाने दिखाते हैं नहीं ।
है सन्निपातज यह प्रगट, वह सन्निपातज है नहीं ॥
आता है उसमें स्वेद, इसमें स्वेद का अवरोध है ।
एक मुख्य सी दुर्गन्ध भी, देती करा यह बोध है ॥
है छूतका यह रोग, बढ़ता है सदा कीटाणु से ।
और फैलता मलमूत्र कफ, इत्यादि के परमाणु से ।
लघु बालकों पर यह अधिक करता सदा आघात है ।
तन्द्रा अरति इस रोग में, करते महा उत्पात है ॥
मुक्ता सदृश विस्फोट लघु, स्पष्ट दिखते हैं जहां ।
कुछ भी उपद्रव रोग के, प्रायः न होते हैं वहां ॥
पर होगया यदि भूल से, कुछ भी कहीं शीतोपचार ।
मुक्ता वहीं दबकर उपद्रव, रोग के करते अपार ॥
घटता है प्रातःकाल ही, इस रोग में कुछ तापमान ।
मध्यान से आधी निशा तक, वृद्धि पाता है महान ॥
बढ़ता हो प्रातःकाल ज्वर, दाने अगर आलोप हों ।
संध्या समय इस दशा में, समझो उपद्रव कोप हो ॥
निश्चय प्रथम सप्ताह में, दाने दिखाते हैं नहीं ।
पश्चात् सदउपचार से, मुक्ता दिखाते हैं वहीं ॥
मोतीझरे का बस यही, पाठक समझिये ज्ञान है ।
परिपूर्ण अनुभव से भरा, सन्देश हीन निदान है ॥

श्वसनक ज्वर (निमोनिया)

सद्वैद्य गण इस रोग को, हैं सन्निपातज मानते ।
मतभेद थोड़ा है अभी, उपयुक्त नाम न जानते ॥
कहते हैं रक्तष्ठीव, कर्कोटक कोई कहते इसे ।
श्वसनक तथा फुफ्फुसप्रदाहिक, बताते हैं इसे ॥
प्रचलित है नाम निमोनिया, जग में सभी हैं जानते ।
ग्रामीण तक इस रोग को, इस नाम से ही जानते ॥
कुछ भी कहें हम तो प्रगट, लक्षण बताते यहां ।
विद्वान कृपया शोध लें, अनुचित लिखा होवे जहां ॥

सम्प्राप्ति

निज फुफ्फुसोंमें धूरि धुस, जावे अगर कुछ भूलसे ।
शीतोष्ण परिवर्तन तथा, आहार क्रम प्रतिकूल से ॥
निशि जागरण इस रोग में, बहुधा विशेष सहाय है ।
निज शक्तिसे बाहर परिश्रम, भी सदा दुखदाय है ॥
जो शीत से बचते नहीं, इस रोग में फंसते वही ।
अथवा सुरक्षित वक्ष पर, जो चोट खाजाते कहीं ॥

लक्षण

ज्वर, कास, श्वास, प्रलाप, त्रष्णा आदि कष्ट अपार हो ।
निज वक्ष अथवा पार्श्व में अतिशूल की भरमार हो ॥
अस्थिर, अनिन्द्रा, अरति, जिह्वा भाग अगला रक्त हो ।
कफ कास में न्यूनाधिक, रक्तांश भी जब व्यक्त हो ॥
इस रोगमें निज वक्षपर, बढ़ता है अन्दर शोथ जब ।
तो श्वास के अवरोध से, होता अधिक है कष्ट तब ॥

असाध्य लक्षण

नाड़ी हो सहसा मंद, स्वेत, प्रलाप, श्वास विशेष हो ।
तबमृत्यु निश्चय जानलो, शीतांग मय यदि क्लेश हो ॥

—क्रमशः ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा शास्त्र ।

आयुर्वेद के मुख्य सिद्धान्त पंच महाभूत एवं त्रिदोष.

लेखक—पं. ताराशंकर मिश्र वैद्य, अध्यापक—अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय, काशी।

(आल इंडिया रेडियो लखनऊ द्वारा प्रसारित)

प्राय: सभी लोग यह जानते हैं कि समूचे संसार का निर्माण पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से हुआ है, इन्हीं को एक भारतीय पंच महाभूत कहता है, कतिपय पाश्चात्य वैज्ञानिक ९३ तत्वों को ही संसार में व्याप्त बताते हैं। परन्तु वस्तुत: ये तत्व भी पंच महाभूतों से बने हैं, बात सीधी सी है कि आक्सिजन आदि वायव्य पदार्थ वायु से, लोहा आदि पृथ्वी से,पोटास आदि आग्नेय पदार्थ अग्नि से सम्बन्ध रखते हैं या उन्हींके अन्तर्गत हैं। पंचमहाभूतों को ९३ तत्वों से निकाल दिया जाय तो केवल शून्य ही बचेगा। यद्यपि पंचमहाभूत स्थूल रूप से परस्पर मिले रहते हैं फिर भी धरती या पहाड़ में पृथ्वी, सागर में जल, सूर्य में अग्नि, खाली जगह में वायु और सर्वत्र आकाश समझा जाता है। कोई भी प्राणी मिले हुए पंचमहाभूत से बनी आंखों से इन्हें अलग-अलग नहीं देख सकता, क्योंकि अलग अलग रहने पर ये अदृश्य हो जाते हैं। भारतीय दर्शन ने उनकी इस अवस्था को पंचतन्मात्रा कहा है। तन्मात्रा और तत्व लगभग एक ही चीज़ है। जिसे आप करोड़ों गुनी शक्ति वाली आंखों से भी नहीं देख सकते। हां, सूक्ष्म बुद्धि से इनके कार्यों का अनुभव अवश्य कर सकते है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार मनुष्य और पशु प्रत्यक्ष देखा जाता है। पर मनुष्यत्व और पशुत्व का केवल अनुभव किया जाता है यही मनुष्यत्व और पशुत्व क्रमश: मनुष्य और पशु के तत्व या तन्मात्रायें हैं।

पश्चिम का वैज्ञानिक ९३ तत्वों को यन्त्रों की सहायता से प्रत्यक्ष दिखाता है और जनसाधारण को कौतूहल में डाल कर गर्व का अनुभव करता है। पर उसका गर्व झूंठा है। वह जिसे तत्व कहता है वह वास्तव में तत्व नहीं, वह तो सर्वदा स्थूल रूप से प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने वाले पृथ्वी जल आदि महाभूतों के नन्हे विभाग हैं। किसी भी वस्तु का तत्व एक ही होता है। उसके भाग अनेक हो सकते हैं। दुनियां के प्राणी अनेक जाति के हैं पर उसका तत्व प्राण एक ही है। उसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, योरोपियन और अमेरिकन, पशु क्रिमि आदि का भेद कदापि नहीं हो सकता। ठीक उसी प्रकार तत्व १३ से ९० और ९० से ९३ नहीं हो सकते, ये तो पंचमहाभूतों के ही विभाग हैं। ज्यों-ज्यों मनुष्य की सूक्ष्मदर्शिनी शक्ति बढ़ती जायगी त्यों त्यों इनकी संख्या भी बढ़ती जायगी। तत्व या तन्मात्रा की अवस्था में पहुँचने के पहले ये अदृश्य हो जांयगे, यदि बुद्धि से काम लिया जायगा तो उनका केवल अनुभव करोड़ों वर्ष पहले कर लिया था। तन्मात्राओं या तत्वों से भी सूक्ष्म अहंकार, महतत्व, प्रकृति, सत्य, रज, तम और अन्ततोगत्वा ईश्वर तक पहुँचे थे। पश्चिमी वैज्ञानिकों के ९३ विभागों की भांति वे वायु में ४९ अग्नि के ११ भेदों आदि के रूप में पंचमहाभूतों के कई सौ विभाग पहले ही कर चुके थे।

इन्हीं पंचमहाभूतों से प्राणी का शरीर भी बनता है। वह अन्न, जल, वायु आदि के रूप में इन्हीं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाता, पीता, देखता, सूंघता और स्पर्श करता हुआ जीवित रहता है। इसी खाने, पीने, देखने आदि से रोगग्रस्त होता है और अन्त में मर कर भी इन्हीं में मिल जाता है। दुनिया भर की औषधियां भी पंच-महाभूतों से ही बनती हैं। इसीलिये भारतीय आयुर्वेद ने चिकित्सा का मुख्य सिद्धान्त पंचभूतों के ही आधार पर स्थिर किया है। सरलता और समन्वय के दृष्टि कोण से जल को कफ, अग्नि को पित्त एवं वायु को वायु में समाविष्ट कर दिया। पृथ्वी ठहरने का स्थान और आकाश रहने या गति करने के लिये अवकाश है। इसी कफ, पित्त, वायु का नाम त्रिदोष है। इनके प्रकृतिस्थ अर्थात् ठीक रहने से शरीर स्वस्थ और जीवित, विकृतिस्थ अर्थात् बिगड़ जाने से रोगग्रस्त और नष्ट हो जाता है। जिस प्रकार पंच-महाभूत के सारे संसार में व्याप्त रहने पर भी किसी देश में प्रायः सर्वदा वर्षा, किसी देश में आंधी, तथा किसी देश में गर्मी अधिक होती है, और प्रत्येक देश में समय समय पर वर्षा, आंधी, गर्मी आदि अधिक हुआ करती हैं ठीक उसी प्रकार त्रिदोष के प्रत्येक शरीर में सर्वदा व्याप्त रहने पर भी किसी में वात अधिक किसी में पित्त अधिक और किसी में कफ अधिक रहता है। मैथुन के समय जो दोष दम्पति में अधिक रहेगा स्वभावतः सन्तान में वही दोष अधिक होगा, जिससे संतान की प्रकृति बनेगी। यह प्रकृति उसके जीवन भर साथ रहकर रोगों एवं कार्यों में अपनी छाया डालती रहती है। मुख्यतया वात, पित्त और कफ की तीन प्रकृतियां कही गयी हैं।

वात प्रकृति वाला मनुष्य जागरणशील, शीत का द्वेषी अभागा, रूखे केश और शरीर से युक्त, बहुभाषी, तेज चलने वाला, अधीर, चंचलचित्त और क्रोधी होता है।

पित्त प्रकृति वाला मनुष्य प्रायः पसीने से युक्त, उष्णता का द्वेषी, पीलीकान्ति से युक्त, असमय में ही सफेद बालों से युक्त, शीघ्र कुपित और प्रसन्न होने वाला, निर्भय और क्रोधी होता है।

कफ प्रकृति वाला भाग्यशाली, सुन्दर धैर्यवान, सहिष्णु, बलवान, गम्भीर, गम्भीर स्वर तथा काले घने दृढ़ केशयुक्त और शत्रुता या मित्रता को दृढ़ता से ग्रहण करने वाला होता है।

शरीर में प्रकृतिस्थ या सूक्ष्म वायु उत्साह, श्वास प्रश्वास, चेष्टायें, धातुओं का वहन और मलोत्सर्जन आदि कार्य करता है।

प्रकृतिस्थपित्त देखना, पचाना, गर्मी, भूख, प्यास, कोमलता, कांति, प्रसन्नता और बुद्धि करता है।

प्रकृतिस्थ कफ स्नेह; बन्धन, स्थिरता, भारीपन और पौरुष करता है।

रूखे, हलके, कसैले, ठंडे पदार्थों, मैथुन, व्यायाम, चिन्तन जागरण और शारीरिक मानसिक आघात से वायु बढ़कर अथवा विकृत होकर शरीर में पीड़ा, अनिन्द्रा, प्रलाप, विषमाग्नि, लकवा, पेट में गुड़गुड़ाहट, रूक्षता, मलशुष्कता आदि कर देता है।

उष्ण, कटु, अम्ल, क्रोध, घाम या अग्नि सेवन आदि से पित्त विकृत होकर तीक्ष्णाग्नि, रक्तपित्त, ज्वर, मूर्च्छा, अम्लपित्त आदि करता है।

शीत, मधुर, भारी, स्निग्ध द्रव्यों, अतिनिद्रा, आलस्य आदि कारणों से विकृत कफ, मन्दाग्नि, प्रमेह, क्रिमि, वमन, खांसी, क्षय आदि रोग उत्पन्न करता है।

एक दोष बढ़कर दूसरे को क्षीण करता है। या यों कहिये कि एक दोष को बढ़ाने वाले कारण दूसरे दोष को कम करते हैं। सम्भवतः बढ़े हुए दोष के कार्य भी शरीर में बढ़ जायंगे और घटे हुए दोष के कार्य घट जायंगे। इसी का नाम रोग है। एक वैद्य बढ़े हुए दोष को कर्षण अर्थात् कम करने के उपाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा कम और वृंहण अर्थात् बढ़ाने के उपाय द्वारा बढ़ाकर दोषों का साम्य कर रोगी को रोगमुक्त कर देगा। संक्षेप में इस बात को यों समझिये; रूक्षमटर खाने से वायु बढ़कर पेट में गुड़गुड़ाहट और दर्द पैदा कर देता है, कफकारक स्निग्ध घी के साथ हिंग्वाष्टक खाने से वह शांत होता है।

उष्ण मिर्चा और खट्टा खाने से पित्त कुपित होकर प्यास, पेसाब में जलन आदि पैदा कर देता है जो कफकारक मधुर तथा शीत लस्सी से शान्त होता है। दही आदि भारी चिकने और मधुर पदार्थों से कफ कुपित होकर खांसी पैदा करता है जो पित्तवायुकारक उष्ण कटु और रूक्ष आदी से शांत होती है। दोष वैसे ही एक दूसरे को शांत करते हैं जैसे जल अग्नि को और अग्नि जल को, इसी वर्गीकरण के कारण वैद्य को किसी नये उत्पन्न होने वाले रोग के कारण और चिकित्सा निर्धारित करने में कठिनाई न पड़ेगी। ठीक इसी जगह दूसरी चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक अनेक तरह के क्रिमियों, जीवाणुओं एवं लक्षणों के फेर में पड़कर परेशान होते हैं। क्योंकि वे कारणों, रोगों और औषधियों का ठीक वर्गीकरण अभी तक नहीं कर पाये। यदि इनका ठीक वर्गीकरण किया जायगा तो वह त्रिदोष के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा।

यद्यपि विद्वान वैद्य के लिये हरेक रोग का कारण और चिकित्सा अलग अलग बताने की आवश्यकता नहीं, फिर भी जन साधारण के लिये आयुर्वेद ने हरेक रोग का कारण और चिकित्सा इसी त्रिदोष के अनुसार बताया है। उसके निघंटु में हरेक द्रव्यों का विवेचन इसी आधार पर किया गया है।

मानसिक रोगों का वर्गीकरण भी इसी प्रकार है, वैद्य जानता है कि काम, शोक और भय से प्रलाप, हृदय में धड़कन, कम्पन, सरदर्द, और अतिसारादि वायु के लक्षण, क्रोध से आंखों की लाली खून खौलना आदि पित्त के लक्षण और लोभ मोह से लार गिरना या मुंह में पानी आना आदि कफ के लक्षण उत्पन्न होते हैं।

दोषों के बढ़ने का समय प्रायः यह है—

बाल्यवस्था, भोजन करते समय, प्रातःकाल और और बसन्त ऋतु में कफ स्वभावतः बढ़ता है। जवानी, भोजन पचते समय, दोपहर और शरद ऋतु में पित्त कुपित होता है। बुढ़ापा, भोजन पच जाने पर सायंकाल और वर्षा ऋतु में वायु अधिक होता है। आप स्वयं प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक समय और ऋतु के कार्यकलापों को मिलायेंगे तो वह दोषानुसार ही सिद्ध होगा। इस त्रिदोषानुसार समय विभाग के आधार पर कुशल वैद्य रोग प्रकोप या उससे होने वाली भावी मृत्यु का समय बताता है। स्वाभावतः कोई भी रोग अपने दोष के बढ़ने के समय पर ही बढ़ेगा और उसी समय मारक भी होगा। यह याद रखिये कि दोषों को बढ़ाने घटाने में आहार, बिहार और समय तीनों कारण होते हैं। इन तीनों में जो अधिक प्रभावशाली होगा वह शेष के प्रभाव को कम कर देगा।

बड़ा मजेदार प्रश्न यह उठता है कि नाड़ी में त्रिदोष का ज्ञान कैसे होता है? उत्तर यह है कि रक्तवाहिनी धमनी में रक्त की गति से ही त्रिदोष का ज्ञान होता है। स्वभावतः आहार, बिहार और समय का प्रभाव रक्त की गति पर पड़ता है, नाड़ी का ज्ञाता वैद्य अपने ग्रन्थ में वर्णित त्रिदोष सरणी के आधार पर रक्त की गति पहिचान लेता है। आप भिन्न-भिन्न समयों एवं अवस्थाओं से अपनी नाड़ी स्वयं देखने का अभ्यास करें तो कुछ दिनों के बाद आपको नाड़ी ज्ञान का कुछ कुछ आभास मिलने लगेगा। यह याद रखिये कि बात की नाड़ी प्रायः चंचल, पित्त की तेज और कफ की भारी होती है।

इस रक्त की गति से एक एलोपैथ हृदय के धड़कन की संख्या गिन कर या रक्त का दबाव जानकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

केवल रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) आदि नगण्य रोगों का थोड़ा सा आभास पाता है। पर नाड़ी ज्ञान का पंडित वैद्य इससे ज्वर, रक्तपित्त, क्षय, प्रमेह, अतिसार, अर्श, गर्भ और मृत्यु बताता है।

यदि कोई बात, पित्त, कफ को देखना चाहें तो देख सकता है। कफ के कारण खांसी आती है, आदी, मिश्री, मधु आदि से वही कफ छंटकर बाहर प्रत्यक्ष दिखाई देने पड़ने लगता है, उसके उचित मात्रा में बाहर निकलने पर खांसी शान्त होती है।

पित्त के कारण खट्टी डकार, प्यास, मूर्च्छा आदि होती है। वमन हो जाने पर हरा पीला पित्त, प्रत्यक्षतः दिखाई देता है। स्पष्ट है कि पित्त के उचित मात्रा में निकल जाने पर उक्त रोग शान्त हो जाते हैं।

वायु के कारण पेट में दर्द, गुड़गुड़ाहट, अफरा आदि होता है। हींग या लहसुन भून कर खा लेने के बाद वह डकार और अधोवायु के रूप में पर्याप्त मात्रा में निकलता है और उक्त रोग शान्त होते हैं। प्रकृतिस्थ दोष को आप नहीं देख सकते क्योंकि तब वह शरीर को धारण करने वाला धातु होता है। शरीर को बिना विकृत किये वह बाहर नहीं हो सकता और शरीर विकृत होने के साथ ही वह स्वयं विकृत हो जाता है। इसलिये प्रकृतिस्थ दोष को देखना असम्भव है।

इस प्रकार आप देखेंगे कि त्रिदोष सिद्धान्त के आधार पर रोगी की जन्यजात प्रकृति, आयु, अग्नि, रोग का कारण, लक्षण, चिकित्सा, पथ्य, रक्त प्रकोप का समय और मृत्यु तक का सही विवेचन कर सकता है। नये उत्पन्न होने वाले रोगों का भी कारण चिकित्सादि की व्यवस्था दे सकता है। महामारी के रूप में फैलने वाले रोगों को भी उस देश में फैले हुए महाभूत पृथ्वी, जल, अग्नि, घाम और वायु आदिके विकृति के लक्षणोंके आधार पर समझ कर चिकित्सा की व्यवस्था दे सकता है। अन्यान्य चिकित्सा पद्धतियों में तो केवल कार्य पर ही विचार होता है। प्रकृति, पथ्य और रोग प्रकोप का भावी समय तो केवल त्रिदोष सिद्धान्त ही बता सकता है। ये पंचमहाभूत और त्रिदोष सिद्धान्त सही और पूर्ण हैं। इसीलिय उनमें परिवर्धन और संशोधन करने की क्षमता कभी किसी वैज्ञानिक में नहीं हुई और न होगी। जबकि अन्यान्य चिकित्सा पद्धतियों और और विज्ञानों को अपने में परिवर्तनादि करना पड़ता है। यहां तक कि तत्व भी ९० से ९३ बनाने पड़े हैं, आयुर्वेद के उपलब्ध ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ चरक संहिता में इसी त्रिदोष प्रणाली के आधार पर समस्त रोगों की चिकित्सा एवं स्वस्थवृत्त कहा गया है। मैं जिज्ञासुओं से निवेदन करूंगा कि वे उसे अवश्य देखने की कृपा करें।

धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ का निर्मित
खाज रिपु
खाज-खुजली को लगाते लगाते ठीक कर देता है.
आपके यहाँ के दूकानदारों के यहाँ मिल जायगा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस गुण कार्य विपाक और प्रभाव

ले. श्री पं. कृष्ण प्रसाद त्रिवेदी B.A. आयुर्वेदाचार्य

[परिशिष्ट]

मधुर रस के लक्षण और कार्य—

खाते समय जो मुख में ल्हेसता है, तथा जिससे सर्व शरीर में एक प्रकार की चैतन्यता एवं इंद्रियों को प्रसन्नता प्राप्त हो तथा जो चिऊंटी, चींटे आदि को प्रिय हो वह मधुर रस है। इस रस का और शरीर का सात्म्य सम्बन्ध होने से वह रस रक्तादि सप्त धातुओं की परिपुष्टि करता है एवं कांति और बल को बढ़ाता है। यह रस पौष्टिक होते हुये तृप्तिदायक है। छोटे बालकों को तथा वृद्धों को भी यह रस श्रेयस्कर है। यह कंठ के लिये हितकारी होते हुए दाह मूर्च्छादि विकारों को शमन करता है। इसके सेवन से उरःक्षत से हुई क्षीणता दूर होती है, तथा क्षत भी बहुत कुछ सुधर जाता है, स्त्रियों के दूध में वृद्धि होती है वात अथवा पित्त की प्रकोपावस्था को तथा विषजन्य शरीर संताप को यह नष्ट करता है।

यह रस स्निग्ध और शीत गुणों से युक्त होने के कारण इसका अत्यधिक सेवन स्थूलता, मृदुता तथा आलस्य को बढ़ाता है, अति निद्रा को पैदा करता एवं जड़ता की परिवृद्धि करता है, जठराग्नि मंद कर, भोजन में अरुचि एवं अनिच्छा उत्पन्न करता है। शरीर में व्यर्थ मांस की वृद्धि करता है और कफ-प्रकोप जन्य रोगों की उन्नति करता है।

अम्ल रस के लक्षण और कार्य--

जिसके सेवन से मुख में पानी छूटता है, दांतों में खटास हो आती है, शरीर में सूक्ष्म रोमांच तथा नेत्र और भौं कुछ संकुचित होने से वह अम्ल (खट्टा) रस कहाता है। यह रस रुचि को बढ़ाता है, अग्नि प्रदीपक, मन प्रसन्न-कारक है। उन्मार्गगामी वात को ठीक रास्ते पर लाता है एवं हृदय तृप्तिकारक है। यह लघु, उष्ण और स्निग्ध होने से इसका अत्यधिक सेवन दांतों को अम्ल तथा बेकाम कर देता है; शरीर में आपतत्त्व और तेजतत्त्व अर्थात् कफ और पित्त की वृद्धि करता है; रक्त को दूषित, शरीर को शिथिल, हृदय, छाती और कंठ में जलन तथा तिमिर, विसर्प शोथ, व्रण आदि रोगों को उत्पन्न करता है।

लवण रस के लक्षण और कार्य--

जिसके मुख में रखते ही लार या पानी छूटता है तथा गाल और गले में कुछ दाह सा होता है वह लवण रस है। यह रस पाचक, दीपक, विस्रावक, विकासी एवं तीक्ष्ण गुण युक्त होने से स्रोतसों के द्वारों को खोल देता है, व्रणादिकों का छेदन और भेदन करता है, वायु नाशक, कफ-द्रावक (कफ को पतला करता है) आहार रुचिकारक है, शरीर के सर्व अवयवों को मुलायम करता है मुख को स्वच्छ करता है। इसके गुणों में गुरु, स्निग्ध और उष्ण गुण की विशेषता है। अतः इसका अत्यधिक सेवन, पित्तप्रकोपक रक्त वृद्धिकारक, तृष्णाकारक, दाहक, विष-दोष वर्धक, एवं पुंस्त्व नाशक है, शोथ को बढ़ाता है, दांतों को काले कर देता है, इन्द्रियों के कार्यों में रुकावट पहुँचाता है। बालों को झड़ाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और श्वेत कर देता है। त्वचा को ढीली कर देता है। तथा वातरक्त, रक्तपित्त, विशूचिका आदि रोगों को बढ़ाता है।

कटु रस के लक्षण और कार्य--

जिसके सेवन से जिव्हा में चरपराहट शुरू हो जाती है। नाक, आंख और मुख से पानी झरने लग जाता है, तथा अन्दर गालों में आग सी लगती है वह कटु रस है। इस रस से मुख साफ होता है। अग्नि प्रदीप्त होती है, उदरस्थ आहार के पाचन क्रिया में कुछ सहायता पहुँचती है, इंद्रियां सतेज होती हैं। अभ्यन्तरिक स्रोतसों का मार्ग साफ हो जाता है। यह दीपक, पाचक, रोचक, शोधक कृमि-नाशक, कंडु नाशक, कफ नाशक, और व्रणरोपक है। विशेषत: यह रस लघु, उष्ण और रूक्ष होने के कारण इसका अत्यधिक सेवन पुंसत्व या पौरुष शक्ति को नष्ट कर देता है; ग्लानि, मूर्च्छा, कृशता, भ्रम, तृष्णा, अंग संताप, बल हानि, कंठ में जलन तथा वातप्रकोप जन्य अन्यान्य व्याधियों को पैदा कर देता है।

तिक्त रस के लक्षण और कार्य--

जिसके सेवन से मुख का कफ, चिकटा आदि साफ हो जाता है। तथा कुछ देर तक अन्य रसों का ज्ञान नहीं होता वही तिक्त या कडुआ रस कहा जाता है। यह रस स्वयं अरुचिकारक होते हुए भी रुचि को उत्पन्न करता है। कृमि, मूर्च्छा, दाह, कंडु, कुष्ठ, तृषा, विषदोष तथा ज्वर को दूर करता है। यह दीपक, पाचक, पित्त, कफ-नाशक तथा शरीरान्तर्गत क्लेद, मेद, वसा, मज्जा, राध (पीव) मल, मूत्र और स्वेद का शोषक है। स्त्रियों के दूषित स्तन्य या दूध को यह शुद्ध कर देता है। त्वचा और मांस को स्थिरत्व प्रदान करता है। इसके गुणों में रूक्षता, लघुता, शैत्य, खरता की विशेषता होने से इसका अत्यधिक सेवन रस, रक्तादि धातुओं का शोषण कर देता है; स्रोतों में खरपरापन पैदा करता, बाल आकर्षण करता, मुख में शुष्कता लाता तथा अन्यान्य वात विकारों को उत्पन्न कर देता है।

कषाय रस के लक्षण और कार्य--

जिसके सेवन से जीभ जड़वत् हो जाय, मुख-स्रोत कंठ या गला आदि में अवरोध हो उसे कषाय रस जाने। यह रस संग्राही संशामक एवं स्तंभक तथा कफ पित्त नाशक, रक्त-शोधक, क्लेद मेद शोषक है। व्रण-रोपण कार्य में यह बड़ा निपुण है; यह त्वचा को निर्मल और मृदु (मुलायम) बनाता है। यह रूक्ष, शीत और गुरु गुणों से युक्त होने से इसका अति प्रमाणों में सेवन, मुख में शुष्कता, हृदय में पीड़ा, उदर में आध्मान, स्रोतसों का अवरोध, वाणी में भी अवरोध को पैदा करता है, तथा यह पुंस्त्व का विघातक, कांति-हारक, मल मूत्रादिकों का अवरोधक, कृशतोत्पादक एवं पक्षवधादि वात-विकार जनक है।

गुणों के विषय में विशेष वक्तव्य--

रसों के वर्णन में तथा अन्यत्र भी जो गुरु, उष्ण, शीत, लघु स्निग्ध आदि शब्दों की योजना की जाती है। इनके वास्तविक अर्थ को कोई लोग ठीक २ नहीं जानते। आयुर्वेद में भी इनका विशेष खुलासा नहीं किया गया है। कारण न्याय ग्रन्थों में इनका स्पष्टीकरण हो चुका है।

लघु, जड़, शीत और उष्ण ये गुण सापेक्ष हैं। मंदाग्नि वाले को लघु या हलका पदार्थ खाने के लिये दिया जाय तो भी वह उसके लिये जड़ ही होगा और तीव्राग्नि वाले के लिये जड़ पदार्थ भी हलका ही मालूम होगा। अतः जिसकी जाठराग्नि समस्थिति में होवे, ऐसे व्यक्ति को भिन्न २ पदार्थ सम प्रमाण में सेवन करा कर देखा जाय, जिस पदार्थ का पचन सुख पूर्वक एवं शीघ्र हो उसे लघु तथा जिसके पचन में मामूली की अपेक्षा भी अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय लगे उसे जड़ जाने। पदार्थों के उष्णत्व एवं शीतत्व को जानने के लिये भी इसी प्रकार से यों समझें कि जिन पदार्थों में आपतत्त्व की विशेषता होगी वे शीतगुण विशिष्ट तथा जिनमें तेज तत्त्व की अधिकता होगी वे उष्ण गुण विशिष्ट होना चाहिये।

शीत पदार्थों के सेवन से शरीर ठंडा पड़ जाता है और उष्ण गुण युक्त पदार्थ से शरीर की उष्णता बढ़ती है। ऐसा कथन भ्रम-मूलक है। अत्यधिक शारीरिक या मानसिक कार्य करने से जो शैथिल्य या थकावट का अनुभव होता है वह शीत गुण युक्त द्रव्यों के सेवन से दूर हो जाता है। शरीर पोषणार्थ ऐसे ही पदार्थों की आवश्यकता है। ध्यान रहे, जब २ शरीरान्तर्गत् आपतत्त्व की न्यूनता होती है, तब २ इंद्रियों को अपना कार्य करने में अधिक श्रम होता है तथा इसी से शरीर में उष्ण गुण वृद्धि के लक्षण स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। अतः आपतत्त्वात्मक अर्थात् शीत गुण विशिष्ट द्रव्यों के सेवन से शरीर में शमन क्रिया होती है और चैतन्यता प्राप्त होती है। न कि शरीर ठंडा और बिल्कुल जड़ हो जाता है किन्तु प्रमाण से अधिक शीत पदार्थों के सेवन से जब अग्निमांद्यादि लक्षण होते हैं तब उष्ण गुण विशिष्ट पदार्थों की अपेक्षा शरीर को होती है। आप तत्व की अधिकता से इन्द्रियों में एक प्रकार की जड़ता आती है अर्थात् उनका कार्य जैसे चाहिये तैसे तेजी से नहीं होता और इसी से क्षुधा मांद्य आदि लक्षण होते हैं, ऐसी अवस्था में तेज तत्वात्मक पदार्थ सेवन की आवश्यकता प्रतीत होती है।

तेजतत्वात्मक अर्थात् उष्ण गुण भूयिष्ट पदार्थों के सेवन से इन्द्रियों में आई हुई उक्त जड़ता नष्ट होकर पुनः पूर्ववत् वे अपने २ कार्यों में दक्ष हो जाती हैं। शीत गुण विशिष्ट पदार्थों के सेवन से जैसे शरीर में शमन क्रिया तैसे ही उष्ण गुणों के पदार्थों से दीपन और पाचन-क्रिया शुरू होती है। अतः स्पष्टतया कह सकते हैं कि जो पदार्थ शरीर में शमन-क्रिया करें वे शीत और जो दीपन पाचन क्रिया की निष्पत्ति करें वे उष्ण हैं।

वीर्य—

वीर्य के विषय में भी हम बहुत कुछ लिख चुके हैं। किन्तु कुछ आवश्यक बातें छूट गई हैं, उनका विवरण यहां किये देते हैं।

पञ्चमहाभूतात्मक पदार्थों में जिस महाभूत की अधिकता होगी तदनुसार ही उसमें जो कार्यकारिणी शक्ति होती है वही उसका वीर्य है। यही शक्ति प्रभाव भी कहाती है। वीर्य और प्रभाव उसी एक शक्ति के दो भेद हैं। जब उस शक्ति के विषय में कार्य कारण सम्बन्ध की स्पष्ट कल्पना की जा सके तब तो वह वीर्य कहलावेगी। अर्थात् द्रव्यान्तर्गत् किस गुणके कारण अमुक कार्य हुआ या होगा ऐसी जब स्पष्ट कल्पना की जा सके तब तो उस द्रव्य-गत शक्ति को वीर्य कहेंगे और जब ऐसी कल्पना न की जा सके, अर्थात् द्रव्यान्तर्गत् रसादि गुणों के विपरीत कार्य देखने में आवे तब उसे 'प्रभाव' कहना होगा। जिसका स्पष्टीकरण आगे किया जावेगा।

रसान्तर्गत् गुणों में और वीर्यान्तर्गत् गुणों में जब विरोध उत्पन्न होता है, तब वीर्यगत् गुणों की ही जीत होती है। उदाहरणार्थ—महत्पंचमूल (बिल्व श्योनाक गंभारी पाटला गणिकारिका) कषाय और कटु रस युक्त है। तथा रस कार्य पर विचार करने से तो यह प्रकोपकारी होना चाहिए। किन्तु उसमें उष्ण वीर्य की प्रधानता होने से वह शीत गुण विशिष्ट वात तत्व का शमनकारी ही होता है, इत्यादि कई उदाहरण दिए जा सकते हैं। इसलिए चिकित्सक को द्रव्यान्तर्गत् वीर्य की जांच पड़ताल करके ही औषधि योजना करनी पड़ती है। किसी भी द्रव्य का वीर्य निश्चय करते समय उसके गुणों में से कौन गुण बलवान् हैं और कौन निर्बल हैं तथा पृथ्वी आप तेजादि महाभूतों में से किस विशिष्ट महाभूत से उसकी निष्पत्ति हुई है यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न लेना प्रथम आवश्यक है। पदार्थ निष्पत्ति में ...कारण जो महाभूत उसका निर्णय होजाने पर ...गुणों की बलाबलता का सहज ही में निश्चय हो ...ता है। पीछे हम प्रत्येक भूतों के गुणों का वर्णन ...आए हैं। संक्षेप में पुनः समझ लिया जाय कि--

(१) सूक्ष्म, विशद, लघु, मृदु, श्लक्ष्ण और ...द गुण युक्त द्रव्य आकाश तत्वात्मक होते हैं।

(२) रूक्ष, सूक्ष्म, खर, विशद, लघु, शीत और ...र्श गुण युक्त द्रव्य वायु तत्वात्मक होते हैं।

(३) रूक्ष, तीक्ष्ण, उष्ण, विशद, सूक्ष्म, लघु, खर और रूप गुण युक्त द्रव्य अग्नि तत्वात्मक होते हैं।

(४) द्रव, शीत, गुरु, स्निग्ध, मन्द, सान्द्र, मृदु, ...पिच्छिल और रस गुण युक्त द्रव्य जलतत्वात्मक ...ते हैं।

(५) गुरु, स्थूल, स्थिर, खर, मंद, सान्द्र, विशद, ...ठिन और गन्ध गुण युक्त पदार्थ पार्थिव या पृथ्वी ...त्वात्मक होते हैं।

इस प्रकार द्रव्यान्तर्गत् गुणों पर से यह बात ...हज समझ में आ सकती है कि अमुक द्रव्य में ...स तत्त्व का अधिक प्रमाण है। तथा गुणों के ...सूक्ष्म निरीक्षण से उनके बलाबल का भी परिज्ञान ...हो सकता है। तीक्ष्ण और उष्ण ये दोनों गुण ...अग्नितत्त्व के ही हैं। गुरु और शीत ये गुण पृथ्वी और जल तत्त्व के क्रमशः हैं। स्नेह गुण (स्निग्धता) ...जलतत्त्व का ही है। मृदुत्व गुण जल और आकाश ...तत्त्व से प्राप्त है। रूक्ष गुण वायु का है। लघुत्व ...गुण आकाश, वायु और अग्नि तत्त्वों का है।

जब गुणों के बलाबल के विषय में निर्णय करना ...हो, तब विचार करना होगा कि वह पदार्थ किस ...तत्त्व से निर्मित है और उसका रस क्या है। उदाहरणार्थ मान लो कि हमें स्निग्ध गुण के बलाबल ...के विषय में निर्णय करना है। स्निग्ध गुण आप (जल) तत्त्व का है यह ऊपर की तालिका से तो ...हमें मालूम ही हो गया। अब हमारे पास भिन्न २ ...स्निग्ध गुण विशिष्ट पदार्थ रक्खे हुये हैं, उनमें कौन बलवान है तथा कौन निर्बल है यह हमें जानना है। हम जानते हैं कि मधुर, अम्ल एवं लवण रस युक्त पदार्थों में स्निग्धता होती है, और मधुर रस में पृथ्वी और जल तत्त्व की अधिकता है। पृथ्वी तत्त्व जल तत्त्व के पश्चात् उत्पन्न होने से उसमें जल तत्त्व की स्निग्धता होनी ही चाहिये। अतः दोनों तत्त्वों की स्निग्धता एकत्र मिल जाने से मधुर रसान्तर्गत् स्निग्धता बलवान होनी चाहिये। इसी प्रकार अम्ल और लवण रस की स्निग्धता के विषय में विचार कर देख लेवें। अम्ल रस में पृथ्वी और अग्नि इन दो तत्त्वों की अधिकता है। पृथ्वी तत्त्वान्तर्गत स्निग्धता और अग्नितत्त्वान्तर्गत् रूक्षता इन दोनों में विरोध होने से, अम्लरसान्तर्गत् स्निग्धता, मधुर रसान्तर्गत्-स्निग्धता की अपेक्षा बलवान नहीं हो सकती। लवण रस में जलतत्त्व और अग्नितत्त्व की विशेषता है। जलतत्त्वान्तर्गत् स्निग्धता के साथ अग्निअन्तर्गत् रूक्षता का विरोध होने से लवण रसान्तर्गत् स्निग्धता भी मधुर रस की स्निग्धता की बराबरी नहीं कर सकती। पृथ्वी तत्त्व में स्थिरता, स्थूलता, कठिनता ये गुण होने के कारण उसकी स्निग्धता का बिगाड़, अग्नितत्त्वान्तर्गत् रूक्षता उतनी तेजी के साथ नहीं कर सकती जितनी द्रवगुण विशिष्ट जल तत्त्व की स्निग्धता का करती है। अतः स्निग्ध गुण की दृष्टि से विचार करने पर यह सिद्ध होता है कि मधुर रस श्रेष्ठ, अम्लरस मध्यम और लवण रस निकृष्ट है। इस प्रकार गुणों के बलाबल का निरीक्षण कर पदार्थ के वीर्य के विषय में निर्णय सहज ही में किया जा सकता है। ध्यान रहे जो गुण द्रव्यों में हैं वे ही गुण शरीर में भी हैं। अतः जिस प्रकार के गुण युक्त पदार्थ खाने पीने में आवेंगे उसी प्रकार के गुणों की परिवृद्धि शरीर में होगी, अन्यथा उनका ह्रास होगा। इसीलिए सुश्रुत संहिता में कहा गया है कि—गुणा य उक्ता द्रव्येषु शरीरेष्वपिते तथा। स्थान वृद्धिक्षयास्तस्याद्देहिनां द्रव्य हेतुकाः॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

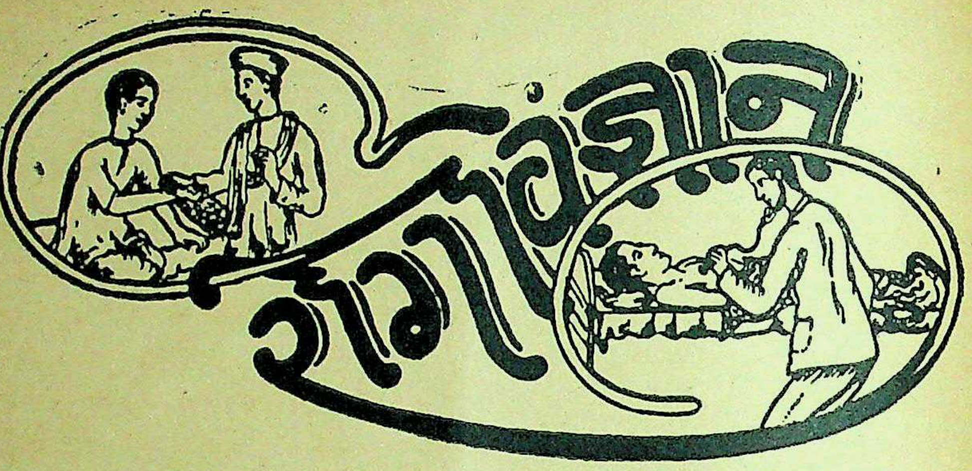

बवासीर।

लेखक—श्री. सियाप्रसाद जी अष्ठाना, बसन्तपट्टी, अदौरी [मुजफ्फरपुर]

गुदा की उचित सफाई पर ध्यान न देने से नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। उनमें से बवासीर एक प्रधान रोग है। ६० प्रतिशत व्यक्ति इस रोग से पीड़ित पाये जाते हैं। अधिकतर इस रोग का शिकार उन्हें होना पड़ता है जिन्हें सदा कब्ज की शिकायत रहती है, जो बार-बार तेज जुलाब लिया करते हैं, जिन्हें एक ही आसन से बैठना पड़ता है, जो तेज मिरच मसालों का अधिक व्यवहार करते हैं अथवा जिन्हें मद्य मांस के बिना भोजन ही नहीं रुचता। प्रायः यकृत दोष से भी यह रोग हो जाता है। कभी-कभी यह रोग पैत्रिक भी हो जाता है।

आयुर्वेद के मतानुसार बवासीर कई तरह का होता है, किंतु स्थान भेद से इसे तीन तरह का कह सकते हैं।

(१) भीतरी, (२) दरमियानी, (३) बाहरी।

भीतरी बवासीर में मस्सों से रक्त आता है किंतु अधिक पीड़ा नहीं होती। दरमियानी रक्तस्राव और पीड़ा दोनों ही होते हैं। बाहरी में यद्यपि रक्त स्राव नहीं होता किंतु पीड़ा बेहद होती है।

भीतरी बवासीर में गुदा में जलन, खुजली और थोड़ा-थोड़ा दर्द भी होता है। शौच के समय यह बहुत बढ़ जाती है। कब्ज रहने से इस रोग की विशेष वृद्धि होती है। शौच के साथ कभी रक्त गिरता है और कभी बाद में बूंद-बूंद टपकता है। कभी तो रक्त-स्राव इतनी अधिक मात्रा में होता है कि रोगी मूर्च्छित हो जाता है। लगातार रक्त स्राव होने से रोगी पीला पड़ जाता है और उसका शरीर दुर्बल एवं निर्बल हो जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि भीतरी मस्से गुदा के बाहर निकल कर इतने फूल जाते हैं कि फिर उनका भीतर प्रवेश करना कठिन हो जाता है।

इसके अतिरिक्त सर्दी, गरमी और नमी का प्रभाव भी गुदा पर पड़ता है, खुली हवा में व्यायाम टेनिस आदि का खेलना, पैदल चलना आदि बहुत उपयोगी हैं। बवासीर के रोगी को गरम तथा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ली पदार्थों का सेवन, गर्म मसाले, अचार, सिरका, ...य, कहवा, लाल मिरच, तेल, बैंगन, मेथी, ...सुन आदि के व्यवहार से बचना चाहिए। इन ...ज़ों का अधिक सेवन इस रोग के लिए विशेष ...हानिकारक है। मद्य-मांस तो कतई छूना ही नहीं ...हिए। यदि शौच न होता हो तो बलपूर्वक शौच ...जाना ठीक नहीं। ऐसी दशा में 'एनिमा, लेना ...शेष लाभप्रद होता है। रात्रि में सोते समय ...गरम-गरम दूध अथवा हरड़ का मुरब्बा सेवन ...करना अत्यन्त लाभदायक है, इससे प्रातः काल ...साफ पाखाना आजायेगा। कहा जाता है कि कन्धे ...की किसी नस का गुदा मार्ग से सम्बन्ध है, और ...स पर दबाव पड़ते रहने से अर्श रोग दब जाता ...। शायद यही कारण है कि मुग्दर हिलाने वालों, ...न्धों पर बोझ ढोने वालों, श्रमजीवियों, बहँगी, ...लकी लेजाने वाले कहारों, कन्धों पर हल लेजाने ...वाले किसानों और मोटा लट्ठ कन्धों पर रखने वाले ...जातियों को यह रोग प्रायः नहीं होता।

इस रोग में गुदा की सफाई पर विशेष ध्यान ...ने की आवश्यकता है। अब दस्त के समय शुद्ध ...शीतल जल से मलेन्द्रिय को भली भांति रगड़-रगड़ ...कर साफ करना चाहिये। प्राचीन ऋषि-मुनियों का ...सिद्धान्त है कि मल त्याग के पश्चात् गुदा मार्ग ...को प्रथम मिट्टी के छोटे-छोटे ढेलों से पोंछ कर फिर ...जल से धोए। जिसे अर्श रोग हो उसे चाहिए कि ...दो तोले पानी में एक माशा तूतिया पीस कर डाल ...दे और उसी जल से आबदस्त ले। शौच के लिये ...सदा शीतल जल का ही प्रयोग करें। गर्म जल से ...शौच करने से गुदा की नाड़ियां चंचल हो जाती हैं, ...जिससे गुदभ्रंश और अर्श रोग हो जाते हैं। ...गुदा मार्ग की त्रिवली को, अर्थात् गुदा की भीतरी ...त्वचा को उंगली डाल कर जल से अच्छी तरह धोने ...से अर्श के मस्से कभी नहीं होते।

इस विषय में कतिपय उत्तम २ प्रयोगों का ...वर्णन कर देना भी आवश्यक है—

१—जंगली गोभी एक छटांक नित्य तरकारी बनाकर खाने से अथवा इसकी पांच-सात पत्तियां काली मिर्च मिलाकर पीने से खूनी बवासीर जाती रहती है।

२—गाय के मठे में सोंठ, छोटी पीपल, काली मिर्च और काला नमक का चूर्ण मिलाकर पीना भी लाभदायक है। गूलर का पक्का फल भी खूनी बवासीर को दबाता है। जिमीकन्द (ओल) और मूली का सेवन भी इस रोग में फायदेमन्द है।

३—केले की जड़ तीन माशे शीतल जल से नित्य सायं-प्रातः सेवन करने से खूनी बवासीर जाती रहती है।

४—बाहरी मस्से यदि बहुत कष्ट देते हों तो रसौत, चीनिया कपूर, नीम की गिरी, तीनों को पानी में बारीक पीस कर लेप करें। घोड़े का पसीना लगाने से भी मस्सों का दमन होता है।

५—नीम की गिरी का चूर्ण सात माशे नित्य गाय के कच्चे दूध में खाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है। अथवा ताजी पांच-सात निबौली प्रातः कुल्ली करने के बाद पानी से निगल जायं और तैल, नमक, खटाई, लाल मिर्च से परहेज रखे। नमक जहां तक हो कम खाया जाय। अनुभूत है। निबौली का तैल मस्सों पर लगाया जाय तो और भी अच्छा हो।

६—हुब्ब रसौत—रसौत, गेरू, सफेद कत्था, कालीमिर्च एक-एक तोला तीन पाव कुकरौंदे के रसमें खरल करके जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। सायं-प्रातः १-१ गोली।

अथवा निबौली की गिरी, रसौत, सफेद इलायची ४-४ तोला, गेरू तीन तोला, सोंठ ६ तोला कपूर ६ माशा, फिटकिरी सफेद दो तोला, गारेकून दो तोला सबको पीस कपड़-छन कर कुकरौंदे के अर्क में खरल कर जंगली बेर के बराबर गोलियां

[शेष पृष्ठ ६६५ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैसे के रोग

लेखक—श्री. इन्द्रदत्त जी गर्ग वैद्य-विशारद,
वासुदेव मई, शिकोहाबाद।

पाठक चौंके नहीं। मैं यथार्थ ही लिख रहा हूँ। कुछ रोग ऐसे भी हैं जो पैसे वालों (धनवानों) को ही होते हैं। प्रकृति का नियम है कि प्रकृति के बनाए हुए नियमों का उल्लंघन करने से स्वयं प्रकृति दंड देती है। इस मूल मन्त्र को मनुष्य समझते हुए भी समझना नहीं चाहता। प्रकृति के इस नियम को मनुष्य को छोड़ कर समस्त जीव धारी समझते व मानते हैं। पशुओं को देखिए थोड़ा सा भी अजीर्ण होने पर खाना खाना बन्द कर देते है। फिर चाहे अच्छे से अच्छा चारा, दाना उन्हें खाने को दें मगर पशु उधर देखते भी नहीं, सूंघना खाना तो दूर रहा। कहिये, कैसा नियम है? मगर मनुष्य इन मूक पशुओं के प्राकृतिक नियम को सीखता तो आज इस तरह रोगों की भरमार नहीं होती।

प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन प्रायः बड़े आदमी (पैसे वाले) ही ज्यादा करते हैं। क्यों कि पैसा ही प्राकृतिक नियमों के उल्लंघन में विशेष सहायक होता है। एक सेठ जी को रबड़ी और मैदा की खस्ता कचौड़ी खाने से पेट में दर्द होने लगा। सेठ ने तुरन्त नौकर को सोडा वाटर की एक बोतल लाने को कहा, प्यास है नहीं, मगर सेठ जी जबर दस्ती उस सोडा पानी को उदरस्थ कर रहे हैं। कुछ देर बाद जब कुछ लाभ न हुआ तो दूसरी दवा तजबीज हुई, किसी ने नीबू नमक खाने को बताया, किसी ने खाने का सोड़ा, किसी ने सिरका, किसी ने जम्बीरी सन्धान, किसी ने नमक सुलेमानी, गर्ज यह कि सेठ जी सब पेट में डालते गए अब दर्द दूना हो गया। कहां तो पेट पूर्व का भोजन पचाने में असमर्थ था अब उस पर दूना भार दे दिया गया। परिणाम स्पष्ट था। अब सेठ जी डाक्टर के यहां गये। डाक्टर ने तेज दस्त की दवा देकर सेठ जी का पेट खाली कर दिया, मगर सेठ जी पर इस घटना का कुछ असर न पड़ा, वे पूर्ववत् ही गरिष्ट भोजन खाने लगे, पेट बराबर चेतावनी देता रहा मगर सेठ जी डाक्टर के हवाले पेट को कर देते रहे। अब उनको साधारण भोजन भी नहीं पचता। और सबेरे पाखाना होने के लिये रात को नित्य दवा खानी पड़ती है। नित्य प्रति डाक्टर के यहां हाजिरी देनी पड़ती है। ये है पैसे का रोग नं० १। अगर सेठ जी नित्य न ऐसा गरिष्ट भोजन करते और पेट की चेतावनी को मानते तो यह रोग नहीं होता।

आयुर्वेद में समस्त रोगों का कारण पेट का विकार ही माना गया है। अतः इस पर पूर्ण ध्यान देने की आवश्यकता है। इस लेख माला में मैं कुछ ऐसे रोगों का वर्णन करूंगा जो पैसे वालों को अधिक होते हैं। उनका प्राकृतिक नियम से साधारण उपचार करना ही रोग निवृति का उपाय है। अजीर्ण, मेदवृद्धि (मोटापा) अर्श प्रमेह ये भयानक रोग धनवानों के शरीर में घर कर लेते हैं। तब इन से छुटकारा पाना सहज नहीं होता। इस लेख में मैं क्रमशः इन चार रोगों के बारे में ही लिखूंगा और बताऊंगा कि साधारण खान पान में परिवर्तन करने, प्रकृति की चेतावनी मानने और नित्य प्रति व्यायाम करने से ये रोग बिना दवा के ही दूर हो सकते हैं। प्रथम अजीर्ण होने के कारण सुनिए। अगर यह कारण दूर कर दिए जावें तो अजीर्ण होगा ही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक परिश्रम व व्यायाम का न करना और थोड़ी दूर भी पैदल न चलना। सर्वदा बैठे या लेटे रहना।

गरिष्ट भोजन जैसे मावा (खोया) मैदा व चिकने पदार्थ अधिक खाना। खाने का समय नियत न करना, जब जिस समय जो वस्तु अच्छी बिकती देखी उसे लेकर पेट में डाल ली, अधिक औटा हुआ दूध, रबड़ी व नित्य पूड़ी परामटे का खाना, आटे को खूब महीन चलनी में छान कर खाना।

पालक, मूली, मैथी आदि पत्ते वाले शाक सस्ते समझ कर न खाना। शाक तरकारियों में मिर्च मसाला अधिक खाना, मसाला अधिक होने से सब्जी अपना स्वाभाविक गुण त्याग कर मसाले का गुण ग्रहण कर लेती है।

खाद्य सामिग्रियों के गुण दोष से अनभिज्ञ होना।

केवल स्वाद के लिए ही खाना ऐसी बुरी लत है कि बहुत से मनुष्य इसी से बीमार रहते हैं।

यदा-कदा उपवास न करना।

ब्रह्मचर्य से न रहना।

एक बड़ा दोष मनुष्य समाज में और प्रचलित आप कहीं जाइए मित्रों में या सम्बन्धियों में, से पहले खाने का आग्रह होगा। जितनी आप च्छा प्रकट करेंगे, आग्रह उतना ही तीव्रतर जावेगा। चाहे आप घर खाना खाकर ही क्यों ये हों। आप को भूख बिल्कुल न हो परन्तु को उनके अनुरोध की रक्षा अवश्य करनी पड़ेगी आप भले ही बीमार क्यों न होजावें।

अब कुछ उपाय इस रोग के प्रतिकार के लिये रहा हूँ। आशा है कि अजीर्ण रोगी उनसे लाभ उठायेंगे।

(१) यही अजीर्ण रोग में औषधि चार प्रधान।
पन्था, पथ्य, उनींद अरु शुचि शीतल जलपान॥

(२) जब तक तीव्र भूख न हो भोजन न करना।

(३) महीने में १ या दो दिन पूर्ण उपवास करना।

(५) हरे पत्ते वाले शाकों का अधिक प्रयोग करना।

(६) गरिष्ठ पदार्थों का सेवन कम करना।

(७) नित्य प्रति व्यायाम करना, घूमना, टहलना अत्यन्त आवश्यक है।

(६) अत्यन्त खट्टे पदार्थों का सेवन कम करना, मसालों का कम खाना।

(१०) आहार-विहार संयत रखना।

भविष्य में क्रम से मेदवृद्धि, अर्श, प्रमेह के बारे में भी लिखूंगा।

[पृष्ठ ६६३ का शेष]

बनालें। मात्रा प्रातः नहार मुंह एक गोली बासी पानी के साथ। यह पहले वाली से अधिक गुणदायक है। खूनी, बादी दोनों प्रकार की बवासीर को अच्छा करता है। अनुभूत है।

७—स्वच्छ रसौत एक छटांक मूली के आधसेर स्वरस में भिगोदें। सूखने पर फिर स्वरस छोड़ें और खरल करता रहे। इस प्रकार पांच बार स्वरस छोड़कर चने बराबर गोलियां बनालें। १-१ गोली सायं-प्रातः गाय के ताजे मठे के साथ खायें। बादी बवासीर जड़ से दूर होती है।

८—रीठे का बक्कल एक पाव सुखा कर चूर्ण करलें। पानी से चने बराबर गोलियां बनालें। खूनी बवासीर में ताजे जल से और बादी में मठे से १-१ गोली सायं प्रातः खाने से अपूर्व लाभ होता है।

६—सौंफ, किशमिश, भङ्ग, दक्षिणी मिर्च, सफेद इलायची समभाग बारीक पीस बराबर मिश्री मिला नियम-पूर्वक सेवन करना खूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर को हितकर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल ज्वर

लेखक—श्री० दामोदर दत्त जी मिश्र, कोरान सरैयां [शाहाबाद]

काला ज्वर को अंग्रेजी में 'काला आजार' कहते हैं। एलोपैथी में इसको एक खास रोग माना गया है परन्तु आयुर्वेद में यह विषम ज्वर का ही एक भेद माना है। इसकी सम्प्राप्ति और इसके लक्षण निम्न लिखित हैं।

संप्राप्ति—

जब निर्बल मनुष्य की अग्नि को ज्वर नष्ट कर के धातुओं को अपना निवास स्थान बना लेता है। और प्लीहा को कठिन तथा बृहद् बना देता है तब वह "काला ज्वर" कहलाता है।

लक्षण—

ज्वर का अनियमित रहना, प्लीहा का खूब कड़ी और बड़ी होजाना, रक्त की कमी हो जाना, शीत, कंपकपी और मस्तिष्क शूल के साथ दिन रात में दो बार ज्वर का आना, शरीर का वर्ण पीला हो जाना, निम्नाङ्गों का फूलना और पेट का भी कुछ फूल जाना, ये काला-ज्वर के लक्षण हैं।

उपद्रव—

बहुत दिनों तक आमाशय के रोगों से पीड़ित रहना, नाक और दांत के मसूढ़ों से अत्यधिक रक्त गिरना, उपद्रव हैं।

असाध्य लक्षण—

अतिसार का हो जाना, क्रमशः रक्त कीकमी होते रहना, पेट और निम्नाङ्ग का अधिक फूलना, इसके असाध्य लक्षण हैं।

साध्य लक्षण

उपद्रवों का न रहना और रक्त की अधिक कमी न होना, इसके शुभ लक्षण हैं।

काला-ज्वर की चिकित्सा—

काला ज्वर में "वृ० सर्वज्वरहर लौह" से अधिक लाभ होते देखा गया है। इसकी निर्माण विधि और सेवन-विधि निम्न प्रकार है।

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, ताम्र भस्म,
अभ्रक भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म
सुवर्ण भस्म, रौप्य भस्म
शुद्ध हरताल भस्म —हरेक १-१ तोले
कान्त लौह भस्म ४ तोले

—इन सब को एकत्र कर करेला, दशमूल, पित्त पापड़ा, त्रिफला, गिलोय, पान, मकोय, सम्भालू और अदरख इन हरेक के रस में ७-७ बार भावना देकर खरल करें। तदनन्तर १-१ रत्ती की गोलियां बना कर सुखा कर काम में लावें।

नोट - जिन औषधियों का रस काम में लाना लिखा गया है उसमें से कुछ औषधि यदि आर्द्र न मिले तो उसका चतुर्थांशावशिष्ट क्वाथ निकालें।

सेवन-विधि—प्रातः, मध्याह्न, एवं शायंकाल १-१ गोली गुड़ और पीपल के साथ खिलावें।

अधिक शक्ति ह्रास न होने पावे, इसके लिए नाग भस्म और लोह भस्म को एकत्र करके वृहत्सर्व ज्वर हर लोह खाने के १ घण्टे बाद सबेरे और शाम मधु के साथ खिलावें।

अन्य औषधियां

ज्वरारि अभ्रक, त्रैलोक्य चिन्तामणि रस और पंचगव्य घृत से भी बहुत कुछ लाभ होता है।

पथ्य—इस रोग में पथ्य पर अधिक ध्यान देना चाहिए। प्रातःकाल रोगी को शौचादि क्रिया से निवृत करा कर तथा मुंह धुला कर अंगूर अथवा ग्लूकोज देना चाहिए। तदनन्तर ३-४ घंटे बाद वार्ली को यथोचित रीति से बना कर खिलाना चाहिए। अनार, सेव आदि शक्ति दायक और हृद्य चीजों का भी यथासमय सेवन कराना चाहिए।

नोटः—भाग २१ अङ्क ८ में प्रकाशित १६ वे परामर्श की सम्मति भी यही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रहणी ::

लेखक – वैद्य ना० गो० वाघ, पाटोल, तार बाजार [नागपुर]

संग्रहणी मंदाग्नि का हो एक रूप है। खाया भोजन जब अच्छी तरह पाचन नहीं होता तब ...होजाता है, या दस्त होने लगते हैं। पुराने बद-...के दस्तों को ही संग्रहणी कहते हैं। कई दिन ...ब्जीयत रहने पर बाद में खूब पतली टट्टी ...पेट में मरोड़ आदि के लक्षण किसी को होते हैं किसी को सुबह ४-५ पतले दस्त होते हैं, किसी ...रात में ८-१० पतले दस्त रोज होते, किसी ...को नहीं होते खाली दिन को ही होते हैं, ऐसा ...माह के ऊपर रहने पर उसे संग्रहणी कहते हैं। संग्रहणी में दस्त बहुत होता है, यही इस ...पहिचान है, मल में आम का भाग जरूर ...और दस्त का वेग भी बहुत होता है। दस्त ...पेट में मरोड़, भोजन करते ही दस्त का ...ना, शरीर दुर्बल, रक्तहीन, पेट में गुड़गुड़ ...होना, कमर में दर्द, शरीर कमज़ोर और आदि लक्षण संग्रहणी में प्रायः होते हैं। संग्रहणी में आंतों में आंव अधिक प्रमाण में ...उनमें घाव होने से ज्वर भी रहता है।

...अनुभव सिद्ध बात है कि, संग्रहणी के ...को गांव के बाहर खुली हवा में रखने ...ही लाभ होता है। नीचे लिखी दवा के ...से ईश्वर कृपा से आजतक कई रोगी दुरुस्त ...। दवा परिक्षित है, अम्ल-पित्त और कब्जीयत ...अनुभूत है।

...

शहद हिंगुल (अशुद्ध)

...डी का तैल (केस्टर ऑइल) भिलावा

– हरेक ६० ६० तोला।

...वित्री जायफल लवंग

–तीनों चीजें २०-२० तोला

...विधि–

...का कढ़ाई में ऊपर की पांच चीजें डाल ...चूल्हे पर चढ़ादो, २ घंटे मंद-मंद अग्नि लगा कर बाद में जोर की आंच लगादो। जब कढ़ाई से बहुत अधिक धुवां उठने लगे तब जलती हुई लकड़ी की सहायता से कढ़ाई में आग लगादो। जरा देर के बाद कढ़ाई से आग की लपटें उठने लगेंगी, तब चूल्हे की आग बिल्कुल हटादो, जब सब चीजें जल कर खाक हो जांय और कढ़ाई ठंडी होजाय तब हिंगुल को निकाल लें। ऊपर वाली चीजों के संयोग से हिंगुल आग की लपटों के बीच वैसा हो मिलेगा, कुछ कम होगा जरूर, कढ़ाई ठंडी होने पर हिंगुल को निकाल कर पत्थर के खरल में खूब महीन करो, फिर जायफल, जावित्री, लवंग हरेक चीज बीस २ तोला वजन में लेकर महीन चूर्ण करके उपरोक्त सिद्ध किए हुए हिंगुल में मिलालें, बस दवा तैयार हुई।

मात्रा— १ रत्ती से ६ रत्ती तक धीरे २ बढ़ानी चाहिए। संग्रहणी वाले रोगी को कपड़े से जल निकाला हुआ दही ५ तो० के साथ दवा सेवन कराना चाहिए और अन्न खाना एक दम छोड़ देना चाहिए। मठा ही सेवन करना चाहिए। दवा से ज्यादा गर्मी मालूम हो तो संतरा या अंजीर का सेवन करें, तुरन्त शांति आ जायगी। मंदाग्नि, अम्लपित्त और कब्जियत के बीमारों में १ छटांक से १ पाव तक दही (बगैर जल निकाला हुआ) के साथ दवा सेवन करना चाहिए। रोज प्रातःकाल १ ही खुराक दवा लेनी चाहिए, २-३ दिन में ही खुलकर भूख लगेगी। यदि इसे नई भूख में पेट भर भोजन किया जायगा, तो दवा का असर बिलकुल मालूम नहीं पड़ेगा। ज्यादातर मठा का ही सेवन उचित है, पूरे फायदे के लिए ४० रोज दवा का सेवन जरूरी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पामा (छाजन-एग्ज़िमा)

[धन्वन्तरि भाग २२ अङ्क ३ ग्रा० ६३८७ के प्रश्न का उत्तर]

निदान--

संस्कृत नाम-पामा-हिन्दी-छाजन, पर्वतीय—च्योंजी, इंगलिश-एग्जिमा Eczema, फारसी-उकवत।

चरक व माधव-निदान के मतानुसार यह रोग कुष्ठ के अन्तर्गत लिया जा सकता है, क्योंकि :—

शूक्ष्मा बह्यः पिडिका श्रावबत्यः।
पामात्युक्ताः कण्डूमत्यः सदाहा ॥
माधव नि० कुष्ठ-रोग श्लोक २१।

अथ—

जिस रोग में बहुत सी छोटी २ श्राव वाली खाज से युक्त व दाह उत्पन्न करने वाली (जलनयुक्त) फुन्सियां हों उसे "पामा" कहते हैं।

छाजन या एग्ज़िमा की फुन्सियां भी बिल्कुल ऊपर लिखे अनुसार होती है। कुष्ठ का ही दूसरा भेद विचर्चिका हैं, उससे भी इसके लक्षण मिलते हैं।

सकण्डू पिडिका श्यावाः बहुश्रावा विचर्चिका॥
—मा. नि. २३।

विचर्चिका में खाजवाली श्यामल व श्राव युक्त फुन्सियां होती हैं।

इसी प्रकार चरक में भी वर्णन है:—

पामा श्वेतारुजश्यावाः कण्डूला पिडिका भृशम्।
स्फोटाः श्वेतारुणाभासो विस्फोटाः स्युस्तनु त्वचः॥
च० चि० अ० ७। २५।

जिसमें श्वेत या श्याम वर्ण वाली खाज युक्त बहुत सी फुन्सियां हों तथा श्वेत या लाल वर्ण के फोड़े शरीर की त्वचा पर हों वह पामा कहाती है।

सकण्डू पिडका श्यावा बहु श्रावा विचर्चिका।
—च० चि० अ० ७। २६

अर्थ —

जिसमें खाज हो और श्याम वर्ण व श्राव वाली फुन्सियां हों उसे विचर्चिका कहते हैं।

उपरोक्त उद्धरणों से ज्ञात होता है कि यह रोग पामा या विचर्चिका के अन्तर्गत कुष्ठ का भेद मात्र ही है अन्य स्वतन्त्र रोग नहीं।

स्वानुभव—जो स्वयं मेरे शरीर पर हुआ है:—

सर्व प्रथम खाज से युक्त चौलाई के दानों के समान छोटी व लाल वर्ण व श्राव वाली फुन्सियां पैदा हुईं। इनका प्रारम्भ पैर की पिंडली से हुआ धीरे २ फुन्सियों की संख्या बढ़ती गई तथा फुन्सियों के स्थान वाली त्वचा मोटी व दरदरी हो गई तथा त्वचा का वर्ण काला सा हो गया, खुश्क मौसम में उस स्थान से सफेद छिलके से उतरते थे और तर मौसम में फुन्सियों से पानी आने लगता था तथा त्वचा कुछ अकड़ सी जाती थी। खाज भी आने लगती थी, इसी प्रकार इसका क्षेत्र धीरे-धीरे बढ़ता ही गया, एक पिंडली में लगभग ७ इञ्च का घेरा होने के बाद दूसरे पैर की पिंडली में भी पूर्व क्रम से फैलने लगी, धीरे २ यह शरीर के ऊपर के भाग जंघा-बांह आदि में भी होगई, २ साल तक चिरायता बृ० मंजिष्ठादि काढ़ा, गंधक युक्त दुग्ध आदि पिये २ इन्जैक्शन भी लगवाए, किन्तु कोई लाभ न हुआ। अन्त में अपने मित्र श्री चन्द्रभान जी शास्त्री M. A. द्वारा नारसेन जि० सहारनपुर स्थित पीयुषपाणि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य जी की जिस चिकित्साक्रम व औषधियों से मैं रोगमुक्त हुआ उसी क्रम व औषधियों को मैं पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहा हूं, आशा है वैद्य-बन्धु मेरे समान पीड़ित व्यक्तियों को इससे आरोग्य करेंगे।

मैंने अब तक इस योग को एक स्त्री पर जोकि तीन वर्ष से इस रोग से आक्रान्त थी व्यवहार किया और पूर्ण सफलता मिली।

कुछ लोगों के विचार से एग्जिमा समूल नष्ट न होने वाली बीमारी है, किंतु ऐसा नहीं। मैं अपने अनुभव के आधार पर निश्चय पूर्वक कह सकता हूं कि यह रोग समूल नष्ट हो सकता है, मेरा हुआ है और मैं भी एक का रोग नष्ट कर चुका हूं। हां इसको समूल नष्ट हुआ तभी समझें जब एगिज़मा वाले स्थान की त्वचा शरीर की त्वचा के समान हो जाय, अन्यथा इसे कुछ दिनों को दवा हुआ समझे, समूल नष्ट हुआ नहीं।

मुझे अभी ३ वर्ष से अधिक के रोगी पर इसका प्रयोग करने का अवसर नहीं मिला। आगे चिकित्सा क्रम देखिए।

चिकित्सा क्रमः—

चित्रकमूल, किशोर गूगल, बृ० मंजिष्ठादि अर्क बढ़िया कार्वोलिक साबुन, मछली का तैल, इंजेक्शन चालमोग्रीन।

१-प्रथम पांच दिन चित्रक मूल को पानी में पीस कर धूप में बैठकर रुग्ण स्थान पर लेप करावें। १ घंटा धूप में बैठने के बाद लेप कार्वोलिक साबुन से धोदें। तीन दिन लेप के बाद (तीसरे दिन) एक चालमोग्रीन का इंजेक्शन नितम्ब पर लगावें।

२- **खाने की औषधि** -

जिस दिन से लेप प्रारम्भ करें, उसी दिन से प्रातः १ गोली किशोर गुग्गल ताजे पानी से तथा भोजनोपरान्त १ तोला बृ० मंजिष्ठादि अर्क देवें।

मैंने उस समय वैद्य जी के आदेशानुसार डा० मार्का जापानी कार्वोलिक साबुन प्रयुक्त किया था।

३—पांच दिन के बाद चित्रक मूल का लेप बन्द करादें और मछली का तैल का लेप धूप में बैठ कर करें और १ घंटा बाद पूर्वोक्त साबुन से स्नान करादें। जिस दिन से मछली के तैल का लेप प्रारम्भ करें, उसी दिन से किशोर गुग्गल की गोली गर्म दूध से दें, शेष पूर्ववत्। इस प्रकार यह कार्य कम से कम कुल मिला कर २२ दिन तक करना चाहिये, यदि आवश्यकता समझें तो १-२ इंजैक्शन और लगादें तथा औषधि प्रयोग भी कराते रहें।

सूचना —

मछली का तैल बाजारू (कॉडलीवर ऑयल) न लें अपितु स्वनिर्मित का ही प्रयोग करें, जिसकी विधि निम्न है।

तैल कड़ुआ २० तोला   मछली १० तोला

तैल लाल सरसों का होना चाहिये, जिसे लोग खाने के काम में लाते हैं, उसमें गर्म होने पर मछली के छोटे २ टुकड़े करके डालदें। जब उनका कोयला हो जाय वर्तन को नीचे उतार लें और मूसली से अच्छी प्रकार रगड़ लें। यह एक तरह का पतला लेप सा हो जायगा। इसी को प्रयोग में लावें। तैल व मछली की मात्रा आवश्यकतानुसार इसी परिमाण में बढ़ा भी सकते हैं। मछली लगभग १ बालिश्त से कम न हों, इसी के समान हों।

चित्रक का लेप केवल रुग्ण स्थान पर करें, इसका हाथ अन्य अङ्गों पर न लगने पावे।

ईश्वर ने चाहा तो छटे दिन से ही फुन्सियां खुश्क होने लगेंगी और पपड़ी जम कर उतरने लगेगी।

भोजन-व्यवस्था कुष्ठवत् करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूंगफली।

लेखक—श्री० आचार्य नित्यानन्द जी सारस्वत।

करीब १५ वर्ष पहले की बात है। रेल पर सवार था। अचानक किसी स्टेशन पर 'चीनीया बादाम' 'चीनीया बादाम' विचित्र से लहजे में सुनाई पड़ा। ऐसी निराली चीज खाई तो क्या सुनी भी न थी। चीज को देखने का साधन न था। बंधी बंधाई चिलमिया टाइप की पुड़िया थी। कीमत केवल दो पैसे, सौदा कुछ मंहगा न था। पुड़िया खोलते ही देखा कि वे न तो चीन से ही आए थे और न बादाम ही थे। थीं केवल मूंगफली। अब सोचता हूं कि वे गरीबों के तो बादाम हैं ही, किंतु अमीरों का भी बादाम से कम गुणकारी नहीं है।

मूंगफली का रासायनिक संगठन बादाम से मिलता-जुलता है। कुछ तत्त्व तो मात्रा में बादाम से भी अधिक हैं। किंतु कुछ वैज्ञानिकों के मत से कारबोहाईड्रेट, बिलकुल नहीं होता। इस कमी से भी उसकी उपादेयता में कोई कमी नहीं आ सकती। यह वस्तु मक्खन, घी, तैल और सभी प्रकार के मांसों में भी बिलकुल नहीं पाई जाती। बादाम और मूंगफली के अवयवों की तुलना देखें।

	प्रोटीन	वसा	कारबोहाइड्रेट	लवण	जल
मूंगफली	३१.०	५६.०	×	४.०	१२.०
बादाम	२४.४	५४.०	१०.०	३.०	६.०

भारतीयों के लिए कारबोहाइड्रेट की कमी चिन्ता का विषय नहीं। यह अवयव यहां के गरीबों से गरीब को भी अन्न और दालों से प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। इनमें कारबोहाइड्रेट की अधिकता देखें।

आटे का नाम	कारबोहाइड्रेट	दाल का नाम	कारबो०
चावल	७८.८	मटर	६१.४
जौ	७३.३	अरहर	५७.२७
बाजरा	७१.२	उड़द	५६.४
गेहूं	७०.६२	मसूर	५५.०३
मकई	७०.६	मूंग	५३.४५
ज्वार	६६.५	आलू	२१.४

ऊपर की तालिका से स्पष्ट है कि सिद्धांततः बादाम से मूंगफली में कारबोहाइड्रेट की कमी होने पर भी हमारे दैनिक व्यवहार में यह कमी बाधक नहीं हो सकती। यह भी ध्यान में रखने लायक बात है कि शरीर में कारबोहाईड्रेट की कमी होने पर 'वसा' और कुछ विद्वानों के मत से प्रोटीन भी कारबोहाईड्रेट के रूप में परिणत होजाती है।

बादाम ही नहीं, मांस से भी मूंगफली बहुत श्रेष्ठ है। इसमें शरीर का वर्द्धन और पालन करने वाले सब हिस्से हैं। उनका परिमाण मांस से कहीं ज्यादा है। यदि हम दो समान व्यक्तियों में से एक को उत्तम से उत्तम मांस खिलाकर और दूसरे को पर्याप्त मूंगफली खिला कर परीक्षण करें तो निश्चित रूप से मूंगफली खाने वाला अधिक हृष्ट-पुष्ट और वजन में भारी प्रमाणित होगा। मांस वर्ग से भी इसके अवयवों की तुलना करें।

	प्रोटीन	वसा	कारबो०	लवण	जल
मूंगफली	३१.०	५६.०	×	४.०	१२.०
गायकामांस	२०.९६	५.४१	×	१.१७	७२.०३
मुर्गे	१९.७२	१.४२	×	१.३७	७६.२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिरन	१७.११	५.७७	×	१.३३	७५.९९
मछली	१५.००	७.००	×	२.००	७६.००
अण्डा(सफेदी)	१२.६	०.२५	×	०.५९	८५.७

आज से सवा सौ वर्ष पहले अमेरिका में केवल सूअरों और गुलामों के लिये मूंगफली बोई जाती थी। किन्तु अब जैतून के तैल के नाम पर मूंगफली के तैल को बर्ता जाता है और उसकी खली को पीस कर केक और बिस्कुट बनाए जाते हैं। अमेरिका के कुछ हिस्सों में वह बादाम की जगह बरती जाती है और कहीं-कहीं मूंगफली से द्रव्य तैयार कर बादाम का सत्त्व मिला दिया जाता है, तब उनको बादाम की बनी चीज़ ही समझा जाता है। हिन्दुस्तान में बहुत कम मूंगफली पैदा की जाती है और खाने के लिए ऐसी उपयोगी चीज़ का बहुत कम व्यवहार होता है। जो खाते हैं, वे भी कच्ची मूंगफली को भून कर खाते हैं। वास्तव में कच्ची मूंगफली को खाना अधिक लाभदायक है। मध्यप्रान्त और बम्बई के कुछ हिस्सों में इसके संयोग से मूंगफली की पट्टी बनाने का भी रिवाज है।।

चिकित्सकों को शास्त्रीय प्रणाली पर मूंगफली का पाक और मुरब्बा बना कर व्यवहार में लाना चाहिये। इसमें लागत बहुत कम है और सभी गुण बल-वीर्य की वृद्धि कर शरीर को पुष्ट करते हैं। मूंगफली के वृष्य होने से वह प्रमेह और वीर्य की कमी से पीड़ित रोगी के लिए नितान्त उपयोगी है। जिन्होंने विज्ञापनी टॉनिकों के फेर में पड़ कर सदा के लिए खटिया पकड़ ली है, उनको भी मूंगफली वास्तविक अमृत है। राजयक्ष्मा में चाहे अनुलोमक्षय हो चाहे प्रतिलोमक्षय, दोनों भेदों में ही मूंगफली का सेवन कराना रामबाण है। यही हाल अग्निमान्ध में भी होगा। उसमें मूंगफली के साथ सेंधा नमक को प्रयोग में लाना चाहिए। यह दूषित मल को रेचन द्वारा उत्कृष्ट तरीके से निकालने वाला सर्वोत्तम द्रव्य है। यह ध्यान में रहे कि मूंगफली के द्वारा रोगों की चिकित्सा करते समय रोगी को दूध अवश्य देना चाहिये।

आज के भारत में असली घी की कमी और गरीबी के मारे वनस्पति घी का उपयोग बहुत बढ़ रहा है। उसकी बुराइयां अनुसन्धानशालाओं में प्रत्यक्ष हो गई हैं। अतः उसकी जगह बिना भुनी मूंगफली का उपयोग करना अभिनन्दनीय है। उस की बिना भुनी मूंगफली का उपयोग करना अभिनान्दनीय है। इससे गरीबोंको बहुत राहत मिलेगी।

हरेक भारतीय को प्रातःकाल के नाश्ते में कम से कम १०-१५ दाने मूंगफली अनिवार्य रूप से खानी चाहिए। मूंगफली को पीस कर उसकी मिठाइयां भी बनाई जा सकती हैं। काठियावाड़ में गेहूँ का आटा तीन भाग और मूंगफली का आटा दो भाग मिला फुलके और पूरी बनाने के सफल प्रयोग हुए हैं। मैंने स्वयं अनुभव किया है कि ये चपातियां रासायनिक दृष्टिकोण से पूर्ण आहार ही नहीं, किन्तु खाने में भी अत्यन्त स्वादिष्ट होती है। मूंगफली का आहार में उपयोग कर भारत में गेहूँ की कमी पूरी की जा सकती है। हमारी राष्ट्रीय सरकार द्वारा इन प्रयोगों को प्रोत्साहन देना ही हमारी खाद्य-समस्या का सबसे सुन्दर हल है। वास्तव में यह प्रयोग विश्व-आहारशास्त्र को आमूल चूल परिवर्तन कर, आज नहीं तो कल चमत्कार सिद्ध होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काहू ।

[आयुर्वेदीय विश्व-कोषकार श्री० वैद्य दलजीत सिंह जी]

सेवत्यादि वर्ग

यह बागी (बुस्तानी) और जंगली (बर्री वा सह-राई) भेद से दो प्रकार का होता है ।

उद्यानज (बागी वा बुस्तानी) काहू—

नाम-(हिं०, बं०, पं०) काहू, खस, सलाद, (अ०) खस खास, (फा०) काहू, (बं०) सालाद, काहू, (पं०) खस्स, काहू, (ले०) लैक्चुका संटाइवा (Lactuca Sativa, Linn), (अं) दी गर्डिन लेटिस (Garden lettuce), दी लेटिस (The lettuce,)

जंगली काहू—

नाम-(हिं०) जंगली काहू, (अ०) खस्स बर्री, (फा०) काहू बर्री, काहू सहराई, (ले०) लैक्चुका (स्करिओला Lactuca scariola, linn) (अं०) दी वाइल्ड लेटिस (the wild lettuce) ।

उत्पत्ति स्थान तथा वर्णन—

समस्त फारस और भारतवर्ष में इसकी खेती की जाती है, सिंध में और करांची के आस-पास यह बहुत होता है । वहां इसको 'सालीटची भाजी' कहते हैं । पश्चिमी हिमालय में मुर्री से कुनावर तक जंगली होता है । चिकना काहू अर्थात् सुगंधित जंगली अंग्रेजी काहू (Lvariosa) इसी का निकटतम भेद है ।

काहू बागी व जंगली भेद से २ प्रकार का होता है । उनमें बागी के पुनः ये दो अवांतर भेद होते

(१) इसके पत्ते चौड़े और पेड़ १।। गज व गज) तक ऊंचा, चिकना, मधुर एवं कोमल है और इससे बारीक शाखायें निकलती हैं । के पास सफेद फूल आते हैं । तदुपरांत बारीक सफेद बीज लगते हैं बीजोद्भव काल में उसमें पैदा हो जाता है और पत्ते कड़े हो जाते हैं, हिन्दु और बंगाल में शरद ऋतु और अरब, ईरान, आदि में बसंत ऋतु में होता है । इनमें भार काहू ऊंचाई और गुण में विदेशी काहू से होता है ।

(२) फिरंगी है और यह भी दो प्रकार का है । उनमें एक किस्म का पत्ता हरा, कमरंग, न्त कोमल मसृण और मधुर होता है । किस्म के पत्तों के सिरों पर कुछ-कुछ बैंगनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती है और ये पहली की तरह कोमल, मसृण और मधुर नहीं होते। इन उभय जातियों के पत्ते एक दूसरे से लिपटे और बंधे हुए कलिका की भांति एवं गोल होते हैं। बागी काहू के पत्तों का शाक पका कर खाया जाता है, बीज औषध रूप में प्रचुरता से प्रयुक्त किया जाता है।

जंगली काहू के पत्ते बागी काहू के पत्तों से अधिक पतले और अधिक लंबे होते हैं तथा चिकने नहीं होते, उसमें कुछ अधिक कड़े और तिक्त होते हैं। तने में प्रचुर दुग्ध होता है। किसी २ स्थान में इसके उक्त दूध से अफीम बनाते हैं। पंजाब और सिंध में खेती किये जाने वाले काहू के दुधिया रस से बनाई हुई अफीम को "खीखाओ" कहते हैं। काहू की अफीम को अंग्रेजी में लेटिस ओपियम lettuce opium और लेटिन में लैक्चुकेरिअम् (lactucarium) कहते हैं।

उपयुक्त अङ्ग–

पत्र (शाकार्थ), बीज और प्रगाढ़ीभूत दुधिया अर्थात् काहू की अफीम (lactucarium)।

कल्प –

क्वाथ और फांट, मात्रा २॥ तोला से ३॥। तोला, दुधिया रस वा काहू की अफीम (lactucarium) मात्रा-१॥ रत्ती से ४ रत्ती, बीजचूर्ण, मात्रा ५ से १० रत्ती, मद्यासव (टिंक्चर), मात्रा १० से ३० बूंद, शार्कर (शर्बत) जिसमें १०% टिंक्चर होता है, मात्रा—१ से ४ ड्राम, रसक्रिया, मात्रा २॥ से ४॥ रत्ती, तेल (बीजोत्थ) और पाकादि।

प्रकृति–

पत्र दूसरी कक्षा वा दूसरी कक्षा की आदि में शीतल एवं तर है। सफेद बीज वालों की अपेक्षा काले बीज वाले में सर्दी और तरी न्यून होती है। स्वाद फीका और मधुर।

अहितकर—

काहू के पत्र कामशक्ति (बाह) को अहितकर हैं, नेत्र की ज्योति कम करते हैं, यह क्षतक्षय (सिल) और श्वासरोग को अहितकर हैं।

निवारण— पुदीना, अजमोदा, शलगम, जीरा और हरड़ का मुरब्बा।

प्रतिनिधि— कासनी वा कुलफा पत्र-स्वरस।

प्रधान कर्म—वह रक्तोद्वेग और पित्त की तीक्ष्णता को शांत करता है।

गुण कर्म तथा उपयोग—

समस्त शाकों की अपेक्षा इससे अधिक आहार (पोषण) की प्राप्ति होती है। पकाया हुआ काहू अपेक्षाकृत अधिक पोषक होता है, क्योंकि पकाने से इसका सांद्र द्रव विलीन हो जाता है। वह धोया हुआ अधिकाधिक आनाह कारक होता है; क्योंकि उष्ण एवं सूक्ष्म (लतीफ) वीर्य घटक जो पत्र के ऊपरी धरातल पर लिप्त होता है, वह धोने से विनष्ट-प्राय हो जाता है। इससे उसमें एक प्रकार का स्निग्ध द्रव (रतूबत बाल्ग़:) प्राप्त होता है जो अंततः आनाह कारक वायु (रियाह नाफिख़ा) में परिणत हो जाता है। इसका निवारण स्याह जीरा लिखा है, मद्यपान के बीच काहू के पत्ते सेवन करने से आमाशय में दाह प्रतीत नहीं होता, क्योंकि शीताधिक्य के कारण बाष्प सान्द्रीभूत होकर आरोहणाक्षम हो जाता है। देश देशान्तरों के जल पीने से हुए दोषों को (जैसा कि यात्राओं में बहुधा होता है) निवारण करता है। लेखक के विचार से उसका कारण यह है कि काहू जलों के अभिशोषण में देर कर देता है जिससे वह आमाशय और उसके आस-पास देर तक रुके रहते हैं, यहां तक कि पक कर उनके दोष प्रशमित हो जाते हैं। ओज (रूह) को गाढ़ा करने के कारण यह स्पर्शाज्ञताजनक और निद्राजनक है और प्रलाप को लाभ पहुंचाता है। क्योंकि मस्तिष्क में सर्दी पहुंचाता है और उसकी ओर बाष्पा-रोहण नहीं होने देता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि सिर में सूर्य की गर्मी पहुंच गई हो तो यह अपनी शीतलता से उसे लाभ पहुंचाता है, यह स्तनों में दूध बढ़ाता (स्तन्यजनन) है, क्योंकि विपुल शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है। (नफीसी)

यह रक्त को शुद्ध करने वाला (रक्त प्रसादन) है। यह स्वप्नजनन, सर और मूत्रल है विशेषकर बिना धोया हुआ, क्योंकि बिना धोए हुए में अवरोधोद्घाटनीय शक्ति (प्रमाथी) धोए हुए की अपेक्षया अधिक है। यह सूखी और तर खुजली, कुष्ठ, उन्माद, कामला, स्तनशूल, उष्ण ज्वर, वस्ति और मूत्रमार्गस्थ व्रण, तथा मूत्रदाह को लाभकारी है। इसे सिरका के साथ सेवन से क्षुधा उत्पन्न होती है, कामला आराम होता है और उदरशूल मिटता है। काहू (पत्र) शुद्ध दोष उत्पन्न करता और दोषों को तरलीभूत (रकीक) करता है। यह रक्तोद्वेग (जोश खून) रक्तगत उष्णता एवं उग्रता और पित्त की तीक्ष्णता को शमन करता है।

काहू के बीज—

इसके बीज खिलाने से वीर्य को शुष्क कर देते [वीर्यशोष्ण] हैं, अर्थात् अपने शीतजनन [दाहप्रशमन] कर्म से उसको पुष्ट वा गाढ़ा कर देते हैं। सुप्तिजनन प्रभाव से कामवासना (बाह) कम करते अथवा उसे शांत करते (पुंस्त्वोपघाति) हैं। इसीलिए स्वप्नदोष को भी कम कर देते हैं तथा प्यास और दाह को शमन करते (तृट्प्रशमन और दाहप्रशमन) हैं। इसके निरंतर सेवन से दृष्टि निर्बल होती है; क्योंकि इससे ओज (रूह) प्रगाढ़ीभूत हो जाता है। (नफीसी)

यह सुप्तिजनन, स्वप्नजनन और प्रकुपित दोष प्रशमन है। इसे मस्तक [एवं सिर पर] लेप करने से (अनिद्रा दूर होकर) नींद आने लगती है, सिर दर्द (गर्म) आराम हो जाता है।

बालों को गिरने से रोकने के लिए इसे बालों (वा सिर) पर लगाते हैं। यह रक्तोद्वेग (खून का जोश) एवं पित्त की तीक्ष्णता को शमन करता है।

काहू का निचोड़ा हुआ रस (उसारा) मस्तक, दोनों कनपुटियों और ब्रह्मरंध्र के ऊपर प्रलेप करने से गरम (पित्तज) सिर दर्द आराम होता है। आभ्यंतरिक रूप रक्तज एवं पित्तज ज्वरों, मद (मालीखोलिया) उन्माद जैसी व्याधियों, में अकेले वा उपयुक्त औषध द्रव्य के साथ इसका शीरा निकाल कर पिलाते हैं।

काहू का तैल—

—काहू के बीजों का शीरा २ भाग, तिल का तेल अथवा बादाम का तेल १ भाग दोनों को यहां तक पकायें कि केवल तेल मात्र शेष रह जाय। इसे बादाम के तेल, की भांति अथवा कोल्हू में पेलकर भी तेल प्रस्तुत करते हैं। यह कुछ पिलाई लिए सफेद और स्वाद में किंचितिक्त होता है।

गुण——

यह स्वप्नजनन है और मस्तिष्क को तर करता है। यह मस्तिष्क के लिए परमोपयोगी है विशेष कर उष्ण प्रकृति को। यह कठोरता को दूर करता, मस्तिष्क में तरावट पैदा करता, नींद लाता, मद और रूक्षता जन्य मृगी को लाभ पहुँचाता है तथा मद्यपान जनित मादकता को मिटाता है। नींद लाने के लिए इसे शिर में लगाया जाता और नाक में टपकाया जाता है। इसके अतिरिक्त बालों को मजबूत करने के लिए भी इसका प्रयोग करते हैं। मात्रा-३ माशा से २ तोला तक।

काहू की अफीम-

एक प्रकार के सुगंधित और जंगली अंगरेजी काहू की फूलदार शाखाओं और उसके तनेको पाछने (वा चीरा देने) से एक दूध की तरह सफेद रालदार रस निकलता है, जो वायु लगने से कड़ा हो जाता है और उसकी रंगत भी बदल जाती है। यही सूखा हुआ दूधिया रस काहू की अफीम कहलाती है। यह पोस्त की अफीम की तरह तेज नहीं होती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यानाशी के अनुभूत योग।

ले०—श्री. वैद्य लेखराम जी शर्मा शास्त्री, श्री नवजीवन औषधालय, संगरिया (बीकानेर)

भाव प्रकाश में हेमक्षीरी, स्वर्णक्षीरी, ब्रह्मदण्डी, हेमदुग्धा, हेमशिखा, हेमवती, कञ्चनक्षीरी, कटुपर्णी, पीतपुष्पा, रुक्मिणी, शृंगालकान्ता सुवर्ण तिलदुग्धा आदि नाम हैं।

परिचय-

सत्यानाशी के पौदे २ से ४ फुट ऊंचे भस्मीरंग के होते हैं, इसके पौधे पर तीक्ष्ण और पतले कांटे होते हैं। इसके पत्ते पतले लम्बे और कटे हुए किनारों के होते हैं फूल पीले होते है तथा फल लम्बे और कांटेदार होते हैं। इसके पौधे का कोई भी हिस्सा तोड़ने पर पीले रंग का दूध निकलता है इसी कारण प्राचीन आचार्यों के इसको स्वर्णक्षीरी के नाम से प्रसिद्ध किया है।

यह भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त में प्राकृतिक पैदा होती है तथा सब जगह सुलभ है।

गुण कर्म तथा उपयोग—

काहू की अफीम पोस्ते की अफीम की भांति निद्राजनन, अवसादक स्वप्नजनन, कासहर और वेदना स्थापन प्रभाव करती है। इसमें पोस्ते की अफीम की भांति न तो कब्जियत होती और न मल की क्रिया बिगड़ती है। संक्षोभ युक्त कास में इसका शर्बत वा चक्रि का गुणकारी होती है। ज्वर में जब रोगी प्रलाप करता है तब इसके सेवन से वह कम हो जाता है। सूखी खांसी और कफक्षय में काहू का सत्व देने से लाभ होता है। अफीम से खांसी में लाभ होता है। मगर उससे कफ का आना बंद हो जाता है। काहू के सत्व से कफ का आना बंद नहीं होता।

मेरा अपना अनुभव—

इस वनस्पति को जिन २ रोगों में जिस २ विधि से मैंने काम में ली है और उससे जो लाभ देखा गया है, वह निम्न प्रकार है। आशा है कि जिज्ञासु वैद्य महानुभाव भी इन लाभों का अनुभव प्राप्त करेंगे।

(१) क्षार विधि से सत्यानाशी का क्षार बनाकर १ रत्ती क्षार को १ माशा शुद्ध जल (वाष्पजल) में धोकर गर्म करके इंजेक्शन द्वारा शिरा में पहुँचानेसे उपदंश तथा पारद विकार शान्त होते हैं।

(२) इसके तैल की विविध कल्पनाओं के साथ मात्रा देने से भिन्न २ रोगों में लाभ देखा गया है।

सत्यानाशी का तैल—

सत्यानाशी के पञ्चाग को महीन पीस कर ६ छटांक लुगदी को एक गज लम्बे तथा एक बालिस्त चौड़े खद्दर के कपड़े पर फैला कर उस कपड़े को एक लम्बे लोहे के तार के अग्र भाग में बांध कर तिली के तैल से तर करले, फिर उसमें आग लगा कर उसके नीचे चिकनी मिट्टी का प्याला रखदें, इस प्रकार करने से अग्नि के द्वारा पिघल २ कर नीले रंग का तैल उस प्याले में पड़ जावेगा, फिर उस तैल को नितार कर एक शीशी में रख लेना चाहिये और समय पर निम्न प्रकार से काम में लें:—

(क) इस तैल की मालिश करने से शरीर में स्फूर्ति आती है तथा सन्धि-पीड़ा चर्मविकार और सूजन में अपूर्व लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख)—इस तैल की १० बूंद ताजा गिलोय के रस १ तोला में मिलाकर सुबह शाम एक सप्ताह लेने से कामला हलीमक तथा पाण्डुरोग समूल नष्ट हो जाते हैं।

(ग) इस तैल की १५ बूंद खांड में मिलाकर लेने से हिचकी तथा दमे में लाभ होता है, तथा उदर-शूल में यह जादू का सा असर दिखाता है।

(घ)—सांभर नमक ३ माशा में इस तैल की २० बूंद देने से २ सप्ताह के अन्दर ही जलोदर को ठीक कर देता है।

उपदंश पर

यद्यपि सत्यानाशी क्षार का इञ्जेक्शन उपदंश पर जादू का काम करता है परन्तु प्रत्येक वैद्य महानुभावों को इञ्जक्शन लगाना नहीं आता, अतः उपदंश के लिये इसका दूसरा मुख से देने वाला प्रयोग निम्न प्रकार से है।

—सत्यानाशी के ताजे पौधों को कूटकर रस निकालें फिर उस रस को समभाग पानी में मिला कर भवके द्वारा अर्क खींचलें। इस अर्क को ॥ तोला सुबह तथा उतनी ही शाम को मात्रा लेने से उपदंश तथा रक्त की खराबी से होने वाले चर्म-रोग पामा-दाद क्षुद्र कुष्ठ आदि ठीक होजाते हैं। दुराचार से फैलने वाले फिरंग रोग में यह अर्क इतना प्रभाव दिखाता है कि यदि इस रोग के कारण तालु में छेद भी हो गया हो तो ठीक हो जाता है।

श्वास तक वटी—

—सत्यानाशी के पञ्चाङ्ग का रस निकालकर उसको आगपर औटावें, जब वह रबड़ी के समान गाढ़ा होजावे तब २ छटांक इस घन सत्व में १ छटांक पुराना गुड़ और २ तोला राल मिलाकर अदरख के रस में घोटकर २-२ रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा—इन गोलियों में से एक सुबह एक शाम एक दोपहर को गर्म पानी के साथ लेने से श्वास में स्थायी लाभ होता है।

तुत्थ भस्म—

उत्तम नीलाथोथा ३ तोला लेकर एक चीनी मिट्टी के प्याले में डालकर सत्यानाशी के दूध से तर करदें और धूप में रखकर सुखालें। इस प्रकार सात बार तर करके सुखावें और टिकिया बनालें। इस टिकिया को छाया में सुखालें। बाद में सत्यानाशी के फूलों को पीसकर दो टिकियां बनावें एक हंडिया में एक टिकिया नीचे, तथा तूतिया की टिकिया बीच में एवं सत्यानाशी के फूलों की दूसरी टिकिया ऊपर लगा कर सत्यानाशी से बनी भस्म को हंडिया में भर दें और भस्म के ऊपर बालू भर कर एक तह ऊपर कणक (गेहूं) के दानों की लगाकर हंडिया को उतार लें और स्वाङ्ग शीतल होने पर तूतिया की भस्म अलग शीशी में रखलें। इसकी आधी से १ रत्ती मात्रा शहद में देने से दमे में तथा पानी के साथ देने से उपदंश में लाभ होता है।

इसके दूध को एक थाली में निकाल कर धूप में सुखावें, जब गाढ़ा हो जावे तब गोली या बत्ती बनावें और रखलें। समय पर मक्खन में घिस कर इसको लगाने से आंखों का भ्रम, अधिमांस और अन्धापन दूर होता है।

JWARARI ज्वरारि - તાવ, ટાઢીયો, અને બરોળ લીવર વિગેરેની ખાસ દવા
The Best Medicine for Malarial Fevers and Spleenic enlargement
Manufacturers Dhanwantari Karyalaya, Bijaigarh. (Aligarh)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केले के गुण ।

लेखक श्री० पं० जीवाराम जी शर्मा वैद्यभूषण, बंदखणी [गढ़वाल]

केला हमारे देश का प्रायः सर्वत्र पाया जाने वाला फल है। यद्यपि भिन्न-भिन्न प्रदेशों के केलों की आकृति वर्ण और स्वाद में भी काफी अन्तर होता है, पर इसका उपयोग सब जगह समान रूप से होता है। लाभ की दृष्टि से भी इसका दर्जा बहुत ऊंचा है। इसमें मनुष्य के शरीर के लिए पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व पाया जाता है। केले के फल और पेड़ के सभी अवयव मनुष्यों के लिए हितकारी हैं। हम इन विभिन्न अवयवों के उपयोग के सम्बंध में कुछ चुने हुए नुस्खे देते हैं, जिनसे साधारण लोग भी काम ले सकते हैं।

(१) कच्चा केला और कच्ची गूलर समभाग लेकर सुखाकर चूर्ण करलें। इस चूर्ण को सुबह शाम तोला देने से स्त्रियों के रक्तप्रदर और श्वेत प्रदर में लाभ होता है। केवल कच्चे केले की फली खाने से भी लाभ होता है।

(२) रक्त पित्त अर्थात् मुंह या नाक से खून आने में पकी हुई केलों की फली को शक्कर में मिला कर दूध के साथ फेंट कर चाटने से लाभ होता है।

(३) केले की फली हृदय के दर्द में शहद के साथ फेंट कर खाने से बड़ा लाभ होता है। मात्रा एक तोला शहद और दो फली। शहद से केला का कुछ अंश जाता रहता है।

(४) आंत के विकारों में जैसे दस्तों का आना, पेचिश (प्रवाहिका) संग्रहणी आदि में दही और केला फेंट कर खाने से लाभ होता है। दही के साथ थोड़ी सी केशर भी डालनी चाहिए। दही की मात्रा थोड़ी और केला अधिक।

(५) सुजाक के लिए केले का फूल बड़ा उपयोगी है। केवल पुष्प दल को सुखाकर चूर्ण करलें। एक तोला केला पुष्प चूर्ण एक तोला कलमीशोरा, दो सेर दूध और दो सेर पानी लेकर सबको एक कोरे घड़े में शाम को भर दें और सुबह कच्चा दूध (गाय का) मिला दें। एक-एक गिलास रोगी को पिलाना शुरू करदे, उस दिन रोगी कोई अन्य भोजन नकरें। दूसरे दिन केवल दूध पिये। अवश्य लाभ होगा।

(६) केले का स्वरस अर्थात् डंडी और पत्तों का रस और फली के ऊपर का पराग सांप के जहर में अथवा किसी प्रकार के विष में लाभ करता है।

(७) केले की नीरस फली जो सफेद होती है, वह रठी हुई आंखों में लगाने से लाभ करती है।

(८) सुर्मे में केले के डंठल की इक्कीस भावना दें और फिर एक भावना नीम के कोंपलों के रस का दें। सुर्मे को कपूर और फिटकरी मिलाकर तैयार करलें। इससे आंखों की गर्मी और धुंधलापन दूर होजाता है, यह सुर्मा बड़ा लाभदायक होता है।

(९) केले के ऊपर की बांझ फलियां, जो प्रायः गिर जाती हैं, पांच-सात लेकर शिवलिंगी के पांच सात बीजों के साथ पीसकर रजोधर्म के तीसरे दिन बन्ध्या स्त्री को खिलाने से एक या दो मास में उसका बन्ध्यापन दूर हो जायेगा और संतानोत्पत्ति होगी। प्रत्येक मास पांच छः दिन तक खिलाना चाहिये।

(१०) मिश्री गाय का घी और केला तीनों वस्तु पावभर लेकर मथ ले, इनमें दालीचनी एक तोला लोध एक तोला, धाय के फूल बड़ी इलायची प्रत्येक

[शेष पृष्ठ ७०६ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षित प्रयोग

मुक्ता योग–

अनबिधे मोती दरूनज अकरबी कहरवा
कतरा हुआ रेशम प्रवालमूलपिष्टि
कचूर —प्रत्येक ४।।-४।। माशे
बहमन सफेद छोटी इलायची बीज
बाल छड़ लौंग तेजपात
छड़ीला —प्रत्येक ३।।-३।। माशे
जुन्दबेदस्तर पीपल
सौंफ —प्रत्येक १।।-१।। माशा।

विधि—इन सबका चूर्ण बना शहद मिलाकर एक अमृतवान में रखलें। उसीमें १५-२० सोने के वर्क भी मिला देवें। जब इस प्रयोग को बने ६ महिने हो जांय तब इसका उपयोग करना चाहिए। कम से कम १।। मास व्यतीत होने पर उपयोग किया जा सकता है।

मात्रा—३-४ माशे। अनुपान-गौदुग्ध।

गुण— यह गर्भाशय के विकार को भी दूर करता है। रजस्राव को बंद करता है, गर्भावस्था में सेवन करने से भावी संतान गर्भस्राव व गर्भपात से नष्ट नहीं होती। दिल और गर्भाशय को बल मिलता है। गर्भस्राव व गर्भपात होने के पश्चात् जो विकार गर्भाशय में रह जाते है, उन्हें दूर करता है।

—वैद्य मुन्नालाल गुप्त, कानपुर।

सूखा रोग पर (धूनी)—

जौ सरसों उर्द
हिंग अजवायन
अजवायन खुरासानी अजमोद
गंधक नौसादर
हल्दी दोनों बंदर की बीट

—इन सब को समभाग ले, कूट कर बच्चे को धूनी दें। वस्तुत: इसका ध्यान रहे कि गर्दन से ऊपर के हिस्से में उसकी गंध न पहुंचे।

तैल—

मन्सिल १ तोला बीरबहूटी १ तोला
मसूर के पत्ते सिरस के पत्ते
बन तुलसी के पत्ते नीम के पत्ते
कुमार के पत्ते अरलू के पत्ते
भांगरे के पत्ते मकोय के पत्ते
पसैंदू के पत्ते — हरेक १-१ छटांक।

—तिल का तैल १ सेर में मंद अग्नि से जलावें, धूनी के उपरांत इस तैल की मालिश करें।

—वैद्य पं० बक्सीराम शुक्ल वैद्यराज।

पेट के दर्द पर —

ईख का रस ५ सेर लें। उसको किसी मिट्टी के पात्र में भरें और मुंह पर कपड़-मिट्टी करदें। हर ८ वें दिन मुंह खोल कर तथा छान कर बदलते रहें। १ माह बाद दवा बनकर तैयार होगी। १ तोला दवा में ३ माशा सैंधा नमक मिला थोड़ा गर्म करके पिलादो, पेट दर्द पीते-पीते भाग जाता है।

अतीसारान्तक चूर्ण –

छोटी इलायची पपरिया कत्था
चौकिया सुहागा तीनों १-१ तोला
अफीम ६ माशे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—कूट-पीस छान कर ३ माशा चावलों के धोवन के पानी के साथ देने से अतीसार रोग शान्त होता है, मेरे पिता जी का ५० वर्ष का व्यवहार किया हुआ योग है।

ज्वर पर—

गोदन्ती हरताल की १० तोला की डली को २० सेर कण्डों में फूंक दो और आधसेर गाय के दूध में बुझादो। १ घंटे बाद निकाल कर रखलो। इसमें से माशा लें और छोटी पीपल १ नग के साथ शहद अदरक स्वरस ६-६ माशे में पीस कर मिलालें। दिन में ४ बार में चटादें। ७ दिन तक दवा व्यवहार करना चाहिये।

—श्री० शंकरसिंह, रिरूवा बुजुर्ग।

[पृष्ठ ७०७ का शेष]

माशा, सोंठ आठ माशे, माजूफल तीन माशे पीस कर मिलायें। दो तोला सुबह शाम से रक्त और श्वेत दोनों प्रकार के प्रदर में बड़ा करता है।

(११) चोट या रगड़ लगने से केले के छिलके को देने से सूजन नहीं बढ़ती।

(१२) केले में लोह होता है, इस लिये वह पांडु में बहुत लाभकारी होता है।

(१३) पागल कुत्ते के विष पर पके हुए जंगली के बीज खाना और पीसकर लेप करना चाहिये।

(१४) हिचकी पर जंगली केले के पत्तियों की एक माशा एक तोला शहद के साथ मिलाकर देना चाहिए।

(१५) शोथ पर पका केला और गेहूँ का जल में घोल कर और गरम करके लेप करना चाहिए।

(१६) संखिया के विष पर केले की जड़ का रस चाहिए।

(१७) अतिसार में पके केले के भीतर दो बराबर अफीम रखकर खाना चाहिए।

प्लेग पर परीक्षित प्रयोग।

आजकल हमारे जिले में और जहां-तहां बिगत-वर्षों की भांति प्लेग का भारी प्रकोप बढ़ रहा है। उसको रोकने के लिये सर्व-साधारण के उपकारार्थ निम्नलिखित परीक्षित-प्रयोग प्रेषित हैं।

गिल्टी उठने पर—

१—सम्पाफनी (नागफनी) का पत्र लाकर चाकू से उसके कांटे अलग कर दीजिये। तदनन्तर उसे बीच में से चाकू या छुरी से चीर दें। अब उन दोनों चिरे हुए पत्रों के बीच के पूरे भाग में यथा-प्रमाण राई, हल्दी, अजवाइन और हींग भर दीजिये। बाद में इन पत्रों को बन्द कर, लोहे के तवे पर रख, आग पर रख दीजिये। जब उपर्युक्त द्रव्य उन पत्तों के दोनों तरफ के भागों में भिद जावें तब सुहाते-सुहाते गिल्टी वाले स्थान पर बांध दें।

परिणाम—आध घंटा के भीतर ही गिल्टी बैठ जावेगी। यदि कुछ शेष रहे तब फिर यही क्रिया करें।

२—अशुद्ध कुचला ३ भाग
बगुला के पंख २ भाग
काला जीरा सज्जी १-१ भाग

विधि—एकत्र कर जल के संयोग से बांट लें, और कुछ गर्म कर गिल्टी पर लगा दें।

गुण—उपर्युक्त।

३—टिंचराईडीन की सींक लगावें।

प्यास लगने व वमन पर—

सहस्र-पुटी अभ्रक भस्म १ रत्ती
इलायची के बीच २ रत्ती

—शहद में मिला कर चटा देने से प्यास व वमन शान्त होती है।

बुखार रोकने के लिये—

१—शुद्ध कपूर शुद्ध हिंगुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरायता-पत्र शुद्ध सुमहला गेरू
पित्त पापड़ा —हरेक १-१ तोला

विधि--एकत्र कर जल के संयोग से १-१ रत्ती की गोली बनालें।

गुण—दिन में तीन बार शहद के साथ देने से बुखार दूर होगा तथा प्लेग के दिनों में प्रथम ही सेवन करने से प्लेग का भय नहीं रहता।

२—गुरमें के पत्र (नीम पर चढ़ी हुई लता के-सर्वोत्तम) करञ्ज (गटान) पत्र
नहा (काल-मेघ) पत्र तुलसी पत्र
भांगरा (घमरा) पत्र काली मिर्च

विधि-समान भाग एकत्र कर पीसें और मटर प्रमाण गोलियां बना साया में सुखालें।

गुण—दिन में १ से ४ गोली तक शहद के साथ देने से बुखार हलका होकर उतर जावेगा। प्लेग या मलेरियान्तर्गत रोगों का डर नहीं रहता।

नोट—चढ़े हुए बुखार में भी गोलियां दी जा सकती हैं।

मलेरिया (ज्वर) के दिनों में यह अवश्य ध्यान में रखिये, कि पित्त प्रधान मलेरिया को छोड़ अन्य दोषज मलेरिया में प्रायः अजीर्ण रहता है। अतः उसको दूर करने के लिये बुखार के प्रथम निम्न रेचन दें।

उपयोगी जुलाब--

गुलाब के फूल सनायपत्र
छोटी हरड़ बड़ी दाख
किरवारे (अमलतास) की फली
—पांचों २-२ तोला।
गुड़ ५ तोला जल ३ पाव

विधि-एकत्र कर मिट्टी के पात्र में आग पर चढ़ा दें, जब ३ छटांक जल रह जावे तब उतार कर छान लें।

मात्रा--१ बार में डेढ़ छटांक, युवा मनुष्य को।

गुण—१ घन्टे के भीतर ३-४ दस्त होंगे। यदि नहीं हों, तब १ मात्रा और पिला दीजिये। अब घन्टे बाद अवश्य दस्त होंगे। ज्यादा से ज्यादा ५-६ बार।

नोट--गर्भिणी-स्त्री हो तो हर्र और अमलतास की फली को उपयोग में न लावें।

—श्री. पं० लक्ष्मीनारायण दुबे आयुर्वेद-मनीषी, गढ़ाकोटा [सागर]

सूखी खुजली पर--

पारद तूतिया आंवलासार गंधक
मंसिल पीली हरताल
— ३-३ माशे
बाकुची १॥ माशे

—पारद-गंधक की कज्जली करलें, फिर क्रमशः १-१ चीज डालकर खूब खरल करते जांय। फिर १० तोला सरसों के तेल के साथ खरल करलें। इसे धूप में बैठ कर धीरे-धीरे शरीर पर मालिश करें। थोड़ी देर बाद गाय का गोबर नीम का साबुन या कार्बोलिक सोप से नहावें। तीन दिन व्यवहार करने पर खुजली अवश्य नष्ट हो जायगी।

गठिया पर—

कुचला गौमूत्र में भिगो दें। २१ दिन तक रोजाना गौमूत्र बदलते रहें। २१ दिन बाद, छीलकर भीतर से जीभ निकाल चाकू से टुकड़े टुकड़े कर ३ घंटा गौदुग्ध में पकाकर धोकर कुचलें और कपड़े में छान लें।

उपर्युक्त शुद्ध कुचला ५ तोला
मिर्च काली सोंठ २-२ तोला

—महीन चूर्ण कर गरम जल के साथ उड़द बराबर गोली बनालें। दोनों समय १-१ गोली सेवन करना चाहिये।

—वै० भू० पं० शंकरदत्त जी गौड़, जब्बलपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मानन्द वटी—

अर्क पुष्प (हरे)	१॥ सेर
जीरा काला	जीरा सफेद
लवङ्ग	लाल मिर्च के छिलके
काली मिर्च	पौदीना सूखा
पीपल छोटी	हीरा हींग भुनी हुई

—प्रत्येक १०-१० तोला

काला नमक	सेंधा नमक	१॥-१॥ पाव
चित्रक छाल	नीबू का सत (सायट्रिक एसिड)	

—दोनों १०-१० तोला

नामकरण—

यह एक महात्मा प्रदत्त प्रयोग है; गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संस्थापक स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती के अनुज स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती का यह अनुभूत योग है, उन्हीं से मुझे प्राप्त हुआ था अतएव उनकी चिरस्मृति के लिए मैंने इसका नाम भी "ब्रह्मानन्द वटी" कल्पित कर लिया है।

निर्माण-विधि—

नवीन हरे अर्क पुष्पों के वृन्त (डण्डियों) को तोड़ कर पानी में धोकर फूलों को शुद्ध कर पीसलें। इससे पूर्व अन्य औषधियों को बारीक कूट कर कपड़छन करलें और चूर्ण को पीसे हुए फूलों में मिलाकर पुनः खरल करें, यदि जलीय अंश शुष्क हो जाय तो नीबू का अर्क पानी की जगह डालकर चूर्ण को गोली बनाने योग्य कर बेर की गुठली के बराबर गोलियां बनालें। इनको छाया में सुखा कर शीशियों में भरलें, यह एक सद्यः फलदायक सुपरिदिष्ट औषध प्रस्तुत है।

मात्रा—अवस्था व बलानुसार इस ब्रह्मानन्द वटी की एक मात्रा १ गोली से ४ गोली तक दिन में कई बार दे सकते हैं। बालकों को आधी या चौथाई गोली ही एक बार में पर्याप्त है।

गुण—पेट का दर्द, अजीर्ण, वातगुल्म, अतिसार, प्रवाहिका, विशूचिका, मन्दाग्नि, वमन, अरुचि, आध्मान, वातरोग, कृमि आदि अनेक उदर रोगों में यह सद्यः फलकारी वटी है। इस का प्रयोग प्रायः मैं इन रोगों में अधिक किया करता हूं और अधिक लाभदायक सिद्ध हुई है।

सेवन-विधि—

साधारणतया गर्म पानी से निगलनी चाहिये, नीबू का रस, तक्र, काञ्जी शीतल, जल का भी समयानुसार प्रयोग कर सकते हैं। मुख में रख कर इसका रस लेने से भी तत्काल लाभ दिखाती है।

—वैद्यराज श्री. रणवीर शास्त्री,
आयुर्वेदाचार्य।

दाढ़-दांत की पीड़ा पर—

रुई की फुरैरी को स्प्रिट टरपेंटाइन में तर कर जिस स्थान पर पीड़ा हो उसी जगह फुरैरी दबालें और मुंह नीचा करके लार गिरादें।

गुण—तीन बार लगाने से कैसा ही दर्द हो अवश्य नष्ट होता है। पचासों रोगियों पर आजमाया जा चुका है।

—बाबू रामनाथ वैद्यभूषण,
सरायआकिल (अलाहाबाद)

छाजन का परीक्षित प्रयोग—

निम्बू कागजी के रंग में गठीली पीली कौड़ी डाल दी जाय, दस दिन बाद छाजन वाली जगह पर दोनों समय मलने से कुछ दिन में, हमेशा को नष्ट हो जाता है। निम्बू का रस किसी कांच के बर्तन में रक्खा जाय और कौड़ी डूबी रहे। परीक्षित है।

—श्री. कल्याणसिंह वैद्य विशारद,
सरीला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों की सम्मतियां ।

[उत्तर देने वाले महानुभावों से सादर निवेदन है कि हर प्रश्न का उत्तर प्रथक कागज पर केवल एक ओर लिखकर भेजने की कृपा करें। एक साथ तथा कागज की दोनों ओर लिखे होने पर उनकी क्रमशः प्रेस कापी बनाने में कठिनता होती है। आशा है विज्ञ महानुभाव भविष्य में इस निवेदन पर ध्यान अवश्य देंगे।

—सम्पादक।]

प्रश्न नं० ४३ का उत्तर----

गेहूं उत्तम	१ तोला
ब्राह्मी	१ माशे
मिश्री	६ माशे
मुक्ता पिष्टी	१ रत्ती
गाय का घी	२ तोला
बादाम	५ नग

विधि—रात्रि को बादाम फोड़ कर साबुत मिंगी निकाल लें। गेहूं और बादाम की मिंगी को पानी में भिगो दें। प्रातः पानी से निकाल बादाम का छिलका हटादें और सिल पर पीस लुगदी बना दें, आग पर छोटा बर्तन रख भूनें। भुन जाने पर मिश्री पीस कर मिलादें तथा मुक्ता-पिष्टी व ब्राह्मी मिला हुआ हलुआ तैयार करें। ठंडा होने पर बालक को खिलादें।

यह मात्रा पूर्ण वयस्क की है। आयु अनुसार घटा सकते हैं। प्रातः शौच जाने के बाद इसे सेवन करावें। कम से कम एक माह तक सेवन करा कर फलाफल अवश्य सूचित करें।

—श्री० पं० नर्वदाप्रसाद शर्मा।

[२]

१—धोई हुई विजया का महीन चूर्ण ½ रत्ती से १ रत्ती तक प्रातः घृत-शक्कर के साथ दें। परीक्षित है।

२—बिनौला गिरी, बादाम, चिरौंजी, ककड़ी के बीज, चारों की गिरी ४-४ माशे लेकर महीन पीस कर कच्चे दूध में मिला, प्रात सायं दें। छान पर बची लुगदी को सिर पर मालिश करें।

—वै० पं० दीनदयाल मिश्रा, एलिचपुरी।

[३]

गुडच्यामार्ग विडंग शंखिनी
ब्राह्मी बचा सुंठि शतावरी च।
घृतेन लीढा प्रकरोति मावना
त्रिभिर्दिनै ग्रंथसहस्र श्लोक धारिता॥

अर्थ—गिलोय, ओंधा (अपामार्ग) बायबिडंग शंखपुष्पी, ब्राह्मी, बच, सोंठ, शतावरि इन सब औषधियों को समभाग लेकर घी में अवलेह बना कर सेवन (सुबह) प्रातःकाल करें सौ दिन में एक हजार श्लोक याद करने की शक्ति हो जाती है।

नोट—सब दवा सुन्दर स्वच्छ होना चाहिये, बालक ब्रह्मचारी रहे, घृत गाय का हो।

—पं० नरायणप्रसाद मिश्र वैद्य विशारद।

नोट - यही प्रयोग इस प्रश्न के उत्तर में दो निम्न महानुभावों ने और भेजा है।

१—कविराज काशीप्रसाद जी मिश्र, नबावगंज (उन्नाव)

२ - पं. गौरीशंकर जी तिवारी, वै. वि. बोरतलाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न नं० ४६ का उत्तर----

उनके जले हुए स्थान पर जहां खुजली चला करती है शारंगधरोक्त कासीसादि घृत रगड़ कर लगाइए। खुजली चलना बंद हो जायगा।

प्रश्न नं० ४७ का उत्तर---

उनकी आंख में यह अंजन लगाइए।

सुरमा २ रत्ती	कपूर २ रत्ती
रजतभस्म १ रत्ती	ताम्रभस्म १ रत्ती
वंगभस्म	½ रत्ती
स्वर्णमाक्षिक भस्म	१ रत्ती
स्वर्ण भस्म	१ रत्ती
सुहागे का फूला	२ रत्ती
रसौत २ रत्ती	मुक्तापिष्टी १ रत्ती
शुभ्राभस्म	२ रत्ती
रसग्राम सिंदूर	१ रत्ती

उपर्युक्त १२ वस्तुओं को परस्पर खूब घोट कर छान कर लीजिए और सलाई से आंजिए अथवा यही अंजन उत्तम मधु में मिला कर आंजिए, अवश्य लाभ होगा। नासूर दूर हो जायगा।

प्रश्न नं० ४८ का उत्तर–

मैंने अनेक टान्सिल एवं जुकाम के रोगियों को केवल अमृतधारा के ही प्रयोग से आराम किया है। जिन्हें एक बार लगातार एक महीने तक दवा का प्रयोग किया, उन्हें पुनः कभी इस रोग के शिकार बनने का मौका न हुआ। रहे कि एक महीने से कम दिन के प्रयोग से रोग को उभरने का भय बना रहता है, अतः दिन का व्यवहार ही सदा के लिये कल्याण-कारक होता है।

अमृतधारा बनाने की विधि इस तरह है—

पिपरमेन्ट सत्व ६ माशे

अजवायन सत्व ६ माशे ढेला कपूर १ तो०

विधि—शीशी में सबसे पहले पिपरमेन्ट के सत्व को डालें, बाद कपूर को और सबसे पीछे अजवायन के सत्व को डाल कर शीशी में कार्क को खूब दाब कर लगादें और कुछ देर तक धूप में रखदें। ऐसा करने से स्वयं गलकर द्रव के रूप में तैयार हो जायगा।

इसे बाह्य और आभ्यन्तरिक दोनों प्रयोग करे। हर रोज रुई के फाहे को अमृतधारा में डुबो कर सुवह, दोपहर, शाम को टान्सिल पर लगावे। आभ्यन्तरिक प्रयोग में एक छटांक ताजा जल में दस बूंद अमृतधारा को डाल कर तीनों समय पीवे। इससे टान्सिल और जुकाम सदा के लिये दूर हो जायेंगे।

—पं० नन्दकुमार शर्मा वैद्य, रुपाइच (गया)

प्रश्न नं० ४६ का उत्तर–

गण्डमाला एवं तपैदिक दोनों अवस्थाओं में निम्न प्रयोग लाभदायक सिद्ध हुआ है।

प्रातः--कांचनार गुग्गुल १ गोली

रसमाणिक्य १ रत्ती

—मिलाकर दुग्ध के साथ लें।

भोजन के बाद—

द्राक्षारिष्ट शिरीषारिष्ट १।-१। तोला

- जल ढाई तोला मिलाकर लें।

सायंकाल ४ बजे—

बसन्त मालती १ रत्ती

प्रवाल पंचामृत १ रत्ती

सितोफलादि चूर्ण १ माशा

— दुग्ध के साथ लें।

—कविराज पुरुषोत्तमदेव आयुर्वेदालङ्कार, पहाड़गंज, देहली।

प्रश्न नं० ५२ का उत्तर--

आपको एलोपैथिक पुस्तकें हिन्दी में, बेकार सखा बुक डिपो प्रेस, शिकोहाबाद यू० पी० से और प्रिन्स फार्मेसी बुलानाला बनारस से व गंगा विष्णु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकृष्णदास लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर छापा खाना, कल्याण, बम्बई से मिल सकती हैं।

प्रश्न ५४ का उत्तर--

उत्तम काली स्याही का सरल योग—
हरड़, बहेड़ा, आंवला, माजूफल, कोसीस।
लोहा चूरा डालिए तो स्याही बने नफीस॥

पहली चार चीजों को चौगुने पानी में २ दिन भीगने दे, बाद को तीसरे दिन मंद २ आंच से पकावे। चौथाई जल शेष रहने पर कसीस व लोहचूरा डालकर लोहे की कढ़ाई में १ दिन खूब घोटे, डाट लगा कर बोतलों में भर रक्खें, यही उत्तम काली स्याही है।

—श्री नाथूराम गुप्ता अग्रवाल।
खरेला (हमीरपुर)

[२]

हमारे यहां हमारे पूर्वजों ने कई ग्रन्थ हाथ से लिखे हैं जिसमें पक्की काली स्याही ऐसी है कि जिसको दो सौ वर्ष से भी ज्यादा होगये पर बिल्कुल ताजी मालूम होती है। उसी के बनाने की विधि नीचे दी जा रही है।

दीपक की राख	३ माशा
सड़े हुये आंवलों का रस	२० तोला
फिटकरी ६ माशा गोंद	१ तोला
कसीस १ तोला हरड़	१ तोला
लोहे का चूर्ण	६ माशे

विधि—इन सबको लोहे की कढ़ाही में डालकर ४ घंटा से कम घुटाई न की जाय। इससे स्याही पक्की काली तैयार हो जावेगी।

—श्री. कल्याणसिंह वैद्य विशारद।

प्रश्न नं० ५५ का उत्तर—

सुमबहरी (वात रक्त) की खराबी से वायु दूषित हो जाती है, जिसके लिये हमारी अनुभूत दवा यह है कि लहसुन का रस व अदरक के रस में थोड़ा सा नीम का मद मिला कर मलें और खाने को:—

लहसुन ८ तोला	गाय का मठा २० तोला
बिड नमक	१० तोला

—छिले हुए लहसुन को एक मिट्टी के बर्तन में डाल दो और उसमें नमक व मठा डाल कर मिट्टी से संधि बंद करदो। एक माह बाद निकाल कर पीस डालो और ३ माशे से ६ माशे तक दोनों समय सेवन करें। इन दोनों प्रयोगों से सुमबहरी नष्ट हो जावेगी।

ऋतु बन्द

कालेतिल ३ माशे	पुराना गुड़ ६ माशे
इन्द्रायन की जड़ ३ मा०	जल २० तोला

—यथाविधि क्वाथ बनाकर तीन दिन सेवन कराने से स्त्री ऋतुमती हो जाती है।

—श्री ० कल्याणसिंह जी वै० विशारद।

प्रश्न नं०५६ का उत्तर—

मौलसिरी वृक्ष की अन्तर छाल	२० तोला
हीराबोल	३ तोला
भुनी फिटकरी	३ तोला
जीरा दोनों	३ तोला
बादाम के छिलके (जलाकर)	२० तोला
सड़ी सुपारी (जलाकर)	१० तोला
भारंगी	३ तोला
शीतल चीनी कपूर	१-१ तोला
बबूल की पत्ती जली हुई	५ तोला
बहेड़े का बक्कल	३ तोला
सेलखड़ी	३ तोला
तवाशीर	३ तोला
तूतिया भुना	३ तोला

विधि सब चीजों को कूट-पीस कपड़छन कर ऊपर से चन्द बूंदे कार्बोलिक एसिड की डाल कर रख छोड़े, ये दांतों का दर्द व फूलना मसूड़ों के संकोच के लिए उत्तम दवा हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

खैराती दवाखाने में बहुत दिनों से बंट रही है।

— नाथूराम गुप्ता अग्रवाल,
वैद्य भूषण, खरेला (हमीरपुर)

[२]

निम्न दन्तप्रयोग आर्यसमाज के संस्थापक स्वनामधन्य श्री० स्वा० दयानंद जी सरस्वती का है, और मैंने इसे बड़े २ नवाबों, वजीरों पर प्रयोग किया है

माजूफल	मोरेठ	पपरियाकत्था
रूमीमस्तगी		नीला तुत्थ भस्म

—सब समभाग लें।

—तुत्थ भस्म के लिए उसे अग्नि पर फुलावें, थोड़ा जल कढ़ाई में रख के बुझालें और बुझा कर शीघ्र निकाल लें। पांचों के बराबर आक की जड़ की छाल लेकर कूट कपड़छन कर महीन चूर्ण करें जब तक अञ्जन के समान बारीक न हो जाय पीसता रहे।

गुण—इसके सेवन से दांत पुष्ट होंगे, न हिलेंगे, न गिरेंगे और न पीड़ा ही होगी।

— कविराज पुरुषोत्तमदेव मुलतानी,
पहाड़गंज, देहली।

[३]

मौलसिरी की छाल	छोटी इलायची	
पीपल	नागरमोथा	लवंग
बच	पुनर्नवा	बहेड़े की गुदी
गोलमिर्च	कत्था	दालचीनी
सुपारी	हरड़	कपूर

—इन सबों को समभाग लेकर कूट कर, सबों के बराबर इसमें खल्ली का चूर्ण मिलालें। इस मंजन को हर रोज सुबह-शाम व्यवहार करे तो दांतों का दर्द, हिलना तथा मसूड़ों का फूलना, अधिमांस, दन्तवेष्ट आदि रोग निश्चय नष्ट होते हैं।

प्रश्न नं० ५६ का उत्तर—

बोयेऽत्युष्णे परिक्षिप्य द्रवी कूर्या द्रसांजनम्।
वाससा श्रावयित्वाथ शोधनं भानु रश्मिना॥

रसवत को इतने जल में घोलो कि रसवत फूल जाय, जल कम या ज्यादा न हो। २४ घण्टे बाद इस घोल को छान लो, आवश्यकतानुसार जल और ले सकते हो, आधा घण्टे उस घोल को निथरने दो फिर ऊपर का जल आराम से निथार लें, रेती पेंदे में रह जायगी। अब निथरे जल को धूप में सुखालो, अथवा मन्द अग्नि पर जल सुखालो, पेंदे में लगे नहीं इसका ध्यान रहे। खूब गाढ़ा होने पर उतार ले, फिर शीघ्र ही सूख जायगा, ये शुद्ध रसवत हुआ।

२—'अंजनानि विशुध्यंती भृंगराज दल द्रवैः'

रसवत को भृंगराज के रस में खरल करने से शुद्धि होती है।

नोट—रसवत की शुद्धि ये दो प्रकार की है। किन्तु हमारी सम्मति में दोनों ही प्रकार से शुद्धि करना अत्यन्त ही हितावह है।

—वैद्य पं० दीनदयाल मिश्रा,
एलिचपुरी मु० कामठी।

प्रश्न नं० ६५ का उत्तर—

रोगी को हमारे विचार में जीर्ण वृक्क शोथ है, इसके लिए निम्न चिकित्सा विधि से लाभ होगा।

प्रातः—पुनर्नवाष्टक कषाय चन्द्रप्रभावटी से दें।

१० बजे—पुनर्नवादि मांडूर श्वेतपुनर्नवा एवं कंटकारीरस के साथ।

सायंकाल—चन्द्रप्रभा, वज्रक्षार, गोक्षुरक्वाथ व मिश्री।

रात्रि को—शिलाजीत वटी दुग्ध के साथ।

दिल की धड़कन हो तो नागार्जुनाभ्र रस या स्वल्प पूर्णचन्द्र रस दें।

—कविराज पुरुषोत्तमदेव मुल्तानी आयुर्वेदालंकार
पहाड़गंज, दिल्ली।

[शेष पृष्ठ ७१७ पर]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों से परामर्श ।

प्रश्न नं ७०—

आयु ७३ वर्ष, पांच वर्ष पूर्व अनिमिया (रक्त-की कमी) का विकार शुरू हुआ, स्थानीय डॉक्टर से Liver Extract के इंजेक्शन लेने पर प्रकृति थोड़ी-थोड़ी सुधर रही थी कि अचानक एक दिन शीत पित्त के जैसे लाल चप्पड़ [ददौड़े] सब शरीर पर फैल गये और फुन्सियां हो गई, दाह और खाज तीव्र थी पानी बहना प्रारंभ होकर त्वचा का रंग काला हो गया। दो-तीन महीने आयुर्वेदिक उपचार से कुछ आराम हुआ, छः माह पश्चात् फिर से रोग का आक्रमण हुआ। रोग का मुख्य जोर बाहों के जोड़, हथेलियों तथा घुटने के नीचे (पांव से लेकर घुटने तक) होता है, आक्रमण इस प्रकार होता है। पहले पानी बहना शुरू होता है, साथ ही साथ दाह और खाज अति तीव्र रूप में शुरू होकर सब त्वचा सूज जाती है। २-३ दिन पश्चात् अपने आप जोर कम होकर खाल उतर जाती है। कभी २ नाक और त्वचा से भी पानी बहकर नाक मुंह खूब सूज जाते हैं। त्वचा तांबे जैसी लाल होकर काली पड़ जाती है।

स्थानीय सिव्हिल-सर्जनसे भी उपचार करवाया है, उन्होंने चर्म-रोग का निदान Dermatytis डरमेटायटिस यानी 'त्वचा की सूजन' किया, और बहुत से Penicilin तथा Calcium के इंजेक्शन दिये, जिससे रोग कुछ देर के लिये दब जाता है। यूनानी उपचार भी किये, छः माह तक बहुत आराम होगया था। परन्तु गत दिसंबर से रोग का फिर से आक्रमण शुरू हुआ है।

रोग की वर्तमान स्थिति—

इस समय खाज तथा दाह सब शरीर पर है परन्तु हाथ की उंगलियों में खाज, दाह और सूजन है। मुट्ठी नहीं बंध सकती। त्वचा का रंग लाल हो कर काला पड़ता है। कब्जी रहती है। बिना एनिमा या अन्य किसी रेचक के टट्टी खुल कर नहीं आती है।

इस समय यूनानी औषधि ले रहे हैं। साथ में हफ्ते में एक लिव्हर एक्स्ट्रेक्ट का इंजेक्शन लेते हैं, Uni B. Complex और Calcium का सेवन करते हैं।

नोट—और किसी प्रकार का भी यानी हृदय, फेफड़े, पेट या पेशाब में कोई विकार नहीं है।

कोई अनुभवी चिकित्सक यदि रोग नष्ट करने का दावा करें तो मैं उन्हें यहां बुला दिखाकर चिकित्सा कराने का सम्पूर्ण व्यय कर सकूंगा।

—श्री. नरेन्द्र बिहारीलाल भंडारी,
१६०६ भण्डारी निवास, बेलगांव।

प्रश्न नं० ७१—

बज्र (हीरा) भस्म करने की विधि, वैद्य गण जो तैयार कर प्रयोग में लाते हो लिखने की कृपा करेंगे।

—श्री शंकर जी वैद्य-शास्त्री,
सुड़िया।

प्रश्न नं० ७२—

मेरे एक मित्र हैं, जिनकी आयु २६-३० वर्ष की है और विवाहित हैं। उन्हें हस्त--क्रिया की कुटेव होगई थी जो लगभग १० वर्ष रही। इस कुटेव के कारण वीर्य क्षय होगया है और नपुंसकता ने आघेरा है। इन्द्री पर हरी २ नसें उभर आई हैं और आकार में बहुत छोटी पतली एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरम हो गई हैं, उत्तेजना होती है, लेकिन कुछ समय के लिए मस्तिष्क और हृदय बहुत कमजोर होगये हैं। मुंह में सदा छाले बने रहते हैं। हाथ-पैरों के तलवे जला करते हैं।

वैद्य महानुभावों से अनुरोध है कि इस कष्ट को दूर करने के लिए ऐसी खाने और लगाने की औषधि बतावें जिससे यह रोग जल्द दूर हो जाय। औषधि खर्च १५) तक किया जा सकता है।

—श्रीगोपीवल्लभ जी चतुर्वेदी, बूंदी।

प्रश्न नं० ७३—

आंत्रपुच्छ प्रदाह रोग का निदान और चिकित्सा बिना शस्त्र क्रिया के उत्तम से उत्तम लिखें, इसी प्रकार (Tumour) अन्तरविद्रधि, यकृतव्रण, वृक्काश्मरी, की भी देशी पद्धति से निदान चिकित्सा आदि देने की कृपा करें।

प्रश्न नं० ७४—

(cupping glass) कपिंग ग्लास से शरीर में से दूषित रक्त किस प्रकार निकाला जाता है। इसका पूरा विवरण देने की कृपा करें।

प्रश्न नं० ७५—

हृदयावरण प्रदाह या फुफ्फुसावरण प्रदाह में क्या अंतर है, किस प्रकार जाना जा सकता है, अतः इनका निदान खुलासा लिखें।

प्रश्न नं० ७६—

जलन्धर रोग या प्रायः सबही उदर रोगों में दिल की क्रिया कमजोर होजाती हैं और आंग्ल चिकित्सा विज्ञान शस्त्र-क्रिया से जल निकालने का आदेश देता है, इसी प्रकार देशी चिकित्सा-पद्धति से रेचक तथा वारिशोषण वर्ग की औषधियों से काम लिया जाता है इनमें से कौन सी चिकित्सा उत्तम समझी जा सकती है। ऐसी परिस्थिति में दिल (Heart) की शक्ति बनाए रखने के लिए क्या उपाय करना चाहिए।

प्रश्न नं० ७७—

पेट में आंत पर आंत चढ़ जाना या उनमें गुलजट पड़ जाना यह कौन रोग है, आयुर्वेद में इसका क्या निदान है, और उसकी देशी चिकित्सा क्या है?

कृपाकर उक्त प्रश्नों के उत्तर श्री.पं. कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी या अन्य योग्य आयुर्वेदज्ञ ही दें। साधारण वैद्य लिखने का प्रयास न करें।

—श्री. रेवाशंकर वैद्य रोहना, होशंगाबाद।

प्रश्न नं० ७८----

एक रोगी जिसकी अवस्था लगभग १५ वर्ष की है, उसका दाहिना अंड दो माह से ऊपर को चढ़

[पृष्ठ ७१५ का शेष]

प्रश्न नं० ६८ का उत्तर—

क्रोध एवं शोक तथा परिश्रम से पित्त को कुपित करती हुई देह की गर्मी शिर पर जाकर केशों को उजला कर देती है। इसी को वैद्य पलित रोग कहते हैं। "एकः प्रकुपितो दोष इतरानपि कोपयेत्" इस नियम के अनुसार एक ही प्रकुपित पित्त, अवशेष दोनों वात एवं कफ दोषों को भी प्रकुपित कर देता है। अतएव पलित होने का कारण त्रिदोष ही समझा जायगा। इसकी अव्यर्थ चिकित्सा इस प्रकार है—

लोह भस्म, हाथी के दांत की भस्म, आम की गुठली, गृह धूम, नीम के बीज, त्रिफला, दोनों सारिवा

—इन सबों को समभाग लेकर कल्क बनाले, कल्क से चौगुना काले तिल का तैल, एवं कल्क से चौगुना भंगरे का रस तथा इतना ही बकरी का दूध और तैल से चौगुना पानी। इन सबों को तैल पाक विधि से तेल सिद्ध कर, धीरे-धीरे शिर में मालिश करने से बहुत दिनों का भी अकाल का पका हुआ बाल काले होजाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है कोशिश करने पर कभी हाथ के सहारे नीचे आजाता है वर्ना ऊपर ही रहता है। मैंने फोते बढ़ने के तो आयुर्वेद में कई प्रयोग देखे हैं, किन्तु चढ़े हुए अंडकोष को नीचे उतारने में कोई प्रयोग दृष्टिगोचर नहीं हुआ। अतः निवेदन है कि इस का कोई सरल अनुभूत प्रयोग लिखने की कृपा करें।

—वैद्य पं० क्षेत्रपाल शास्त्री, पोरा।

प्रश्न नं० ७९—

एक स्त्री जिसकी आयु २८ वर्ष बदन गठीला, २५ वर्ष की उम्र में ३ साल पहले एक लड़की पैदा होकर मर गई। पहले बद-हज़मी रहा करती थी। वह अब ठीक होगई, परन्तु अब उसकी योनि से (भों-भों वायु की) आवाज़ निकलती है, विशेष-कर चलते समय। वैद्य-महोदयों से प्रार्थना है कि इसकी समुचित दवा लिखें।

—ग्राहक नं० ८६१७।

प्रश्न नं० ८०—

मेरे एक मित्र जिनकी उम्र ५० साल है, करीब ६ साल से दमा का रोग है। खास बात यह है कि दमा पहले तो ३-४ महीने में १ व २ दिन को होता था परन्तु अब प्रति महीने व महीने से भी कम दिनों में होने लगा है और २-३ दिन रहता है। खूबी की बात यह है कि दमा रात में कुछ देर सोने के बाद होता है, आयुर्वेदिक औषधियां भी सेवन की व इंजेक्शन भी लगवाये हैं। रोगी की प्रकृति गर्म है। वैद्य-महानुभाव इसका उपाय लिखने की कृपा करें।

—पं० गोविन्ददास शर्मा,
पड़री-कोंच (जालौन)

प्रश्न नं० ८१—

मुझे एक वर्ष से दाहिना फोता बढ़ गया है। कोई तकलीफ नहीं है। बिना आपरेशन के किसी दवा या प्रयोग से यदि ठीक हो जाना संभव हो तो वैद्य महानुभाव प्रकाश डाल मुझे अनुगृहीत करें।

प्रश्न नं० ८२—

मेरा कान बचपन से ही बहता है। होमियोपैथी एलोपैथी और आयुर्वेदीय कई दवाएं कीं। अच्छा हो जाता है; पर फिर शुरू हो जाता है। वैद्य महानुभाव धन्वन्तरि द्वारा कोई सुलभ प्रयोग—जो सब जगह मिल सके, बतलाने की कृपा करें।

—श्री० रामपरीक्षण कुमार

प्रश्न नं० ८३—

यहां पर कई व्यक्ति अफीम खाने के आदी हो चुके हैं हम उन्हें अफीम खाना बन्द करवाना चाहते हैं। हमने कई बार अफीम खाना बन्द करवाया मगर उसके न खाने से पतले दस्त, बदन में दर्द, हड़फूटन, जम्भाई आना, आंखों से आंसू का बहना आदि शिकायतें उपस्थित होजाती हैं। अतः आयुर्वेद के धुरंधर विद्वानों से अनुरोध है कि कृपया ऐसी औषधि अनुभूत बतलाने की कृपा करें जो उस खान-पान में दे दी जाय, जिससे वह अफीम से सदैव के लिये घृणा करने लगे और ये उपसर्ग न उपस्थित हों।

—श्री. वंशगोपाल श्री वास्तव,
मुरलीपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यालोचन

मानसिक रोग और उससे बचने के उपाय—

लेखक–दाधीच वै० पं० रामप्रसाद जी मिश्र आयुर्वेद-सेवक, नागौर। प्रकाशक-प्रभाकर प्रकाशन विभाग, नागौर (मारवाड़) मूल्य ।।)

प्रस्तुत निबंध, निखिलभारतवर्षीय २६ वां आयुर्वेद महासम्मेलन सम्भाषा परिषद की सूचनानुसार लिखा गया था। गुरु-शिष्य के वार्तालाप रूप यह निबन्ध विद्वत्ता एवं खोज-पूर्ण लिखा गया है। हरेक व्यक्ति के मननशील पुस्तक है।

…श्री वैद्य—

लेखक एवं प्रकाशक उपर्युक्त। मूल्य ।≈) पुस्तक …पृष्ठ १८ तक वैद्यों व रोगियों के लिए विविध उपदेश व हिदायतें दी हैं। पृष्ठ १६ से ३७ तक विविध रोग पर उत्तमोत्तम प्रयोग संग्रहीत हैं। पृष्ठ …८ से ४८ तक पुनः उपदेश व कवितायें दी गई हैं। पुस्तक के अन्त में प्रभाकर चिकित्सालय की विस्तृत सूची देकर पुस्तक का महत्व कम कर दिया है।

…मायन--[मासिक पत्र]

प्रकाशक एवं सम्पादक--साहित्यमनीषी डा० …पतिसिंह जी वर्मा। वार्षिक मूल्य ६) प्राप्तस्थान-…यन फार्मेसी(दर्यागंज ३) दहली। यह आयुर्वेदिक मासिक पत्र पहिले कुछ समय प्रकाशित होकर कुछ समय से बंद हो गया था। अब जनवरी १६४८ से इसका पुनः प्रकाशन हुआ है। प्रथम तीन अङ्क हमको मिल चुके हैं तथा इन तीन अङ्कों के देखने से प्रतीत होता है कि यह पत्र शीघ्र उन्नति कर सकेगा। इसके कतिपय स्तम्भ अत्युपयोगी है। पत्र चिकित्सक वर्ग एवं आयुर्वेद प्रेमियों के लिए पठनीय है।

आयुर्वेद-सेवक— (मासिक पत्र)

सम्पादक वैद्य गुलराज शर्मा मिश्र, श्री० गंगाधर जी वझे एवं श्री० शिवकरण जी शर्मा छांगाणी। वार्षिक मूल्य ५≡) । प्राप्त स्थान-"आयुर्वेद-सेवक" कार्यालय, नई शुक्रवारी नागपुर।

मार्च १६४८ का (प्रथम) अङ्क हमारे समक्ष है। हमारा देश स्वतन्त्र हो गया है और सभी वर्ग अपने दिल और दिमाग से अपने वर्ग की उन्नति करने में संलग्न हैं किन्तु हमारा वैद्य-समाज आज भी गाढ़ी नींद में सोरहा है। इस नींद को भंग करने के लिए 'आयुर्वेद-सेवक' जैसे पत्रों की नितान्त आवश्यकता है। यह पत्र आयुर्वेद विपक्षियों के आक्षेपों का मुंह तोड़ उत्तर देने तथा आयुर्वेद-विद्वानों को संगठित करनेके लिए ही प्रकाशित हुआ है। वह अपने उद्देश्य में पूर्ण सफल हो यह हमारी कामना है। वैद्य-वर्ग को इस पत्र के ग्राहक बनकर इसके सम्पादक मण्डल तथा प्रकाशकों को प्रोत्साहन देना चाहिये।

स्वास्थ्य–(मासिक पत्र)

सम्पादक पं० नारायणप्रसाद जी द्विवेदी वैद्य। प्राप्त स्थान --'स्वास्थ्य' सूटरगंज, कानपुर। वार्षिक मूल्य २।।)

इस मासिक पत्र का प्रथमांक हमारे समक्ष है। अभी इस अंक के देखने से विशेष आशा प्रतीत नहीं होती है। माननीय सम्पादक जी से निवेदन है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत, सम्मति एवं आशीर्वाद में अधिक स्थान व्यय न करते हुए ग्राहकों के लिए उपयोगी साहित्य दें तो पत्र शीघ्र अग्रसर हो सकेगा।

श्री छांगाणी अभिनन्दन ग्रंथ—

प्रधान सम्पादक—वैद्य-वाचस्पति श्री गुलराज शर्मा मिश्र आयुर्वेदाचार्य, प्राप्त स्थान-श्री० छांगाणी आयुर्वेद-फार्मेसी, सीताबर्डी नागपुर। मूल्य ४) पृष्ठ संख्या-४२७।

श्रीमान् प्राणाचार्य गोवर्धन शर्मा छांगाणी से वैद्य-समाज में ऐसा बिरला ही होगा जो अपरचित हो। धन्वन्तरि के पाठक तो आपसे विशेष रूप से परचित हैं क्योंकि धन्वन्तरि पर आपकी विशेष कृपा रही है। आपकी महान सेवाओं के फलस्वरूप आप के शिष्यों एवं भक्तों ने उक्त ग्रंथ १४ मार्च १६४८ को बम्बई निवासी आयुर्वेद-मार्तण्ड आचार्य यादव जी त्रिक्रम जी की अध्यक्षता में समर्पित किया है। यह ग्रंथ आयुर्वेद विद्वानों को अवश्य मनन करना चाहिए। क्योंकि इसमें अन्य विषयों के साथ-साथ श्री० छांगाणी जी के पांडित्य-पूर्ण लेखों एवं भाषणों का भी संग्रह दिया गया है।

जीव तिक्त विमर्श—

(A Treatise On Vitamins)

लेखक—श्री. हरिश्चन्द्र आत्रेय A. M. S. (Fin.) प्रकाशक-बुद्धि सेवाश्रम, रतनगढ़ (बिजनौर) मूल्य १।) सजिल्द छपाई आदि उत्तम।

इसमें सन्देह नहीं कि यह पुस्तिका खोज के साथ लिखी गई है और चिकित्सक समुदाय के लिये पठनीय है। लेकिन इससे वही चिकित्सक लाभ उठा सकता है जो हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का अच्छा ज्ञान रखता हो। इस विषय पर सरल एवं सुबोध हिन्दी भाषा में साहित्य का पूर्ण अभाव है, फिर भी पुस्तक विद्यार्थियों एवं विद्वानों दोनों के लिये उपयोगी है। इस पुस्तक की भूमिका लेखक हैं आचार्य बालकृष्ण अमर जी पाठक, जिन्होंने अपनी भूमिका में थोड़े से में यह सिद्ध कर दिया है कि आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों में आहार-विषयक ज्ञान भी विस्तृत एवं पूर्ण युक्तियुक्त दिया गया है जिसमें आज के नवीनतम आविष्कार भी कोई व्यक्तिक्रम उत्पन्न नहीं करते हैं।

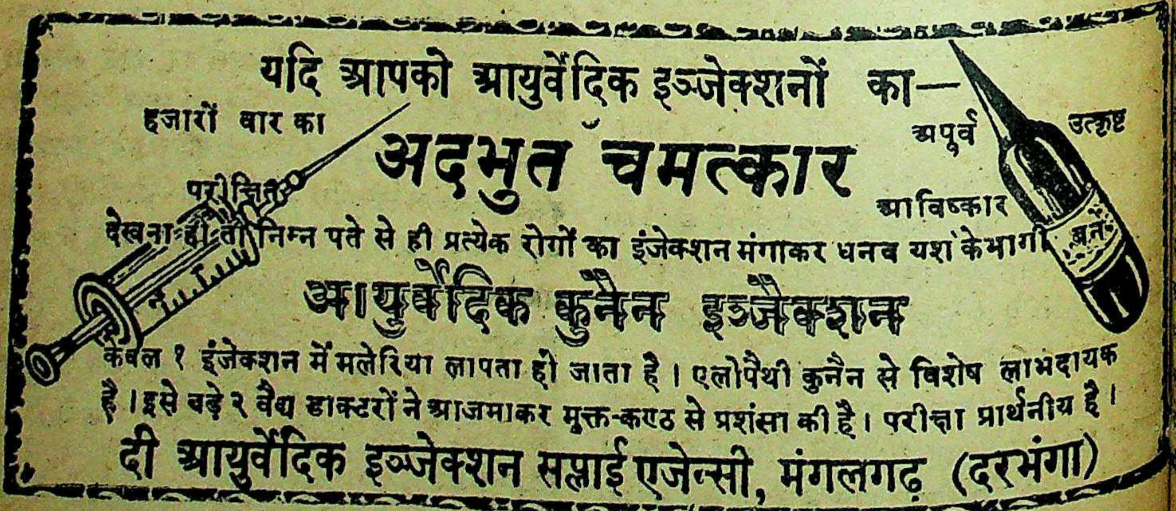

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद और एलोपैथी को बराबर २ सहायता हो।

—श्री० राजा जी।

कलकत्ता ता० २६ फरवरी पश्चिमी बंगाल आयुर्वेद परिषद का उद्घाटन करते हुए माननीय गवर्नर श्री० राजगोपालाचार्य ने कहा कि यदि भारत में आयुर्वेद की उन्नति करना है तो वैद्यों को चाहिए कि वे कोई भी बात चिकित्सा सम्बन्धी गुप्त न रखते हुए उसे प्रकाश में लायें और आयुर्वेद को एलोपैथी की सतह पर लायें। आयुर्वेद की उन्नति पर बोलते हुए श्री० राजगोपालाचार्य ने कहा कि चिकित्सा की इस प्राचीन-कला के ह्रास के कारण इसके विशेषज्ञ ही हैं। परिषद में उपस्थित कविराजों से कहा कि उन्हें सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहिए कि वह पश्चिमी और पूर्वी इन दोनों ही शास्त्रों को अपने बजट में बराबर २ सहायता करें। उन्होंने आयुर्वेद में गम्भीर शोध के लिए वचन दिया और कहा कि यह कर्तव्य वैद्यों का है कि वे शोध की दिशा में उपयुक्त पथ प्रदर्शित करें। राजा जी ने मद्रास सरकार और इण्डियन कौंसिल ऑफ मेडिशन की इस दिशा में उठाए हुए कदम की प्रशंसा की और कहा कि जहां पश्चिमी देशों में लगातार शोध होते रहते हैं और शोधकर्ता शोध के परिणामों को गुप्त न रखते हुए प्रकाश में लाते हैं। दुःख है कि आयुर्वेद के सम्बन्ध में सभी बातें विपरीत दशा में दिखाई देती हैं। उन्होंने दुख प्रगट करते हुए कहा कि ज्ञान के इस अखंड कोष की कई शाखाओं का विशेष ज्ञान वैद्य लोग अपने तक ही सीमित रखते हैं। उसके परिणाम स्वरूप नीम हकीमों की संख्या बढ़ती है और अंत में आयुर्वेद नीची दृष्टि से देखा जाता है। इस तरह की सीमायें और गुप्त बातें धर्म में भले ही स्थान पा लें परन्तु औपचारिक विज्ञान और कला में इन्हें कोई स्थान नहीं। पश्चिम ने कितनी जल्दी उन्नति की और नये २ तरीकों से अपने ज्ञान को विशेषतः औषधियों में बढ़ाया। हमें उनसे यह बात सीखनी चाहिए। थोड़ी सी जड़ी बूटियों का ज्ञान अपूर्ण ही होगा। शरीर-विज्ञान, शल्यकर्म और इस तरह की दूसरी शाखायें आयुर्वेद में भी ठीक उतनी ही उन्नत थीं जितनी कि आज ऐलोपैथी में हैं। अन्त में माननीय गवर्नर ने परिषद से कहा कि वह इस दशा में बड़ी गम्भीरता पूर्वक विचार करें और इसके विभिन्न विभागों को दृष्टि में रखते हुए आयुर्वेद को उतना ही महत्वपूर्ण बनादें, जितना कि ऐलोपैथी विज्ञान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदके लिये मद्रास सरकारकी स्तुत्य योजना।

मद्रास सरकार ने आयुर्वेद कालेज भवन और रुग्णालय बनाने की एक विस्तृत योजना बनाई है।

'हॉइटपार कम्पोण्ड के अन्तिम भाग में कालेज भवन वनाया जावेगा। कालेज भवन के निर्माणार्थ गृहनिर्माण कला विशेषज्ञों से सलाह ली जा रही है। भवन-निर्माण में अनुमानतः सोलह लाख बीस हजार रुपये व्यय किये जावेंगे।

पर फिल हाल जून के अन्त तक पचास हजार की लागत से कालेज के लिए दो अस्थायी भवनों का प्रबन्ध किया जा रहा है।

स्पेशल आफिसर ने इस बात का उत्तर दिया है कि रुग्णालय सम्बन्धी योजना के अन्तर्गत कुछ भवन भी बनाये जायें जिनमें ३०० मरीजों की व्यवस्था होसके। तत्सम्बन्धी योजना और व्यय पर विचार हो रहा है।

योजना के अन्तर्गत नर्सों के लिए अलग क्वार्टर भी बनेंगे। लेकिन जून के अन्त तक पचास हजार के खर्च से अस्थायी भवन बन जायेंगे जिनमें सौ रोगी रह सकेंगे।

छात्रावास बनाने के लिए भी सरकार ने ढाई लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान कर दी है। पर इसके चार लाख पचासी हजार व्यय का अनुमान किया जा रहा है। छात्रावास में सौ लड़के और पचास लड़कियां रह सकेंगी आशा है इस भवन का निर्माण बहुत शीघ्र ही प्रारंभ हो जावेगा।

कालेज का अनुसन्धान [रिसर्च] विभाग बालज बाग विल्डिंग में रहेगा।

आशा है अन्य प्रान्तीय सरकार भी आयुर्वेद के प्रति उदासीन नीति का त्याग कर उपर्युक्त संवाद में सबक लेंगी।

वैद्य-बन्धुओं से निवेदन—

जिन वैद्य-बन्धुओं के पास हिन्दी में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति तथा निदान आदि संगीत में होवें, या जो संगीत पर तैयार कर सकते हों वे बन्धु अपना संग्रह व रचना शीघ्र ही भेजें, उसके उपलक्ष में उन्हें उचित पुरुष्कार दिया जावेगा।

पता—पं० उत्तमचन्द जैन वैद्य, पिंडरई (मंडला)

विहार प्रान्त वैद्य सेवा संघ—

इस संघ का उद्देश्य है कि बड़े २ मेला एवं संक्रामक रोगों के समय दातव्य औषधालय लगा कर जनता की सेवा चिकित्सा द्वारा करते हुए आयुर्वेद का प्रचार करना। अभी तक प्रांत के बड़े २ मेलों में संघ द्वारा काफी सेवा की जा चुकी है। प्रांतों के वैद्यों से निवेदन है कि वे इसके सदस्य बनकर सहयोग दान दें।

—मंत्री वि० प्रा० वैद्य सेवा संघ,
कार्यालय ओड़ो, पो० नारदीगंज (गया)

धन्वन्तरि के विशेषांक चाहिये—

मुझे निम्न विशेषांकों की आवश्यकता है, जो व्यक्ति दे सकें वे मूल्यादि के विषय में शीघ्र लिखें।

१—हिस्टेरियांक २—चिकित्सानुभवांक
३—अनुभूत चिकित्सांक ४—वातरोगांक
५—बालरोगांक ६—नारीरोगांक

—कविराज आनन्द शर्मा शास्त्री,
कौशिक फार्मेसी घटी, सपरून (पटियाला)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद संसार में क्रांतिकारी खोज

पूर्ण अनुभूत-वैज्ञानिक-शास्त्रीय इन्जैक्शन से चौगुना लाभ पहुंचाने वाले हर रोग पर अलग २ स्पेशल "बीटौल सात्वीय आयुर्वेदिक इन्जैक्शन्स" प्रयोग कर धन, यश तथा स्वास्थ्य लाभ कीजिये।

HIND RESEARCH LABORATORIES JHANSI U.P. REGD TRADE MARK

मलेरिया बुखार — रक्त पित्त (अधो तथा ऊर्ध्वगत)
खुजली (सूखी व पस वाली) — प्रमेह, स्तम्भन
वात-व्याधि (गठिया आदि) — प्रदर-कष्टोरज शोथ आदि

पर विशेष उपयोगी तथा यकृत, प्लीहा, श्वास, कास, छाजन, गजकर्ण (Eczema) नपुंसकता आदि पर स्पेशल इन्जैक्शन तथा शर्तिया औषधियां हमारे यहां से खरीदिए। थोक खरीद पर अधिक सुविधा। सूचीपत्र मुफ्त।

पता - हिन्द रिसर्च लेबोरेटरीज़ (रजि०) सदर बाजार झांसी [यू.पी.]

दवा के सच्चे मोती

...यो! हकीमो !! तथा फार्मेसी वालो !!!

...रे यहां सब प्रकार के शुद्ध और सच्चे मोती, जैसे ... बसराई खाका, सीलोन खाका, आष्ट्रेलियन मोती वगैरं, जो दवा के लिए सर्वोत्तम हैं तथा जो भारत के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वैद्यों द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं, निहायत किफायत से मिलते हैं। धर्मार्थ औषधालयों तथा फार्मेसियों के साथ विशेष रिआयत की जाती है। आर्डर भेजने की कृपा करें।

पता-नगीनदास वीरचन्द जेवरी, ...४-४६, धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३।

आयुर्वेद जगत के सर्व-श्रेष्ठ और लोकप्रिय सचित्र मासिक पत्र 'रसायन' का अप्रैल मास में २०० से अधिक पृष्ठों पर

फलों से इलाज

विशेषांक प्रकाशित होरहा है, जिसमें सिर से लेकर पांव तक होने वाले लगभग सभी साधारण और जीर्ण तथा कठिन एवं गुप्त रोगों का इलाज सुमधुर और स्वादिष्ट फलों से करना बतलाया गया है। अमीरों-रईसों और साहूकारों तथा उनके चिकित्सकों एवं कोमल प्रकृति वाले व्यक्तियों के लिए जो काली-कलूटी और कड़वी कषैली दवाइयां सेवन नहीं कर सकते या घृणा होती है) यह अङ्क प्रकृतिकी अपूर्व देन सिद्ध होगा। फलों से इलाज पर भारतवर्ष में यह सबसे पहला और अद्भुत विशेषाङ्क है। इस अङ्क का मूल्य २॥) होगा, किन्तु वार्षिक मूल्य ६) भेजकर स्थाई ग्राहक बनने वालों को मुफ्त मिलेगा। अभी से आर्डर बुक कराने वाले ही इस अंक को प्राप्त कर सकेंगे।

मैनेजर-'रसायन' [दरियागंज] ३ पो. बो. १२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्युत्तम पेटेंट औषधियां।

स्त्री सुधा

प्रदर, मासिक धर्म की खराबी, गर्भाशय की खराबी के लिये उत्तम है।

१ शीशी १।।) १२ शीशी १३।।)

कुमारकल्याण घुटी

बालकों के रोग दूर कर उनको हृष्ट-पुष्ट बनाने वाली मीठी घुटी है।

१२ शीशी ।–) १२ शीशी २।।।–)

धन्वन्तरि-बाम

सिर दर्द को दूर करती है दिमाग को तरावट व ताजगी देती है। शीतल व सुगन्ति है।

१ शी० ।।।) १२ शीशी ६।।।)

पायरिया मंजन

दन्त रोगों को दूर करता, पायरिया का दुश्मन।

१ शी० ।।) १२ शीशी ४।।)

स्वर्णबसंत मालती नं० १

पुराने ज्वर, क्षय आदि भयंकर रोग नष्ट करने को उत्तम है। १ तोला २०)

ज्वरारि

ज्वर-जूड़ी की सर्वोत्तम व परीक्षित महौषधि

१ शीशी १) १२ शीशी ६)

कासारि

हर प्रकार की खांसी को मार भगाने के लिए उत्तम। अनुपान रूप में भी व्यवहार कर सकते हैं।

१ शीशी १) १२ शी० ६)

मकरध्वज बटी

प्रमेह, वीर्यविकार नाशक अत्युत्तम प्रसिद्ध टौनिक।

१ शीशी २।।=) १२ शीशी २०।।)

वातारि वटी

वातरोग-गठिया, शरीर के किसी अङ्ग का दर्द दूर करने को उत्तम।

१ शीशी २) १२ शीशी १८)

खाजरिपु

खाज-खुजली के लिये अक्सीर तैल।

१ शीशी १) छोटी शी० ।।–

मनोरम चूर्ण

स्वादिष्ट व मनमोहक उत्तम चूर्ण।

१ शीशी ।≡) छोटी ।)

सिद्ध मकरध्वज नं० १

आयुर्वेद का प्रसिद्ध रत्न जो समय पर अपना पूर्ण चमत्कार दिखाता है। मूल्य १ तोला ३३)

ये औषधियां हजारों रोगियों पर **परीक्षित हैं।**

धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगी आयुर्वेदीय पुस्तकें

इन पुस्तकों की थोड़ी-थोड़ी प्रतियां शेष हैं। इनका विवरण हमारी सूची में भी नहीं है। अतः आप इन पुस्तकों को शीघ्र मंगालें, समाप्त हो जाने पर नहीं भेज सकेंगे।

...सागर ८)
...सार-संग्रह (संस्कृत-टीका) (श्री. घनानन्द ...न्त विद्यार्णव कृत) ३)
...संकृत निदान भाग १,२,३ मूल्य २)
...तिमिर भास्कर (भाषा-टीका) सजिल्द ४)
...रोग रक्षक ॥)
...या ॥)
...व तैल ।॥)
...साजी शिक्षा १)
...के गुप्त रोग और उसके इलाज ।॥)
...वेध विज्ञान – इञ्जेक्शन-चिकित्सा पर उत्तम ...पुस्तक। इसमें एलोपैथी इंजैक्शनों का हिन्दी में ...उत्तम विवरण है। मूल्य ३)
...बेटीज (मधुमेह) ।=)
...चार पद्धति ।=)
...परिचय (आ. पंचानन पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल कृत) मूल्य १)

सोंठ (श्री रामेश वेदी आयु०) १)
अंजीर ,, १)
तुलसी ,, २)
यम का दूत (प्लेग) –)
सुगन्धि-व्यापार (तैल निर्माण) १)
रसरत्न समुच्चय (लाहौर वाली) ५)
मेघ-विनोद (,,) ४)
भोजन ही अमृत है १॥)
नेत्र रक्षा व नेत्र रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा ॥=)
बुढ़ापा और बीमारी से बचने के सरल उपाय ।॥)
बच्चों का स्वास्थ्य पर भयंकर प्रभाव ।)
जर्राही प्रकाश (चीर-फाड़ मलहम-पट्टी की प्रसिद्ध पुस्तक) ३॥)

पशु-चिकित्सा—
इसमें घोड़े, गाय-बैल आदि की बीमारियों का सचित्र विवरण व चिकित्सा दी है— ३॥)

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि [illegible]

[illegible] (अलीगढ़) यू.पी.

की

औषधि[illegible] के कतिपय स्थान

[illegible]

—लाखनी (भण्डारा) में—
दी जैन स्टोर्स
लाखनी (भण्डारा)

--पिपरिया में--
मैसर्स बालचन्द गुप्ता एण्ड संस
आयुर्वेद मैडीकल स्टोर्स
पिपरिया

—लुधियाना में—
कवि० बेणीप्रसाद शास्त्री आयु०
लुधियाना (पञ्जाब)

—मण्डला में—
श्री० दुर्गाप्रसाद भगवानप्रसाद
पड़ाव, मण्डला

--कासगंज में--
डा० निरंजनलाल गुप्ता
सर्वहितैषी औषधालय
सहावर गेट, कासगंज

–बैतूल में--
प्रेम मैडीकल हाल
बैतूल सी०पी०

–गाडरवाडा में–
मैसर्स बालमुकुन्द गुप्ता एण्ड [illegible]
आयुर्वेदिक मैडीकल स्टो[illegible]
गाडरवाडा

[illegible]य" विजयगढ़ का
[illegible]जियेगा।

Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A. 285

धन्वन्तरि

–इस अंक में–

गामी वर्ष दो विशेषांक होंगे	७२५	स्वर्ण क्षीरी (सत्यानाशी)	७४८
रत के प्राणाचार्य	७२६	लज्जावती (छुईमुई)	७४९
गुण वीर्य विपाक और प्रभाव	७३२	अमलतास	७५१
माशयिक कर्कस्फोट	७३५	ऋषभक	७५३
श्राव की अनुभूत चिकित्सा	७३६	शाम्बर तैल	७५४
वास (दमा)	७३८	परीक्षित-प्रयोग	७५५
शूचिका	७४१	आयुर्वेद को खुला चैलेंज	७५८
वनम् परमौषधम्	७४३	वैद्यों की सम्मतियां	७६४
टॉनिक	७४५	समाचार	७६७
ष्ठिकनी	७४६	ग्राहकों के लिये आवश्यक सूचना	७६६

आगामी वर्ष का वार्षिक मूल्य ५।) शीघ्र ही मनियार्डर द्वारा भेज दीजियेगा। मनियार्डर से वार्षिक मूल्य भेजने वालों को विशेषांक प्रकाशित होते ही रजिस्ट्री से भेज दिया जायगा।

मई १९५८

भाग २२ अङ्क १२

वार्षिक-मूल्य ५।)

सम्पादक वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग

जे. पी. अग्रवाल बी.एस.सी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्प

एवं

पंचकर्म

चि कि त्सां क

धन्वन्तरि

का

यह विशेषांक

पहिले सभी विशेषांकों से उत्तम, सुन्दर उपयोगी एवं आकर्षक प्रकाशित होरहा है। इसमें प्रकाशित होने के लिये विद्वान एवं अनुभवी चिकित्सकों ने अपने अनुभव दिल खोल कर भेजे हैं। सुन्दर व उपयोगी चित्रों की व्यवस्था की जा रही है। आप इसे देख कर एक बार कह उठेंगे—

"अवश्य देखिये देखन जोगू"

इस विशेषांक को

श्री० कविराज उपेन्द्रनाथ दास जी काव्य-व्याकरण सांख्यतीर्थ

मन्त्री—आयुर्वेद विद्यापीठ, देहली

विशेष रूप से सम्पादन कर रहे हैं। आपकी मंजी हुई लेखनी एवं आपकी विद्वत्ता से सम्पूर्ण वैद्य-समाज परिचित है तथा आपके सम्पादन से इस विशेषांक की उपयोगिता और भी बढ़ जायगी।

इस वर्ष दो विशेषांक प्रकाशित होंगे—

१-कल्प एवं पञ्चकर्म चिकित्सांक

२-गुप्त सिद्ध प्रयोगांक दूसरा भाग

वार्षिक मूल्य ५।) शीघ्र ही मनियार्डर से भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करालें।

व्यवस्थापक—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

Printed and Published by Vaidya D. S. Garg at the Dhanwantri Press, Bijaigarh.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by Dept. of Public Instruction of Central Provinces & Berar.

भाग २२ अङ्क १२ | सम्पादक- वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग, जे. पी. अग्रवाल, बी. एस. सी. | मई सन् १९४८ ई०

आगामी वर्ष दो विशेषांक होंगे।

१–कल्प एवं पंचकर्म चिकित्सांक

२-गुप्त-सिद्ध-प्रयोगांक नं० २

धन्वन्तरि के पाठकों के लिये यह शुभ-सूचना देते हुए प्रसन्नता है कि हमने अपनी आर्थिक हानि का ख्याल न करते हुए यह निश्चय किया है कि आगामी वर्ष "धन्वन्तरि" के दो विशेषांक प्रकाशित किये जांय। प्रथम विशेषांक तो पहिले विशेषांकों से भी अधिक बड़ा, सुन्दर व चित्रादि से सुसज्जित प्रकाशित होगा ही. लेकिन दूसरा विशेषांक 'गुप्त सिद्ध प्रयोगांक नं० २' भी गुप्त सिद्ध प्रयोगांक जैसा उपयोगी, चित्र व वैद्यों के परिचय सहित प्रकाशित किया जायगा। ये दोनों विशेषांक धन्वन्तरि के ग्राहकों को वार्षिक मूल्य में ही मिलेंगे। विस्तृत विवरण इसी अंक में अन्यत्र देखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के प्राणाचार्य ।

लेखक — कविराज श्री० रत्नाकर जी ।

यों तो भारत के उदीयमान विद्वत्समाज ने भारतीय जर्जरित साहित्यको संजीवन रसायन के दो-चार घूंट पिला तो अवश्य दिये हैं, परन्तु फिर भी अभी तक उसके कलेवर के अनेक भाग ऐसे हैं, जिन पर उसका कुछ प्रभाव विदित ही नहीं होता और हो भी कैसे, सहस्रों वर्षों की व्याधि को इने-गिने इन ५० वर्षों की चिकित्सा का प्रभाव छूमन्तर तो कर ही नहीं सकता, रसायन प्रयोग को भी अवधि की प्रतीक्षा करनी ही पड़ती है ।

प्राय: इतिहास भारतीय साहित्य की प्रधान दुर्बलता है । उसपर हमारी अवहेलनाओं की इतनी धूल जम गई है कि भारत की देदीप्यमान प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की किरणें आज ध्यान से देखने पर मुश्किल से अनुमति होती हैं । अनेक विज्ञ महारथियों के साथ-साथ भारत के प्राणाचार्य भी उसी धूल के नीचे दबे पड़े हैं । अनेक आचार्य ढूंढ़ निकाले गये, परन्तु बेचारे प्राणाचार्यों पर किसी की नजर अब तक न पड़ी । क्या हम यह कहें कि या तो हमें प्राणों से प्यार ही नहीं है या हमारी प्राण शक्ति ही हम में से जाती रही है । यदि हमें प्राणों से सच्चा प्यार होता, तो क्या प्राणाचार्यों की खोज में हम दीवाने न हो जाते ? हम वह इतिहास खोज ही निकालते, जिसमें हमारे प्राणाचार्य पौरस्त्य आयुर्वेद का आविष्कार कर रहे हैं, मैं तो जानता हूं कि इस ओर हमने अभी तक थोड़ा भी ध्यान नहीं दिया । मैं यह कहकर आयुर्वेद-सम्मेलन की मूल्यवान सेवाओं को भुलाना नहीं चाहता, परन्तु यह अवश्य है कि इस साधना के लिए जिस भगीरथ प्रयत्न की अपेक्षा थी, वह अभी तक हम नहीं कर सके हैं । यदि मेरे कथन में सत्यता होती, तो संस्कृति-साहित्य के इतिहासकार महामति मैकडानल (Mackdonel) को यह कभी भी न लिखना पड़ता—'History is the one weak spot in Indian literture' और हम आज भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकते ।

बचे-खुचे भारतीय साहित्य में ऋग्वेद ही एक ऐसी पुस्तक है, जिसकी प्राचीनता के सामने विश्व के समस्त साहित्यकों ने सिर झुकाया है । इतिहास की दृष्टि में तो भारत के लिए ऋग्वेद बड़े महत्व की चीज है । उसने भारत के प्राचीन इतिहास-निर्माण में एक बड़ी सहायता ही नहीं दी, किन्तु ऋग्वेद प्राचीन इतिहास का सर्वस्व है । ऋग्वेद के काल के विषय में ऐतिहासिकों का यद्यपि एक मत नहीं है, तथापि विश्व के समस्त साहित्य की तुलना में ऋग्वेद के प्राचीनतम् होने में किसी को आपत्ति नहीं है । ऋग्वेद के अनेक प्रमाणों से सिद्ध है कि ईसा से हजारों वर्ष पूर्व जब भी ऋग्वेद का आविर्भाव हुआ होगा, उस समय भारत के प्राणाचार्यों का आविष्कार सर्वसाधारण में प्रचलित हो चुका था । तत्कालीन बड़े-बड़े प्राणाचार्य समाज के स्वास्थ्य और प्राण-शक्ति का परिपालन दत्तचित्त हो किया करते थे । वैद्य, औषधि, चिकित्सा, स्वास्थ्य आदि का ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर वर्णन है, परन्तु उस समयके प्राणाचार्यों का नाम निर्देशपूर्वक परिगणित कर सकना तो आज असम्भव है ।

वर्तमान समय में उपलब्ध आयुर्वेदिक साहित्य द्वारा भारत के प्राणाचार्यों का आद्योपान्त ठीक-ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालक्रमानुसार इतिहास नहीं बताया जा सकता, हां यह अवश्य है कि उनकी प्राचीनता, अर्वाचीनता का यथाशक्ति कालविभाग का स्थिरीकरण किया जा सकता है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में प्राणाचार्यों का जो इतिहास है, वह देव श्रेणी का है उसमें माननीय प्राणाचार्य नहीं बिठाये जा सकते। चरक के अनुसार उसका क्रम यह है—

"ब्राह्मणाहि यथा प्रोक्तमायुर्वेदं प्रजापतिः ।
जग्राहनिखिलेनादावश्विनौतु पुनस्ततः ॥
अश्विश्यां भगवान शक्रः प्रतिपेदेह केवलम् ।
ऋषि प्रोक्तोभरद्वाजस्तस्माच्छक्रमुपागतम् ॥

(सूत्रस्थान अ० १।४–५)

आद्यगुरु प्राणाचार्य ब्रह्मा हुऐ। उन्होंने दक्ष प्रजापति को आयुर्वेद का आमूल चूल उपदेश दिया। दक्ष ने ज्यों का त्यों वह उपदेश अश्विनीकुमारों को दे डाला। अश्विनीकुमारों से ब्राह्म धरोहर भगवान इन्द्र ले आये और इन्द्र भगवान से ऋषि भारद्वाज। इसके बाद वह धरोहर स्वर्ग से ज़मीन पर उतरी। और-

"ऋषयश्च भरद्वाजाज्जागृहुस्तं प्रजाहितम्
दीर्घमायुश्चिकीर्षन्तो वेदं वर्धनमायुषः ॥
अथ मैत्री परः पुण्यमायुर्वेदं पुनर्वसुः ।
शिष्येभ्योदत्तवान्षड्भ्यः सर्वभूतानुकम्पया ॥
बुद्धे विंशेषस्तत्रासीन्नोपदेशान्तरं बिना ।
तन्त्रस्य कर्ता प्रथममग्निवेशो यतोऽभवत् ॥

(सू० अ० १।२६, २६, ३१)

भारद्वाज ऋषि से अनेक ऋषि-मुनियों ने दीर्घजीवी होने की इच्छा से उस प्राणिश्रेयष्करी थाती को जा बटाया। उन्ही ऋषियों में स्वनामधन्य पुनर्वसु भगवान ने अपने छः शिष्यों को वह प्रसाद बांटा। उन शिष्यों में अग्नि की बुद्धि सबसे तेज़ थी, उन्होंने 'अग्निवेशसंहिता' लिख डाली। इस प्रकार वह स्वर्गीय ब्राह्म धरोहर स्वर्ग से प्राणाचार्य परम्परा द्वारा पृथ्वी पर चली आई। यहीं से मानव-सृष्टि के प्राणाचार्यों का इतिहास प्रारम्भ होता है।

वर्तमान समय मे उपलब्ध आयुर्वेदिक साहित्य द्वारा भारत के प्राणाचार्यों का ठीक-ठीक समय और जीवनी लिखना प्रायः असम्भव-सा ही है। पहले किसी आचार्य ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया और यदि कुछ लिखा भी तो इतना अपर्याप्त कि उससे भारतीय प्राणाचार्यों के इतिवृत-निर्माण में कोई बड़ी सहायता नहीं मिल सकती। हां, भारत के तथा अन्यान्य देशों के उपलब्ध साहित्य में विभिन्न ग्रंथों द्वारा यह सुनिश्चित है कि सबसे प्रथम प्राणाचार्यों का आविर्भाव भारत में हुआ था चिकित्सा-शास्त्र का महत्वपूर्ण मर्म उन्होंने ही विश्व को सिखाया। भारतीय प्राणाचार्यों के मक़तब में बैठनेका सबसे प्रथम सौभाग्य यूनानियोंको मिला था।

अब तक उपलब्ध आयुर्वेदिक साहित्य में सब से प्राचीनतम ग्रंथ 'चरकसंहिता' है। चरकसंहिता के वास्तविक कर्ता तो महर्षि अग्निवेश हैं। कालान्तर में जब अग्निवेश संहिता की बहुत दुरावस्था हो गई, तो महर्षि चरक ने उसका प्रतिसंस्कार किया और संहिता को अपने ही नाम से प्रसिद्ध किया। उसी समय से पूर्वोक्त 'अग्निवेशसंहिता' को चरकसंहिता नाम दिया गया। 'चरकसंहिता' के प्रत्येक अध्याय के अन्त में लिखे हुए अध्यायान्त शब्दों से यही बात सूचित होती है 'इत्याग्निवेशकृते चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे —इत्यादि।

अनेक हिंदुओं का कहना है कि चरक महर्षि शेष के अवतार थे। उन्होंने एक बार मानव देह धारण कर भू-लोक का भ्रमण किया था। यहां आकर देखा, तो रोगों से पीड़ित जन-समुदाय में त्राहि-त्राहि मची हुई थी। उनका दिल दया से पसीज उठा, और वे जनता की रोग-निवृति के लिए प्रयत्नशील हुए। विचरण करते हुए शेष जी इस प्रकार एक प्राणाचार्य बन गये, अतएव उनका नाम भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'चरक' हो गया। चरक महर्षि के सम्बन्ध में अनेक विवादास्पद उक्तियां प्रसिद्ध हैं। बहुतों का कथन है कि योग-दर्शन और महाभाष्य' के कर्ता महर्षि पतंजलि और 'चरकसंहिता' के उन्नायक महर्षि चरक एक ही व्यक्ति थे। चरक चतुरानन चक्रपाणि महाराज इस सिद्धान्त के प्रमुख प्रतिपादकों में से एक हैं। उन्होंने अपनी टीका के प्रारम्भ में ही लिखा है—

"पातजंल महाभाष्य, चरकप्रतिसंस्कृतैः।
मनोवाक्कायदोषाणां, हर्त्रेऽहि पतये नमः॥

यह एक विश्वास है, परन्तु इतिहास की कसौटी पर भी वह ठीक और खरा उतर जायगा, इसमें सन्देह है।

प्रायः भारत के किसी प्राणाचार्य का निर्विवाद काल-निर्णय इतिहास अब तक नहीं कर सका है। अनेक ऐतिहासिकों के अनुसार 'चरकसंहिता, का काल ईसा से दो हजार वर्ष पूर्व है, परन्तु इसके प्रतिकूल काल-निर्णय में भी अनेक प्रबल युक्तियां दी जा सकती हैं। हमने प्रायः आगे भी प्राणाचार्यों का जो समय लिखा है, वह बहुमत ही कहा जा सकता है, निर्विवाद सिद्धान्त नहीं।

भारतीय प्राणाचार्यों में दूसरा स्थान सुश्रुत का है। इनके गुरु थे काशिराज दिवोदास; जिनका दूसरा नाम महर्षि धन्वन्तरि है। महर्षि धन्वन्तरि के अनेक शिष्य और थे; परन्तु उनमें प्रमुख सुश्रुत ही थे। उन्होंने अपने नाम से ही 'सुश्रुत-संहिता' का निर्माण किया। शल्य-चिकित्सा आपका मुख्य विषय था। 'भाव-प्रकाश' कर्ता पं० भावमिश्र ने एक स्थान पर लिखा है कि महर्षि सुश्रुत महर्षि विश्वामित्र के पुत्र थे। उनके जीवन-वृतांत के सम्बन्ध में प्रायः कोई विशेष वर्णन नहीं मिलता। प्रोफेसर मैकडोनल के अनुसार महर्षि सुश्रुत का समय चार सौ ईस्वी से पहले ही है, जो इतिहास का बौद्ध युग कहा जा सकता है।

बौद्ध युग में आयुर्वेद के लिए बहुत कार्य हुआ। इसीलिए अनेक ऐतिहासिकों ने इसे 'आयुर्वेदीय युग' कहा है। यद्यपि इस समय आयुर्वेद के वनस्पतियों से सम्बन्धित विभाग में अच्छी उन्नति हुई परन्तु रासायनिक विभाग अछूतासा ही बना रहा। लोगों का मत है कि वाग्भट का जन्म भी इसी युग में हुआ था। बहुतों का तो यह भी मत है कि वाग्भट स्वयं बौद्ध थे, जैसा उनके 'अष्टांग-हृदय' के मंगलात्मक श्लोकों से पता लगा है। परन्तु कुछ एक विद्वानों का कथन है कि जहां वाग्भट के अनेक ग्रन्थों में बौद्ध सिद्धांत झलकते हैं, वहां उनके लिखे गणेशस्तवन का आभास भी मिलता है। एक जगह तो उन्होंने यहां तक लिखा है—"न चैत्यं गच्छेत्।" इससे तो उन्होंने बौद्धों से साफ अपना असहयोग दिखा दिया, क्योंकि 'चैत्य' बौद्धों के पूजा मन्दिर का नाम है। हम तो यह समझते हैं कि वाग्भट बौद्ध तो न थे, पर बौद्ध सिद्धांतों से प्रभावित अवश्य हुए होंगे। वाग्भट के लिखे अनेक ग्रन्थ आज भी हमें उपलब्ध हैं। उनके लेख की खास विशेषता यह है कि जो कुछ वह कहते हैं, वह संक्षेप में और विशद रूप से। यह विशेषता 'अष्टांग-हृदय' में कूट-कूटकर भरी है। उनके उपलब्ध ग्रन्थ 'अष्टांग हृदय', 'कविकल्पतरु' और रसरत्न-समुच्चय हैं। 'अष्टांग-संग्रह-संहिता' में वाग्भट ने अपने जन्मादि के बारे में कुछ स्वयं लिखा है—

'भिषग्वरो वाग्भट इत्यभून्मेपितामहोनामधरोऽस्मियस्य।
सुतोऽभवत्तस्य च सिंहगुप्तस्तस्याप्यहं सिन्धुषु जातजन्मा॥'

वाग्भट के पितामह का नाम भी वाग्भट ही था और पिता का नाम सिंहगुप्त। उनका जन्म सिन्ध में हुआ था।

कुछ लोगों का कथन है कि वाग्भट और सुश्रुत एक ही व्यक्ति थे। सम्भव है हों, परन्तु वाग्भट और सुश्रुत संहिता की लेखनशैली का भेद तो यह नहीं कहता। वह सुश्रुत और वाग्भटको अलग-अलग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ना चाहता है। इसके अतिरिक्त कुछ लोग (जो एक पुराने प्राणाचार्य थे) सुश्रुत और ...को एक ही विभूति कहना चाहते हैं।

...त्रि: कृतयुगे चैव, द्वापरे सुश्रुतो मतः
...लौ वाग्भट नामाच.........।

...र्थात् - एक ही माया सतयुग में अत्रि, द्वापर ... और कलियुग में वाग्भट का रूप लेकर ...त हुई है। भगवान जाने, हुई होगी। हम तो ...नते हैं कि तीनों के काल, कृति और व्यक्ति-...२ हैं। ऐतिहासिकों के अनुसार चरक तक ...और ईसा के ५०० वर्ष पूर्व से ५०० वर्ष बाद ...दूसरा आयुर्वेदीय युग समाप्त होता है।

...के अनन्तर आयुर्वेद में दूसरे प्रकार का युग ...होता है। यह काल ६०० से १५०० वर्ष ...तक है। इस युग का नाम 'तान्त्रिक युग' ...ता है। रासायनिक अभ्युत्थान के लिये यह ...नीय है। कहते हैं कि इसी तान्त्रिक सम्प्र-...लोगों ने मिलकर अथर्ववेद की रचना की ...तन्त्र-वेद आज भी अथर्व के नाम से ... होता है। हम समझते हैं कि ...गोविन्दापादाचार्य कृत 'रसहृदय-तन्त्र, ... कृत 'रसकोमुदी', शिवराम योगीन्द्र-... 'पारदयोग-शास्त्र, आदि अनेकों ग्रंथ इसी ...अवतरित प्राणाचार्यों की धरोहर हैं। इसी ...ने रुद्रयामल नामक ग्रंथ में आयुर्वेद के ...क विषय का 'रसायनी विद्या' कहकर ...र्णन किया गया है। कहते हैं कि यह तांत्रिक ... पीछे वाममार्ग में परिणित हुआ।

...ओं तथा अनेक क्षार आदि का वर्णन सुश्रुत ...से भी पहले बनी 'चरकसंहिता' में विद्यमान ...वहां के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि ... रसायनी विद्या का प्रचुर प्रचार न था। ...की पन्द्रहवीं शताब्दि के लगभग इस विद्या ...ना प्राबल्य हुआ, उतना कभी न हुआ था।

अन्य विद्वानों के होते हुए भी 'रसायनी विद्या' के सबसे उद्भट पंडित नागार्जुन हुए। उनका समय विक्रम की दूसरी शताब्दि के लगभग है। ऐतिहासिकों ने लिखा है कि वे ब्राह्मण थे, पीछे बौद्ध हो गए। उन्होंने ही तिर्यक्पातन-यन्त्र (भभका) का आविष्कार किया था। उसी के अनुसार ही ऊर्ध्व और अधःपातन यन्त्रों का भी प्रचार हुआ। धातु-मारण आदि की अनेक विधियों का भी नवीन आविष्कार किया था। उसका नाम आयुर्वेद में अपनी विशेषता के लिए अमर रहेगा।

नागार्जुन के पश्चात् वृन्द का समय आता है। वृन्द ने अपना चिकित्सा-ग्रंथ माधव-निदान के अनुसार लिखा था, इससे यह स्पष्ट है कि वे माधव के पश्चात् हुए। इतिहासकारों के अनुसार माधव या माधवाचार्य सुप्रसिद्ध वेद-भाष्यकार सायणाचार्य के भाई थे। वे विजयनगर के महाराज के यहां अमात्य पदपर कार्य करते थे। उनका समय अबसे प्रायः नौ सौ वर्ष पूर्व है। अतएव वृन्द का समय अनुमानतः अब से सात या आठ सौ वर्ष पूर्व होगा। बहुतों के मत से माधव को अब से एक हजार वर्ष हो चुके हैं। उनके अनुसार वृन्द का समय आठ या नौ सौ वर्ष पूर्व कहना चाहिए। वृन्द के लिखित ग्रंथ का नाम सिद्धयोग है। ताम्र पर्पटी, रसपर्पटी, लौहमारण एवं अनेकों अंजन आदि अद्वितीय प्रयोगों के लिए उनका नाम और काम सदा स्मरणीय रहेगा।

वृंद के अनन्तर विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दि में महामना चक्रपाणिका आविर्भाव हुआ। चक्रपाणि ने 'चक्रदत्त' नामक सुप्रसिद्ध चिकित्सा-ग्रन्थ लिखा। उनका दूसरा कार्य 'चरक संहिता' की टीका है। यद्यपि चक्रपाणि से पूर्व अनेक पंडितों ने चरक पर टीकायें लिखी थीं, जो अब सुलभ नहीं हैं, परन्तु प्राप्य टीकाओं में भी श्रीमचक्रपाणि की 'आयुर्वेद-दीपिका टीका से बढ़कर दूसरी टीका नहीं निकली। इससे पहले हुई चरक की अनेक टीकाओं का वर्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं चक्रपाणि ने चरक के सिद्धिस्थान में किया है।

"भट्टार हरिश्चन्द्रेण चतस्रस्तन्त्रयुक्ताय: व्याहृताः।

(चरक, सिद्ध० अ० १०, ८०-८४)

"बहुनिपातृत्व्याख्यानानि टीकाकृतामंगिरि सैंधव-जेज्जटेश्वरसेनादीनां सन्ति।

(चरक, सिद्ध० अ० १०, २०)

इससे स्पष्ट है कि भट्टार हरिश्चन्द्र, अंगिरि, सैन्धव, जेज्जट, ईश्वर सेन आदि प्राणाचार्य चक्रपाणि से प्राचीन आचार्य हैं, जिन्होंने भारतीय आयुर्वेद के लिये चरक आदि आकरग्रंथों पर टीका आदि लिखकर वर्णनातीत कार्य किया होगा, परन्तु हमारे दुर्भाग्य से वह आज उपलब्ध नहीं होता। हां, ईसा की लगभग द्वितीय शताब्दि में एक प्रकांड आचार्य श्री दृढ़वलाचार्य और हुये हैं। उन्होंने अपने समय में 'चरक-संहिता' की दुर्दशा देख कर एक बार फिर उसका प्रति संस्कार किया था। खैर, जो हो, चरक-चतुरानन श्री मच्चक्रपाणि ने चरक पर आजकल प्राप्त होसकने योग्य अद्वितीय टीका लिखी। किसी नयनपाल नामक राजा के यहां आप लब्धप्रतिष्ठ राजवैद्य थे। किसी-किसी ऐतिहासिक ने चक्रपाणिका समय ईसा की दसवीं शताब्दि माना है।

बहुत से और भी प्राणाचार्यों का वर्णन करना शेष रह जाता है। 'शारंगधरसंहिता के कर्ता शारंगधर, रसगंगाधर के कर्ता गंगाधर, 'भावप्रकाश' के कर्ता भावमिश्र, 'अनंगरंग' के कर्ता कल्याणमल्ल, 'चक्रदत्त की तात्पर्य चन्द्रिका, नामक टीका के लेखक शिवदास सेन, 'रसेन्द्रसार-संग्रह' के कर्ता गोपालकृष्ण भट्ट, 'कन्दर्प चूड़ामणि के कर्ता वीरभद्र आदि अनेकों प्राणाचार्य हैं, जो इतिहास के अभाव से आज विस्मृति के आवरण में ढके पड़े हैं, परन्तु फिर भी हम इस ओर उदासीन बैठे हैं आयुर्वेद के प्राचीनतम काल में दो प्राणाचार्यों का उल्लेख करना और शेष है, प्रथम रावण और द्वितीय सुषेण। रावण ने नाड़ी-विज्ञान के सम्बन्ध में नाड़ी-परीक्षा जैसा अपने ढंग का अद्वितीय ग्रन्थ लिखा है, परन्तु रावण के सम्बन्ध में अनेक ऐतिहासिक आपत्तियां हैं। अनेकों महानुभावों का कथन है कि 'नाड़ी-परीक्षा' के कर्ता राम के प्रतिद्वन्द्वी रावण को ही मानना चाहिये, परन्तु दूसरों के मत से उस रावण के अतिरिक्त कोई और ही रावण 'नाड़ी-परीक्षा' का कर्ता है। सुषेण वैद्य ने 'आयुर्वेद-सुषेण संहिता' नामक बड़ा महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखा है। परन्तु दोनों का समय निर्णय कर सकना हमारे वृद्ध इतिहास के जीर्ण-शीर्ण कलेवर की बिसात के बाहर है। हां, बहुत ही नवीन ग्रंथों में श्रीकृष्णरामकृत सिद्ध 'भेषजमणिमाला' को नहीं भुलाया जा सकता। वे जयपुर-महाराज के यहां राजवैद्य थे। उनकी लेखन-शैली सरस, सरल और रोचक है।

अपने प्राणाचार्यों द्वारा भारत के किये गए उपकारों से विश्व कभी उऋण नहीं हो सकता। अनेक विद्वानों का मत है कि भारतीय आयुर्वेद पर ग्रीक लोगों ने पर्याप्त प्रभाव डाला, परन्तु सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक आर० सी० दत्त (R. C. Dutta) के अनुसार ग्रीक लोग खुद इस बात का दावा नहीं करते। मैकडोनल ने भी साफ लिखा है कि हम इस विषय में कोई निश्चित सम्मति नहीं दे सकते—

The question as to whether Indian Medical Science in its earlier period was affected by that of the Greeks cannot yet be answered with certainty.

(History of Sanskit Lit., page 426)

हां, भारतीय आयुर्वेद का विश्व-व्यापी उपकार तो आज भी अपने-आपको पुष्ट करने के लिये अनेकों प्रभाव रखता है। ईसा की आठवीं सदी में भारत ने अरब को आयुर्वेद की शिक्षा दी थी। उस युग में अरबी भाषा में चरक और सुश्रुत का अनुवाद किया गया। इसी प्रकार अनेक पुस्तकें बगदाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खलीफा लोगों ने अनुवाद कराई थीं। इन सब अध्ययनों में अरबों के लिए 'रसायनी विद्या एक अपूर्व चीज थी, जो उन्हें भारत से ही मिली। मैकडोनल ने लिखा है—

"On the other hand, the effect of Hindu Medical Science upon the Arabs after about 700 A. D. was considerable, for the Khalipha of Bagdad caused several books on the subject to be translated. The work of Charak and Shushrut were rendered into Arabic at the close of the eighth century and are quoted as authorities by the celebrated Arabic Physician Al Razi, who died in 932 A. D. Arabic medicine in its turn became the chief authority, down to the seventeenth century of European Physicians.

(History of Sanskrit Lit., page 427)

आयुर्वैदिक ज्ञान भारत से अरब को मिला और अरबों से यूरोपियनों को। यहां तक कि ईसा की सत्रहवीं शताब्दि तक यूरोप के पास केवल अरब से उधार लिये हुए भारतीय चिकित्सा-ज्ञान के सिवा और कुछ न था यूरोप में अठारहवीं शताब्दि से विज्ञान के विकास के साथ २ चिकित्सा-विधि का भी विकास होना प्रारंभ हुआ, और भारत में पराधीनता की विषम व्याधि ने आयुर्वेद को दिन प्रतिदिन क्षीण करना प्रारम्भ कर दिया। परिणाम यह हुआ कि भारत का सारा गौरव एक साथ अस्त-सा हो गया। दूसरे देश गौरव के गिरि पर बहुत ऊंचे चढ़ गये और हम देखते ही रहे।

सिकन्दर ने भारतीय वैद्यों को ले जाकर ही यूनान में स्वतंत्र चिकित्सा का शासन जमा दिया। दूसरी ओर हिपोक्रेटस् (Hippocrates) ने हमारे आयुर्वेद के सहारे ही एलोपैथी का झंडा खड़ा कर दिया। बहुत दिन नहीं हुए, बगदाद ने भारत से ही चिकित्सा का पाण्डित्य प्राप्त किया। कल की ही बात है, जर्मन में डा० हेनिमेन ने आपके सहयोग से ही होमियोपैथी का बोलबाला कर दिया। पर अफसोस! हमारा बना बनाया आयुर्वेद का मीनार भूमिसात् हो चला क्या सचमुच हम में इतना भी पौरुष नहीं रहा। आयुर्वेद ने अनेकों रसायन खिलाकर हमारा कितनी ही बार कायाकल्प किया है, पर आज समय आने पर एक बार भी हमसे उसका कायाकल्प न हो सका। फिर क्या अब हमारा कुछ कर्तव्य नहीं रहा। क्या हमें अपने प्राणाचार्यों से उऋण नहीं होना है। क्या आज भी हमें अपने आयुर्वेद को नहीं उठाना चाहिये। यदि हां, तो—

"आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः।"

(विशाल-भारत)

धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ की निर्मित
खाज रिपु
खाज-खुजली को लगाते लगाते ठीक कर देता है।
आपके यहाँ के दूकानदारों के यहाँ मिल जायगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस गुण वीर्य विपाक और प्रभाव

ले. श्री. पं. कृष्ण प्रसाद त्रिवेदी B.A. आयुर्वेदाचार्य

(गतांक से आगे)

विपाक—

इसके विषय में इतना ही विशेष सूचित करना है कि जब रस और विपाक में विरोध होता है तब विपाक अपना कार्य करता है और जब रस वीर्य तथा विपाक इन तीनों में विरोध हो तो वीर्य कार्यकारी होता है, अर्थात् वीर्य के सामने रस और विपाक की नहीं चलती। किंतु प्रभाव तो इन तीनों से बलवान है। उदाहरणार्थ—लवण रस का विपाक यद्यपि मधुर होता है, तथापि वह उष्ण वीर्य होने के कारण उससे रक्त पित्त आदि हो सकते हैं। लवण रस के सेवन से मल मूत्रादिकों का सरण होता है, इससे जाना जाता है कि उसका विपाक मधुर होता है। तैसे ही तिक्त और कसैले (कषाय रसों का विपाक यद्यपि कटु होता है, तथापि वे पित्त को नहीं उभार सकते, कारण उनमें शीत-वीर्य की प्रबलता है। इन रसों (तिक्त कषाय) के सेवन से बद्ध मल मूत्रता अथवा मल मूत्र के बिसर्जन में कष्ट होता है, इससे मालूम होता है कि इनका विपाक कटु ही होता है।

रस और विपाक यदि समान गुण वाले हों तो कार्य अधिक तीव्र गति से होगा। यदि उनके गुणों में विरोध होगा तो कार्य विलम्ब से तथा वह भी दुर्बल होगा। सुश्रुत जी ने मधुर और कटु ऐसे केवल दो प्रकार के ही विपाक माने हैं। मधुर विपाक गुरु तथा कटु विपाक लघु गुण विशिष्ट होता है। पंचमहाभूतात्मक पदार्थों के गुणानुसार गुरु और लघु ऐसे दो ही भेद किये जा सकते हैं। पृथ्वी और जल ये दोनों भूत गुरु तथा शेष तीनों भूत लघु गुणात्मक हैं। इसीसे मधुर और कटु ऐसे दो ही विपाक माने गये हैं। जिन द्रव्यों में पृथ्वी और आप तत्वों के गुणों की अधिकता होगी उनका विपाक मधुर होगा तथा जिनमें तेज, वायु और आकाश तत्वों की प्रधानता होती है, उनका विपाक कटु होता है। इस प्रकार सुश्रुत जी ने जिन तत्वों के अनुरोध से विपाक के ये दो भेद किये हैं, उन उन तत्वानुसार विचार करने पर उक्त विपाकों की संज्ञा मधुर और कटु न करते हुए उन्हें क्रमशः गुरु और लघु नामों से पुकारा जाय तो और भी उत्तम होगा। कारण सुश्रुत जी ने विपाक गुरु गुण विशिष्ट होता है या लघु गुण विशिष्ट, इन्हीं दो बातों का निर्णय किया है। वाग्भट आदि अन्य ग्रन्थकारों ने चरकाचार्य जी के ही मत का अनुवाद किया है। तथा यह मत विशेष सम्मत भी है, क्योंकि यदि अम्ल विपाक न माना जाय तो अग्नि तत्व अर्थात् पित्त की वृद्धि कैसी होती है, यह पूर्णतया नहीं कहा सकता तथा कुलथी आदि अम्ल विपाकी पदार्थों के सेवन करने पर खट्टी २ डकारें आती हैं, इसमे भी अम्ल विपाक मानना आवश्यक है।

मधुर विपाक आप तत्व अर्थात् कफ और शुक्र को बढ़ाने वाला तथा मल मूत्रादि का सुख पूर्वक विसर्जन करने वाला एवं गुरु है। कटु विपाक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...त तत्व को बढ़ाने, शुक्र नाशक, मल बद्धताकारक ...लघु है और अम्ल विपाक अग्नि तत्व अर्थात् ...वृद्धि कारक, शुक्र नाशक, मल मूत्र सारक ...लघु है। रस और विपाक के विचार द्वारा यह ...का वीर्य निश्चित किया जा सकता है। जिस ...का रस और विपाक मधुर है उसे शीत वीर्य, ...का रस और विपाक कटु है उसे उष्ण वीर्य, ...जिसका रस और विपाक अम्ल है उसे भी ...वीर्य जानना चाहिये।

...भाव —

इसके विषय में तो हम पूर्णतया विवेचन कर ...हैं कि यह एक द्रव्यगत अचिंत्यशक्ति है। किस ...में क्या प्रभाव है, इसे तो अनुभव द्वारा ही ...ना चाहिये। किसी २ का मत है कि "द्रव्य में ...व ही मुख्य है। केवल प्रभाव को जान लेने से ...सब काम चल जाता है, रस वीर्य विपाकादि ...ना व्यर्थ है" यदि प्रभाव को जान लेने से ही ...कार्य हो जाता हो, तब तो बड़ी उत्तम बात है, ...ऐसा होता नहीं है। यदि रस, वीर्य, विपाक ...व्यर्थ मानकर छोड़ दिया जाय, उनकी ओर ...न ही न दिया जाय, तब तो द्रव्यों द्वारा जो ...कार्य होते हैं वे सब उनका प्रभाव ही माना ...गा, तथा प्रत्येक द्रव्य के प्रभाव को ध्यान में ...ना महत् प्रयास का कार्य होगा। अतः प्रभाव के ...ही साथ रस वीर्य विपाक की भी सार्थकता ...। क्योंकि सब ही द्रव्यों का कार्य केवल प्रभाव ...ही नहीं होता। कुछ द्रव्य अपने रस द्वारा, कुछ ...द्वारा, कुछ विपाक द्वारा, कुछ अपने अन्य ...द्वारा, तथा कुछ द्रव्य अपने प्रभाव द्वारा ...र में अच्छा या बुरा कार्य करते हैं। अतः द्रव्य ...रस, वीर्य, विपाक और प्रभाव को समझ बूझ ...उपयोग में लाने से अनिष्ट कार्य की संभावना ...रहती। अस्तु।

रसों का प्रभाव शरीर पर कैसा होता है, इसे सहज ही में समझने के लिए हम आगामी पृष्ठ पर एक नकशा देते हैं। प्रभाव अचिंत्य एवं केवल द्रव्याश्रित होने के कारण उसका उल्लेख नकशे में नहीं किया गया है। साथ ही वीर्य और विपाक का भी ज्ञान सहज में हो जावेगा।

किस रस का पदार्थ पचने में भारी है तथा कौन हलका है, इस बात को जान कर, ऋतु अनुसार यथोचित रसयुक्त पदार्थों का सेवन करते रहने से ही शरीर प्रकृति स्वस्थ रहती है। शीत-काल में जठराग्नि प्रदीप्त रहती है। अतः शीतऋतु में स्निग्ध गुण विशिष्ट पदार्थ विशेष सेवन करना चाहिये। अन्यथा प्रदीप्त-जठराग्नि रस रक्तादि धातुओं को पचाना प्रारम्भ कर देता है, जिससे शरीर का ह्रास होता है। वर्षा-काल में उदराग्नि मंद होने से हलका (लघु) आहार हितकारक होता है। जब जठराग्नि समस्थिति में हों, तब गुरु और लघु गुणयुक्त पदार्थों का योग्य परिमाण में सेवन हितावह होता है। रोग ग्रस्त व्यक्ति के शरीर में बढ़े हुये दोषों को घटाने वाले तथा घटे हुये गुणों को बढ़ाने वाले रस-युक्त-पदार्थों का सेवन कराना आवश्यक है। किंतु सेवन कराने के पूर्व रोगी की अग्नि की परीक्षा कर लेनी चाहिये। अन्यथा पाचन-क्रिया ठीक २ न होते हुये आमदोष बढ़ाकर रोग और भी बढ़ जाने का भय है। अस्तु,

इस परिशिष्टात्मक लेख को हमने स्वर्गीय वैद्य पंचानन कृष्णशास्त्री कवड़े बी. ए. के एक निबन्ध के आधार पर लिखा है। उसके लिये हम उनके आभारी हैं।

— समाप्त —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस	भूत बाहुल्य	रसाश्रित गुण	रस कार्य	विपाक	विपाक कार्य	वीर्य	वीर्य कार्य	परिणाम
मधुर	पृथ्वी और जल	स्निग्ध और गुरु	कफ कर वातघ्न पित्तघ्न	मधुर	कफ कर, वातघ्न, और पित्तघ्न	शीत	बल बर्धन, संशमन कफकर, वातकर और पित्तघ्न	शुक्र वर्धक
अम्ल	पृथ्वी और अग्नि	स्निग्ध और लघु	कफकर, पित्तकर वातघ्न	अम्ल	कफकर, पित्तकर और वातघ्न	उष्ण	दीपन, पाचन पित्तकर, कफघ्न और वातघ्न	शुक्र नाशक रक्त विकृति कारक
लवण	जल और अग्नि	स्निग्ध और गुरु	कफकर, पित्तकर और वातघ्न	मधुर	कफकर वातघ्न और पित्तघ्न	शीत	दीपन, पाचन, कफघ्न, वातघ्न और पित्तकर	रसकार्य और विपाक कार्य में विरोध है, किंतु वीर्य बलवान होने से यह पित्तजनक होता है।
तिक्त	आकाश और वायु	रुक्ष, लघु	वातकर, कफघ्न और पित्तघ्न	कटु	वातकर कफघ्न और पित्ताकर	उष्ण	बलबर्धन, संशमन कफकर, वातकर, और पित्तघ्न	रस पित्तघ्न, उसका विपाक पित्तकर, किन्तु वीर्य शीत होने से पित्त का उपशम ही होता है।
कटु	अग्नि, वायु	रुक्ष, लघु	वातकर, पित्तकर और कफघ्न	कटु	वातकर पित्तकर और कफघ्न	उष्ण	दीपन, पाचन पित्ताकर, कफघ्न और वातघ्न	शुक्र नाशक रक्त विघातक।
कषाय	पृथ्वी, वायु	रुक्ष, गुरु	वातकर, कफघ्न पित्तघ्न	कटु	वातकर, कफघ्न पित्तकर	शीत	बलबर्धन, संशमन कफकर वातकर, पित्तघ्न	रस और विपाक कार्य में विरोध है, किंतु वीर्य शीत होने से पित्त का उपशम ही होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमाशयिक कर्कस्फोट [केन्सर ऑफ दी लीवर]

लेखक श्री० पं० सभाकान्त जी 'झा' आयुर्वेद-शास्त्री ।

यह त्रिदोषज अर्बुद केकड़े के पंजे सदृश प्रतीत होता है, अतएव आयुर्वेद में इसे 'कर्कस्फोट' संज्ञा है। इसे डाक्टरी में 'कार्सिनोमा' और 'केन्सर' कहते हैं। इसमें प्रधान अर्बुद के भीतर अन्य गौण अर्बुद उत्पन्न हो जाते हैं फिर जैसे केकड़े की पीठ पर नसें फूली हुई मालूम होती हैं उसी तरह इस अर्बुद की पीठ पर नसें फूली हुई प्रतीत होता हैं। यह आमाशयिक कर्क-स्फोट कौड़ी प्रदेश में प्रतीत होता है। इस रोग के साथ आमाशय में तीक्ष्णशूल वमन और शीर्णता आदि लक्षण उपस्थित होते हैं।

यह अर्बुद आमाशय में अन्य स्थानों की अपेक्षा मुद्रिका द्वार के पास विशेष होता है। एवं कर्कस्फोटों के अनेक प्रकारों में से सौत्रिक तन्तुओं से उत्पन्न कठिन कर्कस्फोट विशेषतया दृष्टिगोचर होता है। यदि यह आमाशय के हार्दिक द्वार के समीप उत्पन्न होता है, तो विशेषतः श्लेष्मिक कला के कोषाणुओं से उत्पन्न मृदु कर्कस्फोट होता है। यह व्याधि पुरुषों को ४० वर्ष की आयु के पश्चात् होती है। स्त्रियों को यह रोग पुरुषों की अपेक्षा कम होता है। कभी यह रोग युवावस्था में भी हो जाता है।

कर्कस्फोट—

यह एक प्रकार का घातक अर्बुद है। इसके मुख्य दो विभाग हैं। वाह्य पटलीय और अन्तः-पटलीय। इन दोनों में से अनेक प्रकार के कर्कस्फोट उत्पन्न हो जाते हैं। इस कर्कस्फोट के अणु-कीटाणुओं की संख्या अप्राकृतिक रूप से बढ़ती है, ये कीटाणु रक्ताणु और लसीकाणुओं के साथ सर्वाङ्ग में भ्रमण करते हैं और जहां जाते हैं वहीं रोग उत्पन्न कर देते हैं।

इस कर्कस्फोट में आवरण-कला के कोषाणु विकृति स्वरूप धारण कर लेते हैं इसके साथ ही संयोजक वृत्ति होने लगती है। कर्कस्फोट में छोटे २ छिद्र होते हैं। उसमें आवरण-कला के कोषाणु रहते हैं। इन छिद्रों का लसीका वाहिनियों के साथ संगम होता है। फिर इसी मार्ग से कर्कस्फोट के कीटाणु शरीर के अन्य भागों में जाते रहते हैं। यदि यह व्याधि स्तन या वृषण (अण्डकोष) में उत्पन्न हुई हो, तो बहुत शीघ्र ही शरीर के अन्य भागों को भी दूषित कर देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्कस्फोट के कीटाणु जिस स्थान में उत्पन्न हुए हों, उस स्थान के कोषाणुओं की अनेक अंशों में समानता होती है। यह समानता जितनी कम होगी कर्कस्फोट उतना ही घातक समझना चाहिये। कर्कस्फोट के कीटाणु संक्रामक नहीं हैं ये जहां और जिसके शरीर में उत्पन्न होते हैं, वही अपना प्रभाव दिखाते हैं, दूसरों पर आक्रमण नहीं करते हैं।

इसके अनेक भेद हैं जिनमें चार प्रकार के उदर में होते हैं। यथा—१-स्रोत्रात्मक कर्कस्फोट (स्काईरस और हार्डकैन्सर), २-मृदु कर्कस्फोट (एन्सेफेलाइड, मेड्युलरी और सोफ्ट कैन्सर), ३-पिच्छिल कर्कस्फोट (कोलाईड कैन्सर), आवरण कलाविनाशक कर्कस्फोट (एपिथिलिओमा), इनके लक्षण निम्न हैं।

१-सौत्रात्मक कर्कस्फोट—

यह कर्कस्फोट कठिन होता है। इसके चारों ओर कोमल सौत्रिक तन्तु निर्माण हो जाते हैं। क्षतग्रस्त होने पर सामान्यतः गम्भीर और असम बनता है फिर क्षत की धारा नष्ट हो जाती और वह ऊंची कठिन तथा स्थूल होती है।

२-मृदु कर्कस्फोट—

यह कर्कस्फोट कोमल होता है। इसकी बनावट विषमाकार होती है। इस विकार में रक्त-संचालन अधिक परिमाण में होता है। यह बहुत शीघ्र बढ़कर आस-पास में फैल जाता है और इसमें से रक्त-स्राव बहुत होता है अतएव, इसे कोई-कोई आशुकारी भी कहते हैं।

३-पिच्छिल कर्कस्फोट—

यह न ज्यादा कोमल और न ज्यादा कठिन ही होता है। इस कर्कस्फोट के भीतर सफेद गोंद सदृश प्रवाही चिकना पदार्थ रहता है।

४-आवरण विनाशक कर्कस्फोट—

आवरणकला की विकृति से इसकी उत्पत्ति होती है और यह विशेषकर त्वचा, मुख, जिह्वा, कण्ठ, अन्ननलिका और गुदा इन स्थानों में होता है। इसके अतिरिक्त स्वरयन्त्र, योनिमुख, योनिमार्ग, गर्भाशय-ग्रीवा, मूत्राशय, मूत्रप्रसेक नलिका और गुदा में होता है। कभी २ इसकी उत्पत्ति नाड़ीव्रण और व्रण रोपण करने वाले त्वचा में भी हो जाती है। यह नीचे की ओर अधिक फैलता है। इसके कीटाणु लसीका ग्रन्थि में नहीं मिलते हैं।

कर्कस्फोटों की सम्प्राप्ति पुरुषों को बहुधा ४० वर्ष की आयु और स्त्रियों को ३०-३५ वर्ष की आयु में होती है। यह व्याधि पुरुषों में से ८० प्रतिशत को अन्त्र में और स्त्रियों को जननेन्द्रिय और स्तन पर होती है।

इस रोग के लक्षण स्थानभेद से पृथक् २ होते हैं। सर्व प्रथम स्थानिक लक्षण पहले प्रकाशित होते हैं। फिर सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होकर प्रकट होते हैं और स्थानिक लक्षण नष्ट हो जाते हैं, तथा इस रोग से आक्रान्त शरीरावयव अपने कार्य करने में असमर्थ होजाते हैं।

कष्टसाध्यावस्था के लक्षण—

तीक्ष्ण वेदना, शरीर के ऊपरी भागों में दाह, विशेषतया पृष्ठप्रदेश या पृष्ठ में अधिक पीड़ा होना, जिस भागमें यह रोग हो उस भाग की बांह में पीड़ा, शोथ तथा वह बांह अचल सी हो जाय, जी मिचलाना, पाचन क्रिया में गड़बड़ी, सूखी खांसी, दोनों पार्श्वों में दर्द, नाड़ी की गति मन्द तथा सूक्ष्म होना, देह विवर्ण हो जाना, आवाज़ के साथ श्वास निकले आदि २ लक्षण होने पर रोगी प्रायः मर जाता है।

निदान -

आमाशयिक कर्कस्फोट के निश्चित कारण का अभी तक पता नहीं लगा है। परन्तु अधिकतर यह वंश परंपरागत मालूम होता है और जिनको आमाशयिक व्रण, अम्लपित्त, उपदंशज रक्त विकृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि व्याधियां होने पर भी आहार-विहार में स्वतन्त्रतापूर्वक अति शराब सेवन से आमाशय में उत्तेजना होती रहती है उन व्यक्तियों को इस घातक व्याधियों की सम्प्राप्ति होती है। अति मानसिक चिन्ता, दरिद्रता, दूषित आहार का सेवन आदि इसके सहायक कारण हैं।

इस रोग के लक्षण—

धीरे २ अनुभव में आता है। रोग की जड़ मजबूत होने पर आहारका अति देर से पाचन होना, आमाशय में शूल, बार २ वमन, कर्क-स्फोट की सिरा टूटने पर मलिन वमन होना, उदर में वायु का संचय होना, भूख नहीं लगना, मल में काला रक्त आना, कौड़ी प्रदेश पर स्पर्श करने से कठोर प्रतीत होना, शरीर पाण्डुवर्ण का होजाना, निस्तेजता आदि २ लक्षण उपस्थित होते हैं।

पेट को दबा कर देखने से नाभी के पास छोटी-छोटी गांठें मालूम होना, इन गांठों को दबाने से बहुत दर्द होता है। ये गांठ मेदस्वी मनुष्यों में नहीं होती हैं, ऐसे समय पर जीर्ण आमाशयिक प्रदाह होने का भ्रम हो जाता है। युवा रोगी में यह अधिक प्रतीत होता है। चिकित्साक्रम भी दाह-शमन-कारक भूल में करते हैं, जब अधिक दिन तक चिकित्सा करने से कुछ भी लाभ नहीं होता, तब कहीं स्फोट का ज्ञान होता है।

अनेक बार आमाशयिक व्रण के साथ इस रोगका भ्रम होजाता है। व्रण होने पर भोजन करने के बाद दाह होकर वमन होजाती है। किन्तु कर्कस्फोट रोग में भोजन के बहुत देर बाद वमन होती है और वमन होने पर वेदना कम हो जाती है। फिर अपचित अन्न के कारण पुनः दर्द होने लगता है। इस कर्कस्फोट के फूटने पर थोड़ा रक्त-स्राव भी होता है।

कठिन कर्कस्फोट होने पर आमाशय के अधोमुख का संकोच होता है जिससे आमाशय का विस्तार होजाता है। यदि यह रोग अन्न-नलिका में होता है, तो आहार आमाशयमें जाने में बाधा पहुंचती है और रही हुई अन्न-नलिका फूल जाती है। इसमें व्रण होने पर कर्कस्फोट बढ़ता जाता है और उसके नीचे रही हुई रक्त-वाहिनियां टूटती जाती हैं, जिससे रक्त-स्राव होता रहता है।

कठिन कर्कस्फोट होने पर क्षत और रक्त-स्राव होकर निःसंदेह पीड़ा घातक होती है। यदि इस रोग का दबाव पित्त नलिका पर आजाय तो कामला की उत्पत्ति होजाती है, प्रति-हारिणी शिरा दबने पर अर्श रोग होजाता है।

साध्यासाध्य—

यह रोग प्रारम्भिक अवस्था में शस्त्र-चिकित्सा साध्य होता है। अन्यथा २ वर्ष के अन्दर यह रोगी अपनी जीवन-लीला समाप्त कर देता है।

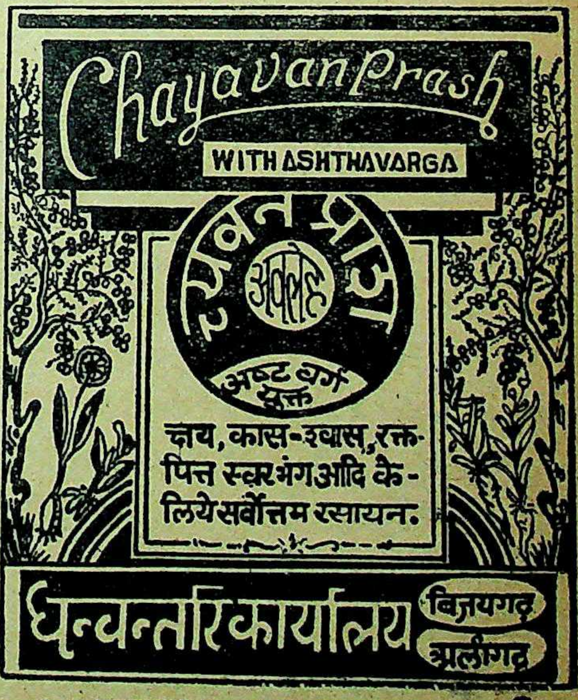

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णश्राव की अनुभूत चिकित्सा।

लेखक—श्री० कविराज ओ३म् प्रकाश जी वैद्यवाचस्पति, देहली।

[परामर्श नं० ३३ का उत्तर]

कान से मवाद चाहे कितने ही समय से आरहा हो, निम्न-लिखित चिकित्सा-क्रम से अवश्यमेव लाभ हो जाता है :—

निर्गुण्डी पत्र स्वरस	३ सेर
तिल तैल	१ पाव

—तैल पाक-विधि से पाक कर के, प्रातः सायं कान में डालें। "निर्गुण्डी तैल" डालने से पूर्व शुद्ध रूई द्वारा कान को साफ भी करलें।

बैरोजा का तैल ५ से १० बूंद तक कैपशूल में बन्द करके प्रातः सायं उष्ण जल से लें।

नोट बैरोजा का तैल प्रत्येक अंग्रेजी दवा विक्रता से Oil copeba के नाम से मिल सकता है। यदि प्राप्त न हो सके तो 'गन्दाबैरोजा' का तैल निम्न लिखित विधि से निकाला जा सकता है: —

तिर्यक पातन यन्त्र विधिनाः —

'गन्धा बैरोजा के अन्दर समभाग उत्तम रेत (बालू) मिला दें, तथा जिस प्रकार आटे को गूंधा जाता है उसी प्रकार गूंध कर एक जान कर दें। अब इस गंदे-बैरोजे और बालू के मिश्रण को एक हंडिया में डाल दें। इस हंडिया के मुख पर एक और हंडिया औंधी रख कर संधि बन्द कर देनी चाहिए। ऊपर वाली हंडिया में एक ओर को एक छिद्र करके एक शीशे की नली अथवा पतले बांस की पोली लगा दें ऐसे शीशे की नली भी (Chemist के यहां से मिल जावेगी जो उष्ण होने पर नहीं टूटेगी। अब इस शीशे की नाली के दूसरे मुख के नीचे एक स्वच्छ बोतल रख दें।

इस सम्यक्ता प्रस्तुत तिर्यक् पातन यन्त्र के नीचे मन्द २ आंच देना आरम्भ करें, थोड़े ही समय के पश्चात् गंधाविरोजे का तैल धूम्ररूप होकर ऊपर उड़ेगा और नाली में प्रवेश करता हुआ तरलावस्था ग्रहण करेगा, तथा बिन्दुशः शीशी में गिरना आरम्भ हो जावेगा। १ पाव गंधबिरोजे से लगभग ३ तोले अथवा ४ तोले तैल निकलता है। इसका वर्ण शुद्ध स्वर्ण के समान चमकता हुआ होता है।

शरीर में किसी भी स्थान से मवाद जा रहा हो तो इसके प्रयोग से लाभ होता है।

अभावे—

यदि किसी भी प्रकार न तो "गन्धबिरोजे" का तैल मिल सके और न बनाया ही जा सके तो: -

उत्तम नाग भस्म	१/५ रत्ती

—प्रातः-सायं, माखन या मलाई से लें।

यदि उपरिलिखित (भक्षणार्थ) दोनों औषधियों में से किसी भी एक औषधि का निरन्तर एक माह प्रयोग किया जावे और साथ ही "निर्गुण्डी तैल" कान में डाला जावे तो अवश्यमेव लाभ होगा।

× × ×

परामर्श नं० ३८ का उत्तर—

इस रक्त विकार वाले रोगी को -

खदिरारिष्ट	१/२ औंस
सारिवाद्यासव	१/२ औंस
जल	१ औंस

—भोजनोत्तर दोनों समय।

३ मास तक निरन्तर पिलावें, पूर्ण लाभ हो जावेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वास (दमा)

लेखक–श्री. डा० लल्लूभाई जी पटेल, गोल्ड मैडलीस्ट,
बोडेली, (बरोदा)

...नाम-दमा, वैद्यक नाम–श्वास, डाक्टरी नाम ...मा (Asthma)

...लक्षण —

...दय में पोड़ा, मल मूत्रावरोध, थोड़ी खांसी, ...बद्धता, अफारा, शूल तथा श्वास खिंचने की ...होती है और श्वास लेने में कष्ट होता है, ...यों में पीड़ा होती है। यह पूर्व लक्षण श्वास ...के हैं।

...ण--

...स, मार्ग-गमन, तेजाब के धूयें का प्रवेश, मुख ...का प्रवेश, वातल, भारी, सूखा, उष्ण तथा ...भोजन का भक्षण करना, तथा अन्य विषैले ...का प्रवेश, और मल-मूत्र का वेग रोकने से ...रोग उत्पन्न होता है। खांसी, प्रतिश्याय, ...लियां आदि के बिगड़ने से फैफड़ों में कफ ...होकर श्वास-रोग की उत्पत्ति होती है। यह ...पांच प्रकार का होता है। (१) महा श्वास (१) ...श्वास (३) छिन्नश्वास (२) क्षुद्रश्वास। इन पांच ...के श्वासों की अनुभूत चिकित्सा जनता की ...में अर्पण करता हूँ। आवश्यकता के समय ...न्वित होकर हमें आशीर्वाद दें।

...लक्षण —

...र्व शरीर में भ्रमण कारी कफ बढ़ कर समस्त ...को रोकता है, और छाती घुट जाती है, और ...का बहाव बन्द होकर श्वास-वेग से चलने ...ती है। श्वेत वर्ण का पतला मूत्र बार-बार आने लगता है। श्वास लेते समय रोगी को बहुत कष्ट सहन करना पड़ता है और रोगी बैठा अथवा किसी वस्तु के सहारे खड़ा रहता है।

असाध्य श्वास के लक्षण--

यदि रोगी के नख हरे पीले हो जावें और शब्द बारीक हो जाये तो ऐसे रोगी को यश की इच्छा रखने वाला वैद्य छोड़ दे क्योंकि ऐसा रोगी असाध्य अपितु कुछ दिनों का महिमान समझना चाहिए।

रोग विवरण--

यह एक ऐसा दुष्ट रोग है, जिसके पीछे पड़ता है उसका पीछा कठिनता से ही छोड़ता है, इसलिये किंम्वदन्ती है कि 'दमा दम के साथ जाता है, परन्तु वास्तवमें यह बात नहीं है। ईश्वरने प्रत्येक रोग की औषधि निर्माण की है। इस रोग में फैफड़े की सूक्ष्म वायुमय नलियों में खिंचाव होकर श्वास कठिनता से आता है।

नोट – प्रथम रोगी को वमन करालें फिर चिकित्सा आरम्भ करें।

वमन योग —

एक जवान मुर्ग लेकर उसका पेट चीर कर अन्दर से आंतडियां निकाल दें किंतु पित्ता आदि व यकृत न निकालें तथा ऊपर से बाल भी साफ़ कर दें, फिर अत्यन्त कड़वे किस्म का तम्बाकू लेकर खूब बारीक पीस कर(पहिले पीस तैयार रखें) मुर्ग के पेट में भरकर सीं दें और फिर घी के चिकने मृत्तिका पात्र में डाल कर पाताल यंत्र से तैल निकालें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमानतः आठ से दस तोला तक तैल निकलेगा। उसमें २॥ तोला मैनफल खूब बारीक पीसकर मिलायें और संभाल कर शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय शीशी हिलाकर उसमें से एक-एक कर के तीन अंगुली चटायें। ईश्वर की कृपा से थोड़ी देर में खुल कर वमन होगी और सीने में से हर प्रकार का कफ, बलग़म निकल कर हल्का हो जायगा।

नोट—वमन कराने से पूर्व हलवा खिलाकर वमन कराना उचित है।

दमे की उत्तम चिकित्सा--

(जीवन श्वास रसायन)

लोह भस्म	१२ तोले
मौक्तिक भस्म	१॥ तोले
शुद्ध आमलसार गंधक	६ तोले
अभ्रक भस्म १००० पुटी	६ तोले
स्वर्ण भस्म	३ तोले
रस सिंदूर	३ तोले
स्वर्णमाक्षिक भस्म	३ तोले

—सब भस्में उचित विधि से बनाई हुई और विश्वस्त लेनी चाहिये। इन सबको मिला कर छोटी कटेली का रस, बकरी का दूध, मुलहठी का रस, नागरबेल के पान का रस, इन चारों को क्रमशः दस-दस भावना देकर दो-दो रत्ती की गोलियां बनावें। इनमें से एक-एक गोली शहद और चौंसठपहरा पिप्पली के ... सेवन कराने से सब प्रकार के श्वास और ... निवृत होते हैं।

नये और पुराने श्वास रोग, जिसमें पूय हो... से कफ पीला दुर्गन्ध युक्त होगया हो, ऐसी ... हृदय की दुर्बलता, पाण्डु, दमा, दाह, रक्त की ... नता, फुफ्फुस कोषों की शिथिलता, अग्निमान्द्य ... राजयक्ष्मा आदि सब छोटी-बड़ी बीमारियों ... यह रसायन अपना प्रभाव सत्वर दर्शाती है। ... दिनों तक शान्ति से सेवन करने पर दमा, श्वास रो... को जड़मूल से नष्ट कर देता है।

सूचना—

कण्ठप्रदाह और श्वास नलिका की शिथिलता ... दूर करना हो तब बहेड़े का चूर्ण अनुपान रू... मिला लेने से सत्वर लाभ पहुंचाता है। कफ... अधिक हो तब अडूसा, श्वास वाहिनियों का द... शमन करें मधुर रस उत्पन्न कराना हो तब मुलह... तथा दूषित कफ के शोधनार्थ सोहागे का फूला ... शृंग भस्म मिला लेवें। यदि मूत्र द्वारा विष ... बाहर निकालने की आवश्यकता हो तो इस रसा... यन सेवन के १ घण्टे पहले शिलाजीत तीन से चा... रत्ती पंद्रह से २० तोले तक बकरी के धारोष्ण दू... के साथ सेवन कराते रहना चाहिये।

खांसी—

के लिये हमारी "कासारी" सर्वोत्तम औषधि प्रमाणित होचुकी है। यदि अन्य औषधियों के साथ अनुपान रूप में यह शर्बत दिया जाय तो 'खांसी' शीघ्र नष्ट होती है।

यह शर्बत रूप में है। ४ औंस की एक शीशी में २० पूर्ण मात्रा हैं। मूल्य १ शीशी १) छोटी शीशी ।=) है। अधिक शीशियां रेल से मंगानी चाहिये।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विशूचिका' निदान और 'विशूचिका' पर एक अत्युत्तम योग।

लेखक—श्री० पं० सरयूप्रसाद जी भट्ट,
भुआ-बिछिया (मंडला) सी. पी.

रोग परिचय—

विशूचिका का, आर्ष-ग्रन्थों में विशेष विवरण अजीर्ण रोग के अन्तर्गत दिया है और यह व्याधि वस्तुतः अजीर्ण जन्य ही है। परन्तु नवीन मत वाले इसे जन्तु जन्य ही मानते हैं।

यह व्याधि संक्रामक है; क्योंकि इसका विष-प्रकोप वायु द्वारा ही सर्वत्र फैलता है।

हम आयुर्वेदिक निदान ही सत्य मानते हैं; क्योंकि कीटाणुओं का ही सर्वत्र प्राबल्य उचित नहीं हो सकता, यह हो सकता है कि उपरोक्त कारण से इस रोग की उत्पत्ति होकर रोगाक्रान्त क्षेत्र विषाक्त और दूषित हो जाता है; यह शंका हो सकती है कि क्षेत्र एक समय में ही इतने लोगों को अजीर्ण से रोगोत्पत्ति कैसे हो सकती है।

इसका समाधान भी यह है कि इस रोग की उत्पत्ति जो एक समय में ही थोड़ा सा कारण पाकर बढ़ जाती है, वह समय है सर्दोष्ण, विशेषतया आषाढ़ और श्रावण, क्योंकि थोड़ी बरसात हुई और अत्यधिक गर्मी बढ़ जाती है। उस समय पृथ्वी की ऊष्मा और शारीरिक ऊष्मा दोनों मिलकर शरीर के दोषों को दूषित करते हैं; उस समय पाचक संस्थान पर उस ऊष्मा का प्रभाव पड़ता है और भुक्त द्रव्य और उससे दूषित होकर बनने वाला रस विशूचिका के पूर्व कारण तैयार करते हैं। जब एक साथ कुछ लोगों पर व्याधि का असर हुआ तब यह क्षेत्र स्वभावतः विषाक्त और दूषित हो जाता है, इस तरह फिर यह व्याधि संक्रामक रूप धारणकर लेती है। वायु संचय-प्रकोप काल भी यही है। प्रावट् काल में जब अत्यधिक गर्मी पड़ने को होती है तब ही यह व्याधि बढ़ने का समय पाती है। वह काल ऐसा होता है कि स्वाभावतः मनुष्यों की अग्नि मन्द पड़ जाती है, तब अति आहार और गरिष्ठ आहारों का पाचन सम्यक् नहीं हो पाता, तब ही अजीर्ण होकर विषाक्त व्याधि विशूचिका का जन्म होता है।

अन्य ऋतुओं में भी विशूचिका का रोग बढ़ते देखा गया है, पर वह कालानुसार अजीर्ण-जन्य ही होता है।

निदान और रोग नाम का कारण—

भावप्रकाश में इसका निदान और नामकरण। यथा—

सूचीभि रिव गात्राणि तदन्सुन्तिवृतेऽनिलः।
यत्रा जीर्णेन सा बैद्यै र्विसूचीत निगद्यते॥

जिस रोग में अजीर्ण के कारण वायु शरीर में सुई छेदने की सी पीड़ा करती है उस रोग को वैद्य विशूचिका कहते हैं (सूची नाम सुई का है)

पुनश्च—

न तां परिमिताहारा लभन्ते विदितागमाः
मूयस्ता भजितात्मनो लभन्तेऽसन लोलुपाः

=विदिता गमाः ज्ञातायुर्वेदाः

परमित भोजन करने वाले और आयुर्वेद को जानने वाले मनुष्यों को विशूचिका रोग नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता, किन्तु जिन मूर्ख मनुष्यों के मन और इन्द्रियां वश म नहीं हैं और भोजन में अत्यन्त आसक्त हैं, उनको यह विशूचिका उत्पन्न होती है।

लक्षण—

मूर्च्छातिसारो वमथुः पिपासा,
शूलं भ्रमोद्वेष्टन जृम्भदाहाः।
वैवर्ण्यं कम्पो हृदये रुजश्च,
भवन्ति तस्यां शिरसश्च भेदः॥

विशूचिकामें मूर्च्छा, अतिसार, तृषा, शूल हाथ-पावों का जकड़ जाना, जम्भाई, कम्प और शरीर में पीड़ादि लक्षण होते हैं।

उपद्रव

निद्रा नाशोऽरतिः कम्पो मूत्राघातो विसंज्ञता।
अमी उपद्रवा घोराः विशूच्याः पञ्च दारुणाः॥

निद्रा का नाश, मूत्र का अवरोध, मूर्च्छा आदि उपद्रव होते हैं।

उत्तम प्रयोग —

मेरी चिकित्सामें आए हुए रोगी ने जो कि मरणासन्न थे, इस औषधि का प्रयोग कर अपूर्व लाभ उठाया है। इस औषधि को १-१ घन्टे से जब तक रोग काबू में आवे जल या शक्कर के साथ देते हैं और पीने के लिए लोंग या धनियां साधित पानी देते हैं। यह प्रयोग रसतंत्र वा सिद्ध प्रयोग संग्रह वटी प्रकरण का है। विशूचिका में मूत्र का अवरोध हो जाता है जो प्राण घातक ही है परन्तु इन गोलियों से क़ै-दस्त आराम होकर पेशाब भी खुल जाता है; फिर भी यदि पेशाब होने में देरी प्रतीत हो तो निम्नलिखित पेशाब लाने वाले प्रयोग को शीघ्र बनाकर दे दें, तुरन्त पेशाब हो जावेगा क्रमशः वे दोनों प्रयोग ये हैं—

विशूचिका हर वटिका —

भुनी हींग	३ तोले
आम की गुठली की गरी	२ तोले
लाल मिर्च के छिलके	२ तोले
अफीम जायफल जावित्री	
शुद्ध शिंगरफ —चारों १-१ तोला	
पिपरमिंट के फूल	६ माशे

– इन आठ औषधियों को मिलाकर ६ घन्टे नीबू और लहसन के रस में खरल कर आध-आध रत्ती की गोलियां बनालें।

मात्रा-१ से २ गोली जल या शक्करके साथ रोग काबू में आवे तब तक १-१ घन्टे से देना चाहिए।

गुण—चमत्कारिक लाभ मिलता है।

पेशाब लाने वाला योग

उक्त प्रयोग से ही पेशाब भी आ जाता है, यदि फिर भी देरी प्रतीत हो तो यह प्रयोग बनाकर शीघ्र दे दें।

पेशाब खुल जावेगा, यह प्रयोग भाव-प्रकाश मूत्राघाताधिकार का है।

प्रयोग—काली मूसली की जड़ का क्वाथ करके इसमें घी तथा तैल और दही का पानी डालकर यथोचित मात्रा २ तोला से चार तोला तक निर्धारण कर पिलादें।

पथ्य—दोष शमन होकर रोग-निवृत्ति हो जाने पर पथ्य का ख्याल रखें, जल्दबाजी न करें और गरिष्ठान्न सेवन न करने दें। पथ्य में साबूदाना, या पतली खिचड़ी ही दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'लंघनं परमौषधम्'

लेखक श्री विष्णुदेव जी बी० ए०।

आयुर्वेद शास्त्र में शरीर को नीरोग और स्वस्थ के लिये जो अनेक उपचार बतलाये गए हैं, उपवास-चिकित्सा का एक विशेष महत्व है। रोगियों को किसी अन्य चिकित्सा से लाभ हुआ उनको 'उपवास' से चमत्कारिक लाभ देखा गया है।

साधारणतः उपवास का अर्थ है--विशेष अवधि भोजन न करना। प्राचीन काल में उपवास की इस देश में भली-भांति प्रचलित थी। आज हिन्दुओं के अधिक त्यौहारों में, तथा मुसलमान ईसाई आदि समस्त धर्मों में, शरीर और मन को रखने के लिये उपवास करना बहुत आवश्यक समझा जाता है। पहले समय में उपवास समय रोग की चिकित्सा, स्वास्थ्य-रक्षा, मानस्थिरता और नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान मुख्य उद्देश्य रक्खे जाते थे। इन दिनों भी को स्वस्थ रखने के लिए उपवास की आवश्यकता पर बहुत ज़ोर दिया जाने लगा है। उपकरना एक अत्यन्त बल-वर्धक औषधि समझा है। वैद्यक शास्त्र में उपवास करने का बड़ा है। साधारणतः ज्वर आने पर भी एक-दो का उपवास कर लेना अच्छा रहता है। उपसे केवल शारीरिक विकार ही दूर नहीं होते, मानसिक विकारों को दूर करने के लिए भी बड़ी अच्छी औषधि समझी जाती है। महात्मा ने इसका महत्व अच्छी तरह समझा था, वे वास कर आत्मा--शुद्धि कर लेते थे।

शरीर में लगातार होने वाले विषों को, जो बहुत समय तक रहने से अनेक प्रकार के रोगों का रूप धारण कर प्रकट होते हैं--बाहर निकाल फेंकने के लिये, जितने उत्तम और रामबाण उपाय हैं, उनमें सबसे अच्छा उपाय उपवास है। योरोप और अमरीका के डाक्टरों ने उपवास के परिणामों की वैज्ञानिक परीक्षा कर यह सिद्ध किया है कि जो रोग औषधियों से दूर नहीं हो सकते, वे उपवास से बड़ी सरलता से दूर हो जाते हैं। योरोप में अनेक ऐसे चिकित्सा के केन्द्र बन गये हैं, जिनमें केवल उपवास के द्वारा बहुत से रोग अच्छे किये जाने लगे हैं।

श्रीयुत बरनर मेक फ़ेडेन जो अमरीका के बहुत प्रसिद्ध डाक्टर हैं, लिखते हैं—'मुझे पहले निमोनिया और कई छोटे २ रोग थे, पर जब से मैंने उपवास के गुणों को जाना, तब से मैंने अन्य चिकित्सायें त्याग दीं। गत पन्द्रह वर्षों से मैं उपवास द्वारा अपने शरीर को नीरोग रखता हूँ। शुरू में चार दिन उपवास करके एकाध सेव या कोई फल खा लेता था, फिर मैं एक सप्ताह तक बिना आहार रहने लगा। उपवास के पहले दिन मैं तौल में ढाई सेर घट गया, और दूसरे दिन दो सेर। यह वज़न घटना कम होता गया और सातवें दिन मैं केवल आधा सेर घटा। मैं खूब व्यायाम करता था और प्रतिदिन दस मील का चक्कर लगाता था। प्रारम्भ में मुझे कुछ कमज़ोरी प्रतीत होती थी, पर एक-दो मील चलने पर वह जाती रहती थी। कुछ देर तक कहीं बैठ कर फिर उठने में भी मुझे कुछ दुर्बलता प्रतीत होती थी, पर मेरा मस्तिष्क प्रतिदिन स्वच्छ होता गया। उपवास के छठे और सातवें दिन बड़े आराम से व्यतीत हुए। चौथे दिन कुछ खाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी प्रबल इच्छा हुई, पर मैंने अपने को रोका और मैं व्यायाम करने लगा।' मेरे शरीर में आश्चर्यजनक बल आने लगा और मैं प्रथम ५० फिर ६०-७० पौंड और अन्त में १०० पौंड का डम्बल उठाने लगा।

उपवास करने से पेट के भीतर सञ्चित गन्दे अथवा दूषित पदार्थ पचकर प्राकृतिक विधि से सदैव के लिए बाहर हो जाते हैं, और पेट को भी आराम करने का अवसर मिल जाता है। उपवास से सहन-शक्ति भी बढ़ती तथा शरीर नीरोग रहता है।

आधुनिक सभ्यता में भोजन स्वाद के लिए और दूसरों को 'कृतज्ञ, (ओबलाइज्ड) करने के किए किया जाता है। इसीसे आजकल सभ्य संसार रोगों का शिकार बना हुआ है। स्वस्थ और दीर्घजीवी बनने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अल्पाहार करे। 'हितम्-मितम्' वाला सिद्धान्त श्रेयस्कर है, यानी लघु आहार सदैव हितकर होता है। फ्रांस देश का प्रसिद्ध वीर नेपोलियन बोनापार्ट अत्यन्त सादगी का जीवन बिताता था और उसने खाने-पीने में कभी कोई अति नहीं की। काम अवश्य वह बहुत करता था। उसने भोजन के सम्बन्ध में लिखा है-'मनुष्य कितना ही कम खाय, वह सदैव अधिक ही खाता है। अधिक खाने ही से मनुष्य बीमार पड़ता है, किन्तु कम खाने से कभी नहीं।

सादा जीवन बिताने के ही कारण नेपोलियन का स्वास्थ्य इतना उत्तम था, उसमें काम करने की इतनी अधिक शक्ति थी, कि वह केवल एक-दो घंटे ही सोता था, इस पर सदा प्रफुल्लित और ताजा रहता था।

उपवास-चिकित्सा के आचार्य डा० मेकफेडेन का कथन है कि यदि मनुष्य स्वस्थ दशा में प्रति सप्ताह एक दिन जिस दिन विशेष काम न हो उस दिन उपवास नियम पूर्वक करे तो साधारणतः उसके रोगी होने की सम्भावना बहुत कम हो जायगी और यदि रोग की दशा में उपवास करना शुरू करे दे तो रोग का बढ़ना अवश्य कम हो जायगा। अतः स्वास्थ्य की रक्षा करने और जीवन को स्थिर रखने के लिए कभी २ मनुष्य को उपवास करना अर्थात् आमाशय को विश्राम देना बहुत आवश्यक है।

—कर्मयोग

मकर ध्वज वटी

सर्व-प्रमेहों के लिये उपयोगी, रस-रक्त आदि सप्त-धातु वर्धक, पौष्टिक सर्वत्रप्रसिद्ध रसायन।

सभी औषधि-विक्रेताओं के यहां मिलता है।

मूल्य—४१ गोलियों की एक शीशी २॥=)

निर्माता — धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ U.P.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा टॉनिक ।

(आचार्य नित्यानन्द सारस्वत की 'आयुर्वेद के महान् चमत्कार' नामक पुस्तिका से उद्धृत)

इस युग के अधकचरे विज्ञापनों ने जिन-जिन [वस्]तुओं का उलटा-सीधा प्रचार किया है, उनमें [...] के बाद दूसरा नम्बर टॉनिक का ही है । कोई [...]वैद्य जी का अनुभूत है तो कहीं महात्मा जी के [चम]त्कार को नमस्कार है । इन टॉनिकों के बल पर [...]ने ही मन्दाग्नि के बीमारों ने सदा के लिए [...]या पकड़ ली । इनसे यदि किसी को फायदा [हु]आ तो वह केवल अखबार वालों को । जनता का [स्वास्]थ्य और पैसा तो बर्बाद हुआ ही किन्तु आयु[र्वेद] पर जो अविश्वास हुआ उसे फिर से पैदा करने [के ल]िये हमें आयुर्वेद के गौरव-स्वरूप रसायनों का [...]प्रचार करना होगा । इस प्रकार के बहुत से [रसा]यन 'चरक-संहिता' के चिकित्सा स्थान के प्रारम्भ [में] ही वर्णित हैं । सर्व-साधारण में प्रसिद्ध 'च्यवन-[प्रा]श' नामक योग उनमें से ही एक है । बाकी को [भी] आधुनिक परिस्थिति के अनुसार यत्किञ्चित परि-[वर्तन] कर जनता के समक्ष लाना चाहिए । आज से [...] वर्ष पहले उनमें से एक 'ब्राह्म-रसायन' पर [...]पुर के राजवैद्य श्री. नन्दकिशोर जी भिषगाचार्य [ने मे]रा ध्यान आकृष्ट किया था । तभी से उस पर [...] परीक्षण चालू हैं, किन्तु अभी तक मुझे पूर्ण [सफल]ता नहीं मिल सकी है । अभी मैं आपको जो [...] इस कार्य के लिए दे रहा हूँ वह भी अपूर्व बल-[कार]क है । मजे की बात यह है कि इससे आप [कि]सी भी व्यक्ति का वजन बढ़ा सकते हैं, जो प्रकृति [से] ही दुबले—पतले हैं, उनको भी इसके द्वारा एक [...]मा तक हृष्ट-पुष्ट बनाया जा सकता है । इस प्रयोग [से ...] पौंड से लेकर २१ पौंड तक वजन बढ़ता है ।

शरीर में फुलावट लाने का अनोखा गुण इसमें है । यह कहना अनुचित न होगा कि आयुर्वेद ऐसे ही प्रयोगों से आज भी जीवित है । इस प्रयोग में वर्णित छोटी से छोटी क्रिया की भी महत्ता है, इस लिए प्रत्येक क्रिया को विधि-पूर्वक अवश्य करना चाहिए ।

सबेरे तैल की मालिश कर उबटन लगावें । मालिश के लिए 'महा लाक्षादि तैल' या 'चन्दन बलालाक्षादि तैल' हो तो उत्तम है । अभाव में कच्ची घाटी का सरसों का विशुद्ध तैल लेना चाहिए । उस के बाद आंवले के पानी से सारे अंगों को भिगोवें । यह पानी १० तोला सूखे आंवले पांच सेर पानी में रात को डाल कर और सबेरे भली-भांति आंवलों को मल और छान कर बनावें । पहले इस पानी से अंगों को भिगोने के बाद इच्छानुसार गर्म या ठंडे जल से स्नान करें । इस क्रिया के बाद अथवा पहले भी बादाम का हलुवा रोगी की भूख के अनुसार बना कर खिलावें । हलुवे में 'सुवर्णवसन्त मालती' 'नाग भस्म' और 'लोह भस्म' प्रत्येक दो रत्ती तक मिलावें । प्रारम्भ में बहुत कमजोर व्यक्तियों को पूर्ण मात्रा देने से बुखार आ जाता है, इसलिए उनको उतनी ही मात्रा देवें जितनी सहन हो सके । कुछ समय बाद उनकी भूख बढ़ेगी और वे पूर्ण मात्रा पचा सकेंगे । इसके सेवन-काल में नारियल की गरी खूब खावें । कम से कम दस तोला तो प्रति दिन खाना आवश्यक ही है । जब समय

[शेष पृष्ठ ७४७ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकछिकनी ।

लेखक-कविराज विश्वनाथ प्रसाद जी भिषगाचार्य, मक़बूलगंज [लखनऊ]

छिकनी क्षवकृत्तीक्ष्णा छिक्किका घ्राण दुःखदा।
संस्कृत-छिकनी, क्षवकृत, छिक्का और घ्राण दुःखदा।
हिन्दी -नकछिकनी।
बंगाली—हांचुटी, हेचुटी, हेचेतागाछ, छिकनी।
मराठी—नाकच्छिकणी।
गुजराती—नाकछिकनी।

नकछिकनी भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में पाई जाती है। बरसात के बाद और सर्दी के अन्त में नदी, नालों और तालाबों के समीप इसके क्षुप आप ही आप उत्पन्न हो जाते हैं। पत्तों का आकार गाजर के पत्तों की तरह लेकिन बहुत छोटे-छोटे होते हैं। शाखें पतली-पतली और फूल की घुंडी स्त्रियों के नाकमें पहनने वाली लौंग की तरह होती है। यदि इसको हाथ से मसल कर सूंघा जाय तो छींकें आने लगती हैं, इसलिये इसका नाम नकछिकनी है।

यह दो प्रकार की होती है, एक के डोढे बड़े-बड़े होते हैं जिसे नकछिकनी या मीठी नकछिकनी कहते हैं। दूसरी वह जिसके सूंघने से छींके आती हैं, स्वाद कुछ कड़ुवा, व तेज़ होता है इस दूसरी प्रकार की नकछिकनी के भी दो भेद होते हैं, एक के फूल पीले और दूसरी के सफेद होते हैं।

आयुर्वेदीय मतानुसार गुण दोष - नकछिकनी कड़वी, रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, अग्नि जनक तथा पित्तकारक है और वातरक्त, कोढ़, कृमि, कफ तथा हंसली के ऊपर के रोगों को नष्ट करती है यह श्वेत कुष्ठ और दृष्टि के दोषों को दूर करती है तथा मस्तक विरेचक है।

यूनानी मतानुसार—तीसरे दरजे में गरम खुश्क है।

१—इसके फूलों की घुंडी मसल कर नसवार की तरह सूंघने से बहुत छींकें आती हैं और सर दर्द दूर होता है तथा बन्द प्रतिश्याय (जुकाम) खुल जाता है। प्रयोग

२—रतौंधी (रात को दिखाई न देना)—नकछिकनी के स्वरस में पिप्पली घिसकर आंख में लगाने से एक ही दो दिन में रतौंधी दूर हो जाती है।

३—पीनस रोग में - इस को मसल कर नसवार (हुलास) लेने से कीड़े मर कर छींकों के साथ निकल जाते हैं। नाक से गन्दा पानी बहकर निकल जाता है और बदबू दूर हो जाती है।

४—दांत या दाढ़ में दर्द हो और मसूढ़े सूज गये हों तो इसको सोंठ के साथ पीस कर कपोलों पर मोटा-मोटा लेप लगादें, आराम हो जाता है।

५—नाभी हटने के लिए—एक माशा नकछिकनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुड़ में लपेट कर खाने से नाभी अपने स्थान पर आजाती है।

-भूख बढ़ाने के लिये ४ रत्ती नकछिकनी गुड़ में मिला कर गोली बनाकर खावें और घी का अधिक सेवन करें तथा धीरे-धीरे बढ़ा कर मात्रा एक माशा तक सेवन करें अगर गर्मी मालूम हो तो खुरफा के बीज घोट मिश्री डाल कर पीवें। इससे भूख बढ़ जाती है। यह बहुत तेज है इसलिये सर्दियों के मौसम में ही सेवन करें।

-चार रत्ती नकछिकनी का चूर्ण गुड़ में मिला कर खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं, फिर १-२ तोला एरंड का तैल दूध के साथ पीने से मुरदा कीड़े निकल जाते हैं।

-योषापस्मार (हिस्टीरिया) में जब शीघ्र-शीघ्र दौरे हों तो यह बूटी सूखी हुई १ रत्ती लेकर पाव भर दूध के साथ पिलाने से दो तीन मात्रा में दौरे रुक जाते हैं।

-एक सेर नकछिकनी लेकर बारीक पीस लें। और एक पाव तिल का तैल डाल कर खरल करके गोलियां बनालें फिर पाताल यंत्र से तैल निकाल लें। इसे चार रत्ती पान पर लगा कर खाने से हाजमा बढ़ता है और बाजीकरण है।

—ताम्र भस्म—शुद्ध ताम्र के नाखून की तरह छोटे-छोटे टुकड़े करलें, रुई के साथ कूटी हुई मिट्टी थोड़ी सी लेकर रोटी की तरह गोल टिकिया बनालें और चारों ओर से उसके कोरों को उठा कर चुटकी से दबाते जावें जिससे सकोरा सम बन जावे, थोड़ी देर धूप में सुखाने के बाद उसमें थोड़ा सा नकछिकनी बूटी का चूर्ण बिछा कर उसके ऊपर थोड़ा सा शुद्ध आंवलासार गंधक चूर्ण का बिछादें फिर एक-एक करके उक्त तांबे के टुकड़ों को बिछाकर उसके ऊपर गंधक का चूर्ण फिर नकछिकनी का चूर्ण बिछा कर उसके मुख को ढक दें और उसके कोरों को नीचे की ओर दबाकर उसीसे संधियों को बन्द करदें इस संपुट को धूप में सुखा कर नरम आग के नीचे रख देना चाहिये जिससे उसमें मध्यत अग्नि लगती रहे। १२-१४ घंटे बाद संपुट को निकाल कर स्वांग शीतल होने पर संपुट को तोड़ बांये हाथ की हथेली पर उस भस्म को रख मुंह से फूंक मारे इससे राख उड़ जायगी और ताम्र भस्म टुकड़ों के रूप में रह जायगी फिर दाहिने हाथ के अंगूठे से गांजे की तरह मल दें, भस्म तैयार है। इसका रंग शास्त्रानुसार मोर की गरदन के समान नीला होता है। दही में डालने से यदि दही का रंग न बदले और जबान पर रखनेसे मितली न जान पड़े तो शुद्ध समझनी चाहिये अन्यथा एक आग और देनी होगी। इसे आप रसोई के चूल्हे पर तैयार कर सकते हैं।

११-१ तोला शुद्ध ताम्र के छोटे-छोटे टुकड़े करके एक पाव नकछिकनी की लुगदी में रख शराब संपुट कर दस सेर उपलों में फूंकदें, इस तरह सात दफा आग देने से काले रंग की भस्म तैयार होती है। भूख और बल बढ़ाती है। मात्रा--आधी रत्ती।

यह अति उत्तम भस्म है सन्निपात प्रभृति रोगों को नाश करने में अद्वितीय है।

[पृष्ठ ७४५ का शेष]

मिले शारीरिक श्रम अवश्य करते रहना चाहिए। यदि किसी को प्रयोग-काल में उष्णता की अधिक शिकायत हो तो 'सितोपलादि चूर्ण', 'प्रबाल चन्द्र-पुटी' और 'महा चन्दनादि तैल' का निःशंक प्रयोग किया जा सकता है। यथासंभव सात्त्विक भोजन करें। जैसे-जैसे भूख की मात्रा बढ़ती जाए, वैसे-वैसे पौष्टिक भोजन की मात्रा भी बढ़ाते जाना चाहिए। गुड़, तैल, खटाई और विशेषकर मैथुन से परहेज रखना जरूरी है। इस प्रकार यह ४० दिन का प्रयोग है और वास्तव में काया-कल्प कर देने वाला सच्चा टॉनिक है"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी)

लेखक--श्री० शम्भूदत्त जी विशारद।

संस्कृत नाम—स्वर्णक्षीरी, हेम-दुग्धा, ब्रह्मदण्डी।
हिन्दी नाम—सत्यानाशी, स्यालकांटा, ब्रह्मदण्ड और पीला धतूरा।
बंगला नाम - स्यालकांटा और सोनाखिरनी।
मराठी नाम—कांटे धोत्रा।
गुजराती नाम—दारूड़ी।
पंजाबी नाम—भटकटैया, भेरबंड।
तैलगू नाम—ब्रह्मदण्डी।
तामिल नाम—कुरुकम, ब्रह्मदण्डी।
अंग्रेजी नाम—Prickly Poppy, Gamboze.

परिचय—

स्वर्णक्षीरी भारत में सर्वत्र पाई जाती है। यह कांटे वाली और भूमि पर फैली हुई होती है। जब उसका पौदा बढ़ते २ दो-तीन फुट ऊंचा हो जाता है तब उसके पीले फूल और कुछ अंडाकार (लम्बे-गोल) कांटेदार फल लगते हैं। इनके पके हुए फलों से गोल काले बीज निकलते हैं। इसके पत्ते ऊंटकटारा (उष्ट्रकंटक:) के पत्ते के समान लम्बे और कटी हुई किनारों के होते हैं। सारे पौदे पर तीक्ष्ण पतले कांटे होते हैं। इसके पत्ते व डाली को कहीं से तोड़ने अथवा काटने पर सोने के समान पीले रंग का दूध निकलता है, इसोलिये इसे संस्कृत में स्वर्णक्षीरी और हेम-दुग्धा कहते हैं। सीधी ऊंची और कांटेदार होने से ब्रह्म-दण्डी भी कही जाती है। इसका कारण यह कि "कटीला दंड" केवल ब्रह्म (परमात्मा) ही रख सकता है, मनुष्य नहीं, इसी कारण तामिल आदि प्रान्तीय भाषाओं में ब्रह्मदंडी कहते हैं। भार्गी (भारंगी) को भी ब्रह्मदंडी कहते हैं किन्तु वह दूसरी वस्तु है। कई बनस्पति विशेषज्ञों के विचारानुसार यह पौधा उत्तरी अमरीका से भारत में लाया गया है इसीलिए इसे बम्बई और गुजरात में फिरंगी कांटा वा फिरंगी धत्तूरा भी कहते हैं। धत्तूरे के समान इसके पत्ते और फूलों में निद्राजनक विष (Narcotic Poison) मिलता है।

गुण— आयुर्वेद मत से स्वर्णक्षीरी शीतल, कड़वी, दस्तावर तथा खुजली, रक्तरोग, क्रमिरोग, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ, कुष्ठ और शोथ आदि २ को नाश करती है।

यूनानी मत से यह कड़वी, तीक्ष्ण स्वाद वाली, तथा पित्त निस्सारक और कामोत्तेजक है। चर्म रोग और धवल (श्वेत कुष्ठ) रोग में यह बहुत उपयोगी है।

पंचांग—

इसके ताजे पंचाग का यंत्र (भबके) द्वारा खिंचा हुआ अर्क सुबह-शाम दो-दो तोला समभाग जल मिलाकर पिलाने से सब प्रकार के चर्म रोग, फिरंग रोग और रक्त रोग दूर होते हैं।

जड़—

इसकी जड़ को चोक कहते हैं। यही चोक असली गिनी जाती है। हेमाह्वा पीत दुग्धा तन्मूलं चोक मुच्यते—(भाव० नि०) चोक का लेप दाद, खाज आदि पर किया जाता है। लेप से तीव्र वेदना भी होती है इसलिये दस-पन्द्रह मिनट में ही उतार देना चाहिये इसका तैल शिरोवेदना में मला जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध मधु, सत्यानाशी का रस, नीम का मद, सम-
न मिला कर एक तोला सुबह, एक तोला शाम को
से किसी भी कारण से दूषित रक्त शुद्ध होता
इस प्रयोग से कुष्ठ रोग भी आराम होता है।
भूत प्रयोग है।

--

इसके बीज विरेचक, वामक और श्वास कास
क हैं। यह रेचनार्थ व वमनार्थ दो-तीन माशा में
जाते हैं. इन बीजों से पीले रंग का तैल निक-
है जो तीस बूंद करीब १ तोला शक्कर में मिला
खिलाने से अच्छा रेचन होता है। किंतु सदा
तैल ही लाभदायक है। कभी-कभी इस तैल के
से (व्यवहार से) घबराहट भी हो जाती है।
बलानुसार मात्रा देनी चाहिए।

गुण—

इसका पीला दूध कुष्ठ (कोढ़) उपदंश के व्रणादि
चर्म-रोगों पर लगाया जाता है। यह व्रण
क है न कि लेखन। जलोदर कामला में यह
घृत में मिलाकर देते हैं। इसके पीले रस को
में मिलाकर देने से सुजाक की जलन को भी
करता है। यह मृदुरेचक और रक्तशोधक है, इसके दुग्ध में समभाग घृत मिलाकर नेत्रों में आंजने से धुन्ध, जाला, मांस बढ़ना आदि आराम होते हैं। हमारे औषधालय में पीले दूध के द्विगुण भाग से मधु मिलाकर नेत्रों में आँजा जाता है, इससे फूला धुन्ध, जाला कटता है। इसको कांच या चांदी के बर्तन में रखना चाहिये और चांदी की सलाई से नेत्रों में आंजना चाहिए। यह दुग्ध कार्तिक व अगहनमें लेना चाहिए। फाल्गुन मास तक यह दुग्ध लेकर व्यवहार करने से अच्छा लाभ पाया है। बीज फाल्गुन में ही मिलते हैं फिर पक कर खुल जाते हैं और इनमें से बीज फैल जाते हैं। बीजों को तैल में पीस कर दाद पर लगाने से बहुत लाभ होता है।

नोट-इसके दूध की मात्रा ५-१० बूंद तक है यह बलानुसार देनी चाहिए। इसका बीज १ वर्ष से पुराना लेना चाहिए, नया और ताजा वामक है और घबराहट पैदा करता है। रोगी के बलानुसार घटा-बढ़ाकर देने से अवश्य लाभ होता है। इसके बीज अफीम की अपेक्षा अधिक वामक और नींद लाने वाले हैं, इसलिए सावधानी से काम में लाना चाहिए।

लज्जावती [छुईमुई]

[श्री० पं० कमलोद्भव शर्मा आयुर्वेदाचार्य, नवादा, पो० बहेरा।]

—लज्जावती, शर्मानी, छुईमुई, लजारू।
—लज्जालु, शमीपत्रा, समङ्गा, जलकारिका,
रक्तपादी, इत्यादि।
—लज्जावती। गुजराती—रिसामणी।
—माइमोसा सेनसिटाइवा (Maimosa
sensitiva)।

प्राप्तिस्थान तथा परिचय—

लज्जावती आर्यभूमि में उत्पन्न होने वाली क्षुप-जाति की एक औषधि है। यों तो यह सारे हिन्दुस्तान में पाई जाती है फिर भी मिथिला में इसकी काफी अभिवृद्धि है। लज्जावती (छुईमुई) के क्षुप बेल के समान होते हैं। पत्ते खैर के समान होते हैं, फूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाबी नीले मिश्रित रंग के होते हैं, जड़ लाल रंग की होती है, इसको स्पर्श करने से यह लज्जा के मारे शर्मा कर सुकुड़ जाती है, पश्चात् विस्तृत हो जाती है। इसी से इसकी संज्ञा लज्जावती रखी गई है। यह दो प्रकार की होती है, एक कांटे वाली, दूसरी बिना कांटे की। हमारे लेख का विषय कांटे वाली जाति से है।

प्रभाव—

यह ग्राही होने से अहिफेनादि के समान प्रवाहिका, अतिसार, रक्तस्रावहर है। इसमें शीतलता तथा तिक्तता होने के कारण पित्त शामक तथा कषाय होने के कारण कफनाशक भी है, इस सम्बंध में वैद्य पञ्चानन पं० भावमिश्र जी का निम्नोद्धरण सम्मान्य है।

"लज्जालुः शीतला तिक्ता कषाया कफपित्तजित्॥
रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान् विनाशयत्॥"

उपयोग—

आमातिसार में जब पक्वावस्था आजाए, इसका उपयोग चमत्कारिक गुण दिखाता है। ग्राही होने के कारण शीघ्र ही अतिसार को रोकता है तथा सदरशूलादि सभी उपद्रव आप ही आप नष्ट हो जाते हैं। मैं तो दावे के साथ कह सकता हूं कि डाक्टरों के एमीटीन हाइड्रोक्लोर इञ्जेक्शन से भी अधिक हितकर इस रोग में लज्जालु है।

मात्रा और सेवन विधि – १-१॥ तोला लज्जालु मूल को जल से धोकर स्वच्छ करलें, फिर सिल पर पीसलें और १ छटांक मिश्री या चीनी मिला, २ छटांक जल में घोल, शर्बत बना पीलें। यह एक मात्रा हुई। इसी भांति दिन में दो-तीन बार पीने से दो तीन दिन के प्रयोग से ही तीव्र आमातिसार भी नष्ट हो जाता है।

नोट:—आमातिसार के कतिपय रोगियों को ज्वर भी रहता है, अतः ज्वरावस्था में इसका प्रयोग न करें, कारण ज्वरावस्था में प्रयोग करने से कभी २ हानि होने की सम्भावना रहती है, ऐसी दशा में पहले ज्वरनाशक औषधि सेवन करा ज्वर-मुक्त करदें, फिर इस योग का उपयोग करें।

रक्तातिसार, रक्त-प्रदर एवं रक्त-पित्त इन रोगों में भी उपरोक्त विधि से इस योग का उपयोग करना अमोघ ही होता है। मात्रा तथा सेवन विधि आमातिसार जैसा ही समझें।

विशेष द्रष्टव्य

मैंने लज्जावती के उपरोक्त योग का उपरोक्त रोगों में व्यवहार गुरु परम्परा में प्रचलित देखकर ही किया तथा सर्वत्र पूर्ण लाभप्रद पाया है। मैं किसी आयुर्वेद ग्रन्थ में विशेष व्याख्या रूप में इसके गुण तथा पूर्ण सेवन-विधि आदि पहले न पास का था किन्तु आज मुझे पं० भावमिश्र के भावप्रकाश ग्रन्थ के बालरोगाधिकारोक्त निम्नोक्त योग को देखने से इसे रक्तातिसारघ्न तथा सर्वातिसारघ्न मानने में और भी साहस बढ़ता है। योग इस भांति है–

अथ दुर्धरातिसारे समङ्गादिक्वाथ :—

'समङ्गाधातकीलोध्रसारिवाभिः शृतं जलम्॥
दुर्धरेऽपि शिशोर्देयमतीसारे समाग्निकम्॥
रक्तातीसारे मोचारसः समङ्गाच धातकी पद्मकेसरम्
पिष्टैरेतैर्यवागूः स्याद्रक्तातीसारनाशिनी॥"

—भा० प्र० बालरोगाधिकार) १५१, १५१

यहां समङ्गादि क्वाथ में समङ्गा (लज्जावती) की प्रधानता है अन्य औषधियां सहायक मात्र हैं। यह इसके नाम से ही स्पष्ट प्रतीत होता है। सारांश यह है कि शास्त्रीय योगों में भी मेरे आचार्य ने इसे अतिसारघ्न ठाना है। मैंने तो इसकी विधि में कुछ हेर-फेर किया है तथा मात्रा आदि को व्यवस्था की है। मैंने इसे आमातिसार तथा रक्तातिसार के रोगियों पर प्रयोग कर शतप्रतिशत लाभकारी पाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमलतास।

ले०--श्री. डा. पं. रामजी पाण्डेय, आयुर्वेद-शास्त्री, एम.बी.एच., चकिया बाजार [आरा]

प्रभात का समय था। दक्षिण पवन मंदगति से चल रहा था। मैं वायु सेवनार्थ अपने उद्यान में घूम रहा था। अमलतास का वृक्ष अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ दृष्टिगोचर हुआ। सामने पड़ते ही उसके दिव्य गुण एक-एक कर मेरे आगे प्रत्यक्ष होने गये। महर्षि आत्रेय कथित रेचनार्थ कल्प स्थान के बारह प्रयोग सशरीर मेरी आंखों के सामने आ उपस्थित हुए। अज्ञात् भाव से ही मनमें संकल्प कर लिया कि इन योगों पर कुछ लिख कर अपने वैद्य-बन्धुओं की किंचित सेवा की जाय। नीचे इसी संकल्प का परिचय उपस्थित किया जाता है। यदि कोई त्रुटि रह जाय तो आशा है वैद्य-बन्धु क्षमा प्रदान करेंगे और नीर-क्षीर-विवेक से काम लेंगे।

नाम—

आरग्वध, राजवृक्ष, शम्पाक, चतुरंगुल, व्याधिघात, कृतमाल, हेमपुष्प, स्वर्णांग, स्वर्णभूषण आदि पर्याय वाचक नाम हैं।

गुण—अमलतास भारी, स्वादिष्ट, रेची. शीतल, मृदु, ज्वर तथा हृदय रोग, रक्तपित्त तथा वात उदावर्त और शूल को नष्ट करता है।

कली—

इसकी कली स्रसन, रुचिकारक, कुष्ठ नाशक, पित्त-निवारक, कफघ्न, ज्वर में पथ्य है तथा कोठे को साधता है।

फली—

कफ तथा मेदा शोधक है। ज्वर में पथ्य तथा मल को ढीला करता है।

फूल --

वात वर्द्धक, बादी नाशक, रेचक, पित्त नाशक, पाक में मधुर तथा स्निग्ध है।

जड़—

दूध में औटाकर देने से वात रक्त तथा मण्डल कुष्ठ और दाह को नष्ट करता है। गण्डमाला रोग में इसी जड़ को पानी में पीस कर नस्य देते हैं। अमलतास का विरेचन निर्विकार तथा मृदु होने से बालक वृद्ध और सुकुमार के लिए अत्यन्त हितकारी है।

अमलतास ग्रहण करने की विधि—

जिस समय अमलतास के फल पके हुए हों उनको तोड़ कर ले आवें। इन उत्तम २ भारी सुन्दर अमलतास की फलियों को बालू के ढेर में गाढ़ कर ७ दिन के बाद निकाल कर धूप में सुखा दें। ठीक सूख जाने पर इन फलियों का गूदा निकाल लें, गूदे को किसी स्वच्छ पात्र में ढंक कर रखदें।

अमलतास के विरेचक योग—

१--अमलतास का गूदा ८ तोला अथवा १६ तोला लेकर सुरामण्ड में अथवा बेर से बनाई हुई शीधु में भिगोकर एक दिन रहने दें। फिर मसल कर मात्रानुसार पीने से उत्तम विरेचन सुख पूर्वक हो जाता है।

२—इसी प्रकार दधिमण्ड वा आमले के रस के साथ या शीतल जल में एक दिन भिगो कर या सौवीरक में भिगो कर दूसरे दिन मसल कर पीने से आसानी से सुख-पूर्वक विरेचन हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ – निशोथ के क्वाथ में अमलतास का गूदा घोल कर या बेल के क्वाथ में घोल कर और सेंधा नमक मिला कर पीवे तो आसानी से विरेचन हो जाता है।

४—अमलतास के क्वाथ के साथ निशोथ का चूर्ण और गुड़ मिलाकर मंद-मंद अग्नि से अवलेह सिद्ध करें। इसे मात्रानुसार देने से उत्तम विरेचन हो जाता है।

५—अमलतास का गूदा आधा सेर, दूध चार सेर जल आठ सेर इन सबको मिला कर पकावें। दूध मात्र शेष रहने पर उतार कर छान लें। फिर इस दूध में एक सेर घृत और एक पाव अमलतास के गूदे का कल्क तथा चार सेर आमले का रस मिला कर पकावें। घृत मात्र शेष रहने पर छान कर पीने से भी उत्तम विरेचन होता है।

६—दाह और उदावर्त रोग में अमलताम का गूदा द्राक्षा के रस में घोलकर पिलाना चाहिए। चार वर्ष से लेकर १२ वर्ष की अवस्था तक के बालक के लिए अमलतास का विरेचन सुखकारी होता है।

७—अमलतास के गूदे से सिद्ध किया दूध चार सेर, घी १ सेर, दशमूल, कुल्थी और यवों का क्वाथ चार सेर तथा निशोथ, त्रिफला, दंती नीलिनी, सातला, कबीला, बच, इन्द्रायण की जड़, दूधली, करंज के बीज, पीलू, अमलतास, दाख, द्रवंती और निचुल इन सबको १-१ तोला लेकर कल्क बनावें। सबको मिला कर पकावें, जब घृत मात्र शेष रह जाय तब उतार कर छान लें। इस घी के पीने से सुख पूर्वक अच्छा विरेचन होता है।

८ - दंती का क्वाथ ४ सेर, अमलतास का गूदा आध सेर, गुड़ १ सेर इन सबको एक चिकने बर्तन में भरकर विधि-पूर्वक बन्द कर १५ दिन अथवा १ महीना रखा रहने दें। फिर उसे छान कर रोगीको पिलावें। जिस रोगी को जो चीज पीने को और जो अन्न खाने को अच्छा लगे अथवा मिठाई, चरपरे द्रव्य, नमकीन या खट्टे जैसे द्रव्य उसे प्रिय हों तो उसी के साथ में यह अरिष्ट भी पिलाया जाय तो उत्तम विरेचन होता है।

इस प्रकार उस चतुरंगुल कल्प में द्राक्षारस, मद्य, बेर की शीधू, दधिमण्ड, आमले का रस, सौवीरक, निशोथ का क्वाथ, बिल्व और अमलतास का क्वाथ, अवलेह, अरिष्ट और दो प्रकार के घृत इन सबको मिला कर बारह प्रकार के सुखकारी विरेचन योग है कहे गये हैं।

परिचय—

अमलतास का वृक्ष बड़ा होता है, इसकी पत्तियां चिकनी २ जामुन के सदृश्य होती हैं। पुष्प पीत वर्ण का पांच २ पंखुरियां वाले, डाली तथा वृक्ष, में सर्वत्र लगते हैं। पुष्प काल में इसकी शोभा अपूर्व हो जाती है। पत्तियों के झड़ जाने के बाद इनमें के पीले फूल युक्त मंजरियां सर्वत्र पेड़ों में ऐसी दिखाई पड़ती हैं मानो पीताम्बरधारी श्री कृष्ण ने अपने हाथ से स्वयं इसे पीताम्बर ओढ़ाया है। खेद तथा आश्चर्य है कि इतने पर भी भगवान इसे गन्ध-रहित बनाया है। इसका पुष्पकाल बैशाख-जेष्ठ है। पुष्प के झरते ही इस पर हरे रंग की फलियां लग जाती हैं जो भीतर से पीली रहती हैं। इनकी लम्बाई १ से ३ फुट तक होती हैं। पक जाने पर इसका रंग कृष्ण वर्ण का अरुणाई लिए हुये रहता है तथा ऊपरी सतह लकड़ी के तरह कड़ी हो जाती है। भीतर की मज्जा अफीम की रंग की सार्द्र कृष्ण वर्ण की हो जाती है, बीज बीच में रहते हैं जो प्रायः सिरस के वृक्ष की तरह होते हैं और जो एक दूसरे के ऊपर मालाकार बने रहते हैं।

औषधार्थ इसका मूलत्वक, बीज तथा मज्जा का व्यवहार करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ऋषभक : :

ले.-वै० कवि० पं० कुलानन्द जी पन्त हिंदी-प्रभाकर, सोलन।

मैं कई वर्षों से यहां पर एक कन्द को प्रयोग में ला रहा हूँ। मैं इसे ऋषभक समझता हूँ। ऋषभक के शास्त्र-वर्णित सभी गुण इसमें मिलते हैं। जैसे कहा है:—

रसोनः कन्दवत् कन्दौ, निःसारौ सूक्ष्म पत्रकौ। ऋषभो वृषशृंगवत्।

प्राप्तिस्थान—

ऋषभक ४५०० फुट की ऊंचाई से लेकर ६००० छै हजार फुट तक मिला, इससे ऊपर पर्वतों पर जाने का मुझे अवसर न मिला। रियासत टिहरी सरमौर और शिमला की पहाड़ियों पर यह प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

परिचय--

इसका कन्द लहसुन के कन्द के एक भाग के समान, बैल के सींग के समान और हरे रंग का होता है। इसके पत्ते हल्दी के पत्तों के समान होते हैं किन्तु आकार में छोटे और पतले होते हैं। कन्द भूसी के ऊपर भूसी को स्पर्श किये होता है। कन्द बारह मास हरा रहता है। कन्द के निम्न भाग में ३ या ४ बारीक नाल (सूत्र) होते हैं, जो भूसी के अन्दर पाये जाते हैं।

पत्ते वर्षा ऋतु और शरद में ही हरे रहते हैं, बाद को पीले होजाते हैं। प्रायः अनेक कन्द एक साथ पाये जाते हैं, बान के पेड़ों को जंगलों में जहां सूर्य की किरणें कम पड़ती हैं, पाये जाते हैं।

मैंने निम्न-लिखित रोगों पर इसे इस भांति प्रयोग किया है।

प्रमेह पर--

—ऋषभक चूर्ण २ माशा, पिप्पली चूर्ण २ रत्ती, हरिद्रा चूर्ण ४ रत्ती, यह एक मात्रा है, सुबह-शाम मधु से चटाई गई।

हृद रोग पर —

—ऋषभक चूर्ण २ माशा, मुक्ताशुक्ति ४ रत्ती मधु से चटाई गई। प्रातः और सायम्। इसके साथ धारोष्ण गाय का दूध पिलाया गया।

रक्त पित्त पर

ऋषभक चूर्ण २ माशा स्फटिका भस्म २-२ रत्ती मधु से सायं प्रातः एक २ मात्रा दी गई।

भस्मक पर —

ऋषभक चूर्ण ६ माशा, मिश्री ३ माशा, यह १ मात्रा है। भैंस के कच्चे दूध से दिन में ऐसी तीन मात्रायें दी गई। एक माह तक सेवन करने से पूर्ण लाभ हुआ।

मार्च के धन्वन्तरि में राजवैद्य श्री. ब्रमदत्त जी ने "निःसारौ" का 'भीतर से खाली' अर्थ किया है, वह ठीक नहीं जंचता। मेरे बिचार से निःसारौ का अर्थ निबल ठीक जंचता है क्योंकि यह कन्द सरलता से मुड़ जाता है।

मात्रा--मूलत्वक का क्वाथ ५ से १० तोला तक मज्जा का २ से ४ आना भर तक विरेचनार्थ १ से २ तोला तक देना चाहिये।

विश्लेषण:—

इसकी मज्जा में ६० प्रतिशत शक्कर तथा पैक्टिलेज, केलशियम औकजलेट, पार्थिव भाग व कुछ रंजक पदार्थ पाए जाते हैं।

अमलतास के फल की मज्जा मृदु रेचक है। अकेले देने पर यह पेट में शूल इत्यादि पैदा करता है। अतः इसे अकेला नहीं देना चाहिए। यह अन्य औषधियों के साथ शक्ति-वर्द्धन के लिए दिया जाता है। दीर्घ काल तक सेवन करने से मूत्र का रंग गहरा बादामी रंग का हो जाता है। इसका मूल तीक्ष्ण विरेचक है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वात-रोगों पर बनौषधि—

शांबर बेल।

ले०—आयुर्वेदरत्न श्री० उदयलाल जी महात्मा, देवगढ़ [मेवाड़]

वात-रोगों पर इस लता का व्यवहार हमारी जाति के वृद्ध वैद्यों में परम्परा से चला आ रहा है, किन्तु अब तक इस महौषधि पर आयुर्वेदीय शास्त्रोक्त दृष्टि से निश्चय नहीं हो पाया है कि इस बूंटी का शास्त्रोक्त नाम और प्रांतीय नाम यह है। न इस बनौषधि का चित्र ही छापा गया है। संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है :—

यह पहाड़ों में बहुधा काले पत्थरों में कहीं-कहीं पायी जाती है। मेवाड़ में राजसमन्द पर घेवर माता के पास की पहाड़ी पर है। यह लता पत्थर की सन्धि से निकल कर लम्बाई में लगभग दो गज तक नीचे की ओर लटकती हुई होती है।

लता की शाख मूल के पास मोटी फिर कुछ मोटाई कम होजाती है। लत्ता की शाख बच्चों के सलेट पेन्सिल की आकृति में गोल होती है। शाखें हरी और उस पर हल्के सफेद रङ्ग का आवरण सा चढ़ा रहता है। शाखें मोड़ने में मुड़ जाती हैं अन्दर से दूध निकलता है। लता की शाख के अन्दर पवली कठोर लकड़ी होती है उसमें पतला सा रेशा होता है। ऊपर मोटा हरी छाल का आवरण होना है, उसके अन्दर लम्बे २ रेशे होते हैं। इस लता के छः अंगुल पर आठ अंगुल पर, चार अंगुल पर सन्धियां (गांठ) होता हैं और उन गांठों से फिर शाखें फूट-फूट कर एक झुण्ड सा हो जाता है। इस लत्ता का अग्रभाग शाबर सींग की आकृति के समान खड़ा और जगह २ शाखायें निकलो होती हैं, इसीलिए इस लता को 'शांबर बेल' की उपमा मिलो मालूम होती है। इसकी शाखों के अगले सिरे पर किसी २ शाख में दो पत्ते बारीक यव के समान लम्बे व उससे कम मोटे होते हैं।

इस बूटी के समकक्ष इस प्रदेश में एक झाल नामक झाड थूहरों में होता है जो ऊपर बढ़ता है जिसके पुराने जमाने में लकड़ी के पाटे पर लिखने के वास्ते स्लेट पेन्सिल के स्थान पर उपयोग करते थे। उसकी लकड़ी मजबूत और सख्त होती है जब कि 'शांबर बेल' की शाखें मुलायम और जमीन की ओर झुकने वाली हैं।

प्रयोग –

शांबर बेल ताजा १० तोला

अजवाइन २ तोला सोंठ १ तोला

—तीनों को कूटकर स्वरस निकाल लें। यदि कम निकले तो पानी के छींटे देकर कूटते और निचोड़ते जांय; जिससे १० तोला स्वरस प्राप्त हो जांय। इस मात्रा में दोनों समय बल, काल का विचार कर रोगी को पिलावें।

गुण–उरुस्तम्भ, गठिया, कमर का शूल, सर्वांग शूल, त्रिकशूल, जानुशूल, क्रोष्टु शीर्ष आदि वात-रोग सात दिन लेने और फिर सात रोज पथ्य पालन करने से शर्तिया मिट जाता है।

मेवाड़ आयुर्वेदीय विभाग के अध्यक्ष श्री वैद्य गण इस तरफ ध्यान देकर व्यवहार में लावें फलाफल प्रगट करें तो उत्तम हो।

आयुर्वेद सम्मेलन के कर्णधार और बूटी विशेषज्ञ महोदय परीक्षार्थ नमूना चाहेंगे तो उनकी सेवा में बिना मूल्य भेज दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षित प्रयोग

प्रमेह नाशक —

सफेद मूसली	स्याह मूसली
सकाकुल मिश्री	दरियाई तालमखाना

—हरेक २-२ तोला लेकर चूर्ण करें और एक गरी का गोला लेकर ऊपर थोड़ा काट कर उसमें दवा भर कर बरगद (बट वृक्ष के अंकुरों का दूध भर दें। ऊपर से गोला के ऊपर का कटा हुआ भाग रखदें। इसे ३-४ दिन छाया में सूखने दें फिर सब को कूट-पीस कर रखें। एक सेर बढ़िया छुहारे लाकर गुठली निकाल कर उपरोक्त दवा भरदें और ऊपर से कच्चे सूत के धागे से लपेट दें। रोगी के बलाबल अनुसार १ या २ पाव गाय के दूध में २ से ४ उपर्युक्त छुहारों को पकाकर छुहारे खिला ऊपर से उसी दूध को पिलादें। प्रातः सायं दो बार इसी प्रकार व्यवहार करें।

गुण—२१ दिन में बीसों प्रकार के प्रमेह समूल नष्ट हो जाते हैं।

अपथ्य—मिर्च, तैल, खटाई, स्त्री-प्रसंग छोड़ दें।

मलेरिया पर शृङ्गिक विषादि वटी—

सींगिया विष की भस्म	२ तोला
छोटी पीपल	२ तोला
काली मिर्च	१ तोला

विधि-सींगिया विष को प्रतिदिन ताजे गौमूत्र में भिगोवें, सातवें दिन छोटे-छोटे टुकड़े काट कर सुखा दें सूखने पर इसके बराबर चौकिया सुहागा मिला कर दोनों को बारीक पीसकर शकोरे में रखकर १० सेर कण्डों में फूंक दें। शीतल होने पर शकोरे से निकाल लें। कुछ नीले रंग की भस्म होगी, इसके बाद पीपल, काली मिर्च कूट-पीस छान कर तीनों दवाइयों को खरल में घोटें और मटर के बराबर गोलियां बनावें।

मात्रा—१ गोली। अनुपान-तुलसीदल अथवा अदरक का रस।

उपयोग-ज्वर के चार घण्टे पूर्व १ गोली दो घण्टे के बाद फिर १ गोली, इस भांति दो-तीन दिन तक दी जा सकती हैं।

गुण—इससे सब प्रकार के विषम ज्वर दूर होते हैं। जिस मलेरिया ज्वर में तिल्ली बढ़ गई हो उसमें दो सप्ताह के अन्दर विचित्र लाभ होता है, इस से जूड़ी का वेग प्रायः एक ही दिन में दूर हो जाता है। पित्त अधिक होने पर शहद के साथ या तुलसी स्वरस से दें। अवश्य लाभ होगा

—गंगाशंकर पाण्डे निवई, उन्नाव

पूर्व प्रकाशित एवं परीक्षित दो प्रयोग—

भाग २१ अंक ४ के पृष्ठ ३३० पर चुटकुले छपे हैं। शीत ज्वर रोगी को भुनी हुई फिटकिरी १ मा॰ बतासे या मिश्री के साथ देने से ज्वर वेग शीघ्र रुक जाता है। प्रयोग उत्तम है।

भाग २१ अंक ५ के पृष्ठ ३७० पर आमातिसार पर उत्तम योग नामक प्रयोग में—

—आंवला सूखा और धनियां समभाग काला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमक थोड़ा सा। आंवला और धनियां थोड़ी देर जल में भिगोकर चटनी समान पीसकर थोड़ा २ चटावें, बहुत लाभदायक साबित हुआ है।

—पं० हृदयनारायण पाण्डेय वैद्यशास्त्री, करहंसी।

लवण रस—

शुद्ध पारद	शुद्ध गंधक
सेंधा नमक	काला नमक
सांभर नमक	समुद्र नमक

—प्रत्येक २-२ तोला

– पारा गंधक की प्रथम कज्जली करके फिर नमक मिलाकर छोटी कटेरी के मूल का स्वरस उपरोक्त सब औषधियों से ३ गुना डाल खरल कर शीशी में रखलें।

मात्रा–१ रत्ती से ३ रत्ती तक बलाबल विचार कर बकरी या गाय के दूध की दही में प्रातः सायं सेवन करायें। जिस रोगी को प्यास अधिक हो उसे विशेष लाभप्रद होगा।

गुण—जीर्ण ज्वर, शोथ, कासादि में लाभप्रद है। प्रारम्भिक टी. बी. में भी उत्तम है।

– वैद्य भूषण पं० रामचन्द्र जी शर्मा, अम्बाला।

वमन हर वटी--

—कपूर कचरी (कपूर कांचली) का कपड़छन चूर्ण एक सेर स्वर्णगैरिक २ तोला, मिला कर पानी के साथ चने बराबर गोली बनालें। गोली बनाते समय थोड़ा गोंद का पानी डालने से गोली अच्छी और जल्दी बन जाती हैं।

मात्रा–८ से १२ गोली ठंडे जल से दें।

गुण–वमन को तुरन्त बन्द करती है, निर्दोष वस्तु है। आबाल वृद्ध और सगर्भा को भी दे सकते हैं। अच्छी काम देती है।

वमन हर पाउडर—

- निम्बू के रस निकाले हुए छिलकों को लोहे के बर्तन में रख कर अग्नि पर रख दें। जब अन्दर से धुआं निकले और जलने लगे तब ऊपर से ढंक देना चाहिए। काली भस्म बन जायगी।

मात्रा–दो रत्ती मधु के साथ देने से वमन बंद हो जाती हैं।

मलेरिया ज्वर में—

—ठंड रोकने के लिये स्फटिका (फिटकरी) दो रत्ती खांड के साथ देने से ठंड रुक जाती है और तृतीयक ज्वर नष्ट होता है।

—वैद्य रविशंकर सी० पुरोहित आ० वि०, बड़ौदा

प्राणिज औषधि

राजयक्ष्मा की प्रथमा एवं द्वितीयावस्था में—

१—एक जिन्दा मक्खी २ माशा गुड़ में लपेट कर निगलवा दें, ऐसी क्रिया २ दिन का नागा देकर २१ बार करें।

२ बकरे की कलेजी ताजी कच्ची ६ माशा पीस कर ६ माशा शहद मिला कर चटावें। दोनों योग रोगी को न बतावें। कलेजा वाली दवा १ दिन का नागा देकर प्रातः केवल १ मात्रा ही चटावें, यह दोनों दवा देने के १ घंटा बाद तक पानी न पिलावें। एक घंटा के बाद अगर रोगी पानी मांगे तो कच्चा बथुआ (श्वेतकुष्माण्ड) का स्वरस करीब आध पाव पिलादें। उसके कुछ और देर बाद अगर रोगी की इच्छा हो तो जल पीने को दे सकते हैं। दवा खाने के समय मुंह साफ करने के लिए कुल्ली करा सकते हैं।

एक्जिमा [उकवत पर]—

- कछुऐ की हड्डी जलाकर महीन पीसलें, जहां पर उकवत हो वहां तीसी-कड़ू नारियल तिल इनमें से किसी का भी तैल लगादें। ऊपर से पिसी हुई हड्डी का चूर्ण बुरक दें। ३-४ घण्टे के बाद अपने पेशाब से जो कि पहले से इकट्ठा करके रक्खे रहें धो दें। इस प्रकार करने से अवश्य लाभ होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…—गंज के लिये जहां के बाल झड़ गए हों

जिन्दा खटमल १० अदद

जमालगोटा की गिरी ३ अदद

…में पीस कर जल के साथ लेप करदें। ६-७ बार करनेपर बाल जम जांयगे। पहले कुछ दाने निकलेंगे, परन्तु वह ठीक हो जांयगे। अगर उक्त स्थान पर ज्यादे खुजली हो तो नारियल के तैल में नीम की छाल पीस कर या घिस कर दो बार बार लगादें।

—श्री० बद्रीनाथ जी "मस्त" गोरखपुर।

…वाल रोग पर अनुभूत प्रयोग—

…उत्तम गेरू १ तोला श्वेत फिटकरी ४ तोला प्रथम स्फटिका को किसी मिट्टी के पात्र में अग्नि पर रख कर गलावें। जब गल कर ठंडी होजावे तब उसमें गेरू का चूर्ण डाल लकड़ी से चला अच्छी तरह मिल जाने पर नीचे उतार लें और शीतल होजाने के पश्चात् खरल में अच्छी तरह घोट मोटे वस्त्र से छानलें। बाद में काले पत्थर के खरल में २-३ घंटे घोट कर कांच की डाट वाली शीशी में भर कर सुरक्षित रक्खें। नेत्रों के पलकों के अन्दर के बालों को प्रथम किसी चिमटी से उखाड़ कर प्रातः-सायं दोनों समय २ सप्ताह या १ माह तक अंजन करने से परवाल सम्बन्धी संपूर्ण विकार नष्ट होकर आंखें पूर्ववत् विशुद्ध हो जाती हैं।

—श्री० डा० माधवलाल सी० त्रिपाठी, वै०शा० हिंगनघाट।

…हिस्टेरिया शान्तकर-

शु० कुचला १० तोला भीमसैनी कपूर ५ तोला …नों को खरल में डाल ब्राह्मी क्वाथ या रस के साथ …कर २-२ रत्ती की गोली बनालें।

मात्रा—१ गोली से २ गोली तक। हिस्टेरिया …दौरे में ठंडे जल के साथ १-१ मात्रा २-२ घंटे के अन्तर से देनी चाहिए। दौरा बन्द होजाने पर प्रातः सायं १-१ मात्रा २० दिन तक लेनी चाहिए।

जाड़ा-बुखार के लिये —

धतूरे के काले बीज १ सेर लेकर हांडी में बन्द कर फूंकलें। हांडी शीतल होने पर दवा निकाल पीसकर रखलें।

बुखार बढ़ने से २ घंटा पहिले और एक घंटा पहिले १-१ पुड़िया शहद के साथ सेवन करावें।

मात्रा—बच्चों को १ रत्ती और बड़ों को ४ रत्ती तक दें।

गुण- यह दवा जाड़े के बुखार के लिए तो उपयोगी है ही, क्षय के रोगियों को जिनको सर्दी लगकर बुखार बढ़ता है या जिन रोगियों को दिन रात में २-३ बार बुखार बढ़ता है उनके लिए अत्युपयोगी प्रमाणित हुई है।

—वैद्य० पं० शंकरदत्त जी गौड़ राजवैद्य, जबलपुर।

मलेरिया हर वटी—

शुद्ध सोनागेरू, शुद्ध फिटकरी, करंज की मिंगी शुद्ध धतूरा बीज सम भाग। कूट-पीस कर जल से १-१ रत्ती की गोलियां बनालें। पारी का बुखार, शीत लग कर आने वाला बुखार, सर्दी खांसी का बुखार, कफ ज्वर आदि में अनुभूत है।

मात्रा—पारी के बुखार में बुखार आने के ४ घंटा पूर्व १ गोली जल से पुनः १-१ घंटा के अनन्तर तीन गोलियां खिलादें, और रोगी को कपड़ा उढ़ा दें। कफ ज्वर में शहद से १-१ गोली दें, बच्चे को आधी या चौथाई मात्रा दें।

खून बन्द करने की दवा—

संग-जराहत का चूर्ण ३ माशा शहद से खिलाया जाय तो तीन-चार मात्रा खाने पर मुंह से खून जाना, मासिक धर्म के समय अधिक खून जाना बन्द हो जाता है।

—वैद्य सियाप्रसाद अष्ठाना, आयुर्वेद रत्न बसन्त पट्टी, शिवहर (मुजफ्फरपुर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद को खुला चैलेञ्ज ।

लेखक- श्री० कविराज युगलकिशोर जी गुप्त, डी० आई० एम० एस०,
गांधीनगर, कानपुर ।

"जनरल आफ दी इण्डियन मेडिकल एसोसियेशन" नामक एलोपैथिक चिकित्सकों की एक प्रमुख मासिक पत्रिका है जिसके फरवरी सन् १९४८ के अंक में पृष्ठ १७३ पर अंग्रेजी भाषा में एक विशेष लेख प्रकाशित किया गया है जिसमें 'गवर्नमेंट आफ इण्डिया, डिपार्टमेंट आफ हेल्थ की कमेटी आफ इनडिजिनस सिस्टम्स आफ मेडिसन' द्वारा किये गये प्रश्नों का 'इण्डियन मेडिकल एसोसियेशन की सब-कमेटी ने उत्तर दिया है, जिसका हिन्दी भाषा में अनुवाद करके भारतवर्ष के समस्त वैद्यों और हकीमों की जानकारी के लिये 'धन्वन्तरि' में प्रकाशनार्थ प्रस्तुत कर रहा हूं। वैद्यों को इस प्रश्नोत्तरी पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये और अपने संगठन को अविलम्ब मज़बूत एवम् दृढ़ बना लेना चाहिये ताकि निकट भविष्य के किसी भी सम्भावित आन्दोलन में हम उसका दृढ़ता-पूर्वक सामना कर सकें। अब हम उस प्रश्नोत्तरी को नीचे प्रेषित करते हैं।

प्रश्न १-

स्वदेशी चिकित्सा-प्रणालियों की क्या विशेषतायें हैं कि जनता उनकी विशेष तौर से प्रशंसा करती है ?

उत्तर १-

(ए) स्वदेशी चिकित्सकों का सरलता-पूर्वक प्राप्त हो सकना।

(बी) स्वदेशी चिकित्सा की अपेक्षा उत्तम वैज्ञानिक चिकित्सा के लिये सुविधाओं का न होना।

(सी) प्राचीन काल से स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों का परिचय और उनके गुणों पर विश्वास।

(डी) स्वदेशी चिकित्सा सस्ती होने का विश्वास।

(ई) भारतीय चिकित्सा प्रणालियों का भारतवासियों के लिये सबसे अधिक अनुकूल होने का विश्वास।

(एफ) स्वदेशी चिकित्सकों द्वारा प्रायः हर एक व्याधि में व्याधि-निवारण कर देनेका वायदा करना।

(जी) धार्मिक पवित्रता का तेज।

(एच) पुनर्प्रचलनीय प्रवृत्ति के साथ-साथ राष्ट्रीय और राजनैतिक उमंग एवम् उत्साह जो कि स्वभावतः यथार्थ रूप में पहले से ही भारतीय है और पाश्चात्य के प्रतिकूल है।

प्रश्न २-

यहां की जनता के स्वास्थ्य की दृष्टि से स्वदेशी चिकित्सा-प्रणालियों के क्या २ विशेष रूप हैं जो कि उनको एक प्रथक और सर्वोत्तम प्रतिष्ठा प्रदान करती है ?

उत्तर २-

जो कुछ भी हो एक भी नहीं है। जनता के स्वास्थ्य की दृष्टि से स्वदेशी प्रणालियों के कोई भी प्रथक और विशेष रूप जो कि उनको सर्वोत्तम प्रतिष्ठा प्रदान कर सके, होने के विपरीत स्वदेशी प्रणालियों में कई एक दोष हैं विशेषतया उनमें जनता के स्वास्थ्य-विषयक अथवा प्रतिषेधक चिकित्सा (प्रीवेन्टिव मेडिसन) का कोई विशेष विभागों का न होना। वास्तव में ये स्वदेशी चिकि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रणालियां जैसा कि वे इस समय हैं, अपनी २ व में भिन्न हैं जिनमें रोगों की उपशयात्मक त्सा तो है किन्तु उनका प्रतिषेध (प्रिवेन्शन) है। इतिहास के अनुसार प्रतिषेधक चिकित्सा आरम्भ अभी हाल ही में हुआ है जो कि णु-विज्ञान और क्षमता विज्ञान की उन्नति के २ प्रकट हुई है।

न ३–

स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों में कोई विशेष अनुसन्धान आपने किया है, कृपया अपनी अनु-धान सम्बन्धी प्रकाशन की प्रतियां भेज दीजिये ?

र ३–

वैज्ञानिक चिकित्सा प्रणाली (जो कि गलती से धिक चिकित्सा प्रणाली कहलाती है) के कुछ ों ने उदाहरणार्थ स्वदेशी प्रणालियों में बत-ाए गए कई एक सिद्धांत और औषधियों पर खोज है। कुछ औषधियां जो कि गुणप्रद पाई गईं, न फार्मेकोपिया में स्वीकृत करके मिला ली हैं, जब कि आधार भूत सिद्धांतों को स्थिर नहीं या जा सका है।

न ४–

तिक परीक्षा को मिलाकर क्या कोई स्वदेशी त्सा प्रणालियों की विशेष रासायनिक परी-क्षा या विधियां हैं जिसे आप प्रयोग करते हों ?

र ४—

नाड़ी देखने और साधारण निरीक्षण करने के रिक्त वैद्यों और हकीमों ने कभी भी यह दावा किया है कि उनकी चिकित्सा-प्रणालियों में क परीक्षा करने की कोई विधि है। स्वदेशी लियों के चिकित्सक कोई भी स्वदेशी प्रणालियों विशेष रासायनिक परीक्षायें या विधियां नहीं या करते हैं। वास्तव में उनका निदान लक्षण-ज्ञान और त्रिदोष की विगुणता इत्यादि पर र करता है।

प्रश्न ५--

इण्डियन मेडिकल काउन्सिल के द्वारा नियन्त्रण की भांति क्या आप स्वदेशी चिकित्सा की शिक्षा और अभ्यास (प्रैक्टिस) पर किसी प्रकार के नियन्त्रण के पक्ष में हैं ?

उत्तर ५

हां, (१) इस समय जितनी भी स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों की शिक्षण संस्थायें हैं, उनमें अब से सभी प्रवेश (एडमिशन) तुरन्त बन्द कर दिये जाने चाहिये, इस दृष्टि से कि उनको कम से कम समय के अन्दर समाप्त कर दिया जाये।

(२) किसी भी नवीन संस्था को जो स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों की शिक्षा दे, खोलने की आज्ञा न दी जाये।

(३) अभ्यास करते हुए वैद्यों और हकीमों को राज्य के नियन्त्रण में लाना चाहिए।

प्रश्न ६--

स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों की उपयोगिता को बढ़ाने के लिये आप क्या उपाय बतला सकेंगे।

प्रश्न ७—

बतलाए गए उपाय आरोग्य प्रणाली की एक विस्तृत विधि का अंश किस प्रकार से बनाए जा सकते हैं।

उत्तर ६, ७--

स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों के लिए जैसा कि वे हैं, इससे ज्यादा उपयोगी बनाने के लिये यत्न करना व्यर्थ है। यदि हम वर्तमान ज्ञान के प्रकाश में उनको संशोधित करने के लिये खोज करें तो प्रत्यक्षतया वे आधुनिक वैज्ञानिक चिकित्सा की एक सी शाखायें हो जायेंगी। अतएव इसके प्रतिकूल यत्न होना चाहिए अर्थात इन स्वदेशी प्रणालियों में जो कुछ भी वैज्ञानिक अनुसन्धान की परीक्षाओं में ठीक उतरे, उसे आधुनिक वैज्ञानिक चिकित्सा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोषित एवम् सम्मिश्रित कर लेना चाहिये। यह यत्न जो कि युक्तियुक्त है, सरल, कम खर्चीला और गुणकारी होगा तथा समानान्तर संस्थाओं में उसी या उसी प्रकार के विषयों के शिक्षण के दुहराने को रोक देगा।

प्रश्न ८

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य-सेवा (हेल्थ सर्विस) के किसी सम्मिश्रित प्रणाली में वर्तमान वैद्यों और हकीमों से किस प्रकार लाभ उठाया जा सकता है।

उत्तर ८—

स्वदेशी प्रणालियों के वर्तमान चिकित्सकों को, वैज्ञानिक चिकित्सा-प्रणाली के योग्य बनाने के लिए, उनके लिए विशेष शिक्षा के यथोचित पाठ्यक्रमों को तैयार करके, वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा शिक्षित अधिकारियों के आधीन अस्पतालों, औषधालयों, विज्ञानशालाओं और स्वास्थ्य सेवा की नौकरियों में सहायकों (असिस्टैंट), टेक्नीसियन्स और स्वास्थ्य कर्ताओं के रूप में लेकर लाभ उठाया जा सकता है।

प्रश्न ९—

स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों की शिक्षा की सुविधाओं को बढ़ाने के लिए क्या उपाय किये जा सकते हैं।

क्या सम्पूर्ण भारतवर्ष में इन प्रणालियों की शिक्षा और परीक्षा का एक सा आदर्श स्टैन्डर्ड) होना चाहिए।

उत्तर ९—

स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों की शिक्षा को बढ़ाने के उनके वर्तमान विषयों के लिए कोई भी सम्भव सुविधायें नहीं दी जा सकती हैं। स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों की विशेष संस्थाओं में वर्तमान शिक्षा को समाप्त कर देना चाहिए।

जहां तक वैज्ञानिक चिकित्सा की शिक्षा का सम्बन्ध है, केवल एक ही श्रेणी की चिकित्सा सम्बन्धी संस्थायें होनी चाहिए जो कि सभी आधारभूत वैज्ञानिक व्याधि-पूर्व और व्याधि के समय के विषयों की वर्तमान पाठ्यक्रम के अनुसार मेडिकल काउन्सिल आफ इन्डिया (भारतीय चिकित्सा सभा) के आधीन रहकर शिक्षा दें।

प्रश्न १०—

क्या पाश्चात्य चिकित्सा के विद्यार्थियों को स्वदेशी चिकित्सा प्रणाली की शिक्षा दी जानी चाहिए। यदि दी जाए तो उनकी शिक्षाओं की किस अवस्था पर?

उत्तर १०—

हम किसी भी वस्तु को जिसे 'पाश्चात्य चिकित्सा' के नाम से पुकारा जा सके, स्वीकार नहीं करते। वैज्ञानिक चिकित्सा के विद्यार्थियों को केवल उन्हीं स्वदेशी औषधियों की क्रिया और गुणों को पढ़ाया जाना चाहिए जो कि पर्याप्त अनुसन्धान और प्रयोगों के पश्चात् गुणप्रद पायी गई हैं और इन्डियन फार्मेकोपिया, जिसे कि तुरन्त बिना बिलम्ब के तैयार किया जाना चाहिए. में सम्मिश्रित कर ली गई हैं। इस प्रकार की शिक्षा उस समय दी जानी चाहिए जब कि मेटेरिया मेडिका, फार्मेकोलाजी और थेराप्यूटिक्स(औषधि गुण-धर्म क्रिया विज्ञान) के विषयों को पढ़ा दिया गया हो।

प्रश्न ११—

क्या आप भारतवर्ष में आयुर्वेदिक, यूनानी और पाश्चात्य प्रणालियों को मिला कर एक ही चिकित्सा प्रणाली को प्रसारित करने के पक्ष में हैं। यदि पक्ष में हैं तो आपके क्या सुझाव हैं?

उत्तर ११—

हां, वैज्ञानिक चिकित्सा की सम्पूर्ण प्रणाली जो कि चार शताब्दियों के परिश्रम के पश्चात स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों का उन्नत वैज्ञानिक रूप होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, को इसी रूप में स्वीकृत कर लिया जाना चाहिए और इसमें, विगत काल का नहीं अपितु आज की स्वीकृत वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा किये गए अनुसन्धान और प्रयोगों से, विदेशी चिकित्सा प्रणालियों में से जो सबसे अधिक लाभप्रद पाई गई है, उनको जोड़ दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक चिकित्सा के विशारदों (ग्रेजुएट्स) को स्वदेशी प्रणालियों के इतिहास, सिद्धांत और अभ्यास में, विशारदान्तर अध्ययन (पोस्ट ग्रेजुऐट स्टडीज) के लिए सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए और देश में चिकित्सा सम्बन्धी संस्थाओं के विभिन्न विश्वविद्यालयों को उनके अनुसन्धान विभागों में एक पद स्वदेशी चिकित्सा में अनुसन्धान के लिए बढ़ा देना चाहिये।

भारतवर्ष के समस्त आयुर्वेदीय संगठनों यथा अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद कांग्रेस; प्रांतों, जिलों और नगरों की वैद्य सभाओं, आयुर्वेदिक कालेजों के अध्यापकों एवम् विद्यार्थियों—सबको यथाशीघ्र विशेष मीटिंगें बुलाकर इसका प्रबल विरोध प्रदर्शित किया जाना चाहिए। एलोपैथिक चिकित्सकों के ये प्रचार 'आयुर्वेद को खुला चैलेंज' हैं।

इस प्रश्नोत्तरी का सम्यक्तया अध्ययन करने के पश्चात् हम कुछ निश्चित तथ्यों तक पहुँच सके जिसका स्पष्टीकरण कर देना मैं आज की विषम परिस्थिति में नितान्त आवश्यक समझता हूँ। इण्डियन मेडिकल जरनल, जो कि भारतवर्ष के एलोपैथिक चिकित्सकों का प्रमुख मासिक-पत्र है, के कुछ अङ्कों को पढ़ने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ है। समय-समय पर इस पत्र में आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धतियों तथा उनके चिकित्सकों अर्थात् वैद्यों और हकीमों के विषय में बहुत कुछ उल्टी-सीधी बातें प्रकाशित की गई हैं। इतना सब कुछ होते हुये भी वैद्य-समाज ने कभी भी इन प्रकाशनों पर न तो अपना कोई मत व्यक्त किया और न इसका विरोध ही किया। इसका कारण मैं भली प्रकार समझता हूँ। बात यह है कि अधिकांश वैद्यों को इस मासिक-पत्रिका को पढ़ने का अवसर ही नहीं मिला, तब फिर वैद्यों को किस प्रकार मालूम हो कि इन एलोपैथिक चिकित्सकों ने क्या-क्या जहरीला प्रचार किया है। इन एलोपैथिक चिकित्सकों ने सरकार को जिस तरफ चाहा, उस तरफ मोड़ लिया। जब तक यहां विदेशी सरकार रही, तब तक एलोपैथिक चिकित्सकों की इच्छा के अनुसार ही सारा काम होता रहा है, इसका प्रमाण इस 'जरनल' की पिछली प्रतियों को देखने से स्पष्टतया मालूम हो जाता है। भारत अब स्वतन्त्र है, मुझे विश्वास है कि भारतीय संघ की राष्ट्रीय सरकार पिछली अंग्रेजी सरकार की तरह गलती न करेगी। इन एलोपैथिक चिकित्सकों ने वैद्यों और हकीमों पर कई बार घातक प्रहार किये हैं जिसका पता तक वैद्यों को नहीं चलता रहा है क्योंकि वैद्य-गण इनकी कार्य-वाहियों को, जिसे ये लोग समय-समय पर अपने 'जनरल' में प्रकाशित करते रहे हैं, नहीं जान सके हैं।

एलोपैथिक चिकित्सक अपने को विज्ञान का ठेकेदार समझते हैं। आयुर्वेद के इन नवीन कालेजों को जिनमें आयुर्वेद के साथ-साथ एलोपैथिक का भी ज्ञान कराया जाता है, ये एलोपैथिक चिकित्सक बन्द करवा देना चाहते हैं। इस समय यह समस्या बहुत जटिल रूप धारण कर चुकी है। वैद्यों का कहना है कि मेडिकल कालेज बन्द करवा दिये जायें और एलोपैथिक का ज्ञान जितना आवश्यक हो, उतना इन्हीं आयुर्वेदिक कालेजों में ही कराया जाये। इधर डाक्टरों का कहना है कि आयुर्वेदिक-यूनानी कालेज बन्द कर दिये जायें और आयुर्वेद यूनानी की जितनी चीजें आज के विज्ञान से ठीक और लाभप्रद पायी जायें, वे इन्हीं मेडिकल कालेजों में पढ़ा दी जाया करें। किन्तु यह इस जटिल समस्या का वास्त-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक हल नहीं है। आयुर्वेद के सिद्धान्त चाहे कितने भी प्राचीन क्यों न हों, वे सत्य हैं जिस तरह से कि मनुष्य चाहे कितना भी बूढ़ा क्यों न हो जाये, वह मनुष्य ही रहेगा, जानवर नहीं हो जायेगा। उसी प्रकार आयुर्वेद के सिद्धान्त चाहे कितने भी प्राचीन क्यों न होते जायें, सत्य ही रहेंगे असत्य नहीं होसकते, क्योंकि आयुर्वेद का सिद्धान्त वात पित्त कफ पर आश्रित है जो कि आज भी वही हैं जैसे कि लाखों वर्ष पूर्व थे, अतएव सिद्धांत ग़लत नहीं हो सकते। फिर क्या बात है कि एलोपैथ त्रिदोष का सिद्धान्त स्वीकार नहीं करते। बात असल में यह है कि ये एलोपैथ अपने को प्रगतिशील समझते हैं यानी इनके यहां जिस व्याधि का कारण १०० वर्ष पूर्व कुछ माना जाता था, आज वह रद्दी की टोकरी में पड़ा है और उनकी जगह पर रोग के नये कारण बन गए हैं। इसी प्रकार चिकित्सा में भी २०० वर्ष पूर्व जो औषधियां इनके यहां किसी रोग के लिए अनुभूत समझी जाती थीं, आज वे निष्क्रिय बतला दी गयीं हैं और इसी प्रकार वे आयुर्वेद के लिए भी कल्पना करते हैं कि आयुर्वेद का विज्ञान तो ४ हजार साल से भी पहले का है, अतएव वह भी आज के रोगों को सचमुच ठीक नहीं कर सकता। किन्तु यह इन अल्पज्ञ डाक्टरों का मिथ्या भ्रम मात्र है।

कुछ काल पूर्व इन एलोपैथिक चिकित्सकों ने अपने 'जनरल' में प्रकाशित किया था और बहुमत से स्वीकार भी किया गया था कि एलोपैथिक चिकित्सा की शिक्षा का माध्यम अंगरेजी भाषा ही रहनी चाहिए क्योंकि अंगरेजी भाषा संसार के चिकित्सा क्षेत्र में सर्वत्र एक सी ही प्रयुक्त होती है। इसका तात्पर्य स्पष्ट है कि ये अपने देश की भाषा को, अपने देश के विज्ञान का संसार में प्रसारित न कर के अपितु बाहर की भाषा को, बाहर के विज्ञान को हमारे देश में प्रसारित करना चाहते हैं। किन्तु आज वे घबड़ा रहे हैं, आज जनता की भावना को किसी भी रूप में दबाया नहीं जा सकता। अब तो प्रत्येक प्रकार की शिक्षा हिन्दी आदि प्रान्तीय भाषाओं में ही होंगी जिससे कि ये डाक्टर विशेष रूप से परेशान से नजर आ रहे हैं। आजकल के वर्तमान आयुर्वेदिक कालेजों में हिन्दी भाषा के माध्यम द्वारा आयुर्वेद और एलोपैथिक चिकित्सा का तुलनात्मक ज्ञान प्राप्त कराया जाता है किन्तु उसका आदर्श या स्टैण्डर्ड बहुत निम्न कोटि का है। जिसे कि अविलम्ब उच्च कोटि का बनाने की नितान्त आवश्यकता है, जिसके लिए वैद्य वर्ग विशेष रूप से चिंतित हैं। यह कार्य बिना राजकीय सहायता के कदापि सम्भव नहीं है। सरकार इस समय इसी द्विविधा में पड़ी है कि वास्तव में क्या करना चाहिए और क्या करना उचित होगा? इसीलिए वह डाक्टरों से भी परामर्श ले रही है किन्तु ये डाक्टर सरकार को कहीं किसी गहरी खाई में ले जाकर न पटक दें, यही सबसे बड़ा खतरा इस समय है। मेडिकल कालेजों की शिक्षा भी यदि हिंदी आदि प्रान्तीय भाषाओं में होने लगी तो निश्चय पूर्वक वे वर्तमान आयुर्वेदिक कालेजों के समकक्ष ही हो जांयगे जिससे कि सचमुच एलोपैथिक चिकित्सक घबड़ा रहे हैं। वे यह चाहते हैं कि जब तक मेडिकल कालेजों की शिक्षा प्रणाली हिन्दी आदि में प्रस्तुत हों और उनकी शिक्षा हिन्दी आदि में आरम्भ हो, तब तक ये आयुर्वेदिक कालेज निश्चयपूर्वक समाप्त हो जाने चाहिए अन्यथा आपस में बड़ी प्रतियोगिता का सामना करना पड़ेगा। आज के आयुर्वेदिक कालेजों से निकले हुए वैद्य एलोपैथिक चिकित्सा में सिद्ध-हस्त इसीलिए नहीं होते हैं क्योंकि उनको एलोपैथिक का अधूरा ज्ञान दिया जाता है, उनको एलोपैथिक का सबसे प्रमुख विषय जिसे मेटेरिया मेडिका, फारमेकोलाजी और थेराप्यूटिक्स (अर्थात औषधि गुण-धर्म-क्रिया विज्ञान) कहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय बिलकुल पढ़ाया ही नहीं जाता, जब कि को चतुर्थ और पंचम वर्ष में एलोपैथिक चिकित्सा, री (शल्य), शालाक्य आदि का ज्ञान कराया ता है। जरा सोचने की चीज है कि यदि आपको न बतलाया जाये कि हरड़ के क्या गुण हैं, हरड़ स प्रकार से दस्त लाती है और किस प्रकार से तिसार को रोक देती है, इत्यादि और आपको इतना ही बतला दिया जाए कि हरड़ अतिसार, बन्ध आदि में लाभप्रद है तो निश्चयपूर्वक जब हरड़ का प्रयोग करेंगे तो आप धोखा खा गे, जहां आपको दस्त बंद करना है, वहां की अज्ञानता से रोगी को दस्त और बढ़ सकते जहां आपको दस्त लाना है, वहां दस्त बन्द हो ता है। इसी प्रकार आज के आयुर्वेदिक कालेजों पाठ्यक्रम में त्रुटियां हैं, उन्हें यह तो बतला दिया ता है कि अत्यधिक पीड़ा होने पर मार्फिया का जेक्शन लगाने से तुरन्त पीड़ा शान्त हो जाती है, फलिस (फिरंग) में एन० ए० बी० सल्फा आर्सी-न, बिस्मोक्टाब इत्यादि का इंजेक्शन दिया जाता किन्तु उन्हें यह कभी पढ़ाया ही नहीं जाता कि र्फिया इत्यादि अपनी क्रिया किस प्रकार से करती इस अज्ञानता के कारण माफिया का इंजेक्शन र वैद्य निश्चयपूर्वक रोगी को हानि पहुंचा ता है। अतएव आयुर्वेदिक कालेजों में यद्यपि समय तुलनात्मक ज्ञान तो कराया जाता है किंतु रा ज्ञान कराया जाता है यानी स्टैन्डर्ड बहुत ा हुआ है। इसी स्टैन्डर्ड को ऊपर उठाने की रत है। तब यह जरूरत न रह जायेगी कि कल कालेजों को क़ायम रक्खा जाए। यही क्षा वैद्यों को नहीं दी जा रही है और इसी क्षा को न देने के लिये एलोपैथ सरकार पर व डाल रहे हैं कि इन वैद्यों को, इन आयुर्वेदिक लेजों को इससे अधिक सुविधा न दी जाये बल्कि कालेजों को ही बन्द कर दिया जाये।

एलोपैथ आयुर्वेदिक चिकित्सा विज्ञान में मिर्चे

की बातें करते हैं। मैं भारत के समस्त एलोपैथिक चिकित्सकों से यह पूंछता हूँ कि विज्ञान कहते किसे हैं? क्या जिस आधुनिक विज्ञान का वे ढोल पीटते हैं, वास्तव में वह विज्ञान है? विज्ञान का अर्थ विशेष ज्ञान या यथार्थ ज्ञान होता है। क्या वर्तमान विज्ञान इस दृष्टि से विज्ञान है? मैं इसे कदापि स्वीकार नहीं कर सकता। आज जिस कीटाणु को वे किसी व्याधि-विशेष का कारण मानते हैं, कल दूसरा वैज्ञानिक उसे ग़लत सिद्ध कर देता है और तब फिर उस दूसरे वैज्ञानिक की बात ये लोग मानने लगते हैं और इसके बाद तीसरा वैज्ञानिक आता है और वह कहता है कि ये दोनों ग़लत हैं और वह एक तीसरी बात को सिद्ध करके सामने रख देता है, तब ये लोग उस तीसरे वैज्ञा-निक की बात मानने लगते हैं। क्या यही विज्ञान है? यह विज्ञान नहीं, महाशय! इसे भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सक अज्ञान कहते हैं? और वास्तव में यह अज्ञान है उसी प्रकार से जिस प्रकार से रात में पड़ी हुई रस्सी को बहुत से लोग सांप समझ बैठते हैं और बाद में पता चलता है कि वह सांप नहीं रस्सी है।

एलोपैथ स्वीकार करते हैं कि आधुनिक वैज्ञा-निक चिकित्सा प्रणाली अर्थात् एलोपैथी ४०० वर्ष के घोर परिश्रम के बाद स्वदेशी चिकित्सा प्रणाली का उन्नत वैज्ञानिक रूप होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। किन्तु खेद है कि इन ४०० वर्षों में जो कुछ भी अनुसन्धान इन वैज्ञानिकों ने स्वदेशी चिकित्सा प्रणाली में किया है, वह आयुर्वेद विज्ञान का १००वां भाग भी नहीं है। इस दृष्टि से इनका अनुसन्धान यदि चालू रक्खा जाए तो सचमुच इसमें ४० हजार वर्ष अभी और लगेंगे और इसमें कितना धन व्यय हो जायगा, कहा नहीं जा सकता। फिर भी कोई गारंटी नहीं कि वे आयुर्वेद के समस्त

[शेष पृष्ठ ७६५ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों की सम्मतियां।

प्रश्न नं० ५१ का उत्तर—

आप सन् २४ से ३१ तक के बूटी-दर्पण पत्रों का सार 'अभिनव बूटी दर्पण' सचित्र ग्रन्थ के रूप में जो लाला रूपलाल जी वैश्य कृत मू० १०) का है। चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय पो० बक्स नं० ८ बनारस से मंगवा कर अवलोकन करें। यह संग्रह सुन्दर, सस्ता, सचित्र प्रत्येक वैद्य के देखने योग्य है।

प्रश्न नं० ५२ का उत्तर—

हिन्दी में एलोपैथिक पुस्तकें निम्न पतों से मिल सकेंगी।

(१) महादेव रामचन्द्र जागुष्टे पुस्तकालय, तीन दरवाजा, अहमदाबाद।

(२) रामनारायणलाल बुकसेलर कटरा, प्रयाग।

(३) मोतीलाल बनारसीदास गायघाट, बनारस।

(४) नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स बनारस।

आप मेटेरिया मेडिका के वास्ते बम्बई, इन्दौर आदि शहरोंके पुस्तक विक्रेताओं से पूंछ-ताछ करें; मिल जायगी।

प्रश्न नं० ५३ का उत्तर [शय्यामूत्र]—

आपको इसके लिए धन्वन्तरि-बालरोगांक के पृष्ठ २२३ और २७४ को देखना चाहिए।

बालक के पेट में कृमि की शिकायत हो तो कुछ दिन कृमि कुठार रस की १-१ गोली सुबह-शाम या कबीला चूर्ण ४ रत्ती से १ माशा तक गुड़ या शहद में ७ दिन दीजिये। इसके बाद ½ चावल अफीम सोते समय कुछ दिन दीजिए, साथ २ बच्चे को सोने से पूर्व और रात को भी १-२ बार उठाकर पेशाब करा देने की आदत डालिए।

प्रश्न नं० ५४ का उत्तर—

उत्तम काली स्याही

माजूफल (पिसा हुआ)	१० भाग
आंवला (पिसा हुआ)	४ भाग
काजल	४ भाग
कसीस हरी (पिसी हुई)	३ भाग
खेड़ी गोंद (अरबी गोंद)	२ भाग
पानी	५० भाग

—पहिले पिसे हुए माजूफल को कुल पानी में घोलकर आग पर चढ़ादे। जब जलते २ पानी आधा रह जाय तो आग से उतार कर उसमें बाकी सब दवाइयाँ भी छोड़कर खूब घोट डालें। जब अच्छी तरह घुट जाय तब उसे बड़ के पत्तों पर फैलाकर सुखालें और सूखने पर निकाल लें और आवश्यकतानुसार काम में लावें।

प्रश्न नं० ५५ का उत्तर—

सुनवहरी और बन्द ऋतु के लिये—

सुप्त कुष्ठ (सुन बहरी) के वास्ते आप यदि पंच कर्म द्वारा शुद्धि करलें तो उत्तम होगा। उसके बाद निम्न प्रयोग 'शिवनाथ सागर' का सेवन करावें।

शु० पारद	८ भाग
शु० कुचला	१० भाग
शु० गंधक	१२ भाग

त्रिकुटा	त्रिफला	शु० भिलावा
चित्रक	नागरमोथा	वच
असगंध	निर्गुण्डी	शु० बच्छनाग
कुलींजन	पीपलामूल	नागकेशर

—प्रत्येक १-१ भाग।

गुड़ २४ भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलाकर झड़बेर के बराबर गोली बनावें।

—१ से ३ गोली।

—बृहत् मंजिष्ठादि क्वाथ (शार्ङ्ग०) के साथ सेवन करावें। पथ्य में घी, दूध, खांड, बेसन या गेहूँ की रोटी सेवन करावें।

—

संखिया सफेद १ तोला को २६ दिन भेड़ के ... खरल करें और आंवले के समान गोली बनावें ... बकरी के दूध में घिसकर लेप करें। इससे ... पड़ जावेंगे, वह स्वयं ही फूट कर गन्दा मादा ... देंगे और सुन्नता को मिटा देंगे। यदि आप

[पृष्ठ ७६३ का शेष]

को विज्ञान की कसौटी पर रखकर कितनी ... प्राप्त कर सकें, कितनी नहीं। इससे तो ... अच्छा यही होगा कि आयुर्वेद विज्ञानको जो ... वैसा ही अब भी है जैसा कि हजारों वर्ष पूर्व ... इसके सिद्धान्त वही अब भी हैं, इसका निदान ... अब भी है, सब कुछ पहले जैसा ही है, ... रूप में आज के ये वैज्ञानिक स्वीकार कर लें। ... यदि कुछ कमी है तो वह यह कि हमारे बहुत ... ग्रन्थ लापता हैं, हमारी औषधियों को प्राप्त करने ... निर्माण करने की सुविधायें पहले जैसी नहीं है, ... को राजकीय सहायता वैसी नहीं मिलती जैसे ... मिलती थी। अतएव आवश्यकता इस बात ... है कि हमारे लुप्त ग्रन्थों का पता लगाया जाए, ... की औषधि प्राप्त करने और निर्माण करने की ... सुविधायें बढ़ाई जायें, हमारे सैकड़ों योग जो कि ... के सैकड़ों वर्षों से बिना परीक्षा के ग्रन्थों में ... पड़े हैं, उनके परीक्षण की सुविधायें दी जायें ... आदि।

इस विषय पर अब मैं अधिक प्रकाश नहीं ... करना चाहता। वैद्य समुदाय स्वयं इस विषय ... पर अपने विचार व्यक्त करे।

उक्त खाने की औषधि का प्रयोग न बना सकें तो सेवन करने के लिए चॉल मोगरा तेल (Oil chalmogra) जिलेटीन के केपसूल में १०-१० बूंद दिन में तीन बार सेवन करावें। पथ्य—उपरोक्त।

बन्द ऋतु खोलने के लिये—

माल कङ्गनी, राई, बच, कांटेदार चौलाई की जड़, सज्जीखार, विजयसार सब वस्तुयें समान भाग लेकर चूर्ण बनालें और इसमें से प्रतिदिन ३ माशे गोदुग्ध के साथ दें। कुछ दिनों में ही मासिक धर्म खुलकर आता है।

घरेलू उपाय—

अजमाइन	घी	५-५ तोला
गुड़		१० तोला

—प्रथम अजवाइन को ऊखल में कूटें, जब देखें कि अजवाइन तैल छोड़ने लगा तब घी को कड़ाही में डाल और उम्दा गुड़ भी डाल मंदी २ आंच से एक जान करलें और स्त्री को खिलादें। इस प्रकार ३ या ५ दिन केवल सुबह के समय नित्य ताजा बनाकर देवें।

वर्ति—

कड़वी तुम्बी के बीज, दन्तीमूल, पीपल, मैनफल, पुराना गुड़ इनको बारीक पीसकर मद्य में घोटकर छोटी अंगुली समान बत्तियां तैयार करके छाया में शुष्क करलें। एक बत्ती प्रतिदिन रात को सोते समय योनि में रखें, इसके प्रयोग करने से रज खुलकर आता है। यह योग "जेबी वैद्य" का है।

प्रश्न नं० ५६ का उत्तर—

काला दन्त मंजन

सोंठ	काली मिरच	पीपल
हरड़	बहेड़ा	आमला
सेंधव	नौसादर	भुनी स्फुटिका
माजूफल	दालचीनी	इलायची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीठे के छिलके भल्लातक के कोयला
—प्रत्येक १-१ तोला।
मोलसिरी छाल ३ तोला
लकड़ी के अंगारे पानी से बुझाए हुए
व सूखे ३ तोला
लौंग ३ माशा

—सबको वस्त्रपूत कर फिर इसमें भुना सब्ज तूतिया (नीलाथोथा) १ माशा, कपूर ३ माशा, क्रेओसोट ओयल १० बूंद, पिपरमेंट का तैल २० बूंद, मैंथोल ३० ग्रेन, यूकेलिप्टस तैल ३० बूंद, सेक्रीन २ ग्रेन। खरल में डालकर खरल कर फिर उक्त मंजन थोड़ा २ मिलाकर १ प्रहर खरल कर रखलें। मंजनवत् व्यवहार में लावें।

—आ० र० उदयलाल महात्मा — देवगढ़ (मेवाड़)

प्रश्न नं० ५९ का उत्तर—

रसांजन बनाने की विधि—

दारू हल्दी के क्वाथ से चौथाई हिस्सा बकरी का दूध उसमें मिलाकर अग्नि पर चढ़ादें और गाढ़ा हो जाने पर उतार लें, यही शुद्ध रसांजन है। इसे शोधन करने की आवश्यकता नहीं है। आजकल जो बाजार में रसांजन मिलता है उसे कूटकर १२ घण्टे तक जल में भिगोदें, पश्चात् भली-भांति मसल कर मोटे कपड़े से छानलें और इस छने हुए जल को किसी बर्तन में लेकर उबालें, जब जल गाढ़ा होने लगे तब अग्नि मंद करदें और बर्तन पर लगी हुई रसांजन को भी उसी गाढ़े जल में मिलाते रहें। शीतल होने पर इसे उपयोग में लेलें। यह नेत्रों के लिए परम उपकारी है। इसके पर्यायवाची नाम तार्क्ष्यज, तार्क्ष्य शैल, रसगर्भ, रसौत, रसाञ्जन हैं। यह चरपरा, कफ, विष और नेत्ररोगों के लिए हितकर है। यह उष्ण, रसायन, कटु, छेदन कारक और व्रण दोषों को नष्ट करता है।

प्रश्न नं० ६९ का उत्तरः—

— एक अनुभूत प्रयोग —

श्रीमान जी ! अपने रोगी को निम्न-लिखित औषधि का क्वाथ बनाकर सेवन कराइये, इससे कैसी भी दारुणखांसी क्यों न हो अवश्य दूर होगी, यदि क्षय रोग की भी शंका हो तो वह भी ईश्वरेच्छा से नष्ट होकर फैफड़े मजबूत हो जावेंगे। प्रयोग :—

अदरख अडूसे के सूखे पत्ते
अजवायन सूखा नागर बेल का पत्ता
चन्दन चूरा १-१ माशा,
काली मिर्च ७ नग पीपल १ नग

—इन सबको लेकर जौ-कुट चूर्ण बनावें तथा १ पाव जल में पोटली बांधकर काढ़ा तैयार करें। जब ५ तोला जल शेष रहे तब पोटली को निकाल कर अलग खूंटी पर लटका दें और काढ़े को शीतल होने पर पिलादें। पश्चात् शाम को उसी पोटली को दुबारा १ पाव जल में डाल कर काढ़ा तैयार करें, इस बार पोटली को भली-भांति मसल कर उसका कस इस काढ़े में निकाल लें तथा छान कर पिलादें और इस पोटली के द्रव्य को निकाल कर फेंक दें और दूसरे दिन नवीन द्रव्य लें तथा उसी विधि से काढ़ा तैयार कर के पिलावें।

गर्मी के दिनों में इसी काढ़े में मिश्री भी मिला कर शर्बत के रूप में पिलाई जा सकती है। इसका सेवन निरन्तर १२ दिन करने पर त्रिदोषज कास, महादारुण कास, क्षय नष्ट होते हैं। यह प्रयोग अत्यन्त प्राचीन और अनुभूत है।

—वैद्य खेमराज शर्मा छांगाणी आर्वी सी० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

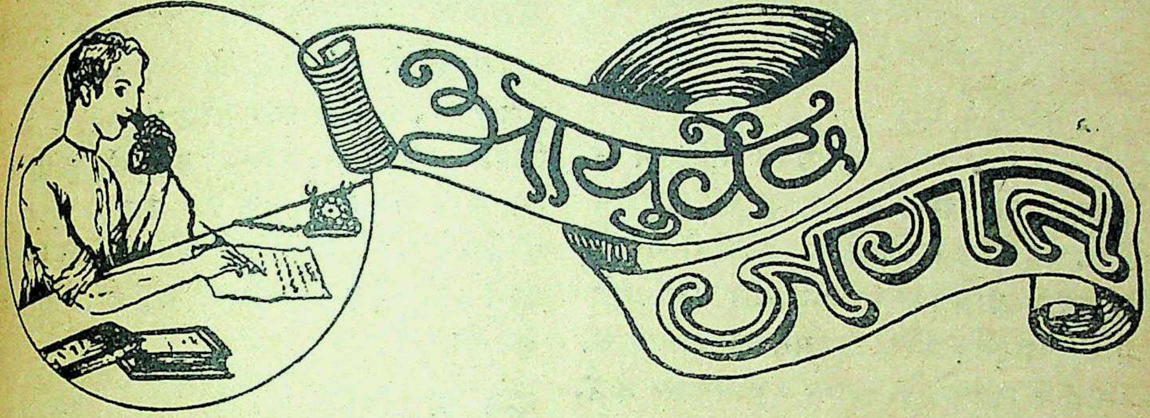

ूल जिला आयुर्वेद मंडल का वार्षिक धिवेशन--

म्युनिस्पल आयुर्वेदिक औषधालय के भवन में तीय जिला वैद्य मंडल का वार्षिक अधिवेशन राज कृष्णराव जी की अध्यक्षता में ता० १३-४- को सम्पन्न हुआ।

सभा की संगठन नियमावली सर्वसम्मति से कृत हुई और बैतूल जिले से इन्डियन मैडीशन के लिए एक वैद्य सदस्य मनोनीत करने के लिए न्तीय सरकार से सिफारिश की गई। कविराज हर्षु ल मिश्र ने अपने भाषण में अपील की कि वे म्मिलित रूपसे आयुर्वेद को राष्ट्रोपयोगी चिकित्सा ति बनाने में सरकार का सहयोग करें। संकीर्ण- वृति को हटा कर आयुर्वेद को स्वाभाविक रूप विकसित होने का अवसर दें। हर्षु ल जी के बाद ध्यक्ष महोदय ने महा कौशल प्रान्तीय वैद्यों का भेद शीघ्र दूर करने के लिए कहा और ऐसा पर प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के आगामी अधि- न को बैतूल में आमन्त्रित करने का बचन या।

जिले के सभी वैद्यों ने कविराज हर्षु लजी मिश्र को कौशल प्रान्तीय आयुर्वेद मंडल द्वारा प्राणाचार्य उपाधि प्राप्त होने के उपलक्ष में हार्दिक बधाई । तत्पश्चात् जिला के वैद्य मंडल का निम्नप्रकार नाव हुआ।

अध्यक्ष—श्री गोकुलप्रसाद जी आयुर्वेद भिषक्।
उपाध्यक्ष १-कविराज पं० हर्षु ल मिश्र आयुर्वेद रत्न
२—वैद्य बकाराम जी आयुर्वेद रत्न।
मन्त्री-वैद्यराज श्री राजुलकर जी।
उपमंत्री-१—श्री भोजराज जी आयुर्वेद भिषक्।
२—पं० श्री केशवदत्त ठाकुर वैद्य।
कोषाध्यक्ष-श्री बाबूलाल जी वैद्य।
प्रचार मंत्री-श्री केशवराव जी आयुर्वेद रत्न

सदस्य—

१—श्रीयुत शिवरतनलाल वर्मा वैद्य
२—श्रीयुत तेजीलाल जी वैद्य
३—श्रीयुत माधवराव जी वैद्य
४—श्री० श्यामराव जी वैद्य
५—श्री० शंकरराव जी वैद्य
६—श्री० कृष्णराव जी वैद्य मालगुजार, नरखेड़।

वैद्यों की नियुक्ति—

संयुक्त प्रान्तीय सरकार इस समय ५५ वैद्य और १२ हकीम ग्राम सुधार औषधालयों में रखना चाहती है। हिन्दू युनीवर्सिटी के ए० एम० एस० और शास्त्राचार्य, इण्डियन मेडिसिन बोर्ड के डी० आई० एम० एस० अलीगढ़ बी० यू० टी० एस०, दिल्ली तिब्बी कालेज, कांगड़ी गुरुकुल, लाहौर डी० ए० वी० कालेज और प्रेमगिरि कालेज के स्नातक उम्मेदवार हो सकते हैं। उम्र २५ और ४५ के बीच होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। परिगणित जाति और शरणार्थियों पर विशेष ध्यान दिया जायगा।

इण्डियन मेडिसिन बोर्ड—

यू० पी० के बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसन ने अपने पिछले अधिवेशन में सरकार से अनुरोध किया है कि वह मिल मालिकों और फैक्टरी चलाने वालों पर दबाव डाले कि स्वास्थ्य और चिकित्सा के काम में आयुर्वेद और हिकमत को अधिक से अधिक काम में लावे। इसी तरह म्युनिसिपल बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों से कहा गया है कि अपने यहां के वैद्य-हकीमों का वेतन ग्राम सुधार के वैद्य हकीमों के समान रखें। यह भी सरकार से अनुरोध किया गया कि आयुर्वेद को (जिसमें यूनानी शामिल है) राष्ट्रीय चिकित्साविज्ञान घोषित किया जावे। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्युनिसिपल बोर्डों में डी० आई० एम० एस० और ए० एम० एस० ठीक ही है किंतु ए० एम० एस० के अतिरिक्त वे वैद्य-हकीम भी रखे जावें जो उन संस्थाओं से उत्तीर्ण हैं जिन्हें बोर्ड ने रजिस्ट्री के लिये स्वीकार किया है। जेलों में कैदियों की स्वास्थ्य-रक्षा और चिकित्सा के लिये वैद्य और हकीमों की भी नियुक्ति हो। सरकार से यह भी कहा गया है कि प्रांतीय पबलिक हेल्थ कमेटी में वैद्य और हकीमों का भी प्रतिनिधित्व रहे और रेडियो के ब्राडकास्ट के स्वास्थ्य प्रचार में आयुर्वेद का अधिक उपयोग किया जावे। बोर्ड का एक केन्द्रीय पुस्तकालय रखना स्वीकार हुआ जिसमें प्रान्तीय सरकार से २५ हजार रुपये की सहायता मांगी गई है। सरकार से यह भी प्रार्थना की गई कि सरकारी आदर्श आयुर्वेद कालेज तुरन्त खोला जावे। एक महिला आयुर्वेद कालेज खोलने की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया। यह भी तय हुआ कि यूनानी कालेजों के लिये भी हिन्दी का माध्यम स्वीकृत हो और इस वर्ष यूनानी कालेजों के प्रश्न पत्र हिन्दी और उर्दू दोनों में हों और आगामी वर्ष केवल हिन्दी में रहे।

एक रोग चिकित्सक रजिस्टर्ड नहीं हो सकता

बम्बई के मेडिसिन बोर्ड ने योग्य अध्यापक सुलभ होने के लिये एक पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स तैयार किया है। बवासीर, भगन्दर और फिरङ्ग की चिकित्सा करने वाला एक वैद्य का मामला बम्बई बोर्ड के सामने आया है। किसी एक रोग की चिकित्सा करने वाले वैद्य की रजिस्ट्री नहीं हो सकती, ऐसा बोर्ड का मत है।

बोर्ड की सूचना—

बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन के रजिस्ट्रार महोदय सूचित करते हैं कि बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन का आर्थिक सम्बन्ध अब सरकारी खजाने से नहीं रहा। अब वैद्य लोग अपनी फीस क्रास पोस्टल द्वारा अथवा जहां इसकी सुविधा न हो वहां मनीआर्डर द्वारा बोर्ड कार्यालय में भेजें। अब रजिस्ट्रेशन की फीस बी० क्लास के लिये १०) और ए० क्लास के लिये १५) निश्चय हुई है। इसी प्रकार बी० से ए० क्लास की रजिस्ट्री प्रारम्भिक रजिस्ट्री के समान समझ १५) देना होगा। जिन लोगों ने फीस ५) या ए० के लिये १०) भेजी है वे शेष रुपये शीघ्र भेज दें।

पता:—रजिस्ट्रार-बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन
११ ए० पी० सेन रोड, लखनऊ।

— ❀❀❀ —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहकों के लिये—

आवश्यक—सूचना ।

भगवान धन्वन्तरि के आशीर्वाद और ग्राहकों एवं लेखकों की कृपा से धन्वन्तरि का यह वर्ष भी आनन्द पूर्ण हो रहा है। इस वर्ष भी पत्रकारों के लिए बड़ी २ कठिनाइयां रहीं हैं। कागज का भीषण अभाव रहा है; कागज प्राप्त करने के लिये ही एक कर्मचारी प्रायः देहली पड़ा रहा है। यह सब समस्यायें एसी नहीं हैं जिनसे हमारे ग्राहक अपरिचित हों अतः इस विषय में विशेष लिखना पाठकों के समय को नष्ट करना है। हमें तो केवल यही कहना है कि हमने भरसक आपको संतुष्ट रखने की चेष्टा की है और करते रहेंगे।

इस वर्ष का विशेषांक भेजते समय ही भारत का विभाजन हुआ जिसके फल-स्वरूप पंजाब, यू॰ पी॰ आदि स्थानों में भयंकर दंगे हुए और डाक आदि की सब व्यवस्था गड़बड़ हो गई, धन्वन्तरि के पंजाबवासी सैकड़ों ही ग्राहकों को अपनी सम्पति और व्यवसाय छोड़ कर अनिश्चित स्थानों में जाना पड़ा, धन्वन्तरि के जो पैकट ऐसे ग्राहकों की सेवा में भेजे गए थे, वह उन्हें नहीं मिल सके और बहुत से पैकट तो हमें भी अभी तक वापिस नहीं मिले हैं। सैकड़ों ग्राहकों ने १५अगस्त से पूर्व हमारी भेजी हुई विशेषांक की वी॰ पी॰ तो छुटाली किन्तु उनका रुपया हमें अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। पंजाब के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी साम्प्रदायिक दंगे हुए और हमारे भेजे हुए अंकादि मार्ग में ही मारे जाते रहे। इस कठिनाई के कारण १०-२० नहीं सैकड़ों ग्राहकों को कष्ट हुआ है, जहां तक सम्भव हुआ हमने एसे ग्राहकों को पुनः २ अङ्क भेज कर फायल पूर्ण कराने का उद्योग किया है फिर भी सम्भव है कि किसी ग्राहक को कोई न पहुंच सका हो। धन्वन्तरि के ग्राहक इसे केवल मनोरंजन की वस्तु ही न समझकर सावधानी से १-१ अङ्क संभाल कर रखते हैं यह मैं अच्छी तरह जानता हूं और इसीलिए जहां तक सम्भव हुआ है ग्राहकों की फायल पूर्ण करने की चेष्टा की गई है।

सैकड़ों कठिनाइयों के होते हुए भी इस वर्ष धन्वन्तरि कैसा प्रकाशित हुआ इसका निर्णय आप ही कर सकेंगे। इस वर्ष का विशेषांक गुप्तसिद्ध प्रयोगांक जहां अधिकांश पाठकों ने बहुत अधिक पसन्द किया वहां कुछ ग्राहकों की यह शिकायत भी रही कि धन्वन्तरि में स्थाई एवं ठोस सामिग्री देने का प्रयत्न करना चाहिए, ऐसे प्रयोग संग्रह तो बहुत मिल सकते हैं और मिलते हैं। धन्वन्तरि के इस विशेषांक और अन्य प्रयोग संग्रहों में यद्यपि बहुत अन्तर है फिर भी ग्राहकों की इस सम्मति की सर्वथा उपेक्षा नहीं की जा सकती कि धन्वन्तरि को ठोस और स्थाई साहित्य देना चाहिए। किन्तु जो नवीन वैद्य हैं वह इस प्रकार के ठोस साहित्य से रुचि नहीं रखते। हमें अपने दोनों प्रकार के ही ग्राहकों को सन्तुष्ट रखना है अतः हमने निश्चय किया है कि आगामी वर्ष धन्वन्तरि के—

दो विशेषांक प्रकाशित किये जांय।

इनमें से १ विशेषांक कल्प एवं पंचकर्म चिकित्सांक होगा और दूसरा विशेषांक गुप्त-सिद्ध प्रयोगांक (दूसरा भाग) होगा। पहिला विशेषांक जून-जौलाई का अंक होगा और दूसरा जनवरी का। कल्प-चिकित्सांक की छपाई प्रारम्भ होगई है। भारत के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसिद्ध २ विद्वानों के लेख इस विशेषांक के लिए प्राप्त हुए हैं। आयुर्वेदीय चिकित्सक तो इससे लाभ उठा ही सकेंगे अन्य पैथियों के चिकित्सक भी इससे आयुर्वेद की विशेषता समझ सकेंगे। निश्चय ही यह विशेषांक वैद्यों के यश और ज्ञान वृद्धि में सहायक होगा।

दूसरा विशेषांक गुप्तसिद्ध प्रयोगांक जनवरी में प्रकाशित होगा। इसमें प्रथम भाग की तरह १०० से अधिक वैद्यराजों के अनुभूत प्रयोग परिचय और चित्र रहेंगे। गुप्त-सिद्ध प्रयोग के दूसरे भाग को पुस्तकाकार प्रकाशित करने की सूचना हमने गत विशेषांक में दी थी उस समय हमारी यह धारणा थी कि जब तक प्रयोगादि संग्रह होंगे कागज की सुविधा हो जायगी और हम इस प्रयोग संग्रह को पुस्तकाकार प्रकाशित कर सकेंगे, हमारा आर्थिक लाभ भी एसा ही करने में था किन्तु कागज की परिस्थिति आज भी वैसी ही कठिन बनी हुई है जैसी १ वर्ष पूर्व थी। इधर जिन सज्जनों ने प्रयोग-चित्रादि भेजे हैं वह इस संग्रह को शीघ्र प्रकाशित करने को आग्रह कर रहे हैं। इन सब बातों का विचार करके ही हमने इसे इस बार भी विशेषांक रूप में प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

इस समय कागज की परिस्थिति कितनी कठिन है और विशेषांक प्रकाशित करने में कितनी असुविधायें हैं यह अनुमान तो पाठक, इससे ही लगा सकते कि हमारे सहयोगी, वायदा करके भी वर्ष भर के प्रयत्न के पश्चात् कोई विशेषांक प्रकाशित नहीं कर सके हैं। हमें भी दो विशेषांक प्रकाशित करने में कितना अधिक व्यय और परिश्रम करना पड़ेगा इसका आप भी विचार कर सकते हैं। इस अवस्था में हमारा विनम्र निवेदन है कि आप भी हमारी ग्राहक वृद्धि करके अधिक से अधिक सहायता करें। यदि आप १ ग्राहक बनाना अपना कर्तव्य समझ लेंगे तो निश्चय ही हमारी बहुत बड़ी सहायता होगी और हम भविष्य में और अधिक सेवा कर सकेंगे।

ज्ञान या अज्ञान में यदि इस वर्ष में कोई त्रुटि हो गई हो तो उसके लिये क्षमा प्रार्थी हूँ।

— वैद्य देवीशरण गर्ग।

आपका वार्षिक मूल्य

इस अङ्क के पहुंच जाने पर समाप्त हो रहा है। अतएव आगामी वर्ष के लिये ५।) का मनियार्डर शीघ्र ही कर दीजियेगा। छपा हुआ मनियार्डर फार्म गत अंक में भेजा जा चुका है। जिन ग्राहकों का वार्षिक मूल्य मनियार्डर से मिल जायगा उनको विशेषांक प्रकाशित होते ही रजिस्ट्री से भेज दिया जायगा।

आगामी वर्ष २ विशेषांक

प्रकाशित होंगे, इसलिये नवीन ग्राहक अधिक तादाद में बन जाने की आशा है, अतएव पुराने ग्राहकों को भी मनियार्डर तुरन्त भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित कर लेनी चाहिये।

व्यवस्थापक—"धन्वन्तरि" कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि वर्ष २२ के

(अङ्क ३ से अङ्क १२ तक की)

विषय-सूची

"गुप्त-सिद्ध-प्रयोगांक" की विषय सूची उसी में प्रकाशित करदी गई थी, अतएव इस सूची में उसको सम्मलित करने की आवश्यकता नहीं जान पड़ी। —व्यवस्थापक।

—कविता—

रोध ५३७
ह्वान ४८५, ५८६
वन ४४१
निदान ६०४, ६८२
न्तरि के प्रति ५६०, ५८१
न्तरि ३६३, ६३७
ला ३४७
न हे धन्वन्तरि ४८६
के प्रति ६३८
मरीज २६७
कामना ६३७

-उत्तमोत्तम लेख-

में सत्य की खोज ३६४
त सिद्ध प्रयोग ४६६
र्वेद विज्ञान है या काल्पनिक ३००, ३५१
र्वेदीय इन्जैक्सन चिकित्सा ३१६, ४२४
निक प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद ४४२
र्वेद ही राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति हो ५३६, ६३६
र्वेद में शिरावेध ६०७
के लिये दवा का बक्स ३८०
बालक पर आहार और विचारों का प्रभाव ६५७
कित्सा-शास्त्र ६८४
और उसके उपयोग ३६३
रों का जमघट ५६५
दांत और दन्तौन ३७३
पैसे के रोग ६६४
वीर्य और उसका महत्व ४६६
भारत सरकार और आयुर्वेद २६८
भारतीय रसायन शालाओं की पङ्गुता ६५६
भारत के प्राणाचार्य ७२६
यश ५४१
रक्त का वैज्ञानिक विवेचन ६००
रसगुण वीर्य विपाक और प्रभाव ३६७, ४४५, ५४२, ५६३, ६४३, ६८८, ७३२
रावण की अर्क चिकित्सा ४८७
लंघनम् परमौषधम् ७४३
सहायक वैद्य का कोर्स ५६१
सरकार आयुर्वेद चिकित्सा की उन्नति नहीं चाहती ४६१
सच्चा टॉनिक ७४५
हमारा कर्तव्य ३४८

— रोग विज्ञान —

अजीर्ण रोग ६४६
अर्श और जिमीकन्द ३७१
आन्त्रिक ज्वर ५४६
आमाशयिक कर्कस्फोट ७३५
उदर रोग विमर्श ४५६
ऋतजिह्व कुष्ठ ४६०
कर्णश्राव ७४०
काला ज्वर ६६६
कौमारभृत्य में वैज्ञानिक रहस्य- ६०६
ग्रंथिक सन्निपात या प्लेग ४०५-४०६, ४१२,
जीर्ण-ज्वर पर शुंठ्यादि क्वाथ ४६६
ज्वर निदान ६०४, ६८२
टाइफाइड ४६०
दन्तकृमि की चिकित्सा ४१२
नक्तान्ध और निम्बादि चूर्ण ५०२
निमोनिया ३०८, ३५६
प्लीहा और उसके उपाय ६५२
प्रमेह-चिकित्सा ५०३
प्रमेह रोग निदान और उपचार ५५६
पामा (छाजन) ६६८
पाण्डु चिकित्सा ५५२
पौरुषग्रंथि शोथ ६४७
फायलेरिया ४६०
बवासीर ६६२
विशूचिका पर लवण जल चिकित्सा ३०५
विशूचिका ७४१
वीर्य विकार ५५३
भ्रम (चक्कर आना) ४१५
मलेरिया और संखिया ३६७
मूत्र प्रदाह ४६५
मौक्तिक ज्वर और संजीवनी वटी ४५५
राज यक्ष्मा चिकित्सा ६०६
सर्प विष प्रतिकार ४१३
संग्रहणी ६६७
श्वास चिकित्सा ३६१, ७३७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वान-विष	४६३
शीतला और टीका	४५२
क्षय रोग का अचूक इलाज—लस्सन	३६६
क्षुद्रान्त्र प्रदाह—उपांत्र प्रदाह	३५४
— बनस्पतियां —	
अष्टवर्ग गुणविधान	६६२
अमलतास	७५१
उन्मत्तक (धतूरा)	४२०
ऋषभक	७५३
कहवा	५१३
कहरुवा	५६७
काहू	७०२
कुमारी (ग्वारपाठा) रस	६१०
केले के गुण	७०७
खर्जूर	४६५
गूगल	५०६
गोरखमुण्डी	४६४
चणक (चना)	३२२
जिमीकन्द	३७१
नकछिकनी	७४६
नीबू के गुण	६१५
फिटकरी	३६८
वेदों में पञ्चकषाय	६६५
भांग	३२६, ६६७
मूंगफली	७१०
मूषाकर्णी बूटी	६१२
लज्जावती (छुईमुई)	७४६
लस्सन	३६६
लालमिर्च	४१७
शहद	६१३
शाम्बर बेल	७५४
शीतल चीनी	५६६
स्वर्ण क्षीरी	७४८
स्वदेशी माल्ट	५६६
सफेद मिर्च	४६१
सत्यानाशी के प्रयोग	७०५
हुलहुल	५७१

-वैद्यों से परामर्श-

	पृ०प्रश्न	पृ०उत्तर
१--बिजली से पीड़ित	३३३	४७२, ५२[illegible]
२--पागल कुत्ते का काटा	३३३	४७२,४६३,५२[illegible]
३--प्रलापावस्था	३३३	४७३, ५२[illegible]
४--एग्जिमा (उकवत)	३३३	४७३, ६६८
५--कटेरी फूल का रंग	३३३	४७४
६--मूसली धोना	३३३	
७--व्रश्चिकदंश पर संखिया आदि शुद्ध या अशुद्ध	३३३	४७४
८--कायफल का क्वाथ खराब न हो,	३३३	४७४
९--घेघे की चिकित्सा	३३४	४७४
१०--शुक्रोदय के समय उदरशूल	३३४	
११--ममीरा अमली का पता	३३४	४७४
१२--मुख व्रण	३३४	४७४
१३--ज्वर एवं शुष्क कफजकास	३३५	
१४--सुजाक	३३५	४७४, ५२१
१५--सफेद आक के प्रयोग	३३५	४७४
१६--तालु में छिद्र हो जाने पर	३३५	५२१
१७--लोह खरल व वारुणी यन्त्र मिलने का पता	३८२	५२२
१८--नेत्र रोगों की पुस्तक	३८२	५२३
१९--पाण्डु व कामला के लिये जड़ी	३८२	४७५ ५२[illegible]
२०--चेचक के दाग	३८२	४७५
२१--मूत्र में विकारी द्रव्य	३८२	४७६ ५२४ ६[illegible]
२२--व्रश्चिक-दंश की दवा	३८३	४७६, ५२४ ६[illegible]
		६४[illegible]
२३--अधिक कुनीन सेवन से रतौंधी	३८२	५०२ ५२[illegible]
		४५७ ५२[illegible]
२४--सूखा रोग	३८३	४५७ ५२[illegible]
२५--बूटी-परिचय	३८३	५[illegible]
२६--ज्वर व निर्बलता	३८४	
२७--श्वास-कास	३८४	
२८--बटी के परिमाण	५१८	६२[illegible]
२९--अन्त्रवृद्धि	५१८	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ प्रश्न	पृष्ठ उत्तर
-जीर्ण-जुकाम	५१८	६२६
-रक्तशोषी बूटी	५१८	—
-सफेद कीड़े (मल के)	५१९	६२७
-दन्त-कृमि निकालने वाली बूटी	५१९	६२८
-कर्णश्राव	५१९	७४०
-कण्ठसुधारक	५१९	६२८
-बूटी परिचय	५१९	६२८
-शंख आदि मिलने के पते	५१९	—
-रक्तविकृति	५२०	६२८, ७४०
-मनुष्य के मूत्र का उपयोग	५२०	६२९
-गुदाभ्रंस	५२०	६२९
-नेत्र-ज्योति की कमी	५२०	—
-वट-दुग्ध कैसे निकाला जाय	५२०	—
-स्मरण शक्ति की कमी	६२१	७१२
-भगंदर	६२१	—
-गर्भाशय विकृति	६२१	—
-जलने के स्थान पर खुजली	६२१	७१३
-नेत्र में नाड़ी व्रण	६२१	७१३
-टान्सिल	६२२	७१३
-गण्डमाला	६२२	७१३
-पेड़ के बन्दों का उपयोग	६२२	—
-बूटी दर्पण के अंक चाहिये	६२२	—
-मेटेरिया मेडिका मिलनेका पता	६२२	७१३
-शैया-मूत्र	६२२	
-काली स्याही का प्रयोग	६२२	७१४
-सुन बहरी और ऋतुबंदकी दवा	६२२	७१४
-दन्त रोग के लिये मंजन	६२२	७१४
-पुस्तक तथा तैयार प्रयोग	६२३	
-तालचिकना शु. करने की रीति	६२३	
-रसौत शोधन विधि	६२३	७१५
-यक्ष्मा में सूंघने की दवा	६२३	
-शराब छुड़ाने का उपाय	६२३	
-शर्बत और अर्क रंगने की दवा	६२३	
-छाती का फूलना व दर्द	६२३	
-द्रोणपुष्पी नागदमन आदि के विषय में—	६२४	

	पृ०प्रश्न	पृ०उत्तर
६५--मूत्र-विकार	६२४	७१५
६६--शीशियां कार्क आदि के पते	६२४	
६७--बन्द ऋतु और उसके उपद्रव	६२४	
६८--पलित रोग	६२५	
६९--श्वास-कास	६२५	
७०--त्वचा की सूजन	७१६	
७१--हीरा भस्म बनाने की विधि	७१६	
७२--नपुंसकता	७१६	
७३--आन्त्रपुच्छ प्रदाह आदि की चिकित्सा –	७१७	
७४--कपिंग ग्लास लगाने की विधि	७१७	
७५--हृदयावरण प्रदाह और फुफ्फसावरण प्रदाह में अन्तर	७१७	
७६--जलंधर में हृद्दौर्बल्य का उपचार	७१७	
७७--आन्त बढ़ जाना	७१७	
७८--योनि से शब्द निकलना	७१८	
७९--दमा	७१८	
८०--अण्डवृद्धि	७१८	
८१--कर्णश्राव	७१८	
८२--अफीम छुड़ाने की दवा	७१८	

✻ समाचार ✻

अपूर्व घटना ३३९

अनुसंधान शाला ३८५

अलीगढ़ के वैद्य आन० मजिस्ट्रेट एवं मुंसिफ ६३३

आयुर्वेद ग्रंथों पर पारितोषिक ३३९

आफिस-व्यवस्था ३४२

आयुर्वेद संसार से निवेदन ४३५

आयुर्वेद अन्वेषण वैद्य संघ ६३३

आयुर्वेद कालेज लाहौर कहां ? ६७४

आयुर्वेद और एलोपैथी को बराबर सहायता हो ७२१

आगामी वर्ष २ विशेषांक ७२५

इण्डियन मैडीसन बोर्ड की सूचना ६७३

इटारसी वैद्य सभा की रसायनशाला ३८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंझा फार्मेसी के संस्थापक का स्वर्गवास ५२६
औषधियों का लैसंस ३४०
कम्पाउण्डर शिक्षा ३४१
कर्वी (बांदा) में ४७६
गुप्तकाशी (गढ़वाल) समाचार ६७५
गुड़गांवा वैद्य सम्मेलन ४३६
जयपुर राज्य वैद्य सम्मेलन ४३७
जिला वैद्य सम्मेलन गोरखपुर ५८०
" " " रायबरेली ६७३
डा० जीवराज महता का भाषण ५८२
तपैदिक आरोग्यसदन ३८६
धन्वन्तरि मंदिर ३४१
" " त्रियोदशी समाचार ५२८
धन्वन्तरि के विशेषांक चाहिए ७२२
नि० भा० आयुर्वेद ३२ वां सम्मेलन ६३२
प्लेग में काशी वैद्य सभा की सेवा ३४०
पाठ्यक्रम मंगावें ४७८
प्रान्तीय वैद्यों का प्रतिवाद ४७६
बनवारीलाल विद्यालय की सूचना ३४२
बनस्पति तैल के सम्बन्ध में अनुसंधान ३८७
बनौषधि संग्रह करें ४७६
बड़ौत वैद्य सभा ५८०
बापू के प्रति वैद्य समाज की श्रद्धाञ्जलि ६३१, ६३
व्यवहार वैद्यक वर्ग ६७४
बिहार प्रान्तीय वैद्य सेवा संघ ७२२
" वैद्यों से अपील ५८०
विटामिन का शोधक स्वर्गवासी ३४०
बिलसी वैद्य सभा ४७८
'बी' क्लास से 'ए' क्लास ३८७
बूंदी राज्य में आयुर्वेद की प्रगति ६२२
वैद्यों की रजिष्ट्री ३८५
" " के नियम ४३४
वैद्य वाचस्पति की मान्यता ५२६
वैद्यों का वेतन ५२६
वैद्य-हकीम सम्मेलन, मोदहा ५८०
बैतूल जिला वैद्य सभा के प्रस्ताव ४३६
बोर्ड के चैयरमैन ३४१
भारतीय विद्या भवन ३८५
भारतीय यक्ष्मा संघ ३८७
मलेरिया की दवा फ्री ३८६
महात्मा जी का उपदेश ३४०
महात्मा जी का निधन ५८४
माननीय पकवासा जी का भाषण ५२७
यू० पी० सरकार और आयुर्वेद ४३६
लेखकों को पुरुष्कार ५८१
शिक्षा संस्थायें स्वीकृति लें ४७८
शोक प्रस्ताव ६३३
संयुक्त प्रान्त के रजिस्टर्ड वैद्यों का संगठन ३८८
संयुक्त मत्स्य प्रदेश के वैद्यों से ६७३
सर्पयोग प्रकाश ३३६
सरकारी कालेज की मांग ३४२
सी० पी० आयुर्वेद सम्मेलन बाराशिवनी ६७४
सेकसरिया आयुर्वेद कालेज ३८५
स्वयं सेवक बनें ४३४
स्वर्गीय शंकरदा पदे स्मारक कोष ३६०
साप्ताहिक धन्वन्तरि ४३७
हरदोई जिला आयुर्वेद मण्डल ४३७
हिन्दी में आयुर्वेद विद्यालय ४७८

साहित्यालोचन

१—आयुर्वेद (त्रैमासिक) ३४३
२—विद्वानों के अनुभूत योग ३४१
३—अग्रवाल पत्रिका ३४३
४—आलोक ३४३
५—चौपाल ३४४
६—मानसिक रोग और उससे बचने के उपाय ७१६
७—'जेबी वैद्य' ७१६
८—रसायन (मासिक) ७१६
९—आयुर्वेद सेवक (मासिक) ७१६
१०—स्वास्थ्य ७२०
११—छांगाणी अभिनन्दन ग्रंथ ७२०
१२—जीवतिक्तविमर्श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगानुसार प्रयोग-सूची

(अकारादि क्रम से)

ों—३७०-७१, ५७१, ६६६, ६६३
तिसार—३२६, ३८०, ४३२, ४६८, ५१५, ५७८, ६७०, ७०६
जीर्ण—३८०, ५१४, ५७३, ६४६
लपित्त - ५१४, ६१८
न्त्रवृद्धि—६२६
मवात—५७६
धाशीशी—५७१
लुएञ्जा—३८०
र-रोग—३२६ ४१८, ५१५,५१६
र-कृमि ५७१
र-शूल ५७६, ७०८
दंश—५७१, ६७१, ७०६
श्राव—७३८
निकालने को—३५६
े हुए अंग पर—४३१
मला - ५१५, ६७०
ा-ज्वर—६६६
ी स्याही—७१४, ७६४
न का दर्द—३८१, ४२६, ५७१
र कास—३७६
—३८१, ५७३, ६६६, ६७१
ांसी—३८१, ४२१, ४३२, ५१५, ४७४, ६१८, ६७०, ७६६
मरा—५७८
के रोग—४१६
ठिया—४१६, ४६८, ५१७, ७१०
गण्ड—५७२
र्भाशय विकृति पर—७०८
डमाला—७१३
ुर्दे के रोग—४१६
र्मरोग—६६६
हरबाद—४६८
र—६१६, ६७२, ७०६

जीर्णज्वर—४६६, ७५६
डब्बा रोग—३३२
तालु कण्टक—३७६, ५७७
दन्तमंजन—३७७, ७८५
दन्तरोग—४३०
दद्रू (दाद)—३८१
दन्तपीड़ा—७११
दुखती आंखों पर—५७६
नहरुवा - ५१४, ५१७
नक्तान्ध (रतौंधी)—४६१, ४७६, ५०२, ५७५
नासूर—६१८
निमोनिया—५७५
नेत्ररोग—३३७, ३६६, ३७७, ५१६, ६१७, ७०७, ७१३
नेत्रफूला—४६६
परबाल—३६६, ७५७
प्रसूत रोग—३७६
प्रमेह—५०५, ५५६—६१, ७५३, ७५५
प्रतिश्याय—५७८, ५७६, ६७२, ७१३
प्रदर—७०४
प्लीहा—६५५
प्लेग—३६६, ४०७-१२, ७०६
पामा रोग—३३६, ३६४, ३७५, ४७३, ५७३, ६६८, ७११, ७५६
पागल कुत्ते के काटे पर—४२०, ४७२, ४६४, ५२१
पाद-दाह—३७५
पाण्डु रोग—४७५, ५६२-६५
पेचिश—३८०, ७०७
फिरंग—५२२, ६६६
वमन—७५६
बन्ध्यारोग—७०७
व्रण—३६६, ३८१, ६७०
बालशोष—४७५
वात-व्याधि—६७१, ७५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाजीकरण —४२१, ७४०
वृश्चिकदंश ४३१, ४७६, ५२४, ६२६.
विषविकार—३६६, ५७१, ७०७
विशूचिका—३३२, ६७०, ७४२
वीर्य-विकार —३७५, ६१६
भ्रम-रोग —४१५
मलेरिया ३३१, ३६७, ४२२, ५१६, ५७१, ६१७, ६५५, ७५७
मशकदंश पर—४२६
मृगी रोग—५७५
मासिक श्राव खोलने को — ३७५, ७६४-६५
मूत्रकृच्छ्र — ३७८
मूत्ररोग —४१६, ४७६
मूत्रप्रदाह ४६५-६६
मूत्रावरोध—६१२
यक्ष्मा—४६०, ७१३
यकृच्छोथपर—५१५
यकृत-प्लीहा वृद्धि—३७८, ४६७, ६७२
रक्तपित्त—६७०, ७०७, ७५२
रक्त बहने पर—३७५
रक्त-विकार—३७७, ५१४
रक्तश्राव — ५७३, ७५७
रेचक—४६८, ७१०, ७५२
श्वास-३६२, ४२१, ५७१, ६१६, ७०६, ७४०
शीतपित्त-५१५
शैया मूत्र-७६४
स्वप्नप्रमेह-५०५
संग्रहणी-६६७
स्तम्भन-४६६
सन्निपात पर-४७३, ५२१
स्मरण शक्ति को-७१२
सिरदर्द-४३१, ५७७, ६१६
सुजाक-४७५, ५१४, ५२२, ६६६, ७०७
सूखा रोग-४७६, ५२५, ७०८
हृद्रोग-७५३
हिक्का (हिचकी) ३३६, ६६६
हिस्टेरिया-७४७, ७५७

उत्तमोत्तम प्रयोग —

अनार बटी-३२६
अजीब अर्क-५१५
अष्टामृत योग-६५५
अतिसारान्तक चूर्ण-७०८
आम पाचन चूर्ण-५७४
आरोग्यवर्द्धिनी रस-६१६
एरण्ड पाक-५७४
कस्तूरी भूषण रस-३३१
खमीरा गावजुबां-४१५, ५६४
च्यवनप्राश-५५३
चन्द्रासव-३३२
ताल भस्म-४६८
ताप्यादि लोह-५६४
ताम्र भस्म-७४७
तुत्थ भस्म-७०६
निम्बादि चूर्ण--५०२
नेत्रविन्दु--६१७
पञ्चसूत रस--३५६
पौष्टिक रसायन--४६७
वमन हर वटी-७५६
ब्रह्मानन्द बटी--७११
विशूचिकान्तक चूर्ण--६७१
वीर चन्डेश्वर रस-४६८
भृगुहरीतकी-६७०
मलेरिया हर वटी--७५७
महावात रस--६२७
महामृत्युंजय रस--३१४
मंजिष्ठादि चूर्ण--६६६
मुक्ता योग--७०८
मूसली पाक--५५१
यवानी खाण्डव चूर्ण--६५६
रसांजन शोधन विधि--७६६
लघ्वानन्द रस--४१६
सूर्यकान्त रस--४६८
श्वासान्तक बटी--७०६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि के

प्रति अङ्क का विज्ञापन-दर

...रण पूरा पृष्ठ	४५)
" आधा पृष्ठ या एक कालम	२४)
" चौथाई पृष्ठ या आधा कालम	१३)
" चौथाई कालम	७)
...का दूसरा पृष्ठ पूरा	६०)
" आधा पृष्ठ	३२)
तीसरा पृष्ठ पूरा	५५)
" आधा पृष्ठ	३०)
चौथा पृष्ठ पूरा	८०)
" आधा पृष्ठ	४५)

विशेष बातों के लिये

पत्र-व्यवहार करें

—व्यवस्थापक—

...न्वन्तरि' विजयगढ़ (अलीगढ़)

चिकित्सकों के लिये

—अत्युत्तम द्रव्य—

कस्तूरी	१ तोला ४८)
अम्बर	१ तोला ३६)
केशर काश्मीरी	१ तोला ७)
मोती उत्तम	१ तोला ६०)
गुलाबजल	१ बोतल ३)

अधिक तादाद के लिये खास

भाव पत्र द्वारा पूछलें।

गुलकंद	१ सेर २॥)
बंसलोचन असली	१ सेर ३०)
हिंगुल रूमी	१ सेर २५)

धन्वन्तरि कार्यालय

विजयगढ़ (अलीगढ़)

दवा के सच्चे मोती

...! हकीमो !! तथा फार्मेसी वालो !!!

...यहां सब प्रकार के शुद्ध और सच्चे मोती, जैसे ...बसराई खाका, सीलोन खाका, आस्ट्रेलियन ...नी वगैर,जो दवा के लिए सर्वोत्तम हैं तथा ...जो भारत के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वैद्यों द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं, निहायत किफायत से मिलते हैं। धर्मार्थ औषधालयों तथा फार्मेसियों के साथ विशेष रिआयत की जाती है। आर्डर भेजने की कृपा करें।

...ता-नगीनदास वीरचन्द जेवरी,

...-२६, धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३।

एपोलो आयुर्वेदिक इंजेक्शन

आयुर्वेदिक इन्जैक्शनों की प्रमाणिकता के लिये निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन ने केवल इसी फार्मेसी को स्वर्णपदक से सम्मानित किया है। आवश्यक विवरण पत्र द्वारा मंगाइये। एजेंटों की आवश्यकता है।

दी एपोलो फार्मेस्यूटीकल वर्क्स लिमिटेड

प्रतापगंज : : बरौदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि कार्यालय
विजयगढ़ (अलीगढ़) यू० पी०

की

औषधियां मिलने के कतिपय स्थान

—आगरे में—
मै० सुगनचन्द राजकुमार जैन
रावतपाड़ा, आगरा

—ग्वालियर में—
श्री० एस० के० अग्रवाल
दीन[illegible] औषधालय
[illegible], लश्कर

—सीतापुर में—
मै० सोमदेव आयुर्वेदिक फार्मेसी,
सीतापुर

—कानपुर में—
रसायन भण्डार, ग्वालटोली,
कानपुर

—जब्बलपुर में—
धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़
(सी० पी० प्रचार केन्द्र)
सराफा, जब्बलपुर

—तालग्राम (फरुखाबाद) में—
श्री० बा० छोटेलाल वर्मा वैद्य,
तालग्राम

—शिमला में—
पं० मेहरचन्द शर्मा वैद्य
शिमला आयुर्वेदिक फार्मेसी
— रामबाजार

—लाखनी [भण्डारा] में—
दी जैन स्टोर्स
लाखनी (भण्डारा)

—पिपरिया में—
मैसर्स बालचन्द गुप्ता एण्ड सं०
आयुर्वेद मैडीकल स्टोर्स
पिपरिया

—पेंडरा [बिलासपुर] में—
श्री० चांदमल जी राठी
पेंडरा (बिलासपुर)

—मण्डला में—
श्री० दुर्गाप्रसाद भगवानप्रसाद
पड़ाव, मण्डला

—गाडरवाडा में—
मैसर्स बालमुकुन्द गुप्ता एण्ड सं०
आयुर्वेदिक मैडीकल स्टोर्स
गाडरवाडा

—गोंडा में—
श्री० रामनरेशसिंह जी
राजपूत औषधालय गोपालगंज (गोंडा)

—कासगंज में—
डा० निरंजनलाल गुप्ता
सर्वहितैषी औषधालय
सहावर गेट, कासगंज

औषधियां लेते समय 'धन्वन्तरि कार्यालय' विजयगढ़ का
नाम लेबिल आदि पर अवश्य देख लीजियेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

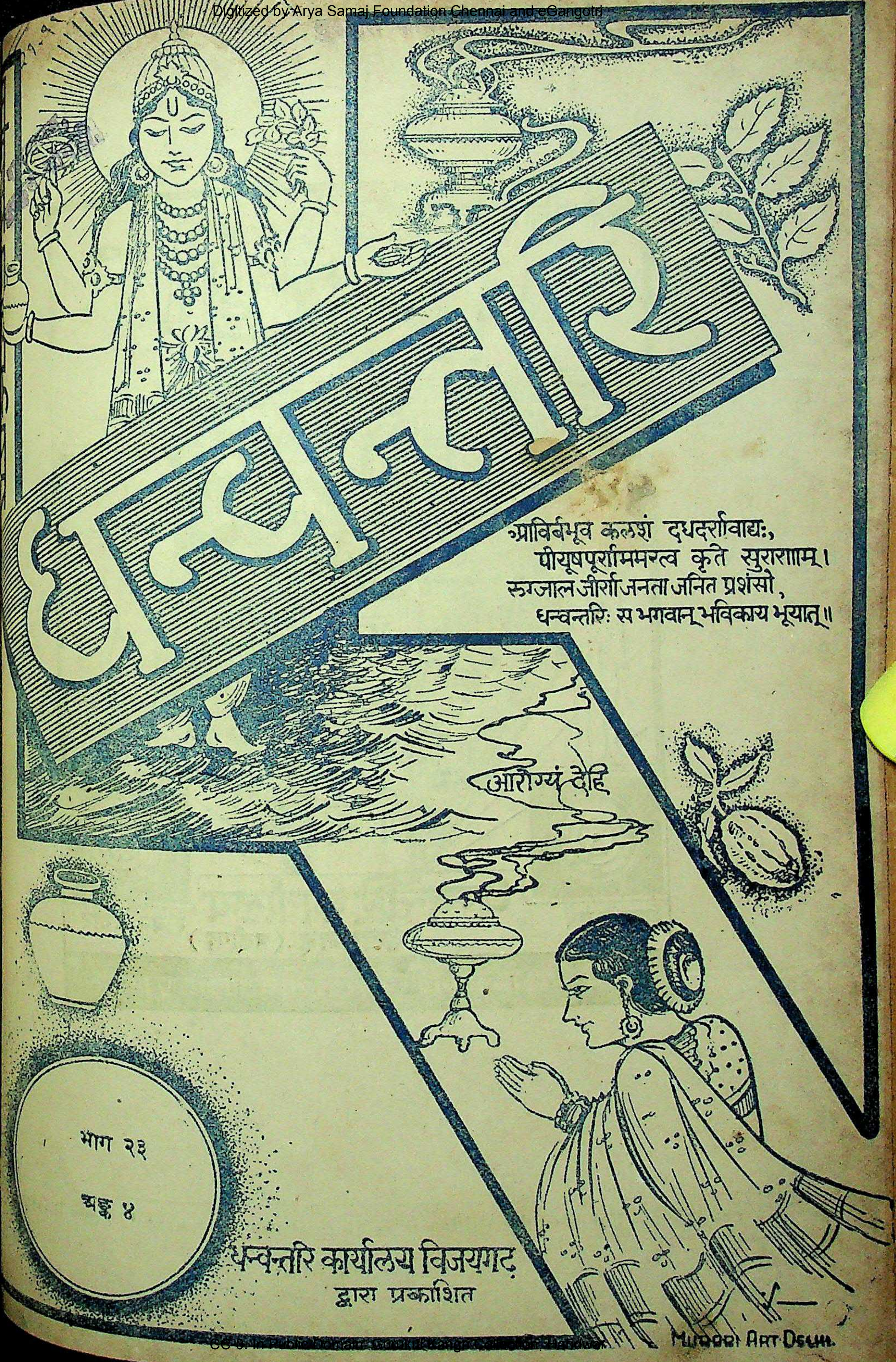

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

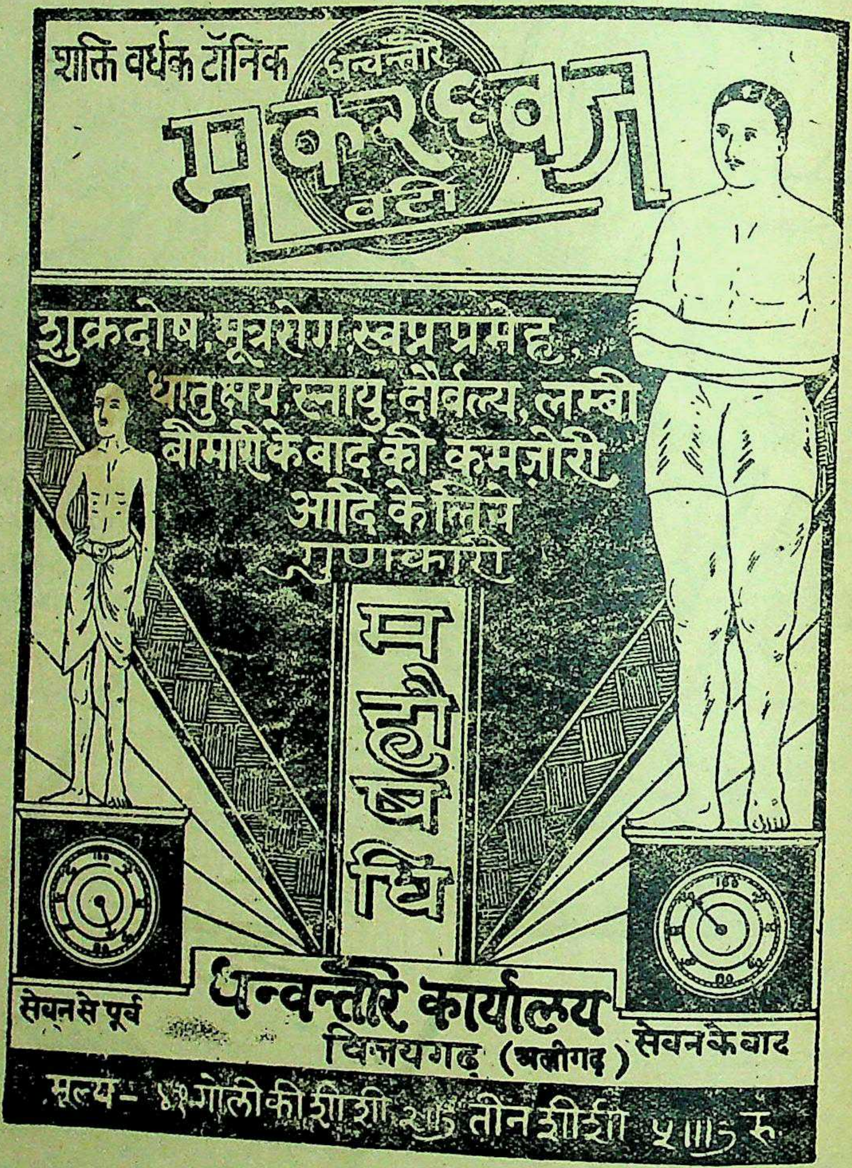

Printed and Published by Vaidya D. S. Garg at the Dhanwantari Press Bijalgarh

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

आयुर्वेद मासिक पत्र

…र्ष २३ अङ्क ४ सितम्बर १९४८

सम्पादक

वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग

ज्वालाप्रसाद अग्रवाल B. Sc.

विषय-सूची

(पृष्ठ ३५७ से ४१४)

…युर्वेद (कविता) ३५७

…युर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति हो, लेख पर की …ई आलोचना का उत्तर ३५८

…॰ पी॰ बोर्ड का द्विवार्षिक कोर्स ३६०

…कृति की खिलवाड़ ३६२

…हा (Trachoma) ३६५

…नव-निदान (कविता) ३७०

…मन चिकित्सा पर अनुभव ३७४

…लशोष और उसके उपचार ३७७

९–सूखा रोग ३८०

१०–बालशोष और उसकी चिकित्सा ३८२

११–मिट्टी के गुण ३८४

१२–नीम की ताड़ी या मद ३८७

१३–अद्रक के गुण ३८९

१४–सोम नामक औषधि के विषय में ३९१

१५–पित्त-विकार-शामक पित्तपापड़ा ३९२

१६–जलनीम ३९३

१७–परीक्षित प्रयोग ३९५-९८

९४–मर्मीरे का सुरमा। ९६–पाचन वटिका। ९७–श्वेत आक के प्रयोग। मलेरिया के लिये उत्तम प्रयोग। त्रिफलादि अवलेह। सूखा रोग के लिये उत्तम प्रयोग। ९८–जले पर टेसू। आंख की फुली पर। अफीम छुड़ाने की उत्तम विधि। मूत्र के साथ सफेदी जाना। प्रदर एवं अधिक स्राव के लिये। विशूचिका हर वटी। विजवासव ४००–सर्पदंश पर।

१८–वैद्यों से परामर्श ३९९

१९–आयुर्वेद-जगत ४०४ से ४०६

फैजाबाद जिला सभा का चुनाव ४०१

शुभ-सूचना ४०१

चलता आयुर्वेद पुस्तकालय ४०२

चोपड़ा समिति की रिपोर्ट ४०२

युक्त प्रान्त में वैद्यों की रजिस्ट्री ४०४

जयपुर कांग्रेस में वैद्यों का कर्त्तव्य ४०६

२०–आयुर्वेदिक-संस्थायें

ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज ४०९

राजस्थान आयुर्वेद कालेज ४११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

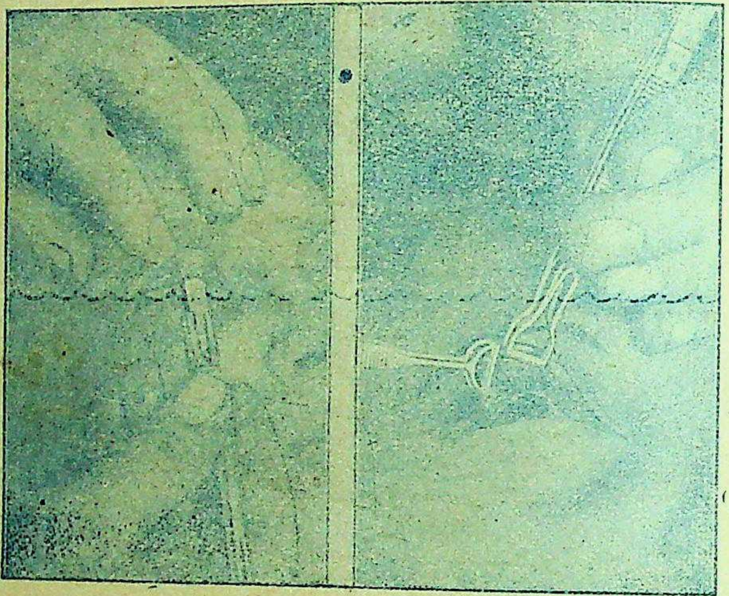

ध्यान पूर्वक देखें।

रोहू के रोगी को अपनी दाहिनी ओर खड़ाकर ऊपर के पलक को पलट कर नीलाथोथा (तूतिया) की बत्ती से सावधानी के साथ दानों को घिसा जारहा है। इसके प्रयोग के बाद आंख को स्वच्छ जल से धो देना चाहिये।

रोहू अधिक कड़े होगये हैं अनुभवी चिकित्सक चिमटी से रोहों को फोड़ रहा है। विशेषज्ञ पलक के नीचे के परत को भी काट देते हैं। इसमें अधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। अतः अनुभवी व्यक्ति द्वारा ही करावें।

रोहू के विषय में एक उपयोगी लेख इसी अङ्क में पृष्ठ ३६५-६६ पर पढ़ें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२-११-४८

वाचनालय,
गुरुकुल काँगड़ी

भाग २३
अङ्क ४

सम्पादक- वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग
जे. पी. अग्रवाल बी. एस. सी.

सितम्बर
सन् १९४८ ई०

'आयुर्वेद'

' आयुर्ज्ञान कराने वाला और हिताहित दर्शक जो
आयुर्वेद कहाता है वो, रोगादिक सन्दर्शक जो ।।
जिसमें ज्ञान अखण्ड भरा है सर्व पूर्ण विषयों से,
वैज्ञानिक बातें हैं जिसमें सम्पादित जो ऋषियों से ।।

वातादिक आधार-स्तम्भ धर्ममाण-मण्डप वाला,
तत्वमयी चिक्कण भूतल का, आयुर्ज्ञान सौध वाला ।।
अष्ट-अङ्ग--युत पूर्ण-देह सम्पूर्ण ज्ञेयतम वृत्तों से,
पञ्चकर्म-से गहन विषय से और स्वास्थ्यमय वृत्तों से ।।

पूर्णतया अवलोकन ही से, बड़े-बड़े झुक जाते हैं,
आयुर्वेद-विनिन्दक दिन-दिन गहरी मुंहकी खाते हैं ।।
उसी ज्ञान के प्रशस्त-पथ से यदि हम अभी सभी चलते,
तो फिर कहो आज इस युग में कौन हमें जो आ छलते ।।

० वैद्यनाथ शर्मा, 'पंचार्य' वर्धा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति हो'

पर

—की गई आलोचना का उत्तर—

ले०—आयुर्वेद-रत्न कविराज श्री० हर्षु ल मिश्र प्रवीण, बैतूल।

धन्वन्तरि के जनवरी १९४८ के अङ्क में मेरा एक लेख 'आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति हो' शीर्षक छपा था, जिसकी आलोचना धन्वन्तरि के मार्च १९४८ के अङ्क में मुझे बहुत विलम्ब से पढ़ने को मिली। परन्तु विषय की गम्भीरता को देखतेहुए, उक्त आलोचना का उत्तर देना मेरा कर्त्तव्य हो जाता है।

मैंने उपर्युक्त शीर्षक का लेख, सद्भावना से प्रेरित होकर आयुर्वेद को स्वतन्त्र भारत के राष्ट्रीय शासन विधान में राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति का स्थान प्राप्त कराने के पवित्र हेतु से लिखा था मुझे कल्पना तक नहीं थी. कि ऐसे सद्भावना-पूर्ण लेख की कटु आलोचना पढ़ने का भी सौभाग्य प्राप्त होगा। मेरा लेख सद्भावना से ओतप्रोत होने के कारण आलोचना से परे था और इसीलिये आलोचक मेरे लेख की आलोचना करने में सफल न रहे। सारा लेख पढ़ने के बाद भी आलोचक महोदय लिखते हैं कि राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति से महोदय का (मेरा) क्या प्रयोजन है, समझ नहीं सके। अतः लेखक का प्रयोजन बिना समझे ही, आलोचक महोदय लेख की आलोचना करने बैठ गये जिससे उनकी समूची आलोचना सार-हीन होगई है। पाठकों में बुद्धि भ्रम न हो इसलिये 'आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति हो। इससे मेरा क्या प्रयोजन है इसका पुनः स्पष्ट ही करना आवश्यक हो गया है यदि आलोचक महोदय आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति हो, इसका प्रयोजन समझ गये होते तो उन्हें मेरे लेख की इतनी बड़ी आलोचना न करनी पड़ती। लेखक का प्रयोजन बिना समझे यदि कोई व्यक्ति किसी लेख की आलोचना करता है तो वह निसंदेह मानव-समाज में बुद्धि भ्रम उत्पन्न करता है। इसके अतिरिक्त आलोचक महोदय ने मेरे लेख के किसी अंश विशेष या विचारों की ऐसी आलोचना नहीं की जिससे पाठकों को लेखक की ग़लत धारणा स्पष्ट हो जाती; सारी आलोचना में आलोचक महोदय के व्यक्तिगत पाण्डित्य और चिकित्सा-कौशल का प्रदर्शन मात्र किया गया है। मैंने लिखा था:— वैद्यक के धुरन्धर से धुरन्धर विद्वान शल्य-क्रिया और सूची भेदन चिकित्सा से परहेज करते हैं" इस कथन को आलोचक महोदय ने मिथ्या सिद्ध नहीं किया प्रत्युक्त आयुर्वेद में इन दोनों क्रियाओं का सिद्धान्त होना मंजूर किया है। इन दोनों क्रियाओं की ओर जो वैद्यों की उदासीनता है उसका समर्थन आलोचक महोदय ने दो प्रकार से किया है:— (१) ये चीजें सरकारी सहायता के बिना चालू नहीं हो सकतीं ......उन्हें प्रोत्साहन ही न मिला (२) शल्य कर्म से एलोपैथी में जो रोग ठीक होते हैं उन्हें वैद्य औषधि द्वारा ही सरलता पूर्वक ठीक कर देते हैं, फिर वे एक दम आसुरी पद्धति का अनुसरण क्यों करें। मेरा आलोचक महोदय के उपर्युक्त कथन से विरोध है चोट मोच शस्त्राघात अस्थिभंग एवम् विद्रधि अर्बुद्धि आदि रोग ऐसे हैं जिनके लिये शल्य क्रिया अनिवार्य है आधुनिक जमाने में त्वरित लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने के लिये सूची भेद चिकित्सा भी अनिवार्य है फिर आयुर्वेद को एलोपैथी चिकित्सा के रूप में सरकारी तौर से राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप में आसुरी चिकित्सा पद्धति (सर्जरी और विज्ञान)का अनुसरण करना अनिवार्य सा दिखता है। यहां पर आलोचक महोदय को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति से मेरा क्या प्रयोजन है बता देना चाहता हूं। राष्ट्रीय चिकित्सा से मेरा मन्तव्य है कि एलोपैथी को इस देश से विदा कर आयुर्वेद को सरकारी तौर से राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति स्वीकार कराना, उसी प्रकार जिस प्रकार हिन्दी अंग्रेजी को हटाकर, सरकारी तौर से राष्ट्र भाषा बनने जारही है। इसके लिये एलोपैथी के आवश्यक अङ्गों को सभी को आयुर्वेद में आत्मसात कर लेना है जिस प्रकार हिन्दी भाषा अंग्रेजी के अनेक शब्दों को आत्मसात करती जा रही है।

आलोचक महोदय के कथनानुसार यद्यपि आयुर्वेद, स्वभाव से राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति है तथापि उसे भारतवर्ष में अनेक प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों से ऊंचे उठकर सरकारी घोषणा द्वारा राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति का स्थान प्राप्त करना अनिवार्य है, गरीब की झोंपड़ी में हीरे का यथार्थ मूल्य नहीं लगाया जा सकता; उसका यथार्थ मूल्य कुशल जौहरी के हाथों राज्य दरबार में पहुँचने पर ही हो सकता है। इसी प्रकार आज हमारा परम वैज्ञानिक आयुर्वेद वैद्यक शास्त्र भी राज्याश्रय से दूर होने के कारण अपना मूल्य नहीं करा सक रहा है। अब देश स्वतन्त्र हुआ है, स्वदेशी सरकार में आयुर्वेद को गौरव पूर्ण राष्ट्रीय चिकित्सा का आदर प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार है, परन्तु खेद है कि हमारी स्वदेशी सरकार एलोपैथी से अभी तक प्रभावित है, उसका विश्वास है कि एलोपैथी को सरकारी तौर से विदा कर देने पर भारत के स्वास्थ्य की सर्वाङ्गी रक्षा केवल आयुर्वेद से नहीं हो सकती, इसी धारणा को दूर करने के लिए मैंने आयुर्वेद को उदार बनाने की अपील की थी। जिससे एलोपैथी के आधुनिक आवश्यकीय साधनों और आविष्कारों को आयुर्वेद में आत्मसात कर आयुर्वेदीय ढंग से उनका निर्माण और उपयोग प्रारंभ हो जाय। यह हम थोथे शब्दों से नहीं प्रत्युत क्रिया रूप में युद्धाङ्गण से लेकर भारतीय ग्रामीण के घर तक आयुर्वेद को एलोपैथी से बढ़ कर सिद्ध करदें तो सरकार के द्वारा आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति तुरन्त घोषित हो जाएगा।

आज एलोपैथी भी अपने को भारत में जिन्दा रखने के लिए आयुर्वेद की महौषधियों को अपने में बड़े जोरों से आत्मसात करती जा रही है, हम एलोपैथी के आविष्कारों और साधनों से परहेज करते हुये आयुर्वेद को निर्बल बना रहे हैं।

आलोचक महोदय समझ लें कि प्रकृति का यह नियम है कि जो जाति संस्कृति तथा विज्ञान दूसरी जाति संस्कृति और विज्ञान को अपने में आत्मसात कर अपना रूप देने में समर्थ है वही जाति संस्कृति और विज्ञान प्रगति शील जगत में सर्व व्यायी हो सकता है। एलोपैथी वैद्यक शास्त्र के सर्व व्यापी होने में यही रहस्य है। वैद्यक शास्त्र और वैद्य तभी प्रगतिशील हो सकते हैं, जब उनमें अन्य चिकित्सा पद्धति के आवश्यक अङ्गों को आत्मसात करने की ताक़त आजावेगी और तब भारतीय आयुर्वेद न केवल भारतीय चिकित्सा शास्त्र रहेगा प्रत्युत अन्तराष्ट्रीय चिकित्सा - शास्त्र बन जायेगा। हमें स्वतन्त्र भारत के वैद्यों के नाते अपने आयुर्वेद को इतना विस्तीर्ण बनाना चाहिए कि उसमें संसार की समस्त पैथियां अर्थात् चिकित्सा-शास्त्रों का समावेश हो जाय।

एलोपैथी के समक्ष शिर ऊंचा रख कर खड़े होने के लिये आज अधिकांश वैद्य एलोपैथी के साधनों और आविष्कारों को आयुर्वेदीय ढंग से

[शेषांश पृष्ठ ३६१]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यू. पी. बोर्ड का द्विवार्षिक कोर्स

ले०—श्री. शुकदेव शर्मा एम. ए. साहित्यायुर्वेद साँख्ययोगाचार्य
प्रिन्सिपल, राजकुमारसिंह आयुर्वेदिक कालेज, इन्दौर।

जब से बोर्ड का अध्यक्ष पद श्री पं० धुलेकर जी ने सम्भाला है, बोर्ड में आयुर्वेद के प्रति एक नवीन उत्साहप्रद वातावरण प्रारम्भ हो गया है। आयुर्वेद को लोकप्रिय एवं व्यापक बनाने के लिये आपने जिन योजनाओं का प्रारम्भ किया है उनमें से एक द्विवार्षिक शिक्षण की योजना भी है; जिसके अनुसार मिडिल पास कोई छात्र दो वर्ष के अध्ययन के पश्चात् 'सहायक वैद्य' का प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकता है। उक्त शिक्षण क्रम में कोई बात ऐसी नहीं है जिसका विरोध किया जा सके। उक्त शिक्षा प्राप्त वैद्यों की योग्यता से भी अल्प योग्यता रखने वाले बिना पढ़े-लिखे वैद्य आज भी गांवों में क्या शहरों तक में चिकित्सा करते हैं और वहां की जनता अच्छे शिक्षित वैद्य डाक्टरों को छोड़ कर उनकी चिकित्सा से लाभ उठाती है। उच्च शिक्षा प्राप्त वैद्य गांवों में जाना नहीं चाहते, इसके दो परिणाम हो रहे हैं, नगरों में तो चिकित्सकों की इतनी भरमार हो रही है कि वहां उन्हें जीविका प्राप्त होना कठिन हो रहा है, दूसरी ओर देहातों में चिकित्सकों का इतना अभाव है कि दवा के नाम पर वहां कोई वस्तु बेची जा सकती है। इस राष्ट्रीय-अभाव का लाभ हमारे एलोपैथिक प्रचारक तो सहज में उठाना चाहते हैं और वे किनीन की तरह अंग्रेजी औषधियां अशिक्षित अर्ध शिक्षित ग्राम कर्मचारियों द्वारा वितरण कराना चाहते हैं। उक्त द्विवार्षिक शिक्षा प्राप्त वैद्य देहातों के लिये अति उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। यही नहीं, यही वैद्य उच्च वर्ग के चिकित्सकों का प्रवेश ग्रामों तक में करा सकते हैं। एवं आयुर्वेद की प्रगति में विश्वास जमा कर आयुर्वेद का प्रभाव समस्त देश में स्थापित कर सकते हैं।

जिस देश में होमियोपैथिक चिकित्सक राज-मान्यता प्राप्त कर सकते हों वहां एक आयुर्वेदिक कालेज में दो वर्षों तक शिक्षा प्राप्त वैद्य कभी उपेक्षित नहीं होना चाहिये, पर दुर्भाग्यवश इस कोर्स का वैद्यों की तरफ से ही पर्याप्त विरोध हुआ, इसके अनुकूल तथा प्रतिकूल पत्रों में भी लिखा गया। पर मेरी राय में इसका विरोध 'इस योजना की अस्पष्टता के कारण अधिक होरहा है; जिसके कारण भ्रम फैलने तथा फैलाने की सुविधा प्राप्त हो गयी है। हिताकांक्षी दिशाओं में भी ऐसी बातें कही गई हैं, जिनसे लाभ की अपेक्षा इस योजना की हानि अधिक होने की आशंका है। प्रथमतः योजना के निर्माताओं ने उक्त शिक्षा क्रम की स्पष्टता को अपेक्षाकृत अंधेरे में रक्खा। सहायक वैद्यों के अधिकार की व्याख्या नहीं होने से पंचवार्षिक कोर्स के स्नातकों को यह भय उत्पन्न होना अस्वाभाविक नहीं था कि नयी योजना के छात्र को उनके समानाधिकार प्राप्त होंगे। इधर इन सहायक वैद्यों का रजिष्ट्रेशन यदि सहायक वैद्य की तरह नहीं किया जायेगा या उन्हें कम्पाउण्डर समकक्ष रक्खा जावेगा तो यह योजना ही लुप्त हो जावेगी। जब अन्यत्र ६ मास में ही कम्पाउण्डर का अध्ययन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

…ा प्रमाण पत्र प्राप्त हो सकता है तो उसके लिये …वर्ष नष्ट करने में कोई औचित्य नहीं है। यही …, बोर्ड ने (उपवैद्य) अर्थात् कम्पाउण्डर कोर्स के …१॥ वर्ष का एक शिक्षण प्रस्तुत किया था, यदि …योजना कहीं प्रारम्भ भी हुई होगी तो असफल …गी। उप-वैद्य शिक्षण ६ मास से अधिक नहीं होना …हिये। मेरी राय है कि द्विवार्षिक शिक्षा क्रम एक …युक्त योजना है अतः इसका विनाश नहीं होने …, यह देखना प्रत्येक आयुर्वेद हितैषी का कर्तव्य …। अतः इस योजना के अनुकूल शिक्षित वैद्यों के …धिकारादि की स्पष्ट व्याख्या हो जावे तो भ्रम का …स्थान प्राप्त नहीं हो। इसके लिए मेरे सुझाव …म्न-लिखित हैं -

… बोर्ड के वर्तमान ए. तथा बी. क्लास उठा दिए जावें। वर्तमान श्रेणी भेद अव्यवहारिक एवं अस्वाभाविक है तथा इससे शिक्षित वैद्यों के साथ पर्याप्त अन्यान्य होता है। इसके बदले बी. क्लास में सहायक वैद्यों का रजिष्ट्रेशन हो और उस श्रेणी को निम्नलिखित सीमित अधि--कार हों।

… उन्हें केवल ५००० की जन संख्या वाले ग्रामों में स्वतन्त्र चिकित्सक के रूप में चिकित्सा करने का अधिकार हो एवं ग्राम सुधार या अन्य सरकारी विभागों द्वारा उक्त जन संख्या वाले ग्रामों में उन्हीं की नियुक्ति हो।

३ उक्त जन संख्या की अपेक्षा बड़े नगरों में वे, प्रधान चिकित्सक जो आयुर्वेदिक कालेजों के स्नातक हो, के आधीन कार्य कर सकेंगे।

४—उन्हें केवल ५० मासिक तक पाने वाले कर्मचारियों को प्रमाण पत्र देने का अधिकार हो।

५ अदालतों में साक्षी प्रदान नहीं कर सकेंगे।

६—विशेपविष उनकी सिफारिश पर किसी प्रधान चिकित्सक (स्नातक) के हस्ताक्षर से प्राप्त हो सकता है।

मेरी राय में उक्त नियम घोषित कर देने पर उभय पक्ष को संतोष प्राप्त हो सकता है।

[पृष्ठ ३५६ का शेषांश]

उपयोग करने लगे हैं, यह शुभ लक्षण है। परंतु आयुर्वेदीय संस्थाओं द्वारा इधर ध्यान दिया जाय तो एलोपैथी के आवश्यक अंगों को आत्मसात करने में बिलम्ब नहीं लगेगा।

इसके अतिरिक्त शिक्षित वैद्यों की प्रतिष्ठा का माप-दंड एलोपैथी डाक्टरों से ऊंचा उठाने के लिये वैद्य उपाधि पर उचित नियन्त्रण भी लगाना पड़ेगा, जिसके सिवाय प्रमाणित वैद्यों के दूसरा कोई भी अपने को वैद्य न कहला सके।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति की खिलवाड़

लेखक—कविविनोद वैद्य भूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा
वैद्य, अमृतधारा, [देहरादून]

लेख का शीर्षक देख कर घबरावें नहीं। प्रकृति की विचित्रता, प्रभु की लीला का कोई वारापार नहीं है। कभी कभी ऐसी चीजें हमारी आखों के आगे आती हैं जिन्हें देख कर यह विचार होता है कि मानों प्रकृति ठठोल कर रही है, एक खेल खेल रही है। उपनिषद् काल की बात है। राजा जनक की सभा में अष्टावक्र नामक एक बड़े ऋषि पधारे। देख कर सब लोग हँस पड़े, क्योंकि उनका शरीर आठ स्थान पर वक्र (टेढ़ा) था जिसके कारण बड़ा बेढंगा दीखता था। उनका नाम "अष्टावक्र" इसी कारण पड़ा था। यह बात असम्भव नहीं है। अफ्रीका की एक जाति 'हाटिन टाट" की सब स्त्रियां इसी प्रकार की विचित्र शक्ल की होती हैं।

एक गर्भ में कई बच्चे

मनुष्य के लिये तो प्राकृतिक नियम यह है कि एक समय में एक ही बच्चा उत्पन्न हो। परन्तु हम बहुधा जुड़वां बच्चों को जन्म लेते देखते हैं। कोई भी यह निर्णय नहीं कर सकता कि वस्तुतः सिद्धांत क्या है? पिछले दिनों समाचार पत्रों में पढ़ा था कि पैरिस के निकट एक गांव में किसी जाट स्त्री के एक बालक पैदा हुआ। दूसरे ही दिन वह काम करने खेत में चली गई। तीसरे दिन फिर उसको दर्द हुआ और एक बालक पैदा होगया। अगले दिन वह काम पर पुनः चली गई और तीसरी लड़की को बाहर ही जन आयी।

मिस्टर रिचार्ड डब्ल्यू थॉमस ऑसकोस्ट की एक स्त्री श्रीमती जोन का वृत्तान्त लिखा था जिसने कि सातों बार जुड़वां बच्चे जने। कई स्त्रियां एक समय में सदैव ही तीन बच्चे जनती हैं। आस्ट्रेलिया के सिडनी नामक नगर की एक स्त्री का समाचार १९३६ में प्रकाशित हुआ था वह तीन बार तीन-तीन बच्चे जन चुकी है। पेरिस की एक स्त्री ने ६ बार तीन-तीन बच्चे जने। एक और स्त्री प्रत्येक बार तीन बच्चे जनती रही। उसकी एक लड़की ने प्रत्येक बार ४-५ बच्चे जनने शुरू किये। ३२ वर्ष की आयु में इसके ३३ लड़के थे।

अंगरेजी के डाक्टरी ग्रन्थों में एक स्त्री का वर्णन आता है जिसने ५३ बच्चों को जन्म दिया। १८ बार एक-एक, ५ बार दो-दो, ४ बार तीन-तीन, १ बार छैः और अन्तिम बार सात। इसी प्रकार एक मझौली स्त्री ने दो बार विवाह के प्रथम पति से ३० और दूसरे पति से १४ बच्चे जने। दूसरे पति से केवल तीन बार गर्भ रहने से पहली बार ६ दूसरी बार ५ और तीसरी बार तीन बच्चे पैदा हुए।

लन्दन के एक होटल की अधिकारिणी श्रीमती एच० ई० मिंट ने मार्च १९३६ में बालिकाओं की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...को जन्म दिया और फर्वरी १९३७ में पुनः ...क तथा एक बालिका को जन कर एक वर्ष ...चे पूरे कर दिये।

...चार पत्रों में आपने उन पांच बच्चों का वर्णन ...या जिन्हें अमेरिका में एक स्त्री ने एक ही ...जना। यह युग विज्ञान का है बच्चों के पालन ... के लिये बड़े-बड़े प्रबन्ध किये गये। एक ...ने ठेका लिया लाखों रुपये उसने दिये और ...समय पर उन बच्चों के समाचार और चित्र ...र लाखों ही कमाये। परन्तु इससे पूर्व के ...तो इससे भी अधिक विचित्र मिलते हैं। दो ...स्त्रियों का वर्णन आता है। उन्होंने ४-४ बार ...५ बच्चों के हिसाब से २०-२० बच्चों को जन्म

...के एक गांव में एक जमींदार के यहां दो ...८७ बच्चे पैदा हुए। ७० वर्ष की अवस्था ...वह मरा तो ८३ बच्चे जीवित थे। पहली ...बार गर्भवती हुई। प्रथम ४ बार चार-चार ...बार तीन-तीन और १६ बार दो दो बच्चे ...सरी स्त्री ने १८ वर्ष में १८ बच्चे जने

...र के एक समाचार पत्र के ४ मार्च १९३६ ...में छपा था कि ग्राम ओलाख ताल्लुका विजय- ...क स्त्री ने ५ लड़कियां और दो लड़के अर्थात् ...चे एक साथ जने।

...ही एक घटना ११ जून १९३६ को छपी थी ...महगान जिला नरसिंहपुर में गौड़ जाति ... स्त्री के यहां एक साथ ४ बच्चे पैदा हुए ...की अवस्था में भी सब जीवित रहे। ...त्तर जिले की एक घटना एक सज्जन ने ...है। एक स्त्री गर्भवती थी और काफी समय ...। अन्त में एक साधु ने आकर कोई औषधि ...से एक पोटली उसके गर्भ से निकली, ...सियों बारीक बारीक बच्चे निकले और ...र इधर-उधर हिल-जुल कर मरते गये।

दो से अधिक स्तन —

प्रकृति साधारणतया स्त्री को दो स्तनों से युक्त जन्म देती है। बालक के जन्म के साथ ही उसके पोषण के लिए उन स्तनों से दूध निकलता है। किन्तु लेखकों और खोजियों ने भिन्न-भिन्न देशों और जातियों की दो से अधिक कुचाओं वाली स्त्रियों का भी वर्णन किया है। एक स्त्री के स्तन मार्ग से तो रज स्राव होता बताया गया है।

अलेग्जण्डर महान की माता जूलिया के तीन स्तन थे। एक अन्वेषक ने एक ऐसी स्त्री का वर्णन किया जिसके तीन स्तन थे। तीसरा स्तन बांई कुचा के नीचे था।

१६७१ ई० में एक स्त्री रोम में लाई गई उसके दोनों ओर २-२ स्तन थे और इन चारों से दूध निकलता था। आष्ट्रिया के बन्दी ग्रह में लाई गयी एक स्त्री के मरने पर ज्ञात हुआ कि उसके ५ स्तन थे।

१८८१ ई० में डाक्टर नेविग वायर ने बियाना की एक शाही कौंसिल के सामने एक ऐसी स्त्री का फोटो पेश किया जिसके १० स्तन से थे, यद्यपि कई केवल चूचियां ही थीं। आष्ट्रिया में एक और स्त्री के ४ कुचाएं थीं। वह हर दफा ४ बच्चे जनती और एक समय में चारों को दूध पिलाती थी। मि० गार्जनर एक ऐसी स्त्री का वर्णन करते हैं जो हर बार ४-५ बच्चें जनती थी और उसकी छाती पर दूध देने वाले ६ स्तन थे।

विस्थानिक स्तन—

१८२७ ई० में फ्रांस में एक ऐसी स्त्री थी जिसके ३ कुचाएं थीं; दो तो अपने ठीक स्थान पर और एक उसके ऊपर थी। इस (तीसरे) से भी वह दूध पिलाती थी। एक डाक्टर ने एक स्त्री की पीठ पर स्तन के होने का वर्णन किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषों के अधिक स्तन—

पुरुषों में भी दो से अधिक स्तन चिन्ह के उदाहरण पाये जाते हैं। मि० फ्रेंको और ब्लैंएडी ने ऐसे दो पुरुषों का वर्णन किया है जिनके ४-४ स्तन थे, १८८३ ई० में फ्रांस के एक सैनिक स्कूल में निरीक्षण होने पर एक सिपाही ऐसा मिला जिसके दोनों ओर ३-३ स्तन थे, एक दूसरे के नीचे दोनों ओर तीन-तीन और डा० स्टेन बर्नने तो एक पुरुष की जांघ पर भी कुचा देखी।

आश्चर्य-भरे जन्म

१६३८ ई० में बम्बई की एक प्रदर्शिनी में एक ऐसे बच्चे को देखा जिसकी मूत्रेन्द्रिय का छिद्र न पुरुष का और न स्त्री का था, स्थान बिल्कुल साफ था, पता लगाने पर मालूम हुआ कि उसे पेशाब भी मल त्यागने के स्थान से ही होता है पिछले दिनों समाचार पत्रों में अमेरिका की दो जुड़वां लड़कियों का हाल छपता रहा है वे जब जवान होगयीं तो उनके बिवाह का प्रश्न उठा, कानून के अनुसार एक पुरुष एक ही स्त्री से विवाह कर सकता है अन्त में दो पुरुषों से विवाह होने का निर्णय हुआ दोनों पीठ से जुड़ी हैं और उनके दो पति हैं अब पढ़ा है कि वह मर गई हैं

बच्चे कभी सामने से और कभी एक ओर से जुड़वां भी पैदा होते हैं। कभी २ स्त्रियों के इतनी अधिक दाढ़ी निकलती है कि मुख से वे पुरुष ही प्रतीत होती हैं। किसी बच्चे के कभी २ अधिक अंगुलियां भी होती हैं। कोई २ ऐसे भी पैदा होते हैं कि वे बालक हैं या बालिका इसका भी ठीक पता नही लगता। इस प्रकार की बहुत सी बातें हैं। एक लेख में सबका वर्णन नहीं हो सकता।

सृष्टि में सदैव आश्चर्य होते रहते हैं। शिवजी महाराज की एक आंख का माथे पर होना पुराणों में लिखा है। कतिपय मनुष्य इसे अलंकार कहते हैं कि वह तीसरा नेत्र दिव्य चक्षु है। किंतु वह वास्तव में तीसरी आंख ही हो इसमें भी कोई असम्भावना नहीं है, प्रकृति के रहस्यों को समझना मनुष्य की शक्ति के परे है।

—इस वर्ष दो विशेषांक—

धन्वन्तरि के ग्राहकों को इस वर्ष दो विशेषांक भेंट किये जा रहे हैं। पहिला विशेषांक-"कल्प एवं पंचकर्म चिकित्सांक" आपको मिल ही गया है। दूसरा विशेषांक-गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग जनवरी माह में प्रकाशित होगा। यह विशेषांक उन्हीं ग्राहकों को दिया जा सकेगा जो इस वर्ष धन्वन्तरि के ग्राहक हैं। यदि आपके मित्र धन्वन्तरि के ग्राहक नहीं बने हैं तब उनको शीघ्र ग्राहक बन जाने की सम्मति दीजियेगा।

धन्वन्तरि के ग्राहक बढ़ाकर हमारी सहायता कीजिये।

व्यवस्थापक- धन्वन्तरि, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोहा (TRACHOMA)

लेखक-श्री० कविराज चन्द्रपालसिंह जी, नेत्र-रोग विशेषज्ञ ।

...स रोग को कुकरे, पोथकी तथा मिश्री नेत्राभि- ...भी कहते हैं । यह रोग प्रायः गरम प्रदेशों ...ता है, और स्पेन में तो बहुत ही होता है । ...का की नीग्रो जाति में नहीं होता है. शीत ...यूरोप आदि में भी नहीं होता है कहते हैं कि ... कालेज के एक डाक्टर को यह रोग ... काफी चिकित्सा करने पर भी आराम ...सका आखिरकार जब १८ साल बाद भारत- ...ड़कर यूरोप चले गये तब शीत प्रदेश में ...के कारण स्वतः ही आराम होगया था ।

...acoma अर्थात् खुरदरापन होता है पलपेब्रल- ...टाइवा (पलकों का श्वेतास्तर) के नीचे आल- ...के सिरे के बराबर उभार से (दाने से) हो ...हैं इनसे प्रायः दोनों आंखें आक्रांत हो जाती ... यह रोग संक्रामक है। कहते हैं कि इसमें ...णु भी होता है. जो कि पलकों के श्वेतास्तर में ...है. यह दाने अधिकतर ऊपर के पलक में ...जाते हैं, नीचे के पलक में कम होते हैं ।

कारण

कुछ लोगों का विचार है कि भारतवर्ष में माताओं का बच्चों की आंख में काजल लगाना यानि बहुत से बच्चों की आंखों में एक ही अंगुली से काजल लगाते जाना भी इसका कारण है, क्योंकि यह रोग बच्चों को अधिक होता है । किसी २ देश में मक्खियों से भी फैलता है । यह रोग सब जातियों में पाया जाता है । भीड़ में रहना (जैसे--बोर्डिंग हाऊस, सिपाहियों की बैरग) ज्यादः धूप व धूल का सेवन, अस्वस्थ देश में रहना, निर्धनता प्रायः इसकी उत्तेजना के कारण हैं । इसीलिये यह गरीबों या गन्दे समाज तथा मुसलमानों में अधिक पाया जाता है ।

पूर्वरूप-

यह श्वेतास्तर (कंजकटाइवा) का एक चिरस्थायी शोथ है जिसमें कभी--कभी तीव्र आक्रमण भी हो जाता है । आरम्भ में कुछ उभार से बनते हैं, कुछ दिनों बाद चारों ओर फाइब्रस टीशु बनकर विशेष प्रकार के दाने बन जाते हैं । जब यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Tissue बढ़ता ही चला जाता है तब स्कार टीशु बनने लगते हैं । पलक के नीचे का श्वेतास्तर लाल २ मखमल सा हो जाता है । यह रोग धीरे २ जीर्ण हो-जाता है। वैसे यह किसी भी अवस्था में हो सकता है, पर बच्चों में अधिक पाया जाता है ।

लक्षण -

रोगी को प्रकाश बहुत असह्य होता है. नेत्रों से जल निकलता है, खाज होती है. नेत्र जलते से हैं, नेत्रों में शल्य पदार्थ का अनुभव सा होता है वेदना भी होती है, दृष्टि मंद होजाती है पलकों में बहुत हल्की सी सूजन, परंतु पलक मोटे होते हैं । ऊपर का पलक मोटाई के कारण ऊपर नहीं उठ सकता, थोड़ा थोड़ा स्राव निकलता है जो तीव्र आक्रमण पर बढ़ जाता है । खासतौर से ऊपर के पलक का श्वेतास्तर लाल तथा मोटा होता है । जीर्ण होने पर स्राव कम। तीव्रता (acut) में पूय मिश्रित होता है। वलवर कंजकटाइवा (श्वेत पटल का श्वेतास्तर) लाल हो जाता है. ऊपर का पलक नीचे गिरा हुआ रहता है। इसे चार अवस्थाओं में विभक्त किया है—

प्रथमावस्था

छोटे २ दाने पड़ जाना, श्वेतास्तर का बहुत मोटा होजाना यह दोनों बातें ऊपर के पलक में अधिकतर किनारे पर होती हैं।

द्वितीयावस्था -

इसमें दाने से होते हैं जो पीले, भूरे, गोल तथा अर्धपारदर्शक होते हैं, कभी-कभी चपटे भी पाये जाते हैं, लेकिन पहिले से चमकदार तथा कभी कभी उठे हुए होते हैं, और पलपेब्रल कंजकटाइवा के अन्दर तक पाये जाते हैं इसके साथ में ही कुछ देर के बाद दानों के स्थान पर Scar बनने प्रारम्भ हो जाते हैं । जब स्कार बन जाते हैं तब कंजकटाइवा पर श्वेत रेखाओं का जाल सा नजर आता है ये रेखायें पतली तथा श्वेत होती हैं। यदि स्कार पर्याप्त हो जावें तो सारा Conjenctiva (श्वेतास्तर) श्वे... हो जाता है. इस Scar की Fornix भी लुप्त हो जाती है ।

वैसे यह रोग दो प्रकार का है। तीव्र Acute चिरकालिक Chronic वास्तव में रोग तो चिरकालिक ही है, परन्तु कभी कभी तीव्र आक्रमण भी हो जाते हैं । विशेषत: जब रोगी को आंखों से विशेष काम लेना पड़े----पढ़ना, सीना, रोना धुआं-धूल आदि जब तीव्र आक्रमण होता है तो शोथ के लक्षण उपस्थित हो जाते हैं, और स्राव भी बढ़ जाता है यह स्राव कभी कभी पूय युक्त होता है ।

वास्तव में तो यह रोग चिरकालिक ही है जो कई वर्ष तक चलता है ।

तृतीयावस्था—

इसमें तन्तुमय पेशियां बन जाती हैं और पलक सिकुड़ जाता है तथा टेढ़ा-मेढ़ा हो जाता है, इस अवस्था में दाने नष्ट हो जाते हैं, परन्तु कंजकटाइवा (श्वेतास्तर) में कोई फरक नहीं होता, इसमें पलक सिकुड़ जाने के कारण पलक भीतर की ओर चिकने तथा कम लाल हो जाते हैं ।

चतुर्थावस्था—

इस अवस्था में एन्ट्रोपियन-(पलक का अंदर को मुड़ जाना) तथा एक्ट्रोपियन (पलक का बाहर को मुड़ जाना) हो जाते हैं ।

उपद्रव —

इसमें निम्न लिखित उपद्रव मुख्य हैं १-पैनस २-कोर्नियल अलसर ३-औपेसिटी ।

पैनस

जब रोहे हों और ऊपर के पलक के भारी होने से वह न उठ सकता हो, तब वह cornea (कनी...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...) से रगड़ खाता है, जिससे कनीनिका में ...ाई शोथ होजाती है और इसमें रक्त वाहिनी ...ती हैं, आरम्भ में रक्त वाहिनी कनीनिका की ...पर होती हैं। यदि चिकित्सा न हो ...रे कनीनिका पर फैल जाती हैं, जिससे इसमें ...दर्शकत्व आजाता है और दृष्टि मंद होजाती ...सी रक्तवाहिनीयों के आने को Panas पैनस ...हैं। स्मरण रहे कि यदि कोई उपद्रव न हो तो ...चिकित्सा किये जाने पर ये रक्त वाहिनियां ...भी होजाती हैं. जिससे कनीनिका में पुनः पार-...होने की संभावना है ।

...पल अलसर—

...कंजकटाइवा (श्वेतास्तर) में Scar बनने और ...संकुचित होने के कारण पलकों के किनारे ...खिचने से Trachiasis हो जाता है, जिससे ...निका में व्रण हो जाते हैं (corneal ulcer) ...हैं।

...सिटी

...नीनिका के व्रण और पैनस के पीछे कनीनिका ...सिटी रह जाती है, जिससे दृष्टि मंद हो-...है।

...साध्य—

...रोग आरंभ में ही देख लिया जावे, तथा ...चिकित्सा होवे तो साध्य होजाता है। पर ...से रोगी इतना धैर्य नहीं दिखाते कि चिकि-...जारी रखें अतः रोग बार २ होजाता है। ...आवश्यक है कि रोगी को रोग का चिर-...प्रभाव भली भांति समझा दिये जावें।

...त्सा

...का कोई रोग ऐसा नहीं है जिसमें इतनी ...दवाई प्रयोग की जाती हों जितनी इसमें की ...। इसकी चिकित्सा निम्न है -

१--प्रतिषेध चिकित्सा --
२-औषध चिकित्सा शल्य-चिकित्सा
३--उपद्रवों की चिकित्सा

प्रतिषेध चिकित्सा—

—चूंकि रोग संक्रामक है, इसलिये रोगी के तौलिये रूमाल को प्रथक रखा जावे तथा वस्त्र कृमि--रहित करने चाहिये। रोगी को सिखाना चाहिये कि वह नेत्रों को अंगुलियों से न खुजाये, सर्वथा साफ रूमाल से पोंछे. रूमाल को भी प्रतिदिन उबाल लें। चिकित्सक को भी चाहिये कि जिन चीजों से चिकित्सा करे उनको नष्ट करवा दें। बोर्डिङ्ग हाऊस, वैरगों में इसका रोकना कुछ कठिन है, अतः इन स्थानों में विशेष ध्यान दें. उत्तम यही है कि दूसरे रोगियों से प्रथक् रक्खें। चिकित्सक को भी रोगी की आंख देखते समय अपनी आंख बचाकर रखनी चाहिये, तथा दवाई लगाने के बाद फौरन हाथ धोने चाहिये।

औषधि चिकित्सा —

अगर स्राव अधिक या पूय युक्त होवे तो मैग-(Magsulph) १ औंस, पानी १० औंस

—इन सबको मिलाकर धोवें, तथा इस्तैमाल के समय फिर इसमें आधा पानी मिलावें इसके बाद यह प्रयत्न करें कि किसी प्रकार दाने न रहें, इसके लिये नीला थोथा (copper) का प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि इसकी यही सबसे अच्छी चिकित्सा है. आजकल की चिकित्सा में इससे बढ़ कर और कोई इलाज नहीं है।

विधि—तुत्थ की साफ चमकीली नोकदार पैंसिल सी बनावें इसके बाद पलक को पलटें और उस पर हल्की २ टकोर देवें।

सावधानी—लगाते समय यह ध्यान रहे कि तुत्थ या तुत्थ का पानी कनीनिका पर न जासके। तथा कनीनिका के व्रण की अवस्था में भी प्रयोग न करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टकोर देने के बाद सैलाईन लोशन (नमक जल) से धो देना चाहिए। इसके बाद आंख में रोगन जैतून, काष्ठायल या बादाम रोगन आदि में से या पुराना घी को आंख में डाल कर मालिस सी कर देवें।

नोट—तुत्थ का प्रयोग प्रतिदिन न करके चौथे दिन करना चाहिये। इसी प्रकार फिटकरी का प्रयोग भी कर सकते हैं. कोई २ मिश्री प्रयोग करते हैं पर सबसे अच्छा तो तुत्थ का ही प्रयोग है। तुत्थ का निम्न ड्राप भी कर सकते हैं—

रसौत ३ माशे	फिटकरी ३ माशे
अफीम ६ रत्ती	मिश्री १॥ माशे
तुत्थ खील ३ रत्ती	अर्क गुलाब ३ तोला

योग—रसौत व अफीम को अर्क में मिलावें, बाद में शेष दवायें मिलाकर फिल्टर करें। दोनों समय १-१ बूंद डालें, उत्तम है।

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक पृष्ठ ६७ पर श्री० वैद्यराज दलजीत सिंह जी लिखित-रोहे की अपूर्व औषधि वाला योग भी उत्तम है। (प्रयोग इस लेख के अन्त में दे रहे हैं। -सं०) इंगलिश औषधि-सोल्यूसेप्टिसिन का ५ से १० प्रतिशत लोशन आंख में डालें तथा सल्फेनिलेमाईड १० ग्रेन सोड़ा बाईकार्ब के साथ दिन में तीन बार एक सप्ताह तक देवें। पुनः ४ से ८ सप्ताह तक दिन में दो बार देवें।

इससे चौंध, दर्द तथा संक्रमणजन्य लक्षण बहुत शीघ्र घट जाते हैं।

तथा पीली मलहम १ प्रतिशत वाला आंख में मालिस के लिये बरतें। M.B. ६६३ खिलावें, अच्छा लाभ करती है सोल्यूसेप्टिसीन को लोशन की जगह मरहम में भी बरतें तो और अच्छा लाभ करता है। कोई २ साहब चालमोगरा के तैल को पलक पलट कर रोजाना या तीसरे दिन लगाना बताते हैं। यह बहुत नहीं. पर कुछ लगता है। पलक को सीधा करने से पहिले उसे रुई से पोंछ देना चाहिये। यदि कनीनिका पर व्रण हो तब इसे भी प्रयोग न करें। कोई २ जैतून के तैल को भी टपका करना बताते हैं पर यह मालिश करने से अच्छा लाभ करता है।

शल्य चिकित्सा—

१—जब दाने बड़े हों और संख्या अधिक हो तो Knapps Rollar फोरसेप्स प्रयोग किया जाता है जिससे दाने छील दिये जाते हैं यह विधि पक्ष में एक बार ही की जासकती है।

२—यदि दाने बहुत अधिक होवें और पास बने हों तब आक्सिजन आफ फोर्निक्स करना चाहिये।

उपद्रव चिकित्सा

दानों के इलाज के बाद पैनस की प्रथक चिकित्सा करने की कोई आवश्यकता नहीं रहती है।

कनीनिका का व्रण-

इसमें पूर्ण विश्राम दें, आंख की सफाई रखें, तथा व्रणों को शीघ्र भरने के लिये—

पिक्रिक एसिड	४ ग्रेन
वैसलीन	१ औंस

—इसका मरहम बनाकर आंख में डालें और मालिश करें तथा स्कारलैट मरहम और optochin का प्रयोग अत्युत्तम है एटोपिन डालें और पट्टी बांधें।

कनीनिका का अपारदर्शकत्व—जिसे फोला या ओपेसिटी भी कह सकते हैं—

नोट—यह एक प्रथक रोग है जिसके कई भेद होते हैं. लेकिन यहां उपद्रव रूप में आने के कारण कुछ चिकित्सा लिखना जरूरी प्रतीत होता है।

यह रोहों का उपद्रव, आंख में कनीनिका पर आने वाला धुंधलापन, शोथ, चोट या व्रण के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...भी होसकता है जो हल्का होता है वह तिरछी ...से देखने पर मालूम हो सकता है, सीधी ...से मालूम नहीं देता।

...ल मधु–

...इसे आंख में डालने से लाभ होता है आयुर्वेद ...वाले फोले के लिये बहुत से अंजन कांच चन्दन ...दि डालकर बनाये जाते हैं। या कुछ दवायें घिसने ...भी प्रयोग की जाती हैं। हमारे विचार से वह ...म श्रेणी के फोला को आराम कर सकती हैं ...धिक में नहीं। क्योंकि बहुधा ऐसा देखने में आया ...कि उनके आंख में घिसने या लगाने से कनीनिका ...घिस जाता है और Iris कृष्ण-पटल दिखाई ...ने लगता है जिसे हम समझने लगते हैं कि आराम ...गया। लिहाजा उनका अधिक प्रयोग न किया ...य तो अच्छा है।

हमने अपने अनुभव में निम्न दवा सबसे ...च्छी पाई है और यह प्रत्येक अवस्था में काम ...ती है।

...कमल–

...यह इसकी तीनों अवस्थाओं में आराम करता है ...से आंख में ड्राप किया जाता है, हम इसे कविराज ...मनमोहन शर्मा वैद्य वाचस्पति आरोग्य मन्दिर ...याना झाँसी से मंगाते हैं, इससे आशातीत लाभ ...ता है।

१—डायोनीन मरहम –
गोल्डन मरहम (यलो ओक्साईड वाला)

२—कुनीन वाई सल्फ मरहम—अच्छा काम करते हैं, पर काफी दिनों तक प्रयोग करना चाहिये।

३—इनके अलावा इनसे भी उत्तम—नार्मल सैलाईन का सब-कंजक्टाइवल इंजेक्शन है।

४–तथा शुद्ध हवा का सब-कंजक्टाइवल इञ्जेक्शन सैलाईन से भी उत्तम है

बच्चों की आंखों में यह बिना दवा के स्वयं भी अच्छा होजाता है, क्योंकि उनका स्वास्थ्य प्रतिदिन उन्नति करता रहता है।

\+ \+ \+

रोहे की अपूर्व औषधि–

द्रव्य और निर्माण विधि—

नौसादर १ तोला रसकपूर २ चावल

योग—दोनों को पीतल की थाली की पीठ पर रख कर थोड़ा जल मिला हाथ से खूब रगड़ें। रगड़ते-रगड़ते जब वह हरे रंग का होजाय तब एक कांच की डाट वाली शीशी में रखलें।

सेवन विधि—इसमें से थोड़ी सी दवा अंगुली पर लेकर रोहे के रोगी की आंख में अञ्जन की भांति दिन में दो बार लगावें।

उपयोग—इसके सेवन से २-३ दिन में ही पुराने से पुराना रोहा (पोथकी) आराम हो जाता है।

—गुप्तसिद्ध प्रयोगांक पृष्ठ ६७।

वैद्यों के लिये थोक भाव

धन्वन्तरि कार्यालय का जन्म ही चिकित्सकों को सर्वोत्तम औषधियां उचित मूल्य में सस्ताई करने के उद्देश से हुआ है। यही कारण है कि वैद्यों के लिये थोक भाव सर्वप्रथम हमने ही निश्चित किये। हमारा थोक भाव का सूचीपत्र कल्प एवं पञ्चकर्म चिकित्सांक के अन्त में लगा हुआ है। उसे आध्योपान्त देखें और औषधियां या पुस्तकें जो भी जरूरी हों मंगावें; यह आप विश्वास रखें कि औषधियां सर्वोत्तम ही सस्ताई की जांयगी।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर निदान !

लेखक—श्री० वैद्य मिश्रीलालजी विशारद, इन्दौर।

[भाग २२ अङ्क ११ से आगे]

प्रसूतज्वर

होता है केवल स्त्रियों को, रोग यह संसार में।
वह भी प्रसूता ही फंसा करती हैं इस आजार में॥
शिशु प्रसव के पश्चात्, पैंतालीस दिन तक ही तथा।
होती किसी को रजोदर्शन पूर्व तक ही यह व्यथा॥
यदि प्रसव में शिशु शीस से छिलकर कभी संयोग से।
जननेन्द्रिय में उत्पन्न हो क्षत भूलवश कुछ योग से॥
अथवा कोई खेड़ी तथा झिल्ली उदर में सड़ रहे।
या रक्त के थक्के निकलना बन्द होकर पड़ रहे॥
जब यह विशैली वस्तुऐं, पूरी न बाहर आऐंगी।
तो तीव्र विष इस रोग का निश्चय वहां फैलाएंगी॥
उस समय यदि उपचार उत्तम हो न पाये भूल से
तो प्राण रक्षा कर न सकती स्त्रियां इस शूल से॥
अतिरिक्त इसके शीत और वातादि के उत्पात से
होता कभी यह रोग चिन्ता शोक के आघात से॥
सद् वैद्य कहते हैं इसे अति तीव्र संक्रामक व्यथा।
जो फैलती है प्रसव में ही संक्रमण से सर्वथा॥
बहुधा विषैली वायु जब, जाती प्रसूतागार में।
तो संक्रमण होता सहायक दुष्ट रोग प्रसार में॥

लक्षण

ज्वर कास प्यास शरीर भारी शोथ शूलतिसार हो।
अगड़ाइयां और कम्प हो तब सूतिका ज्वर भार हो॥
हो गर्भ आशय के दबाने से प्रसूता को व्यथा।
तो जानलो है शोथ उस पर है प्रसव ज्वर सर्वथा॥
होती कभी इस रोग के आरम्भ में वमनादि भी।
मुख पाक हो जाता कभी, होती है अरुची आदि भी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजयक्ष्मा

सम्प्राप्ति

धुम ढूँठते जब दोष रस वाहक शिराओं में कहीं।
रस से कभी तब रक्त आदिक धातु बन सकती नहीं ॥
यदि मार्ग रस का स्वच्छ हो, तो रक्त आदि बनें सभी।
जब धातुएं बनती रहें तो, क्षय न हो सकता कभी ॥

कारण

अत्यन्त मैथुन मूर्ख जो करते हैं निज अज्ञान से।
मल मूत्र आदिक वेग को, जो रोकते अनजान से ॥
निज शक्ति से बाहर परिश्रम मूर्ख कर पाते हैं जो।
भोजन अनियमित ढंग से न्यूनो अधिक खाते हैं जो ॥
भय शोक चिन्ता रूक्ष भोजन, नित्य ही करते हैं जो।
अति क्षीण होकर यक्ष्मा से ग्रसित हो मरते हैं वो ॥

पूर्व रूप

अंगड़ाइ श्लेष्म प्रवाह श्वास वमन तथा उन्माद हो।
मन्दाग्नि, पीनस, कास और निद्रादि का उत्पात हो ॥
हों श्वेत नैत्र सदा तथा, रुचि मांस मैथुन से रहे।
निज तालु सूखा सा अधिक जिस व्यक्ति का होता रहे ॥
किरकिटा नीलाकण्ठ, आदिक स्वप्न में जिसको दिखें।
सूखी हुई सरिता तथा त्रण केश का गिरना लखे ॥
तरु शुष्क धूम और अग्नि से भी स्वप्न में पीड़ित रहे।
क्षय पूर्व के हैं चिह्न यह विद्वान वैद्यों ने कहे ॥

त्रयरूप क्षय

पीड़ा हो अंसोपार्श्व में, करपाद में सन्ताप हो।
सर्वाङ्ग मय ज्वर से सदा क्षय रोग का उत्ताप हो ॥

षट रूप क्षय

ज्वर कास अरुचि श्वास और स्वर भेद भी यदि ज्ञात हो।
हो रक्त दर्शन तब प्रकट षट्रूप क्षय आघात हो ॥

अतिसार

सम्प्राप्ति

द्रव धातु होकर कुपित जब, जठराग्नि करती मन्द है।
पाचन-क्रिया निज देह की तत्काल होती बन्द है ॥

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब धातु, मल मिलकर अपान आनल क्रिया के योग से।
मल को बहादें गुदा से, अपने विशेष प्रयोग से॥
तब विज्ञवर इस रोग को कहते हुआ अतिसार है।
सम्प्राप्ति इसकी है यही, उत्तम कई उपचार है॥

अतिसार भेद

वातादि दोष विचार से षट् भेद हैं अतिसार के।
उत्तम अनेक उपाय हैं, इस रोग से उद्धार के॥
त्रयरूप कफ, पित्त वात, चौथा रूप शोक अतिसार है।
है सन्निपातज पांचवां और छटा आमतिसार है॥

अतिसार के पूर्वरूप

गुद नाभि कोख, हृदय तथा जिसके उदर में कष्ट हो।
आध्मान और विबंध से, निज गात्र का सुख नष्ट हो॥
गुद वायु के अवरोध से जो व्यक्ति भी बीमार हो।
उसको समीप भविष्य में समझो महा अतिसार हो॥
जब शब्द गुड़गुड़ आंत में हो और उदर में शूल हो।
कटि उरू तथा जंघादि में श्रमसा निरा दुख मूल हो॥

वातातिसार

बाहर निकलती सी गुदा जिस कष्ट में कुछ ज्ञात हो।
तो वात के अतिसार का निश्चय दुखद उत्पात हो॥

पित्तज अतिसार

अत्यन्त पीत और नील वर्णज मल प्रवाहित हो जिसे।
मूर्छा त्रषा गुद दाह हो पित्तातिसार कहो उसे॥

कफजन्य अतिसार

जो श्लेष्ममल स्निग्ध हो, स्पर्श शीतल ज्ञात हो।
रोमांच हो तब श्लेष्म के अतिसार का उत्पात हो॥

सन्निपातोद्भव अतिसार

शूकर वसा या मांस रस के तुल्य जो अतीसार हो।
है सन्निपातज रोग अति दुःसाध्य दुःख अपार हो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोकजन्य अतिसार

अति उष्णता से शोक की जठराग्नि जब होकर कुपित।
व्याकुल बनाकर रक्त को उत्पात करती है अमित॥
तब चिरमिटी के रंग सा शोणित गुदा की राह से।
अतिसार बन आने लगे अति तीव्र वेग प्रवाह से॥
तब शोक का अतिसार कहते विज्ञवर निज ज्ञान से।
उत्तम करें उपचार अनुभव-पूर्ण निज पहचान से॥

आमातिसार

पाचन क्रिया के दोष से जो दस्त बारंबार हो।
विष्ठा विशेष न आइके इच्छा अधिक हर बार हो॥
स्निग्ध भारी रंग में मल हो अनेक प्रकार का॥
तब विज्ञवर कहते उसे है कष्ट आमतिसार का॥

और पक्व के लक्षण

परिपक्व मल जो कभी जल मग्न हो सकता नहीं।
कच्चा पुरुष यदापि जलतर विज्ञ होसकता नहीं॥

असाध्य अतिसार

जो पक्व जामन के सदृश स्निग्ध काले रंग का।
या रक्त कृष्ण मिला हुआ, विष्ठा हो रङ्ग-बिरङ्ग का॥
घृत तैल चरबी तुल्य हो या मांस जल अनुसार हो।
या अस्थि हीनज मांस अथवा दूध दधि अनुसार हो॥
मय्यूर चन्द्र सदृश अनेकों रंग का मल हो जहां।
अतिसार है दुःसाध्य वह दुर्गंध शव सी हो जहां॥
तृष्णा प्रदाह सहित जिसे निज पार्श्व में अतिशूल हो।
गति हीन सी हों इन्द्रियां तम श्वास दुख का मूल हो॥
हो अस्तव्यस्त अनर्थ भाषी और हिक्का साथ हो।
गत आयु उसकी जानलो यदि मोह मय उत्पात हो॥

—क्रमशः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वमन चिकित्सा पर अनुभव।

लेखक-न्यायायुर्वेदाचार्य प० चन्द्रशेखर जी जैन शास्त्री न्यायतीर्थ, जबलपुर।

अप्रैल १६४७ का विवरण है। हमारे पड़ौस में एक धनिक सज्जन यकायक बीमार होगये। लोग कहते हैं कि बीमारी यकायक पैदा होजाती है किन्तु यह एकान्त नियम नहीं। कभी २ धीरे २ दोष एकत्रित होते रहते हैं और कोई ज़रा-सा कारण पाकर एकदम भड़क उठते हैं।

हमारे पड़ोस के धनिक सज्जन जैन थे जैन लोग रात में भोजन नहीं करते यह बात प्रायः सुप्रसिद्ध है किन्तु कतिपय जिह्वालोलुपों ने 'फलाहार' को रात्रिभोजन में छूट रूप देकर उसका दुरूपयोग करना प्रारम्भ कर दिया है। सिंघाड़ा शाकाहार में शामिल है। उसे सुखाकर पीस लिया जाता है और फिर मांडकर रात को कढ़ाई में घी डालकर पूड़ियों की तरह तल किया जाता है। इस तरह का आहार कतिपय दूसरे रईस जैनों की तरह इन महोदय के यहां भी रात को ११-१२ बजे तक चलता रहा है। एक दिन आहार की गरिष्ठता कुछ और अधिक बढ़ गई, फलतः वमन का रोग-भूत सवार हो बैठा और वे घबड़ा गये।

जब ५-७ वमन होगये तो वमन रोकने के लिए उनको चिन्ता हुई। उन्होंने एक पेटेन्ट औषधि विक्रेता वैद्य को खबर दी, न जाने क्या सोचकर उन्होंने भुनी फिटकरी की ३-४ पुड़ियां दीं। किंतु दिलासा जोरदार बंधादी थी। शाम को फिर ३ पुड़ियां आईं, किंतु ७-८ पुड़ियां उदरसात् कर लेने पर भी वमन बन्द नहीं होरही थी। प्रायः पुड़िया देते ही वमन हो जाती थी। बाद की ३ पुड़ियों में उन्होंने कुछ और भी मिश्रण कर दिया था।

मैं भी उधर से जा रहा था, राह चलते मुझसे भी सलाह ली गई। विना कुछ विशेष ख्याल किये एक सरल उपचार मैंने बता दिया। वह उपाय उन कमरे में रखी हुई दो शीशियों को देखकर याद आगया-अर्क कपूर और पुदीन हरा। मैंने जल्दी क्योंकि मुझे उसी समय वार्षिक-परीक्षा के प्रश्न खोलने वाली कमेटी के साथ सहयोग देना था अ यह बता दिया कि संतरे या मुसंबी का रस निका लो और २-३ बूंद अर्क कपूर ऊपर से डालदो अ थोड़ा २ करके चम्मच से पिलाओ।

शायद जल्दी के कारण या और किसी वजह उन्होंने दो मुसंबियों का रस निकलवा कर २-३ बूं अर्क कपूर और कुछ पोदीना हरा डाला और सा एक साथ चढ़ा गये, फलतः थोड़ी देर बाद वम होगई।

ध्यान रहे कि आज से एक वर्ष पूर्व जवाहरगं के एक दूसरे रईस के साथ इसी प्रकार का प्रकर आगया था उनको उपर्युक्त उपचार बताया ग और उन्होंने किया भी ठीक उसी प्रकार ही, बहुत जल्दी ३-४ घंटे में ही आराम होगया था कि ये महाशय एक साथ सारा का सारा डाट गये। चा के चम्मच से उक्त स्वरस को इन्होंने थोड़ा २ न पि अतएव लाभ की जगह और गड़बड़ होगई। परी भवन से लौटने के बाद मुझे यह समस्त विवर मिला।

चिकित्सकों को यह भी ध्यान रखना चाहिये कि औषध तरकीब से योग्य मात्रा में ही दी जाय अनाप-सनाप औषध लेने से रोग ठीक नहीं होपाता मैं जोर के साथ कहता हूं कि गर्मी के दिनों में य कदाचित् वमन का प्रसंग आपड़े तो मुसम्बी अनार अथवा संतरे के स्वरस में २-३ बूंद अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रा डाल दें और उसे चाय की छोटी चम्मच से ...-५ मिनट में पिलाते रहें, पीने के लिये पानी न दें ...वश्यकता पड़ने पर पानी में उक्त अर्क मिला ...ड़ा २ करके कई बार दें। जब तक शुद्ध स्वरस में ...तधारा मिली होगी तब तक स्वाद भी बहुत ...ढ़िया होगा। पानी के मिश्रण के बाद फिर वह ...द नहीं रहता। रोगी भी इस पानी मिले स्वरस ...पसन्द नहीं करता, इसलिये औषधरूप में अथवा ...स बुझाने को उक्त चीजों का स्वरस ही अमृत-...रा मिलाकर देना चाहिये।

अस्तु परीक्षालय से लौटकर मैंने उक्त विवरण ...ना, इसी बीच पहले वैद्यराज फिर आये। उन्होंने ...र अपनी ४-५ पुड़ियां दीं किंतु पुड़ियां लेते ही ...न होजाती। शाम तक दूसरे दिन यह क्रम चालू ...ा, यदि हिसाब लगाया जाता तो वमन होते होते ...करीब ३६ घंटे हो चुके थे। रात्रि में वमन की ...ा कम होजाती थी जब कि दिन में अधिक ...ती थी।

अगला दिन आया वैद्य जी ने औषध दी, फिर इसी प्रकार वमन चालू थी, दुपहर तक ५-७ ...न हो चुकी थीं, वैद्यराज को बुलाया, उन्होंने पूछा ...क्या हाल है ? उत्तर में विनोदप्रिय रईस रोगी ने ...कि महाराज, वही चाल बेढंगी जो पहिले थी ...अब भी है।' कहा वैद्य जी ने स्वभावानुसार फिर ...शा बांधनी चाहा फिर उसने चिकने घड़े पर ...का असर किया और वैद्यराज औषधि भेजने ...कह कर प्रस्थान कर गये।

उसी दिन शाम को घरवालों ने धर्मार्थ ...धालय के वयोवृद्ध चिकित्सक को बुलाया, ...ख्याल से उन्हें अवकाश कम कम रहा होगा ...पेटेन्ट औषध के पर्चे द्वारा अपने कमीशन का ...म रतमें हो। जो हो चटपट ९.लादि चूर्ण और ...का परचा बनाकर दे दिया और साथ ही ...मदनगर फार्मेसी की कामदुघा मौक्तिक मंगवाने की सलाह दे दी, साथ में पीने के लिये एक विशेष प्रकार का पानी, जिसमें पोदीना सोंठ सोंफ काला नमक और काली मिर्च डाली गई थी बतलाया। दवा दी गई और पानी भी पिलाया गया पर न तो पानी ही पेट में ठहरता था और न औषध ही। आधा घंटे के बाद ही वमन हो जाया करती थी इसी तरह दवा लेते-लेते रात होगई। दूसरा दिन हुआ फिर वही औषध और वही पानी। पर फल कुछ नहीं।

अंत में वैद्य समाज से (नामधारी सस्ते वैद्यों से) हार कर रोगी डाक्टर साहब की शरण में पहुँचाया गया। डाक्टर साहब ने भी अपनी प्रचलित विधि के अनुसार एक पेय औषध तथा कुछ पुड़ियां दे डालीं। खाने के लिये साधारण सुपाच्य हलका भोजन बताया, दवा चली पर आफत वही थी कि पेट में न तो औषध ही रहती थी और न पानी आदि ही। डाक्टर दिनमें दुबारा बुलाया गया, पल्स (नब्ज) देखी, वर्फ चुसाना सिर पर पट्टी रखना आदि कई बातें बताई पर लाभ तो पास न फटकता था और हानि होती चली जाती थी। सलाह के लिये दूसरे डाक्टर बुलाये गये, दोनों ने सलाह की औषधें बदली गईं दोनों डाक्टर हाथ मिलाते बाहर गये। वास्तव में एक बात तो अवश्य देखी है कि डाक्टर डाक्टर से सलाह करने में अपने को छोटा नहीं समझता और न एक-दूसरा अपना रौब किसी पर कसना चाहता है। वे प्रेम पूर्वक विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और खुश होकर हाथ मिलाते हुए चल देते हैं। इधर जरा वैद्यसमाज को देखिये। कई लोग तो 'कुक्कुरो कुक्कुरं दृष्ट्वा' कह कर उपहास करते हैं। और कोई और किसी भाषा द्वारा उपहास करते हैं। किन्तु यह सिर्फ कहने की ही बात हो सो नहीं वास्तव में है भी ऐसा ही। एक वैद्य दूसरे वैद्य से मिल कर परामर्श नहीं करना चाहता, दोनों से अलग-अलग प्रश्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीजिये उत्तर मिलेगा कि वह बेचारा क्या जनता है उसे कुछ भी आता-जाता नहीं, यदि आप मुझसे पूछें तो उस वैद्य के इलाज से इलाज न कराना ही अच्छा है, इत्यादि-इत्यादि। इस प्रकार आज वैद्य समाज रोगी और उसके परिचारक दोनों से ही श्रद्धा खो बैठता है।

दुपहर को दोनों डाक्टरों ने मिलकर पथ्य तथा औषध व्यवस्था की। किंतु आराम न हुआ। इधर मैं भी कार्यवश घूम रहा था मुझे देखते ही वे सेठ खूब बोल उठे कि कम से कम पड़ौसी के नाते आपको मेरी फिक्र रखनी चाहिए इस वक्त वैद्यराज न बने रहो इसके बाद हंसने लगे। मैं पहुँचा बातचीत की ऊपर का सारा हाल उन्होंने मुझे सुनाया मैंने संक्षेप में कहा आप डाक्टर से कहिए कि वह पेट साफ करने वाली औषध दें। आपको ३-४ दिन से टट्टी तो साफ होती ही नहीं, साथ ही भोजन बंद रखिये, पानी थोड़ा-थोड़ा करके कई बार पिय धर्मार्थ औषधालय के चिकित्सक ने पानी तैयार करने की जो विधि बताई है वह अत्युत्तम है।

फिर डाक्टर आये। एक वैद्य ने पेट साफ करने को कहा है यह जान कर तत्काल उन्होंने प्रतिवाद किया और कहा कि इस प्रकार करने से केस खराब हो जायगा, हम पहिले कै बंद करते हैं और बाद में ये सारी बातें सुनेंगे इत्यादि-इत्यादि

दोनों डाक्टरों की सलाह से फिर दवा दी गई पर वमन बराबर चालू थीं। घर वाले भी घबड़ाने लगे थे प्रातः उनकी ससुराल तार दे दिया गया था वहां से शाम तक सभी लोग आ पहुँचे।

सेठ जी शाम को फिर मिल गए। बीमारी के कारण हंसमुख आकृति पर रोग ने पर्दा डाल दिया था। बोले—क्या करूं समझ में नहीं आता। पेट में बहुत दर्द है डाक्टर पेट साफ करने की ओर ध्यान नहीं दे रहे। यदि आपकी सलाह हो तो भुनी हरड़ और काला नमक गर्म पानी से लेलूं, पेट साफ हो जायगा।

इस समय हैजे के दिन न थे और न केस हैजे का था। मैंने चटपट कहा कि हां आप और सब काम डाक्टरों का ही चलने दीजिये, पर इलाज अपना ही रखिए। आपको शीघ्र ही लाभ होगा पर आज शाम को भोजन न करें। अन्ततोगत्वा उन्होंने शीघ्र यह प्रयोग ले ही डाला।

डाक्टर आए नाड़ी देखी कमजोर थी। पथ्य व्यवस्था दी। दूध या पतली खिचड़ी खाने को बताई. रोगी का पेट खाली था कमजोरी महसूस हो ही रही थी ऊपर की कही बात टाल कर आखिर उन्होंने खिचड़ी खा ही तो ली दूध भी पिया; डाक्टर की वमन रोधक औषधि भी ली, इन्जैक्शन भी तैयार था पर रोगी ने सुई लगवाना पसन्द न किया।

रात के ६ बजे होंगे, जोर से वमन हुआ रोगी एक दम शिथिल हो गया। बेहोशी-सी प्रतीत होने लगी किन्तु रोगी को हृदय से शांति थी। उसके डेढ़ घंटे बाद जोर से दस्त हुआ और फिर उसके आध घंटे बाद एक वमन और हुई रात को करीब ९ का समय हो चुका था, ससुराल वाले परेशान थे डाक्टरों के पास दौड़े गये, इस बार तीन डाक्टर आये तीनों परामर्श किया। एक ने अपना इन्जैक्शन तैयार किया दो डाक्टरों ने दवायें बदलीं और रोगी के लाख मना करने पर भी, ४-५ हित-चिन्तकों ने पकड़ कर इन्जेक्शन लगवा ही तो दिया पर अच्छी तरह न लग पाया. घर वाले को इतने से ही सन्तोष न हुआ, एक डाक्टर को और पकड़ लाए, उसने वमन रोधक तरल औषधि भिजवाई और पीने की सलाह दी। रोगी घबड़ा रहा था और जोर २ से चिल्लाने लगा और मुझे बुलाने को कहा।

मैं रात को १० बजे सो जाता हूं अभी रात को १० बजे होंगे खूब आवाजें दी गई मैं उठा, कपड़े पहने, रोगी के यहां गया, वह करुण दृश्य देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...दौड़ने लगा सारी बातें रोगी से सुनीं नाड़ी ... ससुराल वाले दवा पिलाने की तैयारी कर रहे ...र रोगी ने उनके हाथ से कांच की औषधि की छीन कर फेंक दी। मुझे परिचारिकों की यह ...ती बुरी लगी। रोगी कह रहा था कि मुझे ...मारने को क्यों तुम आ गये हो ?

...लाह दी गई कि सब चले जांय औषधं एक ...ख दें, तबियत ठीक है यदि थोड़ी देर में एक ...और होगया तो अब कोई औषधि देने की ...न होगी। लोग मान गये और सब चले ...रोगी, मैं और उनकी पत्नी कमरे में थे; आराम ...घण्टे बातें कीं, तब सारा हाल मालूम हुआ। ...फिर लौटे और तब मैंने सबसे कहा आप ...सज्जन जाकर सो जांये और कोई चिन्ता न

...रोगी ने सुबह से मेरी चिकित्सा चलाना पसंद ... मैंने कहा कि भाई यदि आपको एक दस्त और होजाय तो फिर किसी चिकित्सा की जरूरत नहीं फिर भी सुबह जरूर देख लूंगा

प्रातः रोगी ने बुलाया, देखा और पूछा अभी ५ बजे ही एक खुलासा दस्त हुआ था। खाने को मना कर दिया लंग मुनक्का भूनकर खाने को कहा और ऊपर से काला जीरा कालानमक, काली मिर्च तुलसी के पत्ते और हींग पानी मिला पीसकर और गर्म कर पीने को कहा। धर्मार्थ औषधालय के चिकित्सक का पूर्वोक्त पानीय प्रयोग बताया, ३-३ माशे दूध ५-५ ७-७ मिनट में शाम के समय पीने को बताया। संतरा अनार भी एक बार में आध तोले की मात्रा से बताये गए दो दिन के इस प्रकार अन्न त्याग से रोगी को आराम हो गया।

कभी-कभी जरा-जरा से केस ठीक निदान न करने से बिगड़ जाते हैं, इस केस में रेचक की ओर न ध्यान देने से ७-८ दिन रोगी को परेशान करता रहा।

-: स्वप्नदोष और उसका उपचार :-

लेखक—वैद्य पं० खेमराज शर्मा छांगाणी, आर्वी।

स्वप्नदोष के विषय में कई कल्पनाऐं मानव-...में विशेष कर नव युवकों में उठा करती ...उनका ख्याल है कि स्वप्न-दोष होते ही वीर्य का स्खलन होता है किन्तु ऐसा सोचना भ्रम है। उस तरल पदार्थ में वीर्य का पूरा-हिस्सा नहीं अपितु कुछ अंश में उसमें वीर्य अर्थात् Spermatozoi पाये जा सकते हैं। ...स्थान (कोष) एवं मल मार्ग के मध्य में एक ...की ग्रन्थि होती है। इस ग्रन्थि में जब किसी ...की कामोत्तेजक उत्तेजना की प्राप्ति होती ...से इसका विकास होने लगता है और यह एक प्रकार का पतला श्राव या तरल पदार्थ उत्पन्न करती है। यही तरल पदार्थ निद्रावस्था में या मल-विसर्जन के समय जब किञ्चित जोर लगाया जाता है तब जननेन्द्रिय द्वारा बाहर निकलता है किन्तु जहां तक अनुमान है कि उन्हें ही अधिकतर श्राव होता है जो लोग मलावरोध के रोगी हैं तथा निर्बलता जिनके साथ है।

आश्चर्य तो यह है कि इस व्याधि का वर्णन प्राचीन वैद्यक ग्रंथों में नहीं पाया जाता, कुछ विद्वान बङ्गाली चिकित्सकों में इस व्याधि की गणना शुक्र प्रमेह के अंतर्गत की है। प्राचीन समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में इस व्याधि के न होने का प्रधान हेतु यही था कि उस समय का युवक समाज आज के समान पतित नहीं था वे वीर्यरक्षा के लिये भरसक प्रयत्न-शील रहते थे. वे निर्बल वीर्य वालों की संतानें नहीं थीं और उनके हृदय में कभी भी कुसंस्कार नहीं होते थे। उनके मानसिक विचार नितान्त शुद्ध एवं सरल होते थे। यही सब बातें इस व्याधि को उत्पन्न होने से रोकती थीं।

जिस जगह वीर्य उत्पन्न होता है वह पुरुषेन्द्रिय के नीचे थैली के रूप में लटकी रहती है, इसमें मुर्गी के अण्डे के आकार के दो अण्डे जैसे होते हैं जिन्हें अण्ड कोष कहते हैं. इन्ही में वीर्य बनता है

शिश्न दण्डों के निचले सिरों के पास मूत्राशय के आगे प्रोस्टेट ग्रन्थि होती है, इस ग्रन्थि में एक प्रकार का चिकना तरल पदार्थ तैयार होता है जो वीर्य के साथ मिलकर वीर्य को भी पतला कर देता है। प्रोस्टेट ग्रन्थि के आस-पास दोनों ओर शुक्राशय होते हैं और पीछे की तरफ मूत्राशय होता है जिसमें मूत्र एकत्रित होकर पुरुषेन्द्रिय द्वारा बाहर की ओर निकलता है।

उपरोक्त बातों से पाठक समझ ही गये होंगे कि स्वप्नदोष द्वारा निकलने वाला पदार्थ सम्पूर्ण वीर्य ही नहीं, अपितु वही प्रोस्टेट नामक ग्रन्थि से उत्पन्न होने वाला लेसदार मादा है जिसमें कुछ अंशों में वीर्य-कीट अवश्य पाये जा सकते हैं।

रात्रि को या दिन के समय निन्द्रावस्था में किसी प्रकार की कामोत्तेजना होकर वीर्य के समान एक पदार्थ इन्द्रिय द्वारा निकल जाना यही स्वप्न-दोष कहलाता है। यह रोग विशेष कर निन्द्रावस्था, स्वप्नावस्था में ही होता है इसी लिये इसे उपरोक्त संज्ञा दी गई है, किन्तु शुक्रमेह के विषय में चरकाचार्य का कथन है कि—

शुक्राभं शुक्रमिश्रं वा मुहुर्मेहति यो नरः।
शुक्रमेहिनमेवाहुः पुरुषश्लेष्मकोपतः ॥

अर्थात् - जो मनुष्य वीर्य के समान या वीर्य जैसी रंगत वाला एवं वीर्य मिला हुआ पेशाब करता है, उसे शुक्रमेह से पीड़ित जानना चाहिये स्वप्नदोष के लक्षण ऊपर ही लिख चुके हैं, इस लिये इन दोनों की तुलना पाठक स्वयं ही कर सकें जब मनुष्य गहरी निद्रा में रह कर स्वप्न में कि रूपवती स्त्री को देखता है, और उसमें जब आलि गन आदि करने की चेष्टा करता है उसी सम काम-भाव जागृत होकर इन्द्रिय उत्तेजना होती और वीर्य मिश्रित वही लेसदार मादा का स्खल होजाता है। यह रोग यदि स्वस्थ मनुष्य को मही में एक-दो बार होजाय तो रोग नहीं समझा जाता किंतु यदि ऐसा क्रम कई बार होजाय तो यह रो शीघ्र ही मनुष्य को निर्बल बनाकर कई एक रो उत्पन्न कर देता है स्वप्नदोष केवल निद्रावस्था कुविचार आने पर या अधिक रात्रि गए अत्यन्त नमकीन पदार्थ, उष्ण एवं गरिष्ठ पदार्थ खाने प बिना किसी शंका के स्खलन होकर कपड़े पर दा लग जाते हैं।

स्वप्नदोष होने के ऐसे तो कई एक कारण हैं किंतु उनमें से कुछ-एक का यहां उल्लेख किया जाता है। (१) जो पदार्थ वीर्य की स्तम्भन शक्ति को न करने में सहायक होंगे (२) मानसिक विचारों का पतन होना (३) बाल्यावस्था में ही अप्राकृतिक ढंग से कुटेवादि करना (४) मन को अशुद्ध बनाये रखना (५) प्रातःकाल स्नान एवं शारीरिक व्यायामादि न करना (६) रात्रि को सोते समय उष्ण पदाथ मिर्च तैल, गुड़, आदि वस्तुओं का सेवन करना। (७) इच्छा से अधिक भोजन करना (८) मलमूत्रादि का अवरोध करना (९) नाच, सिनेमा, थियेटर आदि अधिक देखना या गन्दे और कामोत्तेजक उपन्यास एवं कितबें पढ़ना। (१०) दुर्व्यसन जैसे चाय बीड़ी तम्बाकू, गांजा, भांग. शराब इत्यादि का सेवन करना। (११) इन्द्रिय को बार २ छूना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह के बाजारू तिला. तैल आदि की मालिश ...ना। (१२) अधिक मिठाई खाने से शरीर की ...ता बढ़ती है, और अजीर्ण होता है। अजीर्ण ...से भी प्रायः स्वप्नदोष हो जाता है। (१३) ...र बैठे रहना दिन में सोना और रात्रि में ...रण करना कमोत्तेजक वस्तुओं का अधिक ...योग करना आदि २।

...दोष होने का प्रधान कारण —

...मानसिक व्यभिचार होता है। यह बात पुरुष ...में उत्पन्न होती है. जिससे उनके मन में सदैव ...विचार ही घूमा करते हैं और मौका पाकर निद्रा-...में स्वप्नदोष हो जाता है।

...दोष उपचार—

स्वप्नदोष की चिकित्सा सर्व प्रथम मन के द्वारा ...रनी चाहिये, क्योंकि स्वप्नदोष व्याधि का ...ध मन से है। इस लिये रात्रि को सोते ...अपने दोनों हाथ एवं पैरों को शीतल जल से ...ना चाहिये तथा लेटते समय ईश्वर का नाम ...से कम ५ मिनट तक मन ही मन में लेकर ...शयन करना चाहिए। ऐसे समय पर मन में ...प्रकार की अन्य चेष्टा नहीं करनी चाहिये। ...उपरांत जो स्वप्नदोष होने के प्रधान कारण ...लिखे जा चुके हैं उन पर ध्यान रख कर उस ...प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये। इतना होने पर ...इस व्याधि में वातादि दोषों का संबन्ध रहता ...इसलिये औषधियों की आवश्यकता प्रतीत होती ...अतएव कुछ सुलभ प्रयोग नीचे दिये जाते ...आशा है, इससे कुछ लाभ हो सकेगा। वर्तमान ...में इस व्याधि का जोर भारतवर्ष में अधिक ...और अवनति का कारण भी यही हो सकता है।

...षोपचार—

१—सिद्ध एलादि चूर्ण—

गिलोय सत्व, बन्शलोचन, छोटी इलायची के दाने और बबूल का गोंद समभाग तथा इनसे दुगनी शक्कर या मिश्री मिलाकर यथा-विधि चूर्ण तैयार करके शीशी में सुरक्षित रक्खें।

इस चूर्ण को नियमित रूप से हरएक मौसम में ३ माशे की मात्रा में मिश्री मिले दूध के साथ दोनों समय लेने पर वीर्य का पतलापन, स्वप्नदोष शुक्रमेह आदि वीर्य विकारों को नष्ट करके वीर्य को शुद्ध, गाढ़ा और श्वेत बनाता है यह औषधि खांसी के लिए भी उत्तम है, केवल अनुपान की अन्य योजना करनी चाहिये।

२ सफेद मूसली के चूर्ण को १ तोला लेकर मिश्री मिले दूध के साथ एक सप्ताह लेने से सर्व प्रकार के वीर्य-दोष नष्ट होकर स्वप्नदोष, धातु-क्षीणता आदि विकार दूर होते और शरीर सुदृढ़ बन जाता है।

३—लौंग अकरकरा केशर, शुद्ध कुचला, नागकेशर, जायफल, इमली के शुद्ध बीज छिलका निकाले हुए १-१ तोला और शुद्ध अफीम ३ माशा इनको यथा-विधि कूट पीसकर शहद के साथ १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखालें और रात्रि में सोते समय एक गोली दूध के साथ सेवन करने पर वीर्यश्राव स्वप्नदोष आदि विकार अवश्य ही नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

४—जायफल ३ तोला शहद ½ तोला जावित्री १ तोला इन को खरल में खूब पीसें और दूध की भावना देकर २-२ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखालें। उन गोलियों को घी से चुपड़ कर रक्खें। इसमें से १-१ गोली सुबह-शाम जल से लें। यह वीर्य विकार एवं स्वप्नदोष के लिएं अत्युत्तम है यह गोलियां स्तम्भन के लिए भी प्रयोग की जासकती हैं।

५—तालमखाना, श्वेतमूसली. गोखुरू और शतावरी १-१ तोला तथा सबके बराबर मिश्री मिलाकर यथा विधि चूर्ण तैयार करें। इस चूर्ण में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४-४ माशे चूर्ण दूध के साथ दोनों समय लेने पर सम्पूर्ण प्रकार के वीर्य दोष और स्वप्नदोष धातु का पतलापन आदि नष्ट होते हैं। शरीर सबल होता है। परीक्षित है।

नोट -उपरोक्त प्रयोगों में प्रायः सभी जगह दूध का अनुपान लिखा गया है किन्तु दूध ठण्डा लेना चाहिये। गरम दूध स्वप्नदोष व्याधि के लिये हानिकारक है इसलिए गरम करके ठंडा किया हुआ दूध लेना ही उचित है। इसी प्रकार ऐसी व्याधि से पीड़ित मनुष्य को बद्धकोष्ठ होना भी अनुचित है। अतः सौम्य विरेचन द्वारा कोष्ठ-शुद्धि भी कर लेना उचित है।

सूखा रोग।

लेखक—श्री० पं० खूबचन्द्र जी मिश्र वैद्यशास्त्री।

प्रायः सभी जगह यह रोग अबाध गति से निरन्तर बढ़ता जा रहा है जिससे कि प्रति वर्ष असंख्य बालक बिना मौत के मर कर कम आयु में ही अपनी जीवन लीला समाप्त करके बिलखते हुए माता पिताओं को छोड़कर इस संसार से चले जाते हैं।

इस रोग को संस्कृत में बालशोष, हिन्दी में सूखा रोग, यूनानी में मसाना तथा अंग्रेजी में रिकेट्स कहते हैं। जो दूध पीने वाले अथवा दूध और अन्न दोनों पर निर्भर रहने वाले तथा पांच वर्ष तक की आयु वाले शिशुओं को अधिक होता है। और कीटाणु जन्य एक महा संक्रामक व्याधि है जो कि चार प्रकार से निम्न भेदों में विभक्त है—१—स्तन्य विकारी बालशोष २—फुफ्फुस विकारी बालशोष ३—दन्तोद्भव विकारी बालशोष ४—संसर्गज विकारी बालशोष।

१-स्तन्य विकारी बालशोष—

माता के मिथ्या आहार-विहार से दूषित भारी, पिच्छल तथा श्लेष्मायुक्त दोषानु-दूष्य दूध के पीने से बालकों की आंत में छिछड़े पड़कर पक्काशय और आमाशय की गति को बिगाड़ देते हैं जिससे उदराध्मान कृमि, मलावरोध आदि से पेट में ऐंठन होकर पीड़ा का बढ़ना, अतीसार, मन्दाग्नि और ज्वर का होना दूध का पटकना तथा हाथ-पैरों में शोथ और जलन का होना इत्यादि कारणों से धीरे-धीरे शरीर कृश (दुबला-सूखा) हो जाता है।

२-फुफ्फुस विकारी बाल शोष —

खाने पीने में अत्यधिक श्लेष्मिक तथा शीतल वस्तुओं का व्यवहार करने से एवं धूम और धूल के नाक में जाने, अधिक रोने-चिल्लाने तथा विपरीत उपचार आदि से प्रतिश्याय (जुकाम) होकर छींक और खांसी के प्रकुपित कारणों से ऐकाकी फुफ्फुस आक्रांत होकर पसली चलने लगती है, ज्वर निरन्तर रहता है शिर में भारीपन और हाथ पैरों में भड़कन रहती है। दूध से अरुचि अर्थात् भूख का न लगना इन सभी उपद्रवों से बालक सूख जाता है।

३-दन्तोद्भव विकारी शोष

दांतों के ठीक न निकलने पर बच्चों के गले में गल ग्रन्थियां होजाती हैं और मुख पाक तथा तालु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का होना; जीर्णज्वर, स्वरभंग, नेत्र पीड़ा और पीले रंग के दस्त होना आदि कारणों से बच्चे कर क्षीण होजाते हैं।

संसर्गज विकारी बालशोष

य-उपदंश, मधुमेहादि तथा मादक वस्तु सेवन सूचीवेध द्वारा विषाक्त पदार्थोत्पन्न दूषी पितृज विकार से अथवा चेचक आदि के लिये दिए विषैले टीके आदि से कीटाणुओं का उत्पन्न र बढ़ना, रक्त संचार में शिथिलता होना, कम लगना साथ ही पाचन-शक्ति का नाश र रस ठीक २ न बनना, ज्वर, पिपासा संताप हाथ-पैर और तालु में जलन होना, ग्रहणी र और अतिसार का होना इससे बालक र सूखते जाते हैं।

विशेषतः सूखे रोग के कीटाणु पृष्ठ भाग के रीढ़ ड्डी से चिपटे रहकर उसे जर्जर बना डालते है, के कारण कण्ठ और चूतड़ अधिक सूख हैं।

कित्सा:—

इस रोग की चिकित्सा करते समय माता के दूध विशेष ध्यान देना चाहिए, यदि दुग्ध-दोष हो तो अश्वगंधा, रजनी आदि के प्रयोगों द्वारा शोधन ना चाहिए तथा खान-पान की सावधानी और व औषधियों के उपचार और परिचर्या एवं श आदि का उपयोग ठीक २ करना परमा-क है। मालिश के लिए लाक्षादि तैल, चन्द-नादि तैल उत्तम है। स्नान के लिए नीम पत्र के को काम में लेना चाहिए।

स रोग के लिए पथरचटा बूटी पंचांग तुलसीपत्र गिलोय काली मिर्च समान भाग का एक तोले स्वरस निकाल कर उसमें ३ माशे शहद मिला-कर दिन में चार बार पिलाना चाहिए, ऐसे १५ दिन देने से सूखा रोग अवश्य नष्ट होजाता है।

२–तुलसी बीज, सत्वगिलोय प्रत्येक ६-६ माशे, पिंड खजूर स्वरस दो तोला, चूने का साफ पानी एक छटांक मिलाकर प्रतिदिन प्रातः सायं दोनों समय ६-६ माशे से एक तोला तक देने से सूखा रोग नष्ट हो जाता है।

३–इसी प्रकार अश्वगंधा चूर्ण शुद्ध पिप्पली चूर्ण के साथ एक माशे के प्रमाण में माता के दूध के साथ देने से सूखे के रोग में आशातीत लाभ होता है।

४–अतीस, काकड़ासिंगी शुद्ध पीपल, नागरमोथा, बच, तुलसी बीज, गिलोय सत्व, उत्तम केशर प्रत्येक समान भाग के सूक्ष्म चूर्ण को चूने के पानी में एक पहर खरल करके आधी रत्ती के बराबर गोली बनाकर शहद के साथ दिन में तीन बार देने से सूखा रोग, खांसी, श्वास, ज्वर अतीसार रोग निश्चय दूर होते हैं।

५–लगे हुए पान में मकोई के ढाई पत्ते रखकर चबाने से जो रस (पीक) निकले उसे साफ की गई बच्चे की पीठ की ओर बीच रीढ़ की हड्डी पर डालकर धीरे २ मलते रहने पर थोड़ी देर में छोटे २ कीड़े सफेद रंग के बाहर निकल आयेंगे जिन्हें चिमटी से शीघ्र बीन कर फेंक देना चाहिए।

६–काले रंग की गाय का मूत्र प्रतिदिन नियम पूर्वक पिलाने से सूखा रोग चला जाता है।

७–माचिका पत्र, द्रोण पुष्पी पत्र, सहदेवी पत्र सबका मिलित स्वरस एक पाव तैल सरसों एक पाव काली गऊ का दूध एक पाव सेंधा नमक एक तोले पीपल छाल स्वरस एक छटांक मिलाकर यथा-विधि तैल बना कर मालिस करने से सूखा रोग में लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल शोष- बालकों का सूखा रोग और उसकी चिकित्सा।

लेखक-कविराज डा० सुरेन्द्रदेव जी शास्त्री भिषगाचार्य, भोंगांव (मैनपुरी)

इस देश में बालकों को सूखा रोग प्रायः हुआ करता है तथा अनेक बालक प्रतिवर्ष इस रोग के शिकार हो जाया करते हैं। यह अत्यन्त प्रसिद्ध रोग है किन्तु इसके मुख्य २ कारणों एवं चिकित्सा को जानने वाले बहुत ही थोड़े व्यक्ति हैं। अतः मैं उन मुख्य २ बातों को जो कि इस रोग से सम्बन्धित हैं, लिख रहा हूं।

सूखा रोग के कारण—

इस रोग के तीन मुख्य कारण हैं। १-प्रायः ७ माह की आयु के पश्चात् बालकों के दांत निकला करते हैं। इस दांत निकलने के समय में बच्चों को अतिसार (दस्त) ज्वर, तथा खांसी का कष्ट बहुधा देखा जाता है। इस समय में जिन बालकों के कष्टों का ध्यान नहीं किया जाता है तथा जिनके मां बाप उनकी ओर से लापरवाह रहा करते हैं उनको धीरे-धीरे यह रोग हो जाता है, पाचनशक्ति बिगड़ जाती है और दूध भी हजम नहीं होता है। ज्वरांश हर समय रहा करता है तथा खांसी भी जोर पकड़ जाती है और बच्चा सूख जाता है चमड़े में सिकुड़न अधिक पैदा हो जाती है और उसकी शक्ति धीरे-और प्रतिदिन क्षीण होती चली जाती है।

२-जब तक बालक मां का दूध पान करे उस समय तक बालक के पिता को विषय भोग की इच्छा नहीं रखनी चाहिये। क्योंकि ऐसा करने से मां का दूध दूषित हो जाता है और इस दूषित दूध का पान करने से बच्चों को सूखा रोग हो जाया करता है।

अनेक प्रकार के खट्टे व मीठे तथा विरुद्ध आहारों के करने से भी बालक के शरीर में कफ कुपित हो कर यह रोग उत्पन्न होजाता है। इसके अतिरिक्त जब तक बच्चा भोजन (अन्न) पचाने योग्य न हो जावे अर्थात् पाचकाग्नि अन्न के पचाने योग्य न हो जाय उस समय तक बच्चे को अन्न नहीं खिलाना चाहिये। इस बात को न सोचते हुये लोग अन्न खिलाना प्रारम्भ कर देते हैं और फिर बच्चे इस रोग से पीड़ित हो जाते हैं।

लक्षण—

इस रोग में बालक के तालु में गढ़ा पड़ जाया करता है और वह कुछ बाहर भी निकल आता है। इसी कारण बालक दूध नहीं पीता और यदि पीता है तो बहुत थोड़ा। आहार के न खाने से रक्त व मांश प्रतिदिन सूखता चला जाता है और अन्त में बालक का केवल अस्थि पंजर शेष रह जाता है। पाचन शक्ति के बिगड़ जाने से हरा-पीला व छीछड़ेदार दस्त हुआ करता है, प्यास अधिक लगती जाती है। कभी २ वमन भी होती है। बालक की आंखों में प्रायः खुजली व पीड़ा हुआ करती है। यदि रोग हो जाने पर भी प्रारंभ में उसकी चिकित्सा न की जावे तो रोग इतना बढ़ जाता है कि बच्चा अपनी गर्दन भी नहीं मोड़ पाता और वह बिलकुल शक्ति हीन हो जाता है।

पहिचान —

१-प्रारम्भ में ही बच्चे के सिर के तालु में गढ़ा पड़ जाता है। इस गढ़े के ऊपर हाथ रखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...सी प्रकार की हरकत नहीं जान पड़ती है। जैसा ... स्वस्थ बालक के तालु पर हाथ रखने से ...न्दन प्रतीत हुआ करता है वह स्पन्दन इस ...ग से पीड़ित बालक के नहीं प्रतीत होता।

२-कान की निचली गद्दी को भली-भांति दबाने ...भी बच्चा न रोता है न किसी प्रकार का कष्ट अनुभव करता है।

३-मुर्गी के अण्डे की लार (पानी) को एक चौड़े गहरे बर्तन में डाल कर उसमें बालक को बिठा ... यदि गुदामार्ग से यह पानी खिंच जावे तो ...समझना चाहिये कि बच्चा सूखा रोग से पीड़ित ... अन्यथा नहीं।

शरीर के ऊपर मालिश करने के लिये चिरचिटा ...तैल या लाक्षादि तैल का उपयोग करना उत्तम ...। चिरचिटा का तैल बनाने की विधि निम्न है।

...चिरचिटा को कूट कर रस आधा सेर निकाल लेवें; ...र आध सेर मीठे तैल में मिला मध्यम अग्नि पर ... धीरे-धीरे रस को डालकर पकाना चाहिये। ... मात्र शेष रह जाने पर उसे उतार कर छान लेना ...हिए और इसमें ३ माशे अफीम व एक तोला ...ल (चन्दन का असली तैल) मिलाकर शीशी ... रख लेना चाहिये तथा प्रतिदिन या १-२ बार इसकी अथवा लाक्षादि तैल की मालिश करनी चाहिये।

निम्न लिखित दवा प्रतिदिन ३ बार शहद या मां के दूध के साथ देना चाहिये—

बसंत मालती (स्वर्णयुक्त)	१ रत्ती
लघुमालती बसंत (योगरत्नाकर वाला)	आधी रत्ती
६४ प्रहरी पीपल	आधी रत्ती
चन्द्रामृत रस	आधी रत्ती

—मि ाकर १ मात्रा बनालें।

चूने का पानी नितार कर एक स्वच्छ शीशी में भर कर रख लेवें तथा प्रतिदिन दूध पिलाते समय उसी में एक या दो बूंद डालकर दिन में दो बार पिला देना चाहिये।

चूने का शरबत बनालें और दिन में दो बार चटा दिया करें।

प्रतिदिन दो बार अरविन्दासव का उपयोग करना चहिये।

कोई उत्तम घुटी प्रतिदिन पिलाई जाना चाहिये जिससे कि पाचन शक्ति ठीक होती रहे। मैंने अनेक घुटियों का उपयोग अपने मरीजों पर किया है इनमें सबसे उत्तम धन्वन्तरि कार्यालय की कुमार कल्याण घुटी को पाया है।

शोधित गन्धक

[आँवलासार]

विधि पूर्वक शुद्ध किया गया तथा आयुर्वेदीय प्रयोगों में डालने के लिये सर्वोत्तम –

मूल्य–२० तोला १५)

पता—धन्वन्तरि कार्यालय
विजयगढ़ (अलीगढ़)

शुद्ध-पारद

डमरू यंत्र से निकाला गया सर्वोत्तम शुद्ध पारद मंगा कर आयुर्वेदीय प्रयोगों में डालने से ही उत्तम गुण प्राप्त होंगे।

मूल्य—२० तोला १६)

पता—धन्वन्तरि कार्यालय
विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट्टी के गुण ।

लेखक– श्री० लक्ष्मीनारायण सिंह ।

मिट्टी एक अनुपम पदार्थ है। इसमें असंख्य गुण भरे हैं। यह बसुन्धरा जिस पर हम रहते हैं, मिट्टी की ही बनी है मिट्टी से अलग हमारा कोई भी अस्तित्व नहीं। इसमें ऐसे २ गुण विद्यमान हैं कि हम जितना भी वर्णन करें सब थोड़ा ही होगा।

इसी मिट्टी की धूल में खेल-कूद कर बच्चे मोटे ताजे और स्वस्थ बनते हैं। प्रमाण के लिये आप एक देहाती बच्चे को लीजिए जो कि धूल-धूसरित होकर खेला करता है और उस देहाती बच्चे के समक्ष एक शहरी अमीर के लड़के को खड़ा कीजिये जो कि मिट्टी के स्पर्श से सदा अछूता रहा हो तथा जिसका बाल्यकाल पालनों पर भूलते बीता हो। आप देखेंगे कि वह निर्धन देहाती धूल-धूसरित बच्चा जिसे कभी भरपेट भोजन भी नहीं प्राप्त हो सका, उस धनी शहरी बच्चे की अपेक्षा जिसे कभी ज्ञात न हो पाया हो कि भूख किस चिड़िया का नाम है अधिक स्वस्थ होगा, वह देहाती बच्चा बीमारी के नाम से चकित हो उठेगा किंतु दूसरी ओर वह अमीर का बच्चा महीने में एक बार तो अवश्य बीमार पड़ेगा तथा हर समय कोई न कोई व्याधि उसे घेरे ही रहेगी। इस प्रकार जब उसका बाल्यकाल ही बीमारियों की गोद में बीता तो फिर कहना ही क्या? जीवन पर्यन्त उसे कभी भी बीमारियों से छुटकारा नहीं मिल सकता; अत: यह स्वीकार करना पड़ेगा कि मिट्टी में स्वास्थ्य के अधिकांश गुण विद्यमान हैं।

किंतु इतना होते हुए भी आज देखा जाता है कि लोग मिट्टी के गुणों को भूलते से जारहे हैं। दुख के साथ कहना पड़ता है कि आज लोगों को इस बात के स्वीकार करने में भी हिचक होती है कि मिट्टी में भी कोई गुण है। यहां तक कि शौच के पश्चात् हाथ साफ करने के लिये मिट्टी का प्रयोग करने में भी अपना अपमान समझने लगे हैं तथा इसकी जगह साबुन का व्यवहार करने में ही अपना गौरव समझते हैं। उन्हें इस बात का पता नहीं है कि साबुन से एक प्रकार की चिकनाई पैदा होती है जो वास्तविक शुद्धता से दूर है। नाखून भी भली प्रकार साफ नहीं हो पाता। मिट्टी की शुद्धता का जो स्थान है उसकी पूर्ति साबुन से कदापि नहीं होसकती।

सिर के बालों को साफ करने में भी मिट्टी एक अद्वितीय पदार्थ है। इससे बाल स्वच्छ तो होते ही हैं, साथ २ उनकी जड़ें भी मजबूत होजाती हैं तथा बालों की कोई बीमारी भी शीघ्र आने से भय खाती है

यदि मिट्टी को हम साबुन के स्थान पर शरीर में लगायें तो यह साबुन की अपेक्षा कहीं अधिक लाभकारी सिद्ध होगी। यह एक ऐसी वस्तु है जो हर प्रकार की गन्दगी को दूर कर सकती है। मकानों की सफाई मिट्टी से करते हैं। कच्चे मकानों को मिट्टी से पोत देने पर वह अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होने लगते हैं। बरतनों को मिट्टी से मांज कर साफ करने से बरतन अच्छे चमकदार हो जाते हैं। कपड़े साफ करने में भी मिट्टी का प्रयोग किया जाता है। इससे कपड़े काफी सुन्दर और स्वच्छ होते हैं। अधिकांश धोबी इसका प्रयोग किया करते हैं।

मिट्टी कई प्रकार की होती हैं और सभी प्रकार की मिट्टियों में गुण वर्तमान है, फिर भी सफेद और चिकनी मिट्टी में बीमारी को नष्ट करने के अधिक तत्व हैं। अत: बीमारियों में सफेद और चिकनी मिट्टी का ही प्रयोग करना सर्वथा उचित है किंतु यदि न मिल सके तो जहां जो मिट्टी मिले उसी को व्यवहार में लाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...क सुश्रुत आदि वैद्यक ग्रन्थों में भी मिट्टी ...योग आया है। कई बीमारियों में मिट्टी की ...ने का नियम उन ग्रन्थों में दिया गया है। ...में कुछ बीमारियों में मिट्टी के प्रयोग की उन ...यों को देना अच्छा समझता हूं जिनका प्रयोग ...साधारण आसानी से कर सकें।

...वृद्धि पर—

...डू और अण्ड पर मिट्टी की पट्टी बांधनी ...है। कुछ दिनों लगातार ऐसा करने से वृद्धि ...जायगी तथा अण्डकोष अपने पुराने रूप में आ ...गा।

...से जलने पर—

...मिट्टी की पट्टी देने से जलन कम होती है तथा ...भी पूरा हो जाता है।

...की बीमारी में—

...आंखों पर मिट्टी की पट्टी बांधने से आंखों की ...तरह की बीमारियों में लाभ होता है। किन्तु ...बात की सावधानी रहे कि आंखों के अन्दर ...न जाय।

...पर-

...पेड़ू पर मिट्टी की पट्टी बांधकर कुछ देर लेटे ...से कब्ज दूर होता है। भोजन के पहले इस ...का व्यवहार अच्छा होता है, यदि बाद में ...हो तो भोजन के समय से डेढ़ घंटे बाद कर ...है।

...की बीमारी में—

...न की जड़ में मिट्टी की पट्टी बांधने से लाभ ...है।

...में—

...पेड़ू पर मिट्टी की पट्टी बांधने से लाभ होता है।

...पात —

...जिस स्त्री के गर्भ बराबर गिर जाते हों, उसे कुम्हारी मिट्टी + का प्रयोग करना चाहिए। औषधि रूप में इस मिट्टी के पान करने से गर्भपात रुक कर गर्भ-स्थिति होती है।

गर्भिणी स्त्री की प्रसव पीड़ा पर– पेट और पेड़ू पर मिट्टी की पट्टी बांधने से बिना किसी तकलीफ के बालक पैदा होता है। गर्भ में मरा हुआ बालक भी इस क्रिया से बाहर निकल आता है।

पेट की हरेक बिमारियों में– पेडू पर पट्टी बांधने से लाभ होता है।

पेशाब बंद हो जाने पर–पेडू पर मिट्टी की पट्टी बांधने से पेशाब शीघ्र उतर आता है।

फेफड़े के रोग में–सीने पर पट्टी बांधने से बहुत लाभ होता है। कफ के कारण दर्द होने पर कफ ढीला होकर निकल जाता है। दमा आदि फेफड़े की बीमारियों में अच्छा लाभ होता है।

फोड़े फुन्सी तथा चर्म रोग पर–मिट्टी की पट्टी बांधने से बहुत लाभ होता है तथा आराम होकर दाग भी मिट जाते हैं।

बर्रै बिच्छू आदि बिषैले जीवों के काटने से अर्थात् डंक मारने पर काटे हुये स्थान पर मिट्टी की पट्टी बांधने से जलन कम होकर धीरे २ विष दूर हो जाता है।

सिर दर्द पर आध इंच मोटी पट्टी बांधने या सुबह शाम गीली मिट्टी का लेप करने से सिर दर्द आराम हो जाता है।

सूजन पर

किसी भी प्रकार की सूजन हो, मिट्टी की पट्टी से आराम होता है, सूजन के साथ दर्द को भी आराम करती है।

× कुम्हार जब चाक पर बर्तन गढ़ता है तो हाथ की लगी मिट्टी एक बर्तन में कांछता जाता है। इसी मिट्टी को कुम्हारी मिट्टी कहते हैं। वैद्यक ग्रंथों में इसको बड़ी महत्ता दी गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांप के काटने पर—

सांप एक भयङ्कर जन्तु होता है। विषधर सांप के काटने पर तो तत्काल मृत्यु हो जाती है। इस पर बहुत कम औषधि काम करती हैं। परन्तु यदि प्रारम्भ से ही मिट्टी का उपचार किया जाय तो संभव है कि मनुष्य बच जाय। इस प्रकार कितने ही ऐसे मनुष्य बच गये हैं जिन्हें बड़े-बड़े डाक्टरों ने भी कह दिया कि यह मर गया। सांप द्वारा काटे हुए मनुष्य के लिये जब कोई चिकित्सा सफल नहीं होती तो मिट्टी की चिकित्सा काम करती है। इससे यह चिकित्सा अंतिम चिकित्सा है। यदि इससे अच्छा न हुआ तो फिर उसका अच्छा होना असंभव है। अतः यदि प्रारम्भ से ही यह चिकित्सा की जाय तो बड़ा ही लाभ होगा।

चिकित्सा विधि -

जमीन में गढ़ा खोद कर सांप काटे मनुष्य को उसमें लिटा कर मिट्टी से भली प्रकार ढंक देना चाहिये. सिर्फ नाक को श्वास लेने के लिये खुला छोड़ देना चाहिये। इस उपक्रम से कभी-कभी तीन दिनों तक भी चेतना लौटती दिखाई पड़ी है। अतः यह उपाय तब तक करना चाहिये जबतक कि नाक से खून न आजाय, क्योंकि नाक से खून आजाने पर जीने की कोई संभावना नहीं रहती।

कुछ आवश्यक बातें—

मिट्टी की पट्टी के लिये नदी किनारे की चिकनी मिट्टी सर्वोत्तम है यदि खेतों से मिट्टी लेनी हो तो एक फुट तह के बाद की मिट्टी लेनी चाहिये। मिट्टी को भली प्रकार आटे की तरह गूंथ कर कपड़े पर फैला कर आध इंच से एक इंच तक मोटी मिट्टी की तह बनानी चाहिये तथा नाभि या पेड़ू पर इसे आध घंटे तक रखना चाहिये। मौसम के अनुसार ऊपर से कम्बल या कपड़ा डाल देना चाहिये।

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि पुरानी बीमारियों में विशेष कर गठिया में मिट्टी की पट्टी से सूजन हो आती है तथा दर्द भी बढ़ जाता है। पर इसे बीमारी की वृद्धि न समझनी चाहिये। यह विकार का ढीलापन है, इससे डरने की कोई बात नहीं। इस तरह की बीमारियों में मिट्टी की पट्टी के बाद वाष्प देकर पसीना निकालना चाहिये। गठिया के दर्द में तथा फोड़ों में मिट्टी की पट्टी के बाद वाष्प देना अत्यन्त लाभदायक है।

मिट्टी के उपचार के समय खाने-पीने के परहेज पर भी उचित ध्यान रखना आवश्यक है।

ग्राहक नम्बर

पत्र-व्यवहार करते समय अवश्य लिखिये। इससे पत्रोत्तर में सुविधा होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम की ताड़ी या मद ।

लेखक- पं० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी बी० ए० आयुर्वेदाचार्य ।

आजकल नीम-मद प्रायः सुलभता से मिलने है। कारण इतस्ततः नीम वृक्ष रोते हुये पाये हैं। प्रायः लोगों को कहते हुए सुना है कि जब प्रकार देश व्यापी अनिष्ट, दुष्कालादि होने होता है तब इस प्रकार नीम वृक्ष रोया करते हैं। तु जो कुछ होनहार हो सो तो होगा ही किन्तु तो यह मानते हैं कि ये अत्यन्त परोपकारी वृक्ष पीड़ित जनता के हितार्थ ही अपने अमृत तुल्य क रस को बहाते हैं।

नीम वृक्ष के पत्र, छाल आदि का व्यवहार प्रायः तायत से किया जाता है किन्तु इसकी ताड़ी या का प्रयोग विरले ही वैद्यों को करते हुए देखा हमारे चिकित्सा-काल में इसके गुणधर्मों का ज्ञान हमें हुआ, उसका सप्रयोग वर्णन नीचे या जाता है।

ध्यान रहे पुराने नीम वृक्षों से एक प्रकार का ला, दूधिया वर्ण का रस महीन धारा में बून्द २ रा करता है इसे ही नीम का मद, रस या ताड़ी ते हैं। यह रस ४ से ७ सप्ताह तक वृक्ष के कई गों से एक समान निकलता है। किसी २ नीम क्ष में ३ या ४ वर्ष के अन्तर से यह रस अत्यधिक परिमाण में निकल जाने के पश्चात् वह वृक्ष सूख जाता है तथा कहा जता है कि जब किसी वृक्ष से मद निकलने वाला होता है तब उसमें से एक प्रकार की धीमी आवाज़ बराबर सुनाई पड़ने लग जाती है जो मद निकलना प्रारम्भ होने पर ही बंद हो जाती है।

कहीं-कहीं कृत्रिम रीति से भी यह मद निकाला जाता है। किसी जलाशय के किनारे वाले अच्छे जवान नीम वृक्ष की जड़ में छेद कर, ऊपर से अच्छी तरह ढंक दिया जाता है। चौबीस घंटे के बाद उस पात्र में दो से छः बोतल तक रस एकत्र हो जाता है किंतु इस प्रकार निकाला हुआ रस उतना लाभकारी नहीं होता जितना स्वयमेव निकला हुआ होता है।

गुण धर्म-

यह मद शीतल, बलकारक, वीर्य वर्धक रक्त-शोधक, उत्तेजक पुष्टिकारक, नेत्र रोग नाशक तथा अर्श रोग एवं विष को शांत करने वाला होता है।

ध्यान रहे कि नीम मद में शहद मिला, बोतलों में भर, अच्छी तरह डाट लगाकर रखने से यह वर्षों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम देता है, बिगड़ता नहीं। कोई २ इसमें सरसों का शुद्ध तैल मिला कर भी रखते हैं। किंतु तैल मिलाकर रखने की अपेक्षा शहद मिलाकर रखना उत्तम होता है। एक बोतल नीम मद में शहद ५ तोले तक मिलाना चाहिए। इस प्रकार रखने के बाद इसे बीच २ में (कम से कम महीने में एक बार) छानते रहना आवश्यक है। ताजी नीम-ताड़ी मधुरता युक्त तिक्त या कड़ुवी होती है।

बिगड़ जाने पर इसमें खटास या अम्लता आ जाती है, जिसे सेवन करना ठीक नहीं होता। किंतु उक्त प्रकार से स्वच्छता के साथ, शुद्ध स्थान पर, अच्छी तरह मुख बन्द कर रखने से यह सहसा बिगड़ने नहीं पाती। कुछ दिनों बाद इसमें भी स्वाभाविक अम्लता तो आजाती है किंतु बाद में पुनः यह स्वयमेव मधुरतायुक्त तिक्त रस में परिणत होकर सेवनीय हो जाती है।

प्रयोग—

रक्त विकृति नाशार्थ—

नीम मद	१ तोला
गोरखमुण्डी अर्क	६ माशे

—इनको एकत्र मिला कर (यह एक मात्रा है, बच्चों को चौथाई मात्रा देवें) उसमें शुद्ध जल दो तोला मिला नित्य प्रातः सायं सेवन कराने से शीघ्र ही रक्त शुद्ध होकर कुष्ठादि चर्म विकार दूर हो जाते हैं। लगभग ४० दिन तक इसका सेवन पथ्य पूर्वक करना चाहिए।

केवल नीम मद को ही शरीर पर नित्य मलते रहने से खाज, खुजली दाद आदि नहीं होने पाते, यदि हुये हों तो शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

उक्त प्रकार से तीन मास तक, नियम पूर्वक नीम ताड़ी का पान कराने से गलित कुष्ठ में विशेष लाभ होता है।

उन्माद रोग पर—

उक्त प्रयोग (नीम ताड़ी, मुण्डी अर्क) में सरफोंका का अर्क मिला कर देने से विशेष लाभ होता है।

शीतला या चेचक के उपद्रवों पर—

नीम ताड़ी १ तोला में काली मिर्च ५ नग का चूर्ण मिला नित्य प्रातःकाल में एक सप्ताह सेवन कराने से अपूर्व लाभ होता है

बाल रोगों पर—

नीम ताड़ी मात्रा आधा तोला तक शहद मिला नित्य प्रातःसायं सेवन कराने से रक्त शुद्ध होकर, शरीर पर फोड़े फुंसियां आदि नहीं होने पाते। यह प्रयोग प्रमेह पिडिका और अर्श को भी दूर करता है।

अर्श (बवासीर खूनी या बादी) पर—

नीम ताड़ी मात्रा १ तोला से ५ तोले तक, उक्त प्रकार से शहद मिला सेवन कराते रहने से शीघ्र ही लाभ होता है।

विषों पर—

नीम ताड़ी कई बार उचित मात्रा में पिलाने तथा सर्वाङ्ग में लगाने से हर प्रकार के जहरों की शांति हो जाती है।

नेत्र रोगों पर—

नीम ताड़ी को लोहपात्र में रख, लोह डण्डे से खूब घोटना चाहिये। घोटते २ गाढ़ा हो जाने पर इसे नेत्रों पर लेप करने से नेत्रशूल, ललाई, जलन अभिष्यन्दादि विकार शीघ्र ही नष्ट होते हैं।

प्लेग की ग्रंथी पर

नीम ताड़ी में कपास या कपड़े को खूब तर कर ग्रंथि पर कई बार बांधने से विशेष लाभ होते देखा गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्रक के गुण —

ले०- कविराज श्री० पं० मूलशङ्कर जी त्रिपाठी,
प्राणाचार्य-वैद्यरत्न-वैद्यशास्त्री जबलपुर ।

अनेक ऐसी वस्तुएें हैं जिन्हें लोग प्रति दिन ...ार में लाते हैं किन्तु उनके वास्तविक गुणों ...अपरिचित रहते हैं। अद्रक को ही लीजिये ...रण मसाले की तरह काम में आने वाली वस्तु ...किन्तु यदि उसके वास्तविक गुणों को जान लिया ...तो निःसन्देह अनेक रोगों का उपचार किया ...सकता है।

अद्रक के उत्पादन के लिए किसी विशेष प्रकार जलवायु अथवा भूमि की आवश्यकता नहीं ...। वह उन सभी स्थानों में उत्पन्न की जा ...ती है जहां आलू, मूली, शकरकंद आदि वस्तुएें ...की जाती हैं। अद्रक का कोई बीज नहीं होता ...छोटे छोटे टुकड़े आलू की भांति गाढ़ दिये ...हैं। खाद पानी तथा सूर्य प्रकाश के सहारे पौधे ...आते हैं और धीरे-धीरे बड़े होजाते हैं। ...के सूख जाने पर हम उसे 'सोंठ' नाम से ...ते हैं।

ज्वरादि रोगों में—

शरीर में गर्मी का बढ़ जाना साधारण ज्वर लक्षण है। बहुधा ऋतु-परिवर्तन के समय ...धानी से रहने के कारण उत्पन्न हो जाता है। ...रोग से मुक्ति पाने का छः माशे अद्रक के रस ...माशे शहद मिलाकर दिन में तीन-चार बार ...करना उत्तम उपाय है।

...श्लेष्म ज्वर अर्थात् इन्फ्लूएंजा, ऋतु-परिवर्तन ...के पानी में भीगना, रोगी के संसर्ग में रहने, ...वस्तुओं के अधिक सेवन करने से उत्पन्न ...जाता है। शरीर में दर्द, सिर तथा नेत्रों में भारी- ...गले में दर्द, नेत्र तथा नासिका से पानी बहना खांसी तापमान १०२ से १०३ डिग्री तक बढ़ जाना आदि इस रोग के लक्षण हैं। इस रोग में छः माशे अद्रक के रस के साथ छः माशे शहद के प्रयोग करने से रोगी की दशा में आश्चर्य-जनक परिवर्तन होता दीख पड़ता है।

अजीर्ण में

गरिष्ठ भोजन करने, भोजन के पश्चात सोने, रात्रि जागरण, मल मूत्र के वेग को रोकने, दिन में शयन करने आदि से अजीर्ण विकार उत्पन्न हो जाता है। वमन की इच्छा होना, डकारें आना, पेट फूलना, शरीर का भारी होना, दस्त ठीक न होना उदर शूलादि इस व्याधि के लक्षण हैं। यह रोग बड़ा ही भयङ्कर है। रोगी इससे इतना पीड़ित रहता है कि वह खाट छोड़ने के योग्य भी नहीं रह जाता। ऐसे रोगियों को छः माशे अद्रक का रस मात्र ही पिलाने से थोड़े ही समय में रोग निर्मूल हो जाता है।

खट्टे पदार्थों के अधिक मात्रा में प्रयोग करने तथा दूषित भोजन के सेवन करने से अम्लपित्त विकार उत्पन्न हो जाता है। अरुचि, खट्टी डकारें आना, अनपच, गले में जलन, जी मचलाना आदि इसके लक्षण हैं। इस विकार में छः माशे अद्रक के रस में छः माशे अनार का रस सेवन करने से समस्त व्याधि नष्ट हो जाती हैं।

छः माशे शुद्ध घृत में छः माशे अद्रक का रस मिलाकर सेवन करने से शीत-पित्त विकार अविलंब नष्ट होजाता है।

पेचिस अथवा अतिसार व्याधि अजीर्ण में भोजन करने, दूषित जल के पीने गरिष्ट भोजन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने कच्चे सड़े-गले फलों के खाने आदि से उत्पन्न हो जाता है। इसमें निम्न लक्षण देखने में आते हैं- पेट में मरोड़ उठना दस्त की शिकायत हमेशा बनी रहना, दस्त में खून गिरना आदि। कभी-कभी यह व्याधि एकाएक हो उठती है, किन्तु साधारणतः भूख न लगना, दस्त न होना उदरशूल पेट में गड़गड़ाहट आदि इसके प्रारम्भिक लक्षण हैं। इसके पश्चात् प्रारम्भ के दस्तों में मल अधिक मात्रा में जाता है, बाद में मल पतला होकर आंव और दस्त के साथ जाने लगता है, यही रोग पुराना हो जाने पर संग्रहणी का रूप धारण कर लेता है। इस व्याधि में अद्रक का रस मात्र ही दिन में कई बार लेने से अत्यधिक आराम पहुँचता है।

अन्य रोगों में

बकरी के दूध में सोंठ को औटा कर दूध मात्र ही पीने से असाध्य हिचकी भी मिट जाती है।

सोंठ को गाय के दूध में गाढ़ा घिसकर मस्तक में लेप करने से सिर दर्द का रोग मुक्त हो जाता है।

सर्दी के कारण उत्पन्न दांतों का दर्द मिटाने के लिए अद्रक में सेंधा नमक लगा कर दांतों के नीचे दबा लेना अच्छा उपाय है।

पुराने गुड़ के साथ सोंठ को मिलाकर सूंघने मात्र में ही सिर का दर्द दूर हो जाता है।

नौ माशे घी में भुने हुए काले दाने के चूर्ण को छः रत्ती सोंठ के चूर्ण में मिला कर गर्म जल के साथ सेवन करने से उत्तम विरेचन हो जाता है।

सोंठ नींव की पत्ती एवं सैंधा नमक एक साथ पीसकर आंखों में बांधने से नेत्रों का शोथ एवं खुजाल मिट जाती है।

अदरख के रस के साथ गुड़ का सेवन करने से शीत-पित्त नष्ट हो जाता है।

सोंठ और गुड़ को जल के साथ पीसकर नस्य देने से समस्त सिरके रोग अच्छे हो जाते हैं।

सोंठ और एरंड की जड़ का क्वाथ पिलाने से शूल एवं शोरा और अद्रक के सेवन से गुल्म व्याधि नष्ट हो जाती है।

तुलसी धमरा तथा गिलोय के रस में अद्रक का रस (सभी छः छः माशे) मिलाकर सेवन करने से प्रसूत-रोग अल्प समय में ही नष्ट हो जाता है।

सोंठ को रात में पानी में डाल प्रातःकाल उसे ठंडाई की तरह पीस एक पाव दही में थोड़ा सा नमक डाल कर सेवन करने से समस्त बदहजमी नष्ट हो जाती है।

प्रति दिन सोंठ और गुड़ के सेवन करने से उदर रोग, खांसी पीनस अरुचि शोथ अर्श, संग्रहणी कफ वात एवं जीर्ण ज्वर आदि विकार नष्ट हो जाते हैं।

जीर्ण ज्वर के रोगियों
को
— हमारी —
स्वर्ण बसन्त मालती
नं० १
व्यवहार कराइये
और
चमत्कार देखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सोम" नामक औषधि के विषय में।

लेखक— वैद्य पं० खेमराज शर्मा छांगाणी, आर्वी।

ता के लक्षण

शु ताचार्य के मतानुसार:—

र्वांषामेव सोमानां पत्राणि दशपंच च।
नि शुक्ले च कृष्णे च जायंते निपतंति च॥
केकं जायते पत्रं सोमस्याहर हस्तदा।
क्लस्य पोर्णमास्यां तु भवेत्पंचदशच्छदः।
र्यते पत्रमेकैकं दिवसे दिवसे पुनः।
ष्णपक्षक्षये चापि लता भवति केवला॥

र्थ—

भी तरह के सोमों के पन्द्रह-पन्द्रह पत्ते होते पत्ते शुक्लपक्ष में पैदा होते हैं और कृष्णपक्ष जाते हैं। शुक्लपक्ष में १-१ दिन में १-१ पत्ता ता है, इस प्रकार पूर्णमासी को पूरे पन्द्रह पत्ते ते हैं और फिर कृष्णपक्ष आते ही एक २ दिन एक पत्ता गिर कर अमावस्या को विना पत्तों वल बेल रह जाती है।

कार के सोमों की विशेष पहिचान:—

अंशुमान नामक सोम में घृत के समान सुगंधि रजतप्रभ कंद वाला होकर मुंजवान में केले के कंद तथा लहसुन के सरीखे पत्र होते हैं ना नामक सोम स्वर्ण के समान कांतियुक्त सदैव में ही रहता है,' गरुड़ाहत एवं श्वेताक्ष ये दोनों ग के सांप की कांचली जैसे वृक्षों के अग्रभाग टे रहते हैं तथा अन्य और भी चित्र विचित्र ों से शोभित हुआ करते हैं। सभी प्रकार के ों की सामान्य पहिचान यही है कि, इनमें १५-१५ पत्ते ही होते हैं। किसी २ सोम में दूध, किसी में कंद, किसी में लता (क्षुप जातिके) नाना-भांति के पत्तों वाले होते हैं परन्तु केवल १५-१५ पत्ते ही होते हैं, अधिक नहीं।

सोम की उत्पत्ति के स्थान—

सोमों की उत्पत्ति प्रायः हिमालय पर्वत में, आबू (राजपूताना) पहाड़ में संह्याद्रि तथा महेन्द्र एवं मलयाचल में एवं श्रीशैल में देवगिरि में, देवसह पर्वत में होती है। उसी प्रकार पारिमात्र में विंध्याचल में, देव-सुन्द सरोवर में एवं वितस्ता नदी के उत्तर में जो बड़े-बड़े पांच पर्वत हैं उनकी जड़ में तथा बीच में और सिन्धु नदी जहां पर स्थित है वहां चन्द्रमा नामक सोम तुंबी की भांति तैरते हुये मिलते हैं। उसके पास मुंजवान और अंशुमान ये दोनों सोम भी मिलते हैं, काश्मीर देश में भी एक बड़ा भारी सरोवर है जिसे 'छोटा मानसरोवर" संज्ञा दी गई है वहां पर गायत्र्य त्रैष्टुभ, जगत, पांक्त एवं शांकर नामक सोम उत्पन्न होते हैं। उसी प्रकार अन्य सोम भी चन्द्र के समान कांतियुक्त भी होते हैं। इन सभी प्रकार के सोमों में एक विशेष बात यही होती है कि ये सोम अधर्मी कृतघ्नी भेषजद्वेषी (वैद्य से द्वेष करने वाले) ब्राह्मण द्वेषी व्यक्तियों को उपलब्ध नहीं होती'। रसायन या कायाकल्प' का फल भी उन्हें नहीं मिल सकता। इस लिये रसायन कायाकल्प विषयक बातों का विचार भली-भांति करना एवं धर्मी, गौ, ब्राह्मण चिकित्सक की सेवा करने वाला संयमी तथा इनके अनुकूल सभी बातों का पालन करने वाला ही इसका फल ले सकने में समर्थ हो सकता है अन्यथा नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पित्त विकार शामक पित्तपापड़!

ले०—वैद्य पं० लेखराम शर्मा शास्त्री, भिषगाचार्य ।

संस्कृत में पर्पट पर्पटक कटुपत्र कवचनामक पित्तारि शीतवल्लभ, सुतिक्त, तृष्णारि आदि नाम हैं। यह वर्षा ऋतु में अधिकतर होता है और जमीन पर बेल की तरह से फैला हुआ होता है। खेती की बाड़ों में या भाड़ियों में यह बहुत पनपता है और बहुत सी शाखाओं में फैला हुआ पाया जाता है। इसके पत्ते आध से लेकर ढाई इञ्च तक लम्बे और पाव से लेकर पौन इञ्च तक चौड़े होते हैं। दोनों किनारों पर संकड़े होते हैं, इसकी शाखायें ६ इञ्च तक लम्बी होती हैं जिन पर मिंजर निकलती हैं। इसके फूल बैंगनी छाया लिए हुये गुलाबी रंग के होते हैं।

इसके फल जौ के दाने के समान नीले और सफेद रंग के होते हैं, सारे पौदे पर सफेद रंग के रुएं होते हैं। इसकी गन्ध और स्वाद कड़वा होता है। इसकी दो जातियां पाई जाती हैं एक को शाहतरा कहते हैं, जोकि ईरान से आती है दूसरी यहां पर होती है जिसको पित्तपापड़ा कहते हैं। ईरान से आने वाली बनस्पति गुण में अधिक होती है। आयुर्वेद के आचार्यों के मत से पित्तपापड़ा शीतल कड़वा हल्का पचने में चरपरा, पित्तज्वर रुधिर-विकार अरुचि दाह भ्रम प्रमेह तृषा और रक्तपित्त को शान्त करने वाला है।

प्राचीन आचार्यों ने पित्तज्वर शान्ति के लिए इस बनस्पति को सबसे उत्तम माना है जैसे कि 'एकः पर्पटकः श्रेष्ठः पित्तज्वर विनाशनः' आदि। इस बनस्पति को जिन २ वनस्पतियों के योग से या स्वतंत्र रूप से जिन २ रोगों में हमने काम में ली है और उससे जो लाभ हुआ है उसको नीचे लिखा जारहा है, आशा है कि विज्ञ पाठक-वृन्द इससे लाभ उठावेंगे।

प्रयोग—

पित्तपापड़ा	कालीदाख	धनियां
गिलोय		चिरायता

—सब १-१ तोला।

— इनको जौ कुट कर रात को १॥ सेर पानी में भिगो देना चाहिए। सुबह इसको मलकर छानलें और दो २ घंटे बाद ५ या १० तोला पानी पिलाते रहें। इस हिम के पीने से ज्वर की प्यास नष्ट होती है गले की खुश्की शान्त होती है. शिर दर्द ज्वर की गर्मी शांत होकर पेशाव खुलकर आता है।

२—पित्तपापड़ा और गिलोय को समभाग २ तोला लेकर एक पाव पानी में पकावें। जब १ छटांक रह जावे तब उतारकर छानलें, इसमें १ माशा पीपल का चूर्ण डालकर पीने से जीर्ण ज्वर, मन्दाग्नि, खांसी चली जाती है।

३—पर्पटाद्यरिष्ट-४ सेर पित्तपापड़े को १६ सेर पानी डालकर पकावें, जब ८ सेर बाकी बचे तब छान कर रखलें और उसमें धाय फूल १ पाव तथा पुराना गुड़ ३ सेर प्रक्षेपार्थ गिलोय, नागरमोथा, दारुहल्दी, मीठातेलिया, देवदारू, कटेरी, धमासा चक. चित्रकजड़ सोंठ, मिर्च, पीपल, वायविडङ्ग—इन औषधियों को समभाग १-१ तोला लेकर महीन कपड़ छन चूर्ण करके सबको एक माण्ड में डालकर उसका मुंह बन्दकर एक मास के लिये जमीन में गाढ़ दें फिर निकाल कर छानकर बोतलों में भरलें। इस अरिष्ट की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ तोला से ढाई तोला मात्रा चौगुने पानी के साथ लेने से सब प्रकार के जीर्ण ज्वर विषम ज्वर तथा उनके कारण से होने वाला कामला सूजन पाण्डु तिल्ली तथा यकृत की वृद्धि दूर होती है।

पित्तपापड़ा, लालचन्दन, नेत्रबाला, सोंठ, खश, नागरमोथा-इन सबको समान भाग १ तोला लेकर एक सेर पानी में पकावें जब आधसेर रह जावे तब उतार लें और छानकर ठण्डा करलें। इस पानी के पिलाने से ज्वर जनित प्यास शीघ्र ही शान्त होती है। यह षडङ्गपानीय शास्त्रों का प्रसिद्ध योग है और वैद्य-समाज प्रायः इसको काम में लेता है।

-१ तोला पित्तपापड़ा तथा १ तोला हल्दी को पीसकर शरीर पर मालिश करने से खुजली तथा सूखी खारिश चली जाती है। यदि मक्खन में मालिश करें तो और भी उत्तम रहेगा।

६—पित्तपापड़ा १ सेर हरड़ बड़ी एक पाव, इनको कूट कर ८ सेर पानी में पकावें जब दो सेर रह जावे तब उतार कर छानलें और उसमें दो सेर खांड डालकर एक तार की चासनी बनालें। यह पित्तपापड़ा शर्वत है, इसको पानी या अर्क चंदन के साथ २॥ तोला की मात्रा में सुबह शाम लेने से रक्त-विकार जलन तथा मस्तिष्क विकार शान्त होते हैं।

७—इसके रस को नेत्रों में डालने से ज्योति तेज होती है और पानी बह कर नेत्र शुद्ध होजाते हैं नेत्रों के परवालों को उखाड़ कर उसकी जड़ों में गोंद मिलाकर पित्तपापड़े का रस भरने से फिर बाल नहीं आते हैं।

८—इसके काढ़े से कुल्ले करने से मसूड़े दृढ़ होते हैं जीभ तथा तालु के व्रण भर जाते हैं एवं मुंह की गर्मी शान्त हो जाती है।

जल नीम

लेखक-कविराज श्री० विश्वनाथ प्रसाद जी भिषगाचार्य, मक़बूलगञ्ज, लखनऊ।

यह सजल स्थानों में तथा नदी तालाब तथा [कु]ओं के निकट उत्पन्न होती है। इसका प्रसार एक [बा]लिस्त लम्बा छत्ता सा पृथ्वी पर पसरा हुआ रहता है। पत्ते मोटे हरे रंग के लोना (अमलेनियां) के पत्तों के आकार वाले होते हैं। फूल नीले रंग के [ग्री]ष्म तथा वर्षा ऋतु में आते हैं। जल नीम का स्वाद अत्यन्त तिक्त, रस युक्त, कड़ुवा और किंचित सलौना होता है।

वृद्ध वैद्यों के मतानुसार गुण—

अत्यन्त कड़ुवा, किञ्चित सलौना, गर्म, वीर्य जनक दस्तावर तथा सब प्रकार के रुधिर विकार, कोढ़ उपदंश, वात-रक्त, आमवात, मृगी, अर्श रोग, उदर रोग, कफ, पित्त, खांसी, सूजन, कृमि, घाव और मलस्तम्भादि को नाश करने वाला है। यह ऊर्ध्व भाग से मुख के द्वारा कफादि दोष को निकालता है; अधोमार्ग गुदा के द्वारा पित्तादि दोषों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर करता है। इसके समान सुगमता से दोषों को निकालने वाली और रक्त को शुद्ध करने वाली दूसरी औषधि बहुत कम देखने में आती है। जिन विकारों में रक्त-शोधक विलायती औषधियां सफलता प्राप्त नहीं करतीं वहां जल नीम अपना अद्भुत चमत्कार दिखाती है।

प्रायः इसका पंचाङ्ग (सम्पूर्ण अंग) औषधि के काम आता है। बालक के प्रतिश्याय तीव्र कास और फेफडे की सूजन पर पत्तों का १-२ माशा रस पिलाने से वमन और विरेचन होकर आरोग्यता प्राप्त होती है।

पूयमेह (सुजाक) तथा उपदंश जन्य विष के विकार से भी आमवात या गठिया हो जाती है। जल-नीम का स्वरस ३-४ काली मिर्च मिला प्रातः सायं २॥-२॥ तोला तथा यथा योग्य मात्रा में वैद्य बलाबल देख कर सेवन करायें तो निःसन्देह कुछ दिनों के पश्चात् सुजाक दूर हो जाता है।

इसको केवल १ माशा की मात्रा से २-३ काली मिर्च के साथ थोड़े जल में घोट छान कर पिलाने से ज्वर का वेग कम हो जाता है तथा रसायन रूप में सेवन करने से शरीर में रसायन के गुण की वृद्धि होती है। रस, रक्तादि धातुएं शुद्ध हो जाती हैं और बल बढ़ता है। इसके पत्तों को पीस कर लेप करने से उदर शूल आराम होता है। इसके ३ माशे पत्ते अथवा पंचाङ्ग को ५ काली मिर्च के साथ ५ तोला जल में घोट छान कर सेवन करने से उपदंश, रुधिर-विकार, कुष्ठ और त्वचा के रोग आराम होते हैं तथा फोड़े को शीघ्र पकाने व फोड़ने के लिये इसको पीसकर बांधना चाहिये व इसके पत्ते पीस कर गरम-गरम सूजन पर लेप करने से सूजन दूर हो जाती है।

शंख, शुक्ति, प्रवाल, कपर्दिका तुत्थ प्रभृति की भस्में इसकी लुगदी द्वारा करने से कफघ्न तथा रसायनिक गुणों से युक्त अनेक चमत्कार दिखाने वाली हो जाती है, यह जल नीम की विशेषता है।

मैंने जल-नीम बहुत से रोगियों पर बरता है उनमें से कुछ उदाहरण स्वरूप लिखता हूं।

रोगी का नाम पं० राधाकृष्ण त्रिपाठी, आयु ३[illegible] वर्ष, भयानक रक्तविकार, साथ में प्रमेह भी था; जल नीम का भबका से खिंचा अर्क लगभग २-३ बोतल पिलाया गया। मात्रा प्रातः-सायं २॥-२॥ तोला थी साथ में घी-दूध व मक्खन भी सेवन कराया गया फल यह हुआ कि रक्त विकार व प्रमेह (शुक्रमेह) दूर होकर शरीर स्वस्थ हो गया।

महावीर मिस्त्री को लगभग ४-५ वर्ष पूर्व फिरंग होगया था जो किसी हुक्का पिलाने वाली औषधि से ठीक हो गया था, परंतु सन् १९३६ई० में फिर हुआ इस बार फफोले इस प्रकार के पड़े कि चिकि-त्सकों को भी रोग निर्णय में बहुत भ्रम हुआ। परंतु वह भटकता हुआ मेरे यहां आया। मैंने निदान मिलाया तो उपदंश ज्ञात हुआ और उसे जल-नीम का १० बोतल अर्क प्रातः सायं २॥-२॥ तोला की मात्रा में पिलाया गया, जिससे उसे पूर्ण आरोग्यता प्राप्त होगई।

राजा सूर्यवत्स सिंह जी को मूत्रकष्ट (पथरी) की असहनीय पीड़ा थी जिसमें एक प्रसिद्ध वैद्य द्वारा वरुण की छाल प्रभृति का क्वाथ तथा अन्य मूल्यवान औषधियां दीगईं थीं परन्तु विशेष लाभ न हासका; तब राजा सहाब ने मुझे बुलाया। मैंने जल नीम का ताजा स्वरस १ तोला हजरत यहूद भस्म के साथ सेवन कराया तो १ वमन हुआ तथा ३ दस्त हुए। पेशाब भी खूब हुआ और पथरी के टुकड़े निकले तथा राजा साहब भी बहुत चकित हुए।

इस बूटी का वर्णन प्रचलित निघण्टुओं में बहुत कम मिलता है। अतः वैद्यों से प्रार्थना है कि इसे व्यवहार में लाकर यश के भागी बनें तथा निजानुभव भी प्रकाशित कराते रहें।

—×—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षित प्रयोग

अनुभवी चिकित्सकों से निवेदन है कि वे अपने परीक्षित प्रयोग धन्वन्तरि में प्रकाशनार्थ अवश्य भेजते रहें। प्रयोग भेजते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि प्रयोग सरल हों, स्वयं या अपने रोगियों पर परीक्षित हों तथा उसके निर्माण में अधिक कठिनाई न होती हो। निर्माण-विधि, मात्रा, अनुपान एवं रोग की अवस्था जिसमें वह प्रयोग सफलतापूर्वक व्यवहार किया गया हो स्पष्ट एवं संक्षिप्त लिखें जिससे पाठकों को उसे बनाकर व्यवहार करने में परेशानी न हो। धन्वन्तरि के अधिकांश पाठक चिकित्सक हैं और उनके पास २-४ उत्तम व सरल प्रयोग होंगे ही। पाठकों को भी अपने उन प्रयोगों को प्रकाशनार्थ भेजना चाहिये। लेकिन नाम प्रकाशित होजाने के लोभ से इधर-उधर से प्रयोग लिखकर भेजना उचित नहीं। यदि आपने किसी पुस्तक में प्रकाशित प्रयोग को व्यवहार कर उसे उत्तम प्रभावशाली पाया है तो उस पुस्तक का विवरण देते हुये उस प्रयोग को लिखकर धन्वन्तरि में प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं।

—सम्पादक

...आँख का सुरमा -

शोधित सुरमा	५ तोला
उत्तम ममीरा	२ माशा
बोरिक एसिड	१ तोला
शुद्ध पारद	६ माशा
जिंक सल्फेट (जयपुर का श्वेत काजल)	६ माशा
फिटकरी	३ माशा
नीला थोथा	२ माशा
उत्तम मौक्तिक शुक्ति या मोती	१ तोला
कल्मी शोरा असली	६ माशा
शीतलचीनी	६ माशा
शुद्ध अफीम	१ माशा
केशर उत्तम १ माशा वर्क चाँदी नग १०	

विधि—इन सब वस्तुओं को कूटकर बारीक करलें, पश्चात् उत्तम पत्थर के खरल में इन सब वस्तुओं को डालकर ४० दिन तक उत्तम गुलाब जल में निरन्तर खरल करना चाहिये। पश्चात्—

उत्तम भीमसेनी कपूर ६ माशा

पिपरमेंट आधा माशा बारीक करके मिला दें। और २ दिन तक फिर खरल करके शीशी में रख लेवें।

प्रयोग विधि—सुबह-शाम शीशे की सलाई से लगावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण—जाला धुन्ध फूला आदि नेत्र-रोगों के लिए उत्तम योग है, लगाने से नेत्र वर्फ के समान शीतल हो जाते हैं। इसके व्यवहार से मोतिया-बिन्द के रोगी भी अच्छे हुये हैं। इसके साथ यदि महा त्रिफलादि घृत भी सेवन कराया जाय तो शीघ्र लाभ होता है।

पाचन वटिका—

काला नमक	१० तोला
सेंधा नमक	२॥ तोला
सांमर नमक	२॥ तोला
पीपल छोटी	१। तोला
काली मिरच	१। तोला
अकरकरा उत्तम	१ तोला
भीमसेनी कपूर	१ रत्ती
कस्तूरी	१ रत्ती

मुशक अमरेट (स्विटजर-लैंड का बना हुआ), केशर २-२ रत्ती

निर्माण विधि—इन सब वस्तुओं को कूट कर कपड़ छन कर लें, पश्चात् १ बोतल नीबू का रस मिट्टी के पात्र में डाल दें।

केशर, मुशक-अमरेट, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर इनको अलग रखलें अन्य सब औषधियां कपड़ छन कर निंबू के रस के पात्र में डालकर चूल्हे पर यानी अग्नि पर चढ़ाकर धीमी २ अग्नि से पकावें। लकड़ी से चलाते रहें, औटने पर जब अवलेह के समान गाढ़ा होजाय तब पात्र को नीचे उतारलें। शीतल होजाने पर पात्र में से उस दवाई को निकाल कर उसमें मुश्क-अमरेट, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर इनको मिलादें और २४ घण्टे निरन्तर खरल करें। गोली बनने योग्य होजाने पर चणक प्रमाण गोलियां बनाकर छाया में सुखावें। धूप में सुखाने से खुशबू उड़ जायगी।

गुण—यह गोलियां अत्यन्त स्वादिष्ट सुगंधित होती हैं। खाते समय मुख में से खुशबू आया करती है। इसको शनैः २ चूसकर खाने से बड़ा अच्छा लगता है। इसके सेवन से अजीर्ण बदहजमी अफरा दस्त लगना, पेट का दर्द, खट्टी डकारों का आना अपान वायु का न सरना, आदि उदर संबन्धी समस्त बीमारियां दूर होकर जठराग्नि प्रदीप्त होती है, भूख खुब लगती है, दीपन पाचन है।

—श्री० कवि०श्रीकृष्ण शर्मा वैद्यरत्न,
केकड़ी (जयपुर)

श्वेत आक [अर्क] के प्रयोग—

१—आक के फूलों के अन्दर की कली	५ तोला
लोंग	२ तोला
हींग का फूला	६ माशे
सैंधव	२ तोला

—इन सबको पीसकर मटर जैसी गोली बनालें यदि गोली न बन सकें तो कुछ पानी के छींटे लगाकर पीसकर गोली बनालें।

गुण—पेट के दर्द तथा खांसी के लिये उत्तम है।

२—आक के कोमल फू	१० तोला
काली मिर्च	२॥ तोला
काला नमक	३ तोला
जीरा सफेद	२ तोला

—इनको अद्रक के रस के साथ पीसकर बेर के बराबर गोली बनालें।

गुण—पाचक है। भूख बढ़ती है।

३—आक के पत्तों को पानी से धोकर कूटें और अर्क निकाल लें। जौ औखली में डालकर उक्त अर्क के छींटे देते हुये कूटें। जब जौ की बकली (छिलका) प्रथक होजाय तब जौ को औखली से निकाल उसी के किनारे ढेरी कर दाबदें एक प्रहर के बाद उनको (फटक कर) साफ करलें और भुजवा कर उनका दलिया बनवालें इसको दूध-शक्कर अथवा नमकीन जैसा चाहें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न करो।

...जम है। हर मरीज़ के लिए उपयोगी है। सामान्य दलिया अधिक दिन खाने से रोगी के कभी २ सूजन आजाती है, लेकिन इसके प्रयोग से यह रोग नहीं होता।

पुराने बाजरे को आक के दूध में एक रात्रि के लिये भिगोदें। दूसरे दिन दो सकोरों के बीच में रख फूंक दें। इसमें से केवल २-२ रत्ती पान पर रख कर खालें। पीक न थूकें।

...श्वास-रोगी के लिए अत्युत्तम है।

— वैद्य बचानसिंह जी, कुम्हौर।

...लेरिया के लिये उत्तम प्रयोग—

१-पित्तपापड़ा	करंज के पत्ता,
गिलोय,	कुड़े की छाल
घीकुंवार की जड़	काली मिर्च
सनाय	नीम की निबौली
तुलसी के पत्ते	चिरायता
हर्रे पीपल	शुद्ध सिंगरफ

इन १३ दवाओं को समभाग लेकर पीस, लिजिये पीछे तीन दिन तक नीबू के रस में खरल कर १-१ माशे की गोलियां बना लीजिये, बुखार आने के पहिले २-२ घंटे पर १-१ गोली सेवन करने से बुखार छूट जाता है। एक दिन में ३ गोली सेवन करना चाहिये। यह प्रयोग चिकित्सा-चन्द्रोदय से ज्ञात कर बनाया और हमने लाभ उठाया है।

घोंघे का ढक्कन लाकर उसे पुटपक्क विधि से ...डों की आग में भस्म कर लिजिये। किसी ...ह के मलेरिया ज्वर में ज्वर आने के पहले लगे ... बंगला पान में एक चावल भस्म दें। रोगी ...३ बार देने से ज्वर उसी दिन रुक जाता है। ...में ३ दिन दवा और खिलानी चाहिये। बारी ...दिन किसी तरह का अन्न नहीं दें। बाद हलका पथ्य देना चाहिये।

—कविराज पं० रामाधार जी द्विवेदी,
दखिनांव (शहाबाद)

त्रिफलादि अवलेह—

हरड़	बहेड़ा	आमला
हलदी		—चारों १-१ तोला

विधि—इनको कूट-छान कर महीन चूर्ण करलें और डेढ सेर शहद मिलाकर कांच या चीनी के पात्र में सुरक्षित रखलें।

मात्रा व अनुपान—इसको ६ माशा से १ तोला तक की मात्रा में दूध या पानी के साथ सुबह-शाम सेवन करें।

गुण—इसके सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह, स्वप्न-दोष, धातु-श्राव आदि समूल नष्ट होते हैं और शरीर बलवान् व कांतिवान् बन जाता है। यह सर्वोत्तम कब्ज नाशक होने के अतिरिक्त अनुपम रक्त शोधक भी है। फोड़े फुन्सी आदि रक्त-विकारों पर भी गुणकारी है। निराश एवं दुःसाध्य रोगी भी इसके प्रयोग से पूर्ण आरोग्य हो चुके हैं। यह हमारा चिरपरीक्षित गुप्त प्रयोग है। आशा है कि 'धन्वन्तरि' के पाठक इससे अवश्य लाभ उठायेंगे।

—पं० रमादत्त शर्मा वैद्य, इलाहाबाद।

सूखा रोग के लिये उत्तम प्रयोग—

ढाक (पलास) के पत्तों के नीचे की ओर 'गुम-ड़ियां' गांठें जैसी होती हैं। इनमें एक प्रकार का कीड़ा रहता है, वह बड़ा होने पर पत्ते को छेद कर निकल जाता है। इस कीड़े को 'गुरुमच्छी' कहते हैं। इनमें जब कीड़ा छोटा ही हो तब चीड़ कर देखें, जिस कीड़े के पंख न उगे हों उसे लाकर एक अदद बच्चे की माता के दूध में घिस कर बच्चे को दें। १५ दिन इस प्रकार रोजाना एक कीड़ा देने से सूखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग अवश्य नष्ट हो जाता है। इस प्रयोग को एक सन्यासी ने मेरे पिता जी को बतलाया था।

जले पर टेसू—

ढाक के फूलों को 'टेसू' कहते हैं। इनको पीस कर जले स्थान पर लेप करने से लाभ होता है। अण्डकोष बढ़ जाने पर इनको पीस कर गरम कर लेप करें लाभ होगा।

आंख की फुली पर—

ढाक के बीजों को 'पलासपापड़ा' कहते हैं। इसे घिस कर आंखों में लगावें। ४० दिन में लाभ होता है।

—आयुर्वेद-विशारद बैजनाथ प्रसाद वैद्य, नीमसार (सीतापुर)

अफीम छुड़ाने के लिये—

उत्तम विधि—

अफीम खाने वाला व्यक्ति जितनी अफीम प्रति दिन खाता है उस प्रमाण से ४० दिन की मात्रा एक साथ लेकर ४० तोला स्वच्छ जल में घोलकर एक बोतल में रखलें। अफीम खाने वाले व्यक्ति को उसमें से १ तोला जल निकाल कर पीने को दें और १ तोला स्वच्छ जल उस बोतल में डाल दें। इसी प्रकार रोजाना उस बोतल में से एक तोला घोल उस व्यक्ति को देते रहें और एक तोला स्वच्छ डालते रहें। कुछ दिनों में बोतल में केवल जल ही रह जायगा और अफीम खाने वाला व्यक्ति उसी से सन्तुष्ट होता रहेगा।

नोट—प्रतिदिन बोतल हिलाकर १ तोला जल निकालें।

इस प्रकार अफीम अवश्य और बिना किसी परेशानी के छूट जाती है।

—गोस्वामी शिवरत्नगिर वैद्य, काशी।

मूत्र के साथ सफेदी आने प[र]

दोनों समय खाने के साथ राई क[ी] ... ने से बड़ा अच्छा ... कांजी पीने से मूत्र में फासफेट आने रुक जाते हैं। इस प्रयोग से मैंने इस रोग के कई मरीज ठीक किये हैं। होमियो का (Acidphos 30 x) इस रोग के लिये उत्तम है।

प्रदर एवं अधिक स्राव के लिये—

वह खाली बोरी जिसमें २-३ साल तक गुड़ भरा गया हो लें। इस खाली बोरी को आग लगा दें और बोरी की भस्म सम्भाल कर रखें। रोजाना प्रातः ६ माशे स्त्री को खिलावें। स्त्रियों के सफेद पानी और मासिक धर्म के समय अधिक स्राव आने को केवल १ सप्ताह में ठीक करती है।

—ग्रा० नं० ६६२८, हैरतजिन्दगी कार्यालय।

विसूचिका हर वटी—

भुना हुआ जीरा अफीम चूका के पत्तों का रस—इन तीनों को समान भाग लेकर खरल में डालकर १ प्रहर तक खूब घोटें। गोली बनाने योग्य हो जाने पर मूंग बराबर गोली बनालें।

प्रयोग—दस्त व कै प्रारम्भ होने पर १-१ गोली ताजे पानी के साथ थोड़ी-थोड़ी देर बाद दें।

गुण—विशूचिका के लिये उत्तम प्रयोग है। पेशाब का मार्ग तुरन्त खोल देता है।

विजयासव

विजया (भांग) बीज सहित का चूर्ण १ सेर		
गुड़ २॥ सेर	जल	१६ सेर
लौंग,	जायफल,	जावित्री
इलायची बड़ी	अकरकरा	अजवायन
काली मिर्च	—हरेक २-२ तोला।	

निर्माण-विधि—एक मृत्तिका पात्र में स्वच्छ जल भर

[शेषांश पृष्ठ ४०० पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों से परामर्श

प्रेषकों से निवेदन—

न्वन्तरि में प्रकाशनार्थ इतने अधिक प्रश्न ते कि हम उनको यथावसर प्रकाशित करने में र्थ है। इस स्तम्भ के लिये यदि अधिक स्थान जाय तो ग्राहक कुछ असन्तुष्ट होते हैं इधर ग्राहकों ने अपना या अपने किसी मित्र के रोग वरण प्रकाशनार्थ भेजा और वह २-३ माह लम्ब से प्रकाशित हुआ तब उन सज्जन को उचित लाभ नहीं मिलता। इन सब परिस्थि- पर विचार कर हमने यह निश्चय किया है कि न्तरि में उन प्रश्नों को स्थान न दिया जाय जो रोगी विशेष से सम्बन्धित हों और जिसके रण व उत्तर से सभी ग्राहक लाभ न उठा सकें। उन्हीं प्रश्नों को प्रकाशित किया जाय जिसके से सभी ग्राहक लाभ उठा सकें। ऐसे प्रश्नों मूना इस अङ्क में प्रकाशित प्रश्नों से जान सकेंगे।

—सम्पादक।

श्न नं० १—

एकाहिक, तृतीयक एवं चतुर्थक मलेरिया ज्वर निश्चित समय पर आक्रमण करता है अपने धि समय से घट-बढ़ कर इनका आक्रमण क्यों होता? विद्वान आयुर्वेदज्ञों से प्रार्थना है इसका कारण आयुर्वेद-सिद्धान्त से बताने का कष्ट करें।

—श्री. अष्टभुजा प्रसाद श्रीवास्तव।

प्रश्न नं० २—

मेरे पास बहुत पुरानी एक दवा है वह श्वेत रंग की कोई भस्म या अन्य औषधि है। इसकी शीशी पर एक चिट लगी है, ऊपर लिखा है—

"अर्धं वसति कैलाशे अर्धं गायन मन्दिरे
सम्पूर्णं वारजा गारे यो जानति सो पण्डितः"

इसमें वारजा का 'र' कटा हुआ है।

विद्वान महानुभावों से प्रार्थना है कि इसका अर्थ सूचित करें, जिससे इस दवा का उचित प्रयोग किया जासके।

—श्री. पं. मधुसूदन जी शर्मा, आलीराजपुर।

प्रश्न नं० ३—

निद्रा बहुत सताती है इसको कम करने की दवा या कोई उपाय विज्ञ सज्जन लिखें।

—ग्राहक नं० ६७१२।

प्रश्न नं० ४—

बट वृक्ष से दूध निकालने की विधि लिखें।

प्रश्न नं० ५—

आक (अर्क) दुग्ध सुगमता से निकल सके ऐसी विधि अनुभवी सज्जन लिखें। केवल पुस्तकों में पढ़ कर इधर-उधर से विधि लिख कर परेशानी में न डालें।

प्रश्न नं० ६—

वाष्प जल (डिस्टिल वाटर) में जाला न पड़े,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी विधि लिखें।

—श्री. छेदीलाल जी वैद्य माधवमिल।

प्रश्न नं० ७-

अनुभवी वैद्य बन्धु "अर्क पोदीना हरा" का योग अविलम्ब धन्वन्तरि पत्रिका में देने की दया करें।

—बाबा पतितपावन दास वैद्य।

प्रश्न नं० ८---

स्वप्न क्या है? क्यों दीखते हैं? कोई-कोई स्वप्न भविष्य में सत्य होते है। किसी २ स्वप्न में उन स्थानों का दृष्य दिखलाई दे जाता है जो कभी देखे नहीं। स्वप्न में मनुष्य स्वप्न के अनुसार क्रिया करने लगता है। ऐसा क्यों होता है और इसकी चिकित्सा क्या है?

—ग्राहक नं० ३२१०।

प्रश्न नं० ९—

बहुधा देखा गया है कई औरतों को गर्भ-स्थिति के ७ वें ८ वें महीने से सर्वांग शोथ होकर प्रसूता होने के समय प्राणान्त हो जाता है।

ऐसे समय उग्र औषधियां हानि होने की सम्भावना से वैद्य लोग देने से बञ्चित रह जाते हैं। अत: वैद्य महानुभावों से निवेदन है कि कोई स्वानुभवपूर्ण औषधियां जो कि सर्व सुलभ हों, धन्वन्तरि द्वारा सूचित करने की कृपा करें।

—पं० रघुनन्दन शर्मा मु० पीपल्दा, (कोटा)।

प्रश्न नं० १०----

आजकल देखने में जितने वीर्य-दोष के रोगी आते हैं, उनमें ७० प्रतिशत पित्तज वीर्य दोषी होते हैं। पेशाब पीला होता है वीर्य पतला एवं गरम होता है और स्तम्भन शक्ति तो नाम मात्र भी नहीं रहती। यहां तक कि प्रात: घूमने तक से तकलीफ होने लगती है व सिर में दर्द होने लगता है। मैंने सैकड़ों योग देखे, किन्तु ऐसा एक भी योग न मिला जिससे ... होकर वीर्य गाढ़ा एवं पुष्ट हो। ... ने से बड़ा ... वर्ष से परेशान हैं और इसी के कारण ... न्तान और निराश हैं। त्रिवेदी जी व ... विद्वानों से प्रार्थना है कि कोई ऐसा शीतल यो... बताने की कृपा करें जिससे वीर्य की गरमी ... कर वीर्य गाढ़ा व पुष्ट हो और शीघ्र पतन ... दूर हो।

—श्री. श्यामलाल निगम, आलमबाग लखनऊ।

[पृष्ठ ३६४ का शेषांश]

कर प्रथम गुड़ घोल दें। उसमें विजया चू... तथा अन्य वस्तुओं का चूर्ण डालकर मुख प... ढक्कन रख कर मुख बन्द कर दें। एक मा... बाद छान कर कांच पात्र में भर रखें।

मात्रा—१ तोले से २॥ तोले तक।

गुण—यह आसव अग्नि दीपक कामजनक, निद्रा कारक तथा पौष्टिक है; अरुचि अनिद्रा आलस्य थकावट दूर कर मन प्रसन्न करता है।

—ठा० गोकुलानन्दसिंह वै० शा० माधोपुर-सिंगाही।

सर्पदंश पर--

यह प्रयोग मुझे एक विश्वास पात्र वृद्ध मनुष्य से ज्ञात हुआ है। बतलाने वाले का कहना है कि कैसे भी ज़हरीले सर्प ने काटा हो, ज़हर अवश्य ही उतर जाता है। उसने कई बार प्रयोग किया बताया है और कहा है कि कभी निष्फल नहीं हुआ। पशुओं के लिये भी उत्तम प्रमाणित हुआ है।

प्रयोग—सर्प के काटने पर तुरंत तिली का तैल अथवा जैसा भी मिल सके कमसे कम ४० तोला पिला दें। दंशित व्यक्ति अवश्य ठीक हो जायेगा।

—डा० ना० गो० बाघ, काटोल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद जगत्

...ला वैद्य सभा फैजाबाद —

...जिला वैद्य सभा का वार्षिक चुनाव २२ सितंबर हुआ। निम्न पदाधिकारी चुने गये।

...पति—पं० जगन्नाथ प्रसाद मिश्र वैद्य आयुर्वेदा०
...भापति—१ पं० कृष्णदत्त वैद्य आयुर्वेदालंकार
२—वैद्यभूषण पं०. रामपाल शर्मा।
...त्री—आचार्य मदनगोपाल वैद्य ए० एम० एस०
...न्त्री—१ आयु० विशा० पं० गोविन्दमाधव शुक्ल,
२—पं० श्रीकान्त शर्मा आयुर्वेदाचार्य।
३—पं० रामचन्द्र शर्मा आयु० मार्तण्ड।
४—पं० रामलाल शर्मा वैद्य, पूरा।
...ध्यक्ष—बाबू महावीर प्रसाद जी वैद्य।

...क चुनाव के अतिरिक्त निम्न प्रस्ताव पास हुये।

...प्रस्ताव—

...जिला वैद्य सभा अपने जिले के प्रमुख वैद्य पं० अवधेश शर्मा की मृत्यु पर शोक प्रकट करती है। ईश्वर से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करती है और उनके परिवार वालों के साथ सहानुभूति प्रकट करती है।

...अटल के भाषण का विरोध—

...जिला वैद्यसभा प्रान्तीय मेडीकल कानफ्रेन्स के सभापति डा० अटल के भाषण के उस अंश का घोर विरोध करती है जिसमें उन्होंने देशी चिकित्सा पद्धति की स्थापना से देश में घोर रोग प्रसार का भय प्रकट किया है। साथ ही उनकी देश तथा आयुर्वेद के प्रति अज्ञानता की निंदा करती है। डा० अटल को जान लेना चाहिये कि आयुर्वेद शीघ्र ही उन्नति करके राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति का स्थान ग्रहण करने जा रहा है और उसके लिए हम सब लोग दृढ़ प्रतिज्ञ हैं।

विधान सम्मेलन में वैद्य का स्थान—

३—जिला वैद्य सभा फैजाबाद युक्त प्रान्तीय सरकार से प्रार्थना करती है कि विधान सम्मेलन में अब तक कोई वैद्य नहीं है अतः यदि भविष्य में कोई स्थान रिक्त हो तो उसमें वैद्यों को स्थान अवश्य मिलना चाहिये। —मन्त्री।

शुभ सूचना—

आगरा नगर के प्रमुख वैद्यों ने आयुर्वेद के सर्वाङ्गीण प्रचार तथा उन्नति के लिये आगरा नगर में एक आयुर्वेद विद्यालय स्थापित किया है। विशुद्ध आयुर्वेदिक ढंग से कर्माभ्यासपूर्वक आधुनिक शल्य-विज्ञान सहित शिक्षा दी जाती है। आयुर्वेद विद्यार्थी लाभ उठावें।

—व्यवस्थापक आयुर्वेद महाविद्यालय
मनः कामकेश्वर रावतपाड़ा, आगरा।

चलता आयुर्वेद पुस्तकालय—

यों तो प्रान्त के सभी मेलों में वैद्यसेवा संघ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा के लिये जाता ही है इस वर्ष से आयुर्वेद प्रचार के लिये पुस्तकालय खोले जायंगे। अतः पत्र व्यवस्थापकों पुस्तक प्रकाशकों आदि सभी से निवेदन है कि सहायता स्वरूप अपना प्रकाशन भेज कर कृतार्थ करें।

—वैद्यसेवा संघीय चलता आयुर्वेद पुस्तकालय, ओड़ा।

नवयुवक सेवा सदन दातव्य औषधालय

नवयुवक सेवा सदन सन् ४३ में सर्व साधारण जनता की सेवा करने के प्रधान उद्देश्य से स्थापित हुआ था। संस्था के नियन्त्रण में दातव्य औषधालय स्थानीय एवं ग्रामीण जनता की सुचारू रूप से सेवा कर रहा है। अब तक १५६२१२ ... ने से बड़ा अच्छ... त्सा हुई है एवं गरीबों को पथ्य के ... एक ... प्रदान की गई है। वैद्य पं० भीमपाल जी ... निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा कर रहे हैं। आप प्रति रविवार को ग्रामों का दौरा करते हैं और रिपोर्ट कार्यालय में पेश की जाती है। संस्था का वार्षिक व्यय प्रायः ३२००) है। सेठ सागरमल जी सोमाल निजी तौर से संस्था का संचालन करते हैं, एतदर्थ जनता की ओर से आपको धन्यवाद।

—वंशीधर जोशी अ० मन्त्री

नवयुवक सेवा सदन, सीकर।

× × × × × ×

चोपड़ा कमेटी की रिपोर्ट।

भारत सरकार ने जो देशी वैद्यक निर्णायक समिति का निमाण किया है उसका थोड़े से में नाम 'चोपड़ा समिति है, उसने अपनी रिपोर्ट ता० २-८-४८को हिंद सरकार की स्वास्थ्यमन्त्रिणी राजकुमारी अमृतकोर के समक्ष पेश करदी है। संप्रति स्वास्थ्य-मन्त्रिणी जी उस रिपोर्ट का अध्ययन कर रही हैं।

ऐसा ज्ञात हुआ है कि इस रिपोर्ट के प्रथम भाग में आयुर्वेद की शास्त्रीयता सिद्ध की गई है। दूसरे भाग में निम्न-लिखित सुझाव हैं :-

संपूर्ण हिन्दुस्तान के आयुर्वेद-विद्यालयों में एक ही समान अभ्यासक्रम रहना चाहिये।

मध्यस्थ सरकार द्वारा एक मध्यस्थ आयुर्वेदिक कौंसिल की स्थापना की जाय।

इण्डियन मेडिकल एक्ट के अनुसार एक आयुर्वेदिक एक्ट का भी निर्माण करना चाहिये।

आयुर्वेद जगत् के खास प्रतिनिधि द्वारा ज्ञात हुआ है कि निम्न-लिखित बातें रिपोर्ट में होनी चाहिये, ऐसा ज्ञात होता है।

१. रिपोर्ट सर्वसम्मति से तैयार की गई है किसी ने भी भिन्न मत पत्रिका नहीं लिखी

२. कितने ही प्रान्तों द्वारा आयुर्वेद को मान्यता दी गई और आयुर्वेदीय पाठ्यक्रम परीक्षा और पदवी प्रारम्भ कर दी गई है किन्तु वे सब भिन्न-भिन्न हैं, प्रत्येक प्रान्त का रजिट्रेशन भी प्रान्त तक ही सीमित है; इससे आयुर्वेद का अहित हो रहा है।

समित का ऐसा भी मत है कि आयुर्वेद का प्रचार सम्पूर्ण भारत में होना चाहिये। अखिल भारत में एक ही श्रेणी का पाठ्यक्रम एक ही श्रेणी की पदवी, अभ्यास और परीक्षा भी एक ही श्रेणी की और रजिट्रेशन के लिए भी एक ही प्रकार के नियम होने चाहिये।

पांच वर्ष का अभ्यास क्रम

सम्पूर्ण भारत में एक ही सरीखा पांच वर्ष का अभ्यास क्रम होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...पुस्तकें

...के योग्य हों ऐसी पुस्तकें उप-...नहीं होती हैं इसका समिति को दुःख है। नूतन ...पनों की सहायता लेकर प्राचीन शास्त्रों के ...र पर विस्तारपूर्वक प्रामाणिक ऐसी नई पाठ्य-...तैयार हों ऐसा प्रयत्न मध्य सरकार को करना ...ए। इस कार्य के लिए मध्य सरकार को ...क मदद देनी चाहिए।

ऐसी पुस्तकों का निर्माण होने से प्रत्येक आयु-...महाविद्यालयों में जो भिन्न-भिन्न अभ्यास ...प्रचलित है वह बन्द हो जायगा, ऐसा ...ति को विश्वास है। संप्रति प्राप्त होने वाले ग्रन्थों ...भाग कुछ अध्यापकों को कम महत्व का ...होता है और वही भाग कुछ परीक्षकों को ...का प्रतीत होता है। इसका दुष्परिणाम विद्या-...को भोगना पड़ता है। ये सम्पूर्ण बाधायें पुस्तकें ...हो जाने से दूर हो जांयगी। ये पुस्तकें पहले ...भाषा में तैयार की जावें और बाद में उनका ...य भाषाओं में अनुवाद कर दिया जाय ऐसी ...ति की सूचना है। एक विद्वान वैद्य एक उच्च ...ज्ञ और एक विद्वान् डॉक्टर इन तीनों को ...त करके पाठ्यपुस्तकें तैयार करने का काम पूरा ...या जाय ऐसा समिति का सुझाव है।

संशोधन में नवीन विचारधारा

(दृष्टि बिन्दु)

संशोधन के विषय में समिति ने बहुत विचार ...है। आयुर्वेद में संशोधन की आवश्यकता है ...बात समिति ने मान्य की है। संशोधन के लिये संशोधन केन्द्र प्रारम्भ करने की सूचना भी ...ति ने की है। एक केन्द्र बनारस में और दूसरा ...में खोलना चाहिये। इन केन्द्रों में आयुर्वेद ...पूर्णतया महत्व देने की समिति ने सूचना दी है ...ध्यान में आता है। संशोधन के लिये नवीन दृष्टिकोण रखने की आवश्यकता समिति को प्रतीत होती है।

समान श्रेणी

इन केन्द्रों में वैद्य और डाक्टर समान पद पर रहकर एक स्थान पर कार्य करेंगे। वहां एक रुग्णालय औषधि निर्माणशाला और एक पुस्तकालय इतनी बातें रहेंगी ही; पाठ्य पुस्तकें तैयार करने वाला मंडल भी वैद्य-डाक्टरों के सहयोग से कार्य करेगा।

आयुर्वेद की प्रधानता रखें

आयुर्वेद का अभ्यास क्रम शुद्ध रखना चाहिये या मिश्रित, इस संबन्ध में समिति के पास भिन्न २ प्रकार की गवाहियां हुई हैं। समिति में भी इस मुद्दे पर बहुत ही मतभेद हुआ होगा ऐसा ज्ञात होता है। समिति ने अन्तिम निर्णय ऐसा दिया है कि नूतन पुस्तकें तैयार करते समय और उन विषयों को पढ़ाते समय आयुर्वेद की प्रधानता रहनी चाहिये। केवल महत्व-पूर्ण कठिनाइयां दूर करने के लिये आवश्यक हो उतना ही विषय ऐलोपैथी से लिया जाय।

प्रवेश योग्यता

समिति के समक्ष आई हुई गवाहियों के अनुसार संप्रति प्रचलित शिक्षा संस्थाओंमें से जो पढ़कर बाहर निकलते हैं वे न तो पूर्ण वैद्य ही होते हैं और न पूर्ण डाक्टर ही। इन पढ़े लिखों में से बहुत से ऐलोपैथी के आश्रय से ही कमाई करते हैं। इस विकृति का कारण केवल शिक्षण न होकर योग्य विद्यार्थी इस अभ्यास की ओर आकर्षित नहीं होते यही है। विद्यार्थियों का संस्कृतज्ञान भी अपूर्ण ही रहता है।

इसके लिये समिति ने ऐसा सुझाव रखा है कि आयुर्वेदिक कालेज में प्रवेश पाने के लिये इन्टर सायन्स परीक्षा पास हुआ विद्यार्थी ही योग्य माना जाय और उस विद्यार्थी का संस्कृत ज्ञान सायंस कालेज में पढ़ते समय ही हो जाय ऐसी योजना की जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषधि निर्माण पर नियन्त्रण-

विशुद्ध प्रभावकारी और अनुभव सिद्ध औषधियां जनता को शुद्ध रूप में प्राप्त हों, इसके लिए समिति ने ऐसा सुझाव रखा है कि औषधियों का निर्माण विक्रय और औषधि प्रदान इन पर हो सके उतना नियन्त्रण मध्य सरकार को रखना चाहिये।

डाक्टर-वैद्यों को समान दे... ...ने से बड़ा अच्छा... एक...

आयुर्वेदीय पदवीधर और एलो... ...ल जो... इनका दर्जा समान रखा जाय और ... रहे हैं। आप... दूर की जाय, इस मुद्दे पर समिति ने विशेष जोर दिया है।

—आयुर्वेद सेवक।

× × ×

युक्त प्रान्त में वैद्यों की रजिस्ट्री

युक्त-प्रान्तीय इण्डियन मैडीशन बोर्ड द्वारा वैद्यों की रजिस्ट्री बहुत समय से की जा रही है और अब तक लगभग १०-१२ हजार वैद्यों की रजिस्ट्री की जा चुकी है। इसके विषय में हमारे अनेकों पाठक तरह-तरह के प्रश्न समय २ पर किया करते हैं, अतएव हम इस अङ्क में बोर्ड द्वारा रजिस्ट्री कराने के जो नियम हैं उनको विस्तार-पूर्वक प्रकाशित कर कर रहे हैं।

पुराने एवं अनुभवी उन वैद्यों की रजिस्ट्री भी पैराग्राफ ४ के अन्तर्गत हो सकेगी जिन्होंने किसी विद्यालय से शिक्षा प्राप्त न की हो। युक्त-प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन से सम्बन्धित जिला वैद्य सभाओं के अध्यक्ष या मंत्री ऐसे वैद्यों के आवेदन-पत्रों पर शिफारिश कर सकेंगे। —सम्पादक।

रजिस्ट्री की नियमावली--

नोट—युक्त प्रान्तीय इण्डियन मेडीसन एक्ट के अनुसार इस बोर्ड से उन्हीं वैद्यों और हकीमों का रजिस्ट्रेशन हो सकेगा जो युक्त प्रान्त में ही रहते हैं और प्रैक्टिस करते हैं:—

१ (अ) वे वैद्य जो बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के आयुर्वेदिक कालेज की मेडीसन और सर्जरी में आयुर्वेदाचार्य (ए. एम. एस.) या अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के तिब्बिया कालेज से डी. यू. एम. एस. या इस बोर्ड से सम्बन्धित आयुर्वेदिक और यूनानी कालेजों से डी. आई. एम. एस (अब बी. आई. एम. एस) की उपाधि प्राप्त कर चुके हों–'ए' क्लास में रजिस्टर किये जांयगे।

(ब) वे वैद्य और हकीम जिन्होंने या तो हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग या निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ की अन्तिम परीक्षा अर्थात् आयुर्वेदरत्न या आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा पास कर चुके हैं और जिनको प्रैक्टिस करते ५ साल से अधिक हो गये हैं, 'ए' क्लास में रजिस्टर किये जांयगे।

२ (अ) वे वैद्य और हकीम जो इस बोर्ड से सम्बन्धित कालेजों से आयुर्वेदिक या यूनानी (डी. आई. एम.) का डिप्लोमा प्राप्त कर चुके हैं, बी क्लास में रजिस्टर किये जांयगे।

(ब) वे वैद्य जिन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन से वैद्य विशारद या निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ से आयुर्वेद विशारद की परीक्षा पास की है और जो ५ साल तक प्रैक्टिस कर चुके हैं बी' क्लास में रजिस्टर किये जांयगे।

(स) वे वैद्य और हकीम जो निम्नलिखित आयुर्वेदिक या यूनानी कालेजों में से किसी की भी अन्तिम परीक्षा पास कर चुके हैं 'बी' क्लास में रजिस्टर किये जांयगे।

१. आयुर्वेदिक कालेज, गुरुकुल कांगड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

आयुर्वेद का सर्वोत्कृष्ट, सर्वप्रिय, सर्वत्र प्रचलित,
55 उपयोगी सचित्र मासिक पत्र।

सम्पादक

आयुर्वेदोपाध्याय देवीशरण गर्ग

ज्वालाप्रसाद अग्रवाल बी. एस-सी

दिसम्बर

१९४८

वार्षिक मूल्य ५।)
विदेश में ६।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

के ग्राहकों

को सभी आवश्यक औषधियां प्रमाणित औषधि-निर्माता एवं अपने प्रिय-धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़—से मंगा कर व्यवहार में लानी चाहिये। इस निर्माणशाला में अनुभवी निर्माताओं की देख-रेख में सभी औषधियां विशुद्ध एवं पूर्ण प्रभावशाली निर्माण की जाती हैं। इसमें निर्मित होने वाली आयुर्वेदिक तथा पेटेन्ट औषधियों के थोक भाव धन्वन्तरि के इस वर्ष के विशेषांक 'कल्प एवं पंचकर्म चिकित्सांक" के अन्त में लगी सूची से जान सकेंगे।

आशा है आप हमको सेवा का अवसर देते रहेंगे।

विनीत—

—वैद्य देवीशरण गर्ग

Printed and Published by Vaidy D. S. Garg.the Dhanwantar; Press Bijalgarh.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपालु ग्राहकों की सेवा में

—निवेदन—

मान्य महोदय,

'धन्वन्तरि' ने जो आयुर्वेद की सेवा की है अथवा जो कर रहा है वह किसी से छुपी नहीं है। यदि यह कहा जाय कि धन्वन्तरि के नियमित पढ़ने से ही हजारों चिकित्सक बन गये और वे भारत की गरीब जनता की सेवा करते हुये आयुर्वेदोन्नति एवं इसके प्रचार में सहायक होरहे हैं तो कोई अत्युक्ति नहीं है। धन्वन्तरि-संचालकों ने सदैव सामान्य चिकित्सकों के लिये उपयोगी साहित्य देने का ध्यान रखा है और इस विषय में हम कितने सफल हुये हैं यह आप सभी ग्राहक अच्छी प्रकार जानते हैं।

❀ एक शिकायत ❀

धन्वन्तरि के ग्राहकों को प्रायः यह शिकायत रही है कि धन्वन्तरि के अङ्क समय पर प्रकाशित नहीं होते। यह शिकायत बहुत कुछ अंशों में सच भी है। लेकिन हम अपने ग्राहकों को यह विश्वास दिला देना चाहते हैं कि इस शिकायत को दूर करने के लिये हम कटिबद्ध हैं तथा हमको विश्वास है कि शीघ्र ही यह कमी भी दूर हो जायगी।

आयुर्वेद प्रचार के लिए

यह आवश्यक है कि धन्वन्तरि के अधिक से अधिक ग्राहक बनाये जांय। जैसे जैसे धन्वन्तरि के ग्राहक बढ़ते जांयगे धन्वन्तरि भी अधिक और उत्तम साहित्य देता जायेगा।

इस वर्ष का विशेषांक

आयुर्वेद के प्रतिष्ठित विद्वानों एवं चिकित्सकों ने एक स्वर से यह घोषणा की है कि यह विशेषांक आयुर्वेद का सर्वोत्तम साहित्य है और आयुर्वेद की प्रगाढ़ महत्ता को प्रदर्शित करने वाला विशेषांक है।

—संक्रामक रोगांक—

आगामी वर्ष का विशेषांक इससे भी कहीं उत्तम, सैकड़ों चित्रों से सुसज्जित एवं आयुर्वेद का मस्तक ऊंचा करने वाला अति सुन्दर प्रकाशित होगा। भारत के माननीय नेताओं एवं एलोपैथी के प्रभुत्व से प्रभावित सज्जनों की मान्यता है कि संक्रामक रोगों के प्रतिकार एवं प्रतिरोध की सम्यक् सामर्थ आयुर्वेद में नहीं है, इस निर्मूल धारणा को नष्ट करने के महान उद्देश्य से ही हम बहुत बड़ा धन व्यय कर इसे सर्वोत्तम बनाने को दृढ़ प्रतिज्ञ है।

आपका भी कर्तव्य है

कि अब धन्वन्तरि के सभी ग्राहक कम से कम १-१ नवीन ग्राहक बनाकर हमारा उत्साह बढ़ावें। यह कार्य आपके लिये जरा भी कठिन नहीं है। आप जिसे भी दिखायेंगे वह ग्राहक बन जायगा क्योंकि धन्वन्तरि ५।) में इससे कई गुने मूल्य का उत्तम साहित्य देता है। इस वर्ष तो ग्राहकों को दो विशेषांक दिये जारहे हैं।

आशा ही नहीं हमको विश्वास है

कि आप हमारे इस आग्रह-पूर्ण निवेदन को अवश्य स्वीकार करेंगे तथा शीघ्र २-१ ग्राहक बना देंगे। आपकी इस कृपा से धन्वन्तरि को सुन्दर बनाने में हमारा विशेष उत्साह बढ़ेगा।

भवदीय—

वैद्य देवीशरण गर्ग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल १५ दिन

१४ फरवरी से २८ फरवरी तक रियायत

शीघ्रता करें

{ विवरण इसकी पुश्त पर देखें। }

च्यवनप्राशअवलेह

[अष्टवर्ग युक्त]

रसायनस्यास्य नरः प्रयोगात् लभेत् जीर्णोऽपि कुटी प्रवेशम्।
जरा कृतं रूपमपास्य सर्वं विभर्ति रूपं नवयौवनस्य ॥

च्यवनप्राश्य—कास श्वास, स्वरभंग; रक्तपित्त, क्षय रोग, उरः-क्षत, अम्लपित्त, संग्रहणी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ आदि रोगों में एक चमत्कारिक औषधि है. यह सौम्य औषधि होने पर भी अति शक्तिशाली है। इसके सेवन से ही वृद्ध च्यवन ऋषि तरुणता को प्राप्त हुए थे महर्षि अश्वनीकुमार ने महात्मा च्यवन के लिये ही प्रथम इसकी रचना की थी इससे ही इसका नाम च्यवनप्राश्य हुआ। यह रसायन है, इसके सेवन से अपूर्व बल और कान्ति आती है यह भारत के सब ही महोदय जानते हैं। ग्रीष्म ऋतु में स्वादिष्ट और ठण्डी खुराक है जिन लोगों के गरमी के दिनों में नाक से या मुख से या दूसरे रास्ते से खून (रक्त) जाता है उनके लिये अमूल्य महौषधि है। इसके साथ स्वर्ण पर्पटी का सेवन करने और पथ्य में केवल दुग्धपान करने से संग्रहणी, अम्लपित्त नाश को प्राप्त होते हैं। हमने देखा है कि कमजोर रोगी भी इसका सेवन कर ५-७ सेर दुग्ध पान कर लेता है। स्त्रियों का बन्ध्या दोष इसके निरन्तर सेवन से नष्ट होता देखा गया है। मस्तिष्क शक्ति बढ़ाने में अद्वितीय पदार्थ है। क्षय (तपैदिक) जैसे भयंकर रोग में धातुओं का क्षय रोककर बल यही देता है, जिन रोगियों के अस्थि मात्र शेष रह गए थे वह इसके सेवन से हृष्टपुष्ट होते देखे गये हैं।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ [अलीगढ़]

अष्टवर्ग-युक्त ... [अष्टवर्ग युक्त] ... से बना

इसी समय मिल सकता है। हमारे सभी ग्राहकों, एजेन्टों ५—१२ दर्जन [१४४] शीशियां एक साथ मंगाने पर २० शीशियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी समय मिल सकता है। हमारे सभी ग्राहकों, एजेन्टों एवं वैद्यों को इसी समय अधिक से अधिक तादाद में च्यवनप्राश मंगाकर रख लेना चाहिये। इस समय ताजे आवलों व अत्युत्तम अष्टवर्ग से बना हुआ च्यवनप्राश बहुत बड़ी तादाद में तैयार किया जा रहा है।

-काँच की शीशियों में-

कुछ समय से कांच की शीशियां टीन के ढक्कन वाली समाप्त हो जाने के कारण हम ग्राहकों के विशेष आग्रह करने पर भी च्यवनप्राश शीशियों में नहीं भेज सके थे। अब शीशियां बहुत बड़ी तादाद में आगई हैं और यह कठिनाई भी जाती रही है। अतएव हमको पूर्ण विश्वास है कि एजेंट अधिक से अधिक तादाद में आर्डर देंगे।

केवल एक पक्ष

[तारीख १४ फरवरी से २८ फरवरी तक]

के लिये निम्न सुविधा दी जा रही है। आशा है इस सुविधा से हमारे सभी ग्राहक अवश्य लाभ उठावेंगे।

-रियायत निम्न प्रकार होगी-

१—एक पाव की एक शीशी का मूल्य १) होगा।
आध सेर की १ शीशी का मूल्य २)
तीन पाव की १ शीशी का मूल्य ३)

२—१२ शीशी एक साथ मंगाने पर १ शीशी बिना मूल्य दी जायगी।

३—तीन दर्जन (३६) शीशियां एक साथ मंगाने पर ४ शीशी बिना मूल्य दी जांयगी।

४—६ दर्जन (७२) शीशियां एक साथ मंगाने पर ६ शीशियां बिना मूल्य दी जांयगी।

५—१२ दर्जन [१४४] शीशियां एक साथ मंगाने पर २० शीशियां बिना मूल्य दी जांयगी।

-नियम-

१—च्यवनप्राश रेलवे पार्सल से ही भेजा जा सकेगा। अतएव पास का रेलवे स्टेशन पत्र में अवश्य लिखना चाहिए।

२—३ दर्जन या अधिक शीशियां एक साथ मंगाने पर सवारी गाड़ी का आधा किराया कार्यालय देगा तथा आधा किराया ग्राहक को देना होगा। पैकिंग आदि व्यय कोई नहीं लगाया जायगा।

३—३ दर्जन से कम मंगाने पर सभी व्यय-पैकिङ्ग, पोस्टेज; रेलभाड़ा आदि ग्राहक को देना होगा।

४—यह रियायत केवल १५ दिन [१४ फरवरी से २८ फरवरी तक] के लिये है। बाद में नहीं दे सकेंगे।

५—एक ग्रौस १ साथ मंगाने वाले को १००० विज्ञापन बितरणार्थ तथा पट्ठे के बोर्ड भी भेजे जांयगे।

-इस अवसर पर-

एक साथ मंगाने वाले के लिए खास भाव नीचे दिये जाते हैं। जो वैद्य हैं और जो अधिक तादाद में मंगाकर रखना चाहते हैं वे इन भावों से मंगा सकते हैं।

५ सेर च्यवनप्राश एक डिब्बे में	१७)
१० सेर च्यवनप्राश २ डिब्बों में	३२॥)
२० सेर च्यवनप्राश १ टीन में	६०)
१ मन च्यवनप्राश २ टीन में	११०)

एक मन मंगाने पर सवारी गाड़ी का आधा रेल भाड़ा कार्यालय देगा। कम मंगाने पर ग्राहक को पूरा देना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारङ्गधर-संहिता

(भाषा-टीका)

वैज्ञानिक-विमर्शोपेत 'सुबोधिनी' हिन्दी टीका युक्त सजिल्द अत्युपयोगी आयुर्वेद ग्रंथ। मूल्य ८)।

थोड़ी सी प्रति हैं, शीघ्र मंगालें।

पता--धन्वन्तरि कार्यालय

बिजयगढ़ (अलीगढ़)।

असली कस्तूरी

सर्वोत्तम नैपाली कस्तूरी हमसे मंगाइये।

मूल्य १ तोला ४८)

केशर का प्रयोग

अत्युत्तम केशर ही प्रयोग में लाईये।

मूल्य १ तोला ७)

असली अम्बर—१ तोला ४८)

पता धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़

-सूचीवेध विज्ञान-

(INJECTION THERAPY)

लेखक—पं० राजकुमार जी द्विवेदी

डी. आई. एम. एस

—+—

इसमें उन्हीं औषधियों का विवरण दिया गया है जो अनुभवी चिकित्सकों द्वारा लाभप्रद सिद्ध की गई हैं। इसमें औषधियों की निर्माण-विधि, मात्रा, प्रवेशमार्ग, गुण, उपद्रव और उनकी चिकित्सा आदि का सुन्दर विवरण है। पुस्तक के अन्त में छोटे-छोटे ५ अध्यायों में जीवनीय द्रव्य-चिकित्सा, भार तथा माप, वैक्सीनचिकित्सा, सीरमचिकित्सा तथा विभिन्न व्याधियों में प्रयुक्त होने वाली औषधियों की नामावली दी है। पुस्तक उपयोगी है।

मूल्य—केवल १॥)

पता - धन्वन्तरि कार्यालय

बिजयगढ़ (अलीगढ़)

कौमारभृत्य

[नव्य-बालरोगसहित]

लेखक--आयुर्वेदाचार्य पं० रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए० एम० एस०

भूमिका लेखक-आचार्य वैद्य यादवजी त्रिक्रमजी बम्बई; इस ग्रन्थ में उदयीमान लेखक ने आयुर्वेदीय ग्रन्थों में प्राप्त समस्त कौमारभृत्य सम्बन्धी बचनों के साथ २ आधुनिक विज्ञान से तुलनात्मक विचार प्रगट किये हैं। बालकों की रक्षा, उनका पालन-पोषण, आहार, ग्रहबाधायें आदि उत्तमता एवं आकर्षक शब्दों में वर्णन किये गये हैं। इनके अतिरिक्त प्राच्य तथा पाश्चात्य ग्रंथों में उपलब्ध बालकों के समस्त रोगों का विस्तृत विवरण निदान, लक्षण, साध्यासाध्यता, चिकित्सा आदि दिया गया है। जिसके साथ२ तुलनात्मक आयुर्वेदीय दृष्टिकोण भी दिया गया है। सुन्दर सजिल्द संस्करण, मूल्य ८)।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

कतिपय उपयोगी पुस्तकों का बिवरण इसी अङ्क में अन्यत्र देखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद की उपयोगी पुस्तकें

रक संहिता --

आयुर्वेदाचार्य जयदेव विद्यालंकार द्वारा भाषा-का एवं विस्तृत व्याख्या सहित सर्वोत्तम पुस्तक सुन्दर मजबूत जिल्दों में सम्पूर्ण ग्रंथ का ल्य ३२)

भिनव बूटी दर्पण

दो भागों में सजल्द। १७६ चित्रों का सुन्दर ग्रह प्रथक पुस्तक रूप में। २१० बूटियों पर बूटी शेषज्ञ स्वर्गीय रूपलाल जी वैश्य द्वारा विषद् वेचन। मूल्य १०)

न्द्रसार संग्रह (सचित्र)-

रस चन्द्रिका भाषा टीका सहित। वैद्यों के ये उपयोगी एवं अवश्य संग्रह योग ग्रन्थ। मूल्य ६)

मृत सागर

प्रसिद्ध एवं प्राचीन पुस्तक है। इसमें दिये गये भी प्रयोग पूर्ण विश्वस्त व सरल हैं। इस पुस्तक सैकड़ों वैद्यों को चिकित्साकार्य में अग्रसर किया एसा कहना भी अत्युक्ति नहीं है। नवीन वैद्यों को पुस्तक से अवश्य लाभ उठाना चाहिये। मू० ८)

ब्ब अकबर -

६४४ पृष्ठ, उत्तम जिल्द। यूनानी चिकित्सा का न्दी में प्रसिद्ध सर्वोत्तम ग्रन्थ। मूल्य ७)

तंत्रसार व सिद्ध प्रयोग संग्रह --

इसका प्रथम भाग का पांचवां संस्करण भी माप्त होगया है। द्वितीय भाग की थोड़ी प्रति अभी हैं। पुस्तक उपयोगी है। शीघ्र मंगालें। मूल्य ५)

कर निघण्टु --

८१३ बनस्पतियों का वर्णन है। १५० पृष्ठों में -रसायन वटी-गुटिका तेल आसवारिष्ट की र्माण विधि भी दी है। उत्तम मजबूत जिल्द है। ल्य ७)

हमारे शरीर की रचना -

श्री० डा० त्रिलोकीनाथ जी वर्मा कृत। शरीर-विज्ञान की हिन्दी में प्रमाणिक व सरल समझने योग्य पुस्तक है। सैकड़ों चित्रों द्वारा विषय को बहुत ही सरल बना दिया गया है। हर वैद्य को इसे अवश्य पढना चाहिये। विद्यार्थियों के लिये तो अवश्य पठनीय है ही। प्रथम भाग का मूल्य १०)

कूपीपक्क रस निर्माण —

आयुर्वेदीय रसायन औषधियों में कूपीपक्क रसायान का स्थान सर्वोच्च है। इनका निर्माण भी इतना सरल नहीं कि हर एक बना सके। इसके निर्माण के विषय में वैज्ञानिक विवेचना युक्त इस पुस्तक को सभी वैद्यों को अवश्य मनन करना चाहिये, मू० ५)

पशु चिकित्सा---

वैद्यों को इस विषय की पुस्तक भी अपने पास रखनी चाहिये तथा समय-समय पर लाभ उठाना चाहिये। मूल्य ३॥)

जर्राही प्रकाश—

चीरफाड़ की मलहम पट्टी की प्रसिद्ध व उत्तम प्राचीन पुस्तक। मूल्य ३॥)

पेटेन्ट औषधि और भारतवर्ष

इसमें भारतवर्ष की प्रायः सभी पेटेन्ट औषधियों का भण्डाफोड़ किया है। अमृतांजन, बालामृत आदि ४५३ प्रसिद्ध पेटेन्ट औषधियों के प्रयोग गुण आदि दिये हैं। प्रथम भाग मूल्य ॥) द्वितीय भाग १)

दशमूल [सचित्र]-

स्वर्गीय ला० रूपलाल जी वैश्य की लिखी दशमूल की दसों बनौषधियों का सचित्र विस्तृत विवरण। हर बनस्पतियों के सैकड़ों प्रयोगादि भी दिये हैं। पुस्तक अत्युपयोगी है। मूल्य केवल ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भृगु-संहिता

संसार भर के मनुष्यों की जन्म कुण्डलियों का भूत भविष्य वर्तमान तीन जन्मों का हाल ज्ञात होगा। मूल्य—११) पो० १)

पृथ्वी भर के मनुष्यों की जन्म कुण्डली मिलेगी, नष्ट जन्म पत्र बनालें।
मूल्य—३) पो० ।।≈)

भृगुसंहिता कुण्डलीखंड

मूक-प्रश्न भास्कर-गुप्त प्रश्न बताने का अनूठा ग्रन्थ। मू० २) पो० ।–)

पता—ज्योतिषरत्न पं० अयोध्याप्रसाद मिश्र
झांसी

बृ० कस्तूरी भैरव रस	१ तो० १२)
मृगांकपोटली रस	१ तोला ६६।।)
च्यवनप्राश (अष्टवर्ग युक्त)	२ सेर ७)
	१ सेर ४)
द्राक्षासव	१ बो० २)
कस्तूरी अत्युत्तम	१ तो० ४८)
केशर काश्मीरी	१ तो० ७)

शीत ऋतु में सेवन योग्य

मूल्यवान औषधियाँ

—+—

शीत ऋतु में रसायन औषधियां सेवन कर सारे साल के लिये शक्ति-संचय करने का शास्त्रीय विधान है। आप भी निम्न औषधियां विश्वस्त एवं उचित मूल्य पर मंगाकर व्यवहार कीजिये।

सिद्ध मकरध्वज नं० १	१ तो०	३२)
मकरध्वज वटी	१ शी०	२।।=)
स्वर्ण बसन्तमालती नं० १ सर्वोत्तम एवं प्रसिद्ध	१ तो०	२०)
बसन्त कुसुमाकर रस	१ तो०	२०)
जयमंगल रस (स्वर्णयुक्त)	१ तो०	१८)
मल्लचन्द्रोदय	१ तो०	३२)
अभ्रकभस्म नं० १ (हजारपुटी)	१ तो०	२०)
स्वर्ण भस्म नं० १ (अत्युत्तम)	१ तो०	१३२)
स्वर्णपर्पटी नं० १	१ तो०	२०)
मुक्ताभस्म नं० १	१ तो०	७२)

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

(आयुर्वेदीय औषधियों का सर्वश्रेष्ठ विश्वस्त एवं प्राचीन कारखाना)

यदि आपको आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों का—
हजारों बार का परीक्षित

अद्भुत चमत्कार

अपूर्व उत्कृष्ट आविष्कार

देखना हो तो निम्न पते से ही प्रत्येक रोगों का इंजेक्शन मंगाकर धनव यश के भागी बनें

आयुर्वेदिक कुनैन इञ्जेक्शन

केवल १ इंजेक्शन में मलेरिया लापता हो जाता है। एलोपैथी कुनैन से विशेष लाभदायक है। इसे बड़े २ वैद्य डाक्टरों ने आजमाकर मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। परीक्षा प्रार्थनीय है।

दी आयुर्वेदिक इञ्जेक्शन सप्लाई एजेन्सी, मंगलगढ़ (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युर्वेद बनाम व्यवसायी–

। औषधियों के अभाव के कारण कहिये
। भारतवर्ष में राजनैतिक जाग्रति के साथ २
। की चिकित्सा-प्रणाली के प्रति जनता का
। कहिये, चाहे आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान की
कता, सस्तापन एवं उपादेयता कहिये, कुछ भी
हो इधर कुछ समय में आयुर्वेदीय औषधियों
ांग व खपत पर्याप्त बढ़ गई है। प्राचीन एवं
णिक फार्मेसियों का उत्पादन बढ़ जाने पर भी
की पूर्ति न हो सकने के कारण नवीन फार्मे-
की बाढ़ सी आगई है। इस अवसर से लाभ
के लिये चतुर एवं दूरदर्शी धनाढ्य व्यवसायी
समें कूद पड़े हैं और औषधि-निर्माण का
साय चलाकर मनमाना रुपया पैदा कर रहे हैं।
वीन फार्मेसियों की बाढ़ ने आपस में प्रतिस्पर्धा
दा कर दी है। इधर बाजार में कमीशन की
बुरी तरह चल पड़ी है। विशेषतः औषधि-
साय में तो इसका अत्यधिक बोल-बाला है।
ग्राहक कमीशन के लिये आग्रह करता और
अनेकों फार्मेसियों का दृष्टान्त देता है, फलां
सी १२॥) प्रतिशत देती है, अमुक फार्मेसी २५)
शत देती है। लेकिन वे यह विचारने का कष्ट
करते कि किस फार्मेसी की दवा उत्तम है, गुणप्रद है, एवं विश्वस्त हैं और किसके दर उचित हैं। यदि कोई फार्मेसी १) की दवा का मूल्य १॥) रखकर २५) प्रतिशत कमीशन दे देती है तब भी उसे १=) मिल जाता है। अथवा कोई फार्मेसी किसी दवा के निर्माण में मूल्यवान द्रव्यों को न डालकर सस्ती दवा बनाकर अधिक कमीशन दे देती है तब भी वह लाभ में ही रहती है। अतएव हर चिकित्सक व रोगी को यह विचार करना चाहिये कि किस फार्मेसी की दवा श्रेष्ठ व विधिवत् बनी होने के कारण उत्तम प्रभावशाली है। थोड़े से पैसों की बचत कर निकम्मी दवा लेकर अपनी चिकित्सा को धक्का न लगावें। चिकित्सा-व्यवसाय मनुष्यों के जीवन से खिलवाड़ करना है। अतः निकम्मी औषधि रोगियों के गले उतार कर पाप के भागी न बनें। देशी औषधियों के प्रचार को बढ़ता देखकर अनेकों करोड़पति व्यवसायी इस व्यापार में कूद पड़े हैं। वे औषधि-निर्माण एवं चिकित्सा के नाम पर कुछ नहीं जानते, उनका मुख्य उद्देश्य पैसा पैदा करना होता है। वे अपने प्रचार-विभाग के बल पर मिट्टी को भी सोना प्रमाणित करने का साहस रखते है और जनता की आंखों में धूल झोंक कर पैसा बटोरते और आयुर्वेद की जड़ खोदते हैं।

❀ अभी समय है कि हम इस ओर ध्यान दें और देशी चिकित्सा-पद्धति के उन्नति-पथ में जो रोड़े बन रहे हैं उन्हें निकाल फेंके।

❀ चिकित्सकों को भी चाहिये कि वे औषधियों के मूल्य की ओर ध्यान न देते हुए उनके गुणों की ओर ध्यान दें तथा विश्वस्त फार्मेसी से ही औषधियां खरीदें।

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)
५० वर्ष पुरानी प्रामाणिक आयुर्वेदीय औषधियों की विश्वस्त निर्माणशाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

आयुर्वेद का सर्वोत्कृष्ट मासिक पत्र

भाग २३ अङ्क ७ दिसम्बर १६४८

—सम्पादक—

वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग

ज्वालाप्रसाद अग्रवाल B. Sc.

विषय-सूची

१–आयुर्वेद सूत्र ५२६

२–आनन्दप्रद आरोग्य का सूत्र ५३०

३–पंचकर्म तथा कल्प चिकित्सा पद्धति ५३३

४–बाल शोष (सूखा रोग) ५३७

५–खाज ५३८

६–अनन्त वात मस्तिष्क शूल ५४०

७–चमत्कारिक शास्त्रीय औषधें ५४२

८–समिति की रिपोर्ट का सारांश ५४४

९–नीम ५५४

१०–सर्व रोग हरो निम्बः ५५७

११–नीम के गुण और प्रयोग ५५८

१२–मधु संचय ५५३-५६६

- शीतला का टीका ५६३
- कस्तूरीकी परीक्षा ५६३
- सोड़ा वाटर ५६३
- बालों का व्यायाम ५६४
- मसालों के गुण दोष ५६५
- दांतों की रक्षा ५६६

१३–परीक्षित प्रयोग ५६७-७०

५६७–गृध्रसी की दवा, वातारि तैल, दमे की फकीरी दवा, विशूचिका पर, ५६८–न्यूमोनिया पर अकसीर, अनन्त वात हर योग। ५६९–सरल सिद्धयोग। ५७०–कृमि रोग पर, चर्म रोग पर, रक्त पित्त पर, श्वेत कुष्ठ पर, व्रणभेदक लेप, कण्डु नाशक लेप।

१४–आयुर्वेद जगत ५७१-७३

- हमारी वैद्य सभायें ५७१
- बांदा नगर में ५७१
- उतरोला क्षेत्र वैद्य सभा ५७२
- वैद्य सभा जबलपुर ५७२
- नारखी में वैद्य सम्मेलन ५७३
- बुन्देलखण्ड वैद्य हकीम परिषद ५७३
- औरैया (इटावा) वैद्य सभा ५७३
- आयुर्वेद मण्डल सांडी ५७३
- आगरा के वैद्यों की सरकार से प्रार्थना ५७३

१५–आयुर्वेदिक संस्थायें ५७४-७८

- श्री. ललितहरि आयुर्वेद कालेज पीलीभीत ५७४

—+—

निवेदन

सभी ग्राहकों से निवेदन है कि धन्वन्तरि के विषय में कुछ भी लिखते समय "व्यवस्थापक धन्वन्तरि विजयगढ़ जिला अलीगढ़"–पता लिखकर पृथक पत्र भेजें। औषधियों के आर्डर या उसके संबन्ध में लिखे पत्र में ही धन्वन्तरि के विषय में लिख देने से उत्तर देने में विलम्ब हो जाता है। अतएव इस निवेदन पर आशा है आप ध्यान रखेंगे।

—व्यवस्थापक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग २३ अङ्क ७ | धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ का मुखपत्र | दिसम्बर सन १९४८ ई०

आयुर्वेद-सूत्र

विपरीतगुणैर्देशमात्राकालोपपादितैः ।
भैषजैर्विनिवर्तन्ते विकाराः साध्यसंमताः ॥

देश, मात्रा, काल आदि को देखकर प्रयुक्त कराई हुई विपरीत गुण-वाली औषध से साध्य विकार निवृत्त होते हैं। यहां पर देश, मात्रा काल, ये उपलक्षण मात्र हैं। अर्थात् इनके अतिरिक्त चिकित्सा में दोष, बल, विकार, सत्व, सात्म्य, औषध, जठराग्नि तथा वय (आयु) एवं प्रकृति की भी परीक्षा की जाती है। देश शब्द से भूमि एवं आतुर (रोगी) का ग्रहण होता है।

(महर्षि चरक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्दप्रद-आरोग्य का मूल स्रोत

ले०--श्री० पं० सोमदेव जी शर्मा सारस्वत साहित्यायुर्वेदाचार्य, A. M. S. पीलीभीत।

परम पिता परमेश्वर को सत, चित् और ❀ आनन्द से युक्त होने के कारण 'सच्चिदानन्द' कहा जाता है। जीव या पुरुष सत और चित् (चैतन्य) युक्त होने से सच्चित् कहा जाता है वह 'आनंद' से रहित है इसी कारण वह परमेश्वर से छोटा है और उस आनंद की प्राप्ति के लिये भटकता है और आनंद को प्राप्त करने की स्वाभाविक इच्छा उस जीव (प्राणी) को बनी रहती है।

उपर्युक्त आनंद को हम स्थूल रूप से दो प्रकार का मान सकते हैं—

(१) परम आनंद (परमानंद) (२) साधारण आनंद। (१) परम आनंद जीवात्मा का मुख्य उद्देश्य है। इसी परम आनंद को प्राप्त करना होता है। योगी एवं मुक्त पुरुष ही इसको प्राप्त कर सकते हैं जो कि अनेक जन्म के वेद-शास्त्रादि का अभ्यास, तप एवं योग की सहायता से ही प्राप्त हुआ करता है। इसके विषय में हम यहां पर विवेचन नहीं कर रहे हैं।

२-साधारण आनंद—

इस साधारण आनन्द को हम सुख नाम से भी पुकारते हैं, इसका अनुभव, थोड़ी अथवा अधिक मात्रा में सब प्राणियों को हुआ करता है परन्तु इसके अनुभव करते रहने के स्वभाव से प्राणी इसको प्रायः स्मरण नहीं रखता है। यदि यह अकस्मात् ही अथवा किसी बड़े दुख के अनुभव करने के पश्चात् सुख प्राप्त होता है तब प्राणी इस + सुख को भी स्मरण रखता है।

यह जानना आवश्यक है कि जीवन यात्रा में जहां ऐसा आनन्द (सुख) मिलता है वहां उसका विरोधी दुख भी साथ में लगा रहता है, अथवा यह कहना चाहिये कि यह सम्पूर्ण सृष्टि ही द्वन्दमयी है। जैसे दिन-रात, प्रकाश-अन्धकार, उत्पत्ति विनाश, ज्ञान-अज्ञान, लघु गुरू स्थूल-कृश आदि, तब फिर सुख-दुख का द्वन्द भी संसार में सदैव रहेगा और यह जैसा कि किसी कवि ने भी कहा है—

चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च।

आनन्द या सुख का लक्षण

आत्मा को अपने अनुकूल प्रतीत होने वाला सुख (आनन्द) कहा जाता है। तथा—

आत्मनोऽनुकूल वेदनीयं सुखम्।

अपने अनुकूल प्रतीत होने के कारण ही प्रत्येक जीवात्मा (प्राणी) इसको प्राप्त करने के लिये शरीर मन वाणी से तथा शक्तिसे❀चेष्टा करता रहता है।

आनन्द अथवा सुख का मूल स्रोत—

सच पूछा जाय तो ऐसा वास्तविक आनन्द (सुख) जो सुलभ भी हो, केवल आरोग्य (स्वास्थ्य) द्वारा ही प्राप्त हो सकता है. इस आरोग्य को धर्म÷

❀ 'आनंद' युक्त होने से परमेश्वर को आनन्द-स्वरूप कहते हैं, क्योंकि मुक्त पुरुषों को और धर्मात्मा प्राणियों को वह परमेश्वर आनन्द प्रदान कर आनंद युक्त करता है।

+सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते।

❀सुखार्थाः सर्व भूतानां मता सर्वाः प्रवृत्तयः। (चरक० सू० अ० २८-३४)

÷धर्मार्थ काम मोक्षाणामारोग्य मूल मुत्तमम्। (चरक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम और मोक्ष का भी कारण माना जाता है, ये इस महत्व पूर्ण आरोग्य (स्वास्थ्य) को प्राप्त उसकी रक्षा करने के लिये प्रत्येक पुरुष को यत्न करना चाहिये, इसमें सब देशों के त पुरुष सहमत हैं।

स आरोग्य को प्राप्त करने के अनेक उपाय, कारों ने बताये हैं, परन्तु उन सबमें सर्वोत्तम सर्वसुलभ उपाय व्यायाम-क्रिया है। इस ाम द्वारा किस प्रकार आरोग्य प्राप्त होता है इसी का हम इस लेख में विवेचन करते हैं।

ग्य का शत्रु आलस्य--

मानव जीवन में प्राप्त होने वाले आनन्द (सुख) तथा आरोग्य का प्रधान शत्रु मनुष्य के अपने में ही निवासकरने वाला आलस्य +है, जिसका पर ऐसा बुरा प्रभाव पड़ता है कि वह भारी होने लगता है और उसकी कार्य करने की ान शक्ति भी क्षीण हो जाती है जिसके परिणाम मनुष्य हतोत्साह होकर निष्क्रिय (खाली) रहने का स्वभाव का बन जाता है जिससे कुछ पश्चात् उस मनुष्य की जठराग्नि मन्द हो है और इस मन्दाग्नि❀ के होने से उदर के रोग तथा मेद (चर्बी) की वृद्धि होने लगती जससे सम्पूर्ण शरीर का संगठन ठीक-ठीक न से वह बेडौल तथा कान्त-हीन होजाता है यह रोगों से आक्रान्त रहने के कारण सदैव ातुर बना रहता है। इसका फल यह होता है सब अपना ही जीवन ऐसे मनुष्यों को भार प्रतीत होते रहने से जीवन का आनन्द (सुख) में भी प्राप्त नहीं होता है। इस लिये आनन्द प्राप्त करने में रुकावट डालने वाले इस शत्रु स्वरूप आलस्य को सर्व प्रथम नष्ट करना आवश्यक है।

आलस्य का नाशक व्यायाम -

इस आलस्य को नष्ट करने की शक्ति व्यायाम क्रिया में विद्यमान है क्योंकि कि × व्यायाम का अर्थ शरीर से परिश्रम कराने वाला कार्य है जो कि आलस्य का प्रबल विरोधी है इस कारण व्यायाम करने से तुरन्त ही आलस्य नष्ट होजाता है जिससे मनुष्य की कार्य करने की सामर्थ एवं रुचि बढ़ती है और शरीर की जनठराग्नि तीव्र होने से भूख लगने लगती है चर्बी कम होती जाती है जिससे शरीर का संगठन❀दृढ़ एवं ठीक होता जाता है इस लिये व्यायाम को आरोग्य का मूल स्रोत कहा जाता है।

यद्यपि व्यायाम क्रिया आरोग्य का प्रधान एवं मूल स्रोत होने से प्राणियों के लिये लाभप्रद और आवश्यक है तथापि उसको उचित मात्रा से अधिक करने से ÷तृष्णा, राजयक्ष्मा, प्रतमक श्वासरोग, रक्तपित्त, थकावट, ग्लानि, खांसी, ज्वर और वमन आदि रोग उत्पन्न होजाते हैं। इसलिये निम्न-लिखित प्रकार से उचित मात्रा में ही मनुष्यों को व्यायाम करना चाहिए।

व्यायाम की उचित ❀ मात्रा-

घृत दुग्ध आदि पौष्टिक भोजन करने वाले

आलस्य एव मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
-रोगाः सर्वेऽपिमन्देऽग्नौ सुतरा मुदराणितु
(वाग्भट)
दरायुपजायतो मन्दाग्नीनां विशेषतः (चरक)

× शरीरायासजनकं कर्म व्यायाम उच्यते।
(अष्टांग संग्रह. सूत्र. अ. ३)

❀ लाघवं कर्म सामर्थ्यं दीप्तोऽग्निर्मेदसः क्षयः।
विभक्तघनगात्रत्वं व्यायामदुपजायते॥
(अष्टांगहृदय, अ० २)

÷ तृष्णा क्षयः प्रतमको रक्तपित्तं श्रमः क्लमः।
अतिव्यायामतः कासो, ज्वरश्छर्दिश्च जायते॥
(अष्टांग हृदय, सूत्र २। १३)

❀अर्धशक्त्यानिषेव्यस्तु बलिभिः स्निग्धभोजिभिः।
शीतकाले बसन्ते च, मन्दमेव ततोऽन्यदा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलवान पुरुषों को शीतकाल (हेमन्त और शिशिर ऋतु) तथा बसन्त ऋतु के ६ मास के समय में अपनी×आधी शक्ति से व्यायाम करना चाहिए और ग्रीष्म वर्षा तथा शरद ऋतु के ६ मास के समय थोड़ा सा व्यायाम करना चाहिये। व्यायाम करने के विषय में अवस्था (बालकपन युवावस्था तथा वृद्धावस्था) बल, शारीरिक दशा, देश, समय तथा भोजन आदि को भी ध्यान में रखना चाहिए। अन्यथा ऊपर लिखे हुए रोग उत्पन्न होकर जीवन के आनन्द को भङ्ग कर देंगे। यथा

वयो बलशरीराणि देशकालाशनानि च।
समीक्ष्य कुर्याद् व्यायाममन्यथा रोगमाप्नुयात्॥
(सुश्रुत० चि०)

व्यायाम का * निषेध-

निम्नलिखित प्रकार के मनुष्यों को व्यायाम करना निषिद्ध माना गया है—

वायु के रोगी, पित्त के रोगी अथवा वायुपित्त के रोगी बालक, वृद्ध और अजीर्ण के रोगी को व्यायाम नहीं करना चाहिए।

व्यायाम के उपरांत कर्तव्य-

व्यायाम करने से वायु की वृद्धि होजाने से शरीर में रूक्षता उत्पन्न होजाती है इसलिए व्यायाम करने के उपरांत शरीर का सुख पूर्वक मर्दन करना चाहिए। शरीर के मर्दन करने से शरीर में कोई रोग उत्पन्न नहीं होता है, व्यायाम करने वाले को सदैव घृत दुग्ध युक्त स्निग्ध भोजन करना चाहिये।

छोटे बालक तथा वृद्ध पुरुष घूम-फिर कर व्यायाम का फल पा सकते हैं।

व्यायाम के प्रकार-

यद्यपि देश और समय के भेद से व्यायाम, कई प्रकार का माना गया है। जैसे दण्ड-बैठक, मुग्दर घुमाना आदि भारतीय व्यायाम यूरोप की सैण्डो पद्धति का व्यायाम आदि परन्तु सबका उद्देश्य शरीर के विविध अङ्गों की मांस-पेशियों को पुष्ट करना होता है जिससे शरीर दृढ़ एवं बलिष्ट होने के साथ ही सुन्दर तथा सुडौल भी होजाता है। *योग की पद्धति में प्रसिद्ध आसन भी एक प्रकार के शारीरिक व्यायाम ही हैं जो शरीर को पुष्ट करने के शरीर को पुष्ट करने के अतिरिक्त विविध प्रकार के शारीरिक रोगों को भी नष्ट कर देते हैं। प्रातःभ्रमण करना तैरना आदि भी प्रत्येक अवस्था और स्थान में होसकने वाला लाभदायक व्यायाम है जिससे शरीर को आनन्द प्राप्त होता है।

उपसंहार-

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि व्यायाम प्राणी मात्र के लिये परमोपयोगी है इसीलिये प्राचीन महर्षियों ने इसको दिनचर्य्या में सम्मिलित कर दिया है और इसको जीवन पर्यन्त उचित मात्रा में करते रहने से यह व्यायाम आनन्ददायक आरोग्य (स्वास्थ्य) प्राणियों को प्रदान कर, दीर्घजीवी बनाने में समर्थ होता है। अतएव वह आनंदप्रद आरोग्य का मूल स्रोत माना जाता है।

× आधी शक्ति व्यायाम करने पर जब श्वास मुख द्वारा चलना प्रारंभ हो तो आधी शक्ति व्यय होजाने को सूचित करता है इस समय ललाट (माथा) नाक शरीर में हाथ पैर की सन्धियों और बगल में पसीना आजाता है यथा—

हृदिस्थानस्थितोवायुर्यदावक्त्र प्रपद्यते।
व्यायाम कुर्वतो जन्तोस्तद्वालार्धस्य लक्षणम्॥
(सुश्रुत. चि. २४)
ललाटदेशे नासायां गात्र सन्धिसुकक्षयोः।
स्वेदः संजायते यस्य बलार्धं तद्विनिर्दिशेत्॥

* वातपित्तामयी वालो वृद्धोऽजीर्णी च तंत्यजेत्।
(अ० हृ० सूत्र २।)

* व्यायामस्विन्नगात्रस्य पद्भ्यामुद्वर्तितस्य च।
व्याधयो नोप सर्पन्ति सिंहं क्षुद्रमृगा इव॥
(सुश्रुत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचकर्म तथा कल्प-चिकित्सा पद्धति

लेखक—आयुर्वेद-रत्न, कविराज पं० हर्षुल जी मिश्र
'प्रवीण' बी. ए., बैतूल।

[गतांक से आगे]

...रेचन कर्म—

...स्नेहन, स्वेदन और वमन करा चुका हो ऐसे ...णी को विरेचन कराना हितकर है। कफ रोगी ...बिना वमन कराये कदापि विरेचन नहीं कराना ...चाहिये। अन्यथा ऊर्ध्वाङ्गों में जमा हुआ कफ विरे-...चन के प्रभाव से पक्वाशय में पहुंच कर जठराग्नि को ...मन्द कर देता है, वमन विरेचन से दोषों का स्थायी ...रूप से शोधन और शमन होता है। लंघन और ...पाचन औषधियों से बढ़े हुए दोष दबकर पुनः कुपित ...हो जाते हैं परन्तु वमन और विरेचन से बढ़े हुए ...दोषों का स्थायी रूप से नाश होजाता है। यही ...कारण है कि वमन और विरेचन पंचकर्म के प्रधान ...अङ्ग है।

...विरेचन कर्म के लिये—

कोष्ठानुसार विवेचन

विरेचन के लिये औषधि की कल्पना करते ...समय मृदु, मध्य तथा क्रूरकोष्ठ का विवेचन करना अत्यन्त आवश्यक है। बिना कोष्ठ विवेचन के विरे-चन औषधि का प्रयोग करना खतरे से खाली नहीं है। पित्त प्रकृति के रोगी का कोष्ठ मृदु होता है, कफ प्रकृति के रोगी का मध्य और वातप्रकृति के रोगी का क्रूर कोष्ठ होता है। मृदु कोष्ठ वाले रोगी को गरम दूध ही जुलाब का काम देदेता है। मध्य कोष्ठ वाले रोगी को भी मृदु विरेचन से ही उत्तम रेचन हो जाता है। केवल क्रूरकोष्ठी को ही तीव्र रेचन की आवश्यकता होती है। इसलिये मृदु, मध्य तथा क्रूर कोष्ठ के अनुसार विरेचन औषधि की क्रमशः अल्प, मध्य तथा तीव्र मात्रा प्रयोग करना चाहिये। साथ ही मृदु, मध्य तथा तीव्र विरेचन औषधि की भी व्यवस्था करनी चाहिये। कोष्ठानुसार औषधि और मात्रा की उचित निर्णय किये बिना यदि विरे-चन औषधियों का प्रयोग किया गया तो विरेचन का अतियोग अथवा हीनयोग होने का भय रहता है।

विरेचन का अतियोग —

अधिक विरेचन होजाने पर, कोष्ठ विष्ठा और दोष जनित मलों से रहित हो जाता है उस समय मांस धोवन के समान जब गुदा द्वारा निक-लने लगता है इस अवस्था में भी यदि वेगों के बन्द करने का समुचित और सफल उपाय नहीं किया जा सका तो शरीर की धातुयें गुदा द्वारा बाहर निकलने लगती हैं। गुदा बाहर निकल आती है, रोगी की आंखें अन्दर घुस जाती है और वह शिथिल और संज्ञा हीन होजाता है। उठने बैठने की क्षमता न होने पर खाट पर पड़े २ ही मल विसर्जन करता जाता है। तृष्णा, भ्रम, प्रलाप बेहोशी और मृत्यु विरेचन के अतियोग के उपद्रव हैं।

विरेचन का हीन योग—

हृदय और पेट में भारीपन, अरुचि, वमन, कण्डु, दाह, मलावरोध, वातावरोध, घबराहट आदि लक्षण विरेचन के हीन होने पर होते हैं। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था में स्नेह-युक्त तीव्र विरेचन अथवा वस्ति-कर्म द्वारा मलाशय स्थित मल को तुरन्त बाहर निकालना ही एक मात्र क्रिया तथा लाभप्रद उपाय है। उपद्रव रहित विरेचन का हीन योग हो तो रोगी को हलका भोजन करा कर दूसरे दिन पुनः रेचक द्रव्य देकर सम्यक् विरेचन करा देना चाहिये।

स्निग्ध और रूक्ष विरेचनों का प्रयोग--

यों तो स्नेहन और स्वेदन के बिना शोधन-कर्म करना वैद्यक-शास्त्र में अनुचित कहा गया है परन्तु कुछ ऐसे रोग हैं, जहां बिना स्वेदन के ही विरेचन कराना पड़ता है। विष जनित रोगों में, रक्त दोष में एरण्ड तेल मिश्रित विरेचन बिना स्नेहन वा स्वेदन क्रिया के दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, कण्डू रोगी कुष्टी, शोथरोगी, विसर्प रोगी, पाण्डु रोगी, कामला रोगी तथा प्रमेह रोगी को किंचित स्निग्ध विरेचन देना ही उपयुक्त है।

विरेचनार्थ निशोथ कल्प -

निशोथ की जड़ दो प्रकार की होती है—(१) स्याम और (२) लाल। इसमें लालवर्ण की जड़ सुकुमार प्रकृति के रोगी को सुख पूर्वक विरेचन कराने में उपयोग करना चाहिये और क्रूर कोष्ठ वाले रोगी के लिये स्याम निशोथ का उपयोग करना चाहिये।

दोषों के अनुसार निशोथ का प्रयोग-

पित्ताधिक्य में निशोथ का चूर्ण द्राक्षा के गरम काढ़े में, कफाधिक्य में त्रिफला के काढ़े में घोलकर पिलावें। वाताधिक्य में निशोथ चूर्ण में समभाग सेंधा नमक मिलाकर गरम पानी के घूंट से फंकावें। निशोथ की मात्रा मृदु मध्य क्रूर कोष्ठानुसार क्रमशः ६ माशा से १ तोला तथा २ तोला तक होती है।

ऋतुओं के अनुसार-

—निशोथ के योग—

वर्षा ऋतु में--

निशोथ, इन्द्रजौ, पीपल, सोंठ

—सबका चूर्ण १ तोला से २ तोला तक की मात्रा में शहद और उष्ण जल के अनुपान में देना चाहिये।

शरद ऋतु में--

निशोथ धमासा, नेत्रबाला, मिश्री, नागरमोथा और चन्दन १-१ तोला

—सबको चूर्ण कर १ तोला से २ तोला की मात्रा में द्राक्षा के काढ़े के साथ सेवन कराना चाहिये।

बसंत ऋतु में

निशोथ चूर्ण ६ माशा से १ तोला की मात्रा में शहद के साथ सेवन कराना चाहिये।

शिशिर ऋतु में—

निशोथ और सोंठ के समभाग चूर्ण को १ तोला से २ तोला की मात्रा में मधु और उष्णोदक के साथ पिलाना चाहिये।

निशोथ कल्प के अन्य योग

१-निशोथ, सोंठ और सेंधा नमक का समभाग चूर्ण २ तोला से ३ तोला की मात्रा में प्रयोग करने से रेचन द्वारा वातरोगी के दोषों का सम्यक् शोधन और शमन होता है। साधारण अवस्था में मलावरोध (कब्ज) दूर करने के लिये उपर्युक्त चूर्ण की मात्रा ६ माशा से १ तोला तक होनी चाहिये।

२-हरड़ बहेड़ा आमला
जवाखार पीपल वायबिडंग

—समान भाग लेकर चूर्ण करलें।

—इस चूर्ण से आधा निशोथ का चूर्ण मिलावें समस्त चूर्ण को खरल में डाल एकजवी करलें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-१ तोला से २ तोला तक ।

त—मधु और घृत । गुण—यह विरेचन, ल्म, प्लीहा, उदररोग कास, हलीमक, कफ-त से उत्पन्न रोगों पर लाभकारी है ।

शोथ, इन्द्रजौ पीपल और सोंठ, सबको भाग लेकर महीन चूर्ण करलें ।

—१ तोला से २ तोला तक ।

त—द्राक्षा क्वाथ अथवा द्राक्षारस और मधु । -यह योग मलावरोध दूर करने में तथा सम-त दोषों के शमन में समर्थ है । वर्षाऋतु में स योग को विशेष रूप से प्रयोग करना ाहिये ।

नशोथ चूर्ण १ छटांक, हरड़, धनियां और की जड़ चार २ छटांक । इन सबका चूर्ण बना हद के साथ २॥ से ५ तोला की मात्रा में बनालें । विरेचनार्थ एक बटक रोगी की अव-अनुसार सेवन करावें । सुकुमार व्यक्तियों के मृदु विरेचन है ।

ाल निशोथ और श्याम निशोथ का काढ़ा र, गौघृत एक सेर । सबको मिलाकर घृतपाक से मध्य पाक कर और छान कर चौड़े मुंह नदार पात्र में भरकर रखदें । विरेचनार्थ ४ तोला तक रोगी को पिलावें । यह घृत मृदु क है । सुकुमार व्यक्तियों के लिये उपयोगी है ।

तास विरेचन कल्प

अमलतास निर्विकार और मृदु-विरेचन है । ालक, बृद्ध, स्त्री, और सुकुमार प्रकृति के व्य-को विरेचन कराने में उपयुक्त माना गया है । हृद्रोग, वातरक्त, उदावर्त, क्षतरोग, राजयक्ष्मा में अमलतास का विरेचन उत्तम है ।

तास के विरेचक योग-

अमलतास के २॥ तोला गूदे को १० तोला द्राक्षा स वा क्वाथ में घोल कर विरेचनार्थ प्रयोग चाहिए ।

बच्चों को उपर्युक्त मात्रा से आधी तथा चौथाई औषधि देनी चाहिये ।

अमलतास की गिरी हुई हरी फलियों को छाया में सुखा कर, उसके गूदे का महीन चूर्ण करलें । ३ माशा चूर्ण शहद में चटावें ।

गुण—मलावरोध, उदर विकार, शीतपित्त रक्तदोष आदि पर हितकारी है ।

दन्ती विरेचन कल्प-

दन्ती, मेढ़ा सिंगी तथा अजवाइन समभाग ले, क्वाथ सिद्ध करलें फिर इस क्वाथ में शहद और घी मिला कर सेवन कराने से वात और पित्त के रोगों का क्रमशः शमन हो जाता है ।

दन्ती ऽ। अजवाइन ऽ। दोनों का सिद्ध क्वाथ १ सेर । द्रव्य क्वाथ में उत्तम गुड़ २० तो० और गौ घृत २० तोला मिलाकर पुनः पाक करे । जब समस्त औषधियों का अवलेह बन जाय तब उतना ही शहद मिलाकर अवलेह को अग्नि पर से उतार ले । इस अवलेह की मात्रा—२॥ तोला से ५ तोला । बच्चों को १ तोला से २ तोला । गुण—वातज्वर, पित्तज्वर, तृष्णा आदि में विरेचनार्थ प्रयोग करें । यह मृदु विरेचन है ।

दन्ती के १ तोला चूर्ण में १ तोला गुड़ मिला बटक बना ले । इस बटक को गरम जल से पाण्डु और शोथ रोग में दें तो उत्तम विरेचन होकर रोगों का शमन होता है ।

निशोथ १ सेर दन्ती १ सेर दोनों का सिद्ध क्वाथ ऽ४ सेर, पीपल, मैनफल, चित्रक, अमलतास का चूर्ण १०—१० तोला, गुड़ १ सेर सब द्रव्यों को स्निग्ध की हुई चिकनी हांडी या बरनी में भर दें और धान्य की राशि में इस हांडी को, कपड़-मिट्टी से मुंह बन्द करके रखदें । २१ दिन के बाद इस अरिष्ट को निकाल कर छान लें और स्वच्छ शीशियों में भर कर रख दें । विरेचनार्थ इस अरिष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को २॥ तोला से ५ तोला मात्रा में सेवन करावे। इससे सब प्रकार के रोगों में सुख-पूर्वक विरेचन होता।

जयपाल बीज विरेचन कल्प--

जयपाल एक उप-बिष है, किन्तु इसे भेंस के गोबर में उबाल कर इसके बीजों के बीच से जीभ को अलग कर इसे शुद्ध कर लेते हैं। शुद्ध जयपाल रसादिकों के संयोग से विरेचनार्थ प्रयोग किया जाता है। हम जयपाल के नीचे का प्रसिद्ध प्रयोग देते हैं, जो सभी प्रकार के रोगों में अल्पाधिक मात्रा में सफलता पूर्वक प्रयोग किये जाते हैं।

इच्छाभेदी रस--

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक को समभाग कज्जली २ तोला, काली मिर्च १ तो० सोंठ १ तोला शुद्ध जयपाल बीज ४ तोला। सबको चित्रकादि काथ की भावना देकर १ प्रहर तक खरल कर दो-दो रत्ती की गोलियां बनालें और १ गोली शीतल जल के साथ विरेचनार्थ सेवन करावें। बच्चों को चौथाई गोली से आधी गोली तक देना चाहिये।

नाराच रस—

पारा गंधक की सम भाग कज्जली २ तोला, सोंठ मिरच, पीपल; शुद्ध सुहागा एक २ तोला जयपाल शुद्ध ६ तोला। सबको खरल में डाल कर एक प्रहर तक खूब मर्दन करे फिर एक रत्ती से २ रत्ती मात्रा में शीतल जल के अनुपान में, सब प्रकार के रोगों में विरेचनार्थ सेवन करावे। बच्चों को चौथा रत्ती से आधी रत्ती तक देना चाहिये।

सनाय कल्प—

सनाय की पत्तियों का चूर्ण ३ माशा शहद २ तोला जल ५ तोला। सबको घोलकर विरेचना सब प्रकार के रोगों में सेवन करावें।

सनाय चूर्ण आध पाव, लाल हरड़, सौंफ बायबिडङ्ग, अजवाइन, गुलाब के फू

—ये ५-५ तोला।

बिधि—सबका महीन चूर्ण करलें। मात्रा—ब को २ माशा से ४ माशा तक, बड़ों को ६ मा से २ तोला तक, विरेचनार्थ प्रयोग करावें अनुपान गरम जल और शहद।

विरेचन में अपथ्य—

वायु में घूमना, शीतल जल पीना, तेल मर्द गरिष्ट भोजन, व्यायाम, मैथुन आदि मिथ्या आहा बिहार विरेचित व्यक्ति को कदापि न करना चाहिये

विरेचन में पथ्य—

शाली चावल, साठी चावल, सवां और मू की घृत युक्त यवागु, कबूतर तथा मूर्गे का मांस- साबूदाना, दही भात, तक्र विरेचन व्यक्ति के लि सुख देने वाले पथ्य हैं। (क्रमशः

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ की निर्मित
खाजरिपु
खाज खुजली को लगाते लगाते ठीक कर देता है
आपके यहां के दूकानदारों के यहां मिल जायगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालशोष (सूखा रोग)

लेखक श्री० पं० तेजोनारायण जी बाजपेयी वैद्य, मैगलगञ्ज।

धन्वन्तरि भाग २३ अङ्क ४ में पृष्ठ ३८० पर ी लेख सूखा-रोग पर दिया गया है वह न्तिपूर्ण है। लेखक महोदय ने बालशोष कारणों पर विशेष ध्यान नहीं दिया और न उन्हें करने की औषधि व्यवस्था ही लिखी। मैं यह लोचना इसलिये नहीं कर रहा हूं कि अपनी द्वत्ता दिखाकर लेखक को परास्त करूं किन्तु नता के अहित के भय से अपने प्रिय लेखक को ावनी देना परम कर्तव्य समझता हूं।

आज जनता में कुछ पहिली अविद्या के कारण ी ही अन्ध-विश्वास भरा हुआ है। वह इस रोग निवारणार्थ नाउतों के पास जाकर झाड़-फूंक ाती है, उनके बताने पर धोबी का पाटा तथा ड़ियों पर बच्चे को नहलाती हैं शयानों के पास कर पीठ में बिरवा लगवाकर कीड़े निकलवाती ा मेहतरों के यहां जाकर कान से कीड़े निकल-ती हैं। यहां तक अनेक प्रकार के टोना-टम्बरों को ती इधर-उधर भटकती रहती हैं और अन्त में ने प्रिय बच्चे को पृथ्वी माता की गोद में सदा लिये सुलाकर ही विश्राम लेती हैं। अतः ऐसे लेख उनकी भावना में सूखे वृक्ष में पानी डालने का काम करेंगे और जो लोग अब समझने लगे हैं वह आयुर्वेद की मजाक उड़ायेंगे और कहेंगे जब वैद्य ही ऐसे विचार के हैं तब और लोगों की क्या गिनती है। लेखक महोदय ने लिखा है कि विशेषतः सूखा रोग के कीड़े पृष्ठभाग की रीढ़ में चिपटे रहकर उसे जरजर बना डालते हैं। फिर चिकित्सा में लिखने लगे पान में ढाई पत्ते मकोई के चवाकर पीक को पीठ पर मलने से कीड़े निकल जाते हैं। लेख से यह ज्ञात होता है कि पाचन-शक्ति कम होजानी है परन्तु चिकित्सा में पचनेन्द्रिय को बलवती बनाने का कोई ध्यान ही नहीं दिया गया।

मैंने करीब १० वर्ष से इस रोग पर विशेष ध्यान देकर काम किया और ६० प्रतिशत सफलता मिली। इसलिये इन योगों को बता देना चाहता हूं जिससे जनता अपना तथा अपने बच्चों का कष्ट दूर कर सके। जिस तरह शोष रोग जवान मनुष्यों को हो जाता है उसी तरह बालकों को भी शोषरोग हो जाता है तभी इसको बालशोष कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों का मुख्य कारण दुरपच आहार ही है-

बालक की माता जब अपथ्य करती है और बच्चा उसका दूध पीता है तब बालकों की पाचन-शक्ति का ह्रास हो जाता है। रस न बनने से खून कम हो जाता है. धीरे २ बच्चा कमजोर होता जाता है। दस्त आदि व्याधियां उपस्थित हो जाती हैं। विशेष कर दांत निकलने के समय जब कैलशियम बढ़ना चाहिए कैलशियम कम होजाता है। अतः सर्व-प्रथम माता के पथ्य का विशेष ध्यान दिया जाय, दूसरे सफाई की भी बहुत आवश्यकता है, बच्चे की सफाई नियमित करना चाहिये।

इन दो नियमों का पालन करने से यह रोग कभी नहीं हो सकता, इसीलिए तो पढ़ी लिखी गृहस्थी में यह रोग कम होता है।

द्वितीयावस्था में—

औषधियों की आवश्यकता हो उस समय यह औषधियां सेवन कराना चाहिये।

सुहागा चौकिया फूला	४ भाग
मुक्ता शुक्ति भस्म	२ भाग
कपर्द भस्म	२ भाग
शृङ्ग भस्म	२ भाग
स्वर्ण मालिती बसंत	२ भाग
जहरमोहरा पिष्टी	२ भाग
माण्डूर भस्म	१ भाग

विधि—प्रातःसायं १-१ रत्ती की मात्रा से मां के दूध से दें। दुपहर में बालबन्धु अर्क रस तन्त्रसारोक्त मात्रानुसार दें।

चन्दनादि तथा लाक्षादि तैल की मालिश करावें इस वर्ष हमने गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग पृष्ठ ६५ पर लिखित गोलियां सुबह शाम बालबन्धु अर्क के साथ दोपहर में और गु० सिद्ध प्र० प्रथम भाग पृष्ठ १६५ पर लिखित तैल मालिश में दिया। इस साल का रिकार्ड ६५ प्रतिशत सफल रहा।

धन्वन्तरि कार्यालय की 'कुमार कल्याण घुटी' भी चमत्कारिक लाभ दिखाती है।

खाज : लेखक- श्री० राजेन्द्र कुमार जी शास्त्री।

आजकल जिधर देखिये उधर ही खाज का रोग भयंकर रूप से फैला हुआ दिखाई देता है। अनुमान ऐसा है कि ८० प्रतिशत आबाल वृद्ध इस व्याधि से पीड़ित पाये जाते हैं। वैसे यह रोग नया नहीं है लेकिन अभी थोड़े दिनों से इसकी बहुत ही अधिकता होगई है। ग्रामों में जहां जल वायु नगरों की अपेक्षा अधिक स्वच्छ होता है-वहां भी इसका साम्राज्य है। ग्रामीण लोग जो वस्तुयें पहले प्रयोग में लाते थे वे ही सब अब भी व्यवहार में लाते हैं, प्राकृतिक वस्तुयें भी वे ही हैं जो पूर्व थी, वही सूर्य की उज्वल धूप, चन्द्रमा की वही प्रशान्त धवल चांदनी, वही त्रिविध शरीर के झोंके, वही भगवती वसुन्धरा फिर एसा प्रबल कारण कौनसा है जिससे यह खाज का पापमय रोग प्रकीर्ण होकर नर-नारायण को आक्रान्त कर पीड़ित कर रहा है? बिना कारण के तो कभी कार्य की उत्पत्ति होती ही नहीं।

आयुर्वेद ने खाज को अठारह प्रकार के कुष्ठों में परिगणित किया है। अठारह प्रकार के कुष्ठों में भी सात महा कुष्ठ माने हैं और ग्यारह साधारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…। है तो यह रोग साधारण कुष्ठों में, पर इसकी …धारणता किसी भी खाज के रोगी से सहन …हीं की जा सकती है वही इसका ठीक-ठीक …नुभव कर सकते हैं जिन्हें कभी इस रोग से …म पड़ा है।

…ाज के कारण—

…विरुद्ध आहार-विहार पतली चिकनी वस्तु …रण, मलमूत्रावरोध अग्नि-तापन, विशुद्ध भोजन, …प में फिरना, श्रम की विकलता पर तुरन्त जल-…न करना, अजीर्ण पर भोजन करना, वमन …रेचन पर कुपथ्य—नवीन जलपान, दही, मछली, …टाई नमक, मूली, तिल, गुड़ और पिसा हुआ …न्न, दिन को सोना आदि २ इसके प्रधान कारण …ायुर्वेद ने बतलाये हैं। उपरोक्त इन्हीं कारणों से …ाज की उत्पत्ति सम्भव है। मनुष्य को कुपथ्य …रते समय कभी भी पता नहीं चलता कि वह क्या …र रहा है। किन्तु जब दोष विकृत होकर रोग …प में प्रत्यक्ष होते हैं तब कारण का पता चलता है।

…ाज के लक्षण—

शरीर की त्वचा पर छोटी २ लाल, खुजली …क फुंसियां निकलती हैं, कुछ फुंसियां सफेद रंग …ी होती हैं, मसलने पर उनमें केवल सफेद पानी …ा निकलता है, और कुछ लाल रंग की दाह युक्त …ती हैं। इनमें से एक को पका खाज और दूसरी …ो सूखी खाज कहा जाता है। कभी-कभी तो …ुंसियां इतनी भयंकर रूप धारण कर लेती हैं कि …ोगी दाह से जलने और रोने लगता है।

…ाज संक्रामक भी है-

प्राय: आजकल जो अधिकता इस रोग की …िखाई देरही है, वह अधिकांश में एक दूसरे से …संक्रमित होकर ही परिव्याप्त हुई है, खाज वाले रोगी …के वस्त्र, उसके झूठे पात्र खाज के रोगी का चिर …संसर्गादि हैं।

खाज की चिकित्सा—

जीरा	३ तोला
सिन्दूर	१५ तोला

—कड़वे तेल में पीसकर लेप करने से खाज नष्ट हो जाती है।

सेंधा नमक	पंवार के बीज
सरसों	पीपल

—उपरोक्त सब वस्तुयें समान मात्रा में लेकर कांजी में पीस लीजिये और फिर खाज पर लेप कर लीजिये। खाज चली जायगी।

हल्दी,	आंवलासार गन्धक
कलिहारी की जड़,	लाख
त्रिफला	मजीठ

—ऊपर लिखी हुई सब चीजों को पीसकर धूप में उष्ण करलें। पुन: खाज की फुंसियों पर लेप करलें। खाज नहीं रहेगी।

नीला थोथा	३ माशा
शुद्ध आमलासार गंधक	६ माशा

दोनों चीजों को लेकर पानी के साथ सूक्ष्म पीसकर गोली बनालें और फिर उस गोली को बारीक वस्त्र में बांध कर गेहूं के गूंदे हुये आटे में मिलालें और पश्चात गोली वाले आटे की बाटी बनाकर सेक डालें, अनन्तर उन बाटियों को घृत में तल लें अथवा शक्कर में मलीदा बनालें और उस मलीदे को नियम-पूर्वक नित्य पांच दिन तक सेवन करें तो खाज और अन्य सब शारीरिक रुधिर-विकार दूर हो जायंगे।

५—नीम के पानी से स्नान कर सूर्य की धूप में खुले शरीर रहने से भी खाज दूर हो जाती है, किन्तु समय अधिक लगता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनन्तवात मस्तिष्क शूल

लेखक-पं० खूबचन्द जी मिश्र वै० शा० मुण्डपुरा, सबलगढ़।

धन्वन्तरि के प्रेमी पाठकों को इस दुखदाई रोग का परिचय करा देना परमावश्यक है कि यह रोग किस प्रकार मानव-समाज में व्याप्त होकर असंख्य प्राणियों को नेत्र-हीन करके आजन्म दुखी बना देता है जो फिर कभी भी किसी चिकित्सा द्वारा हटाने से भी नहीं हटता। इस ओर आज तक किसी ने भी उचित ध्यान तक नहीं दिया।

निदान—

शोक करने तथा अधिक रोदन करने एवं चिन्तित रहने और जागने किंवा खट्टे, चरपरे और विदाही भोजनादि सेवन इत्यादि कारणों से विपरीतानुगामी प्रकुपित (वात-पित्त-कफादि) दोषों का विकार सौषुम्निक नाड़ी (spinal nerves) एवं मस्तिष्क त्रय के प्रधान केन्द्र 'सेतु' नाम के मुख्य स्थान में संचित होकर द्वादश वात-नाड़ियों द्वारा मस्तिष्क शिराजाल के तारतन्तु तथा दृष्टि नाड़ी Optic nerves और नेत्रीय पटल एवं नेत्र मंडल की रक्त-वाहिनियों में शोथ उत्पन्न कर देता है। जिससे मस्तिष्क, कनपटी, भौंह तथा आंखों में असह्य पीड़ा होने लगती है। जिससे कि अनन्त वात, अन्यतोवात और मस्तिष्क शूल इस प्रकार मस्तिष्क और चक्षु सम्बन्धी तीन प्रकार की व्याधियां पैदा होजाती हैं।

अनन्त वात

हनु और गंडस्थलीय शंखक समीप वर्ती (Temple nerves)नाड़ी में कथित विकार से संजात अपूर्ण दोषों के कारण हनुग्रह कम्प आदि व्याधियों के साथ २ नेत्रों में घोर वेदना होने लगती है जिससे आंखों में लालिमा होकर अभिष्यन्द और दाह आदि उपद्रव होने लगते हैं, जिसे 'अनन्त वात' रोग कहते हैं।

अन्यतो वात

पृष्ठवंश और नाड़ी के मध्य वाले उल्लिखित विकार से तथा अन्य वायु-विकारों से समुत्थित व्याधि के कारण कनपटी, भौंह और नेत्रमण्डल में भेदने सरीखी पीड़ा हो, कनीनिका पर सुर्खी होकर सफेदी आजाये जिससे थोड़ा दिखाई देने लगे बस इसी को नेत्र-रोग विशेषज्ञ 'अन्यतो वात' रोग कहते हैं इससे कुछ कालोपरान्त आंखें फूट जाती हैं जिससे मनुष्य अन्धा होजाता है।

मस्तिष्क शूल--

शिर नेत्राऽभिघातेन भारमुद्वहनेन च।
नाड्यां वात प्रकोपेन वातातपनिसेवनैः॥

सम्पीड्य मूर्द्धासकला मघोरा,
शूलं सुतीव्रं प्रकरोति कम्पम्।

नेत्रास्तु मध्ये महती च पीडा,
मस्तिष्क शूलं तमुदा हरन्ती॥

शिर और आंखों में चोट के लगने, अधिक बोझा रखने अथवा विशेष हवा और धूप में काम करने के कारण वात नाड़ी के प्रकुपित विकार द्वारा बृहत् मस्तिष्क के मध्य से भयानक पीड़ा सहित उत्थित शूल आंखों के गोलकों में समाकर तीव्रवेदना से शिर को कम्पायमान करके अविलंब नेत्र ज्योति को बिगाड़ दे, बस उसी रोग को मस्तिष्क शूल (मथाशूर) कहते हैं जो आंखों को शीघ्र ही फोड़ डालता है तथा मनुष्य के अन्धा होने पर भी यह रोग आजन्म कष्ट देता रहता है।

चिकित्सा-

इस रोग में विरेचन द्वारा कोष्ठ शुद्धि करके नियमित रूप से औषधि का सेवन करना तथा स्वे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त और नस्यादि के द्वारा संचित विकार को निकाल र संशमन औषधियों से रोग को नष्ट कर देना ाहिये। आंखों पर आश्च्योतन और पिंडी आदि ियाओं का करना तथा घी, दूध, शर्करा, मधु युक्त मस्तिष्क बल-प्रद भोजन करना लाभप्रद ते हैं। साथ ही अम्ल, लवण, कटु और विदाही जन विशेष हानिकर होता है। दूध और बादाम ी लस्सी का पीना, प्रातः नाक द्वारा ठण्डा जल ना परमोपयोगी है।

—गोरखमुंडी की घुण्डी नग ११ बराबर काली-मिर्च के साथ पीसकर प्रतिदिन प्रातः सायंकाल १५ दिन पीने तथा गोरखमुण्डी के पत्तों की पिसी हुई लुगदी की पिंडी दोनों कनपुटियों पर बांधने से अनंतवातादि रोगों में लाभ होता है।

हरड़, बहेड़ा, आंवला, चिरायता, हल्दी निम्बकी अन्तर छाल और गिलोय प्रत्येक के समान भाग का षष्ठांश क्वाथ मधु मिला पीने से भौंह, कनपटी और नेत्र-रोग आदि पीड़ायें शान्त होती हैं।

दारु हल्दी, हल्दी, मजीठ, उशीर, नीम और पद्माख के क्वाथ में गुड़ मिला पीने से अन्यतो वात शीघ्र दूर होता है।

शहद के साथ घी में बने हुए मालपूए खाने से शिर-रोग सम्बन्धी नेत्र रोगों में विशेष लाभ होता है।

एरण्ड पत्र, निम्ब पत्र और सहंजने पत्र की पिंडी आंखों पर बांधने से अन्यतोवात में आश्चर्य-प्रद लाभ होता है।

त्रिफला को भिगोकर बनाई गई पिंडी आंखों पर बांधने तथा इसी का चूर्ण सोते समय दूध के साथ लेने से अन्यतोवात दूर होता है।

७—सोंठ, चूर्ण और समान गुड़ के नस्य लेने से मस्तिष्क शूल नष्ट होता है।

८—इसी प्रकार काकनासा बूटी पंचांग का धूम्रपान करने से भी मस्तिष्क शूल में आश्चर्यप्रद लाभ होता है।

९—श्वासकुठार रस के नस्य लेने से भी लाभ होता है।

१०—मालिश के लिए महानारायण तैल अथवा विषगर्भ तैल परमोत्तम है।

११—शुद्ध गूगल एलुवा, केशर, सुहागा और शुद्ध कुचिला प्रत्येक समान भाग को ब्राह्मी रस में घोट कर मूंग के बराबर गोली बनालें। दूध के साथ लेने से सभी अनन्त-वातादि रोग तथा प्रतिश्याय और शिर रोग शीघ्र ही नष्ट होते हैं।

१२—हरड़ ३ माशे	बहेड़ा ६ माशा
आंवले १ तोला	मुलहठी तीन माशे
पीपल तीन माशे,	वंशलोचन १ तोले
प्रवाल एक तोले	मिश्री ५ तोले

—इन सबको सम्मिलित सूक्ष्म चूर्ण को सोते समय ६ माशे की खुराक घी और शहद के साथ लेकर ऊपर से उष्ण गो-दुग्ध पीने से अनन्त वात, मस्तिष्क शूल तथा सभी नेत्र-रोग निश्चय दूर होते हैं।

१३—मस्तिष्क शूल की घोर पीड़ा को शान्त करने के लिये राई, लहसन, बच, सोंठ सिंगिया और सहंजने की छाल का सूक्ष्म चूर्ण करके तैल में मिला वालू पर रखना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमत्कारिक शास्त्रीय औषधें

ले०—श्री. पन्नालाल जी जैन वैद्य शास्त्री, नारखी [आगरा]।

प्रतापलङ्केश्वर रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शु० वत्सनाग, अभ्रकभस्म	—प्रत्येक १-१ तोला
चित्रकमूल	३ तोला
लोहभस्म	४ तोला
शङ्खभस्म	८ तोला
आरने कण्डे की राख	१६ तोला

—सबको यथा विधि मिलालें।

मात्रा—२ से ६ रत्ती दिन में २ से ३ बार अद्रकरस।

उपयोग—यह रसायन प्रसूति के ताप, उन्माद खांसी, शिरदर्द वमन, कफ दोष, दांत भिंचना, अफरा, ग्रहणी धनुर्वात, जुकाम, शूल, त्रिदोष अतिसार दूर करने में अति लाभदायक है।

हमारे अब तक के प्रयोगों में यह औषधि प्रसूति ज्वर में दिन-रात काम आती रही है। यह वह रसायन है जो प्रसूता के विकारों में अपना सानी नहीं रखती। डाक्टरों से छूटे हुए रोगी इसके प्रयोग से ठीक हुए हैं। इसकी पहिली मात्रा ही तत्काल गुणदायक है। अनुपान में हम दशमूल काथ का प्रयोग करते हैं। प्रसूतावस्था की हर व्याधी में लाभकारी है। इससे गर्भाशय में सञ्चित रक्ताश्रित दोष नष्ट होते हैं। चढ़े हुए बुखार को यह औषधि उतार देती और आने वाले को रोक देती है।

इससे सिर्फ ३ दिन में ही प्रसूत ज्वर चला जाता है। अभी पिछले दिनों एक रोगिणी को बुखार की प्रारम्भिक अवस्था में जाड़ा इतना लगा कि उसकी चीख निकल गई। घर वाले प्रेत-बाधा दूर करने वालों पर भागे फिरे अन्त में मुझे भी मौका मिला। मैंने आध घण्टे में २ खुराकों के प्रयोग से ही रोगिणी को होश में लादिया और कुल ६ खुराकों में पूर्ण स्वस्थ होगई।

डाक्टर लोग इसमें 'कुनाइन मिक्चर' का प्रयोग करते हैं लेकिन आयुर्वेद प्रेमी इस औषधि के प्रयोग से ठेका लेकर ठीक कर सकते हैं।

प्रसूत ज्वर की अवस्था में निमोनियां, उन्माद आदि में भी पूर्ण लाभकारी है।

समीरपन्नग रस कूपीपक्व

शुद्ध पारद	गन्धक	सेमल
मैनसिल		हरताल

—प्रत्येक १०-१० तोला

—कज्जली करें। फिर तुलसी या घीग्वार के रस की तीन दिन तक भावना देकर सुखालें।

पश्चात् आतिशी शीशी में भरकर ५० से ६० घण्टे तक अग्नि देने से शीशी के गले में यह औषधि तैयार होती है।

मात्रा—आधी रत्ती से २ रत्ती तक, दिन में २ से ३ समय अद्रकरस और शहद के साथ दें।

उपयोग—यह रसायन त्रिदोष और निमोनियां घबराहट, सन्धिवात, उन्माद, कास, श्वास ज्वर, जुकाम आदि रोगों को शान्त करती है।

आज डाक्टरों की देखा-देखी बहुत से वैद्य एम. बी. ६९३ आदि का प्रयोग करने लगे हैं और इन औषधियों से प्रभावित भी हैं। आयुर्वेद में छिपे हुए रत्नों की जानकारी करने में कुछ भी रुचि न देकर नकल करना प्रारम्भ कर देते हैं। मेरा आग्रह है कि निमोनियां और सन्निपात में समीर पन्नग का उपयोग करके देखें कि ६९३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नी औषधि कितने महत्व की है। इसके साथ के न इञ्जेक्शन की आवश्यकता है और न ग्लूकोज । इसके सम्बन्ध में मेरा अनुभव निम्न-प्रकार यह औषधि फुफ्फुस कोषों को उत्तेजना देकर फ-स्राव कराती है। इसलिये योग्य चिकित्सक को वस्थानुसार इसका प्रयोग यशभावी बनायेगा में सन्देह नहीं। प्रलापक सन्निपात जैसे रोगों में का प्रयोग नहीं होता उसमें तो कस्तूरी भैरव, क्ष्मी नारायन आदि सौम्य औषधियों का प्रयोग ता है। परन्तु वातकफ और पित्तकफ इन दोषों यह अत्यन्त प्रभावशाली है।

निमोनियां की हर अवस्था में दी जाती है। फ निकालने के लिये सहायक रूप से वासा, बहेड़ा, रेठी, भारङ्गी और मिश्री क्वाथ का प्रयोग कर कते हैं। श्वासावरोध में या श्वास में कफ स्राव राने के लिये यह अनुपान इसके साथ विशेष लाभकारी है।

आज तक पचासों रोगी सुबह शाम समीरपन्नग और आवश्यकतानुसार एक-दो दिन रात को अश्वकंचुकी के प्रयोग से पूर्ण लाभ प्राप्त कर चुके हैं।

ध्यान देने की बात यही है कि इस रस का प्रयोग अधिक बार और अधिक तादाद में नहीं करना चाहिये और पित्ताधिक्य में भी नहीं करना चाहिये।

पिछले दिनों बरसात में कुपथ्य सेवन से एक नौजवान को सन्निपात होगया। चिकित्सा प्रारम्भ की गई। कमजोरी विशेष थी, अतः प्रारम्भ से ही लक्ष्मी विलास अभ्रक प्रमुखता से दिया गया। चौथे दिन दोपहर को पसीना आया और उस हालत में रोगी की खांसी कम हो गई। कुछ देर बाद हालत पुनः वही हो गई जैसे थी। छटवे रात को पुनः वही दौरा हुआ, जो विशेषता लिये हुए था। रातभर में एक यूनानी चिकित्सक २६ गोलियां खिला गये एक ओर वैद्य ने शीतभंजी रस और अभ्रक की मात्रायें दीं परन्तु पसीना बन्द नहीं हुआ, खांसी बन्द रही और रोगी होश में बना रहा; मैंने सुबह ४ बजे पहुँच कर मकरध्वज और कस्तूरी की लगातार दो मात्रायें दीं, हालत ठीक हुई। पसीना भी बन्द हुआ और खांसी आने लगी।

एक दिन बीच में देकर आठवें दिन रात में पुनः वैसा ही दौरा होगया। अबकी बार मकरध्वज व कस्तूरी की खुराकें भी उतना लाभ नहीं पहुँचा सकीं।

यह देखकर घर वाले रोने लगे और डाक्टर के बुलाने की तैयारी हो गई। दो साथी वैद्यों की राय भी उनके साथ थी। मुझे कुछ क्रोधसा आया और दिमाग में विचार भी चलता रहा। मैंने रोगी की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेली और सोचा धन्वन्तरि ज्वरांक में श्रद्धेय गोवर्धन शर्मा छांगाणी का एक लेख सन्निपात पर प्रकाशित हुआ है। उसमें समीर पन्नग रस के सम्बन्ध में कुछ लिखा है। लेख पढ़ा गया। लगातार ३ मात्रायें इस रस की दी गई। पहली खुराक से ही लाभ हुआ और बाद में दिन भर में ३-४ बार इसी रस के प्रयोग से रोगी स्वस्थ हो गया। विचारणीय बात यह थी कि पसीने के दौरे के समय खांसी बन्द हो जाती थी। समीर पन्नग फुफ्फुस कोषों को उत्तेजित करके खांसी लाने का गुण रखते हैं और शीतांग की अद्भुत औषधि है। इसीलिये सफलता मिली। स्थानीय जनता आयुर्वेदिक औषधि के तत्काल प्रभाव को देखकर दंग रह गई। मैंने उन्हें बताया कि डाक्टरी इन्जैक्शन के मुकाबले हमारी औषधें अत्यन्त शीघ्र फलदायक हैं। अन्त में वैद्य-बन्धुओं से निवेदन यही है कि समय और रोगी की परिस्थिति देखकर ही औषधि योजना करें। किसी एक औषधि का हर प्रकृति के रोगी पर सफल होना असम्भव है। अपने साहित्य के श्रद्धापूर्वक अध्ययन के बाद हम लोग डाक्टरी चिकित्सा से बहुत आगे बढ़ सकते हैं इसमें सन्देह नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्त प्रान्तीय आयुर्वेद एवं यूनानी चिकित्सा प्रणाली पुनःसङ्गठन समिति की रिपोर्ट का सारांश

[गताँक से आगे]

"समिति की शिफारिशों की शारांश का कुछ भाग गतांक में प्रकाशित किया गया था शेष इस अंक में दिया जा रहा है। रिपोर्ट बहुत विस्तृत तथा अंग्रेजी में है। इच्छुक व्यक्ति उसे सुपरइण्टेण्डेण्ट-प्रिंटिङ्ग एण्ड स्टेशनरी यू० पी०, अलहाबाद के पते से मंगा सकते हैं। उसका मूल्य-२) रु० है। आयुर्वेद के विद्वानों को इस रिपोर्ट को ध्यान-पूर्वक पढ़ना चाहिये तथा उसमें अपना सहयोग देना चाहिये। यह समय आयुर्वेद की उन्नति का ऊषाकाल है अब वैद्यों को आलस्य त्याग कर कुछ क्रियात्मक कार्य करना चाहिये।"

—सम्पादक।

विचारणीय विषय संख्या ८-

आयुर्वेद तथा यूनानी जड़ी बूटियों का आदर्श निर्धारित करने के प्रश्न पर विचार करना तथा स्वीकृत भारतीय जड़ी बूटियों तथा औषधियों और अन्य ऐसी औषधियों की जो आधुनिक वैद्य और हकीमों द्वारा कार्य में लाई जाने वाली भैषज्य संग्रह में सम्मिलित करली गई हैं भैषज्य-संग्रह तैयार करना।

हम लोगों का यह विचार है कि हमारी भैषज्य संहिता बहुत ही लाभदायक तथा बड़ी है और उसमें उन विषयों पर पहले ही से ऐसी उच्च-कोटि की पुस्तकें हैं जैसी योग रत्नाकर शरंगधर, भैषज्य रत्नावली इत्यादि; फिर भी यह बहुत उचित है कि इन पाठ्य पुस्तकों के आधार पर और उनकी प्रणालियों का अनुकरण करते हुए एक राजकीय संक्षिप्त भैषज्य संग्रह तैयार की जाय। इस भैषज्य संग्रह को तैयार करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना होगा।

१-उसे पुरानी पुस्तकों को आधार मानकर तैयार किया जाना चाहिए. परन्तु ऐसी आधुनिक औषधियों को भी जो लाभदायक प्रमाणित हो चुकी हैं उनके तत्वों के सम्बन्ध में सावधानी से छानबीन करने के बाद इस संग्रह में सम्मिलित कर लिया जाना चाहिए।

२-मिश्रित औषधियों के विभिन्न अंशों के तैयार करने का आदर्श हमारी पुरानी पुस्तकों में वर्णित उक्त औषधियों के तैयार करने की विभिन्न पद्धतियों को ध्यान में रखते हुए निश्चित किया जाना चाहिये क्योंकि राज्य की ओर से एक उच्च कोटि के भैषज्य-संग्रह को तैयार करने का काम बहुत बड़ा है। इस लिए हम लोग सिफारिश करते हैं कि सरकार एक भैषज्य संग्रह समिति नियुक्त करे जो उपर्युक्त सुझावों के आधार पर भारतीय चिकित्सा के संबन्ध में उच्च स्तर की एक राजकीय भैषज्य संग्रह तैयार करे। ऐसी भैषज्य संग्रह के तैयार करने में २१,००० रुपया अनावर्ति व्यय करने का अनुमान किया जाता है।

विचारणीय विषय संख्या ९

आहार पोषण की समस्या को हल करने और अनुसन्धान के लिए प्रान्तीय संस्था स्थापित करने और भारतीय भोजनों का महत्व और भारतीय प्रणाली के अनुसार पथ्य विज्ञान और त्याज्य पदार्थों के ज्ञान का प्रचार करने के प्रश्न पर विचार करना।

हम लोगों के मत में यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि आहार पोषण और पथ्य विज्ञान से सम्बन्धित समस्याओं पर और भारतीय भोजनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ौर भारतीय प्रणाली के अनुसार से तैयार की ने वाली वस्तुओं की उपयोगिता पर अनुसंधान ने के लिये एक प्रथक प्रान्तीय संस्था बनाई जाय भी एक ऐसे सेन्ट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट जिसकी ापना की सिफारिस विचारणीय विषय संख्या के आधीन की गई है उसमें एक शाखा ऐसे लेजों के लिये पृथक ही कर देना चाहिये।

ारणीय विषय संख्या १०—

भारतीय प्रणाली के वर्तमान चिकित्सालयों र औषधालयों के सुधार के विषय पर विचार ना।

१-ऐसे आयुर्वेद संचालक के आधीन भारततीय कित्सा-प्रणाली एक पृथक विभाग हो जाना हिये जो चिकित्सा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के ालक डाइरेक्टर आफ मेडीकल और हैल्थ विसेज के समकक्ष पद तथा स्थिति के हों। आयु- के उक्त संचालक को एक पृथक सम्पूर्ण य का टैक्नीकल अध्यक्ष होना चाहिये जो धि की भारतीय प्रणालियों को राजकीय थाओं पर पूर्ण नियंत्रण तथा इन प्रणालियों के स्त स्थानीय बोर्डों की संस्थाओं पर टैक्नीकल त्रण रखता हो एसे वैद्यों और हकीमों को भी एपीडैमिक असिस्टेंट के रूप में सार्वजनिक स्वा- विभाग के आधीन इस समय काम पर लगाये हैं आयुर्वेद संचालक के अन्तर्गत रखना हिये।

२—शीघ्र कार्यवाही यह करनी चाहिये कि धालयों और आवास स्थानों के लिये उपयुक्त न बनें यदि ऐसे पक्के भवन शीघ्र बनाना म्भव है तो कच्चे-पक्के भवन बनाना चाहिये। औषधालयों के लिये एक पंचवर्षीय भवन ाण कार्यक्रम बना लेना चाहिये. परन्तु प्रधानता स्थानों को देनी चाहिये जहां पर एसे भवनों ाये स्थानीय चन्दे उपलब्ध हों।

३—इन औषधालयों के लिये पहले से अधिक उदारता के साथ मेज व अलमारी आदि सामान उपकरण तथा अन्य सामग्री पहुँचाने की व्यवस्था करनी चाहिये।

४—इन औषधालयों को सरकारी केन्द्रीय फार्मेसी से औषधियां देनी चाहिये क्योंकि निजी फार्मेसियों से प्राप्त औषधियां साधारणतया अच्छे गुण की नहीं होती। चिकित्सकों को भी दी गई औषधियों पर ही निर्भर न रहना चाहिये किन्तु जहां सम्भव हो ऐसी उपयुक्त अपक्व जड़ी बूटियां इत्यादि निर्धारित करने का प्रयत्न करना चाहिये जो स्थानीय रूप से सरलता से प्राप्त हों और जिन्हें रोगी स्वयं प्राप्त कर सकें।

५—सरकारी और स्थानीय बोर्डों के औष- धालयों और अस्पतालों में बहुत ही योग्य चिकि- त्सकों जो प्राप्य हों ऐसे सरकारी अधिकार पत्र प्राप्त विश्वविद्यालयों आयुर्वेद और तिब्बी. स्नातकों और युक्त प्रान्त के बोर्ड आफ इन्डियन मेडिसिन या आयुर्वेद के प्रस्ताविक स्टैटफैकल्टी के डिप्लोमा और डिग्री रखते हों नियुक्त करना चाहिये। दूसरे सहायता प्राप्त औषधायों में उन समस्त संस्थाओं के डिप्लोमा प्राप्त व्यक्ति जो भारतीय चिकित्सा बोर्ड के रजिस्ट्री के लिये मान्य हों पंचवर्षीय पाठ्यक्रम चलाने के लिये नियुक्त किये जाने के अधिकारी हो सकते हैं।

ख—उन समस्त सरकारी स्थानीय बोर्ड तथा सहायता प्राप्त औषधालयों के वर्तमान कर्मचारी वर्ग को, जो ठीक आवश्यक योग्यता नहीं रखते इस अभिप्राय के लिये सरकार द्वारा स्थापित संस्थाओं में रिफ्रेशर कोर्स या कोर्सों को पढ़ना चाहिए।

ग—सरकारी वैद्य हकीम सर्विसेज प्रान्तीय सर्विसेज होनी चाहिए।

६-उन समस्त चिकित्सकों को जो किसी राजकीय अधिकार पत्र प्राप्त विश्वविद्यालय से आयुर्वेद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नातक हैं या प्रान्त के बोर्ड आफ इन्डियन मेडिसन अथवा आयुर्वेद के प्रस्तावित राजकीय विभाग द्वारा प्राप्त डिप्लोमा या डिग्री रखते हैं और जिन्होंने अपने पंच-वर्षीय पाठ्य-क्रम में शल्य-शास्त्र का अध्ययन किया है साधारण शल्य-कर्म करने का अधिकार देना चाहिए। उन स्नातकों को जिन्होंने सरकार द्वारा स्वीकृत पोस्ट-ग्रेजुएट पाठ्यक्रम में शल्य शास्त्र संबन्धी विशेष शिक्षा प्राप्त की है गम्भीर शल्य कर्म करने की अनुमति भी देनी चाहिये।

७–बोर्ड द्वारा सहायता पाने वाले औषधालयों को आर्थिक सहायता देने की प्रथा बन्द कर देना चाहिए क्योंकि बोर्ड के पास ऐसा कोई समुचित साधन नहीं है जिसके द्वारा वह इन औषधालयों का निश्चित अवधियों पर और अपक्षपातपूर्ण निरीक्षण कराये। आयुर्वेद के डाइरेक्टर (संचालक) की सिफारिश पर सरकारी प्रत्यक्ष रूप से अनुदान दिया जाना चाहिये और उसकी धनराशि अपेक्षाकृत अधिक होनी चाहिये। सरकार को या तो पूरे घाटे की पूर्ति करने या व्यय का आधा भाग देने का जो भी कम हो, दायित्व ग्रहण करना चाहिये।

ख–ऐसे औषधालयों को जिन्हें आर्थिक सहायता मिलती हो, शत-प्रतिशत धर्मार्थ होने चाहिये। उनकी स्थापना स्थानीय आवश्यकताओं को देखते हुए औचित्यपूर्ण होनी चाहिये और उन्हें सरकार द्वारा निर्धारित उन नियमों का कड़ाई के साथ पालन करने का दायित्व ग्रहण करना चाहिये जो उक्त संस्था के कर्मचारियों की योग्यताओं, उसके सामान्य प्रबंध और नियन्त्रण के सम्बन्ध में बनाए गये हों।

ग–इसके अतिरिक्त इस बात पर भी जोर दिया जाना चाहिये कि इन अस्पतालों और औषधालयों के स्वतन्त्र रूप से अपने निजी कोष हों और उनकी अलग २ प्रबन्ध समितियां हों जिनके विधान सरकार द्वारा निर्धारित विधि से स्वीकृत हों।

घ–सरकार की आर्थिक सहायता योजना जो ग्रामीण क्षेत्रों के आयुर्वेदिक और यूनानी औषधालयों को आर्थिक सहायता देने के उद्देश्य से आजकल चालू है नितान्त अपर्याप्त है और वह नीचे लिखे अनुसार संशोधित की जानी चाहिये। सहायता प्राप्त औषधालयों में नीचे लिखे कर्मचारी होने चाहिए।

१ वैद्य	७५) मासिक
१ कम्पाउण्डर	४०) मासिक
१ नौकर	२०) मासिक

औषधियों के निमित्त प्रतिवर्ष कम से कम ३६०) की धनराशि की व्यवस्था। आधा व्यय औषधालयों पर नियन्त्रण रखने वाले अधिकारी को देना चाहिये और शेष अर्द्ध भाग की पूर्ति सरकार द्वारा दिये गये अनुदान से की जानी चाहिए।

६–निर्धारित योग्यता-पूर्ण वैद्यों और हकीमों को ग्रामीण क्षेत्रों में बसने के उद्देश्य से प्रोत्साहित करने के लिये आजकल सरकार जो आर्थिक सहायता देती है वह भी बहुत कम है। आर्थिक सहायता का मान बढ़ाकर कम से कम ६०) मासिक कर दिया जाना चाहिये और चिकित्सकों को ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे स्थानों पर बसने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये जहां नियमित रूप से चलने वाले कोई औषधालय न हों। किसी विशेष चिकित्सक को ३ वर्ष से अधिक समय तक आर्थिक सहायता नहीं दी जानी चाहिये।

विचारणीय विषय संख्या ११—

मान्यता-प्राप्त संस्थाओं में शल्य शास्त्र के शिक्षण की उन्नति होने के प्रश्न पर तथा उनके द्वारा शल्य-शास्त्र में दिये गये डिप्लोमा के पाश्चात्य प्रणाली की संस्थाओं द्वारा दिये गये उन्हीं सरीखे डिप्लोमाओं के समकक्ष माने जाने के प्रश्न पर विचार करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी राय में शल्य-शास्त्र के पाठ्यक्रम का मान, जो इंडियन मेडिसिन बोर्ड, युक्त प्रान्त के बी.आई.एम.एस. के शिक्षाक्रम में निर्धारित है एलोपैथिक कालेजों के एम.बी.बी. एस. के पाठ्यक्रम में निर्धारित है उस मान से किसी भी प्रकार निम्न कोटि का नहीं है, यद्यपि अधिकांश आयुर्वेदिक और यूनानी कालेजों में पर्याप्त व्यवहारिक शिक्षण प्रदान करने की अभी समुचित व्यवस्थायें नहीं पायी जातीं। अतएव, हम यह सिफारिश करते हैं कि—

१—प्रत्येक सम्बद्ध कालेज के लिये यह अनिवार्य होना चाहिये कि उसमें एक ऐसा अस्पताल हो जो समुचित उपादानों से सुसज्जित हो और जिसमें समुचित संख्या में योग्यतापूर्ण कर्मचारी हों। और रोगियों के पलंगों की संख्या प्रथम वर्ष की कक्षा में भर्ती किये गये प्रति विद्यार्थी के हिसाब से दो से कम नहीं होनी चाहिये।

२—इन कालेजों के विद्यार्थियों को इस उद्देश्य से पर्याप्त व्यवहारिक शिक्षण देने के लिये कि वे किसी भी अस्पताल में शल्य कार्य का भार ग्रहण कर सकें, यह भी आवश्यक है कि वे अपने शिक्षण काल में एक समुचित अवधि तक किसी जिला या सिविल अस्पताल में शल्य सम्बन्धी रोगियों की चिकित्सा द्वारा प्रभावकारी व्यवहारिकि शिक्षण प्राप्त करें।

३—राजकीय अधिकार-पत्र प्राप्त विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध आयुर्वेदिक कालेजों द्वारा इंडियन मेडिसिन बोर्ड संयुक्त प्रान्त द्वारा या आयुर्वेद के प्रस्तावित सरकारी परिषद द्वारा प्रदत्त डिग्री या डिप्लोमा को इन्हीं की कोटि के उन डिप्लोमों के समकक्ष स्वीकार करना चाहिये जो एलोपैथिक प्रणाली की संस्थाओं द्वारा प्रदान किये गये हों।

विचारणीय विषय संख्या १२—

मान्य संस्थाओं की डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों का पद बढ़ाकर पाश्चात्य प्रणाली मेडिकल कालेजों की डिग्री और डिप्लोमा प्राप्त व्यक्तियों के समान किये जाने की सम्भावना पर विचार करना।

१—आयुर्वेद ठीक ढंग से उन्नति और प्रगति के लिये यह मूल रूप से आवश्यक है कि आयुर्वेद के स्नातकों को नौकरी में वही दर्जा और वेतन कम दिया जाय जो एलोपैथी के स्नातकों को दिया जाता है।

२ आयुर्वेद के स्नातकों को प्रान्तीय मेडिकल सर्विस में सम्मिलित होने की सुविधायें ऐलोपैथी स्नातकों के ही समान होनी चाहियें। पी.एम.एस. में की जाने वाली नियुक्तियां किसी प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर होनी चाहिये और आयुर्वेद के सरकारी विभाग द्वारा उसके लिये एक निश्चित योजना इस प्रकार बनाई जानी चाहिये कि आयुर्वेद या इसके स्नातकों के हितों पर किसी प्रकार उसका प्रभाव न पड़े।

विचारणीय विषय संख्या १३—

स्वास्थ्य—व्यवस्था सम्बन्धी एक समीकृत योजना के अंश रूप भोर कमेटी की शिफारिशों के आधार पर उच्च कोटि के आतुरालय, चिकित्सालय तथा स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किये जाने के प्रश्न पर विचार करना।

हमारा विचार यह है कि प्रान्त की स्वास्थ्य-व्यवस्था की योजना, जिसके लिये हिन्द सरकार की हेल्थ सर्वे और डिवेलपमैन्ट कमेटी ने या संयुक्त प्रान्तीय सार्वजनिक स्वास्थ्य और चिकित्सा सम्बन्धी पुर्नसंगठन समिति ने सिफारिश की है देश के साधनों उसकी प्रकृति और जलवायु तथा जनता के स्वभाव, रहन-सहन के ढंग और उसकी आर्थिक दशा को देखते हुए अव्यवहार्य है। आयुर्वेद के पुनर्ग्रहण से ही राष्ट्र के स्वास्थ्य की रक्षा स्वावलम्बन पूर्वक सफलता से की जा सकती है और उसे पुनः उस स्तरपर लाया जा सकता है जैसा कि अन्य देशों का है। यदि प्रान्त की चिकित्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्थाओं और स्वास्थ्य-योजनाओं को तुरन्त आयुर्वेदिक प्रणाली के अनुसार कर देने में कोई शासन सम्बन्धी तथा अन्य प्रकार की कठिनाई हों तो कुछ ऐसे जिलों को ही इस प्रणाली के लिये नियत करके इसका श्री गणेश किया जाना चाहिये; जिनके ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा व्यवस्थाएं प्रतिरोध तथा रोग निवारक दोनों ही एक मात्र भारतीय प्रणालियों को अपना आपेक्षिक महत्व प्रदर्शित और प्रमाणित करने का पूरा २ आधार मिले। संयुक्त प्रान्तीय सार्वजनिक स्वास्थ्य और चिकित्सा पुनर्संगठन समिति ने केवल ३६००० ग्रामों तथा १८० लाख जनसंख्या को ही आगामी ५ वर्षों में चिकित्सा सुविधाएं पहुँचाने की योजना प्रस्तुत की है, हमारी सिफारिश है कि इन ३६००० ग्रामों तथा १८० लाख जनसंख्या के क्षेत्र के बाहर जन-स्वास्थ्य तथा चिकित्सा की व्यवस्था एवं प्रबन्ध प्रत्येक दशा में भारतीय चिकित्सा प्रणालियों के अनुसार ही नीचे लिखे ढङ्ग से आयोजित की जानी चाहिये।

हमने अपने आयोजन संबन्धी कार्यक्रम का विभाजन दो भागों में किया है जिसमें से प्रत्येक की पूर्ति में १० वर्ष लगेंगे। प्रथम भाग को हमने अल्पकालीन और द्वितीय को दीर्घकालीन योजना का नाम दिया है।

अल्पकालीन योजना

(१० वर्ष की अवधि में चालू होने वाली)

प्रारम्भिक चिकित्सा केन्द्र प्रत्येक प्राइमरी स्कूल को; जो ऐसे गांवों में स्थिति हों जिसमें कोई औषधालय न हो, दवाइयों का एक बक्स देना चाहिये जिसमें सामान्यतया पाये जाने वाली विभिन्न रोगों की निर्दिष्ट औषधियां जिनकी खुराकें स्पष्ट रूप से अङ्कित हो रक्खी हुई हों। गांव के स्कूल के अध्यापक को तहसील के आयुर्वेदिक आतुरालय में एक संक्षिप्त पाठ्यक्रम की शिक्षा लेनी होगी जिससे कि वे उपर्युक्त प्रारंभिक चिकित्सा केन्द्र को ठीक तरह से चला सकें। यह अध्यापक साधारणतया गांवों के रोगियों की चिकित्सा करेंगे और सभी ऐसे रोगियों को, जिनकी बीमारी गंभीर या जटिल होगी, चिकित्सा केन्द्र में भेजेंगे। इसके अतिरिक्त कार्य के लिए उसे स्थानीय बोर्ड या गांव पंचायत द्वारा समुचित भत्ता दिया जाना चाहिये। औषधियां सरकार द्वारा ही दी जानी चाहिये। १९५९, ६० ई० तक औषधियों के ५०,००० बक्सों की आवश्यकता पड़ेगी। १० वर्ष तक ५ हजार अतिरिक्त बक्सों की प्रति वर्ष व्यवस्था की जानी चाहिये।

चिकित्सा केन्द्र—

नियमित रूप से चलने वाले औषधालय ग्रामीण क्षेत्रों में इस ढंग से स्थापित किये जाने चाहिये कि वे ३ मील तक अपने चारों ओर के क्षेत्र में प्रारंभिक चिकित्सा केन्द्रों के रूप में काम आ सकें। इन औषधालयों में हर प्रकार की बीमारियों की चिकित्सा की व्यवस्था रहनी चाहिये और अध्यक्ष चिकित्सक को चाहिये कि वह निश्चित अवधियों पर संध्याकाल में इन प्रारंभिक चिकित्सा केन्द्रों पर जायें और उनके कार्य का निरीक्षण करें।

इन औषधालयों में नीचे लिखे कर्मचारी होने चाहिये—

१—एक चिकित्सक
२—१ कम्पाउण्डर
३—१ धात्री
४—१ नौकर
५—१ मेहतर (खण्डकालीन)

एक औषधालय लगभग ३३.२ वर्ग मील के क्षेत्र के लिये होगा जिसके अन्तर्गत लगभग ३० गांव होंगे और २०,००० जन संख्या होगी। समूचे प्रान्त के लिये कुल जितने चिकित्सालयों की आवश्यकता होगी उनकी संख्या हिसाब लगाने पर ३२०० होती है। यह निर्धारित लक्ष्य जिसमें सभी प्रणालियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान अस्पताल और औषधालय सम्मिलित हैं, वर्ष में पूरा होजाना चाहिये।

तुरालय

प्रत्येक तहसील के केन्द्रस्थान में एक आतुरालय ा चाहिए जिसमें प्रति तहसील रोगियों के कम से कम २० रोगी शय्या होनी चाहिये। यदि किसी तहसील के क्षेत्रफल और जनसंख्या दृष्टि से उचित प्रतीत हो तो उस तहसील में एक आतुरालय खोला जाना चाहिये। चिकित्सा का अध्यक्ष चिकित्सक ऐसे रोगियों को, जिनकी ारी जटिल हो या जिन्हें अस्पताल में भर्ती करने आवश्यकता हो, इन आतुरालयों में भेजें। इन तालों में नीचे लिखे कर्मचारी होने चाहिए।

१–तीन चिकित्सक इसमें एक महिला चिकित्सक भी सम्मिलित है—
२–दो कम्पाउण्डर।
३–एक महिला स्वास्थ्य उपदेशिका।
४–एक परिचारिका धात्री।
५–एक स्टोर-कीपर क्लर्क।
६–दो वार्डों में काम करने वाले दो नौकर।
७—तीन परिचारक अर्दली।
८—एक रसोइया।
९—एक कहार।
१०—एक मेहतर।
११—एक चौकीदार।
१२—एक ऊपरी काम करने वाला नौकर।

इनमें से प्रत्येक आतुरालय पर १२ ००० रुपया र्ष व्यय होगा और सारे प्रान्त के लिये ऐसे ग २०० अस्पतालों की आवश्यकता होगी।

जिला आतुरालय –

जिला आतुरालयों में काय–चिकित्सा केवल तीय प्रणालियों द्वारा ही होनी चाहिये, यद्यपि –चिकित्सा पाश्चात्य प्रणालियों पर अभी जारी रक्खी जाय। पर यदि सरकार इस सिफारिश को तुरन्त स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं, तो प्रत्येक जिला अस्पताल में ऐसे वार्ड अलग से बना दिये जांय जिनमें भारतीय प्रणालियों के अनुसार चिकित्सा की जाय। इन वार्डों को देशी प्रणालियों के सुयोग्य चिकित्सकों की देख-रेख में रखना चाहिये और उन पर आयुर्वेद के संचालक का प्रत्यक्ष नियन्त्रण होना चाहिये न कि सिविल सर्जन का, केवल कुछ ऐसी बातों को छोड़ कर जो साधारण प्रबन्ध से सम्बन्धित हों।

५. केन्द्रीय आतुरालय

महत्वपूर्ण केन्द्रों में ऐसे केन्द्रीय आयुर्वेदिक और यूनानी अस्पताल भी स्थापित किये जांय जिनमें कम से कम ३०० रोगियों के लिये शय्या हों और सभी रोगों की चिकित्सा के लिये पूर्ण सुबिधायें हों।

६. कोढ़ियों का आश्रय ग्रह –

भारतीय औषधि प्रणाली में कोढ़ और चर्म रोगों की चिकित्सा के लिये बहुत अच्छी और प्रभाव-कारिणी औषधियां हैं। इसलिये उनकी जांच के लिये समिति सिफारिश करती है कि प्रान्त में भारतीय प्रणाली के आधार पर चिकित्सा करने के लिये कोढ़ियों का एक आश्रय गृह खोलना चाहिये।

७. मानसिक रोगों के अस्पताल–

वर्तमान सरकारी मानसिक रोगों के अस्पतालों में से एक अस्पताल केवल भारतीय प्रणाली के आधार पर चिकित्सा, करने के लिये सुरक्षित रक्खा जाना चाहिये क्योंकि भारतीय प्रणाली से मानसिक रोगों की बहु सफल चिकित्सा होती है।

दीर्घकालीन योजना––

(जो दस वर्षों की दूसरी अवधि में आती है—)

हमारी योजना की दूसरी अवधि में जो दूसरे दस वर्ष में चालू होगी हम सिफारिश करते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी वर्तमान एलोपैथिक संस्थायें तदनुरूप भारतीय प्रणाली से सम्बन्धित संस्थाओं में परिवर्तित करदी जांय।

१--चिकित्सा केन्द्र--

ढाई २ मील की दूरी पर एक २ चिकित्सा केन्द्र खोल कर ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सम्बन्धी सहायता कार्य का विस्तार किया जाना चाहिये। इस योजना के अनुसार जो दस वर्षों की दूसरी अवधि में पूरी होगी सम्पूर्ण प्रान्त में २,२०० अतिरिक्त चिकित्सा केन्द्रों के खोलने की आवश्यकता होगी।

२. आतुरालय--

२,५०० या इससे अधिक जन संख्या वाले बड़े गांव में या कस्बे में प्रत्येक आठ चिकित्सा केन्द्रों के लिये साधारणतः एक ऐसा आतुरालय स्थापित करना चाहिये जिसमें दस रोगियों की शय्या का स्थान हो। प्रान्त भर के लिये लगभग ऐसे दस रोगी शय्या वाले २०० अतिरिक्त अतुरालयों की आवश्यकता होगी।

दूसरे दस वर्षों की अवधि में प्रत्येक ५,००० या उससे अधिक जन संख्या वाले कस्बे के प्रत्येक अस्पताल में रोगियों के शय्या की संख्या भी बढ़ा कर कम से कम बीस कर देनी चाहिये।

बिचारणीय विषय संख्या १४ ---

सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा औषधि सम्बन्धो सहायता के क्षेत्र में काम करने वाली एलोपैथिक, आयुर्वेदिक तथा यूनानी प्रणाली की सभी संस्थाओं अस्पतालों और औषधालयों के उत्तरोत्तर बढ़ने वाले कार्यों के एकीकरण की योजना पर बिचार करना।

१—औषधि सम्बन्धी और सार्वजनिक स्वास्थ्य विभागों का एक ही शासनाध्यक्ष होना चाहिये जिसके पद का नाम स्वास्थ्य तथा चिकित्सा विभाग का शासनाध्यक्ष हो और जिसकी सहायता के लिये स्वास्थ्य और चिकित्सा-विभाग के दो विशे[ष] संचालक होने चाहिये जो कि भारतीय [औ]र पाश्चात्य प्रणालियों की संस्थाओं का अलग २ का[र्य] भार सम्भालेंगे। एलोपैथिक और देशी विभागों [के] कार्य तथा कार्यवाहियों में एकता स्थापित कर[ना] ही शासनाध्यक्ष का कर्तव्य होगा जिससे चिकि[त्सा] सम्बन्धी सहायता के किसी क्षेत्र में किसी भी क[ार्य] को दुबारा न करना पड़े।

२—आयुर्वेदिक तथा तिब्बी चिकित्सा प्र[णा]लियों में एकता स्थापित करने के लिये एक चिकित्[सा] प्रणाली के स्नातकों को दूसरी भारतीय प्रणाली [की] दो वर्ष की शिक्षा प्राप्त करने के लिये कुछ सीमि[त] छात्र वृत्तियां दी जानी चाहिये जिससे दोनों प्र[णा]लियों को समानरूप से अच्छे प्रकार जानने व[ाले] स्नातक तैयार हो सकें।

बिचारणीय संख्या १५--

भारतीय प्रणालियों के आधार पर स्वास[्थ्य] सम्बन्धी सुधार और शारीरिक उन्नति के लिये स[ंग]ठनों द्वारा अच्छा स्वास्थ्य बनाने के प्रश्न पर बिच[ार] करना।

१-हमारी राय में अब वह समय आगया [है] जब आयुर्वेद विज्ञान के आधार पर निर्भर व्य[क्ति]गत स्वास्थ्य-रक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य [के] सिद्धान्तों का प्रचार जनता में विस्तृत रूप से कि[या] जाना चाहिये। उन कारणों की अज्ञानता के का[रण] जिनसे छूत की बीमारियां और उनकी चिकित्सा [का] प्रश्न पैदा होता है तथा दिनचर्या रात्रिचर्या [और] ऋतुचर्या के आयुर्वेदिक सिद्धान्तों की जानकारी [न] होने के कारण राष्ट्र का स्वास्थ्य दिन पर दिन गिर[ता] जा रहा है। इसलिये हम सिफारिशें करते हैं [कि] आयुर्वेद के सिद्धान्तों पर स्वास्थ्य के लिये एक प्र[चार] शन विभाग अविलम्ब स्थापित किया जाना चाहि[ये और इस] विभाग को आयुर्वेद के संचालक के नियन्त्रण [के] अन्तर्गत रक्खा जाना चाहिये और इसे मे[ं]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदर्शनियों, फिल्म स्लाइडों रेडियो तथा अन्य साधनों द्वारा व्यक्तिगति तथा पारिस्परिक स्वास्थ्य-रक्षा तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य से संबन्धित आयुर्वेदिक सिद्धान्तों की शिक्षा नगर तथा ग्रामों की जनता को देना चाहिए। इस विभाग को यह भी चाहिए कि यह जनता में और विशेष रूप से महिलाओं में पथ्य संबन्धी बाता तथा भारतीय प्रणालियों के सुधार, भारतीय भोजनों तथा उनकी तैयारी के महत्व के विषय में पूर्ण जानकारी कराने के लिये या स्वास्थ्य सुधार से सम्बन्धित विषयों पर शिशु-गीत लिखें और इन गीतों को बालकों और बच्चों में प्रचलित करना चाहिये।

२-उचित पाठों को जो व्यक्तिगत स्वास्थ्य, पारस्परिक स्वास्थ्य-रक्षा और स्वच्छता के विषय में साधारण आयुर्वेदिक शिक्षा से संबन्धित हों प्रारम्भिक अवस्था से लेकर सभी स्कूल कक्षाओं में पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित कर देना चाहिए। जिससे बच्चों में स्वस्थ जीवन बनाने की आदत पड़े।

३ स्कूलों के स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा स्कूली बच्चों के स्वास्थ्य निरीक्षण कार्य को बढ़ाना चाहिये। सम्पूर्ण समय के लिये नियुक्त स्कूल के स्वास्थ्य अधिकारी की संरक्षता में रक्खे गए स्कूलों की संख्या इतनी सीमित होनी चाहिए कि स्कूलों के स्वास्थ्य अधिकारी के लिए यह सम्भव हो जाय कि वह अपने अधीनस्थ प्रत्येक स्कूल के लिये सप्ताह में एक पूरा दिन लगा सके।

४-कम से कम १६ वर्ष तक के लड़कों के लिये सिनेमा जाने, सिगरेट तथा बीड़ी पीने का निषेध कानून द्वारा कर देना चाहिये क्योंकि इनसे एसी बहुत सी बुरी आदतें पड़ती हैं जिनका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है। अध्यापकों तथा अन्य व्यक्तियों के लिये स्कूल की सीमा के भीतर सिगरेट इत्यादि पीने का पूर्ण निषेध होना चाहिये। उपदेश अथवा शिक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण विशेष चित्रों के दिखाने की व्यवस्था समय-समय पर स्कूलों के लिये निःशुल्क करनी चाहिये।

५—भारतीय चिकित्सा प्रणाली के लिये पढ़ाई के पाठ्यक्रम में समाजोपयोगी औषधि शास्त्र सार्वजनिक स्वास्थ्य और पारस्परिक स्वास्थ्य रक्षा के सम्बन्ध में सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक रूप से विशेषकर प्रतिदिन के जीवन में दिनचर्या रात्रिचर्या ऋतुचर्या और आहार-विहार के विषयों की पढ़ाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

६—ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य-सुधार तथा शारीरिक सुधार का काम ग्राम पंचायत और चिकित्सा केन्द्रों द्वारा होना चाहिये और उनको भी सभी प्रकार के स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यों का केन्द्र बनाना चाहिये।

७-बालकों और विद्यार्थियों के पुष्टिकर भोजन के प्रश्न को सबसे अधिक महत्व देना चाहिये और शिक्षा विभाग द्वारा प्रत्येक संस्था में विद्यार्थियों को जलपान देने की उचित व्यवस्था केवल स्वास्थ्य विज्ञान की भारतीय पद्धतियों पर ही की जानी चाहिये और स्वास्थ्य के लिये हानिकर समस्त भोजनों पर रोक लगा देनी चाहिये।

८—भारतीय आधार पर स्वास्थ्य सुधार और शारीरिक सुधार किये जाने की दृष्टि से सरकार से प्रार्थना की जानी चाहिए कि वह शारीरिक सुधार की संयुक्त प्रान्तीय परिषद और प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा की पाठ्य पुस्तक समिति में वैद्यों और हकीमों को समुचित प्रतिनिधत्व प्रदान करें।

९—प्राकृतिक चिकित्सा सदन-क्योंकि प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्त भारतीय प्रणालियों में सारभूत रूप से पहले ही सम्मिलित हैं अतएव प्राकृतिक चिकित्सा के चिकित्सा सदनों का पृथक रूप से स्थापित किया जाना वांछनीय नहीं है।

विचारणीय विषय सख्या १६—

भारतीय चिकित्सा सम्बन्धी एक्ट १९३९ ई० में किये जाने वाले आवश्यक परिवर्तनों पर विचार करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—भारतीय प्रणालियों की शिक्षा या शिक्षण संस्थाओं को स्थापित या स्वीकर करने, पाठ्यक्रम को निर्धारित करने, परीक्षायें लेने. चिकित्सालयों अस्पतालों और शिक्षा संस्थाओं के निरीक्षण के लिये इन्सपेक्टरों को नियुक्त करने, चिकित्सालयों अस्पतालों और अनुसन्धान संस्थाओं आदि को स्थापित करने और उन्हें आर्थिक सहायता देने. स्वास्थ्य योजनाओं और फर्मों इत्यादि को लाइसेन्स देने के अधिकारों को बोर्ड से ले लेना चाहिए और इस एक्ट की धारा ३६ और ३७ में जिनमें बोर्ड के अधिकार विशेष रूप से निश्चित किये गए हैं तद-नुसार संशोधन किये जाने चाहिए और सम्पूर्ण ऐक्ट में उनके फलस्वरूप अन्य संशोधन किए जाने चाहिए, अर्थात् अधिकार, जिनका सम्बन्ध निरीक्षणों और केन्द्रीय अधिकारों से है आयुर्वेद के डाइरेक्टर को हस्तान्तरित कर देने चाहिए। आगे से बाड का केवल वैद्यों और हकीमों तथा भारतीय प्रणालियों के चिकित्सा सम्बन्धी कर्मचारियों की अन्य श्रेणियों को जिन्हें भारतीय प्रणालियों पर की जाने वाली चिकित्सा का नियमन करने का अधिकार सौंपा गया है, रजिस्टर करने वाली संस्था तथा सरकार और भारतीय चिकित्सा के डाइरेक्टर को विशुद्ध टैकनीकल विषयों की परामर्श-दात्री संस्था के रूप में काम करना चाहिए।

२—हम सिफारिश करते हैं कि भारतीय चिकित्सा बोर्ड की सदस्यता की संख्या घटाकर १५ कर देनी चाहिए। हमारी सम्मति में नवीन बोर्ड का निर्माण निम्न प्रकार किया जाना चाहिए।

एक सभापति जो सरकार द्वारा मनोनीत हो, तीन सदस्य जो सरकार द्वारा मनोनीत हों, एक २ प्रतिनिधि प्रत्यक ऐसे अधिकार पत्र प्राप्त विश्वविद्यालयों की कार्य कारिणी परिषद् द्वारा निर्वाचित होना चाहिए जिसमें भारतीय चिकित्सा सम्बन्धी विभाग हों।

संयुक्त-प्रान्तीय अंजुमने तिब्बया का एक प्रतिनिधि।

रजिस्टर्ड वैद्यों और हकीमों द्वारा. जो सरकार या स्थानीय बोर्ड की नौकरी न करते हों, निर्वाचित चार सदस्य, जिनमें से एक सदस्य हकीम होगा।

रजिस्टर्ड वैद्यों और हकीमों द्वारा जो सरकार या स्थानीय बोर्ड को नौकरी में हों दो सदस्य।

कुल संख्या कम से कम १५।

३—क्योंकि एलोपैथी के ऐसे चिकित्सकों द्वारा जिनकी रजिस्ट्री न हुई हो ऐलोपैथी की चिकित्सा करने पर कोई रोक नहीं है अतएव हमारी यह भी सम्मति है कि वर्तमान एक्ट के भाग ३ का इस प्रकार संशोधन होना चाहिये कि ऐसे चिकित्सकों जिनकी रजिस्ट्री न हुई हो औषधियों द्वारा चिकित्सा करने का निषेध न हो।

४—हमारी सम्मति में इस एक्ट से संलग्न पैराग्राफ ४ अब निकाल देना चाहिये, क्योंकि जिस उद्देश्य के लिये वह था वह पूरा हो चुका है और परिशिष्ट का निम्न-प्रकार से संशोधन करना चाहिये।

परिशिष्ट - -

१—वैद्य या हकीम जिन्हें भारत में कानून द्वारा स्थापित किसी विश्वविद्यालय की भारतीय चिकित्सा या शल्य-चिकित्सा या धात्री विद्या में कोई उपाधि मिली हो।

२—वैद्य या हकीम जो संयुक्त प्रान्त के भारतीय चिकित्सा बोर्ड या भारतीय चिकित्सा के राजकीय विभाग द्वारा ली गई अन्तिम परीक्षा में उतीर्ण हो चुके हों।

३—वैद्य या हकीम जो संयुक्त प्रान्त की या उसके बाहर की किसी आयुर्वेदिक या यूनानी संस्था से किसी ऐसी परीक्षा में उतीर्ण हो चुके हों जो आयुर्वेद के राजकीय विभाग द्वारा एक समकक्ष योग्यता के रूप में मान्य हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५--वर्तमान एक्ट के आलेख में बड़ी अस्पष्ट ाषा का प्रयोग हुआ है और उसमें स्वभावतः छ ऐसी त्रुटियां हैं जो अवश्य दूर की जानी ाहिये। उदाहरण के लिये वर्तमान एक्ट में चेयर- न और वाइसचेयरमैन के कर्तव्यों को, चेयरमैन किसी रिपोर्ट की मांग करने के बोर्ड के अधिकार ो, उन परिस्थितियों को जिनमें चेयरमैन सरकार ारा हटाया जा सकता है, बोर्ड द्वारा आय-व्यय के ार करने और सरकार के सामने उसे प्रस्तुत रने को उक्त एक्टकीधारा ३७ के आधीन बोर्ड द्वारा ाये गये किसी नियम विधान के पूर्व प्रकाशन ौर सरकार द्वारा उसके पुष्टिकरण आदि को ष्ट रूप से नहीं बतलाया गया है।

६—यह एक्ट युक्त प्रान्त के सब पर लागू होना हिये और कोई क्षेत्र इससे बाहर नहीं रहना हिए।

७—उपर्युक्त परिवर्तनों और अपने वर्तमान में एक्ट के दोष पूर्ण और शिथिल आलेखन को ट में रखते हुए पूर्ण ऐक्ट का पुनरालेखन आवश्यक है और हम सिफारिश करते हैं कि इसके समस्त दोषों को दूर करने के लिए ऐसा किया जाना चाहिए।

विचारणीय विषय संख्या १७--

आयुर्वेदिक और यूनानी प्रणालियों में वर्णित व्यक्तिगत स्वास्थ्य रक्षा विज्ञान पथ्य विज्ञान, रुग्णावस्था के पश्चात् स्वास्थ्य लाभ करने वाले व्यक्तियों और बच्चों का भोजन और गर्भकाल तथा प्रसव के उपरान्त स्त्रियों की देखरेख के सम्बन्ध में अनुसन्धान करने के प्रश्न पर विचार करना।

केन्द्रीय अनुसन्धान संस्था की एक शाखा को जिनको स्थापित करने की सिफारिश विचारणीय विषय संख्या ४ के आधीन की गई है आयुर्वेदिक यूनानी प्रणालियों में वर्णित पथ्य विज्ञान व्यक्तिगत स्वास्थ्य रक्षा विज्ञान, रुग्णावस्था के पश्चात् स्वास्थ्य लाभ करने वाले व्यक्तियों तथा बच्चों के भोजन और गर्भकाल तथा प्रसव के उपरान्त स्त्रियों की देखरेख के सम्बन्ध में अनुसन्धान करने का काम सौंप देना चाहिए।

श्री. रामेशवेदी आयुर्वेदालंकार द्वारा लिखित

नवीन ढंग की उत्तम पुस्तकें

ये पुस्तकें वैद्यों के लिए उपयोगी हैं तथा नवीन ढंग से बड़ी छान-बीन करने के पश्चात् लिखी गई है—

तुलसी	२)	त्रिफला	२।)	❀ पूरी सूची ❀
अंजीर	१)	देहाती इलाज	१)	पुस्तकों की पूरी सूची विशे-
सोंठ	१)	लहसुन और प्याज	२।)	षांक के अन्त में लगी है।

मंगाने का पता - धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम

ले०—श्री. रामेशवेदी आयुर्वेदालङ्कार, हरिद्वार ।

परिचय-ज्ञापक नाम—

सुमना (सुन्दर, मन को अच्छा लगने वाला) शीर्षपर्ण (शाखाओं के सिरों पर पत्ते गुच्छों में लगते हैं), पवनेष्ट (वायु का प्रिय वृक्ष), कीरेष्ट (तोतों को इसका फल बहुत प्रिय होते हैं), काकफल (कौआ भी फलों को चाव से खाते हैं)।

गुण प्रकाशक नाम—

नियमन (रोग नियन्ता), छर्दन (वामक) सुभद्र (उत्तम लाभकारी), सर्वतोभद्र (सब प्रकार से, अथवा जिसका प्रत्येक भाग उपयोगी है), वरतिक्त, सुतिक्तक (बहुत कड़वा), वरत्वच (श्रेष्ठ गुण वाली छाल वाला); अरिष्ट (अहिंसित इसमें कीड़े नहीं लगते)।

भाषाओं में इसके नाम—

हिन्दी–नीम ।

बङ्गाली–निम्ब गाछ ।

गुजराती–लिंबड़ो ।

अंग्रेजी–इण्डियन लिलेक, दि नीम या मार्गोसाट्री

लेटिन–मेलिया एजेडिरेक्टा ।

नैसर्गिक वर्ग–लिलिएसी ।

प्राप्त स्थान—

भारत के अधिक स्थानों में यह वृक्ष सब जगह बोया हुआ या बोये हुए वृक्षों से स्वतः उगा हुआ आप मिलता है। उत्तर पश्चिम के शुष्क जलवायु में और लङ्का में सर्वत्र बोया जाता है। हिमालय के निचले भागों में कर्णाटक और दक्षिण के कुछ भागों में इरावती घाटी के शुष्क प्रदेशों में प्रोम जिले में योमा पहाड़ों में, बृटिश फ्रंटियर से परे और सम्भवतः बर्मा के अधिक जंगलों में यह वृक्ष साधारण है। देहरादून व सहारनपुर जिलों में जंगली और बोया हुआ दोनों रूपों में मिलता है। शिवालिक पर्वतों के साथ २ आमतौर पर मिल जाता है और यहां यह प्रकट रूप में जंगली मालूम होता है। सतलज के पश्चिम तक मिलता है और यहां यह अपेक्षाकृत कम है, आकार में भी छोटा होगया है। झेलम से परे यह सर्वथा लुप्त हो जाता है। कुमांयूं में पांच हजार फीट तक पहुंच गया है।

उत्तरीय और पश्चिमीय भारत में गांवों की चौपालों, धर्मशालाओं, गांव के बाहर पहाड़ों, घेरों और बगीचों के आस-पास तथा सड़कों के किनारे बहुधा लगाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।-

स्पति शास्त्र के कुछ आधुनिक विद्वान् नीम वास्तविक उद्गम स्थान भारत में होने से रकट करते हैं। बहुधा बोये हुए रूप में वृक्ष ा ही इसका मुख्य कारण है। परन्तु सहारन- र देहरादून जिलों में व शिवालिक जङ्गलों में ने अधिक अन्दर के गहन हिस्सों में देखने ा है कि इसकी भारतीय मौलिक उत्पत्ति पद नहीं रहती और वहां पर यह विश्वास असंगत जान पड़ता है कि अधिक या कम र बोये हुए वृक्षों से इसका विस्तार उन जङ्गलों य तक हो गया है। यह तो निर्विवाद है कि शताब्दी ईस्वी पूर्व अर्थात् चरक सुश्रुत के से यह भारत में औषधोपयोगी द्रव्य के रूप ग किया जारहा है। दोनों ग्रन्थकार इसके त्तों और छाल को कषाय आदि विभिन्न में इस्तेमाल करते हैं। इससे मालूम होता है म काल में यह सुगमता से प्राप्त था और सर्व- रण तथा चिकित्सकों की पहुँच में था। यद्यपि त रूप से नहीं कहा जा सकता कि तब यह बगीचों में ही लगाया हुआ मिलता था या ों में स्वयं गया हुआ। फिर भी अनुमान होता बगीचों में बोये हुए वृक्षों से निकल कर यह यों के आस-पास फैल चुका होगा।

ोगी भाग

छाल, जड़ की छाल कच्चे फल, बीज और उनसे लने वाला तैल, पुष्प, पत्र, काष्ठ निर्यास, मद र वृक्ष का प्रत्येक भाग उपयोग में आता है।

ह—

ल उस समय इकट्ठे करने चाहिये जब बहुत छोटे या अपने स्वाभाविक आकर से आधे आकर तक चने से पूर्व ही। इन्हें छोटे २ कतरों में काट कर में सुखालें और नमी रहित शुष्क स्थान पर र पात्रों में रखें।

छाल और मूल की छाल की बाहरी तह न लेकर अन्दर की छाल लेने का ध्यान रखना चाहिए और सूखी तथा पुरानी छाल की अपेक्षा ताजी छाल लेना अधिक अच्छा होता है।

चिकित्सा में उपयोग—

ज़ख्मों पर

व्रणों और त्वचा के रोगों पर बहिःप्रयोग के लिये नीम के पत्ते पुल्टिस, मरहम और लेप भिन्न २ प्रकार से प्रयुक्त होते हैं। पत्तों को उबलते जल में डाल कर बनाया फाण्ट, पत्र, कल्क या पत्तों को शहद के साथ मिलाकर बनाया लेप, दूषित फुन्सियां, अस्वास्थ्यकर ग्रन्थिक सोजिशों, फोड़ों और व्रणों पर लगाने से कृमिहर का कार्य करता है और व्रणों की सफाई करता है।

निम्ब पत्राणि संपिस्य मधुना व्रण शोधनम् ।
(हारीत. चि. ३५)।

कैयदेव इसे श्रेष्ठ कृमिनाशक समझता है। गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी से सम्बन्धित श्रद्धानन्द सेवाश्रम हस्पताल में सांसर्गिक फिरंग व्रणों में पारद के सुचिवेधों के साथ व्रणों को नीम के ताजे पत्तों के तीव्र कषाय से धोने के अतिरिक्त बिना किसी प्रकार का दूसरा उपचार किए. मैंने बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त किये हैं। शीघ्र ही व्रणों से स्राव निकलना बन्द हो गया था और लगभग दो सप्ताह में व्रण ठीक हो गया था।

पत्तों का कषाय हलका कृमिहर रोपण घोल है। नीम के पत्ते, घी, शहद, दारुहल्दी तथा मुलहठी के मिश्रित कल्क को गोंद में लगा कर व्रणों में रोपण के लिये लगाया जाता है।

निम्ब पत्र घृत क्षौद्रदार्वीमधुकसंयुना ।
वर्तिस्तिलानां कल्को वा शोषयेद्रोपयेद्व्रणान् ॥
(भै० र० व्रणशोथा०, ४०)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोड़ों को नीम के जल या कषाय से प्रतिदिन धोना चाहिये और फिर इसके पत्तों से व्रणों को ढँक देना भी प्रचलित रिवाज है। पत्तों के कषाय से घावों को धोवे, व्रणोत्पत्ति की पश्चात्-चिकित्सा में योनि को पिचकारी द्वारा धोने में निर्बल कार्बोलिकाम्ल के समान लाभकारी है। दुष्ट व्रणों, शोथ-युक्त ग्रंथियों, रगड़ और मचकोड़ पर इसके कषाय का सेक करने से वेदना शान्त होती है। नीम के पत्ते, बच, हींग, सैंधानमक और सरसों का धूपन व्रण की रूक्षता और कण्डू को दूर करता है, वेदना शान्त करता है और व्रण के कृमियों को मारता है।

निम्ब पत्रवचाहिंगु सर्पिर्लवण सर्षपैः
धूमनं स्याद् व्रणे रौक्ष्म क्रिमि कण्डुरुजापहम् ॥
(भै० र०, व्रणशोथा. ४३)।

शीतला में पत्तों के कल्क का बहि: प्रयोग किया जाता है। चेचक या कॉपॉक्स में जब दाने भर कर व्रण बनने लगते हैं तब नीम के ताजे पत्तों को पीस कर चौबीस घण्टे में दो या तीन बार लगाने से बहुत आराम होता है। हलकी और सामान्य सब अवस्थाओं में यह लाभप्रद होता है, परन्तु मसूरिका के कुछ तीव्र रूपों में यह सर्वथा अनुपयोगी सिद्ध हुआ है। मसूरिका रोगी के बिस्तर पर इसके पत्ते बिछा दिये जाते हैं और इसी के पत्तों के पंखे से हवा की जाती है नीम की छाल, पित्तपापड़ा, पाठा, पटोल पत्र, कुटकी, बांसे की छाल, दुरालभा, आंवला श्वेत चन्दन और लाल चन्दन के काथ में खांड़ डाल कर पीने से त्रिदोषज मसूरिका ज्वर तथा विसर्प नष्ट होते हैं। मसूरिका बाहर निकल कर फिर अन्तर्विलीन हो गई हो तो इस काथ के देने से फिर बाहर निकल आती है। देखें-(भै. र. मसूरिकाधिकार ६)। नीम के बीज, बहेड़े के बीज तथा हल्दी दो-दो माशे एकत्र कर अच्छी प्रकार पीस कर ठंडे जल के साथ पीने से स्फोट और मसूरिका नहीं होती (वही, ३२)।

तिल तैल के साथ मिलाकर बनाई पत्तों की पुल्टिस अस्वस्थ व्रणों के लिये बहुत लाभप्रद है। वेदनायुक्त और दूषित व्रणों विशेषकर लम्बे समय तक चलने वाले व्रणों में, नीम पत्र की पुल्टिस उत्तेजक रूपमें लाभकारी होती है। इसका तय्यार करना सुगम है। ताजे पत्तों को पर्याप्त परिमाण में लेकर गरम जल के साथ पीस लें। इसे कपड़े पर फैला कर व्रणयुक्त पृष्ठ पर लगादें। कभी २ इसमें वेदना और क्षोभ उत्पन्न हो जाता है। इससे बचने के लिये इसमें समान भाग चावलों का आटा मिलाया जा सकता है। घाव में कीड़े हों तो उनको मारने के लिए पत्तों के कल्क में थोड़ी हींग डालकर बांधने के लिये भावमिश्र सलाह देते हैं।

आंखों के रोग

आंख दुख आने पर नीम के हरे पत्ते आंखों के सामने बांध दिए जाते हैं जिससे सूर्य की प्रबल किरणों से आंखों में चौंध न लगे। नेत्र-रोगों में अन्य द्रव्यों के साथ आश्च्योतन में नीम प्रयोग में आता है। बहुत से अञ्जनों में इसके पत्ते और गोंद डाले जाते हैं।

अञ्जनमद्युपरोधे कर्तव्यं बस्तमूत्र पिष्टैस्तु।
दारुव्योषहरिद्राकरवीर करंज निम्बसुरसैस्तु ॥
(च., चि. अ. २३. ६८।)

नीम की ताड़ी से भावित या नीम में गाड़ कर रखे हुए सुरमे में विशेष गुणोदय हो जाता है। इसे बनाने की विधि इस प्रकार है। नीम की एक मोटी जड़ में खोल बनाकर उसमें सुरमे की डलियां रखदें और नीम की लकड़ी या छाल से ही खोल के मुख को बन्द करदें। दो मास तक रखा रहने के बाद निकाल कर बारीक पीसलें और आंजने के काम में लायें। इस प्रकार बनाये सुरमे में कहा जाता है कि शीतल प्रभाव विशेष आजाता है और पैत्रिक रोगों में भी यह विशेष लाभ करता है।

[शेषांश ५५९ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सर्वरोग हरो निम्ब:"

ले --साहित्यायुर्वेदाचार्य रामेश्वर शास्त्री, विद्यालङ्कार, लक्ष्मणगढ़ [सीकर]

आयुर्वेद शास्त्र की इस सूक्ति पर जैसे-जैसे परीक्षण किया जारहा है वैसे-वैसे इसकी सत्यता प्रमाणिकता स्पष्टतया परिलक्षित होती है, मानव शरीर यदि रोगों का घर है तो नीम प्रत्येक रोगों को अनुपान भेद द्वारा मिटाने की शक्ति रखने वाला पीयूष पाणि है। दूसरे शब्दों में अगर यह कहा जाय कि आयुर्वेद-शास्त्र द्वारा वर्णित और प्रयोग दुनियां में कदाचित न रहें और केवल निम्ब ही रहे तब भी आयुर्वेद का अस्तित्व संसार में रह सकता है। इस पर जो जो प्रयोग किये हैं वे पूर्णतया सफल रहे हैं। एक दो उदाहरण प्रस्तुत हैं।

हमारे यहां एक छात्र है। अवस्था १८ वर्ष की है। उसके होंठ पर एक फुंसी हुई। उसने साधारण फुंसी समझकर दबा दिया। वह फैल गई और उससे रक्त निकलने लगा। साधारण उपचार किये पर बढ़ता गया। वह सरकारी होस्पिटल गया। उन्होंने उपचार करना प्रारम्भ किया परन्तु जैसे २ उपचार होता था व्रण बढ़ता जाता था। होठ पर मांस लटकता दिखाई देने लगा। रक्त रुकता न था। आखिर डाक्टर १५ दिन के उपचार इन्जेक्शन के बाद हताश हो गया और कहने लगा कि होठ कटाना होगा। इस लिये तुझे 'जोधपुर' बड़े होस्पिटल में जाना होगा। लड़का गरीब था। वहां का खर्च वह बर्दाश्त नहीं कर सकता था अतः कुछ आदमियों के कथनानुसार दातव्य औषधालय में उपचार कराने लगा। परन्तु सब बेकार, लड़का घबरा गया और मुझसे कहने लगा कि मुझे छुट्टी दे दो; न यह ठीक होगा और न मेरा रहना होगा। मैंने सब हाल पूछा उसने अथ से इति तक कह दिया। मैंने कहा-हताश मत होओ। पैसे ज्यादा लगाने वाली दवा गरीबों पर कम असर करती है, तुम्हारा यह रोग जल्दी ही ठीक हो जायगा, जाओ एक नीम का छोंडा (उपरी छाल) ले आओ, उसको जलाकर उसकी राख बनालो-उसने इस चीज को मजाक समझा परन्तु बहुत कुछ कहने सुनने पर केवल तीन दिन के लिए इसकी परीक्षा करने का वचन दे दिया-वह गया और जल्दी ही उसकी राख बनाकर ले आया। मैंने कहा थोड़े नीम के पत्तों को उबाल लाओ उसने ऐसा ही किया और मैंने दूसरे छात्रद्वारा उसे धीरे-धीरे उसके घाव को धुला दिया, धुला कर उस राख को उसके घाव में भर दी तीन दिन में घाव सूखने लगा और पन्द्रह दिन के बाद तो होठ बिलकुल ठीक हो गया। यह है नीम का चमत्कार।

दूसरा लीजिये--एक व्यक्ति "बौली बाल" खेलते हुए गिर जाने से चोट आई खून आने लगा, पास की डिस्पेन्सरी में जाकर "टिंचर" लगाया गया, पर उसमें मवाद पड़गया; डाक्टर ने पट्टी बांधी, पर पन्द्रह दिन होने पर भी वह ठीक न हुआ, उसने मुझे दिखाया मैंने कहा—अगर डाक्टर का उपचार छोड़ो तो कुछ सीधा सा तरीका बतलावें, उसने कहा मैं हैरान होगया हूं। रोजाना घाव कुरेदा जाता है दवा लगाई जाती है पर ठीक नहीं होता। मैंने कहा अगर ऐसा है तो आज कुछ नीम के पत्ते ले आओ, उनका रस निकाल लो और उसमें रूई का फाया भिगो कर घी में तललो, थोड़ी सी हरिद्रा मिलाकर बांधलो, दो दिन में ईश्वर ने चाहा तो ठीक हो जायगा। उसने ऐसा ही किया। ईश्वर कृपा से दो दिन में घाव बहुत कुछ ठीक हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम के गुण और प्रयोग

लेखक--आयुर्वेदालङ्कार वैद्य प्रह्लाद राय शर्मा आयुर्वेद विशारद, सालासर।

सभी चीजों में रस, गुण, वीर्य, विपाक और प्रभाव (शक्ति) ये पांच पदार्थ हुआ करते हैं। सभी चीजें इन्हीं पांचों पदार्थों के द्वारा अपने २ गुण-दोष प्रकट किया करते हैं। कहीं रस कहीं वीर्य कहीं विपाक और कहीं शक्ति की मौके २ पर प्रधानता हुआ करती है।

नीम का जिक्र वैद्यक शास्त्र के पुराने ग्रन्थों में कई जगह आया है। सुश्रुताचार्य ने अपने सुश्रुत ग्रन्थ के फल वर्ग, पुष्प वर्ग आरग्वधादि गण में इसके गुणों का जिक्र किया है।

नीम के गुण दोष-

नीम डण्डा हलका कब्ज करने वाला पचने पर कड़वा, अग्नि और ताप को नष्ट करने वाला, हृदय अप्रिय, थकावट प्यास खांसी-ज्वर-अरुचि और कृमि को नष्ट करता है। घाव पित्त कफ वमन कुष्ठ जी-मचलाना और प्रमेह-नाशक है। नीम तिक्त रस है शीत-वीर्य है और विपाक में कटु है। यह तिक्त रस तो है पर इसे खाने पर अरुचि नहीं होती। प्रायः जितने भी तिक्त रस वाले पदार्थ हैं सभी अरुचि-कर होते हैं परन्तु नीम में एक विशेषता है कि यह स्वयं अरुचकर होते हुए भी अरुचि-नाशक है। नीम का वृक्ष प्रायः सभी स्थानों में होता है शायद ही ऐसा कोई स्थान भारत में मिलेगा जहां यह पेड़ न हो इसमें गुण इतने भरे पड़े हैं. जिन्हें उपचार में लाये जावें तो गरीब जनता को बहुत लाभ पहुँचाया जा सकता है।

मैं आयुर्वेदिक ग्रन्थों से सहायता लेकर तथा स्वानुभूत प्रयोग लिख रहा हूं जिन्हें उपयोग में लाकर सभी बन्धुगण लाभ उठावें।

१--किसी तरह का चर्म रोग क्यों न हो, उसमें नीम का काथ पीना बहुत ही गुण-दायक है। यह औषधि कृमिनाशक है। भूख व पाचन-शक्ति को बढ़ाता है, इसके कुछ दिन रोगानुसार सेवन करने से शरीर के भीतर रहने वाला सूक्ष्म ताप जड़ से नाश होकर रोगी स्वस्थ हो जाता है।

२--शरीर के बराबर ज्वरांश रहना, काले रंग के फोड़े निकलना दुखदाई खुजली चलना आदि रोग पर नीम की अन्तर छाल का काथ उत्तम है इसके अतिरिक्त अर्बुद और वेदना हीन ग्रन्थि के लिये अक्सीर है।

मात्रा--२ तोला हरी ताजा छाल लेवें, काथ जल २० तोला अवशेष जल ५ तोला।

३--नीम का पत्ता आंखों को फायदा पहुँचाने वाला, कीड़े-विष-पित्त इनका नाश करने वाला है।

पित्त जनित नेत्र पीड़ा में इसके पत्तों को बांट कर टिकिया बनाकर बांधने से जलन शान्त होती है, परिक्षित है।

४--पारी से आने वाले ज्वर के लिये दिन में तीन बार नीम की अन्तर छाल का काथ पिलाना चाहिये।

काथ छानने के बाद २ रत्ती छोटी पीपल का चूर्ण डालकर पिलाना चाहिये।

घावों की शिथिलता पर

जिन घावों के मांस तथा चमड़ियां शिथिल हो जांय और इस कारण औषधियां जल्दी असर न करें तो घावों पर निबौलियों का शुद्ध तेल २-४ बार लगाने से वहां की शिथिलता नष्ट हो जाती है।

शिथिलता नष्ट होने के कुछ दिन बाद भी अगर यह तेल लगाया जाय तो इसी तेल से घाव अच्छा भी हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूध बन्द करने के लिये—

स्त्रियों का दूध बन्द करना हो तो उनके स्तनों पर नीम के पत्तों का कल्क चटनी सी बनाकर लेप करना चाहिये।

फोड़ों को खराब हवा से बचाने के लिये—

जिन फोड़ों में खराब हवा लगने से उनके दूषित होने का भय हो तो उनमें नीम के पत्तों की पुल्टिस बांधनी चाहिए।

अथवा जिस मकान में रोगी सोता हो उसके दरवाजे पर नीम की टहनियां टांगनी चाहिए।

शीत पित [पित्ती] में—

शरीर पर पित्ती निकलने पर नीम के तेल की मालिश करनी चाहिये। मौसम के अनुसार नीम की छाल का क्वाथ या हिम पिलाना चाहिए।

ज्वर के बाद की कमजोरी

नीम की अन्तर छाल का क्वाथ पीने से ज्वर के बाद की कमजोरी मिट जाती है।

बच्चों के घाव पर

नीचे से कच्चे और ऊपर से सूखे हुए घावों पर नीम का तेल लगाने से बहुत जल्द फायदा होता है।

बिगड़े हुये घावों पर

जो दुष्ट व्रण दूसरी औषधियों से नहीं मिटें उन पर नीम के पत्तों की पुल्टिस बांधनी चाहिये तथा छाल का सूक्ष्म वस्त्र-पूत चूर्ण शत-धौत घृत लगा कर बुरकना चाहिये।

शुष्क खुजली पर

नीम के तेल की मालिश से चमड़े की तमाम बीमारियां नष्ट हो जाती हैं।

चकत्ते और चमड़े के रोगों पर

चकते और चमड़े के रोगों पर नीम की पत्तियों के ताजे रस में हल्दी मिलाकर मालिश करनी चाहिऐ।

विषैले घावों पर

नीम की पत्तियों का रस सरसों का तेल और पानी उन्हें पकाकर लगाने से विषैले घाव ठीक होते हैं।

मुख दन्त रोग में

नीम की ताजी टहनियों की दांतुन से लगातार कुछ दिन मुख साफ करने से मुख के तमाम रोग नाश हो जाते हैं तथा मुख और श्वास शुद्ध हो जाता है क्योंकि जितने भी तिक्त रस वाले वृक्ष हैं, उनमें नीम सर्वोत्तम है। 'निम्बश्च तिक्तके श्रेष्ठ'।

दमा रोग पर

निबौलियों का शुद्ध तेल पान में रखकर खाने से दमा की बीमारियां अच्छी हो जाती हैं।

इसकी मात्रा ३० से ६० बूंद तक है।

बहुत बहने वाले फोड़ों पर

नीम की छाल की राख को उन फोड़ों पर लगानी चाहिये।

[पृष्ठ ५५६ का शेषांश]

कान के रोग—

पत्तों का कषाय कर्ण स्राव में कान को धोने में काम आता है। पत्र कल्क को सरसों के तैल में जलीय भाग उड़ने तक पका कर बनाया तेल कर्ण-शूल हर और पूतिकर्ण नाशक होता है। इसकी १०-५ बूंद कान में डालने से शूल तथा स्राव बन्द हो जाते हैं। पत्र क्वाथ से कान को स्वेद देना लाभकारी है। पैत्तिक शिरःशूल में कल्क माथे पर रखा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोड़ों की जलन

नीम की पत्तियों की पुल्टिस बांधने तथा पत्तों को औटाकर बफारा देने से फोड़ों की जलन मिट जाती है।

हैजा तथा ज्वर की ऐंठन और ठण्डक में

यदि हैजा और बुखार में ऐंठन होती हो और उनमें ठंडक मालूम पड़ती हो तो ऐसी दशा में नीम के तेल की मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

पतले दस्तों पर

नीम की जवकुट की हुई अन्तर छाल ५ तोला और पानी ५० तोला, इन्हें मन्द आंच से पाव भर रखकर उतार कर छान लें और फिर उसी में पहले जितना ही पानी डालकर पाव भर रहने तक औटावें, बाद में छान कर दोनों जगह वाला मिला कर शीशी में रख लेवें। जिस रोगी के पतले दस्त आवें उन्हें ५-५ तोला दिन में तीन बार पिलावें इससे पतले दस्त बन्द हो जायेंगे।

दुर्गन्धि के कारण ज्वर होने पर

पृथ्वी-वायु-जल तथा सड़े पत्तों और फूलों की दुर्गन्धीके कारण होने वाले ज्वर को मिटाने के लिये नीम की अन्तर छाल का काथ बनाकर पिलावें।

२२—खून सफाई के लिये (रक्त शुद्ध) के लिये नीम की अन्तर छाल का हिम या फांट बनाकर पिलाने से रक्त शुद्ध हो जाता है।

वायु रोग पर

नीम के तेल को पान में रख कर खिलाने से तथा रास्नादि काथ में इसकी ३० बूंद डालकर पिलाने से ऐंठन तथा कई तरह के वायु के विकार मिट जाते हैं।

देह के कीड़े मिटाने के लिये

चमड़े के सभी तरह के छोटे न दीख पड़ने वाले कीड़ों को मारने के लिये नीम के तेल की मालिश करनी चाहिये।

पित्त की खराबी पर

बसंत ऋतु में नीम के कोमल पत्ते व पुष्प सवा तोला काली मिरच ७ नग को अच्छी तरह घोट कर आधापाव पानी में छान कर ७ दिन तक पीने से रक्त शुद्ध हो जाता है फोड़ा, फुंसी नहीं निकलता, १ वर्ष तक आंखें दुखनी नहीं आती, गर्मी में (लूये) गरम हवा का असर नहीं होता और आमाशय को विकार रहित करता है।

उक्त पेय पीने के बाद घृत खाना आवश्यक है।

ज्वरातिसार पर-

पुराने ज्वरातिसार पर नीम की अनन्तर छाल का काथ पिलाना चाहिये।

जलन होकर होने वाले ज्वर में--

नीम की ६ माशे कोंपल काली मिर्च ११ नग की २ गोली बनाकर बुखार चढ़ने से पहले चार २ घंटे से लेवें।

छूत का असर मिटाने के लिये--

नीम की छाल का काथ बनाकर उसी से फोड़े-फुन्सियों को धोने से किसी तरह के छूत का असर नहीं होता है।

मोच और गिल्टियों के शोथ पर-

चोट लगने के कारण अथवा गिल्टियों पर शोथ हो तो उन स्थानों पर नीम की पत्तियों का बफारा देना चाहिये।

गठिया वात की सूजन पर—

गठिया की शोथ मिटाने के लिये नीम के तैल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ी मालिश करनी चाहिये ।

ावों और सड़ी हुई हड्डियों पर-

नीम की पत्तियों को घी में भून कर पीसलें उस जितनी जरूरत हो घृत मिलालें । इसे छिछड़ेदार ावों और सड़ी हुई हड्डियों पर लगाने से बहुत लाभ ाता है ।

रगड़ से छिली हुई चमड़ी पर घाव होजावें तो ीम की निबौलियों का तैल लगाने से बहुत जल्दी ाभ होता है ।

क्त के शोधन और ताक़त के लिये-

नमक की ताड़ी पीने से सभी तरह के रक्त के वकार मिट जाते हैं और कुछ दिनों तक पीने से ाक़तवर हो जाता है ।

नासूर और पीव वाले फोड़ों पर-

जिस घाव में नासूर पड़ गया हो और उसमें से राबर पीव निकलता हो उस पर नीम की पत्तियों ी पुल्टिश बांधनी चाहिये ।

क बीमारी में-

नीम की छाल के काढ़े से कुल्ले (गरारे) करने ाहिये और मसूड़ों पर निबौलियों का तैल लगाना ाहिये ।

ेट के कीड़े मारने के लिए-

बैंगन या किसी दूसरे साग के साथ नीम की त्तियों को छौंक कर खाना चाहिये ।

कान से पीव निकलने पर-

नीम के तैल में मधु मिलाकर उसमें बत्ती भिगो कर कान में रखने से कान से पीव निकलना बन्द ो जाता है ।

आंखों की खुजली और जलन पर-

नीम की पत्तियों को मिट्टी के २ ढक्कनों के बीच रखकर आरने छाणों (कण्डों) की अग्नि में जला लेवें जब उनकी राख हो जावे तो उस राख को नीबू के रस में खरल करके सुखा लेना चाहिये ।

फिर सूक्ष्म पीसकर अंजन करना चाहिये इसमें कुछ भीमसेनी कपूर मिला दिया जावे तो और भी उत्तम रहेगा ।

दिमाग के कीड़े मारने के लिये

नीम के पत्तों का रस तिल के तैल में मिलाकर नस्य लेने से दिमाग के कीड़े मर जाते हैं ।

आंख के दर्द पर

नीम के पत्तों का रस निकाल गर्म २ आंखों में जिस ओर दर्द हो उसके विपरीत कान में डालना चाहिये । यदि दोनों में दर्द हो तो दोनों में डालना चाहिए ।

कान के मैल और दर्द पर—

नीम की पत्तियों का बफारा देने से कान का मैल निकल जाता है, और दर्द बन्द हो जाता है ।

पथरी गलाने के लिये—

बराबर कुछ दिनों तक नीम की पत्ती की राख खाने से पथरी गल जाती है ।

इसकी पूरी मात्रा ३ माशे की है; अनुपान जल ।

खुजली के लिये-

२ तोले नीम की कोमल पत्ती पीस छानकर शर्बत की तरह पीने से १५ दिन में पूर्ण लाभ होता है

प्यास पर—

अगर बहुत ज्यादा प्यास लगती हो तो नीम की पत्तियों को साफ मिट्टी में मिलाकर गोला बनालें और उस गोले को अग्नि में लाल करके पानी में बुझा लेवें । उस बुझे हुए पानी में से थोड़ा २ पिलाने से भयंकर प्यास भी शान्त हो जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्षाघात में—

नीम की निबौलियों का तैल निकाल कर रुग्ण अङ्गों पर मालिश की जावे तो वेग शान्त होता है और धीरे २ बीमारी शान्त हो जाती है।

मासिक धर्म खोलने पर —

नीम की छाल ४ माशे, गुड़ २ तोले और पानी डेढ़ पाव को औटावें आध पाव शेष रहने पर पिलाया जावे तो मासिक धर्म खुलकर होता है।

सिकता और इक्षुमेह पर—

नीम की अन्तर छाल का काढ़ा प्रातःकाल कई दिनों तक पिलाने से बहुत लाभ होता है।

आंख के फूला के लिये—

नीम के फूलों को छाया में सुखाकर महीन पीस लेवें, इसमें बराबर कलमी शोरा मिलाकर आंखों में अंजन करें, इससे आंखों की फुली, धुंधलापन, कीचड़ आना आदि विकार नष्ट होते हैं।

फोड़ों के दर्द पर—

नीम की अन्तर छाल को गौमूत्र से पीसकर दर्द स्थान पर लेप करना चाहिये सूखने पर उतार देना चाहिए दिन में २-३ बार लेप करना चाहिए।

दाद पर—

नीम के पत्तों को दही के साथ पीसकर लगाने से कुछ दिनों का दाद अवश्य नष्ट हो जाता है।

हाथ पैरों की जलन के लिये-

नीम के पञ्चांग की लुगदी बनाकर हाथ पैरों पर लेप करना चाहिये।

रक्तार्बुद पर

नीम की लकड़ी को पानी में घिसकर १ इञ्च मोटा लेप करने से रक्तार्बुद अवश्य नष्ट हो जाता है।

आंख दुखने पर—

नीम की पत्तियों का रस महीन कपड़े से छान कर अन्दर डालें, विशेष जलन होवे तो करीब ३ घं तक ऊपर इसी को पीस लुगदी बनाकर टिकिय बांधी जावे।

बवासीर के मस्सों पर-

नीम की निबौलियों का चूर्ण जल से फांकने स मस्से सूखते हैं।

साँप के जहर की जांच-

साँप काटे हुए आदमी को नीम की पत्ती चबा को देवें, यदि वे कड़वी न मालूम दें तो समझें वि जहर का असर हो गया है।

अफीम और संखिया के विष पर -

नीम की पत्तियों का रस पिलाना चाहिए तथ खूब तेज अर्क निकाल कर भी पिलाने से फौरन लाभ होता है।

वमन पर-

नीम की पत्तियों का स्वरस पिलाने से वमन बन्द होती हैं।

उरुस्तम्भ पर

नीम की जड़ को पानी में घिसकर गर्म २ लेप करने से उरुस्तम्भ आराम होता है।

उपदंश [गर्मी रोग] पर

एक सेर नीम की छाल को जवकुट करके १ सेर पानी में औटावें प्रथम रात्रि भर भिगो रक्खें, सुबह कपड़े से छान कर ५ तोले दोनों समय रोगी को पिलावें और उसी से गर्मी के घाव धोवें तो कुछ दिनों में गर्मी के घाव आदि सब ठीक होजायेंगे रक्त शुद्ध होकर शरीर तन्दुरुस्त हो जायगा, किन्तु लम्बा प्रयोग करना पड़ता है। स्वानुभूत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु सञ्चय

शीतला का टीका

शीतला के टीके की अनुपयुक्तता अब दुनियां के सामने अच्छी तरह आ चुकी है। इङ्गलैण्ड और अमेरिका में अब शीतला का टीका लगवाना जनता के लिये अनिवार्य नहीं रहा। किन्तु भारत में अब भी टीका लगवाना पड़ता है। अब इंगलैण्ड के कुछ डाक्टरों ने भारत के लिये एक विज्ञप्ति प्रकट की है और उसकी प्रतियां प्रान्तीय सरकारों के पास भेजी हैं। उन्होंने अपनी विज्ञप्ति में लिखा है।

"हम इङ्गलैण्ड वासियों ने लगभग सौ वर्ष तक शीतला के टीके का दुष्परिणाम भोगा। अनेक वर्षों के प्रयत्न के पश्चात् अब हमने उससे छुटकारा पाया है, हम चाहते हैं कि हमारे भारतीय भाई भी इस सुख का उपभोग करें। भारत में अङ्गरेजी सरकार ने ही इस प्रथा को आरंभ किया था अतएव उसके विरुद्ध भारतीय बन्धुओं को जाग्रत करना हम अपना नैतिक कर्तव्य समझते हैं अनेक अनुभवों से सिद्ध हो चुका है कि शीतला के टीके का परिणाम घातक होता है। हम चाहते हैं कि इङ्गलैंड के समान भारत में भी जबरदस्ती टीका लगाने की प्रथा बन्द होजाय, इंगलैण्ड, उत्तर अमेरिका के कई राज्य आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में भी जबरदस्ती की प्रथा बन्द हो गयी है। शीतला का टीका लगाने से माता निकलने का प्रतिबन्ध नहीं होता और न शीतला की बीमारी से होने वाली मृत्यु ही टलती है। इसके विपरीत शीतला के टीका से आरोग्य बिगड़ता और कभी २ मृत्यु भी होजाती है। शीतला या देवी की बीमारी के मुख्य कारण दरिद्रता, अस्वच्छता, अशास्त्रीय पोषण और आहार है। इसलिये हमारा सुझाव है कि इस सिद्धांत के अनुसार सरकार शीतला के टीके जैसे राष्ट्र-विघातक कार्य में पानी की तरह पैसा न बहाकर उसे जनता की आरोग्य वर्द्धक योजना में लगावे और देश के अनेक रोगों की प्रवृत्ति का प्रतिबन्ध करे। आशा है भारतीय सरकार और प्रान्तीय सरकार इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगी। —वैद्य।

× × ×

कस्तूरी की परीक्षा

स्वाद –

यह सबसे उत्तम परीक्षा है, किन्तु उन्हीं के लिये जो इसका सेवन अधिक करते हैं। असली कस्तूरी रस में कटु और बहुत स्निग्ध होती है। जैसी कटुता और स्निग्धता असली कस्तूरी में होती है, वैसी आज तक किसी भी नकली कस्तूरी में नहीं देखी गई।

गन्ध –

आजकल बाजारों में विविध प्रकार के विदेशी सेण्ट प्रचलित हैं, जो कस्तूरी के समान गन्ध रखते हैं, किन्तु असली कस्तूरी से इनका गन्ध तीव्र और अल्पस्थायी होता है। अगर असली कस्तूरी खुली छोड़ दी जाय, तो यद्यपि वजन में क्रमशः कम होती जायगी, तथापि गन्ध तब तक नहीं नष्ट होगी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक सम्पूर्ण कस्तूरी गन्ध के परमाणु उससे न निकल जांय। नकली कस्तूरी की गन्ध एक ही दिन में उड़ जाती है।

रासायनिक परीक्षा —

अगर इसे रेक्टिफाइड स्प्रिट में घोलें तो घुल जाती है और जो तलछट बचता है उसमें तीन वस्तुएें पाई जाती हैं–झिल्ली, दूसरे कुछ रेत के कण, तीसरे कुछ बाल। इनकी मात्रा फी तोला कस्तूरी में माशा डेढ़ माशा से अधिक नहीं होती पर नकली कस्तूरी जो जुन्दवेदस्तर से बनाई जाती है उसका कुछ अधिक हिस्सा स्प्रिट में घुलता है बाकी जितनी भी नकली कस्तूरी है वह सब बहुत ही कम घुलती है।

दूसरी परीक्षा

कस्तूरी को जल में भिगो देने से कुछ देर में जल का वर्ण पीला सा हो जाता है, पर नकली कस्तूरी सिवाय जुन्दवेदस्तर के कोई भी पीताभ जल नहीं देती। जुन्द की बनी कस्तूरी का जल गहरा पीत और भूरा होता है। यदि हाथ न लगाया जाय अथवा हिलाया न जाय तो जल में इसका रंग कस्तूरी की अपेक्षा अधिक देर में आता है।

तीसरी परीक्षा - कस्तूरी को एक सूत में खूब मल देते हैं और उसको लहसुन के रस के हलके घोल में एक बार डुबो कर निकाल लेते हैं तब सूत के सूख जाने पर गंध लेने से अगर कस्तूरी की गंध आवे तो समझना चाहिये कि उत्तम कस्तूरी है, किंतु धागे पर कस्तूरी मलने के समय पर्याप्त मात्रा में मलना चाहिये।

—(आयुर्विज्ञान)

× × ×

सोडावाटर

आम तौर से लोगों का यही विश्वास है कि सोडा लेमोनेड आदि पेय, जिसमें कर्वनद्विअम्ल वायु (Carbonic Acid gas) मिली रहती है, शरीर को कोई हानि नहीं पहुंचाता बल्कि पाचन-क्रिया को उद्दीप्त करती हैं। यहां तक कि डाक्टर और वैद्य भी यह नहीं मानते कि सोडा स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

वास्तव में सोडा लेमोनेड आदि पेय पदार्थ पाचन क्रिया को खराब कर देते हैं। यह कैसे और क्यों होता है, इन प्रश्नों का जवाब देने के ही विचार से मैंने यह सवाल उठाया है।

आमाशय में साधारणतया भोजन और पानी पहुंचाया जाता है। थोड़ी सी हवा भी पहुँचती है लेकिन वह केवल बाहरी वायु ही है जिसमें नवासार वायु, अंगार वायु और प्राण वायु समान अनुपात में मिली रहती है। इनसे आमाशय में किसी भी प्रकार का उद्रेक या उफान नहीं होता। लेकिन सोडा आदि पेय में सिर्फ अंगार वायु (Carbonic Acid gas) मिली रहती है आमाशय को जिसकी कोई जरूरत नहीं होती। भोजन करते समय मुंह से लालाजल निकलता है और वह भोजन के साथ आमाशय में पहुँचता है। लालाजल स्वभावतः क्षारयुक्त होता है। वह आमाशय के जाठर रस के साथ मिलाकर भोजन को पचा देता है। यह नित्य की क्रिया है। इस क्रिया से पाक-स्थली में कोई आन्दोलन नहीं होता। लेकिन सोडा पीने के बाद पाक-स्थली में मानों प्रलय ही उत्पन्न होजाता है। उस समय पाचक रस भी अधिक मात्रा में निकलता है जिसका परिणाम यह होता है कि पाक-स्थली और छोटी आंतों का भोजन अजीर्णावस्था में ही नीचे की ओर ढकेल दिया जाता है और भोजन के सार को शरीर ग्रहण नहीं कर पाता अर्थात् भोजन रस, रक्त आदि धातुओं में परिणत नहीं हो पाता। सारा भोजन मल बन जाता है। इस क्रिया से पाचन प्रणाली पर इतना भार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ता है कि वह थक कर अशक्त हो जाता है। यदि अपनी अज्ञानता या नादानी के कारण रोजाना ा पीते रहें तो पाचन-प्रणाली जबाव दे देती है के फलस्वरूप मन्दाग्नि, पाण्डु आदि रोग न्न हो जाते हैं। मैं यह विवरण किसी को ांकित करने या घबड़ा देने के इरादे से नहीं दे ा हूं। यह तो विज्ञान सम्बन्धी थोड़ी भी जानकारी ने वाले सज्जनों को ज्ञात हो चुका है।

(जीवन सखा)

÷ ÷ ÷

लों का व्यायाम--

१—सफाई से कन्घी करने के बाद उङ्गली के ों से धीरे-धीरे सहलाना शुरू करना चाहिये, धीरे-धीरे सहलाने की गति को बढ़ाते जाना हिये, यहां तक कि सारा सिर झनझनासा उठे। मिनट तक यह क्रिया चलानी चाहिये।

२—रत्रि में कुछ मोटे कंघे से तेल लगाने के ात् इस प्रकार बाल काढ़ें कि सर में कोई झटका गे पर बालों में काफी जोर पड़े। इस प्रकार ली सी निकलती है।

ालों को बहुत सावधानी पूर्वक धोना चाहिये। ों को सुलझा कर काढ़ने के पश्चात् दो भागों में कर उन्हें धीरे-धीरे निम्न लिखित वस्तुओं से ा चाहिए।

१—आंवला चूर्ण और नीबू रस—बाल काले, और मजबूत होंगे।

२—नीबू और बेर के पत्ते—नये बाल उगेंगे लम्बे होंगे।

३—दही—बालों की जड़ें न फटेंगी।

(वीर)

× × ×

मसालों के गुण दोष

अजवाइन—

चरपरी, गर्म तथा तीक्ष्ण होती है। पाचन शक्ति को बढ़ाती है, वायु का नाश करती तथा पित्त की वृद्धि करती है। कफ तथा कृमि हटाती है और प्लीहा के रोग में हितकर है।

अद्रक—

तीक्ष्ण, स्वादवर्धक तथा गरम होती है। अग्नि को प्रदीप्त करती है। वात तथा कफ का नाश करती है, रुचि बढ़ाती है, कण्ठ तथा जीव को शुद्ध करती है, कफ हटाती है. खांसी में लाभकर होती है, रक्त-पित्त, ज्वर तथा दाह में लाभकर है।

इलायची—

ठंडी कटु और हल्की होती है। वात-नशक है। अग्नि को बढ़ाती है। श्वास, कास तथा बवासीर को हितकर होती है।

इ ची (बड़ी)—

गरम, रूक्ष तथा अग्निदीपक होती है। कफ तथा पित्त के विकार में हितकर है। प्यास घटाती है। वान्ति, शिर दर्द तथा मुख के रोगों को लाभ पहुँचाती है।

काली मिरच—

तीक्ष्ण चरपरी तथा कड़ुई होती है। रूक्ष तथा क्षुधावर्धक होती है। कृमि नाश करती है, गरम है, वात और पित्त को बढ़ाती है परन्तु कफ हटाती है। श्वास रोग में लाभदायक होती है।

जीरा—

इसके दो भेद हैं–१ सफेद जीरा, जो केवल 'जीरे' के नाम से प्रसिद्ध है, (२) स्याह जीरा। दोनों प्रकार के जीरों के गुण प्रायः समान ही हैं। यह चरपरा, गरम दीपन, क्षुधावर्धक तथा पाचक होता है। बलकारक तथा रुचिकर है। पित्त को बढ़ाता है, दृष्टि को तीक्ष्ण करता है वायु के विकारों को नाश करता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दालचीनी—

गरम तथा चरपरी होती है। सिरकी पीड़ा में हितकर है । वायु का शमन करती तथा पेशाब बढ़ाती है। बल तथा वीर्य की वृद्धि करती है। तृष्णा को शान्त करती है, अग्नि को प्रदीप्त करती है। उत्तेजक है तथा वायु के दोषों को हटाती है।

धनियां—

स्निग्ध तथा ठण्डी होती है। दीपन है, मूत्र अधिक लाती है, त्रिदोषध्न है। तृष्णा, दाह, आंव, श्वास, कास तथा कृमि-रोगों में हितकर है। बल तथा वीर्य को बढ़ाती है। मस्तिष्क को तर रखती है, रोचक है तथा मेदे को पुष्ट करती है।

नमक—

शुष्क, गरम तथा स्वादु होता है, भूख को बढ़ाता है तथा पाचन है। भोजन का परिपाक करता हैं। सांभर नमक बादी तथा कफ को दूर करता है। सैंधा नमक क्षुधा को तीव्र करता है, वायु को हटाता है। काला नमक अधिक पाचन है। खारी नमक रुधिर बढ़ाता है तथा वायु का नाश करता है।

मेंथी—

गरम कटु तथा पित्त को बढ़ाने वाली है। वीर्य को बढ़ाती है कफ को हटाती है तथा कण्ठ को स्वच्छ करती है, वायु को शान्त करती है, आंव हटाती है तथा ज्वरघ्न है।

राई—

रूक्ष तथा चरपरी होती है। बलकारक होती है तथा इसको पीस कर यदि किसी पकाये हुये पदार्थ में मिला कर दो-एक दिन रक्खा जावे तो उसमें खटाई आ जाती है। इसका प्रयोग रायता कांजी इत्यादि में होता है।

गरम तथा रूक्ष है, क्षुधा को बढ़ाता है तथा कफ को हटाता है, पित्त का नाश करता है बल वीर्य तथा नेत्रों के लिये हितकर नहीं। रक्त में विकार उत्पन्न करता है तथा देर में पचता है।

—ग्राम-उद्यो

× × ×

दाँतों की रक्षा—

दांतों को साफ, मजबूत और स्वस्थ रख आरोग्यता के लिये आवश्यक है। दांतों की हड्डी ऊपर एक पतला चमकदार परत पड़ा रहता यही दांतों का मुख्य भाग है। उसके नीचे सीमेंट का सा भाग जमा रहता है। इन्हीं में खर आने से दांत खराब होते हैं। यदि नित्य नियम दांतून किया जाय और भोजन के बाद दांत अच्छ तरह साफ किये जांय तो दांतों में खराबी प्रायः न हो पावेगी। दूषित भोजन से भी दांत खराब हो हैं। यदि भोजन अच्छी तरह चबाकर खाया न ज तो उसका पाचन ठीक से नहीं होता, पाचनश बिगड़ जाती है। इससे रक्त में खराबी आती है अ वह खराबी मसूढ़ों और दांतों की जड़ों को हा पहुंचाती है। खट्टी और एसिड वाली चीजों का अस दांतों पर बहुत बुरा पड़ता है। खासकर जिनके द खराब होते हैं उनके दांतों पर अधिक खराब अस पड़ता है। इससे दांतों का चमकदार भाग धीरे नष्ट होने लगता है। जिससे मसूड़े मुलायम प जाते हैं आहार के पिष्टभाग, चर्बी और जल बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। बनस्पतियों से प्राप्त हो वाले लवण भी हानिकर नहीं। एसिड उत्पन्न कर वाले कारबोहाइड्रेट दांतों के लिये अधिक हानि कर हैं। चीनी और मिठाई का सेवन भी दांतों लिये हानिकर है। एसिड की फैक्टरियों और हल बाई की दूकानों में काम करने वालों के दांत अधि खराब होते हैं। भोजन में विटामिन (ए) ओज वर्ध नीय, विटामिन सी० रक्षनीय और विटामिन डी वृष्य है, आहार की कमी से भी दांतों में खराबी पैद होती है। ऐसे लोगों को रक्तालपता (स्कर्वी) होत

[शेषांश पृष्ठ ५६६ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशंसित प्रयोग

गृध्रसी की पेटेन्ट दवा -

श्वेत अर्क के फूल ऽ।　　　हींग १ तोला
मोंम इतना कि वह चूर्ण में ठीक होजाय

विधि---अर्क पुष्प और घी में भुनी हुई हींग को कूट पीस कर बहुत बारीक कपड़-छान कर लेवे फिर मोंम पिघला कर उसमें चूर्ण मिला कर खरल में चार दिन तक खरल करे। फिर चने की बराबर गोली बना कर छाया में सुखावें।

मात्रा--२ गोली पानी के साथ निगल जाय।

पथ्य--घी, दुग्ध हलवा खावे, वायु से बचे।

वातारि तैल -

तैल सरसों ऽ१　　　गांठ लहसन ऽ।
शु० अजवाइन आध पाव　　　सोंठ ५ तोले
कपूर　　　५ तोला

विधि—लहसन के छिलके निकाल कर अजवायन एवं सोंठ का चूर्ण बना कर तैल में मधुराग्नि से पाचित करे, बाद को जब द्रव्य जल जाय तो तैल की कढ़ाई को नीचे उतार लें, उसमें कपूर छोड़ दें, आध घण्टे में उसको खूब मोटे वस्त्र से छान लें, लेकिन कपूर डालते समय तैल को एक थाली से ढंक दें ताकि कपूर तैल से न उड़े।

गुण—समस्त वायु-विकार निमोनियां शारीरिक हर प्रकार का स्नायु दौर्बल्य मालिश करने से दूर होते हैं।

—कविराज डा० योगेश्वर प्रसाद शर्मा, वैद्य-
वाचस्पति एम. बी. बी.
कोटा बाग (नैनीताल)

दमे (श्वास) की फकीरी दवा—

यह प्रयोग एक महात्मा द्वारा प्राप्त हुआ है। कई बार परीक्षा किया गया, अति उत्तम पाया, वैद्य बन्धुओं तथा जनता के हितार्थ 'धन्वन्तरि' में प्रकाशित किया जा रहा है, आशा है लाभ उठावेंगे। प्रयोग साधारण है मगर विश्वास पूर्वक सेबन करने से अवश्य लाभ देगा।

प्रयोग--१ तोला समुद्री नमक को १ छटांक पानी में रात्रि को भिगो दें। सुबह उस पानी को १ तोला घी में छोंक कर पी जावें। इस प्रकार कुछ दिन सेवन करने से कफ कट-कट कर बाहर निकलने लगेगा और दमा नष्ट हो जावेगा।

पथ्य--बेसन की रोटी और लौनी घी खावें। तेल मिर्च, गुड़. खटाई से परहेज करें।

नोट--प्रयोग करते २ जब कलेजे में जलन होने लगे तब औषधि खाना बन्द करें। यह अवश्य ध्यान रक्खें।

विशूचिका पर-

जब हैजा होता है तो उस समय पेट में औषधि, पानी कुछ नहीं पचता। वमन द्वारा सब बाहर आ जाता है यह अवस्था चिकित्सक के लिये कड़ी परीक्षा का समय होता है। ऐसे समय में यह योग मेरा स्वयं का अनुभूत है।

अंग्रेजी पपीता १ नग लेकर गुलाब के अर्क में २ रत्ती की मात्रा में घिस २ कर कई बार दें। क़ै-दस्त बंद हो जावेंगे। इससे हैजे के मरणासन्न रोगी भी आरोग्य होते हैं।

—राजवैद्य पं० काशीराम 'धन्वन्तरि'
झालू (बिजनौर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूमोनिया पर अक्सीर—

मुझे यह प्रयोग ग्रामीण जीवन में (जब मैं जोधपुर स्टेट में नौकर था) एक व्यक्ति से ऐसे समय में प्राप्त हुआ था कि जब हम सब कुछ खो चुके थे उसके सेवन से हमें पूर्ण रूप से सफलता मिली। उसके बाद कई बार न्यूमोनियां की तीनों दशाओं में काम लेने पर भी सफलता मिलती रही है।

पूरी उम्र वाले को एक खुराक :—

हल्दी चूर्ण आधा तोला भेड़ (स्त्री लिंग) जिसे हमारे मारवाड़ में गाडर कहते हैं उसका-बीड़ (मूत्र) ढाई तोला। दोनों वस्तुओं को अलग २ रक्खें।

एक माटी का करबा (सिकोरा) जिस पर ढक्कन हो पांच सेर कण्डों के बीच रखकर कण्डों को जलावे। सिकोरा लाल हो जाने पर सावधानी से ढक्कन ऊपर कर जल्दी से हल्दी चूर्ण व बाद में मूत्र डालकर ढक्कन लगाकर नीचे उतार लें (ध्यान रहे उफान से बाहर निकलने नहीं पावे)

अवस्थानुसार कम ज्यादा मात्रा, दिन-रात में २-३ बार दें। ताप परिमाण सहसा ७ वें ६ वें या ११ वें दिन गिर कर साधारण हो जाने पर दवा बन्द कर दें।

—श्री० सरदार चन्द सींधवी-
वैद्यभूषण फलौदी।

अनन्त वात हर योग —

मल्लसिंदूर		कान्तिसार
अर्कक्षार		मिर्च सफेद
छोटी पीपल		सोंठ, बाकुची
पीपलामूल	चित्रक मूल	छाल

विधि—प्रत्येक औषधियों का चूर्ण बराबर २ कांटे से तोल कर उत्तम खरल में डालकर इतनी घुटाई करें कि बहुत ही सूक्ष्म होजाय।

प्रयोग विधि—अनन्तवात रोगियों को १ रत्ती से २ रत्ती तक मलाई-मिश्री या घी-शहद में मिला कर खिलावें, प्रातःकाल गुनगुना जल और रात को औषधि के ऊपर गर्म दूध (बिना मीठे का) दें।

नोट—१ रसराज महौषधि में लिखे षटबिंदु तैल की मालिश करें और दो बूंद कानों में भी डालें।

२—यह प्रयोग कुकरा राज्य के प्रधान चिकित्सक पं० शीतलादीन जी राजवैद्य ने बताया था और सन् १६३२ से अनेकों रोगियों पर सफलता-पूर्वक सेवन किया जा चुका है।

—वैद्य सोहनलाल गुप्त, कुदेरा।

[पृष्ठ ५६६ का शेषांश]

और मसूड़े फूल जाते हैं। विटामिन ए० और डी० के अभाव से शरीर में सुधासारीय अंश कम पड़ जाते हैं और दांतों का पोषण रुक जाता जाता है। जिन बच्चों के आहार में विटामिन ए० और डी० की कमी रहती है, उनके दांत देर से निकलते हैं। सयानों में दांत की कतार और सन्धि खराब हो जाती है। दांत चमकदार और मसूड़े मजबूत रहने से दांतों की रक्षा होती है। गर्भवती स्त्री यदि स्वस्थ हो और सुन्दर भोजन करे तो उसके बच्चों के दांत भी अच्छे रहेंगे। जरा बड़े होने पर फल और कच्चे शाक खाने का अवश्य अभ्यास रखना चाहिये। ब्रुश की अपेक्षा दातून से दांत साफ करना कहीं अच्छा होता है। सुधाजातीय क्षार, दूध, मट्ठा, पनीर, मक्खन, पत्रशाक, बीजदार शाक आदि से शरीर को मिलते हैं। फासफोरस और विटामिन ए० भी इनसे मिलते हैं। विटामिन सी० के लिये नीबू, नारङ्गी, टमाटर, आंवला और तरकारियां लेनी चाहिये। विटामिन डी० दूध, घी, मक्खन, पनीर और काडलीवर आयल या च्यवनप्राश से प्राप्त हो सकता है। ये तत्व दांतों के लिये लाभ-दायक हैं।

—सुधानिधि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल सिद्ध योग

आयुर्वेदशास्त्र में अनेक सरल और अचूक ...कारी योग हैं, जिनकी ओर वैद्य समाज का ...ान बहुत कम जाता है। बहुधा वैद्य बन्धु प्रसिद्ध ...गों और सूचीपत्री औषधियों का ही प्रयोग विशेष ...प से करते देखे जाते हैं। उन्हें आयुर्वेदार्णव में ...े हुए अनन्त अमूल्य लघुयोग-रत्नोंका व्यवहारिक ...ल्य (Effectual Value) आंकने का अवकाश ... नहीं मिलता, इसके अतिरिक्त आयुर्वेद के प्रसिद्ध ...न भस्म, गुटी, बटी, अवलेह चूर्ण आसव अरिष्ट ...तने सुलभ हैं, कि इच्छा करते ही हर शहर और ...स्बे की औषधियों की दुकानों में मिल जाते हैं; ऐसी ...लत में आयुर्वेदार्णव में गोता लगाकर योग रत्नों ...ा संकलन करना, उन्हें अनुभव की कसौटी पर ...सना, फिर उनका व्यवहारिक मूल्य आंकना ...यों के लिये समय और श्रम का दुरुपयोग ...ता है। इसके सिवाय प्रतिष्ठा सम्पन्न वैद्यों ...ो जितना ऊंचा और प्रसिद्ध प्रयोगों पर ...श्वास है, उतना लघु और सस्ते प्रयोगों पर ...हीं। परिस्थिति से बाध्य होकर हमारे जैसे धर्मार्थ ...ौषधालयों के चिकित्सक ही सस्ती से सस्ती किन्तु ...भावशाली औषधियों के खोज में लगे रहते हैं, ...योंकि द्रव्याभाव में धर्मार्थ औषधालयों को ...फलता-पूर्वक चलाने के लिये सस्ते और प्रभाव-...ाली योग ही एक मात्र साधन है। मुझे दो धर्मार्थ ...ौषधालयों में काम करने का अवसर मिला है, ...ोनों औषधालयों में केवल सस्ते सरल सिद्ध प्रयोगों ...र ही सैकड़ों रोगियों की सफल चिकित्सा की जा ...की। मेरे अनुभव से रोगी और वैद्यों के लाभ की ...ष्टि से सरल और सिद्ध योगों का प्रचार अत्यन्त ...ावश्यक है और इसीलिये मैं अपने कुछ अनुभूत ...रल सिद्ध प्रयोग प्रकाशित कर रहा हूं।

प्रदर और प्रमेह नाशक योग—

(१) नागबला (नारबीरयारी)—परिचय-यह लता क्षुप 'बला' का ही एक भेद है। इसके पत्ते और फूल बला के समान होते हैं। अन्दर इतना ही है, कि इसके क्षुप की शाखायें लता के समान फैलती हैं और बला की नहीं फैलतीं।

प्रयोग—

इस नागबला के समूचे क्षुप को लाकर जल से स्वच्छ धो डालें, फिर उसको कुचलकर स्वरस निकाल लें। इसके २॥ तोला स्वरस में १ तोला शहद मिलाकर रोगिणी को पिलावें। इसको छाया में सुखाकर महीन चूर्ण करलें। ३ माशा चूर्ण को रात्रि में एक पत्थर की कूंडी में एक छटांक जल में भिगोदें, सबेरे इस हिम में १। तोला शहद मिलाकर रोगी को पिलावें। इसी प्रकार प्रातः भिलाकर शाम को पिलावें। हम अपने औषधालयों में रोगियों को ताजे जल से उपर्युक्त औषधि का चूर्ण फंका दिया करते हैं, तब भी आशातीत लाभ होता है, किन्तु चूर्ण से इस औषधि का स्वरस और हिम विशेष लाभदायक सिद्ध हुए हैं।

गुण:—भयङ्कर रक्त-प्रदर, अधिक ऋतुस्राव, रक्त-प्रमेह, पूयप्रमेह और रक्तपित्त पर अत्यन्त लाभदायक है।

ज्वर और श्वास शामक योग—

२—अकरकरा पंचाङ्ग ४ रत्ती, श्वेत स्फटिका भस्म २ रत्ती, शहद के साथ सेवन कराने से ज्वर और श्वास का वेग धीरे २ एक घण्टे के अन्दर स्वाभाविक अवस्था में आजाता है और हृदय पर बुरा प्रभाव भी नहीं पड़ता।

३—रजावरोध नाशक योग—

अंकोल के जड़ की छाल १ तोला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजवाइन	२ तोला
गाजर के बीज	४ तोला

विधि—सबका समान भाग महीन चूर्ण लेकर मिश्रण बनालें।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा।

अनुपान—गरम जल।

समय-प्रातःकाल भोजन के पूर्व नित्य सेवन करावें।

गुण:—ऋतुदोष और अल्प रजःस्राव, इसके सेवन से अवश्य आराम होते हैं, माहवारी खुलकर होने लगती है और ऋतु शूल आदि व्याधियां दूर हो जाती हैं।

कृमि रोग पर—

अजवाइन	बायबिड़ंग,
पलाश बीज	सनाय

विधि—सबका समभाग चूर्ण लेकर मिश्रण बना लें।

मात्रा—दूध पीते बच्चों को २ रत्ती से ४ रत्ती तक बड़े बच्चों को ८ रत्ती से १६ रत्ती तक।

अनुपान—दूध पीते बच्चों को मां के दूध और शहद में बड़े बच्चों को बासा जल और शहद में, वय-प्राप्त स्त्री पुरुषों को इसे ३ माशा से ४ माशा तक वासा जल और शहद के घोल में लेना चाहिये।

गुण—इसके सेवन से सब प्रकार के मलज कृमि अवश्य नष्ट होजाते हैं। साथ ही जठराग्नि प्राप्त होती है, यकृत और प्लीहा के बिकार दूर होकर आंतों को बल मिलता है। मलावरोध और अर्श आदि व्याधियां भी शांत होजाती हैं।

चर्मरोगों पर—

सत्यानासी और चक्र मर्द के पत्तों का रस निकाल कर धूप में सुखालें और फिर दोनों का महीन चूर्ण कर कपड़छान करलें। चर्मरोगों पर सरसों का तेल तथा करंज के तेल में फें लगावें साथ ही ४ रत्ती से ८ रत्ती की मात्रा में प्रातः सायं चटावें।

गुण—खाज, दाद, उपदंश बेबची (एक्जिमा) आदि पर शीघ्र गुणकारी है।

रक्त पित्त पर—

सफेद स्फटिका भस्म ४ रत्ती, पीपल की लाख का महीन चूर्ण ४ रत्ती। मधु के साथ नुसार प्रति दो-तीन घंटे में अथवा प्रातः चटावें, बच्चों को इससे आधी मात्रा दें।

गुण—श्वसनक ज्वर अथवा रक्तष्ठीवी सन्नि में उर्ध्व वा अधोगामी रक्त पित्त पर शीघ्र कारी औषधि है। पहली मात्रा से ही होने लगता है।

श्वेत कुष्ठ पर—

गुञ्जा फलाग्नि चूर्णस्य लेपनं श्वेतकुष्ठनुत।

गुञ्जा के फल और चित्रक मूल का चूर्ण स भाग लेकर पानी में पीसकर श्वेतकुष्ठ पर लेप से नया श्वेतकुष्ठ अवश्य आराम हो जाता है।

व्रणभेदक लेप-

गवांदन्तं जले धृष्टं बिन्दुमात्रं प्रलेपतः।
अत्यन्य कठनेचापि व्रणे पाचन भेदनम्॥

गाय के दांत को पानी में घिस कर व्रण बिंदु मात्र भी लेप करने से कठिन व्रण भी फूट ज है। (किन्तु गलगण्डु और कंठमाला में इसका प्र नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसके प्रयोग में असा धानी होने पर घाव बड़ा हो जाता है।)

कण्डु नाशक लेप—

गोशकृत्सिन्धु संयुक्तं रजनी भाद्रिकेणतु।
पिष्ट्वा प्रलेपनं योज्यं पामाकच्छु बिनाशनम्

[शेषांश पृष्ठ ५७२ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

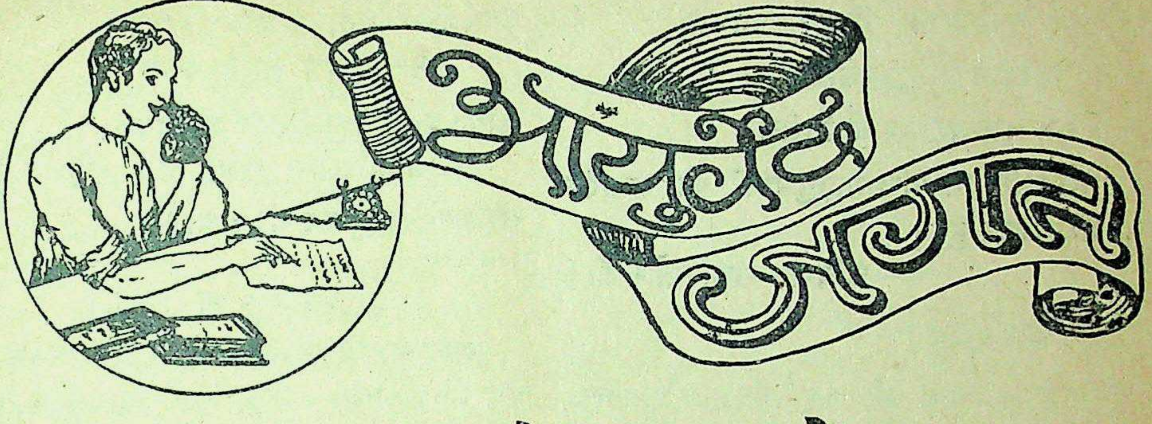

हमारी वैद्य-सभाएँ

धन्वन्तरि के आयुर्वेद-जगत (समाचार) स्तम्भ में प्रकाशनार्थ प्रतिमाह अनेकों वैद्य-सभाओं के समाचार प्राप्त होते हैं लेकिन हमको यह लिखते दुख होता है कि उनमें चुनाव के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होता है। उन समाचारों को प्रकाशित करने में उन सभाओं से सम्बन्धित व्यक्तियों की आत्म-तुष्टि के अतिरिक्त कोई अभिप्राय प्राप्त होता नजर नहीं आता। जहां कहीं भी वैद्यसभायें बना ली गई हैं उसका प्रति वर्ष वार्षिक चुनाव होजाता है लेकिन कोई क्रियात्मक कार्य नहीं किया जाता। जिस संस्था के कार्यकर्त्ताओं की नियमित सभाऐं नहीं होतीं, उनके सदस्य कार्य-पद्धति की रूपरेखा बनाकर कोई क्रियात्मक कार्य द्वारा अपनी चीज को जनता के समक्ष उपयोगी प्रमाणित नहीं करते वे संस्थाऐं कभी पनप नहीं सकतीं। आज हर वैद्य सरकार को, उच्च शिक्षित व्यक्तियों को एवं नेताओं को आयुर्वेद का पक्ष न लेने पर कोसते फिरते हैं लेकिन वे स्वयं कुछ भी करने को आगे नहीं बढ़ते।

अब सवाल यह पैदा यह होता है कि क्या भारतवर्ष के सभी वैद्य सभाओं के सदस्य अकर्मण्य हैं और आयुर्वेद के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना नहीं चाहते। हमको यह कहना युक्तियुक्त नहीं मालूम होता; बहुत कुछ बिचार करने पर हम इसका कारण यही समझ पाये हैं कि आयुर्वेद के उच्च-बर्ग के नेता अपना बहुमूल्य समय इसमें नहीं देना चाहते और न वे कोई क्रियात्मक कार्यक्रम बनाकर वैद्य-समाज के समक्ष ही रखते हैं जिससे छोटी-छोटी सभायें उन कार्य-क्रमों पर चल कर जनता में आयुर्वेद का प्रचार करती रहें। वे २-३ वर्ष बाद २-३ दिन के लिये अपना एक अधिवेशन कर देने मात्र से ही आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति बना लेना चाहते हैं।

हमारा निवेदन है कि अखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलनाधिकारी इधर ध्यान दें। भारतवर्ष की सभी वैद्य-सभाओं को एक सूत्र में बांधकर कुछ क्रियात्मक कार्य की रूप-रेखा उनके समक्ष रख कर आयुर्वेद की सच्ची सेवा करें। —सम्पादक।

बांदा नगर में—

२७-११-४८ को वैद्य सभा की स्थापना की गई। निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुने गए।

१-श्री० पं० देवीदीन जी बाजपेयी-प्रधान

२-श्री० पं० रामनारायण जी शुक्ल-उपप्रधान

३-श्री० कविराज राजकिशोर वैद्यवाचस्पति-मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४-श्री० पं० नर्मदाप्रसाद जी भट्ट-उपमन्त्री
५-श्री० गङ्गादीन जी गुप्ता-कोषाध्यक्ष
६-श्री० सेठ बसन्तकरण जी-निरीक्षक

इनके अतिरिक्त पांच महानुभावों की अन्तरंग सभा भी स्वीकृत हुई।

—कविराज राजकिशोर जी।

उतरौला क्षेत्र वैद्यसभा—

दिनाङ्क ४-१२-४८ को श्री. शंकर औषधालय बलरामपुर में उतरौला क्षेत्र वैद्य सभा की बैठक श्री वयोवृद्ध वैद्य ठा० महावीरसिंह जी की अध्यक्षता में हुई; जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान-पं० नवलकिशोर जी वैद्य,
प्रधान मंत्री - पं० देवशङ्कर अवस्थी 'आयुर्वेदाचार्य'
उपप्रधान-पं० रामसेवक जी वैद्य
,, ,, पं० भगवतीप्रसाद जी वैद्य
सहायक मंत्री-पं० गंगाशरण जी वैद्य
कोषाध्यक्ष-पं० बद्रीप्रसाद जी वैद्य
संरक्षक-श्री० ठा० महावीर सिंह जी वैद्य
परामर्शदाता-पं० शम्भुनाथ जी शास्त्री वैद्य,

-मंत्री।

वैद्य सभा जबलपुर—

१० नवम्बर को श्री. पं० द्वारिकाप्रसाद जी शर्मा के निवास-स्थान पर श्री. पं. सत्यव्रत जी शास्त्री के सभापतित्व में वैद्य सभा जबलपुर की विशेष बैठक हुई। आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित पदाधिकारियों तथा संरक्षकों का चुनाव सर्व सम्मति से हुआ।

सभापति-श्रीकृष्णलाल जी गोस्वामी
उपसभापति-१ गोस्वामी पुरुषोत्तम लाल जी
२-श्री. पं० यमुनाप्रसाद शर्मा
मंत्री-पं० हरिदत्त जी त्रिपाठी
उपमंत्री-१ विनायक श्रीधर देसाई
२-वासुदेव जी तापीकर
कोषाध्यक्ष-श्री चुन्नीलाल जी नायक

इसके अतिरिक्त सभा के ६ सदस्य एवं १० संरक्षकों का चुनाव भी हुआ।

[पृष्ठ ५७० का शेषांश]

गाय का विशुद्ध सूखा गोबर, सेंधानमक, हल्दी सम भाग लेकर महीन चूर्ण करलें फिर शहद में फेंट कर कण्डु पर लेप करें तो समस्त दाह युक्त व्रण और खाज आराम हो जायंगे।

—ग्रामोपयोगी योग।

मडिया का प्रयोग

छत्तीसगढ़ और बैतूल जिले में तथा गोंडवाने में इसकी खेती होती है। इसके दाने लाल तथा पीले रंग के होते हैं। यह एक प्रकार का खाद्यान्न है। गरीब ग्रामीण इसकी रोटी बनाकर खाते हैं अथवा पेज पीते हैं। इस मडिया के एक छटांक दाने को नित्य जल में पीस कर मिश्री मिलाकर पीने से भयंकर से भयंकर सुजाक व उष्णवात तुरंत शांत हो जाता है। कुछ दिन पीने से बिलकुल आराम हो जाता है।

जंगली चेंच—

बहुफली की जाति का क्षुप है। म ा ंत बालाघाट जिले में उड़द के खेतों में बहुतायत से पैदा होता है। यह बहुफली के सदृश ही होता है। इसके पचाङ्ग को छाया में सुखाकर चूर्ण करलें। ६ माशा से १ तोला चूर्ण को शीतल जल अथवा गो दुग्ध से सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह, उष्णवात, स्वप्नदोष धातुक्षीणता और सुजाक आराम होते हैं, इस औषधि के सेवन करते ही, सुजाक की जलन और पीव का गिरना बन्द हो जाता है।

—श्री० पं० हर्षुल मिश्र जी, बी० ए० आयुर्वेदा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखी (आगरा में बृहद् वैद्य सम्मेलन—

ता० २८-११-४८ की श्री. पं. रामजीलाल शर्मा युर्वेदाचार्य फीरोजाबाद की अध्यक्षता में एक द वैद्य सम्मेलन नारखी में हुआ। आगरा से श्री ाचरण जी आयुर्वेदाचार्य, श्री० प्रयागदत्त जी स्त्री, श्री उमाचरण जी दीक्षित, भवानीशरण जी क्षित पधारे और फीरोजबाद से कृष्णाशंकर जी स्त्री,श्रीराम जी शर्मा श्री०बनारसी दास जी श्री० उमप्रकाशजी,श्री.जगन्नाथजी लहरी,श्री.रामगोपाल पालीवाल कुसुमाकर जी आदि सज्जन पधारे।

आयुर्वेद और देश की समस्याओं पर सारगर्भित षण हुये। आगरा जिले के वैद्य-संगठन पर चार विमर्श हुआ। भारतीय चिकित्सालय नारखी ओर से चाय पार्टी दी गई और उसका रजत-यन्ती उत्सव मनाया गया। —सरल।

न्देलखण्ड वैद्य हकीम परिषद—

का वार्षिक निर्वाचन ता० २१-११-४८ को स्व० रालाल जी वैद्य की धर्मशाला में पं० रामगोपाल शास्त्री के सभापतित्व में निम्न-प्रकार हुआ।

भापति—पं० रामगोपाल जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य
पसभापति—पं० रामनारायण जी वैद्यशास्त्री अध्यक्ष श्री०वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन
२—श्रीमान पं० परमानन्द जी वैद्य भूषण
३—श्री. पं० बालमुकन्द औषध-वैद्य।
४—हकीम अब्दुल वाहब साहब।
धान मंत्री—श्री० राजकिशोर श्रीवास्तव वैद्य,
युक्त मंत्री—श्री०पं० रघुबीरप्रसाद दुबे आयुर्वेदा०
२—श्री० भास्कर भागवत डो. आई. एम. एस.
कोषाध्यक्ष—श्री. बाबूलाल जी माहौर आयुर्वेदाचार्य
आयव्यय निरीक्षक-श्री. सेठमुरलीधर जी एडवोकेट;

औरैया [इटावा]

संयुक्त प्रान्तीय आयुर्वेद सम्मेलन से संम्बंधित जिला वैद्य सभा औरैया इटावा की सभा ९० लक्ष्मीनारायण मिश्र ए. एम. एस. के सभापतित्व में आयुर्वेदिक रसायनशाला में हुई। जिसमें निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गये।

संरक्षक

१—राजवैद्य पं० प्रभुदयाल पाण्डेय।
२—आयुर्वेदाचार्य पं० कृष्णगोपाल जी शास्त्री।
सभापति पं० लक्ष्मी नरायाण जी मिश्र ए. एम. एस.
उपसभापति—आयुर्वेदाचार्य पं० श्रीकृष्ण पांडेय।
आयुर्वेदाचार्य—पं० जगन्नाथ प्रसाद पांडेय।
प्रधान मंत्री—पं० विष्णुकुमार बाजपेयी।
प्रचार मंत्री—पं० बाबूराम उपाध्याय, ए. एम. एस.।
उपमंत्री—आयुर्वेदाचार्य पं रामस्वरूप बाजपेयी।
आयुर्वेदाचार्य—पं तुलसीराम त्रिपाठी।
श्री० सुरेन्द्रनाथ जैन ए. एम. ए. इटावा।
श्री० पं० शिवशंकरलाल दीक्षित ए. एम. एस.।
कोषाध्यक्ष—राजवैद्य पं० विद्याधर मिश्र।
—प्रचार मन्त्री।

आयुर्वेद मण्डल सांडी (हरदोई)—

का वार्षिक चुनाव २८-११-४८ को निम्न प्रकार हुआ:—
प्रधान—श्री० पण्डित हरिशंकरलाल जी वैद्य विशारद
उप प्रधान—श्री० पण्डित ब्रह्मदत्त जी वैद्य।
उप-मन्त्री—श्री० मैकूलाल जी पाठक वैद्य।
कोषाध्यक्ष—श्री० गोविंदशरण जी त्रिपाठी वैद्य।
निरीक्षक—श्री० पण्डित हरिद्वारीलाल जी द्विवेदी वैद्य

आगरा के वैद्यों की भारतसरकार से प्रार्थना—

ता० १०-१२-४८ को क्षेत्र बजाजा धर्मार्थ औषधालय आगरा में समस्त वैद्यों की एक विशेष सभा श्री पं० मनमोहन जी वैद्यशास्त्री की अध्यक्षता में हुई उसमें सर्व सम्मति से सरकार से प्रार्थना की गई कि स्वतन्त्र भारत में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को ही राष्ट्रीय चिकित्सा स्वीकार करें जिससे विदेशियों द्वारा पद-दलित भारतीय आयुर्वेद विज्ञान का पुनरुत्थान होसके।

—रणवीरसिंह शास्त्री उपमन्त्री वैद्य सभा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

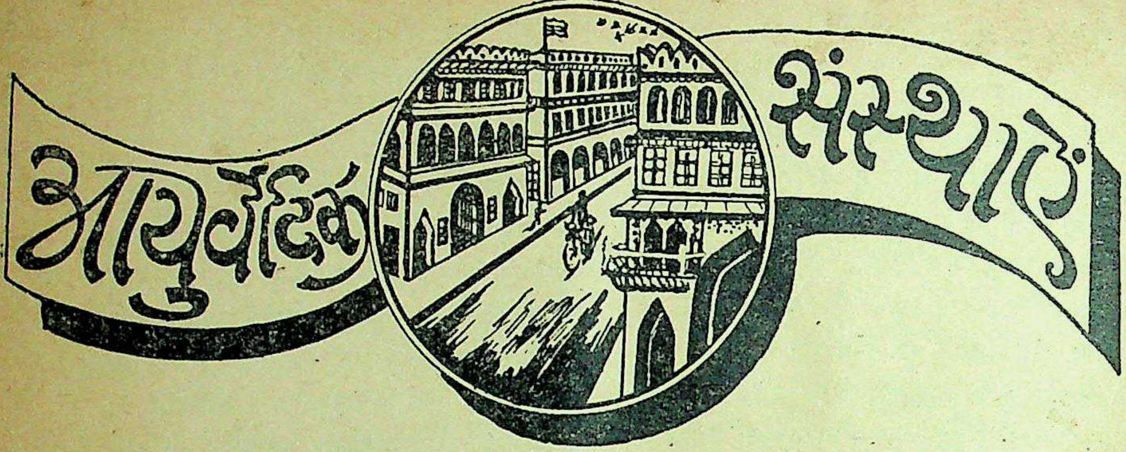

श्री.ललितहरि आयुर्वेद कालेज, पीलीभीत।

श्री ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज की स्थापना सन् १८६६ ई० में पीलीभीत के प्रतिष्ठित सेठ दानवीर स्वर्गीय राजा लालता प्रसाद जी व उनके लघु भ्राता रायबहादुर साहू हरिप्रसाद जी ने प्राचीन संस्कृति साहित्य व चिकित्सा-विज्ञान की उन्नति के लिये की। उस समय आज की तरह देश स्वतन्त्र न था चारों ओर दासता की मनोवृत्ति फैली हुई थी और संस्कृत साहित्य व आयुर्विज्ञान की शिक्षा का कोई भी सन्तोष-जनक राजकीय प्रबन्ध न था। तत्कालीन गवर्नमेण्ट को देशी चिकित्सा पद्धति से कोई भी स्नेह न था बल्कि उसे नष्ट करने की सारी चेष्टायें होती जा रही थीं। देश वासी धर्म और विज्ञान की अवहेलना करते हुए अपनी श्रद्धा खो रहे थे, देश के धनिक वर्ग का ध्यान भी (इधर उत्तरी भारत में) आयुर्वेद की शिक्षा के सुप्रबन्ध का न था। ऐसे अवसर पर विद्यालय की स्थापना करके श्रेष्ठ बन्धुओं ने देश की बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति की और अपने देश प्रेम, धर्म प्रेम और संस्कृति की पुष्टि का अपूर्व परिचय दिया।

शिक्षा प्रचार व प्रबन्ध

प्रारम्भ में इस शिक्षा संस्था में संस्कृत, व्याकरण व साहित्य तथा आयुर्वेद की शिक्षा का प्रबन्ध करने के निमित्त इसमें दो विभाग किये गये थे। संस्कृत-विभाग व आयुर्वेद विभाग। संस्कृत विभाग में प्रारम्भिक हिन्दी के साथ २ संस्कृत की प्रथमा, मध्यमा व शास्त्री की शिक्षा दी जाती थी। आयुर्वेद विभाग में प्रारम्भ में कलकत्ता व जयपुर की परीक्षाओं को दिलाया जाता था किन्तु कुछ समय के बाद विद्यालय में वैद्यराज व वैद्य भूषण की क्रमशः पांच व तीन वर्ष के कोर्ष के रूप में उपाधियों को देना प्रारम्भ किया। यह क्रम सन् १९३९ तक बराबर चलता रहा। सन् १९३९ ई० में प्रांतीय गवर्नमेण्ट की प्रेरणा से संस्थापकों ने विद्यालय में Board of of Indian medicine. के पाठ्यक्रम को अपनाया और संस्कृत विभाग को बन्द करके सर्वाङ्ग पूर्ण अष्टांङ्ग आयुर्वेद की शिक्षा के निमित्त आवश्यक पूर्ण साधन एकत्रित कर दिये। वर्तमान काल में विद्यालय में अधो-लिखित विभाग आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनों से सम्पन्न होकर संतोष जनक कार्य कर
हैं।

(१) शिक्षा विभाग (२) चिकित्सा विभाग
(३) फार्मेसी विभाग

शिक्षा विभाग--

यह विभाग संस्था का प्रधान अंग है। आयुर्वेद
उच्चतम शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिये प्रत्येक
कार के साधन एकत्र किये गये हैं। उत्तरी भारत
इस आयुर्वेद महाविद्यालय का स्थापित होना
आयुर्वेद की समुचित शिक्षा प्रदान करने में अत्यन्त
लाभप्रद सिद्ध हुआ है। इसके समीप हिमालय पर्वत
इसकी उपत्यका अधित्यका व तराई की जांगल
भूमि है जो नैसर्गिक रूप से आयुर्वेदोद्यान की सी
मानता प्राप्त कर यहां के छात्रों को बनौषधि परि-
चय व द्रव्य गुण विज्ञान का प्राकृतिक साधन
दान किया है। यह सुविधा अन्य स्थानों में दुर्लभ
। उत्तरी पांचाल का यह प्रदेश सदा विद्यापीठ रह
का है। यह महा विद्यालय आज भी उसी प्रकार
सरस्वती का मंदिर बन रहा है।

इस समय इसमें बोर्ड आफ इण्डियन मेडीसन
यू०पी० का पंचवर्षीय पाठ्यक्रम अध्यापनार्थ स्वीकार
किया गया है, गवर्नमेण्ट द्वारा इस विद्यालय को
१ हजार पांच सौ रुपये की वार्षिक सहायता प्राप्त
। बोर्ड द्वारा स्वीकृत व सहायता प्राप्त विद्यालय
यह प्रथम श्रेणी का सर्वोच्च विद्यालय है। इसमें
आयुर्वेद की शिक्षा के अध्यापन की पूर्णता के
निमित्त सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षा का पूर्ण
साधन प्रयोग शालायें, आतुरालय, शवच्छेदालय,
वनस्पति उद्यान तथा औषधि निर्माणार्थ वृहत्
फार्मेसी की स्थापना लाखों रुपये को व्यय करके
की गई है।

प्रयोग शालायें--

कई प्रयोग शालायें शिक्षा की प्रत्यक्ष क्रियात्मक
अध्यापन की पूर्ति के लिये सुसम्पन्न हैं। यथा—

१—केमिस्ट्री व फिजिक्स की प्रयोगशाला।
२—जीव-विज्ञान की प्रयोगशाला
३—शरीर क्रिया-विज्ञान की प्रयोगशाला
४—रोग विज्ञान की प्रयोग शाला
५—प्रत्यक्ष औषधि निर्माण विज्ञान की प्रयोगशाला
६—शवेच्छ भवन

इनमें अपने-अपने सम्बन्ध के क्रियात्मक कार्यों की पूर्ति होती है। रसायन विज्ञान व पदार्थ विज्ञान की प्रेक्टिकल शिक्षा केमिस्ट्री व फिजिक्स की प्रयोगशाला में, वनस्पति विज्ञान व प्राणि विज्ञान की प्रत्यक्ष शिक्षा जीव विज्ञान की प्रयोगशाला में अथवा शरीर-गत धातु दोष व मलों की परीक्षा शरीर क्रिया विज्ञान की प्रयोग शाला में, रोग निर्णायक परीक्षायें रक्त, मूत्र, श्लेष्म व जीवाणु विज्ञानार्थ रोग-विज्ञान की परीक्षात्मक क्रियायें प्रयोग शाला में होती हैं। औषधियों के लिये निर्माण की शिक्षा के लिये निर्माण प्रयोगशाला में जाकर विद्यार्थी स्वतः औषधि--नर्माण करते हैं। शरीर की आभ्यन्तरिक रचना के ज्ञानार्थ छात्र स्वयं मनुष्य के मृत शरीर के प्रत्येक अंश का ज्ञान शवच्छेद क्रिया द्वारा मुर्दे की चीरफाड़ करके करते हैं।

शवच्छेद भवन

यह भवन विद्यालय की प्रधान इमारत से एक फर्लाङ्ग दूर प्रथक देव मूर्ति के किनारे पर बना हुआ है। इसमें शरीर-रचना के विषय की शिक्षा के लिये प्रधान भवन और लैक्चर रूम आदि हैं। सुश्रुत के उपदेशानुसार इसे नदी तट पर ही बनाया गया है। यह इमारत पचास हजार की लागत से आधुनिक साधनों से परिपूर्ण तैयार की गई है।

संचालन—

संस्थापकों की उदारता से विद्यालय के स्थाई प्रबन्ध के लिये कुछ ग्राम की जमीदारी दुकान व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान की रजिस्ट्री एक ट्रस्ट बोर्ड बनाकर करदी है जिससे कार्य सुचारू रूपसे चले। इसके सुप्रबन्ध के लिए एक प्रबन्ध बोर्ड जिसके १३ सदस्य हैं बना दिया गया है। विद्यालय का आंतरिक प्रबन्ध प्रिंसिपल के आधीन एक अंतरंग कमेटी द्वारा संपादित किया जाता है।

अध्यापक वर्ग--

इस विद्यालय का अध्यापक मण्डल बहुत ही प्रौढ़ विद्वानों के संग्रह से बनाया हुआ है। पं० विश्वनाथ द्विवेदी इसके प्रधान आचार्य हैं। जिन्हें आयुर्वेद संसार अच्छी तरह जानता है, जिनकी लिखी हुई पुस्तकें वैद्य संसार के लिये अमूल्य निधि हैं। स्टाफ को साधारण व नये स्नातकों के द्वारा न भरकर सुसंस्कृत, आयुर्वेद, इंग्लिश व विज्ञान के पारंगत विद्वानों को रखकर अध्यापन की सुव्यवस्था करने में यह विद्यालय ख्याति लब्ध है

आय व्यय -

विद्यालय का व्यय इस समय पचास हजार रुपया वार्षिक है। आतुरालय व फार्मेसी का व्यय मिलाकर ८० हजार है। आय के स्रोत संस्था की निधि, औषधि लाभ व गवर्मेंट की सहायता हैं जो सीमित है। जो धन शेष रह जाता है उसे उदार चित्त संस्थापक पूरा करते हैं।

पोस्टाचार्य

उच्चशिक्षा का प्रबन्ध--

इस वर्ष से विद्यालय के पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स को अपना कर शिक्षा देना प्रारम्भ किया है। इसमें आयुर्वेद के अष्टांग के एक-एक विषय की शिक्षा दी जाती है। इस वर्ष गवर्मेंट द्वारा पोस्ट-ग्रेजूएट कोर्स को अध्यापन करने के लिए ६०) मासिक की दो छात्र वृत्तियां प्राप्त हुई हैं। यह छात्र वृत्तियां केवल उन छात्रों को दी जाती हैं जो कि बी० आई० एस० एस० की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करते हैं।

भगवान् धन्वन्तरि की कृपा से हमारे विद्यालय के छात्र कई वर्षों से यह स्थान प्राप्त कर रहे हैं और सर्व प्रथम स्थान प्राप्त करके स्कालर-शिप लेते हैं।

कार्य शीलता

विद्यालय की शिक्षा की उत्तमता का प्रमाण इसी से लगाया जा सकता है कि बोर्ड द्वारा द्वितीय तृतीय व पंचम वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले सर्व प्रथम अधिक अंक पाने वाले १५ छात्रों को २०) मासिक की छात्र वृत्ति बोर्ड देता है। हमारे यहां प्रति वर्ष आधी स्कालरशिप प्राप्त होती हैं। शेष में बोर्ड के सब विद्यालय लाभ उठाते हैं।

अन्वेषण विभाग--

अन्वेषण का कार्य विद्यालयों में कई वर्षों से होता आया है। आसव अरिष्ट व भस्मों पर अन्वेषण हुए हैं। कई द्रव्य भी विशेष प्रकार के प्राप्त हुए हैं जिनमें शीतज्वर के लिए मलेरिया-संहार, गले के रोगों में धन्वन्तरि पेन्ट, प्लास्टरों में धुस्तूर प्लास्टर इत्यादि पूर्ण लाभदायक अन्वेषण हुए हैं।

गतवर्ष से गवर्नमेंट ने भी एक-एक रिसर्च स्कालर १००) मासिक छात्र-वृत्ति के प्रदान किये हैं जो सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

छात्र संख्या---

कालेज कोर्स में शिक्षा पाने वाले १६६ छात्र हैं। पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स में २ और रिसर्च में २ स्नातक हैं।

स्नातकों की संख्या -

विद्यालय से अब तक सैकड़ों स्नातक निकले हैं जिनकी संख्या ५५० है। इनमें कई स्नातक वैद्य संसार में पूर्ण ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापक मण्डल

आयुर्वेद विभाग—

१—पं० विश्वनाथ जी द्विवेदी, आयुर्वेद—शास्त्राचार्य, प्रिंसीपल।

२—पं० सोमदेव शर्मा सारस्वत, शास्त्री, साहित्याचार्य, आयुर्वेदाचार्य ए. एम. एस.।

३—श्री. हरिस्वरूप कुलश्रेष्ठ आयुर्वेदाचार्य ए.एम.एस.

४—श्रीरामकृपाल गुप्ता ए. एम. एस.।

५—श्री पं० हरिप्रसाद शर्मा, शास्त्री, वैद्यराज-आयुर्वेदाचार्य।

६—श्री पं० चन्द्रवल्लभ उप्रेती।

७—श्री पं० कृष्णदत्त जोशी डी. आई. एम. एस.।

पाश्चात्य विज्ञान विभाग—

८—डाक्टर नन्दनप्रसाद शर्मा एम. बी. बी. एस., पाश्चात्य विज्ञान विभागाध्यक्ष।

१०—श्री. एस. एल. सक्सेना।

११—बाबू सीताराम मीतल।

१२—पं० महेशचन्द्र शर्मा

प्रवेश-नियम

१—कालेज का वर्षारम्भ साधारणतया १ जुलाई से होता है। प्रवेश का समय ३१ जुलाई तक।

२—प्रवेशनार्थ प्रार्थना-पत्र नियमित छपे फार्म पर ही स्वीकृत होते हैं। प्रवेश के समय उत्तीर्ण की हुई परीक्षा या परीक्षाओं के सार्टिफिकेट प्रस्तुत करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त जिस संस्था में अध्ययन किया हो उसके अध्यक्ष का प्रमाण-पत्र प्रवेशार्थी के चरित्र आदि के सम्बन्ध का होना भी आवश्यक है। प्राईवेट परीक्षोत्तीर्ण छात्र के विषय में किसी सरकारी (गजेटेड) आफिसर का लिखा प्रमाण पत्र पर्याप्त होगा।

३—कम से कम प्रावेशिक योग्यता निम्न लिखित इस समय स्वीकृत है—

(क) मैट्रीकुलेशन परीक्षा यू० पी० बोर्ड, बम्बई, पञ्जाब व मैसूर।

(ख) एडमिशन परीक्षा (हिन्दू यूनवर्सिटी, बनारस)।

(ग) प्रथमा परीक्षा (कीन्स कालेज, बनारस)।

(घ) प्रवेशिका परीक्षा (हिंन्दू युनिवर्सिटी, बनारस)।

नोट—इनके अतिरिक्त बोर्ड द्वारा अन्य तत्सम परीक्षायें भी स्वीकृत हैं, परन्तु कालेज में प्रवेशार्थ कालेज के अधिकारी वर्ग का निर्णय इस विषय में अन्तिम समझा जाता है।

४—उक्त लिखित योग्यता युक्त प्रवेशार्थी नियमानुसार कालेज की प्रावेशिक परीक्षा उत्तीर्ण करने पर प्रवेश पाने के अधिकारी होंगे। (क) और (ख) वालों को यह परीक्षा (ऐडमीशन टेस्ट) संस्कृत में प्रथमा की योग्यता की तथा (ग) (घ) वालों को अंग्रेजी में हाईस्कूल परीक्षा की योग्यता तक देनी होती है।

५—बोर्ड के नियमानुसार अन्य प्रमाणित आयुर्वेदिक संस्थाओं के विद्यार्थी Migration certificate प्राप्त करके प्रवेश पाते हैं।

शिक्षा तथा अन्य शुल्क

१—शिक्षा शुल्क प्रथम वर्ष २), द्वितीय वर्ष ३), तृतीय वर्ष ३), चतुर्थ वर्ष ४), पंचम वर्ष ४) मासिक नियत है। शिक्षा शुल्क की अवधि १२ मास है परंतु केवल वर्ष के लिये दस मास की निश्चित है।

२—शिक्षा शुल्क के अतिरिक्त प्रत्येक छात्र को ।) लाइब्रेरी शुल्क प्रतिमास देना होता है। इन दोनों शुल्कों की अवधि दस मास की है।

३—विद्यालय प्रवेश शुल्क २), पुनः प्रवेश शुल्क २)। त्याग पत्र शुल्क १)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४–परीक्षा शुल्क प्रथम व चतुर्थ वर्ष में ५) वार्षिक तथा द्वितीय, तृतीय व पंचम वर्षीय छात्रों को बोर्ड का नियमित परीक्षा शुल्क देना होता है और उसके अतिरिक्त कालेज की षट्मासिक परीक्षा के हेतु २) परीक्षा शुल्क है । यह शुल्क प्रवेश काल में या जनवरी मास में ले लिया जायगा ।

५–(Caution Money) संरक्षण शुल्क प्रत्येक विद्यार्थी को निम्नलिखित क्रमानुसार प्रवेश काल में देना होता है ।

प्रथम वर्ष व द्वितीय वर्ष—पुस्तकालय ५), साइन्स ५), शरीर क्रिया तथा शवच्छेद ५) प्रत्यक्ष औषधि निर्माण ५) ।

तृतीय वर्ष—पुस्तकालय ५), प्रत्यक्ष औषधि निर्माण ५) ।

चतुर्थ व पंचम वर्ष—पुस्तकालय ५), शल्य (सरजरी) व आतुरालय (होस्पिटल प्रेक्टिस) ५) ।

छात्रावास–

(१) कालेज से संलग्न दो छात्रावास हैं । कालेज के विद्यार्थियों को छात्रावास में या किसी अन्य स्वीकृति प्राप्त स्थान में बोर्डिंग सुपरिन्टेन्डेन्ट अथवा प्रिंसिपल के नियन्त्रण के आधीन रहना आवश्यक है । इसके अतिरिक्त अपने संबन्धी इत्यादि के साथ रहने वाले छात्रों को भी इस हेतु लिखित प्रार्थना पत्र द्वारा बोर्डिङ्ग सुपरिन्टेन्डेन्ट की स्वीकृति प्राप्त करना अनिवार्य है ।

(२) छात्रावास में प्रवेश या उससे त्याग नियमित छपे हुए प्रार्थना पत्रों द्वारा ही होता है । यदि त्यागपत्र द्वारा त्याग की स्वीकृति लिये बिना छात्र छात्रावास से चला जायगा तो उसको छात्रावास का शुल्क बराबर देना होगा । लिखित स्वीकृति प्राप्त किये बिना छात्रावास में निवास वर्जित है । अनधिकृत व्यक्तियों को छात्रावास से बाहर निकाल देने का अधिकार प्रिंसिपल तथा छात्रावास सुपरिन्टेन्डेन्ट को है ।

(३) छात्रावास सम्बन्धित निम्न–लिखित शुल्क नियत हैं—

प्रवेश शुल्क १) आवास शुल्क प्रति सीट २) प्रतिमास (दस मास की अवधि) संरक्षण शुल्क ५) जो छात्रावास छोड़ने पर कालेज के नियमों के आधीन लौटाया जाता है । अवधि के मध्य में त्याग करने पर उस अवधि के शेष समय का शुल्क ले लिया जाता है ।

चरक-संहिता नवीन संस्करण

आयुर्वेदाचार्य श्री० जयदेव विद्यालङ्कार द्वारा हिन्दी व्याख्या व टिप्पणी सहित २ भागों में, अत्युत्तम छपाई, मजबूत जिल्द सम्पूर्ण पुस्तक का मूल्य—३२)

पता--धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार विद्वान लेखकों

की उत्तमोत्तम पुस्तकें

श्री. पं० जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल आयुर्वेद पञ्चानन

शिरोरोग विज्ञान (पृष्ठ ४५१)	४)
आयुर्वेद मीमांसा	१)
पथ्यापथ्य निरूपण	।)
भारतीय भौतिक विज्ञान	।=)
मूत्र परीक्षा	१)
अनुपान कल्पतरु	।।।)
मुखरोग विज्ञान	२)
नासारोग विज्ञान	२)
कर्णरोग विज्ञान	२)
शरीर परिचय	१।)
प्राणिज औषधि	≡)
परिभाषा प्रबोध	१।।)
नाड़ी परीक्षा	।)

श्री पं० गणपतिसिंह वर्मा द्वारा लिखित

अनुभूत योग चिन्तामणि प्रथम भाग	३।।-)।।
,, ,, द्वितीय भाग	३।।)
भारतीय जड़ी बूटियां	२।।)
दुग्ध गुण विधान	१)
फिटकिरी गुण विधान	१।।)
अर्क गुण विधान	१।।)
रीठा गुण विधान	।=)
पीपल गुण विधान	।=)
नीम गुण विधान	।।।≡)
घृत गुण विधान	।=)
नपुंसक चिकित्सा	३)
सन्तरा गुण विधान	।=)
एकोषधि गुण विधान	१।।।=)
सुगधि व्यापार	१)

कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय द्वारा लिखित

तपैदिक (राजयक्ष्मा)	४)
आंख का अचूक इलाज	२)
फलाहार चिकित्सा	२।।)
स्वास्थ्य के लिये शाक-तरकारियां	१।।)
हमारा भोजन	४)
दूध चिकित्सा	४)
भोजन ही अमृत है	१।।)
शहद और उसके गुण	।।)
जुकाम	१।।)
प्रमेह विवेचन	२)

श्री. रामेशवेदी आयुर्वेदालङ्कार द्वारा लिखित–

तुलसी	२)
अंजीर	१)
सोंठ	१)
त्रिफला	२।)
देहाती इलाज	१)
लहसुन और प्याज	२।।)

ये पुस्तकें नवीन शैली पर लिखी अत्युपयोगी हैं। पुस्तकों की पूरी सूची विशेषांक के अन्त में देखें।

पता— धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ [अलीगढ़]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकली माल से सावधान !

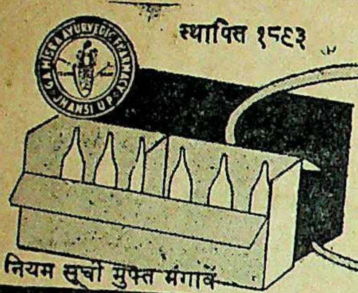

स्थापित १९९३

तार का पता—'इन्जेक्शन'

रोगों के शत्रु

मिश्रा आयुर्वेदिक इन्जेक्शन्स-

द्वारा थोड़े समय और मामूली खर्च में रोगों से छुटकारा पाइये।

नियम सूची मुफ्त मंगावें

रजिस्टर्ड

विवरण के लिए लिखें जी.ए.मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी झाँसी यू.पी.

"सचित्र आयुर्वेदिक इंजैक्शन विज्ञान" पंचम संस्करण मू० ५) पो० ।।–)

हमारे यहां इंजैक्शन देने की शिक्षा थोड़े समय में दी जाती है।

नियम सूची मुफ्त मंगाइये।

आयुर्वेदिक इंजेक्शन

'देना व बनाना सीखिये'

आयुर्वेदिक इन्जेक्शन देने और बनाने के सरल से सरल तरीके यहां बताये जाते हैं, जिससे इन्जेक्शन देना और बनाना साधारण से साधारण आदमी भी सीख लेते हैं। अस्तु आप भी सीख सकते हैं।

नोट–

कौलैप्प-एक ही इन्जेक्शन में शीताङ्ग-सन्निपात यानी रोगी की पतना अवस्था, अङ्ग-प्रत्यङ्ग की शीतलता, नाड़ी की क्षीणता और दुर्बलता को दूर कर देता है।

पता आयुर्वेदिक इन्जे० इन्सटिट्यूट

कदम कुंआ रोड (धर्मशाला के सामने) पटना

दवा के सच्चे मोती

वैद्य ! हकीमो !! तथा फार्मेसी वालो !!! हमारे यहां सब प्रकार के शुद्ध और सच्चे मोती जैसे कि बसराई खाका, सीलोन खाका, आष्ट्रेलियन मोती वगैरह जो दवा के लिये सर्वोत्तम हैं तथा जो भारत के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वैद्यों द्वारा प्रमाणित होचुके हैं, निहायत किफायत से मिलते हैं। धर्मार्थ औषधालयों के साथ विशेष रिआयत की जाती है। आर्डर भेजने की कृपा करें।

पता—नगीनदास वीरचन्द जेवरी.

४४-४६, धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३।

ज्वरारि

ज्वर, जूड़ी, मलेरिया की अत्युत्तम दवा

निर्माता - धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क रजिस्टर्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्युत्तम पेटेंट औषधियां।

स्त्री सुधा

प्रदर; मासिक धर्म की खराबी, गर्भाशय की खराबी के लिये उत्तम है।

१ शीशी १॥।) १२ शीशी १३॥)

कुमारकल्याण घुटी

बालकों के रोग दूर कर उनको हृष्ट-पुष्ट बनाने वाली मीठी घुटी है।

१ शीशी ।–) १२ शीशी २॥।–)

धन्वन्तरि बाम

सिर दर्द को दूर करती है दिमाग को तरावट व ताजगी देती है। शीतल व सुगन्धित है।

१ शी० ।।) १२ शीशी ४।।)

पायरिया मंजन

दन्त रोगों को दूर करता है, पायरिया का दुश्मन।

१ शी० ।।) १२ शीशी ४।।)

स्वर्णबसन्त मालती नं० १

पुराने ज्वर, क्षय आदि भयंकर रोग नष्ट करने को उत्तम है। १ तोला २०)

ज्वरारि

ज्वर-जूड़ी की सर्वोत्तम व परीक्षित महौषधि।

१ शीशी १) १२ शी० ६)

कासारि

हर प्रकार की खांसी को मार भगाने के लिये उत्तम। अनुपान रूप में भी व्यवहार कर सकते हैं।

१ शी० १) १२ शी० ६)

मकरध्वज बटी

प्रमेह, वीर्यविकार नाशक अत्युत्तम प्रसिद्ध टैनिक।

१ शी० २॥=) १२ शीशी २०॥)

बातारि बटी

वातरोग-गठिया, शरीर के किसी अङ्ग का दर्द दूर करने को उत्तम।

१ शी० २) १२ शी० १८)

खाजरिपु

खाज-खुजली के लिये अक्सीर तैल।

१ शी० १) छोटी शीशी ।।–)

मनोरम चूर्ण

स्वादिष्ट व मनमोहक उत्तम चूर्ण।

१ शी० ।≡) छोटी ।)

सिद्ध मकरध्वज नं० १

आयुर्वेद का प्रसिद्ध रत्न जो समय पर अपना पूर्ण चमत्कार दिखाता है। मूल्य १ तोला ३०)

ये औषधियां हजारों रोगियों पर परीक्षित हैं!

धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri REGD. NO. A. 2

आयुर्वेद

के

अनुपम रत्न

?

❀

सर्वोत्तम

मकरध्वज

नं० १

का

स्वर्ण बसन्त मालती

—के निर्माण में—

हिंगुल के स्थान पर प्रयोग

—और उसके—

चमत्कारिक गुण

हम कई वर्षों से अपनी स्वर्ण बसन्त मालती नं०१ के निर्माण में शु० हिंगुल के स्थान पर सर्वोत्तम मकरध्वज नं०१ तथा स्वर्ण वर्क के स्थान पर स्वर्ण भस्म डालते हैं। आजकल ९० प्रतिशत ज्वर-रोगियों को स्पष्ट अथवा अस्पष्ट रूपेण वीर्य-विकार साथ में अवश्य होता है ऐसा हमारा चिरकालीन अनुभव है। यह सभी जानते हैं कि मकरध्वज रसायन वीर्य-विकार तथा निर्बलता के लिये आयुर्वेद की सर्वश्रेष्ठ महौषधि है। जब उसका मिश्रण स्वर्ण मालती बसन्त के साथ हो जाता है तो 'एक और एक ग्यारह" वाली कहावत चरितार्थ होती है और यह अनुपम 'मालती' विषम ज्वर, क्षय, कास, निर्बलता, प्रमेह स्वप्न-प्रमेह आदि सभी विकार शीघ्र ही नष्ट करती है। बीसियों क्षय रोगी भी अपने भावी जीवन के अन्धकार को इस अनुपम रत्न की प्रतिभा से नष्ट कर चुके हैं। एक बार अपने रोगी को व्यवहार कराइये, आपको अवश्य सफलता मिलेगी।

मूल्य—१ तोला २०)

धन्वन्तरि कार्यालय (रजिस्टर्ड)
विजयगढ़ (अलीगढ़)
DHANWANTRI KARYALAYA BIJAIGARH.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar